अर्पण पत्रिका.

अनेक गुणगणालंकृत सुज्ञ मुरब्बी शेठ

आणंदजी परशोतमनी सेवामां

मु० जावनगर.

बाल्यावस्थाथी स्वशक्तिवडे सांसारिक व्यापारमां अभ्युदय प्राप्त थवाथी आपे स्वोपार्जित द्रव्यनो, अन्य अन्य प्रसंगे, तीर्थयात्रा, उद्यापन (उजमणु) अठाइ महोत्सव, शत्रुंजय महातीर्थ उपर जीनबिंबोनुं स्थापन, अक्षयनीधिआदि धर्मकार्योमां अंतःकरणना धार्मिक उत्साहथी व्यय करी पोताना आत्माने निर्मल करेलो छे, अने तेवी निर्मलता प्राप्त थवाथी वृद्धावस्थामां शांतरसनो आपना अंतःकरणमां जमाव थयोछे, तेनो प्रत्यक्ष अनुजव जावनगरना जैनसमुदायमां प्रसंगे प्रसंगे थता उंचा मनने शांति पमाडवामां आपनुं अंतःकरण साधनजूत थायछे, एवां अनेक कारणोने लीधे, तेमज मारा उपर आप अत्यंत प्रीति राखो छो; तेथी आ जाषान्तररूप ग्रंथ आपने सविनय अर्पण करुंछुं ते स्विकारशो.

जावनगर,
ता० १७ नोवेंबर
१८९९

ली. आज्ञांकित,
जाषांतर कर्त्ता.

प्रस्तावना.

नमे ञ्राता महावीरो, नद्वेषो कपिलादिषु ॥
युक्तिमद् वचनंयस्य तस्यकार्यः परिग्रहः ॥ १ ॥
इत्याचार्य श्री हरिन्नद्र सूरिः ॥

जैनदर्शन सर्व दर्शनोमां श्रेष्ठ छे, एम पूर्वाचार्य श्रीमद् हरिन्नद्र सूरिए षट्दर्शन समुच्चय नामना ग्रंथमां छ ए दर्शनोना देवता तत्वप्रमुखना यथार्थ विचार प्रदर्शित करी सिद्ध करी बताव्युं छे. मोक्षाभिलाषी आत्माउने मोक्षपद प्राप्त करवामां जैनदर्शननुं आराधन एज सत्य साधान छे. साधन रत्नत्रयीनुं आराधन करवुं तेज छे. ज्ञान, दर्शन, चारित्र रत्नत्रय छे. श्री तत्वार्थमां "सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः" एम यथार्थ सिद्ध करी बताव्युं छे.

वेदांत आदि दर्शनमां मात्र ज्ञाननेज मुक्तिनुं साधन मानेलुं छे. दर्शन, चारित्र तो तेमनी गणनामांज नथी. जुउ शंकराचार्यकृत अपरोक्षानुन्नूति, तथा विद्यारण्य स्वामिकृत पंचदशी. श्री शंकराचार्यकृत आत्मबोधमां चारित्र अर्थात् क्रियानी जरुरीआत बतावी छे, परंतु दर्शन अर्थात् सम्यग्दर्शननी मोक्षप्राप्तिमां केटली आवश्यकता छे ते संबंधी विचार जैनदर्शन शिवाय बीजा कोइपण दर्शनमां बिलकुल बताव्या नथी. सम्यग्दर्शननुं यथार्थ स्वरूप तो मात्र जैनदर्शनना पूर्वाचार्य प्रणीत गहन ग्रंथोनुं अवलोकन करवाथीज जाणी शकाय छे, तेमां पण गुरुगम ज्ञाननी आवश्यकता छे. जैनदर्शनमां सम्यग्दर्शननी मुख्यता छे, कारण के ते शिवाय ज्ञान अने चारित्र मोक्ष प्राप्त कराववामां असमर्थ छे; आप्रमाणे छे छतां सम्यग्दर्शन अने सम्यग्चारित्रनु मूल कारण सम्यग् ज्ञान छे. जो सम्यग् ज्ञान प्राप्त थाय तो सम्यग् दर्शन अने सम्यग् चारित्र सेहेजे प्राप्त थाय छे, परंतु सम्यक् ज्ञान प्राप्त थवुं ते अति दुर्लभ छे. जुदा जुदा दर्शनना आचार्योनी विद्वत्ता तेउना ग्रंथोनुं अवलोकन करवाथी स्पष्ट रीते मालम पडे छे. जुदा जुदा दर्शनना ग्रंथो अवलोकन करशो तो आपने सिद्ध थशे के सम्यग् ज्ञान मात्र जैनदर्शनना ग्रंथोमांज छे. अवलोकन करती वखते निष्पक्षपात मतिनी पुरी जरूर छे. बी-

जाउ वास्ते तो शुंज वोलवुं, परंतु वेदांतमतना धुरंधर श्री माधवाचार्यें पोताना सर्वदर्शन संग्रह नामना ग्रंथमां जुदा जुदा शोल दर्शनना विचारो वतावेलाछे, एकनुं बीजामां एम उत्तरोत्तर खंडन करेलुं छे, तेमां आर्हत (जैन) दर्शन संबंधी विचारो बतावतां जेजे बाबतोनुं जेजे रूपे खंडन करेलुं छे ते एवुं तो विचित्र छे के, आ प्रसंगे हुं हिंमतथी लखी शकुं छुं के, तेवा महान् आचार्यने पण जैनदर्शननुं यथार्थज्ञान न होतुं. सर्व दर्शनसंग्रहमां आर्हत दर्शननुं स्वरूप वताववामां छ द्रव्यसंबंधी तथा सप्तभंगीसंबंधी विचारो वताव्या छे. छ द्रव्यमां "धर्म अने अधर्म" जे प्रथमना बे द्रव्यो छे, तेनुं स्वरूप तदन असत्य ते स्थले वतावेलुं छे; जैनदर्शननुं सत्यज्ञान जो तेमने होत तो ते बंने पदार्थोनो जेवो तेमणे अर्थ कर्यो छे तेवो करतज नहि; खोटो अर्थ करी असत्य खंडन कर्युं छे. खेर! मात्र तेटलुंज नहि परंतु सप्तभंगीनी गहन शैली पण तेवा विद्वान् आचार्यने समजवामां आवी नथी, छतां "नैकस्मिन्नसंभवात्" एम सूत्र लखी असत्य कल्पनाउ वतावी छे. सप्तभंगीना असत्य खंडननुं खंडन श्रीमद्विजयानंदसूरिजीए वहुज विस्तारथी करेलुं छे जे थोडा वखत पछी छपाववामां आवशे, ते अवलोकन करवाथी वाचकवर्गने सिद्ध थशे के जैनदर्शन अति गहन दर्शन छे, अने तेनुंज यथार्थ ज्ञान ते सम्यग् ज्ञान छे. श्री माधवाचार्य जेवा महान् आचार्यपण जैनदर्शनना परम रहस्यथी अज्ञात हता, तो सामान्य विद्वानो माटे तो शुंज वोलवुं? आमारा लखाणनी साबिती माटे जीज्ञासुए जैनदर्शनना प्रवीण पुरुष पासे जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान नवतत्व प्रमुखनुं प्राप्त करी सर्व दर्शनसंग्रहमां वर्णवेला आर्हत दर्शनसंबंधी विचारो तथा तेनुं खंडन अवलोकन करवुं, आर्यावर्तमां वसनारा तेमज वहारना विद्वानो मध्येनो मोटो भाग वेदांतदर्शनने सर्वोत्तम दर्शन माने छे, परंतु दिलगीरी मात्र ए छे के वेदांतनुं ज्ञान धरावनारा महाविद्वानो पण जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान प्राप्त करवा सारु तेना गहन ग्रंथोनो लेशमात्र अभ्यास करता नथी. जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान पूर्वाचार्य श्रीमद्हरिभद्रसूरि तथा श्रीमद् हेमचंद्राचार्य प्रमुखना रचेला द्रव्यानुयोग संबंधी ग्रंथोनुं सद्गुरु समक्ष अध्ययन करवाथी थाय छे. संस्कृत भाषाना वेत्ताउ, तर्कना नियमो लक्षमां

लइ, पूर्वाचार्यप्रणीत जैनदर्शनना गहन ग्रंथोनुं अध्यन करे छे, त्यारेज तेउने सर्व दर्शनो करतां जैनदर्शननी महत्वतानुं जासन थाय छे. जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान थवा सारू प्राचीन तथा अर्वाचीन महान् आचार्योए अनेक ग्रंथोनी रचना करेली छे; परंतु एवा निःस्वार्थ परोपकारी महात्माउए ज्ञानरूप लक्ष्मी जैनोने वारसामां आपतां उत्तरोत्तर प्राप्त थतां वर्त्तमान कालना जैनोना कवजामां ते एवी तो बंधनमां पडेली छे के, ते ज्ञानरूप लक्ष्मीना उत्तम नगीना अति जीज्ञासुउने पण दृष्टिपथे आववा पामता नथी. आप्रमाणे लखवानो हेतु ए छे के परमकृपालु श्रीमद् विजयानंदसूरिजीने (ग्रंथकर्त्ताने) एक प्रसंगे अमुक शेहेरनो ज्ञान जंडार अवलोकन करवानी जीज्ञासा थइ हती. तेवा धर्मधुरंधर महान् आचार्यने पण त्यांना श्रावकोए ज्ञानजंडार वताववामां आनाकानी करी हती. आवी अज्ञानता ज्यां ज्यां व्यापेली छे, ते ते स्थलना जैनो जैनदर्शननी ज्ञानरूप लक्ष्मीनो सङुपयोग करताज नथी, तेमज वीजा जीज्ञासुउने पण करवा देता नथी. महाविद्वान् आचार्योए परम उपगार बुद्धिए अति प्रयासथी अमूल्य ग्रंथोनी रचना करी जैनीउने जे स्वाधिन करेला छे,ते मात्र सिंडुकमां राखवासारु तेमज वार मासे एक दिवस धूप देवा अने वज नाखवासारु नहि, परंतु नदीना जलनी जेम ज्ञाननी पिपासावालाने तृषा छीपाववासारु प्रगट दृष्टिपथे आवे तेवी रीते राखवासारु स्वाधिन करेला छे. मारो लखवानो हेतु ए छे के जैनदर्शननुं ज्ञान वीजा दर्शनवालाउना ज्ञानना प्रमाणमां बहु अल्प विस्तारमां प्रसिद्धिमां आवेलुं छे. अन्य दर्शनवालाउना जेजे महान् ग्रंथो छे ते सर्वे प्रगट थएला छे, त्यारे जैनदर्शनना महान् ग्रंथो ज्ञानजंडारोमांज मात्र विराजे छे. जुउ सम्मतितर्क, रत्नावतारिका प्रमुख. जैनदर्शनधारी श्रावक समुदायतो आवा अमूल्य ग्रंथोना ज्ञानथी अतिदूर छे. साधु समुदायमां पण विरला छे. सारांश के वर्त्तमान कालना जैनोने ज्ञान प्राप्त करवानी बहुज अल्प जिज्ञासा छे. जैनदर्शनमां सात क्षेत्रमां ड्रव्यनो व्यय करवानी जिनाज्ञा छे. सात क्षेत्रमां ज्ञानक्षेत्रनो समावेश छे; आ क्षेत्र एवुं तो बलवान छे के तेना रक्षण उपर जैनदर्शनना अस्तित्वनो परम आधार छे. ए प्रमाणे जिनाज्ञा छे छतां वर्त्तमान कालना जैनो आ आधारजूत क्षेत्रमां बिलकुल व्यय था-

क्तिना प्रमाणमां करताज नथी. जे कांइ व्यय करे ठे ते वीजाउना प्रमाणमां यत्किंचित् ठे. आ प्रसंगे कोइ सवाल करशे के हालमां जैनशालाउ अनेक स्थले स्थापवामां आवी ठे ते शुं ज्ञानक्षेत्रमां व्यय नथी? उत्तर मात्र एटलोज ठे के ते व्ययनी वीजा क्षेत्रना व्ययनी साथे सरखामणी करशो, त्यारेज यथार्थ समजवामां आवशे. आवी जैनशालाउमां महा विद्वान् शिक्षकोने राखी तीक्ष्ण बुद्धिवाला जैनना वालकोने उत्तरोत्तर गहन ग्रंथोनुं अध्ययन कराववामां पुष्कल द्रव्यनो व्यय करवानी जरूर ठे, एटले सुधी के जे दरज्जो चैत्यक्षेत्र तथा प्रतिमाक्षेत्र वर्त्तमान कालमां प्रकाशित थयेल ठे, ते दरज्जो ज्ञानक्षेत्रने प्रकाशित करवानी जरूर ठे. ज्ञानीने पुष्टि आपवी तेज ज्ञाननी पुष्टि ठे, अने ज्ञानने पुष्टि आपवी ते ज्ञानीने खोराक आपवातुल्य ठे. आ वावतमां वर्तमान कालना अन्यदर्शनीउनी पद्धति तरफ दृष्टि करवी जोइए. अन्यदर्शनोना तमाम महान् ग्रंथो प्रगट थएला ठे. विद्वान् पुरुषो ते प्रगट थएला ग्रंथोनुं अवलोकन करी शके ठे. जेवी ठुट विद्वानोने अन्यदर्शनोना ग्रंथोनी ठे, तेवी जैनदर्शनना ग्रंथोनी नथी. टुंकामां कहीए तो जैनदर्शनना ग्रंथो विलकुल विस्तार पामेला नथी. जे प्रगट थयेला ठे ते पण एवी पद्धतिमां के प्रवेशकने सहायक शिवाय मार्ग पण सूझे नहि. सारांश के जैनदर्शननुं ज्ञान केलवणी रूप थवामां तेवा प्रकारनी रचनानी वर्त्तमानमां अत्यंत खामी ठे. आवी अनेक मुश्केलीउना कारणथी सम्यग्ज्ञान प्राप्त थवुं ते वर्तमान कालना मनुष्योने अति डुर्लज ठे.

सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र ते मोक्षमार्ग एवुं जे प्रथम दर्शावेल ठे तेनो सामान्य अर्थ आ प्रसंगे वताववानी जरूर ठे.

सम्यग् ज्ञान–ते आप्तप्रणीत तत्वस्वरूपनो यथार्थ अववोध.

सम्यग् दर्शन ते आप्त प्रणीत तत्व स्वरूपना यथार्थ अववोधनो अनुजव, वा यथार्थ तत्व रुचि.

सम्यक्चारित्र. ते आत्मस्वरूपमां, कर्मक्षय करवा निमित्ते रमणताकरवी.

सम्यग् दर्शन अने सम्यक् चारित्रनुं विस्तारथी स्वरूप वताववानो आ स्थले प्रसंग नथी. मात्र सम्यग् ज्ञानसंवंधी कांइक लखवानी आ-

वश्यकता छे, तेथी पूर्वाचार्यप्रणीत ग्रंथनुं अनुकरण करी नवतत्वसंबंधी कांइक विचार जाहेर करवा रजा लउं छुं.

व. आप्तप्रणीत तत्व बे छे. १ जीव, २ अजीव. बे तत्वना विस्ताररूप सात छे १ नव तत्व छे. ते आ प्रमाणे १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, ९ मोक्ष. पुण्य, पापने बंधमां अंतर्भाव करवाथी सात तत्व थाय छे.

प्रथम जीवतत्व–जीव शब्द चेतन, आत्मा इत्यादि अर्थवाची छे. जीवतत्वनो यथार्थ अवबोध तेज अति गहन ज्ञान छे. जीवनुं अस्तित्व चेतनारा विद्वानोना विचारमां पण बहुज विचित्रता छे. जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्रयुक्त, सुख दुःख वीर्यवान् छे. भव्यत्व, अभव्यत्व, प्रमेयत्व, सत्व, द्रव्यत्व, प्राणधारित्व, संसारित्व, सिद्धत्व, आदि स्व अने परपर्याय जीवने छे. ज्ञानादि जीवना धर्म छे, तेमना थकी जीव भिन्न पण नथी अने अभिन्न पण नथी, परंतु ते बन्नेथी भिन्न जातिरूप भिन्नाभिन्न छे. जो ज्ञानादि धर्मोथी जीव भिन्न होय तो हुं जाणुं छुं, हुं जोउं छुं, हुं सुखी, हुं दुःखी, हुं भव्य इत्यादि अभेद प्रतिपत्ति न थवी जोइए, अने ते तो प्राणीमात्रने छे; तेमज जो ज्ञानादि धर्मोथी जीव अभिन्न होय तो, आ धर्मी अने आ तेना धर्म छे, एवी भेदबुद्धि न थवी जोइए. माटे ज्ञानादि धर्म थकी भिन्नाभिन्न एवोज जीव मानवो जोइए. वली जीव केवो छे ? कर्मना भेदोनो कर्त्ता छे, तेमज ते कर्मोना फलनो पण भोक्ता छे, चतुर्गतिरूप संसारमां कर्मना संबंधथी परिभ्रमण करनारो छे. तेमज द्वादशविध तपप्रयोगथी सकल कर्मनो क्षय करी सिद्धत्व प्राप्त करनारो छे. आ सर्व लक्षणो जीवना, चेतनना, आत्माना छे. जीव, पृथ्वी, अप, तेउ, वायु वनस्पतिकायनो तेमज बे, त्रण, चार के पांच इंद्रियवालो छे, एम नव प्रकारनो छे. प्रकारांतरे तेना ५६३ भेद पण थाय छे.

बीजुं अजीवतत्व–जीव करतां जेनां लक्षणो विपरीत होय ते अजीव, अज्ञानादि धर्मवान्, रूप, रस, गंध, स्पर्शादिथी भिन्नाभिन्न, नरदेवादि भवांतरमां नहि गमन करनार, ज्ञानावरणीयादि कर्मनो अकर्त्ता, तेमना फलनो अभोक्ता, अने जडस्वरूप, सडन, पडन, विध्वंसनादि धर्मवान्,

ते अजीव छे. तेना धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल अने काल, एवा पांच भेद छे.

त्रीजुं पुण्यतत्व अने चोथुं पापतत्व—सत्कर्मपुद्गल ते पुण्य छे, अने नाथी विपरीत ते पाप छे. पुण्य पापथीज जीवने उत्तरोत्तर सुखदुःख थाय छे. दानादि शुभ क्रिया पुण्यनुं कारण छे; अने हिंसादि अशुभक्रिया पापनुं कारण छे. जीवमात्रमां आत्मत्व तो सरखुंज छे, छतां मनुष्य, पशु आदि देहप्रमुख विचित्रता जे जणाय छे, तेनुं कारण पुण्यपाप छे.

पांचमुं आश्रव तत्व छे. जेनाथी जीवने कर्म प्राप्त थाय ते आश्रव. तेना मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग, आ हेतु छे. असद् देव, गुरु, धर्मने सत् रूपे मानवानी जे बुद्धि ते मिथ्यात्व, हिंसादिथी न विरमवुं ते अविरति, क्रोध, मान, प्रमुख ते कषाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग. सारांश के ज्ञानावरणीयादि कर्म बंधना हेतु ते आश्रव तत्व छे.

छठुं संवर तत्व छे. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग रूप आश्रवनो सम्यग् दर्शन, विरति, क्षमादि अने त्रिगुप्ति आदि धर्मना आचरणथी निरोध अर्थात् निवारण ते संवर. सारांश के जीवने कर्म उपादान हेतुभूत परिणामनो अभाव ते संवर छे.

सातमुं निर्जरा तत्व छे. जीवसाथे बंधायेला ज्ञानावरणीयादि कर्मनुं बार प्रकारना तपथी छुटा पडवुं ते निर्जरा छे तेना बे प्रकार छे. १ सकाम, २ अकाम. अति दुष्करतपश्चर्या करनारा, कायोत्सर्गमां रहेनारा, बावीस परीषह सहनकरनारा, लोचादि काय क्लेश भोगवनारा, अष्टादश शीलांग रथना धारण करनारा, बाह्य, अभ्यंतर सर्व परिग्रहना त्यागनारा, चारित्रीआओ सकाम निर्जरावालां छे. देशविरतिओने पण सकाम निर्जरा थाय छे बाकीनाओ अकाम निर्जरावालां छे.

आठमुं बंध तत्व छे. बंध अर्थात् बंधन, अर्थात् जीव अने कर्मप्रदेश पुद्गलनो क्षीरनीर जेवो संबंध.

सवाल—जीव अने कर्मनो संबंध कंचुकिक अने कंचुकना जेवो छे के अन्य तरेहनो छे ?

उत्तर—कंचुकिक अने कंचुकना जेवो नथी, परंतु अग्नि अने लोहना जेवो तेमज क्षीर अने नीरना जेवो, कर्म अने जीवनो संबंध परस्पर अ-

नुप्रवेशात्मकअर्थात् परिणमन धर्मवालो संबंध छे. आ प्रसंगे कोइ शंका करे के जीवतो अमूर्त छे, तेने हस्त प्रमुख तो छे नहि, एटले लेवा मुकवानी शक्ति पण नथी, तो तेने कर्म ग्रहण केम संजवे ? समाधान ए छे के जीवने अमूर्त कोणे मान्यो छे ? जीवने कर्मनो संबंध अनादि छे, अर्थात् बंने कीरनीरनी जेम एक होय तेम परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे जीव मूर्त होवाथी कर्म ग्रहण करे छे. कर्मने लेवा मुकवामां कांइ हस्त प्रमुखनी जरूर पडती नथी; परंतु राग द्वेष, मोहरूप परिणामनी चीकाशथी, तेलमां पडेला वस्त्रने रज चोटवानी जेम जीव कर्मने ग्रहण करे छे, अने तेनाथीज विपरीत एवा सद् अध्यवसायथी जीव कर्मने मुके छे. सारांश के संसार अवस्थामां जीव मूर्त छे. आवो जे बंध ते प्रकृति, स्थिति, रस अने प्रदेश एवा चार जेदथी प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे प्रकारनो छे.

नवमुं मोक्ष तत्व छे. शरीर, इंद्रिय, आयुष्य आदि बाह्य प्राण, पुण्य, पाप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, पुनर्जन्मग्रहण, वेदत्रय; कषायादि संग, अज्ञान, असिद्धत्व इत्यादि समेत देहादिनो जे आत्यंतिक वियोग ते मोक्ष छे. सारांश के सकल कर्मनुं सर्वथा क्षय लक्षण ते मोक्ष छे.

आ नव तत्वनुं स्वरूप अति सूक्ष्म छे, अति विस्तारवालुं छे अने तेनुं अनुजवरूप स्वरूप समजवामां स्वसंवेदनत्व तथा गुरुगम अववोधनी संपूर्ण आवश्यकता छे. नवतत्वनुं प्रकरण कंठाग्र करवाथी जे पोपटीयुं ज्ञान प्राप्त थाय छे, ते मुमुक्षु थवानी अजिलाषा राखनारा प्राणीउने वस नथी; कारण के शास्त्रमां कह्युं छे के " श्रावक तेजे जाणे तत्व " आ सूत्रनो अर्थ समजनारा एम मानता होय के अमे नवतत्व कंठे कर्यां एटले श्रावक थया, तो एवुं तेमनुं मानवुं यथार्थ नथी. ज्यारे तत्वनुं स्वरूप यथार्थ रीते जाणवामां आवे अने ते प्रमाणे गुण धारण करवामां आवे त्यारेज श्रावकपणुं प्राप्त थाय छे. तेवी अजिलाषा धारण करनारा उत्तम जीवोना हीतने अर्थे परम कृपालु महाराजे अनेक प्राचीन, अर्वाचीन महान ग्रंथकारोना अति उत्तम ग्रंथोमांथी जीन वचनामृतनुं दोहन करी आ जैनतत्वादर्श ग्रंथरूप क्यारीमां तेनुं सिंचन करेल छे. ग्रंथकर्त्ताए आ ग्रंथनुं नाम " जैनतत्वादर्श आपेलुं छे ते यथार्थ छे, कारण के आ ग्रंथना अ-

ते अजीव छे. तेना धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल अने काल, एवा पांच भेद छे.

त्रीजुं पुण्यतत्व अने चोथुं पापतत्व–सत्कर्मपुद्गल ते पुण्य छे, अने ए नाथी विपरीत ते पाप छे. पुण्य पापथीज जीवने उत्तरोत्तर सुखदुःख प्राप्त थाय छे. दानादि शुभ क्रिया पुण्यनुं कारण छे; अने हिंसादि अशुभक्रिया पापनुं कारण छे. जीवमात्रमां आत्मत्व तो सरखुंज छे, छतां मनुष्य, पशु आदि देहप्रमुख विचित्रता जे जणाय छे, तेनुं कारण पुण्यपाप छे.

पांचमुं आश्रव तत्व छे. जेनाथी जीवने कर्म प्राप्त थाय ते आश्रव. तेना मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग, आ हेतु छे. असद् देव, गुरु, धर्मने सद् रूपे मानवानी जे बुद्धि ते मिथ्यात्व, हिंसादिथी न विरमवुं ते अविरति, क्रोध, मान, प्रमुख ते कषाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग. सारांश के ज्ञानावरणीयादि कर्म बंधना हेतु ते आश्रव तत्व छे.

छठुं संवर तत्व छे. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग रूप आश्रवनो सम्यग् दर्शन, विरति, क्षमादि अने त्रिगुप्ति आदि धर्मना आचरणथी निरोध अर्थात् निवारण ते संवर. सारांश के जीवने कर्म उपादान हेतुभूत परिणामनो अभाव ते संवर छे.

सातमुं निर्जरा तत्व छे. जीवसाथे बंधायेला ज्ञानावरणीयादि कर्मनुं बार प्रकारना तपथी छुटा पडवुं ते निर्जरा छे तेना बे प्रकार छे. १ सकाम, २ अकाम. अति दुष्करतपश्चर्या करनारा, कायोत्सर्गमां रहेनारा, बावीस परीषह सहनकरनारा, लोचादि काय क्लेश भोगवनारा, अष्टादश शीलांग रथना धारण करनारा, बाह्य, अभ्यंतर सर्व परिग्रहना त्यागनारा, चारित्रीआओ सकाम निर्जरावालां छे. देशविरतिओने पण सकाम निर्जरा थाय छे बाकीनाओ अकाम निर्जरावालां छे.

आठमुं बंध तत्व छे. बंध अर्थात् बंधन, अर्थात् जीव अने कर्मप्रदेश पुद्गलनो क्षीरनीर जेवो संबंध.

सवाल–जीव अने कर्मनो संबंध कंचुकिक अने कंचुकना जेवो छे के अन्य तरेहनो छे?

उत्तर–कंचुकिक अने कंचुकना जेवो नथी, परंतु अग्नि अने लोहना जेवो तेमज क्षीर अने नीरना जेवो, कर्म अने जीवनो संबंध परस्पर अ-

नुप्रवेशात्मकअर्थात् परिणमन धर्मवालो संबंध छे. आ प्रसंगे कोइ शंका करे के जीवतो अमूर्त छे, तेने हस्त प्रमुख तो छे नहि, एटले लेवा मुकवानी शक्ति पण नथी, तो तेने कर्म ग्रहण केम संभवे ? समाधान ए छे के जीवने अमूर्त कोणे मान्यो छे ? जीवने कर्मनो संबंध अनादि छे, अर्थात् बंने क्षीरनीरनी जेम एक होय तेम परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे जीव मूर्त होवाथी कर्म ग्रहण करे छे. कर्मने लेवा मुकवामां कांइ हस्त प्रमुखनी जरूर पडती नथी; परंतु राग द्वेष, मोहरूप परिणामनी चीकाशथी, तेलमां पडेला वस्त्रने रज चोटवानी जेम जीव कर्मने ग्रहण करे छे, अने तेनाथीज विपरीत एवा सद् अध्यवसायथी जीव कर्मने मुके छे. सारांश के संसार अवस्थामां जीव मूर्त छे. आवो जे बंध ते प्रकृति, स्थिति, रस अने प्रदेश एवा चार भेदथी प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे प्रकारनो छे.

नवमुं मोक्ष तत्व छे. शरीर, इंद्रिय, आयुष्य आदि बाह्य प्राण, पुण्य, पाप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, पुनर्जन्मग्रहण, वेदत्रय; कषायादि संग, अज्ञान, असिद्धत्व इत्यादि समेत देहादिनो जे आत्यंतिक वियोग ते मोक्ष छे. सारांश के सकल कर्मनुं सर्वथा क्षय लक्षण ते मोक्ष छे.

आ नव तत्वनुं स्वरूप अति सूक्ष्म छे, अति विस्तारवालुं छे अने तेनुं अनुभवरूप स्वरूप समजवामां स्वसंवेदनत्व तथा गुरुगम अवबोधनी संपूर्ण आवश्यकता छे. नवतत्वनुं प्रकरण कंठाग्र करवाथी जे पोपटीयुं ज्ञान प्राप्त थाय छे, ते मुमुक्षु थवानी अभिलाषा राखनारा प्राणीओने बस नथी; कारण के शास्त्रमां कह्युं छे के " श्रावक तेजे जाणे तत्व " आ सूत्रनो अर्थ समजनारा एम मानता होय के अमे नवतत्व कंठे कर्यां एटले श्रावक थया, तो एवुं तेमनुं मानवुं यथार्थ नथी. ज्यारे तत्वनुं स्वरूप यथार्थ रीते जाणवामां आवे अने ते प्रमाणे गुण धारण करवामां आवे त्यारेज श्रावकपणुं प्राप्त थाय छे. तेवी अभिलाषा धारण करनारा उत्तम जीवोना हीतने अर्थे परम कृपालु महाराजे अनेक प्राचीन, अर्वाचीन महान ग्रंथकारोना अति उत्तम ग्रंथोमांथी जीन वचनामृतनुं दोहन करी आ जैनतत्वादर्श ग्रंथरूप क्यारीमां तेनुं सिंचन करेल छे. ग्रंथकर्त्ताए आ ग्रंथनुं नाम " जैनतत्वादर्श आपेलुं छे ते यथार्थ छे, कारण के आ ग्रंथना अ-

ध्ययन करनार, आदर्श (आरीसा) मां जोनार जेम पोताना प्रतिबिंबने जुए छे, तेम आ ग्रंथरूप आदर्शमां तत्व स्वरूप जुए छे.

आ प्रसंगे मारे जणाववुं जोइए के, मात्र सांसारिक विद्याना अभ्यासीओ वारंवार एवो सवाल करे छे के अमोने जैनदर्शननुं ज्ञान मेलववानी तो बहुज जीज्ञासा थाय छे, परंतु पद्धतिप्रमाणे ज्ञान प्राप्त करवानुं कोइपण ग्रंथकारे अत्यारसुधीमां एक पण साधन योजेलुं होय तेम अमारी नजरे आवतुं नथी. तेवा जीज्ञासुओने मारी नम्र विनंति एवी छे के सांसारिक तत्वनुं ज्ञान एकडेएकथी ते महान पाठशालाओनी उंचा प्रकारनी केलवणी सुधी प्राप्त करतां केटलां वर्षो व्यतीत थाय छे, तेमां जेवी धीरज अने खंत राखो छो, तेना करतां आ अति गहन धर्मतत्व विषयमां विशेष धीरज अने खंत राखवानी जरूर छे. तत्वज्ञाननी जीज्ञासावालाने शरुआत करवामां आ ग्रंथ अति उत्तम छे; ज्यां ज्यां पारिभाषिक कठिनता लागे, त्यां त्यां तत्ववेत्ताओनी सहाय लेवी. तत्वनुं ज्ञान लेशमात्र नहि छतां मात्र सांसारिक विद्याना कारणथी पोताने कृतकृत्य मानवा ते मिथ्याभिमान छे. सांसारिक विद्या ऐहिक सुखनां साधनोनी योजना करी आपे छे, परंतु आमुष्मिक सुखनां साधनो योजवामां तो तत्वविद्यानुंज साम्राज्य छे. सांसारिक विद्याना उत्कर्षरूप ज्वरने शांत करवामां आ ग्रंथ परम औषध छे.

आ ग्रंथ हिंदुस्तानी भाषामां ग्रंथकर्त्ताए रचेलो छे, तेनुं गुजराती भाषामां भाषान्तर करी आपवानी मने मारा मित्रोए तथा गुरुराजना केटलाएक शिष्योए भलामण करी. में तेमने कह्युं के हिंदुस्तानी भाषामां जे खुबी समायेली छे, ते गुजराती भाषामां कोइपण रीते आववानी नथी. छतांपि तेमनो आग्रह एवो थयो के काठीआवाड गुजरातना बहु लोको हिंदुस्तानी भाषा बराबर समजी शकता नथी, तेओना हीतने अर्थे भाषान्तर करी आपो, ते कारणथी आ भाषान्तर मारी अल्पमति अनुसार में कर्युं छे. आ भाषान्तरमां जेजे स्थले भूल चूक मालम पडे ते सर्व सुज्ञजनोए सुधारी वांचवा कृपा करवी. एज विनंति.

ली. भाषान्तर कर्त्ता.

॥ आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका लखीये ठीये ॥

॥ प्रथम परिछेदमां देवतत्वनुं स्वरूप ठे तेनी अनुक्रमणिका लखीये ठीये ॥

॥ वीजा परिछेदमां कुदेवनुं स्वरूप ठे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

ध्ययन करनार, आदर्श (आरीसा) मां जोनार जेम पोताना प्रतिबिंबने जुए ले, तेम आ ग्रंथरूप आदर्शमां तत्व स्वरूप जुए ले.

आ प्रसंगे मारे जणाववुं जोइए के, मात्र सांसारिक विद्याना अभ्यासीओ वारंवार एवो सवाल करे ले के अमोने जैनदर्शननुं ज्ञान मेलववानी तो बहुज जीज्ञासा थाय ले, परंतु पद्धतिप्रमाणे ज्ञान प्राप्त करवानुं कोइपण ग्रंथकारे अत्यारसुधीमां एक पण साधन योजेलुं होय तेम अमारी नजरे आवतुं नथी. तेवा जीज्ञासुओने मारी नम्र विनंति एवी ले के सांसारिक तत्वनुं ज्ञान एकडेएकथी ते महान पाठशालाओनी उंचा प्रकारनी केलवणी सुधी प्राप्त करतां केटलां वर्षो व्यतीत थाय ले, तेमां जेवी धीरज अने खंत राखो लो, तेना करतां आ अति गहन धर्मतत्व विषयमां विशेष धीरज अने खंत राखवानी जरूर ले. तत्वज्ञाननी जीज्ञासावालाने शरुआत करवामां आ ग्रंथ अति उत्तम ले; ज्यां ज्यां पारिजाषिक कठिनता लागे, त्यां त्यां तत्ववेत्ताओनी सहाय लेवी. तत्वनुं ज्ञान लेशमात्र नहि बतां मात्र सांसारिक विद्याना कारणथी पोताने कृतकृत्य मानवा ते मिथ्याजिमान ले. सांसारिक विद्या ऐहिक सुखनां साधनोनी योजना करी आपे ले, परंतु आमुष्मिक सुखनां साधनो योजवामां तो तत्वविद्यानुंज साम्राज्य ले. सांसारिक विद्याना उत्कर्षरूप ज्वरने शांत करवामां आ ग्रंथ परम उषध ले.

आ ग्रंथ हिंडुस्तानी जाषामां ग्रंथकर्त्ताए रचेलो ले, तेनुं गुजराती जाषामां जाषान्तर करी आपवानी मने मारा मित्रोए तथा गुरुराजना केटलाएक शिष्योए जलामण करी. में तेमने कह्युं के हिंडुस्तानी जाषामां जे खुबी समायेली ले, ते गुजराती जाषामां कोइपण रीते आववानी नथी. बतांपि तेमनो आग्रह एवो थयो के काठीआवाड गुजरातना बहु लोको हिंडुस्तानी जाषा बराबर समजी शकता नथी, ते वाउना हीतने अर्थे जाषान्तर करी आपो, ते कारणथी आ जाषान्तर मारी अल्पमति अनुसार में कर्युं ले. आ जाषान्तरमां जेजे स्थले जूल चूक मालम पडे ते सर्वे सुज्ञजनोए सुधारी वांचवा कृपा करवी. एज विनंति.

ली. जाषान्तर कर्त्ता.

॥ आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका लखीये ठीये ॥

॥ प्रथम परिछेदमां देवतत्वनुं स्वरूप ठे तेनी अनुक्रमणिका लखीये ठीये ॥

॥ बीजा परिछेदमां कुदेवनुं स्वरूप ठे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ त्रीजा परिच्छेदमां गुरुतत्वनुं स्वरूप कहेल ठे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ पांचमा परिच्छेदमां शुद्ध धर्मतत्त्वनुं स्वरूप कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ सातमा परिच्छेदमां सम्यग् दर्शननुं स्वरूप लखेलछे, तेनी अनुक्रमणिका॥

॥ आठमा परिछेदमां चारित्रनुं स्वरूप कहेल ठे, तेनी अनुक्रणिका ॥

नवमा परिछेदमां श्रावकोनो दिनकृत्य विधि कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका.

दशमा परिछेदमां रात्रिकृत्यादिक पांच कृत्यो कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका.

॥ अगीयारमां परिछेदमां श्री रुषजादिथी महावीरपर्यंत जैनमतादि शास्त्रोना अनुसारे इतिहास कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका. ॥

॥ बारमां परिछेदमां श्री महावीर जगवानथी लइने आज पर्यंत केटलुंक वृतांत लखेल ठे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ ॐ नमः स्याद्वादवादिने ॥

॥ अथ तपागच्छीय ॥

॥ मुनिश्री आनंदविजय (आत्मारामजी) विरचित ॥

॥ जैनतत्त्वादर्श नामक ग्रंथ प्रारंभः ॥



॥ तत्र प्रथम परिच्छेद ॥

॥ अनुष्टुब् वृत्तम् ॥

स्यात्कारमुद्रितानेक, सदसद्भाववेदिनम् ॥
प्रमाणरूपमव्यक्तं, भगवंतमुपास्महे ॥ १ ॥

प्रथम देव, गुरु अने धर्म, आ त्रण तत्वोनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए. विदित करीए छीए के आ जैनमतनुं स्वरूप श्रीतीर्थंकर, गणधर तेमज पूर्वाचार्य आदि पुरुषोए, आगम निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका तेमज प्रकरणो अने तर्कशास्त्रादि अनेक ग्रंथोनी रचना करी स्पष्ट बतावेल छे; परंतु पूर्वाचार्य रचित ते सर्व ग्रंथो प्राकृत तेमज संस्कृत भाषामां होवाथी तेमज वर्तमान कालमां जैनिउंना विद्याभ्यासमां उद्यमनो अभाव होवाथी ते अत्यंत उत्तम ग्रंथोनो आशय नाश पामवा योग्य थयेल छे. तेथी केटलाएक भव्य जीवोनी प्रेरणाथी तथा स्वकर्मनिर्जराना हेतुथी जेउंने संस्कृत तेमज प्राकृत कठिन लागेछे तेमना उपकार माटे देव, गुरु अने धर्मनुं कांइक स्वरूप भाषामां (गुजरातीमां) लखीए छीए.

श्रीसंघना वाचक वर्गने नम्रतापूर्वक विनति छे के आ ग्रंथमां जैन मार्गथी विपरीत ज्यां माराथी लखायुं होय त्यां यथार्थ जे होय ते बतावशे तो तेउंनो मारा उपर अत्यंत उपकार थशे; आ कालमां लोकोए स्वकपोलकल्पित घणां नवीन मतो प्रगट करेलछे तथा अंग्रेजी अने फारसी विद्याभ्यासथी तथा अनेक मत मतांतरोनी वातो श्रवण करवाथी अनेक भव्यजीवोने अनेक तरेहना संशय उत्पन्न थया करेछे,ते दूर करवाने कांइक लखवुं एज आ ग्रंथ लखवानो उद्देशछे. प्रथम कहेलां त्रण तत्वो मध्येथी देव तत्वनुं स्वरूप नीचे मुजब—

देव नाम परमेश्वरनुं छे. ते परमेश्वरना स्वरूपमां अनेक प्रकारना विकल्प मतांतरी पुरुषो करेछे. जैनमतमां परमेश्वरनुं स्वरूप केवुं कथन करेलछे, ते नाम, रूप तेमज विशेषणसंयुक्त बतावुंछुं. जैनमतमां जे परमेश्वर मानेलछे. ते बार गुण सहित तेमज अढार दोषरहित अर्हंत परमेश्वर छे. अने जे परमेश्वर बार गुण रहित तेमज अढार दोष सहित हशे तेनामां परमेश्वरता कदापि सिद्ध थशे नहि. आ विवेचन आगल करवामां आवशे.

प्रथम बार गुण तेमां अशोक वृक्षादि अष्ट महाप्रातिहार्य सर्व जैन समुदायमां प्रसिद्ध छे ते तथा चार मूल अतिशय ए रीते बार गुण ए बार गुणमध्येना चार मूल अतिशयनां नाम (१) ज्ञानातिशय (२) वागतिशय (३) अपायापगमातिशय (४) पूजातिशय प्रथम ज्ञानातिशयनुं स्वरूप आ प्रमाणे केवलज्ञान तथा केवल दर्शनेंकरी भूत, भविष्य, वर्तमानकालमां जे सामान्य विशेषात्मक वस्तु छे तेनुं, तथा उत्पाद, व्यय, ध्रौव्ययुक्त त्रिकाल संबंधी जे सत् वस्तुउनुं, जाणवुं तेनुं नाम ज्ञानातिशय बीजो वचनातिशय तेमां भगवंतनां वचन पांत्रीश अतिशयें युक्त होय छे. ते पांत्रीश अतिशयोनुं स्वरूप आ प्रमाणे (१) संस्कारवत्त्वं (संस्कृतादि लक्षण युक्त) (२) औदात्त्यं (शब्दमां उच्चपणुं) (उपचार परीतता) (३) अग्राम्यत्वं (गामडाना रेहेनार पुरुषना वचन समान जेमनुं वचन नहि) (४) मेघगंभीरघोषत्वं (मेघनी समान गंभीर शब्द) (५) प्रतिनाद विधायिता (सर्ववाजीत्रोनी साथ मलता शब्द) (६) दक्षिणत्वं (वचननी सरलतासंयुक्त) (७) उपनीतरागत्वं (मालकोशादि ग्राम राग संयुक्त) आ सात अतिशय शब्दनी अपेक्षाथी जाणवा—बाकीना बीजा अतिशयो अर्थ आश्रय जाणवा (८) महार्थता (अत्यंत मोटो जेमां अभिधेय केहेवा योग्य अर्थ छे) (९) अव्याहतत्वं (पूर्वापरविरोध रहित) (१०) शिष्टत्वं (अभिमत सिद्धांत उक्त अर्थता) एटले के अभिमत सिद्धांतनुं जे केहेवुं ते वक्ताना शिष्टपणानुं सूचक छे (११) संशयानामसंभवः (जेना कथनमां श्रोताने संशय थतो नथी) (१२) निराकृताऽन्योत्तरत्वं जेना कथनमां कोइपण दूषण नहि, श्रोताने संशय उत्पन्न थाय नहि तेम भगवान् बीजीवार उत्तर दे नहि) (१३) हृदय गमता (हृदयमां ग्रहणकरवा योग्य) (१४) मिथः साकांक्षता (अरस पर

स पद वाक्योनुं सापेक्षपणुं) (१५) प्रस्तावौचित्यं (देशकाल युक्त, विरूद्धनहिं) (१६) तत्त्वनिष्ठता (विवक्षित वस्तुना स्वरूपने अनुसरवापणुं) (१७) अप्रकीर्ण प्रसृतत्वं (सुसंबंधनो विस्तारअथवा असंबंध अधिकारनो अतिविस्तार नहि) (१८) अस्वश्लाघाऽन्यनिंदता (आत्मोत्कर्ष तथा परनिंदा रहित) (१९) आभिजात्यं (प्रतिपाद्य वस्तुनी भूमिकाने अनुसरवारूप) (२०) अति स्निग्ध मधुरत्वं (घीगोलनी पेठे सुखकारी)(२१) प्रशस्यता (कहेला गुणोनी योग्यताथी प्राप्त थइ छे श्लाघा) (२२) अमर्मवेधिता (पारकां मर्म जेमां उघाड्यां होय नहि) (२३) औदार्य (अभिधेय अर्थनुं तुच्छपणुं नहि) (२४) धर्मार्थप्रतिबद्धता (धर्म तेमज अर्थ संयुक्त) (२५) कारकाद्यविपर्या (कारक, काल, वचन तेमज लिंगादि ज्यां विपर्यय नहि) (२६) विभ्रमादिवियुक्तता (वक्ताना मनमां भ्रांति विक्षेपादि दोष रहित) (२७) चित्रकृत्त्व (कुतूहल पणानो जेमां अभाव छे) (२८) अद्भुतत्वं (अद्भुतपणुं) (२९) अनतिविलंबिता (अति विलंब रहित) (३०) अनेकजाति वैचित्र्य (जाति आदि वर्णन करवा योग्य वस्तु स्वरूपना आश्रय युक्त) (३१) आरोपिता विशेषता (वचनांतरनी अपेक्षाथी विशेषपणुं जेमां स्थापन थयेल छे) (३२) सत्त्वप्रधानता (साहस करी संयुक्त) (३३) वर्णपदवाक्य विविक्तता (वर्णादिनुं विछिन्नपणुं) (३४) अव्युछित्तिः (विवक्षित अर्थनी सम्यक् प्रकारें सिद्धि ज्यां सुधी न थाय त्यां सुधी अव्यवछिन्न वचननुं प्रमेयपणुं) (३५) अखेदित्वं (श्रमरहित) भगवंतना बीजा वचनातिशयना ए पांत्रीशभेद–त्रीजो अपायापगमातिशय एटले उपद्रव निवारक. चोथो पूजातिशय. जेथी भगवान् त्रण लोकना पूजनीय छे. आ बे अतिशयना विस्ताररूप चोत्रीश अतिशय छे. ते आ प्रमाणे.

(१) तीर्थंकर भगवानना देहनुं रूप तथा सुगंध सर्वथी उत्कृष्ट तेमज रोग, परसेवो अने मलें करी रहित शरीर (२) श्वास निःश्वास पद्मकमलना जेवो सुगंधमय (३) रुधिर अने मांस गायना दुध जेवुं उज्वल (४) आहार निहारनो विधि चर्मचक्षु वालां देखे नहि. आचार अतिशय जन्मथीज (१) एक योजन समवसरणनुं क्षेत्र छतां देवता, मनुष्य, तिर्यंचोनी कोडाकोडी पण ज्यां समाइशके अने भीड थाय नहि (२) वाणी

नाषा अर्धमागधी, देवता, मनुष्य अने तिर्यंचोने पोतपोतानी नाषामां समजाइ जाय तेमज एक योजन सुधी सांजली शकाय (३) प्रनामंरूल मस्तकना पाछलना नागमां सूर्यना बिंबोनी साथे जाणे हरीफाइ करतुं होयनी! पोतानी शोनायुक्त मनोहर नामंरूल शोने ले (४) चारे दिशामां साडीपचवीश योजन सुधी उपद्रव रूप ज्वरादि रोग होय नहि (५) वैर (परस्पर विरोध होय नहि) (६) (इति) धान्यने उपद्रव कारी उंदरादि न होय (७) मारिमरीनो उपद्रव न होय (८) (अति वृष्टि) निरंतर वरसाद नहि (९) (अवृष्टि) वरसादनो अनाव नहि (१०) दुर्निक्ष न होय (११) स्वचक्र परचक्रनो नय न होय. आ अगीयार अतिशय ज्ञानावरणीय आदि चार घातिकर्मना क्षयथी उत्पन्न थाय ले. (१) आकाशमां धर्मप्रकाशक चक्र चाले ले. (२) आकाशमां चामर विंजाय ले (३) आकाशमां पादपीठ सहित स्फटिकमय सिंहासन होय ले (४) आकाशमां त्रण छत्र (५) रत्न मय ध्वज फरके ले (६) नगवान् ज्यारे चाले ले त्यारे पगनी नीचे सुवर्ण कमल देवता रचे ले (७) समवसरणमां रत्न, सुवर्ण अने रूपामय त्रणकोट मनोहर होय ले (८) समवसरणमां प्रजुनां चार मुख देखाय ले (९) अशोक वृक्ष छाया करे ले (१०) कांटा अधोमुख थइ जाय ले (११) वृक्षो एवी रीते नमी जाय ले के जाणें नमस्कार करतां होय (१२) उच्चनादें डुंडुनि नुवनव्यापक नाद ध्वनि करे ले. (१३) पवन सुखदायक वाय ले. (१४) पक्षी प्रदक्षिणा दे ले (१५) सुगंधमय पाणीनो वरसाद थाय ले. (१६) ढींचण प्रमाण पांच वर्णना फुलनो वरसाद थाय ले. (१७) केश दाढी मुछ अवस्थित रहे ले (१८) चार प्रकारना देवता जघन्यथी जघन्य एक क्रोड नगवंतनी पासे रहे ले. (१९) छ ए ऋतु सानुकूल शुनस्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्दयुक्त; अशुन नाश पामे ले अने सुंदर प्रगट थाय ले. आ उंगणीश अतिशय देवकृत ले. मतांतर तथा वांचनांतरमां कोइ कोइ अतिशय अन्यतरेहथी ले. पूर्वोक्त चार मूल अतिशय अने आठ महाप्रातिहार्य मली बार गुणमय विराजमान अर्हंत नगवंत परमेश्वर ले तेज अढारे दोषरहित ले तेथी अढारदोषनुं वर्णन आ प्रमाणेः—

श्लोक ॥ अंतरायदानलान, वीर्यनोगोपनोगगाः ॥ हासोरत्यरती नीति,

जुगुप्सा शोकएव च ॥२॥ कामोमिथ्यात्वमज्ञानं, निद्रा च विरतिस्तथा॥ रागोद्वेषश्च नो दोषा, स्तेषामष्टादशाऽप्यमी ॥ १ ॥ अर्थ (१) दान देवामां अंतराय,(२) लाभगत अंतराय, (३) वीर्यगत अंतराय. (४) जे एक वखत भोगववामां आवे ते भोग, पुष्पमालाप्रमुख तद्गत अंतराय ते भोगांतराय (५) वारंवार भोगववामां आवे जेम के स्त्री, घर, कंकण, कुंडलादि तद्गत अंतराय ते उपभोगांतराय, (६) हास्य (७)(रति)पदार्थोपर प्रीति (८) अरति (रतिथी विपरीत) (९) सात प्रकारना भय. (१०) जुगुप्सा–मलीन वस्तुने देखी नाक मचकोडवुं. (११) शोक–चित्तनुं विकलपणुं (१२) काम–स्त्री, पुरुष, नपुंसक ए त्रणेनो वेदविकार (१३) मिथ्यात्व–दर्शनमोह (१४)अज्ञान–मूढपणुं (१५) निद्रा (१६) अविरति–प्रत्याख्याननो अभाव (१७) राग–पूर्वसुखना साधनमां गृद्धिपणुं (१८) द्वेष–पूर्व दुःखोनुं स्मरण तेमज पूर्व दुःखमां अथवा तेना साधनमां क्रोध–आ अढार दूषण जेमां न होय ते अर्हंत, भगवंत, परमेश्वर छे. ए अढार दूषणोमांथी एक पण दूषण जेमां होय ते कदापि अर्हंत, भगवंत, परमेश्वर होइ शके नहि. प्रथमना पांच विघ्नो जेमां लागी रहेल छे ते परमेश्वर केवी रीते होइ शके ?

प्रश्न–दानांतरायनो नाश थवाथी शुं परमेश्वर दान दे छे ? तेमज लाभांतरायनो नाश थवाथी परमेश्वरने शुं लाभ प्राप्त थाय छे ? तथा वीर्यांतरायनो नाश थवाथी परमेश्वर शुं शक्ति बतावे छे ? तथा भोगांतरायनो नाश थवाथी शुं परमेश्वर भोग करे छे ? अने उपभोगांतरायनो क्षय थवाथी शुं परमेश्वर उपभोग करे छे ?

उत्तर–पूर्वोक्त पांच विघ्न क्षय थवाथी भगवंतमां पांच शक्तिओ प्रगट थाय छे. जेम निर्मल चक्षुओनी आडां आवेलां पडलादि नाश पामवाथी जोवानी शक्ति प्रगट थाय छे तेम– मरजी होय तो देखे अथवा न देखे परंतु देखवानी शक्ति विद्यमान छे; तेवीज रीतें अर्हंत भगवंतने पांच शक्तिओ प्रगट थाय छे, पछी मरजी होयतो दानादि करे अथवा न करे परंतु शक्ति विद्यमान छे, जे पूर्वोक्त पांच शक्तिओथी रहित छे ते परमेश्वर केवी रीते होइ शके ?

६ हास्य–हसवुं जे आवेछे ते अपूर्व वस्तु देखवाथी अथवा अपूर्व

वस्तु सांजलवाथी अथवा अपूर्व आश्चर्यना अनुजवनुं स्मरण थवाथी. ए विगेरे हास्यनां निमित्तछे; तेमज मोहकर्मनी प्रकृति हास्यनुं उपादान कारणछे तेथी ए बंने कारण अर्हंत जगवंतमां नथी. प्रथमना निमित्त कारणनो अर्हंत जगवंतमां संजवज केम होय, कारण के अर्हंत जगवंत सर्वज्ञ सर्वदर्शी छे तेमना ज्ञानमां एवी अपूर्व वस्तु नथी के जेने देखवाथी सांजलवाथी के अनुजववाथी आश्चर्य उत्पन्न थाय, तेथी हास्यनुं निमित्त कारण कांइ नथी; अने मोहकर्म तो अर्हंत जगवंतें सर्वथा क्षय कर्युंछे तेथी उपादान कारणनो पण संजव नथी. ए हेतुथी अर्हंतमां हास्यरूप दूषण नथी. जे हसनशील हशे ते अवश्य असर्वज्ञ, असर्वदर्शी तेमज मोहयुक्त हशे तेथी ते परमेश्वर केम होइ शकशे ?

७ रति–जेनी प्रीति पदार्थो उपर होय ते अवश्य सुंदर शब्द,रूप,रस, गंध,स्पर्श,स्त्री आदि उपर प्रीतिमान् होय, जे प्रीतिमान् होय ते अवश्य ते पदार्थनी लालसावाला होय अने जे लालसावाला होय ते अवश्य ते पदार्थनी अप्राप्तिथी दुःखी होय, ते अर्हंत परमेश्वर केवी रीतें होइ शके?

८ अरति–जेनी पदार्थो उपर अप्रीति होय ते तो पोतेज अप्रीति रूप दुःखें करी दुःखी छे ते अर्हंत जगवंत केवीरीतें होइ शके ?

९ जय–जेणें पोतानोज जय दूर कर्यो नहि ते अर्हंत जगवंत केम होइ शके?

१० जुगुप्सा–मलीन वस्तु देखीने नाक चढाववुं. परमेश्वरना ज्ञानमां सर्ववस्तुनुं जासन थाय छे. जो परमेश्वरमां जुगुप्सा होय तो अत्यंत दुःख होय तेथी जुगुप्सावंत अर्हंत जगवंत केम होइ शके ?

११ शोक–जे पोतेज शोक वालोछे ते परमेश्वर केम होय ?

१२ काम–जे पोतेज विषयीछे, स्त्रियोनी साथे जोग करे छे एवा विषयाजिलाषीने कयो बुद्धिमान् पुरुष परमेश्वर माने ?

१३ मिथ्यात्व–जे दर्शनमोहें करी लेपायेल छे ते जगवंत नहीं.

१४ अज्ञान–जे पोतेज मूढ छे ते जगवंत नहीं.

१५ निद्रा–जेने निद्रा आवे छे ते निद्रामां केटलुंएक जाणता नथी. तेथी निद्रावान्, अर्हंत जगवंत सदा सर्वज्ञ, केम होइ शके?

१६ अप्रत्याख्यान–जे प्रत्याख्यानरहितछे ते सर्वाजिलाषी छे तेथी तृष्णावाला अर्हंत जगवंत केम होइ शके ?

१७-१८ राग अने द्वेष- रागद्वेषवान् मध्यस्थ होइ शकता नथी. तेमज रागीद्वेषीमां क्रोध, मान, मायानो संजवछे. जगवान् वीतराग, समशत्रुमित्र, सर्वजीवपर समबुद्धि न कोइने दुःखी अथवा सुखी करे जो दुःखी सुखी करे तो वीतराग करुणासमुद्र कदापि न होइ शके, ए कारणथी राग द्वेष वाला अर्हंत जगवंत परमेश्वर नहीं. पूर्वोक्त अढार दूषणरहित अर्हंत जगवंत परमेश्वर छे, बीजा कोइ परमेश्वर नथी.

अथ अर्हंतनां नाम बे श्लोकथी लखीए छीए. "अर्हन् जिनः पारगतस्त्रिकालवित्, क्षीणाष्टकर्मा परमेष्ठ्यऽधीश्वरः ॥ शंजुः स्वयंजूर्जगवान् जगत्प्रजु, स्तीर्थंकरस्तीर्थंकरोजिनेश्वरः ॥ १ ॥ स्याद्वाद्यऽजयदसर्वाः, सर्वज्ञः सर्वदर्शिकेवलिनौ ॥ देवाधिदेवबोधिद, पुरुषोत्तमवीतरागाप्ताः॥२॥ अर्थ-चोत्रीश अतिशयें करी सर्वथी अधिक होवाथी सुरेंद्र आदिएं करेली अष्ट महाप्रातिहार्य तथा जन्म स्नात्रादि पूजाने जे पात्र छे ते अर्हन् अथवा ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मरूप शत्रुर्उनो नाश करवाथी अर्हन् अथवा बांधेली कर्मरजनो नाश करवाथी अर्हन् अथवा कोइ पदार्थ जेना ज्ञानमां गुप्त नथी ते अर्हन् तथा नामांतरथी अरुहन् जेने जवरूप अंकुर उत्पन्न थवानो नथी ते (२) जीत्यां छे राग द्वेष मोहादि अढार दूषणो जेणें ते जिन (३) संसारना तेमज प्रयोजन मात्रना अंतने जे प्राप्त थया छे एटले के संसारमां जेने कोइ प्रयोजन नथी ते पारगत (४) जूत, जविष्य, वर्तमान ए त्रणे कालने जे जाणे ते त्रिकालवित् (५) क्षय थयां छे आठ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जेनां ते क्षीणाष्टकर्मा (६) परम उत्कृष्ट पदमां जे रहे ते परमेष्ठी (७) जगतना ईश्वर ते अधीश्वर (८) शाश्वत सुखमां जे होय ते शंजु (९) पोते पोतानाज आत्माथी तथा जव्यत्व आदि सामग्रीनी परिपक्वताथी तथा बीजाना उपदेश विना होय ते स्वयंजु (आ कथन तेज जवनी अपेक्षानुं छे) (१०) जग शब्दना चौद अर्थ छे तेमांथी अर्क अने योनि ए बे अर्थ वाद करीने बार अर्थवंत जे होइ शके छे. तेनां नाम (१) ज्ञानवंत (२) माहात्म्यवंत (३) शाश्वत वैरियोना वैर उपशमाववाथी यशस्वी (४) राज्य लक्ष्मीनो त्याग करवाथी वैराग्यवंत (५) मुक्तिवंत (६) रूपवंत (७) अनंत बल होवाथी वीर्यवंत (८) तप करवामां उत्साहवान् होवाथी प्रयत्नवंत (९) संसारमांथी जीवो

वस्तु सांजलवाथी अथवा अपूर्व आश्चर्यना अनुजवनुं स्मरण थवाथी. ए विगेरे हास्यनां निमित्तछे; तेमज मोहकर्मनी प्रकृति हास्यनुं उपादान कारणछे तेथी ए बंने कारण अर्हंत जगवंतमां नथी. प्रथमना निमित्त कारणनो अर्हंत जगवंतमां संजवज केम होय, कारण के अर्हंत जगवंत सर्वज्ञ सर्वदर्शी छे तेमना ज्ञानमां एवी अपूर्व वस्तु नथी के जेने देखवाथी सांजलवाथी के अनुजववाथी आश्चर्य उत्पन्न थाय, तेथी हास्यनुं निमित्त कारण कांइ नथी; अने मोहकर्म तो अर्हंत जगवंतें सर्वथा क्षय कर्युंछे तेथी उपादान कारणनो पण संजव नथी. ए हेतुथी अर्हंतमां हास्यरूप दूषण नथी. जे हसनशील हशे ते अवश्य असर्वज्ञ, असर्वदर्शी तेमज मोहयुक्त हशे तेथी ते परमेश्वर केम होइ शकशे ?

७ रति–जेनी प्रीति पदार्थो उपर होय ते अवश्य सुंदर शब्द,रूप,रस, गंध,स्पर्श,स्त्री आदि उपर प्रीतिमान् होय, जे प्रीतिमान् होय ते अवश्य ते पदार्थनी लालसावाला होय अने जे लालसावाला होय ते अवश्य ते पदार्थनी अप्राप्तिथी दुःखी होय, ते अर्हंत परमेश्वर केवी रीतें होइ शके?

८ अरति–जेनी पदार्थो उपर अप्रीति होय ते तो पोतेज अप्रीतिरूप दुःखें करी दुःखी छे ते अर्हंत जगवंत केवीरीतें होइ शके ?

९ जय–जेणें पोतानोज जय दूर कर्यो नहि ते अर्हंत जगवंत केम होइ शके?

१० जुगुप्सा–मलीन वस्तु देखीने नाक चढाववुं. परमेश्वरना ज्ञानमां सर्ववस्तुनुं जासन थाय छे. जो परमेश्वरमां जुगुप्सा होय तो अत्यंत दुःख होय तेथी जुगुप्सावंत अर्हंत जगवंत केम होइ शके ?

११ शोक–जे पोतेज शोक वालोछे ते परमेश्वर केम होय ?

१२ काम–जे पोतेज विषयीछे, स्त्रियोनी साथे जोग करे छे एवा विषयाजिलाषीने कयो बुद्धिमान् पुरुष परमेश्वर माने ?

१३ मिथ्यात्व–जे दर्शनमोहें करी लेपायेल छे ते जगवंत नहीं.

१४ अज्ञान–जे पोतेज मूढ छे ते जगवंत नहीं.

१५ निद्रा–जेने निद्रा आवे छे ते निद्रामां केटलुंएक जाणता नथी. तेथी निद्रावान्, अर्हंत जगवंत सदा सर्वज्ञ, केम होइ शके?

१६ अप्रत्याख्यान–जे प्रत्याख्यानरहितछे ते सर्वाजिलाषी छे तेथी तृष्णावाला अर्हंत जगवंत केम होइ शके ?

१७–१८ राग अने द्वेष– रागद्वेषवान् मध्यस्थ होइ शकता नथी. तेमज रागीद्वेषीमां क्रोध, मान, मायानो संजवछे. जगवान् वीतराग, समशत्रुमित्र, सर्वजीवपर समबुद्धि न कोइने दुःखी अथवा सुखी करे जो दुःखी सुखी करे तो वीतराग करुणासमुद्र कदापि न होइ शके, ए कारणथी राग द्वेष वाला अर्हंत जगवंत परमेश्वर नहीं. पूर्वोक्त अढार दूषणरहित अर्हंत जगवंत परमेश्वर छे, बीजा कोइ परमेश्वर नथी.

अथ अर्हंतनां नाम बे श्लोकथी लखीए छीए. "अर्हन् जिनः पारगतस्त्रिकालवित्, क्षीणाष्टकर्मा परमेष्ट्यऽधीश्वरः ॥ शंजुः स्वयंजूर्जगवान् जगत्प्रजु, स्तीर्थंकरस्तीर्थंकरोजिनेश्वरः ॥ १ ॥ स्याद्वाद्यऽजयदसर्वाः, सर्वज्ञः सर्वदर्शिकेवलिनौ ॥ देवाधिदेवबोधिद, पुरुषोत्तमवीतरागाप्ताः॥२॥ अर्थ–चोत्रीश अतिशयें करी सर्वथी अधिक होवाथी सुरेंद्र आदिएं करेली अष्ट महाप्रातिहार्य तथा जन्म स्नात्रादि पूजाने जे पात्र छे ते अर्हन् अथवा ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मरूप शत्रुउनो नाश करवाथी अर्हन् अथवा बांधेली कर्मरजनो नाश करवाथी अर्हन् अथवा कोइ पदार्थ जेना ज्ञानमां गुप्त नथी ते अर्हन् तथा नामांतरथी अरुहन् जेने जवरूप अंकुर उत्पन्न थवानो नथी ते (२) जीत्यां छे राग द्वेष मोहादि अढार दूषणो जेणें ते जिन (३) संसारना तेमज प्रयोजन मात्रना अंतने जे प्राप्त थया छे एटले के संसारमां जेने कोइ प्रयोजन नथी ते पारगत (४) जूत, जविष्य, वर्तमान ए त्रणे कालने जे जाणे ते त्रिकालवित् (५) क्षय थयां छे आठ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जेनां ते क्षीणाष्टकर्मा (६) परम उत्कृष्ट पदमां जे रहे ते परमेष्टी (७) जगतना ईश्वर ते अधीश्वर (८) शाश्वत सुखमां जे होय ते शंजु (९) पोते पोतानाज आत्माथी तथा जव्यत्व आदि सामग्रीनी परिपकताथी तथा बीजाना उपदेश विना होय ते स्वयंजु (आ कथन तेज जवनी अपेक्षानुं छे) (१०) जग शब्दना चौद अर्थ छे तेमांथी अर्क अने योनि ए बे अर्थ बाद करीने बार अर्थवंत जे होइ शके छे. तेनां नाम (१) ज्ञानवंत (२) माहात्म्यवंत (३) शाश्वत वैरियोना वैर उपशमाववाथी यशस्वी (४) राज्य लक्ष्मीनो त्याग करवाथी वैराग्यवंत (५) मुक्तिवंत (६) रूपवंत (७) अनंत बल होवाथी वीर्यवंत (८) तप करवामां उत्साहवान् होवाथी प्रयत्नवंत (९) संसारमांथी जीवो

नो उद्धार करवानी मरजी होवाथी इच्छावंत (१०) चोत्रीश अतिशयरूप लक्ष्मीए विराजमान होवाथी श्रीमंत (११) धर्मवंत (१२) अनेक कोटि देवोथी सेव्यमान होवाथी ऐश्वर्यवंत आ बार अर्थ युक्त ते भगवान्(११) जगत्ना परमेश्वर तेथी जगत्प्रभु (१२) तरीए संसारसमुद्र जेनाथी ते तीर्थ, प्रवचनना आधार, चार प्रकारना संघ अथवा प्रथम गणधर तेम ने स्थापन करवानो स्वभाव होवाथी तीर्थंकर (१३) रागादिने जीतनारा जिन (केवली) तेना जे ईश्वर ते जिनेश्वर (१४) स्यात् अव्यय अनेकांत वाचक छे तेथी वस्तुउने अनेकांत पणें, अनेक स्वरूपथी केहेवानुं शील छे जेमने ते स्याद्वादि (१५) भय सात प्रकारना छे. (१) मनुष्यने स्वजातिथी अर्थात् एक मनुष्यने बीजा मनुष्यथी भय ते इहलोकभय (२) विजातीय तिर्यंच देवताथी जे भय उत्पन्न थाय ते परलोकभय (३) धना दिना कारणथी चोर प्रमुखथी जे भय थाय ते आदानभय (४) बाहारना निमित्त विना घरादिनेविषे वेसनारने रात्रिआदिने समये जे भय उत्पन्न थाय ते अकस्मात् भय (५) हुं निर्धन छुं दुकालमां केवी रीते जीवितव्य धारण करीश एवो जे भय ते आजीविका भय (६) मरणभय (७) आ प्रमाणे करीश तो मारी मोटी अपकीर्ति थशे एम धारी अयशना भयथी प्रवर्त्ते नही ते अश्लाघाभय. ए सात प्रकारना भयनो जे प्रतिपक्षी ते अभय. ते अभय शुं वस्तु छे? विशिष्ट आत्मानुं स्वस्थपणुं, निःश्रेयस धर्मनिर्बंधन भूमिकाभूत ते गुणनी प्रकर्षताथी अचिंत्य शक्ति युक्त होवाथी सर्व प्रकारें परहितकारी होय; एवुं जे अभय आपे ते अभयद (१६) सर्व प्राणीउ प्रत्ये जे हित चाहे ते सर्वाः (१७) सर्व जे जाणे ते सर्वज्ञ (१८) सर्व जे देखे ते सर्वदर्शी (१९) सर्व प्रकारें कर्म आवरणने दूर करवाथी चेतनस्वरूप प्रगट थयुं छे ते "केवल" केवलज्ञान छे जेने ते केवली (२०) देवताउना जे अधिपति ते देवाधिदेव (२१) जिनप्रणीत धर्मनी प्राप्ति जे करावे ते बोधिद (२२) पुरुषोमांहे उत्तम सद्ज तथा भव्यत्वादि भव करी श्रेष्ट ते पुरुषोत्तम (२३) गया छे राग रूप जेमांथी ते वीतराग (२४) हितोपदेशक होवाथी आस ए रीते चोवीशनाम तथा बीजां हजारो नाम परमेश्वरनां छे.

पूर्वोक्त परमेश्वरनुं स्वरूप श्रीहेमचंद्राचार्यकृत ग्रंथोने अनुसार तथा

समवायांग राजप्रश्नीय प्रमुख शास्त्रानुसार लखेल छे. अन्यथा जिनसह्स्र नामना ग्रंथमां एक हजार आठनाम अन्वयार्थ सहित वर्णवेल छे. सर्वनाम व्युत्पत्ति सहित अर्हंत परमेश्वरनां छे. " अर्हंत पद " अनादि अनंत छे परंतु ते पदना धारण करनारा जीव अनंत अतीत कालमां थई गया. कारण के एकेक उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि कालमां भारत वर्षमां चोविश चोवीश जीव अर्हंत पदने धारण करी सिद्ध पदने प्राप्त थयेला छे.

आ वर्त्तमान अवसर्प्पिणिथी आगलनी उत्सर्प्पिणिमां जे जीवो अर्हंत पदने धारण करनारा थई गया तेमनां नाम. (१) केवल ज्ञानी (२) निर्वाणी (३) सागर (४) महायश (५) विमलनाथ (६(सर्वानुभूति (७) श्रीधर (८) दत्त (९) दामोदर (१०) सुतेज (११) स्वामी (१२) मुनिसुव्रत (१३) सुमति (१४) शिवगति, (१५) अस्ताग (१६) नेमीश्वर (१७) अनिल (१८) यशोधर (१९) कृतार्थ (२०) जिनेश्वर (२१) शुद्धमति (२२) शिवकर (२३) स्यंदन (२४) संप्रति.

वर्तमान चोवीश अर्हंतनां नाम. (१) श्रीऋषभनाथ (२) श्री अजित नाथ (३) श्री संभवनाथ (४) श्री अभिनंदन नाथ (५) श्री सुमतिनाथ (६) श्री पद्मप्रभ (७) श्रीसुपार्श्वनाथ (८) श्री चंद्रप्रभ (९) श्रीसुविधि नाथ बीजुं नाम पुष्पदंत (१०) श्रीशीतलनाथ (११) श्रीश्रेयांसनाथ (१२) श्री वासुपूज्य स्वामी (१३) श्री विमल नाथ (१४) श्री अनंतनाथ (१५) श्रीधर्मनाथ (१६) श्रीशांतिनाथ (१७) श्री कुंथुनाथ (१८) श्री अरनाथ (१९) श्रीमल्लिनाथ (२०) श्री मुनिसुव्रत स्वामी (२१) श्री नमिनाथ(२२) श्रीअरिष्टनेमि (२३) श्री पार्श्वनाथ (२४) श्री महावीर.

वर्त्तमान चोवीश तीर्थंकर भगवंतनां नाम शा शा कारणथी थयां ते तथा नामोना सामान्यार्थ जे सर्व तीर्थंकरोमां पामी शकाय तथा विशेषार्थ जे ते एकज तीर्थंकरना नामने निमित्तें छे ते लखीयें छीयें.

"ऋषति गच्छति परमपदमिति ऋषभः" जाय जे परमपदने ते ऋषभ आ अर्थ सर्व तीर्थंकरमां व्यापक छे तथा " ऊर्वोर्वृषभलांछनमभूद्भगवतो जनन्या चतुर्दशानां स्वप्नानामादौ वृषभोदृष्टः तेन ऋषभः " भगवानना बंने साथलोमां बलदनुं लांछन हतुं अथवा भगवंतनी माता मरुदेवीए चौद स्वप्ननी आदिमां बलदनुं स्वप्न दीठुं ते कारणथी ऋषभ एवुं नाम दीधुं.

एवी रीते सर्व तीर्थंकरनो प्रथम सामान्यार्थ अने पठी विशेषार्थ जाणवो.

२ "परिसहादिभिर्नजित इत्यजितः" बावीश परिसह आदि शब्दथी चार कषाय, आठकर्म, चारप्रकारना उपसर्ग इत्यादिथी न जीताय, ते अजित; तथा "यद्वा गर्भस्थेऽस्मिन् द्यूते राज्ञा जननी न जितेत्यजितः" ज्यारे भगवान् गर्भमां हता त्यारे जुगार खेलतां राजा राणीने न जीती शक्या ते हेतुथी अजित नाम दीधुं.

३ "शं सुखं भवत्यस्मिन् स्तुते सशंभवः" शं नाम सुखवाचक ठे सुख थाय जेनी स्तुति करतां ते संभव "यद्वा गर्भगतेऽप्यस्मिन्नभ्यधिकसस्य संभवात् संभवोपि" अथवा ज्यारे भगवान् गर्भमां हता त्यारे पृथ्वीमां अधिक धान्यनो संभव होवाथी संभव.

४ "अभिनंद्यते देवेंद्रादिभिरित्यभिनंदनः" जेनी स्तुति करायेली ठे देवेंद्रादिथी ते अभिनंदन "यद्वा गर्भात् प्रभृत्येवाभीक्ष्णं शक्रेणाभिनंदनादभिनंदनः" अथवा जे दिवसे भगवान् गर्भमां आव्या ते दिवसथी लइने वारंवार शक्रेंद्रे स्तुति करी तेथी अभिनंदन.

५ "शोभना मतिरस्येति सुमतिः" भली ठे बुद्धि ते जेनी ते सुमति,"यद्वा गर्भस्थे जनन्याः सुनिश्चिता मतिरभूदिति सुमतिः"अथवा भगवान् गर्भमां आव्या त्यारथी मातानी बहुज निर्मल निश्चित बुद्धि थइ ते कारणथी सुमति.

६ "निष्पंकतामंगीकृत्य पद्मस्येव प्रभाऽस्य पद्मप्रभः" विषयतृष्णा कर्मकलंकरूप कीचडथी रहित पद्मनी पेठे प्रभा ठे जेनी ते पद्मप्रभ "यद्वा पद्मशयनदोहदो मातुर्देवतया पूरितइति पद्मवर्णश्च भगवानिति पद्मप्रभः" अथवा पद्मशयन दोहलो माताने उत्पन्न थयो ते देवतायें पूर्ण कर्यो ते कारणथी प्रद्मप्रभ अथवा पद्मकमल समान भगवानना शरीरनो वर्ण हतो ते कारणथी पद्मप्रभ.

७ "शोभनौ पार्श्वावस्य सुपार्श्वः" शोभनिक ठे बंने पासां जेनां ते सुपार्श्व. "यद्वा गर्भस्थे भगवति जनन्यपि सुपार्श्वाऽभूदिति सुपार्श्वः" अथवा भगवान् गर्भमां रह्या त्यारथी मातानां बंने पासां बहुज सुंदर थइगयां तेथी सुपार्श्व.

८ "चंद्रस्येव प्रभा ज्योत्स्ना सौम्यलेश्याविशेषाऽस्य चंद्रप्रभः" चंद्रमानी पेठे सौम्य लेश्या ठे जेनी ते चंद्रप्रभ, तथा "गर्भस्थे देव्याः चंद्रपानदोहदोऽभूत् इति चंद्रप्रभः" गर्भमां ज्यारे भगवान् हता त्यारे

माताने चंद्रमा पीवानो दोहद उत्पन्न थयो ते कारणथी चंद्रप्रज.

ए "शोजनो विधिर्विधानमस्य सुविधिः" रूडो ठे विधि ते जेनो ते सुविधि. तथा "यद्वा गर्जस्थे जगवति जनन्यप्येवमिति सुविधिः" जगवान् गर्जमां रेहेवाथी माता पण शोजनिक विधिवाली थइ ते कारणथी सुविधि.

१० "सकलसत्त्वसंतापहरणात् शीतलः" सर्वजीवोनो संताप दूर करवाथी शीतल तथा "गर्जस्थे जगवति पितुः पूर्वोत्पन्नाऽचिकित्स्यपित्तदाहोजननीकरस्पर्शाडुपशांत इति शीतलः" जगवंतना पिताना शरीरमां पित्तदाहनो रोग हतो तेनी वैद्योथी शांति न थई परंतु जगवान् माताना गर्जमां आववाथी जगवंतनी माताना हाथस्पर्शथीज राजानुं शरीर शीतल थई गयुं ते कारणथी शीतल.

११ "श्रेयान् समस्तजुवनस्यैव हितकरः प्राकृतशैल्या ठांदसत्वाच्च श्रेयांसइत्युच्यते" सर्वजगतनुं जे हित करे ते श्रेयांस "यद्वा गर्जस्थेऽस्मिन् केनापि नाक्रांतपूर्वा देवताधिष्टितशय्या जनन्या आक्रांतेति श्रेयोजातमिति श्रेयांसः" ज्यारे जगवान् गर्जमां हता त्यारे जगवानना पिताना घरमां देवताऽधिष्टित शय्या हती ते उपर जे वेसता तेने असमाधि उत्पन्न थती जगवाननी माताने ते शय्यापर सुवानो दोहद थयो, माता ते शय्यापर सुती, देवतायें उपद्रव न कर्यो पण शांत थयो ते कारणथी श्रेयांस.

१२ "तत्र वसूनां पूज्यः वसुपूज्यः वसवोदेवाः" देवताउथी जे पूजनीय ते वसुपूज्य "वसुपूज्यनृपतेरपत्यं वासुपूज्यः" वसुपूज्य नामना राजाना जे पुत्र ते वासुपूज्य "वासवो देवराया तस्स गप्पगयस्स अजिक्खणं अजिक्खणं जणणीए पूयं करेति तेण वासुपुद्योति अहवा वसूणि रयणाणि वासवो वेसमणो सो गप्पगए अजिक्खणं अजिक्खणं तं रायकुलं रयणेहिं पूरेयति वासुपुद्योत्ति. अर्थः—वासव नाम इंद्रनुं ठे. जगवान् ज्यारे गर्जमां आव्या त्यारे वारंवार इंद्रें जगवाननी मातानी पूजा करी ते कारणथी वासुपूज्य अथवा वसु एटले रत्न अने वासव नाम वैश्रमणनुं ठे. जगवान् ज्यारे गर्जमां हता त्यारे वैश्रमणें जगवानना कुलमां वारंवार रत्नोनी पूर्णता करी ते हेतुथी वासुपूज्य.

१३ "विगतो मलोऽस्य विमलः विमलज्ञानादियोगाद्वा विमलः" दूर थया ठे आठ कर्मरुप मल जेना ते विमल, अथवा निर्मलज्ञानादि यो

गें करी विमल, " यद्वा गर्नस्थे मातुर्मतिस्तनुश्च विमला जातेति विम लः " तथा जगवान् ज्यारे गर्नमां हता त्यारे मातानी बुद्धि तथा शरीर निर्मल थई गयां ते कारणथी विमल.

१४ " न विद्यते गुणानामंतोऽस्य अनंतः अनंतकर्मांशजयाद्वाऽनंतः अ नंतानि वा ज्ञानादीनि यस्येत्यनंतः" जेना गुणनो अंत न जाणी शकियें ते अनंत, अथवा अनंत कर्मांश जीतवाथी अनंत अथवा अनंत छे ज्ञाना दि गुण जेने ते अनंत, " रयण विचित्तं रयण खवियं अणंतं अतिमह पमाणं, दामं सुमिणे जणणीयें, दिठं तउ अणंतोत्ति " विचित्ररत्नें जडि त अति मोटी दाममाला मातायें स्वप्नमां दीठी ते कारणथी अनंत.

१५ " दुर्गतौ पतन्तं सत्वं संघातं धारयतीति धर्म्मः" दुर्गतिमां पड ता जीवोना समूहने जे धारण करे ते धर्म, तथा " गर्नस्थे जननी दा नादिधर्म्मपरा जातेति धर्मः " परमेश्वर गर्नमां आववाथी माता दाना दि धर्ममां तत्पर थई तेथी धर्म.

१६ " शांतियोगात्तदात्मकत्वात्तत्कर्तृकत्वाच्चायं शांतिः " शांतिना यो गथी अथवा शांतिरूप होवाथी अथवा शांति करवाथी शांति, तथा "गर्न स्थे पूर्वोत्पन्ना शिवं शांतिरजूदिति शांतिः" तथा जगवान् गर्नमां उत्प न्न थवाथी पूर्वे जे अशिव उत्पन्न थयुं हतुं ते शांत थई गयुं तेथी शांति.

१७ " कुः पृथ्वी तस्यां स्थितिवानिति कुंथुः पृषोदरादित्वात् " कु नाम पृथ्वीनुं छे ते पृथ्वीमां जे स्थित थया ते कुंथु तथा " गर्नस्थे जग वति जननी रत्नानां कुंथुं राशिं दृष्टवतीति कुंथुः " जगवान् गर्नमां आ व्या पठी मातायें रत्नमय कुंथुउनो राशि दीठो ते कारणथी कुंथु.

१८ " सर्वोत्तममहासत्त्वः, कुले यउपजायते ॥ तस्याजिवृद्धये वृद्धैरसा वरउदाहृतः " ॥ १ ॥ इतिवचनादरः सर्वथी उत्तम महासात्त्विक कुलमां जे उत्पन्न थाय तथा ते कुलनी वृद्धिकारक जे होय तेने वृद्धपुरुष प्रधान अर कहेछे तथा " गर्नस्थे जगवति जनन्या स्वप्ने सर्वरत्नमयोऽरोदृष्ट इत्यपरः " तथा जगवान् गर्नमां हता त्यारे मातायें सर्वरत्नमय अर स्व प्नमां दीठो ते कारणथी अर.

१९ " परिसहादिमल्लजयनान्निरुक्तान् मल्लिः " परिसहादि मल्लोने जीतवाथी मल्लि तथा " गर्नस्थे जगवति मातुः सुरनिकुसुममाल्यशय

नीयदोहदो देवतया पूरित इति मल्लिः " तथा जगवान् गर्जमां आव्या पठी माताने सुगंधी फुलोनी मालावाली शय्या उपर सुवानो दोहद उत्पन्न थयो ते देवतायें पूर्ण कर्यो ते कारणथी मल्लि.

२० " मन्यते जगतस्त्रिकालावस्थामिति मुनिः शोजनानि व्रतान्यस्येति सुव्रतः मुनिश्चासौ सुव्रतश्च मुनिसुव्रतः " त्रणे कालमां जे जगतने माने ते मुनि, जलां ठे व्रत जेनां ते सुव्रत आ बंने पद एकत्र करवाथी मुनिसुव्रत, तथा " गर्जस्थे जननी मुनिवत् सुव्रता जातेति मुनिसुव्रतः " तथा जगवंत गर्जमां रह्यां थकां माता रूडा व्रतवाली थइ तेथी मुनिसुव्रत.

२१ " परीसहोपसर्गादीनां नामनात् नमेस्तुवेति विकल्पेनोपांत्यस्येकाराजावपक्षे नमिः " परिसह उपसर्गोने नमाववाथी नमि, तथा " यद्वा गर्जस्थे जगवति परचक्रनृपैरपि प्रणतिः कृतेति नमिः " जगवान् गर्जमां आववाथी वैरीराजाउयें पण नमस्कार कर्यो ते कारणथी नमि.

२२ " धर्मचक्रस्य नेमिवन्नेमिः " धर्मचक्रनी धारासमान ते नेमि तथा "गप्नगए तस्स मायाए, रिठरयणा मउमहति महालउ नेमि ॥ उप्पयमाणो सुमिणे, दिठोत्ति तेणसेरिठनेमित्ति नामं कयंति " तथा जगवान् गर्जमां आव्यापठी मातायें अरिष्ट रत्नमय मोटो नेमि (चक्रधारा) आकाशमां उत्पन्न थयो एम स्वप्नमां दीठो ते कारणथी अरिष्टनेमि.

२३ " स्पृशति ज्ञानेन सर्वजावानिति पार्श्वः" सर्वपदार्थोने ज्ञानें करी स्पर्शे जाणे ते पार्श्व. तथा"गर्जस्थे जनन्या निशि शयनीयस्थयांऽधकारे सर्पो दृष्टइति गर्जानुजावोयमिति पश्यतीति निरुक्तात् पार्श्वः पार्श्वोऽस्यवैयावृत्त्यकरो यद्वास्तस्य नाथः पार्श्वनाथः जीमो जीमसेन इति न्यायाद्वा पार्श्वः" तथा जगवान् गर्जमां रह्या थका मातायें रात्रिमां शय्या उपर बेठां थकां अंधारामां सर्प जातो दीठो, माता पितायें विचार्युं के आ गर्जनो प्रजाव ठे अथवा पार्श्वनामा वैयावच्च करनारा देवताना जे नाथ ते पार्श्वनाथ.

२४ "विशेपेण ईरयति प्रेरयति कर्माणीति वीरः " विशेपेंकरी प्रेरे जे कर्मोने ते वीर तथा अत्यंत उग्र परीसह उपसर्ग सहन करवाथी देवताउयें श्रमण जगवान् महावीर एवुं तथा माता पितायें धनधान्यादिनी वृद्धि थवाथी वर्धमान एवुं नाम दीधुं.

ए प्रकारें आ अवसर्प्पिणिमां जे तीर्थंकर थया तेमनां नाम तथा शा हेतुथी ते नाम राख्यां ते समाप्त थयुं.

आ चोवीश तीर्थंकर मध्येथी बावीश अर्हंत इक्ष्वाकुकुलमां उत्पन्न थया एटले के ऋषजदेवजीना वंशमां थया, इक्ष्वाकुकुल ऋषजदेवजीथी प्रसिद्ध छे, तेनुं स्वरूप आगल केहेवामां आवशे, बाकीना वीशमा मुनि सुव्रतस्वामी तथा बावीशमा अरिष्टनेमि जगवान् ए बंने तीर्थंकर हरिवंशमां उत्पन्न थया. चोवीश तीर्थंकरोमां छठा पद्मप्रज अने बारमा वासुपूज्य लाल वर्ण शरीरवाला थया, आठमा चंद्रप्रज तथा नवमा सुविधिनाथ (पुष्पदंत) ए बे तीर्थंकर श्वेतवर्ण स्फटिकवत् उज्वल शरीरवाला थया, उंगणीशमा मल्लिनाथ तथा त्रेविशमा पार्श्वनाथ हरितवर्ण शरीरवाला थया, तथा वीशमा मुनिसुव्रत स्वामी तथा बावीशमा अरिष्टनेमि जगवान् श्यामवर्ण रंगें अलसीना फुलजेवा शरीरवाला थया. बाकीना सोल सुवर्णवर्ण शरीरवाला थया.

चोवीश तीर्थंकरोनां चिह्न तेमना दक्षिण पगमां हतां तथा तेमनी ध्वजामां ते चिह्न होय छे, हालपण तेमनी प्रतिमाना आसनमां ते चिह्न होय छे ते चिह्नो आ प्रमाणे– (१) ऋषजदेवजीनुं बलदनुं चिह्न (२) अजितनाथजीनुं हाथीनुं चिह्न (३) संजवनाथजीनुं घोडानुं चिह्न (४) अजिनंदनजीनुं वांदरानुं चिह्न (५) सुमतिनाथजीनुं क्रौंच पक्षीनुं चिह्न (६) पद्मप्रजुजीनुं कमलनुं चिह्न (७) सुपार्श्वनाथजीनुं साथीयानुं चिह्न (८) चंद्रप्रजुजीनुं चंद्रमानुं चिह्न (९) सुविधिनाथ (पुष्पदंत) जीनुं मकरनुं चिह्न (१०) शीतलनाथजीनुं श्रीवत्सनुं चिह्न (११) श्रेयांसनाथजीनुं गेंमानुं चिह्न (१२) वासुपूज्यजीनुं महिषनुं चिह्न (१३) विमलनाथजीनुं सूअरनुं चिह्न (१४) अनंतनाथजीनुं बाजनुं चिह्न (१५) धर्मनाथजीनुं वज्रनुं चिह्न (१६) शांतिनाथजीनुं हरणनुं चिह्न (१७) कुंथुनाथजीनुं बोकडानुं चिह्न (१८) अरनाथजीनुं नंदावर्त्तनुं चिह्न (१९) मल्लिनाथजीनुं कुंजनुं चिह्न (२०) मुनिसुव्रतस्वामिनुं काचबानुं चिह्न (२१) नमीनाथजीनुं लीला कमलनुं चिह्न (२२) अरिष्टनेमिजीनुं शंखनुं चिह्न (२३) श्रीपार्श्वनाथजीनुं सर्प्पनुं चिह्न (२४) श्रीमहावीरस्वामिनुं सिंहनुं चिह्न.

हवे चोवीश तीर्थंकरोना पितानां तथा मातानां नाम कहीयें छीयें.

(१) नाभिनद्यन्यायिनोहकारादिभिर्नीतिभिरिति नाभिरंत्यकुलकरः, (हकारादि नीतियें अन्यायिर्उनो दंड करनार छेलो कुलकर ते नाभि) (२) जिताः शत्रवोऽनेन जितशत्रुः (जीत्या छे शत्रुर्उ जेणें ते जितशत्रु) (३) जिताअरयोऽनेन जितारिः (जित्या छे वेरियो जेणें ते जितारि) (४) संवृणोतींद्रियाणि संवरः (वश करी छे इंद्रियो जेणें ते संवर) (५) सकलसत्वसंतापहरणात् मेघश्च मेघः (मेघनी पेठे सकल जीवोनो संताप हरवाथी मेघ) (६) धरति धात्रीमिति धरः (धारण करे जे पृथ्वीने ते धर) (७) प्रतितिष्ठति धर्मकार्ये प्रतिष्ठः (धर्मना कार्यमां जे रहे ते प्रतिष्ठ) (८) महती पूज्या सेनाऽस्य महासेनः (मोटी पूजवा योग्य सेना छे जेनी ते महासेन (९) शोभना ग्रीवाऽस्य सुग्रीवः (भली छे ग्रीवा जेनी ते सुग्रीव) (१०) दृढोरथोऽस्य दृढरथः (बलवान् छे रथ जेनो ते दृढरथ) (११) वेवेष्टि वलैः पृथिवीं विष्णुः (वींटी छे सेनाथी पृथ्वीने जेणे ते विष्णु) (१२) अन्ये राजभिर्वसुभिर्धनैः पूज्यते इति वसुपूज्यः सचासौ राट्च वसुपूज्यराट् (बीजा राजार्उयें धनेंकरी पूजा करी छे जेनी ते वसुपूज्य राजा) (१३) कृतं वर्मानेन कृतवर्मा (कर्यो छे सन्नाह जेणें ते कृतवर्मा) (१४) सिंहवत् पराक्रमवती सेनाऽस्य सिंहसेनः (सिंह समान पराक्रमवाली सेना जेनी छे ते सिंहसेन) (१५) भाति त्रिवर्गेण भानुः (धर्म अर्थ अने कामथी जे शोभे छे ते भानु) (१६) विश्वव्यापिनी सेनाऽस्य विश्वसेनः (जेनी सेना जगतमां व्यापेली छे ते विश्वसेन) सचासौराट् च विश्वसेनराट् (१७) तेजसा सूरश्च सूरः (तेजें करी सूर्यसरखा ते सूर) (१८) शोभनं दर्शनमस्य सुदर्शनः (भलुं दर्शन छे जेनुं ते सुदर्शन) (१९) गुणपयसामाधारभूतत्वात् कुंभश्च कुंभः (गुणरूप पाणीने आधाररूप होवाथी कुंभनी पेठे कुंभ) (२०) शोभनानि मित्राणि अस्य सुमित्रः (भला छे मित्रो जेना ते सुमित्र)विजयते शत्रूनिति विजयः(जीत्या छे शत्रुर्उने जेणें ते विजय) (२२) गांभीर्येण समुद्रस्यापि विजेता समुद्रविजयः (गंभीरतायी समुद्रने जीतनार ते समुद्रविजय (२३) अश्वप्रधाना सेनाऽस्य अश्वसेनः (घोडार्उए करीप्रधान छे सेनाजेनी तेअश्वसेन) (२४)सिद्धार्थाःपुरुषार्थाअस्य सिद्धार्थः (सिद्ध थया छे पुरुषार्थो ते जेना ते सिद्धार्थ. चोवीश तीर्थंकरोना पितानां अनुक्रमें नाम कह्यां.

हवे चोवीश तीर्थंकरोनी मातानां नाम लखीयें ठीयें.

(१) मरुद्भिर्दीव्यते स्तूयते मरुदेवा पृषोदरादित्वात् तलोपः मुरदेव्य पि स्यात् (देवताउयें करी ठे स्तवना जेनी ते मरुदेवी मुरदेवी एम पण नाम ठे) (२) विजयते विजया (जयवंतविजया) (३) सह अनेन जि तारिस्वामिना वर्त्तते सेना (जितारि राजानी साथ जे वर्ते ते सेना) (४) सिद्धोर्थोऽस्याः सिद्धार्था (सिद्ध थया ठे अर्थ जेना ते सिद्धार्था) (५) मंगलहेतुत्वात् मंगला (मंगलहेतुनूत होवाथी मंगला) (६) शो नना सीमा मर्यादाऽस्याः सुसीमा (नली ठे मर्यादा जेनी ते सुसीमा) (७) स्थेम्ना पृथ्वीव पृथ्वी (स्थिर ठे पृथ्वीना जेवी ते पृथ्वी) (८) लक्ष्मीः शोनाऽस्त्यस्याः लक्ष्मणा (लक्ष्मीनी पेठे शोना ठे जेनी ते लक्ष्मणा) (९) धर्मकृत्येषु रमते रामा (धर्मकृत्यमां जे रमे ते रामा) (१०) नंदति सु पात्रेण नंदा (सुपात्रदान देवाथी वृद्धिमती थाय ते नंदा) (११) वेवेष्टि गुणैर्जगदिति विष्णुः (गुणेंकरी जगतने वींटाले ते विष्णु) (१२) जयति सतीत्वेन जया (उत्कृष्टपणें वर्ते ठे सतीपणुं जेनुं ते जया) (१३) श्यामव र्णत्वात् श्यामा (श्यामवर्ण होवाथी श्यामा) (१४) शोननं यशोऽस्याः सुयशाः (नलुं ठे यश जेनुं ते सुयशाः) (१५) शोननं व्रतमस्याः सुव्रता पतिव्रतात्वात् (नलां ठे व्रत जेनां ते सुव्रता पतिव्रता होवाथी सुव्रता) (१६) न चिरयति धर्मकार्येष्वऽचिरा (धर्मकार्योमां जे ढील करती नथी ते अचिरा) (१७) श्रीरिव श्रीदेवीव देवी प्रनाऽस्त्यस्याः श्रीः (लक्ष्मीनी पेठे प्रना ठे जेनी ते श्री) (१८) देवीनी पेठे प्रना ठे जेनी ते देवी (१९) प्रनावती प्रनावती (२०) पद्मश्व पद्मावती (पद्मनी जेवी ते पद्मा- वती) (२१) धर्मवीजमिति वप्रा (२२) शिवहेतुत्वात् शिवा (२३) मनो ज्ञत्वात् वामा पापकार्येषु प्रातिकूल्यात् वामा (मनोज्ञ होवाथी वामा) (पापकार्योथी प्रतिकूल होवाथी वामा) (२४) त्रीणि ज्ञानदर्शनचारि त्राणि शलयति प्राप्नोतीति त्रिशला (ज्ञानदर्शन चारित्र ए त्रणेने जे प्राप्त करे ठे ते त्रिशला)

ए प्रमाणे तीर्थंकरोनी मातानां नाम कह्यां. अथवा सुगमताने माटे चोवीश तीर्थंकरोनी साथे वावन वोलनो संवंध ठे तेनुं स्वरूप यंत्रवंध ल खीयें ठीयें. वावन वोलनां नाम आ प्रमाणेः–

बावन बोलनां नाम कहेछे.

१ श्रीतीर्थंकर नाम.
२ च्यवन तिथि.
३ कया विमानथी आव्या.
४ कइ नगरीमां जन्म थयो.
५ जन्मतिथि.
६ पिताउंनां नाम.
७ माताउंनां नाम.
८ कया नक्षत्रमां जन्म्या.
९ जन्मराशि.
१० लांछननां नाम.
११ शरीरनी उंचाइनुं प्रमाण.
१२ आयुषना वर्षनुं प्रमाण.
१३ शरीरनो वर्ण.
१४ पदवी.
१५ परणेला के कुंवारा ?
१६ केटला जणोनी साथे दीक्षा लीधी.
१७ दीक्षा कइ नगरीमां लीधी.
१८ दीक्षाने दिवसे केटलुं तप.
१९ प्रथम पारणे शुं आहार मल्यो.
२० प्रथम पारणानुं घर.
२१ केटला दिवसनुं पारणुं.
२२ दीक्षानी तिथि.
२३ छद्मस्थपणाना कालनुं प्रमाण.
२४ कइनगरीमां केवलज्ञान प्राप्तथयुं
२५ ज्ञानोत्पत्तिने दिनें कयुं तपकर्युं
२६ कया वृक्षनी नीचे दीक्षा लीधी.
२७ कइ तिथियें ज्ञान उत्पन्न थयुं.
२८ गणधरोनी संख्या.
२९ साधुउंनी संख्या.
३० साध्वीयोनी संख्या.
३१ वैक्रियलब्धिवंतोनी संख्या.
३२ अवधिज्ञानियोनी संख्या.
३३ केवलज्ञानियोनी संख्या.
३४ मनःपर्यवज्ञानियोनी संख्या.
३५ चौदपूर्वधारियोनी संख्या.
३६ वादियोनी संख्या.
३७ श्रावकोनी संख्या.
३८ श्राविकाउंनी संख्या.
३९ शासनना यक्षोनां नाम.
४० शासननी यक्षिणीयोनां नाम.
४१ प्रथम गणधरनुं नाम.
४२ प्रथम आर्यानुं नाम.
४३ मोक्ष थवानुं स्थान.
४४ मोक्ष पहोचवानी तिथि.
४५ मोक्ष दिनें तप.
४६ मोक्ष जवानुं आसन.
४७ परस्पर अंतरनुं मान.
४८ गण नाम.
४९ योनि नाम.
५० मोक्ष परिवार.
५१ सम्यक्त्व पाम्यापछीमहोटा भव.
५२ कया कुलमां उत्पन्न थया.
५३ गर्भवासना कालनुं प्रमाण.

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१ श्रीतीर्थंकर नाम.	१ श्रीऋषभ देव.	२ श्रीअजितनाथ	३ श्रीसंभवनाथ.
२ च्यवन तिथि.	अषाढवदी ४	वैशाख शुदि १३	फाल्गुन शुदि ८
३ विमान नाम.	सर्वार्थ सिद्धि	विजय विमान	उपरला ग्रैवेयक
४ जन्म नगरी.	विनीता भूमि	अयोध्या	सावथी
५ जन्म तिथि.	चैत्रवदी ८	माघशुदी ८	महाशुदी १४
६ पितानां नाम.	नाभिकुलकर	जितशत्रु	जितारि
७ मातानां नाम.	मरुदेवी	विजया	सेना
८ जन्म नक्षत्र.	उत्तराषाढा	रोहिणी	मृगशिर
९ जन्म राशि.	धन	वृष	मिथुन
१० लांछन नाम.	वृषभ	हस्ती	अश्व
११ शरीरनुं मान.	५००) धनुष	४५०) धनुष	४००) धनुष.
१२ आयुर्मान.	८४) लक्षपूर्व	७२) लक्षपूर्व	६०) लक्षपूर्व.
१३ शरीरना वर्ण.	सुवर्ण वर्ण.	सुवर्ण वर्ण.	सुवर्णवर्ण.
१४ पदवी राजनी.	राज पदवी	राज पदवी	राज पदवी
१५ पाणिग्रहण.	विवाह थयो	विवाह थयो	विवाह थयो
१६ केटला साथे दीक्षा.	४०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७ दीक्षा नगरी.	विनीता.	अयोध्या.	सावथी.
१८ दीक्षा तप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९ प्रथमपारणानोआ०	इक्षु रस	परमान्नक्षीर	परमान्नक्षीर
२० पारणानां स्थान.	श्रेयांसने घेर	ब्रह्मदत्तने घेर	सुरेंद्रदत्तने घेर
२१ केटलादिवसनांपा०	एक वर्ष पछी	बे दिवसपछी	बे दिवसपछी
२२ दीक्षा तिथि.	चैत्रवदि ८	महावदी ९	मार्गशिरशु० १५
२३ छद्मस्थ काल.	१०००) वर्ष	१२) वर्ष	१४) वर्ष
२४ ज्ञान नगरी.	पुरिमताल	अयोध्या	सावथी
२५ ज्ञान तप.	त्रण उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६ दीक्षा वृक्ष.	वट वृक्ष	शाल वृक्ष	प्रियाल वृक्ष
२७ ज्ञानतिथि.	फाल्गुन वदि ११	पोषवदि ११	कार्तिकवदि ११

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेले.

२७	गणधरसंख्या.	७४)	एए)	१०२)
२ए	साधुर्जनी संख्या.	७४०००)	१०००००)	२०००००)
३०	साधवीयोनीसंख्या.	३०००००)	३३००००)	३३६०००)
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	२०६००)	२०४००)	१ए७००)
३२	वादियोनी संख्या.	१२६५०)	१२४००)	१२०००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	ए०००)	ए४००)	ए६००)
३४	केवली संख्या.	२००००)	२२०००)	१५०००)
३५	मनःपर्यवसंख्या.	१२७५०)	१२५५०)	१२१५०)
३६	चौदपूर्वी संख्या.	४७५०)	३७२०)	२१५०)
३७	श्रावक संख्या.	३५००००)	२ए७०००)	२ए३०००)
३७	श्राविका संख्या.	५५४०००)	५४५०००)	६३६०००)
३ए	शासनयक्षोनांनाम.	गोमुखयक्ष	महायक्ष	त्रिमुखयक्ष
४०	शासननी यक्षिणी.	चक्रेश्वरी	अजितबाला.	डुरितारि
४१	प्रथम गणधर नाम.	पुंमरीक.	सिंहसेन.	चारु.
४२	प्रथम आर्या नाम.	ब्राह्मी	फाल्गु	श्यामा
४३	मोक्षस्थान.	अष्टपद	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	माघ वदि १३	चैत्र शुद ५	चैत्रशुदि ५
४५	मोक्षसंलेपणा.	७ उपवास	एक मास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	पद्मासन	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग
४७	अंतर मान.	५०लाखकोटीसा	३०लाखकोटीसा	१०लाखकोटीसा
४७	गण नाम.	मानवगण	मानवगण	देवगण
४ए	योनि नाम.	नकुलयोनि	सर्प्पयोनि	सर्प्पयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	१००००)	१०००)	१०००)
५१	नवसंख्या.	तेर नव कर्या.	त्रणनवकर्या	त्रण नव कर्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्नकाल मान.	नवमासचारदि०	७ मासपच्चीशदि-	नवमास७ दिवस

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्री तीर्थंकरनाम.	४ श्रीअभिनंदन	५ श्रीसुमतिनाथ	६ श्री पद्मप्रभ
२	च्यवनतिथि.	वैशाख शुदि ४	श्रावणशुदि २	माघवदि ६
३	विमान नाम.	जयंत विमान	जयंत विमान	उपरिमग्रैवेयक
४	जन्मनगरी.	अयोध्या	अयोध्या	कौसुंबी
५	जन्मतिथि.	माघशुदि २	वैशाख शुदि ८	कार्तिकवदि १२
६	पितानां नाम.	संवर राजा	मेघराजा	श्रीधरराजा
७	मातानां नाम.	सिद्धार्था	मंगला	सुसीमा
८	जन्मनक्षत्र.	पुनर्वसु	मघा	चित्रा
९	जन्म राशि.	मिथुन	सिंह	कन्या
१०	लांछननां नाम.	वांदरानुं	क्रौंच पक्षीनुं	पद्मकमलनुं
११	शरीर मान.	३५०) धनुष	३००) धनुष	२५०) धनुष
१२	आयुनुं प्रमाण.	५०) लाखपूर्व	४०) लाख पूर्व	३०) लाखपूर्व
१३	शरीरना वर्ण.	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	रक्तवर्ण
१४	पदवी राजानी.	राजा	राजा	राजा
१५	पाणि ग्रहण.	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटला साथे दीक्षा.	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी.	अयोध्या	अयोध्या	कौसुंबी
१८	दीक्षातप.	बे उपवास	नित्यभक्त	एक उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर	क्षीर	क्षीर
२०	पारणानां स्थान.	इंद्रदत्तने घेर	पद्मने घेर	सोमदेवने घेर
२१	केटला दिवसनांपा०	बे दिवस (२)	बे दिवस (२)	बे दिवस (२)
२२	दीक्षा तिथि.	माघशुदि १२	वैशाखशुदि ९	कार्तिकवदि १३
२३	छद्मस्थ काल.	अढार वर्ष	वीश वर्ष	छमास
२४	ज्ञाननगरी.	अयोध्या	अयोध्या	कौसुंबी
२५	ज्ञान तप.	बे उपवास	बे उपवास	चोथभक्त
२६	दीक्षावृक्ष.	प्रियंगुवृक्ष	साल वृक्ष	छत्रवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	पोषवदि १४	चैत्रशुदि ११	चैत्रशुदि १५

आ वावन वोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८	गणधरसंख्या.	११६)	१००)	१०७)
२९	साधुओनीसंख्या.	३०००००)	३२००००)	३३००००)
३०	साधवीयोनी संख्या.	६३००००)	५३००००)	४२००००)
३१	वैक्रिय लब्धिवंत.	१९०००)	१८४००)	१६१०८)
३२	वादियोनी संख्या.	११०००)	१०४००)	९६००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	९८००)	११०००)	१००००)
३४	केवली संख्या.	१४०००)	१३०००)	१२०००)
३५	मनःपर्यव संख्या.	११६५०)	१०४५०)	१०३००)
३६	चौद पूर्वीसंख्या.	१५००)	२४००)	२३००)
३७	श्रावकसंख्या.	२८८०००)	२८१०००)	२७६०००)
३८	श्राविकासंख्या.	५२७०००)	५१६०००)	५०५०००)
३९	शासन यक्षोनांनाम.	नायकयक्ष	तुंवरुयक्ष	कुसमयक्ष
४०	शासन यक्षिणीनांना०	कालिका	महाकाली	श्यामा
४१	प्रथम गणधरनाम.	वज्रनाभ	चरम	प्रद्योतन
४२	प्रथम आर्यानाम.	अजिता	काश्यपी	रति
४३	मोक्ष स्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	वैशाखशुदि ८	चैत्रशुदि ९	मागशिरवदि ११
४५	मोक्षसंलेपणा.	एकमास	एकमास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग
४७	अंतरमान.	एलाखकोडीसा.	९हजारकोडीसा	९हजारकोडीसा
४८	गणनाम.	देवगण	राक्षसगण	राक्षसगण
४९	योनिनाम.	छागयोनि	मूषकयोनि	महिषयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	१०००)	१०००)	३०८)
५१	भवसंख्या.	त्रणभवकरवा	त्रणभवकरवा	त्रणभवकरवा
५२	कुलगोत्रनाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकालमान.	८मास२८दिवस	नवमासछदिवस	नवमासछदि०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्रीतीर्थंकर नाम.	७ श्रीसुपार्श्वनाथ	८ श्रीचंद्रप्रभ	९ श्रीसुविधिनाथ
२	च्यवन तिथि.	भाद्रवावदि ८	चैत्रवदि ५	फागण वदि ९
३	विमान नाम.	मध्यिमग्रैवेयक	विजयंत	आनतदेवलोक
४	जन्मनगरी.	वणारसी नगरी	चंद्रपुरीनगरी	काकंदीनगरी
५	जन्मतिथि.	ज्येष्ठशुदि १२	पोषवदि १२	मागशर वदि ५
६	पितानां नाम.	प्रतिष्ठराजा	महासेन राजा	सुग्रीव राजा
७	मातानां नाम.	पृथिवीमाता	लक्ष्मणामाता	रामाराणीमाता.
८	जन्म नक्षत्र.	विशाखा नक्षत्र	अनुराधानक्षत्र	मूल नक्षत्र
९	जन्म राशि.	तुलराशि	वृश्चिकराशि	धन राशि
१०	लांछन नाम.	साथीयानुंलांछन	चंद्रनुं लांछन	मगरमछनुं लां०
११	शरीरनुं प्रमाण.	२००) धनुष	१५०) धनुष	१००) धनुष
१२	आयुनुंप्रमाण.	२०) लाखपूर्व	१०) लाखपूर्व	२) लाखपूर्व
१३	शरीरना वर्ण.	सुवर्णवर्ण	श्वेतवर्ण	श्वेतवर्ण
१४	पदवी राजानी.	राजा	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण.	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथे दीक्षा.	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी.	वणारसी नगरी	चंद्रपुरी नगरी	काकंदी नगरी
१८	दीक्षातप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीरनुं भोजन	क्षीरनुं भोजन	क्षीरनुं भोजन
२०	पारणानां स्थान.	महेंद्रने घेर	सोमदत्तने घेर	पुष्पने घेर
२१	केटलादिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि.	ज्येष्ठशुदि १३	पोषवदि १३	मागशिर वदि ६
२३	छद्मस्थकाल.	नवमास रह्या	त्रण मास रह्या	चारमास रह्या
२४	ज्ञान नगरी.	वणारसीनगरी	चंद्रपुरी नगरी	काकंदी नगरी
२५	ज्ञानतप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष.	शिरीषवृक्ष	नागवृक्ष	शाली वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	फागण वदि ६	फागणवदि ७	कार्तिक शुदि ३

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८ गणधर संख्या.	९५) गणधर	९३) गणधर	८८) गणधर.
२९ साधुओनीसंख्या.	३०००००	२५००००	२०००००
३० साधवियोनी संख्या.	४३००००	३८००००	३२००००
३१ वैक्रियलब्धिवंत.	१५३००	१४०००	१३०००
३२ वादियोनीसंख्या.	८४००	७६००	६०००
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	९०००	८०००	८४००
३४ केवली संख्या.	११०००	१००००	७५००
३५ मन:पर्यवसंख्या.	९१५०	८०००	७५००
३६ चौदपूर्वीसंख्या.	२०३०	२०००	१५००
३७ श्रावक संख्या.	२५७०००	२५००००	२२९०००
३८ श्राविकासंख्या.	४९३०००	४७९०००	४७१०००
३९ शासनयक्षनांनाम.	मातंगयक्ष	विजय यक्ष	अजिता यक्ष
४० शासनयक्षणीनांनाम.	शांता	भृकुटी	सुतारिका
४१ प्रथम गणधर नाम.	विदर्भ	दिन्न	वराहक
४२ प्रथमआर्या नाम.	सोमा	सुमना	वारुणी
४३ मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	फागण वदि ७	भाद्रवा वदि ७	भाद्रवा शुदि ९
४५ मोक्षसंलेषणा.	एक मास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७ अंतर प्रमाण.	एसोकोडीसागर	९०कोडीसागर	९ कोडीसागर
४८ गणनाम.	राक्षसगण	देवगण	राक्षसगण
४९ योनि नाम.	मृगयोनि	मृगयोनि	वानरयोनि
५० मोक्षपरिवार.	५००	१०००	१०००
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२ कुलगोत्र नाम.	ईक्ष्वाकुकुल	ईक्ष्वाकुकुल	ईक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकाल मान.	९मास१९दिवस	नवमास७ दिव०	मास ८ दिव.२६

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	तीर्थंकरनाम.	१० शीतलनाथ	११ श्रेयांसनाथ	१२ श्रीवासुपूज्य.
२	च्यवनतिथि.	वैशाखवदि ६	ज्येष्ठवदि ६	ज्येष्ठ शुदि ए
३	विमाननाम.	अच्युत देवलोक	अच्युतदेव लोक	प्राणतदेवलोक
४	जन्मनगरी.	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चंपापुरी
५	जन्मतिथि.	महावदि १२	फागणवदि १२	फागण वदि १४
६	पितानां नाम.	द्दढरथराजा	विष्णुराजा	वसुपूज्यराजा
७	मातानांनाम.	नंदामाता	विष्णुमाता	जयामाता
८	जन्मनक्षत्र.	पूर्वाषाढा	श्रवण नक्षत्र	शतभिषानक्षत्र
ए	जन्मराशि.	धनराशि	मकर राशि	कुंभराशि
१०	लांछन नाम.	श्रीवत्सनुंलांछन	गेंडानुंलांछन	पाडानुं लांछन
११	शरीरनुं मान.	नेवुंधनुष	एंशीधनुष	सीत्तेरधनुष
१२	आयुनुंप्रमाण.	एकलाखपूर्व	८४ लाखवर्ष	७२ लाखवर्ष
१३	शरीरनावर्ण.	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	लालवर्ण
१४	पदवीराजानी.	राजा	राजा	कुमार
१५	पाणिग्रहण.	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथेदीक्षा.	(१०००) साधु	(१००० साधु	६०० साधु
१७	दीक्षानगरी.	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चंपापुरी
१८	दीक्षातप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१ए	प्रथमपारणानोआ.	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन
२०	पारणानांस्थान	पुनर्वसुनेघेर	नंदनेघेर	सुनंदनेघेर
२१	केटलादिवसनुंपारणुं	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि.	महावदि १२	फागणवदि १३	फागणशुदि १५
२३	छद्मस्थकाल.	त्रणमासरह्या	बे मासरह्या	एक मासरह्या
२४	ज्ञाननगरी.	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चंपापुरी
२५	ज्ञानतप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष.	प्रियंगुवृक्ष	तंडुकवृक्ष	पाडलवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	पोषवदि १४	महावदि ३	महाशुदि २

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८	गणधरसंख्या.	८१)गणधर	७६)गणधर	६६)गणधर
२९	साधुओनी संख्या.	१०००००	८४०००	७२०००
३०	साधवीयोनीसंख्या.	१००००६	१०३०००	१०००००
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	१२०००	११०००	१००००
३२	वादियोनी संख्या.	५८००	५०००	४७००
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	७०२०	६०००	५४००
३४	केवली संख्या.	७०००	६५००	६०००
३५	मनःपर्यवसंख्या.	७५००	६०००	६५००
३६	चौदपूर्वी संख्या.	१४००	१३००	१२००
३७	श्रावक संख्या.	२८९०००	२७९०००	२१५०००
३८	श्राविका संख्या.	४५८०००	४४८०००	४३६०००
३९	शासनयक्षोनां नाम.	ब्रह्मायक्ष.	जक्षेटयक्ष.	कुमार यक्ष.
४०	शासननी यक्षिणी.	अशोका	मानवी	चंडा
४१	प्रथम गणधर नाम.	नंद	कश्यप	सुभूम
४२	प्रथम आर्या नाम.	सुयशा	धारणी	धरणी
४३	मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	चंपापुरी
४४	मोक्षतिथि.	वैशाखवदि २	श्रावणवदि ३	अशाड शुदि १४
४५	मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एक मास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अंतर मान.	एककोडीसागर	चोपन सागर	त्रीश सागर
४८	गण नाम.	मानवगण	देवगण	राक्षसगण
४९	योनि नाम.	नकुलयोनि	वानरयोनि	अश्वयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	१००० परिवार	१००० परिवार	६००परिवार
५१	जवसंख्या.	त्रणजवकस्या.	त्रणजवकस्या	त्रण जव कस्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकाल मान.	मास ९ दिवस६	मास ९ दिवस६	मास८ दिवस२०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्रीतीर्थंकर नाम.	१३ विमलनाथ	१४ अनंतनाथ	१५ श्रीधर्मनाथ
२	च्यवन तिथि.	वैशाखशुदि १२	श्रावणवदि ७	वैशाखशुदि ७
३	विमान नाम.	अष्टसारदेवलोक	प्राणत देवलोक	विजयविमान
४	जन्म नगरी.	कंपिलपुरी	अयोध्या	रत्नपुरी नगरी
५	जन्म तिथि.	महाशुदि ३	वैशाखवदि १३	महाशुदि ३
६	पितानां नाम.	कृतवर्माराजा	सिंहसेन राजा	भानुराजा
७	मातानां नाम.	श्यामामाता	सुयशामाता	सुव्रता माता
८	जन्म नक्षत्र.	उत्तराभाद्रपद	रेवतीनक्षत्र	पुष्यनक्षत्र
९	जन्म राशि.	मीनराशि	मीन राशि	कर्कराशि
१०	लांछन नाम.	वराहनुं लांछन	सीचाणानुंलांछन	वज्रलांछन
११	शरीरनुं मान.	शाठधनुप	पचाशधनुप	पीस्तालीशधनुप
१२	आयुर्मान.	शाठलाखवर्षे	त्रीशलाखवर्षे	दशलाखवर्षे
१३	शरीरना वर्ण.	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण
१४	पदवी राजानी.	राजा	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण.	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटला साथे दीक्षा.	(१०००) साधु	(१०००) साधु	(१०००) साधु
१७	दीक्षा नगरी.	कंपिल पुर	अयोध्या	रत्नपुरी
१८	दीक्षा तप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन
२०	पारणानां स्थान.	जयराजाने घेर	विजयराजानेघेर	धनसिंहने घेर
२१	केटलादिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षा तिथि.	महाशुदि ४	वैशाखवदि १४	महाशुदि १३
२३	छद्मस्थ काल.	बे मास	त्रण वर्ष	बे वर्ष
२४	ज्ञान नगरी.	कंपिलपुरी	अयोध्या	रत्नपुरी
२५	ज्ञान तप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षा वृक्ष.	जंबूवृक्ष	अशोक वृक्ष	दधिपर्णवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	पोषशुदि ६	वैशाख वदि १४	पोष शुदि १५

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८	गणधरसंख्या.	५७) गणधर	५०) गणधर	४३) गणधर
२९	साधुउंनी संख्या.	६८०००)	६६०००)	६४०००)
३०	साधवीयोनी संख्या.	१००८००)	६२०००)	६२४००)
३१	वैक्रिय लब्धिवंत.	९०००)	८०००)	७०००)
३२	वादियोनी संख्या.	३६००)	३२००)	२८००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	४८००)	४३००)	३६००)
३४	केवली संख्या.	५५००)	५०००)	४५००)
३५	मनःपर्यव संख्या.	५५००)	५०००)	४५००)
३६	चौद पूर्वीसंख्या.	११००)	१०००)	९००)
३७	श्रावकसंख्या.	२०८०००)	२०६०००)	२०४०००)
३८	श्राविकासंख्या.	४२४०००)	४०१४००)	४१३०००)
३९	शासन यक्षोनांनाम.	षण्मुखयक्ष	पातालयक्ष	किन्नरयक्ष
४०	शासन यक्षिणीनांना०	विदिता	अंकुशा	कंदर्पा
४१	प्रथम गणधरनाम.	मंदरगणधर.	जसगणधर	अरिष्ट
४२	प्रथम आर्यानाम.	धरा	पद्मा	आर्यशिवा
४३	मोक्ष स्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	आषाढवदि ७	चैत्रशुदि ५	ज्येष्ठशुदि ५
४५	मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एकमास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	काउस्सग	काउस्सग	काउस्सग
४७	अंतरमान.	नवसागरोपम	चारसागरोपम	त्रणसागरोपम
४८	गणनाम.	मानवगण	देवगण	देवगण
४९	योनिनाम.	छागयोनि	हस्तियोनि	मंजारयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	६००)	७००)	१०८)
५१	भवसंख्या.	त्रणभवकर्या	त्रणभवकर्या	त्रणभवकर्या
५२	कुलगोत्रनाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकालमान.	मास८दिवस२१	मास ९ दिवस ६	मास८दिवस२६

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्री तीर्थंकरनाम.	१६श्रीशांतिनाथ	१७ श्रीकुंथुनाथ	१८श्रीअरनाथ
२	च्यवनतिथि.	ज्ञाद्रवावदि ७	श्रावणवदि ए	फागण शुदि २
३	विमाननाम.	सर्वार्थसिद्ध	सर्वार्थसिद्ध	सर्वार्थसिद्ध
४	जन्मनगरी.	गजपुर	गजपुर	गजपुर
५	जन्मतिथि.	ज्येष्ठवदि १३	वैशाख वदि १४	मागशिरशु० १०
६	पितानां नाम.	विश्वसेन	सूरराजा	सुदर्शन
७	मातानां नाम.	अचिरा राणी	श्री राणी	देवीराणी
८	जन्मनक्षत्र.	जरणी नक्षत्र	कृत्तिका नक्षत्र	रेवती नक्षत्र
ए	जन्म राशि.	मेषराशि	वृष राशि	मीन राशि
१०	लांछननां नाम.	हरिणनुं लांछन.	बकरानुं लांछन	नंदावर्त्तनुं
११	शरीर मान.	४०) धनुष	३५) धनुष	३०) धनुष
१२	आयुनुं प्रमाण.	एक लाखवर्ष	(ए५०००) वर्ष	८४०००) वर्ष
१३	शरीरना वर्ण.	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण
१४	पदवी राजानी.	चक्रवर्त्ती	चक्रवर्त्ती	चक्रवर्त्ती
१५	पाणि ग्रहण.	६४०००) स्त्री	६४०००) स्त्री	६४०००) स्त्री
१६	केटला साथे दीक्षा.	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी.	गजपुर	गजपुर	गजपुर
१८	दीक्षातप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१ए	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर ज्ञोजन	क्षीर ज्ञाजन	क्षीर ज्ञोजन
२०	पारणानां स्थान.	सुमित्रने घेर	व्याघ्रसिंहने घेर	अपराजितने घेर
२१	केटला दिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षा तिथि.	ज्येष्ठ वदि १४	चैत्र वदि ५	मागशिर शु०११
२३	छद्मस्थ काल.	एकवर्ष	शोल वर्ष	त्रणवर्ष .
२४	ज्ञाननगरी.	गजपुर	गजपुर	गजपुर
२५	ज्ञान तप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष.	नंदीवृक्ष	नीलक वृक्ष	आंबानुं वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	पोषशुदि ए	चैत्रशुदि ३	कार्तिक शुदि१२

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८	गणधर संख्या.	३६) गणधर	३५) गणधर	३३) गणधर.
२९	साधुओनीसंख्या.	५२०००)	६००००)	५००००)
३०	साधवियोनी संख्या.	६१६००)	६०६००)	६००००)
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	६०००)	५१००)	७३००)
३२	वादियोनीसंख्या.	२४००)	२०००)	१६००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	३०००)	२५००)	२६००)
३४	केवली संख्या.	४३००)	३२००)	२८००)
३५	मनःपर्यवसंख्या.	४०००)	३३४०)	२५५१)
३६	चौदपूर्वीसंख्या.	८००)	६७०)	६१०)
३७	श्रावक संख्या.	१९००००)	१७९०००)	१८४०००)
३८	श्राविकासंख्या.	३९३०००)	३८१०००)	३७२०००)
३९	शासनयक्षनांनाम.	गरुडयक्ष	गंधर्वयक्ष	यक्षेदयक्ष
४०	शासनयक्षणीनांनाम.	निर्वाणी	बला	धणा
४१	प्रथम गणधर नाम.	चक्रयुक्त	सांव	कुंभ
४२	प्रथमआर्या नाम.	शुचि	दामिनी	रक्षिता
४३	मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	ज्येष्ठ वदि १३	वैशाख वदि १	मागशिरशुदि१०
४५	मोक्षसंलेपणा.	एक मास	एकमास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अंतर प्रमाण.	०॥पल्योपम	०।पल्योपम	१००० क्रोडवर्ष
४८	गणनाम.	मानवगण	राक्षसगण	देवगण
४९	योनि नाम.	हस्तियोनि	छागयोनि	हस्तियोनि
५०	मोक्षपरिवार.	९००परिवार	१०००)परिवार	१०००) परिवार
५१	भवसंख्या.	बार भव कर्या	त्रणभवकर्या	त्रणभवकर्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकाल मान.	मासनव दिवस८	मासनव दि०पांच	मासनव दिव. ८

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्रीतीर्थंकर नाम.	१९ श्रीमल्लिनाथ	२० श्रीमुनिसुव्रत	२१ श्रीनमि नाथ
२	च्यवन तिथि.	फागण शुदि ४	श्रावण शुदि १५	आशोशुदि १५
३	विमान नाम.	जयंतविमान	अपराजितविमा.	प्राणत देवलोक
४	जन्मनगरी.	मथुरानगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
५	जन्मतिथि.	मागशिरशुदि ११	ज्येष्ठवदि ८	श्रावण वदि ८
६	पितानां नाम.	कुंभराजा	सुमित्रराजा	विजयराजा
७	मातानां नाम.	प्रभावती	पद्मावती	विप्रा राणी
८	जन्म नक्षत्र.	अश्विनी नक्षत्र	श्रवण नक्षत्र	अश्विनी नक्षत्र
९	जन्म राशि.	मेषराशि	मकरराशि	मेषराशि
१०	लांछन नाम.	कलशनुं लांछन	कछपनुं लांछन	कमलनुं लांछन
११	शरीरनुं प्रमाण.	पचीश धनुष	वीश धनुष	पंदर धनुष
१२	आयुनुंप्रमाण.	५५०००) वर्ष	३००००) वर्ष	१०००) वर्ष
१३	शरीरना वर्ण.	नीलो वर्ण	श्यामवर्ण	पीलो वर्ण
१४	पदवी राजानी.	कुमार	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण.	नथी परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथे दीक्षा.	३००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी.	मिथिला नगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
१८	दीक्षातप.	त्रण उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन
२०	पारणानां स्थान.	विश्वसेन	ब्रह्मदत्त	दिन्नकुमार
२१	केटलादिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि.	मागशिरशुदि ११	फागणशुदि १२	अषाढ वदि ९
२३	छद्मस्थकाल.	एक अहोरात्र	अगियार मास	नवमास
२४	ज्ञान नगरी.	मथुरा नगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
२५	ज्ञानतप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष.	अशोक वृक्ष	चंपकवृक्ष	बकुलवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	मागशिरशुदि ११	फागण वदि १२	मागशिरशुदि ११

श्रा वावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरोमां कहेछे.

२८	गणधर संख्या.	२८) गणधर	१८) गणधर	१७) गणधर
२९	साधुउनी संख्या.	४००००	३००००	२००००
३०	साध्वीयोनी संख्या.	५५०००	५००००	४१०००
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	२९००	२०००	५०००
३२	वादियोनी संख्या.	१४००	१२००	१०००
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	२२००	१८००	१६००
३४	केवली संख्या.	२२००	१८००	१६००
३५	मनःपर्यव संख्या.	१७५०	१५००	१२५०
३६	चौदपूर्वी संख्या.	६६८	५००	४५०
३७	श्रावक संख्या.	१८३०००	१७२०००	१७००००
३८	श्राविका संख्या.	३७००००	३५००००	३४८०००
३९	शासन यक्षोनांनाम.	कुवेरयक्ष	वरुण यक्ष	त्रृकुटी यक्ष
४०	शासनयक्षणीनांनाम	धरणप्रिया	नरदत्ता	गंधारी
४१	प्रथम गणधर नाम.	अन्नीक्षकगणधर	मल्लीगणधर	शुत्तगणधर
४२	प्रथम आर्या नाम.	वधुमती	पुष्पमती	अनिला
४३	मोक्ष स्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्ष तिथि.	फागण शुदि १२	ज्येष्ठ वदि ९	वैशाखवदि १०
४५	मोक्ष संलेषणा.	एकमास	एक मास	एकमास
४६	मोक्ष आसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अंतरमान.	५४००००० वर्ष.	६००००० वर्ष	५००००० वर्ष
४८	गण नाम.	देवगण	देवगण	देवगण
४९	योनि नाम.	अश्वयोनि	वानरयोनि	अश्वयोनि
५०	मोक्ष परिवार.	५०० परिवार	१००० परिवार	१००० परिवार
५१	नव. संख्या.	त्रण नव कर्या	त्रण नव कर्या	त्रणनव कर्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुवंश कुल	इक्ष्वाकुवंशकुल	इक्ष्वाकुवंशकुल
५३	गर्भकालमान.	मास ९ दिवस ७	मास ९दिवस ८	मास ९ दिवस ८

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्रीतीर्थंकरनाम.	२२ श्रीनेमिनाथ	२३श्रीपार्श्वनाथ	२४ श्रीमहावीर
२	च्यवनतिथि.	कार्तिकवदि १२	चैत्रवदि ४	आषाढशुदि ६
३	विमाननाम.	अपराजित	प्राणत देवलोक	प्राणतदेवलोक
४	जन्मनगरी.	सौरिपुर	वणारसी	क्षत्रियकुंड
५	जन्मतिथि.	श्रावणशुदि ५	पोषवदि १०	चैत्रवदि १३
६	पितानां नाम.	समुद्र विजय	अश्वसेन	सिद्धार्थराजा
७	मातानांनाम.	शिवा देवी	वामा देवी	त्रिशला देवी
८	जन्मनक्षत्र.	चित्रानक्षत्र	विशाखा नक्षत्र	उत्तरा फाल्गुनी
९	जन्मराशि.	कन्याराशि	तुला राशि	कन्याराशि
१०	लांछन नाम.	शंखनुं लांछन	सर्पनुं लांछन	केशरी लांछन
११	शरीरनुं मान.	दशधनुष	नवहाथ	सातहाथ
१२	आयुनुंप्रमाण.	हजारवर्ष	शो वर्ष	बहोंतेर वर्ष
१३	शरीरनावर्ण.	श्यामवर्ण	नीलो वर्ण	पीलो वर्ण
१४	पदवीराजानी.	कुमार पदवी	कुमारपदवी	कुमार पदवी
१५	पाणिग्रहण.	नथी परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथेदीक्षा.	१०००) साधु	(३०० साधु	एकाकी दीक्षा
१७	दीक्षानगरी.	सौरिपुर	वणारसी	क्षत्रियकुंड
१८	दीक्षातप.	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोश्या.	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन
२०	पारणानांस्थान	वरदिन्न	धन्यनाम	बहुल ब्राह्मण
२१	केटलादिवसनुंपारणुं	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि.	श्रावण शुदि ६	पोषवदि ११	मागशिर वदि११
२३	छद्मस्थकाल.	चोपनदिवस	चोराशी दिवस	बार वर्ष
२४	ज्ञाननगरी.	गिरनार	वणारसी	ऋजुवालुका नदी
२५	ज्ञानतप.	त्रण उपवास	त्रण उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष.	वेडसवृक्ष	धातकीवृक्ष	शालवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि.	आशोवदि०)	चैत्रवदि ४	वैशाख शुदि १०

सीद्रजोन व्योम परोयत् किमावरीवः कुहकस्य शर्मण्णः किमासीन्गहनं गम्भीरं " आ श्रुति ऋग्वेदनीछे, तथा " आत्मा वा इदमग्र आसीन्नान्यत् किंचिन्मिषत् स ईक्षत लोकान्नुसृज इति " आ ऐतरेय ब्राह्मणनी श्रुति छे; इत्यादि अनेक श्रुतियोथी सिद्ध थायछे के सृष्टिनी पेहेलां एक ईश्वर हता. न जगत् हतुं अथवा नहोतुं जगत्नुं कारण,एकज ईश्वर शुद्धस्वरूप हता. वली इसाइ तेमज मुसलमान मतवाला पण एमज माने छे. ए हेतुथी अमे प्रथम पक्ष मानियें छीयें.

उत्तर– हे पूर्वपक्षि! आपनुं ए केहेवुं ईश्वरने बहुज कलंकित करेछे.

पूर्वपक्ष– जगत् रचवाथी ईश्वरने शुं कलंक प्राप्त थाय छे ?

उत्तरपक्ष– प्रथम तो जगत्नुं उपादान कारण नथी, ते हेतुथी जगत् कदापि उत्पन्न थइ शकतुं नथी. जेनुं उपादान कारण होय नहि ते कार्य कदापि उत्पन्न थइ शके नही. जेम के गधेडानां सींग.

पूर्वपक्ष–ईश्वरें पोतानी शक्ति, नामांतर कुदरतथी जगत् रचेल छे. ईश्वरनी जे शक्ति छे.तेज उपादान कारण छे.

उत्तरपक्ष– ईश्वरनी जे शक्ति छे ते ईश्वरथी भिन्न छे, के अभिन्न छे ? जो कहो के भिन्न छे, तो पछी जड छे के चेतन छे ? जो कहो के जड छे, तो ते नित्य छे, के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो आपनुं एम जे केहेवुं हतुं के सृष्टिनी पेहेलां एक केवल ईश्वर हता अने बीजी कांइपण वस्तु न होती; ते प्रमाणरहित अन्यायी वचन थयुं, पोतेज पोताना वचनने मृषा कराव्युं. वली एम कहो के अनित्य छे तो पछी तेनी उपादानकारणरूप बीजी ईश्वरनी शक्ति थइ, ते शक्तिनी उत्पन्न करनारी त्रीजी शक्ति थइ; एवीरीतें करतां अनवस्था दूषण आवे छे. जो कहो के चेतन छे, तो पछी नित्य छे के अनित्य छे ? बंने पक्षमां उपर बताव्या मुजब पूर्वापर स्ववचन व्याहत तेमज अनवस्था दूषण छे. जो कहो के ईश्वरशक्ति ईश्वरथी अभिन्न छे तो सर्ववस्तुने, ईश्वरज केहेवी जोइये, जो सर्ववस्तु ईश्वर बनी गइ तो पछी सारुं के बुरुं, नरकके स्वर्ग, पुण्य के पाप, धर्म के अधर्म, उंचनीच, रंकराजा,सुशील के दुःशील, राजा तेमज प्रजा, चोर तेमज साधु, सुखी तेमज दुःखी इत्यादि सर्वे, ईश्वर पोतेज बन्या. हवे विचारो के ईश्वरें जगत् शुं रच्युं ? पोतेज

पोतानुं सत्तानाश करी लीधुं. आ प्रथम कलंक ईश्वरने लागे छे, तथा ज्यारें ईश्वर पोतेज सर्वरूप बनी गया तो पछी वेदादि शास्त्र शा माटे बनाव्यां? तेमज तेनो अभ्यास करवाथी शुं फल थयुं? आ बीजुं कलंक; तथा ज्यारे वेदादि शास्त्र बनाव्यां त्यारें पोते पोताने ज्ञानी बनाववाने रच्यां ते उपरथी सिद्ध थयुं के प्रथम तो पोते अज्ञानी हता. आ त्रीजुं कलंक; तथा शुद्ध हता ते अशुद्ध बन्या कारण के जगत्रूप बनवानी मेहेनत करी जे निष्फल थई. आ चोथुं कलंक; कोइ वस्तु जगत्मां सारी के बुरी नहि, आ पांचमुं कलंक; शा माटे पोते पोताने संकटमां नाख्या. आ छठुं कलंक; इत्यादि अनेक कलंक आप ईश्वरने लगावो छो.

पूर्वपक्ष–ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे, ते हेतुथी ईश्वर, उपादान कारण विनापण जगत् रची शकेछे.

उत्तरपक्ष–आ जे आपनुं केहेवुं छे ते प्यारी स्त्री अथवा मित्र मानशे परंतु प्रेक्षावान् कोईपण नहि माने; कारण के आ तमारा केहेवामां कोईपण प्रमाण नथी. जेनुं उपादानकारण होय नहि ते कार्य कदी थई शके नहि. जेम के गधेडानां सींग, एवुं प्रमाण आपना केहेवाने बाधक छे परंतु साधक तो कोई नथी, तेम छतां हठ करी स्वकपोलकल्पितनेज मानशो तो प्रेक्षावाननी पंक्तिमां कदापि दाखल नहि थई शको. तेमज आ तमारा कथनमां ईतरेतर आश्रय दूषणरूप वज्रनो प्रहार पडे छे. जेम के सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय, जो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय तो सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय; आ बंनेमांथी ज्यां सुधी एक सिद्ध न थाय त्यांसुधी बीजुं कदीपण सिद्ध न थाय. तेमज आ तमारा कथनमां चक्रक दूषण आवे छे, सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय. ज्यारें सर्व शक्तिमान् सिद्ध थाय त्यारें सृष्टिनी पेहेलां सामग्रीरहित केवल शुद्ध एक ईश्वर सिद्ध थाय, ज्यारे एम थाय त्यारे सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय, एम प्रगट चक्रक दूषण आवे छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध छे, पछी आप तेने सृष्टिकर्त्ता केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष– जो ईश्वर सृष्टिना कर्त्ता प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थाय तो कोइने पण अमान्य न होय, अने तमारो अमारो ईश्वरविषयी विवाद पण कदी न होय, कारण के प्रत्यक्षमां विवाद होतोज नथी. परंतु ईश्वरनुं प्रत्यक्ष दर्शन तो आपना वेदमंत्रथी विरुद्ध छे. वेदमंत्र. अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुस्सशृणोत्यकर्णः ॥ सवेत्ति विश्वं नच तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥ आ मंत्रथी साबीत थाय छे के ईश्वरने जाणनार कोइ छे नहि.

पूर्वपक्ष–कर्त्ता विना जगत् केम थइ गयुं? आ अनुमान प्रमाणथी ईश्वर सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय छे, ते आप केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष– आ आपना अनुमाननुं बीजा ईश्वरपक्षमां खंडन करवामां आवशे. उपर बतावेला प्रकारथी एक केवल उपादानादि सामग्री रहित, सृष्टिनी पेहेलां ईश्वर सिद्ध न थया तो पण अमे आगल चलावियें छियें. ज्यारे ईश्वरें आ जीवोने रच्या हता त्यारे १ निर्मल रच्या हता? २ पुण्यवाला रच्या हता? ३ पापवाला रच्या हता? ४ मिश्रित पुण्यपाप अर्धो अर्धवाला रच्या हता? ५ पुण्य अल्प पाप अधिक एवा रच्या हता? ६ किंवा पुण्य अधिक पाप अल्प एवा रच्या हता? जो प्रथम पक्ष ग्रहण करशो तो जगतमां सर्व जीव निर्मलज होवा जोइयें, पछी वेदादि शास्त्रद्वारा तेउने उपदेश करवो वृथा छे. तेमज वेदादि शास्त्रोना कर्त्ता पण मूढ सिद्ध थशे. कारण के जो प्रथमथीज जीव निर्मल छे तो तेउने माटे शास्त्र शा माटे रच्यां? जे वस्त्र निर्मल होय छे तेने काइपण बुद्धिमान् धोता नथी. जो कदापि धोवे तो ते महामूढ छे. आ कारणथी जे निर्मल जीवोना उपदेश निमित्त शास्त्र रचे ते पण मूढ छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वरें तो जीवोने शुद्ध निर्मल अर्थात् सारा बनाव्या हता, परंतु जीवोए पोतानी इच्छाथी सारां अथवा भूंडां कामो करी लीधां छे, तेमां ईश्वरनो कांइ दोष नहि.

उत्तरपक्ष–जो ईश्वरें जीवोमां सारां अथवा बुरां काम करवानी शक्ति रची न होती तो पछी जीवोमां पुण्य अथवा पाप करवानी शक्ति क्यांथी आवी?

पूर्वपक्ष–शक्तियो तो जीवमां सर्व ईश्वरेंज रची छे, परंतु जीवोने बुरां

काम करवामां प्रवर्त्ताव्या नथी. बुरां काम करवामां जीव पोतेज प्रवृत्त थयेलछे. जेम के कोइ गृहस्थें पोताना प्रिय बालक पुत्रने खेलवा माटे एक रमकडुं दीधुं, हवे जो ते बालक ते खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख खोवे तो तेमां तेना पितानो शुं दोष छे? तेवीज रीतें ईश्वरें जीवोने जे हाथ, पग प्रमुख वस्तुओ आपीछे ते नित्य केवल धर्म करवाने वास्ते आपेली छे, पछी जे जीव पोतानी इच्छाथी ते वस्तुने पापकर्ममां प्रवर्त्तावे तो तेमां ईश्वरनो शुं दोष छे?

उत्तरपक्ष–हे भव्य? आ जे तमे बालकनुं दृष्टांत आप्युं ते समीचीन नथी. कारण के बालकना मातपिताने ए ज्ञान नथी के बालकने खेलवा वास्ते आपणें जे वस्तु आपियें छियें ते खेलवानी वस्तुथी आ बालक पोतानी आंख फोडी नाखशे, जो कदापि बालकना मातपिताने ए ज्ञान होत के आ बालक खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख फोडी नाखशे तो ते माता पिता कदापि तेना हाथमां ते खेलवानी वस्तु आपत नहि, जो कदी जाणवा छतां आपे तो ते तेनां मातपिता नथी परंतु परम शत्रु छे. तेवीज रीतें ईश्वर मातपिता तुल्य छे अने तमे अमे तेनां बालक छियें. जो ईश्वर जाणता हता के में आ जीवोने रच्या, तेओने हाथ, पग, मन इंद्रियादि सामग्री आपी छे, आ जीव ते सामग्रीथी बहु पाप करीने नरकमां जानार छे, तो पछी ईश्वरें ते जीवने शा माटे रच्यो? जो कदी एम कहो के ईश्वर ए वात जाणता न होता के में धर्म करवाने आपेली सामग्रीथी पाप करीने ते जीव नरकमां जाशे, तो पछी ईश्वर आपना केहेवाथीज अज्ञानी, असर्वज्ञ, सिद्ध थाय छे. जो कदी एम कहो के ईश्वर जाणता हता के आ जीव मारी आपेली सामग्रीथी पाप करीने नरक जवानो छे तो पछी अमने रचनार ईश्वर परम शत्रु थया के नहि? प्रयोजन विना रांक जीवोने सामग्रीद्वारा पाप करावीने शा माटे तेओने नरकमां नाख्या? ज्यारे सामग्रीद्वारा प्रथम पाप कराव्यां अने पछी नरकमां जवानी शिक्षा करी त्यारे आ तमारा केहेवाथी ईश्वर करतां अधिक अन्यायी कोइ नथी; कारण के प्रथम तो ते जीवने रच्यो, पछी नरकमां नाख्यो. बस आथीज तमे ईश्वरने अन्यायी,

असर्वज्ञ, निर्दय, अज्ञानी, वृथा मेहेनती इत्यादि कलंक दीधां. ते कारणथी निर्मल जीव ईश्वरें रच्या नथी ए प्रथम पक्षोत्तर.

द्वितीय पक्षोत्तर–जो एम कहो के ईश्वरें पुण्यवालाज जीव रच्याछे तो ते पण तमारुं केहेवुं मिथ्या छे. कारण के जो पुण्यवालाज सर्व जीव हता तो गर्भमांज अंधा, लंगडा, लूला, बहेरा, मूंगा होवापणुं, भूंडुं रूप, नीच अथवा निर्धन कुलमां जन्मवा पणुं, जावजीव दुःखी रेहेवुं, खावा पीवाने पुरुं न मलवुं, महाकष्टकारक मेहेनत करी पेट भरवुं, आ सर्व पुण्यना उदयथी होइ शकतुं नथी, वली पुण्य कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य केम लगावी दीधुं? जो कदी कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य लगावी दीधुं तो तेवीज रीतें धर्म कर्या विनाज जीवोने स्वर्ग तेमज मोक्ष केम नथी पहोंचाडी शकता? शास्त्रोपदेश करावीने, भूखें मरावीने, तृष्णा छोडावीने, राग द्वेष मिटावीने, घरबार तजावीने, साधु बनावीने, टुकडा मगावीने, दया, दम, दान, सत्यवचन, चोरीनो त्याग, स्त्रीनो त्याग, इत्यादि अनेक साधन करावीने पछी स्वर्ग मोक्षमां पहोंचाडवा; आ संकट ईश्वरें फोकट उत्पन्न करीने जीवोने शा माटे दुःख दीधुं. आ वातथी तो ए प्रतीत थायछे के ईश्वरने कांइ समजण नथी.

तृतीय पक्षोत्तर– जो कदी एम कहो के ईश्वरें पापसंयुक्तज जीव रच्या छे, तो पछी कर्या विनाज जीवोने पाप लगावी दीधां तेमां तो ईश्वरें अमारुं सत्तानाश करी दीधुं. हवे अमे कोनी पासे जइ विनति करियें के गुन्हा कर्या विना ईश्वर अमने पाप लगावे छे, जेथी आप तेमने मना करो के कर्याविना अमने पाप न लगावे; एवा अन्यायी ईश्वरनुं तो कदी नाम पण लेवुं न जोइयें. तथा जो ईश्वरें पापसंयुक्तज सर्व जीव रच्या छे, तो राजा, मंत्री, शेठ, सेनापति, धनवान् इत्यादिना घरमां उत्पन्न थवुं, नीरोगी काया, सुंदर रूप, सुंदर शरीर, घरमां आदर सन्मान, बहार यशकीर्त्ति, पंचेंद्रिय, विषयभोग, इत्यादि सामग्री प्राप्त थवानो पापथी कदी संभव होतो नथी. ते कारणथी जीवोने केवल पापवान् ईश्वरें रच्या नथी. इति.

चतुर्थ पक्षोत्तर–जो एम कहो के अर्धोअर्ध पुण्य पापवाला जीव ई-

श्वरें रच्या छे तो ते पक्ष पण यथार्थ नथी, कारण के अरधा सुखी अ-रधा दुःखी एवा पण सर्व जीव देखवामां आवता नथी. इति.

पंचम पक्षोत्तर– पांचमो पक्ष पण ठीक नथी, सुख थोडुं अने दुःख विशेष एवा पण सर्व जीव देखवामां नथी आवता, परंतु सुख विशेष अने दुःख अल्प, एवा बहु जीव देखवामां आवे छे. इति.

षष्ठ पक्षोत्तर– छठो पक्ष पण समीचीन नथी. सुख घणुं अने दुःख थोडुं एवा पण सर्व जीव देखवामां आवता नथी, दुःख बहु अने सुख अल्प, एवा बहु जीव देखवामां आवे छे. आ हेतुउथी ईश्वर जीवोने कोइपण व्यवस्थावाला रची शकता नथी. तो पछी सृष्टिना कर्त्ता ईश्वर केम सिद्ध थइ शके छे ? कदी थइ शकता नथी. तथा ज्यारे ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें ईश्वरने शुं दुःख हतुं ? अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे शुं सुख थयुं ?

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो सदा परम सुखी छे. शुं ईश्वरमां कांइ न्यूनता छे के ते न्यूनताने पूर्ण करवा वास्ते सृष्टि रचे छे. ते तो जगत्मां पोतानी ईश्वरता प्रगट करवाने सृष्टि रचे छे.

उत्तर पक्ष–ज्यारें ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें तो ईश्वरनी ईश्व-रता प्रगट न होती अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे ईश्वरता प्रगट थइ, तो प्रथम ज्यारें ईश्वरनी ईश्वरता प्रगट न होती थइ त्यारे तो ईश्वर बहुज उदास, तेमज अपूर्ण मनोरथवाला अने ईश्वरता प्रगट करवामां विह्वल हता. आ हेतुथी अवश्य ईश्वरने दुःख होवुं जोइयें. ज्यारें ईश्वर सृष्टिनी पेहेलां एवा दुःखी हता त्यारे निरुद्यमी केम बेसी रह्या हता ? आ सृष्टिनी पेहेलां बीजी सृष्टि रचीने पोतानुं दुःख केम दूर कर्युं न होतुं ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरें जे सृष्टि रची छे ते जीवोने धर्म करावीने तेउने अनंत सुख देशे. आ परोपकार वास्ते ईश्वरें सृष्टि रची छे.

उत्तरपक्ष–धर्म करावीने जीवोने सुख देवुं ते तो तमारा केहेवा मु-जब परोपकार थयो, परंतु जेउ पाप करीने नरकमां गया तेउना उपर शुं उपकार कर्यो ? तेउने दुःखी करवाथी शुं ईश्वर परोपकारी थइ शके छे?

---

१ सारो या प्रमाणसिद्ध सत्य.

पूर्वपक्ष–तेउने नरकमांथी काढीने पठी स्वर्गमां स्थापन करशे;

उत्तरपक्ष–तो पठी प्रथमज नरकमां केम जवा दीधा ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरज सर्व पुण्यपापादि करावे ठे. जीवने आधीन कांइपण नथी. ईश्वर जे चाहे ठे ते करावे ठे. जेम काष्ठनी पुतलीने वाजीगर जेम चाहे ठे तेम नचावे ठे अने पुतली स्वाधीन नथी तेम.

उत्तरपक्ष–जो जीवने कांइ आधीन नथी तो जीवने सारा नरसानुं फल पण न जोइयें. कारण के जो कोइ सरदार कोइ नोकरने फरमावे के तमे आ काम करो पठी नोकर सरदारना हुकम मुजब ते काम करे, अने ते काम सारुं अथवा नरसुं ठे तो शुं पठी ते सरदार ते नोकरने कांइ शिक्षा करी शके ठे ? कांइ पण करी शकता नथी. तेवीज रीतें ईश्वरनी आज्ञाथी जो जीवें पुण्य अथवा पाप कर्या तो पठी पुण्य पापनुं फल जीवोने नज मलवुं जोइये. ज्यारें पुण्य पाप जीवनां कर्यां थतां नथी त्यारें स्वर्ग तेमज नरक पण जीवने न होवां जोइयें. पठी जीवने, नरक, स्वर्ग, तिर्यक् तेमज मनुष्य ए चार गति पण न होय. ज्यारे चार गति न होय त्यारे संसार पण न होय. जो संसार न होय तो वेद, पुराण, तौरे, तजबूर, इंजिल प्रमुख शास्त्र पण न होय. ज्यारें शास्त्र न होय त्यारें शास्त्रना उपदेशक पण न होय, ज्यारें शास्त्रना उपदेशक पण होय नहि त्यारे ईश्वर पण नहि. जो ईश्वरज नहि तो पठी सर्व शून्यता सिद्ध थइ. आ कलंक केम मटशे ?

पूर्वपक्ष–आ जगत् वाजीगरनी वाजी जेवुं ठे, अने ईश्वर तेना वाजीगर ठे. तेथी ईश्वर आ जगत्ने रचीने खेलथी क्रीडा करेठे. नरक, स्वर्ग, पुण्य तेमज पाप कांइ नथी.

उत्तरपक्ष–जो ईश्वरें क्रीडाने माटे जगत्नी रचना करी तो क्रीडाज मात्र तेनुं फल थवुं जोइयें. परंतु आ जगत्मां तो कुष्टी, रोगी, शोकी, धनहीन, बलहीन, महाडुःखी इत्यादि महाप्रलाप करी रह्याठे, जेउने देखीने दयावश थवाथी अमारां रोम उंचां थायठे. तो शुं पठी ईश्वरने आ डुःखी जीवोने देखीने दया नथी आवती ? जो ईश्वरने दया नथी आवती तो पठी निर्दयपण कदी ईश्वर थइ शकेठे ? वली जे क्रीडा करवा वाला ठे ते वालकनी पेठे रागी, द्वेषी, अज्ञानी होय ठे. जो राग द्वेष ठे

पोतानुं सत्तानाश करी लीधुं. आ प्रथम कलंक ईश्वरने लागे छे, तथा ज्यारें ईश्वर पोतेज सर्वरूप बनी गया तो पछी वेदादि शास्त्र शा माटे बनाव्यां ? तेमज तेनो अभ्यास करवाथी शुं फल थयुं ? आ बीजुं कलंक; तथा ज्यारे वेदादि शास्त्र बनाव्यां त्यारें पोते पोताने ज्ञानी बनाववाने रच्यां ते उपरथी सिद्ध थयुं के प्रथम तो पोते अज्ञानी हता. आ त्रीजुं कलंक; तथा शुद्ध हता ते अशुद्ध बन्या कारण के जगतूरूप बनवानी मेहेनत करी जे निष्फल थई. आ चोथुं कलंक; कोइ वस्तु जगत्मां सारी के बुरी नहि, आ पांचमुं कलंक; शा माटे पोते पोताने संकटमां नाख्या. आ छहुं कलंक; इत्यादि अनेक कलंक आप ईश्वरने लगावो छो.

पूर्वपक्ष–ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे, ते हेतुथी ईश्वर, उपादान कारण विनापण जगत् रची शकेछे.

उत्तरपक्ष–आ जे आपनुं केहेवुं छे ते प्यारी स्त्री अथवा मित्र मानशे परंतु प्रेक्षावान् कोईपण नहि माने; कारण के आ तमारा केहेवामां कोईपण प्रमाण नथी. जेनुं उपादानकारण होय नहि ते कार्य कदी थई शके नहि. जेम के गधेडानां सींग, एवुं प्रमाण आपना केहेवाने बाधक छे परंतु साधक तो कोई नथी, तेम छतां हठ करी स्वकपोलकल्पितनेज मानशो तो प्रेक्षावाननी पंक्तिमां कदापि दाखल नहि थई शको. तेमज आ तमारा कथनमां ईतरेतर आश्रय दूषणरूप वज्रनो प्रहार पडे छे. जेम के सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय, जो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय तो सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय; आ बंनेमांथी ज्यां सुधी एक सिद्ध न थाय त्यांसुधी बीजुं कदीपण सिद्ध न थाय. तेमज आ तमारा कथनमां चक्रक दूषण आवे छे, सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय. ज्यारें सर्व शक्तिमान् सिद्ध थाय त्यारें सृष्टिनी पेहेलां सामग्रीरहित केवल शुद्ध एक ईश्वर सिद्ध थाय, ज्यारे एम थाय त्यारे सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय, एम प्रगट चक्रक दूषण आवे छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध छे, पछी आप तेने सृष्टिकर्त्ता केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष- जो ईश्वर सृष्टिना कर्त्ता प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थाय तो कोइने पण अमान्य न होय, अने तमारो अमारो ईश्वरविषयी विवाद पण कदी न होय, कारण के प्रत्यक्षमां विवाद होतोज नथी. परंतु ईश्वरनुं प्रत्यक्ष दर्शन तो आपना वेदमंत्रथी विरुद्ध छे. वेदमंत्र. अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुस्सशृणोत्यकर्णः ॥ सवेत्ति विश्वं नच तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥ आ मंत्रथी सावीत थाय छे के ईश्वरने जाणनार कोइ छे नहि.

पूर्वपक्ष-कर्त्ता विना जगत् केम थइ गयुं? आ अनुमान प्रमाणथी ईश्वर सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय छे, ते आप केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष- आ आपना अनुमाननुं बीजा ईश्वरपक्षमां खंडन करवामां आवशे. उपर बतावेला प्रकारथी एक केवल उपादानादि सामग्री रहित, सृष्टिनी पेहेलां ईश्वर सिद्ध न थया तो पण अमे आगल चलावियें छियें. ज्यारे ईश्वरें आ जीवोने रच्या हता त्यारे १ निर्मल रच्या हता? २ पुण्यवाला रच्या हता? ३ पापवाला रच्या हता? ४ मिश्रित पुण्यपाप अर्धो अर्धवाला रच्या हता? ५ पुण्य अल्प पाप अधिक एवा रच्या हता? ६ किंवा पुण्य अधिक पाप अल्प एवा रच्या हता? जो प्रथम पक्ष ग्रहण करशो तो जगत्मां सर्व जीव निर्मलज होवा जोइये, पछी वेदादि शास्त्रद्वारा तेउने उपदेश करवो वृथा छे. तेमज वेदादि शास्त्रोना कर्त्ता पण मूढ सिद्ध थशे. कारण के जो प्रथमथीज जीव निर्मल छे तो तेउने माटे शास्त्र शा माटे रच्यां? जे वस्त्र निर्मल होय छे तेने कोइपण बुद्धिमान् धोता नथी. जो कदापि धोवे तो ते महामूढ छे. आ कारणथी जे निर्मल जीवोना उपदेश निमित्त शास्त्र रचे ते पण मूढ छे.

पूर्वपक्ष-ईश्वरें तो जीवोने शुद्ध निर्मल अर्थात् सारा बनाव्या हता, परंतु जीवोए पोतानी इछाथी सारां अथवा भूंडां कामो करी लीधां छे, तेमां ईश्वरनो कांइ दोष नहि.

उत्तरपक्ष-जो ईश्वरें जीवोमां सारां अथवा बुरां काम करवानी शक्ति रची न होती तो पछी जीवोमां पुण्य अथवा पाप करवानी शक्ति क्यांथी आवी?

पूर्वपक्ष-शक्तियो तो जीवमां सर्व ईश्वरेंज रची छे, परंतु जीवोने बुरां

पोतानुं सत्तानाश करी लीधुं. आ प्रथम कलंक ईश्वरने लागे छे, तथा ज्यारें ईश्वर पोतेज सर्वरूप वनी गया तो पछी वेदादि शास्त्र शा माटे बनाव्यां ? तेमज तेनो अभ्यास करवाथी शुं फल थयुं ? आ वीजुं कलंक; तथा ज्यारे वेदादि शास्त्र वनाव्यां त्यारें पोते पोताने ज्ञानी बनाववाने रच्यां ते उपरथी सिद्ध थयुं के प्रथम तो पोते अज्ञानी हता. आ त्रीजुं कलंक; तथा शुद्ध हता ते अशुद्ध वन्या कारण के जगत्रूप वनवानी मेहेनत करी जे निष्फल थई. आ चोथुं कलंक; कोइ वस्तु जगत्मां सारी के वुरी नहि, आ पांचमुं कलंक; शा माटे पोते पोताने संकटमां नाख्या. आ छठुं कलंक; इत्यादि अनेक कलंक आप ईश्वरने लगावो छो.

पूर्वपक्ष–ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे, ते हेतुथी ईश्वर, उपादान कारण विनापण जगत् रची शकेछे.

उत्तरपक्ष–आ जे आपनुं केहेवुं छे ते प्यारी स्त्री अथवा मित्र मानशे परंतु प्रेक्षावान् कोईपण नहि माने; कारण के आ तमारा केहेवामां कोईपण प्रमाण नथी. जेनुं उपादानकारण होय नहि ते कार्य कदी थई शके नहि. जेम के गधेडानां सींग, एवुं प्रमाण आपना केहेवाने वाधक छे परंतु साधक तो कोई नथी, तेम छतां हठ करी स्वकपोलकल्पितनेज मानशो तो प्रेक्षावाननी पंक्तिमां कदापि दाखल नहि थई शको. तेमज आ तमारा कथनमां ईतरेतर आश्रय दूषणरूप वज्रनो प्रहार पडे छे. जेम के सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय, जो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय तो सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय; आ वंनेमांथी ज्यां सुधी एक सिद्ध न थाय त्यांसुधी वीजुं कदीपण सिद्ध न थाय. तेमज आ तमारा कथनमां चक्रक दूषण आवे छे, सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय. ज्यारें सर्व शक्तिमान् सिद्ध थाय त्यारें सृष्टिनी पेहेलां सामग्रीरहित केवल शुद्ध एक ईश्वर सिद्ध थाय, ज्यारे एम थाय त्यारे सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय, एम प्रगट चक्रक दूषण आवे छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध छे, पछी आप तेने सृष्टिकर्त्ता केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष– जो ईश्वर सृष्टिना कर्त्ता प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थाय तो कोइने पण अमान्य न होय, अने तमारो अमारो ईश्वरविषयी विवाद पण कदी न होय, कारण के प्रत्यक्षमां विवाद होतोज नथी. परंतु ईश्वरनुं प्रत्यक्ष दर्शन तो आपना वेदमंत्रथी विरुद्ध छे. वेदमंत्र. अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुस्सशृणोत्यकर्णः ॥ सवेत्ति विश्वं नच तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥ आ मंत्रथी सावीत थाय छे के ईश्वरने जाणनार कोइ छे नहि.

पूर्वपक्ष–कर्त्ता विना जगत् केम थइ गयुं? आ अनुमान प्रमाणथी ईश्वर सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय छे, ते आप केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष– आ आपना अनुमाननुं बीजा ईश्वरपक्षमां खंडन करवामां आवशे. उपर बतावेला प्रकारथी एक केवल उपादानादि सामग्री रहित, सृष्टिनी पेहेलां ईश्वर सिद्ध न थया तो पण अमे आगल चलावियें छियें. ज्यारे ईश्वरें आ जीवोने रच्या हता त्यारे १ निर्मल रच्या हता? २ पुण्यवाला रच्या हता? ३ पापवाला रच्या हता? ४ मिश्रित पुण्यपाप अर्धो अर्धवाला रच्या हता? ५ पुण्य अल्प पाप अधिक एवा रच्या हता? ६ किंवा पुण्य अधिक पाप अल्प एवा रच्या हता? जो प्रथम पक्ष ग्रहण करशो तो जगत्मां सर्व जीव निर्मलज होवा जोइये, पछी वेदादि शास्त्रद्वारा तेउने उपदेश करवो वृथा छे. तेमज वेदादि शास्त्रोना कर्त्ता पण मूढ सिद्ध थशे. कारण के जो प्रथमथीज जीव निर्मल छे तो तेउने माटे शास्त्र शा माटे रच्यां? जे वस्त्र निर्मल होय छे तेने कोइपण बुद्धिमान् धोता नथी. जो कदापि धोवे तो ते महामूढ छे. आ कारणथी जे निर्मल जीवोना उपदेश निमित्त शास्त्र रचे ते पण मूढ छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वरें तो जीवोने शुरू निर्मल अर्थात् सारा बनाव्या हता, परंतु जीवोए पोतानी इच्छाथी सारां अथवा भूंडां कामो करी लीधां छे, तेमां ईश्वरनो कांइ दोष नहि.

उत्तरपक्ष–जो ईश्वरें जीवोमां सारां अथवा बुरां काम करवानी शक्ति रची न होती तो पछी जीवोमां पुण्य अथवा पाप करवानी शक्ति क्यांथी आवी?

पूर्वपक्ष–शक्तियो तो जीवमां सर्व ईश्वरेंज रची छे, परंतु जीवोने बुरां

काम करवामां प्रवर्त्ताव्या नथी. बुरां काम करवामां जीव पोतेज प्रवृत्त थयेलछे. जेम के कोइ गृहस्थें पोताना प्रिय बालक पुत्रने खेलवा माटे एक रमकडुं दीधुं, हवे जो ते बालक ते खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख खोवे तो तेमां तेना पितानो शुं दोष छे? तेवीज रीतें ईश्वरें जीवोने जे हाथ, पग प्रमुख वस्तुओ आपीछे ते नित्य केवल धर्म करवाने वास्ते आपेली छे, पछी जे जीव पोतानी इच्छाथी ते वस्तुने पापकर्ममां प्रवर्त्तावे तो तेमां ईश्वरनो शुं दोष छे?

उत्तरपक्ष—हे भव्य? आ जे तमे बालकनुं दृष्टांत आप्युं ते समीचीन नथी. कारण के बालकना मातपिताने ए ज्ञान नथी के बालकने खेलवा वास्ते आपणें जे वस्तु आपियें छियें ते खेलवानी वस्तुथी आ बालक पोतानी आंख फोडी नाखशे, जो कदापि बालकना मातपिताने ए ज्ञान होत के आ बालक खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख फोडी नाखशे तो ते माता पिता कदापि तेना हाथमां ते खेलवानी वस्तु आपत नहि, जो कदी जाणवा छतां आपे तो ते तेनां मातपिता नथी परंतु परम शत्रु छे. तेवीज रीतें ईश्वर मातपिता तुल्य छे अने तमे अमे तेनां बालक छियें. जो ईश्वर जाणता हता के में आ जीवोने रच्या, तेओने हाथ, पग, मन इंद्रियादि सामग्री आपी छे, आ जीव ते सामग्रीथी बहु पाप करीने नरकमां जानार छे, तो पछी ईश्वरें ते जीवने शा माटे रच्यो? जो कदी एम कहो के ईश्वर ए वात जाणता न होता के में धर्म करवाने आपेली सामग्रीथी पाप करीने ते जीव नरकमां जाशे, तो पछी ईश्वर आपना केहेवाथीज अज्ञानी, असर्वज्ञ, सिद्ध थाय छे. जो कदी एम कहो के ईश्वर जाणता हता के आ जीव मारी आपेली सामग्रीथी पाप करीने नरक जवानो छे तो पछी अमने रचनार ईश्वर परम शत्रु थया के नहि? प्रयोजन विना रांक जीवोने सामग्रीद्वारा पाप करावीने शा माटे तेओने नरकमां नाख्या? ज्यारे सामग्रीद्वारा प्रथम पाप कराव्यां अने पछी नरकमां जवानी शिक्षा करी त्यारे आ तमारा केहेवाथी ईश्वर करतां अधिक अन्यायी कोइ नथी; कारण के प्रथम तो ते जीवने रच्यो, पछी नरकमां नाख्यो. बस आथीज तमे ईश्वरने अन्यायी,

असर्वज्ञ, निर्दय, अज्ञानी, वृथा मेहेनती इत्यादि कलंक दीधां. ते कारणथी निर्मल जीव ईश्वरें रच्या नथी ए प्रथम पक्षोत्तर.

द्वितीय पक्षोत्तर–जो एम कहो के ईश्वरें पुण्यवालाज जीव रच्याछे तो ते पण तमारुं केहेवुं मिथ्या छे. कारण के जो पुण्यवालाज सर्व जीव हता तो गर्भमांज अंधा, लंगडा, लूला, बहेरा, मूंगा होवापणुं, भूंडुं रूप, नीच अथवा निर्धन कुलमां जन्मवा पणुं, जावजीव दुःखी रेहेवुं, खावा पीवाने पुरुं न मलवुं, महाकष्टकारक मेहेनत करी पेट भरवुं, आ सर्व पुण्यना उदयथी होइ शकतुं नथी, वली पुण्य कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य केम लगावी दीधुं? जो कदी कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य लगावी दीधुं तो तेवीज रीतें धर्म कर्या विनाज जीवोने स्वर्ग तेमज मोक्ष केम नथी पहोंचाडी शकता? शास्त्रोपदेश करावीने, भूखें मरावीने, तृष्णा छोडावीने, राग द्वेष मिटावीने, घरवार तजावीने, साधु बनावीने, टुकडा मगावीने, दया, दम, दान, सत्यवचन, चोरीनो त्याग, स्त्रीनो त्याग, इत्यादि अनेक साधन करावीने पछी स्वर्ग मोक्षमां पहोंचाडवा; आ संकट ईश्वरें फोकट उत्पन्न करीने जीवोने शा माटे दुःख दीधुं. आ वातथी तो ए प्रतीत थायछे के ईश्वरने कांइ समजण नथी.

तृतीय पक्षोत्तर– जो कदी एम कहो के ईश्वरें पापसंयुक्तज जीव रच्या छे, तो पछी कर्या विनाज जीवोने पाप लगावी दीधां तेमां तो ईश्वरें अमारुं सत्तानाश करी दीधुं. हवे अमे कोनी पासे जइ विनति करियें के गुन्हा कर्या विना ईश्वर अमने पाप लगावे छे, जेथी आप तेमने मना करो के कर्याविना अमने पाप न लगावे; एवा अन्यायी ईश्वरनुं तो कदी नाम पण लेवुं न जोइयें. तथा जो ईश्वरें पापसंयुक्तज सर्व जीव रच्या छे, तो राजा, मंत्री, शेठ, सेनापति, धनवान् इत्यादिना घरमां उत्पन्न थवुं, नीरोगी काया, सुंदर रूप, सुंदर शरीर, घरमां आदर सन्मान, बहार यशकीर्त्ति, पंचेंद्रिय, विषयभोग, इत्यादि सामग्री प्राप्त थवानो पापथी कदी संभव होतो नथी. ते कारणथी जीवोने केवल पापवान् ईश्वरें रच्या नथी. इति.

चतुर्थ पक्षोत्तर–जो एम कहो के अर्धोअर्ध पुण्य पापवाला जीव ई-

श्वरें रच्या छे तो ते पक्ष पण यथार्थ नथी, कारण के अरधा सुखी अरधा दुःखी एवा पण सर्व जीव देखवामां आवता नथी. इति.

पंचम पक्षोत्तर– पांचमो पक्ष पण ठीक नथी, सुख थोडुं अने दुःख विशेष एवा पण सर्व जीव देखवामां नथी आवता, परंतु सुख विशेष अने दुःख अल्प, एवा बहु जीव देखवामां आवे छे. इति.

षष्ठ पक्षोत्तर– छठो पक्ष पण समीचीन नथी. सुख घणुं अने दुःख थोडुं एवा पण सर्व जीव देखवामां आवता नथी, दुःख बहु अने सुख अल्प, एवा बहु जीव देखवामां आवे छे. आ हेतुउथी ईश्वर जीवोने कोइपण व्यवस्थावाला रची शकता नथी. तो पछी सृष्टिना कर्त्ता ईश्वर केम सिद्ध थइ शके छे? कदी थइ शकता नथी. तथा ज्यारे ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें ईश्वरने शुं दुःख हतुं? अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे शुं सुख थयुं?

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो सदा परम सुखी छे. शुं ईश्वरमां कांइ न्यूनता छे के ते न्यूनताने पूर्ण करवा वास्ते सृष्टि रचे छे. ते तो जगत्मां पोतानी ईश्वरता प्रगट करवाने सृष्टि रचे छे.

उत्तर पक्ष–ज्यारें ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें तो ईश्वरनी ईश्वरता प्रगट न होती अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे ईश्वरता प्रगट थइ, तो प्रथम ज्यारें ईश्वरनी ईश्वरता प्रगट न होती थइ त्यारे तो ईश्वर बहुज उदास, तेमज अपूर्ण मनोरथवाला अने ईश्वरता प्रगट करवामां विह्वल हता. आ हेतुथी अवश्य ईश्वरने दुःख होवुं जोइयें. ज्यारें ईश्वर सृष्टिनी पेहेलां एवा दुःखी हता त्यारे निरुद्यमी केम वेसी रह्या हता? आ सृष्टिनी पेहेलां बीजी सृष्टि रचीने पोतानुं दुःख केम दूर कर्युं न होतुं?

पूर्वपक्ष–ईश्वरें जे सृष्टि रची छे ते जीवोने धर्म करावीने तेउने अनंत सुख देशे. आ परोपकार वास्ते ईश्वरें सृष्टि रची छे.

उत्तरपक्ष–धर्म करावीने जीवोने सुख देवुं ते तो तमारा केहेवा मुजब परोपकार थयो, परंतु जेउ पाप करीने नरकमां गया तेउना उपर शुं उपकार कर्यो? तेउने दुःखी करवाथी शुं ईश्वर परोपकारी थइ शके छे?

१ सारो या प्रमाणसिद्ध सत्य.

पूर्वपक्ष—तेउने नरकमांथी काढीने पठी स्वर्गमां स्थापन करशे;

उत्तरपक्ष—तो पठी प्रथमज नरकमां केम जवा दीधा ?

पूर्वपक्ष—ईश्वरज सर्व पुण्यपापादि करावे ठे. जीवने आधीन कांइपण नथी. ईश्वर जे चाहे ठे ते करावे ठे. जेम काष्ठनी पुतलीने बाजीगर *जेम चाहे ठे तेम नचावे ठे अने पुतली स्वाधीन नथी तेम.*

उत्तरपक्ष—जो जीवने कांइ आधीन नथी तो जीवने सारा नरसानुं फल पण न जोइयें. कारण के जो कोइ सरदार कोइ नोकरने फरमावे के तमे आ काम करो पठी नोकर सरदारना हुकम मुजब ते काम करे, अने ते काम सारुं अथवा नरसुं ठे तो शुं पठी ते सरदार ते नोकरने कांइ शिक्षा करी शके ठे ? कांइ पण करी शकता नथी. तेवीज रीतें ईश्वरनी आज्ञाथी जो जीवें पुण्य अथवा पाप कर्यां तो पठी पुण्य पापनुं फल जीवोने नज मलवुं जोइये. ज्यारें पुण्य पाप जीवनां कर्यां थतां नथी त्यारें स्वर्ग तेमज नरक पण जीवने न होवां जोइयें. पठी जीवने, नरक, स्वर्ग, तिर्यक् तेमज मनुष्य ए चार गति पण न होय. ज्यारे चार गति न होय त्यारे संसार पण न होय. जो संसार न होय तो वेद, पुराण, तौरे, तजबूर, इंजिल प्रमुख शास्त्र पण न होय. ज्यारें शास्त्र न होय त्यारें शास्त्रना उपदेशक पण न होय, ज्यारें शास्त्रना उपदेशक पण होय नहि त्यारे ईश्वर पण नहि. जो ईश्वरज नहि तो पठी सर्व शून्यता सिद्ध थइ. आ कलंक केम मटशे ?

पूर्वपक्ष—आ जगत् बाजीगरनी बाजी जेवुं ठे, अने ईश्वर तेना बाजीगर ठे. तेथी ईश्वर आ जगत्ने रचीने खेलथी क्रीडा करेठे. नरक, स्वर्ग, पुण्य तेमज पाप कांइ नथी.

उत्तरपक्ष—जो ईश्वरें क्रीडाने माटे जगत्नी रचना करी तो क्रीडाज मात्र तेनुं फल थवुं जोइयें. परंतु आ जगत्मां तो कुष्टी, रोगी, शोकी, धनहीन, बलहीन, महादुःखी इत्यादि महाप्रलाप करी रह्याठे, जेउने देखीने दयावश थवाथी अमारां रोम उंचां थायठे. तो शुं पठी ईश्वरने आ दुःखी जीवोने देखीने दया नथी आवती ? जो ईश्वरने दया नथी आवती तो पठी निर्दयपण कदी ईश्वर थइ शकेठे ? वली जे क्रीडा करवा वाला ठे ते बालकनी पेठे रागी, द्वेषी, अज्ञानी होय ठे. जो राग द्वेष ठे

तो तेमां सर्व दूषण छे जो पोतेज अवगुणथी जरेला छे तो ते ईश्वर शेना ? ते तो संसारी जीवछे. वली जो राग द्वेषवाला हशे तो सर्वज्ञ कदापि न हशे; जो सर्वज्ञ नहि तो तेने ईश्वर कोण कही शकेछे ?

पूर्वपक्ष–जीवोएं करेलां पुण्य पापने अनुसारें ईश्वर दंड दिये छे, तेमां ईश्वरने शुं दोष छे ? जेवां जेणें (पुण्यपाप) कर्यां तेवां तेने फल दीधां.

उत्तरपक्ष–आ तमारा केहेवाथी, आ संसार अनादि सिद्ध थइ गयो, वली ईश्वर कर्त्ता नहि एम सिद्ध थयुं. वाह रे मित्र ? पोते पोतानी मेलेज मात थया. कारण के जे जीव हाल छे, अने जे कांइ तेउने अहियां फल मलेल छे, ते पूर्वजन्ममां करेलुं सिद्ध थयुं. वली जे पूर्व जन्म हतो तेमां जे दुःख सुख जीवने मलेल हतुं, ते तेनी पेहेलांना पूर्वजन्ममां कर्युं हतुं. तेवी रीतें पूर्व पूर्व जन्ममां दुःख सुख करवां अने उत्तरोत्तर जन्ममां सुख दुःखने जोगववां, एम करतां संसार अनादि सिद्ध थायछे. हवे विचारो के जगत्‌ना कर्त्ता ईश्वर केम सिद्ध थया ?

पूर्वपक्ष–अमें तो एकज परमब्रह्म पारमार्थिक सद्रूप मानियें छियें.

उत्तर– जो एकज परम ब्रह्म सद्रूप छे, तो पछी आ जे सरल, रसाल, प्रियाल, हिंताल, ताल, तमाल, प्रवाल प्रमुख पदार्थ अग्रगामी पणे करी जे प्रतीत थाय छे ते शा कारणथी सत्स्वरूप नथी.

पूर्वपक्ष–आ पूर्वोक्त पदार्थ जे प्रतीत थाय छे ते सर्व मिथ्या छे. तेमज अनुमानप्रपंच पण मिथ्या छे. प्रतीत होवाथी जे एवा छे ते एवा छे, जेम के सीप, चांदीरूप, तेवोज आ प्रपंच छे. आ अनुमानथी प्रपंच मिथ्यारूप छे अने एक ब्रह्मज पारमार्थिक सद्रूप छे.

उत्तरपक्ष– हे पूर्वपक्षि ! आ अनुमान केहेवाथी आप तीक्ष्ण बुद्धिमान् नथी, तेज हवे बतावियें छियें. आ जे प्रपंच तमे मिथ्यारूप मानेल छे ते मिथ्या त्रण तरेहनुं होय छे. एक तो अत्यंत असत् रूप, बीजुं छे तो कांइ अन्य, अने प्रतीति होय अन्य तरेहनी, अने त्रीजुं अनिर्वाच्य, आ त्रणे मिथ्यारूप प्रपंचमांथी कया प्रपंचने आप मानोछो ?

पूर्वपक्ष–आ त्रणे पक्षमांथी प्रथमना बे पक्षनो तो अमने स्वीकारज नथी त्रीजो अनिर्वाच्य पक्ष अमें मानियें छियें. तेथी आ प्रपंच अनिर्वाच्यमिथ्यारूप छे.

१ तेनां कारणरूप पाप पुण्य.

उत्तरपक्ष–प्रथम तो आप ते कहो के अनिर्वाच्य शुं वस्तु छे? अर्थात् आप अनिर्वाच्य कइ वस्तुने कहो छो? (१) शुं वस्तुने केहेवावालो शब्द नथी? (२) अथवा शब्दनुं निमित्त नथी? प्रथमनो विकल्प तो कल्पनाज करवा योग्य नथी. आ सरल छे, आ रसाल छे, एवा शब्द तो प्रत्यक्ष सिद्ध छे. बीजो विकल्प लहियें, तो शुं शब्दनुं निमित्त ज्ञान नथी? के पदार्थ नथी? प्रथम पक्ष तो समीचीन नथी. सरल, रसाल, ताल, तमाल, प्रमुखनुं ज्ञान तो प्राणी प्राणी प्रत्ये प्रतीत छे. सर्व बुद्धिवंत जीव जाणे छे के सरल, रसाल, ताल, तमाल प्रमुखनुं ज्ञान अमने छे. बीजो पक्ष–पदार्थ नावरूप नथी? के अन्नावरूप नथी? जो एम कहो के पदार्थ नावरूप नथी अने प्रतीत थाय छे, तो आपने विपरीत आख्याति मानवी पडी, अने अद्वैतवादियोना मतमां विपरीत आख्याति मानवी ते महादूषण छे. बीजो पक्ष-जो पदार्थ अन्नावरूप नथी तो नावरूप सिद्ध थया, त्यारे तो सत्ख्याति मानवी पडी; अने ज्यारे अद्वैतमतनो अंगीकार कर्यो अने सत्ख्याति मानवी पडी त्यारे सत्ख्यातिना मानवाथी अद्वैतमतना मूलने कुहाडाथी कापी नाख्युं. एवी रीतें कदापि अद्वैतमत सिद्ध थशे नहि.

पूर्वपक्ष–नावरूप तथा अन्नावरूप एं बंने प्रकारें वस्तु नथी.

उत्तरपक्ष–अमें आपने पुछियें छियें के नाव तेमज अन्नाव आ बंनेना अर्थ जे लोकमां प्रसिद्ध छे तेज आपें मान्या छे? के तेनाथी विपरीत अन्य तरेहना अर्थ आपें मान्या छे? जो कदी प्रथम पक्ष मानशो तो ज्यां नावनो निषेध करशो त्यां अवश्य अन्नावने मानवो पडशे अने ज्यां अन्नावनो निषेध करशो त्यां अवश्य नावने कबुल करवो पडशे; कारण के बंने परस्पर विरोधी छे. तेथी एकनो निषेध बीजानो विधि अवश्य कबुल करावशे. ए रीतें अनिर्वाच्यता तो जड मूलथी नाश पामी. हवे बीजो पक्ष लेशो तो तेथी अमने कांइ हानि नथी, कारण के अलौकिक अर्थात् आपना मनःकल्पित शब्द तेमज शब्दनुं निमित्त जो नाश पामशे तो तेथी लौकिक शब्द तथा लौकिक शब्दनुं निमित्त कदापि नाश पामशे नहि; तो पछी अनिर्वाच्य प्रपंच केवी रीतें सिद्ध थशे? जो अनिर्वाच्य सिद्ध न थयो तो प्रपंच मिथ्या केम सिद्ध थायज? तो पछी एकज अद्वैत ब्रह्म पण केम सिद्ध थाय?

पूर्वपक्ष—अमें तो जे प्रतीत न थाय तेने अनिर्वाच्य कहियें ठियें.

उत्तरपक्ष—आ तमारा केहेवामां तो बहुज विरोध आवे ठे. जो कदी प्रपंच प्रतीत थतो नथी तो आपें पोताना प्रथम अनुमानमां प्रपंचने प्रतीयमान हेतुस्वरूपपणें शा माटे ग्रहण कस्यो ? अने प्रपंचने अनुमान करती वेला धर्मिपणे शा माटे ग्रहण कस्यो ? जो एम कहेशो के प्रपंचने धर्मीपणे अथवा प्रतीयमान हेतुपणे ग्रहण करवामां शुं दोष ठे? तो पठी आपें उपर जे प्रतिज्ञा करी हती के अमे तो जे प्रतीत न होय तेने अनिर्वाच्य कहियें ठियें, तो हवे प्रपंच अनिर्वाच्य केवी रीतें सिद्ध थयो ? ज्यारे प्रपंच अनिर्वाच्य नहि त्यारे तो जावरूप अथवा तो अजावरूप सिद्ध थशे. आ बंने पक्षमां कोइपण रूपें प्रपंच मानवाथी पूर्वोक्त विपरीताख्याति तथा सत्ख्याति रूप बंने दूषण वली आपना गलामां रसी नाखे ठे. हवे जागी क्यां जशो ? वली अमे आपने पुठियें ठियें के आ प्रपंचने तमे जे अनिर्वाच्य मानोठो ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी मानोठो ? के अनुमान प्रमाणथी ? प्रत्यक्ष प्रमाण तो आ प्रपंचने सत् स्वरूपज सिद्ध करेठे. जेवा जेवा पदार्थ ठे, तेवुं तेवुंज प्रत्यक्ष ज्ञान उत्पन्न थाय ठे. वली प्रपंचस्वरूप एवुं ठे के, परस्पर जुदी जुदी जे वस्तुर्ठ ठे ते पोत पोताना स्वरूपमां जावरूप ठे, अने बीजा पदार्थना स्वरूपनी अपेक्षायें अजावरूप ठे. आ इतरेतर विविक्त वस्तुर्ठनेज प्रपंचरूप मानेल ठे, तो पठी प्रत्यक्ष प्रमाण, प्रपंचने अनिर्वाच्य केवी रीतें सिद्ध करी शके ठे ?

पूर्वपक्ष—उपर बतावेल अमारो जे पक्ष ठे तेने प्रत्यक्ष कांइ पण हानि करी शकतुं नथी, कारण के प्रत्यक्ष तो विधायकज ठे. जो कदी प्रत्यक्ष एक वस्तुमां बीजी वस्तुना स्वरूपनो निषेध करे तो अमारा पक्षने बाध करनार ठरे, परंतु प्रत्यक्ष प्रमाण तो एवुं नथी. प्रत्यक्ष प्रमाण तो अन्य वस्तुमां अन्य वस्तुनुं स्वरूप निषेध करवाने बुंठुं (कुंठ) ठे.

उत्तर पक्ष—आ पण आपनुं कहेवुं असत्य ठे. अन्य वस्तुना स्वरूपनो निषेध कस्या विना प्रस्तुत वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो कदापि बोध नहि थाय. पीलुं इत्यादि वर्णोना अजावनो ज्यारे बोध थशे, त्यारेज कालुं एवा रूपनो बोध थशे. तेमज ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाणथी यथार्थ व-

स्तुस्वरूप ग्रहण करी शकाशे. त्यारेज अवश्य अपर वस्तुना स्वरूपनो निषेध पण त्यां जाणी शकाशे. जो कदी अन्य वस्तुना निषेधने अन्य वस्तुमां प्रत्यक्ष नहि जाणशो तो ते वस्तुना विधिस्वरूपने पण प्रत्यक्ष नहि जाणी शको, केवल जे वस्तुना स्वरूपने ग्रहण करवुं छे तेज अन्य वस्तुना स्वरूपनुं निषेध कराववुं छे. ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाण विधि अने निषेध बंनेने ग्रहण करे छे, त्यारे तो प्रपंच मिथ्यारूप कदापि सिद्ध नहि थाय, ज्यारे प्रपंच मिथ्यारूप प्रत्यक्ष प्रमाणथी न सिद्ध थयो. त्यारे पछी परम ब्रह्मरूप एकज अद्वैत तत्व केवी रीतें सिद्ध थयुं ? वली जो तमे प्रत्यक्षने नियमपूर्वक विधायकज मानशो तो तो विद्यानी पेठे अविद्यानो पण विधि तमारे मानवो पडशे. हवे आ ब्रह्म अविद्यारहित प्रत्यक्ष प्रमाणथी ग्रहण कराय त्यारे तो अविद्या पण प्रत्यक्षथी निषेध ग्रहण थशे. पछी जे तमारुं एम केहवुं छे के प्रत्यक्ष जे छे ते विधायकज छे परंतु निषेधक नथी ते केवुं प्रमाणरहित उन्मत्तवचन छे ? हवे जे अनुमान बताववामां आवे छे तेथी साबीत थशे के आपना अनुमाननो पक्ष बाधित छे. अमारुं अनुमान एवुं छे के, प्रपंच मिथ्या नथी, असत्थी विलक्षण होवाथी; जे असत्थी विलक्षण छे ते आवो छे, जेवो आत्मा छे तेवोज आ प्रपंच छे. तथा प्रतीयमान जे आपनो हेतु छे ते ब्रह्मात्मानी साथे व्यभिचारी छे, जेम के ब्रह्मात्मा प्रतीयमान तो छे परंतु मिथ्यारूप नथी, जो एम कहो के ब्रह्मात्मा अप्रतीयमान छे तो वेचनगोचर नहि थाय, जो वेचनगोचर नथी तो तो आपने मुंगा बनवुं ठीक छे, कारण के ब्रह्म विना बीजुं तो कांइ छे नहि, अने जे ब्रह्मात्मा छे ते प्रतीयमान नथी, तो पछी आपने अमे मुंगा विना बीजुं शुं कहियें ? प्रथम अनुमानमां आपें जे छीपनुं दृष्टांत आप्युं हतुं ते साध्यविकल छे, कारण के जे छीप छे तेज प्रपंचनी अंतर्गत छे, अने आप तो प्रपंचने मिथ्यारूप सिद्ध करवा चाहोछो, ते कदापि सिद्ध थइ शकनुं नथी. जे साध्य होय तेज दृष्टांतमां कही शकाय. जो छीपनुं पण अत्यार सुधी सत् असत् पणुं सिद्ध नथी तो तेने दृष्टांतमां शा माटे लावची जोइयें ? वली अमें आपने पुछियें छियें के आ जे तमे प्रथम अनुमान, प्रपंचने मिथ्या

१ वाणीने विषयरूप अर्थात् निर्वचनीय. २ निर्वचन योग्य.

सिद्ध करवाने कह्युं हतुं ते अनुमान, प्रपंचथी भिन्न छे के अभिन्न छे ? जो कहो के भिन्न छे तो पछी सत्य छे के असत्य छे ? जो एम कहो के सत्य छे तो ते अनुमानना सत्यनी पेठे प्रपंच पण सत्यस्वरूपज छे. जो एम कहो के असत्यस्वरूप छे तो पछी शुं शून्य छे ? के अन्यथा ख्यात छे ? के अनिर्वचनीय छे ? प्रथमना बंने पक्ष तो कदापि साध्यना साधक नथी, मनुष्यना शृंगनी पेठे, तथा छीपना रूपानी पेठे. अने त्रीजो जे अनिर्वचनीय पक्ष छे तेनो तो संभवज नथी; ते पोताना साध्यने केम सिद्ध करशे ?

पूर्वपक्ष–अमारूं जे अनुमान छे ते व्यवहार सत्य छे ते कारणथी असत्य नथी पछी पोताना साध्यने केम साधी शकतुं नथी ? मतलब के साधीज शकेछे.

उत्तरपक्ष–अमे आपने पुछियें छियें के आ व्यवहार सत्यनुं शुं स्वरूप छे ? व्यवहरतीति (व्यवहारः) एम जो तेनी व्युत्पत्ति करियें तो तो ज्ञाननुंज नाम व्यवहार ठर्युं, ज्ञानथी जे सत्यछे, ते पारमार्थिकज छे, आ पक्षमां सत् ख्यातिरूप प्रपंच सिद्ध थयो. ज्यारे प्रपंच सत् सिद्ध थयो त्यारे तो एकज परम ब्रह्म सद्रूप अद्वैत तत्त्व कोइ पण रीतें सिद्ध नहि थइ शके, जो कदी कहो के व्यवहार नाम शब्दनुं सत्य छे तो पछी आपने पुछियें छियें के जो व्यवहार नाम शब्दनुं छे तो पछी शब्द, स्वरूपथी सत्यछे ? के असत्य छे ? जो एम कहो के शब्द सत्स्वरूप छे तो शब्दनी पेठे प्रपंच पण सत्स्वरूप छे. जो एम कहो के शब्द असत् स्वरूप छे तो पछी ब्रह्मादि, शब्दथी कह्यां थकां केवी रीतें सत्स्वरूप थइ शकशे ? कारण के जे पोतेज असत्स्वरूपछे ते बीजानी व्यवस्था करवाना के केहेवाना हेतुरूप कदी थइ शकता नथी.

पूर्वपक्ष–जेम खोटो रूपियो साचा रूपियानी जेम क्रयविक्रयादि व्यवहारमां चालवाथी साचो रूपियो मनायछे, तेवीज रीतें अमारुं अनुमान अगर जो के असत्स्वरूपछे तो पण जगतमां सत् व्यवहारथी प्रवर्त्तवाथी व्यवहार सत् छे, ते कारणथी पोताना साध्यने सिद्ध करनार छे.

उत्तरपक्ष–हे भव्य ! आ तमारा केहेवाथी तमारुं अनुमान पारमार्थिक असत्स्वरूप छे, पछी जे दूषण असत्पक्षमां आपेलां छे ते सर्व

अहींयां लागु पडेछे. जो एम कहेशो के अमे अनुमानने प्रपंचथी अभेद मानियें छियें तो तो प्रपंचनी पेठे अनुमान पण मिथ्यारूप सिद्ध थयुं, पछी तो पोताना साध्यने केम साधी शकशे? आ पूर्वोक्त विचारथी प्रपंच मिथ्यारूप नथी, परंतु आत्मानी पेठे सत्रूपछे, तो पछी एकज ब्रह्म अद्वैत तत्वछे आ तमारुं केहेवुं केवी रीतें सत्य थइ शकेछे? कदी सत्य थइ शकशे नहि.

पूर्वपक्ष–अमारी उपनिषदोमां तथा शंकर स्वामिना शिष्य आनंदगिरि, शंकरदिग्विजयना त्रीजा प्रकरणमां लखेछे केः–" परमात्मा जगदुपादानकारणमिति " परमात्मा जे छे तेज आ सर्व जगतनुं कारण छे, कारण पण केवुं? उपादान रूपछे. उपादान कारण तेने कहियें के जे कारण होय तेज कार्यरूप थइ जाय,आ केहेवाथी एम सिद्ध थयुं के जे कांइ जगत्मां छे ते सर्व कांइ परमात्माज पोते बनी गया छे,तेथी जगत् परमात्मा रूपज छे हवे तमे सृष्टिकर्त्ता ईश्वर केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष–वाह रे नास्तिकशिरोमणि? आप जे कांइ कहो छो ते विचार करीने कहो छो के केम? आ तमारा केहेवाथी तो पूर्ण नास्तिकपणुं तमारा मतमां सिद्ध थाय छे. जुओ.ज्यारे सर्व जगत्स्वरूप परमात्म रूपज छे, त्यारे तो नथी कोइ पापी, के नथी कोइ धर्मी; नथी कोइ ज्ञानी के नथी कोइ अज्ञानी; नथी नरक के नथी स्वर्ग; नथी साधु के नथी चोर; नथी सत्शास्त्र के नथी मिथ्या शास्त्र; तेमज जेवा गोमांस भक्षी तेवाज अन्नभक्षी; जेवुं स्वभार्यासंग कामसेवन, तेवुंज माता,बेहेन, दीकरी संग कामसेवन, जेवा चंडाल तेवाज ब्राह्मण; जेवा गधा तेवा संन्यासी, कारण के ज्यारे सर्व वस्तुना कारण ईश्वर परमात्माज थया त्यारे तो सर्व जगत् एकरस एक स्वरूप छे, बीजुं तो कांइ छे नहि.

पूर्वपक्ष–अमें तो एक ब्रह्म मानिये छियें,अने एक माया मानिये छियें, तेथी तमे जे उपर बहु आल जंजाल लख्युं ते सर्व मायाजन्य छे, अने ब्रह्म तो सच्चिदानंद एकज शुद्धस्वरूप छे.

उत्तरपक्ष–हे अद्वैतवादि! आ जे तमे पक्ष मान्यो छे ते बहुज असमीचीन छे. जुओ. माया जे छे ते ब्रह्मथी भिन्न छे के अभिन्न छे? जो कहो के भिन्न छे तो जड छे के चेतन छे? जो जड छे तो नित्य छे के

अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो अद्वैतमतना मूलनेज नस्म करे छे, कारण के ज्यारे ब्रह्मथी नेद रूप थइ, जडरूप थइ अने नित्यरूप थइ त्यारे तो पछी तमे पोते पोतानाज केहेवाथी द्वैतपंथ सिद्ध कर्यो अने अद्वैतपंथ जडमूलथी नाश पाम्यो. जो एम कहो के अनित्य छे तो द्वैतता कदी दूर नहि थाय, कारण के जे नाशवंत छे ते कार्यरूप छे, अने जे कार्य छे ते कारणजन्य छे, तो पछी ते मायानुं उपादान कारण शुं छे? ते केहेवुं जोइयें. जो एम कहो के बीजी माया तो तो अनवस्था दूषण छे, अने अद्वैत त्रणे कालमां कदापि सिद्ध नहि थाय. जो कदी ब्रह्मनेज उपादान कारण मानशो तो तो ब्रह्मज पोते सर्व कांइ बनशे. वली पूर्वोक्त दूषण आव्यां. जो कदी मायाने चैतन्य मानशो तो पण तेनां तेज पूर्वोक्त दूषण आवशे, जो एम केहेशो के माया ब्रह्मथी अनेद छे तो तो ब्रह्मज केहेवुं जोइयें, माया नहि केहेवी जोइये.

पूर्वपक्ष—अमे तो मायाने अनिर्वचनीय मानिये छियें.

उत्तरपक्ष—आ अनिर्वचनीय पक्षनुं उपर खंडन करी आव्या छियें, तेवीज रीतें अहींयां करवुं. वली अनिर्वचनीय जे शब्द छे तेमां निस् जे उपसर्ग छे तेनो अर्थ तो निषेधरूप कर्यो छे. कलाप व्याकरण जुओ. बाकी जे शब्द छे ते या तो नावनो वाचक छे अथ वा तो अनावनो वाचक छे? जो नावनो निषेध करशो तो अनाव आवशे अने जो अनावनो निषेध करशो तो नाव आवी जशे. आ नाव अनाव बे उपरांत त्रीजुं वस्तुनुं रूप कोइ नथी. ते कारणथी अनिर्वचनीय शब्द दंनी पुरुषोए छलरूप रचेलो प्रतीत थाय छे. आ केहेवाथी द्वैतज सिद्ध थयुं, अद्वैत नहि.

पूर्वपक्ष—आ जे अद्वैतमत छे, तेना मुख्य आचार्य शंकरस्वामी छे, जेणें सर्व मतोनुं खंडन करी अद्वैतमत सिद्ध करेल छे, तो पछी एवा शंकरस्वामी, साक्षात् शिवना अवतार, सर्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी, शीलवान्, सर्व सामर्थ्ययुक्त, तेमना अद्वैतमतनुं खंडन करनार कोण छे?

उत्तरपक्ष—अहो वहाला मित्र!! आपनी समजण मुजब तो जरूर जेम आप कहो छो तेमज छे, परंतु शंकरस्वामिना शिष्य आनंदगिरियें शंकर दिग्विजयना अठावनमा प्रकरणमां शंकरस्वामिनुं जे वृत्तांत लखेल छे ते

वांचवाथी तो एम प्रतीत थाय छे के शंकरस्वामी सर्वज्ञ नहि पण कामी छे, अज्ञानी छे, तेमज असमर्थ छे. ते लखाणथी एम पण प्रतीत थाय छे के वेदांतियोनुं अद्वैत ब्रह्मज्ञान ज्यां सुधी आ स्थूल देह रहे छे त्यां सुधीज रहे छे; परंतु आ शरीर छूट्या पछी कोइ वेदांतियोने ब्रह्मज्ञान रेहेशे नहि.

पूर्वपक्ष—ए केवुं शंकरस्वामिनुं वृत्तांत छे जेथी तमारी पूर्वोक्त विना सिद्ध थाय छे ?

उत्तरपक्ष—जो आपने वृत्तांत सांभलवुं छे तो अमारे ढील नथी. हमणांज वतावियें छियें. "ज्यारे शंकरस्वामियें मंडनमिश्रनो पराजय कर्यो, त्यारे मंडनमिश्रें यतिव्रत लीधुं, अने मंडनमिश्रनी पत्नी सरसवाणी पोताना पतियें यतिव्रत लीधाथी ब्रह्मलोकमां चाली, सरसवाणीने गमन करती देखीने शंकरस्वामियें जीवन दुर्गा मंत्रथी दिग्वंधन कर्युं; पछी केहेवा लाग्या के हे सरसवाणि ! तुं ब्रह्मशक्ति छो, ब्रह्मना अंशभूत मंडनमिश्रनी तुं पत्नीछो, उपाधिथकी सर्वने फलित छो, ते कारणथी मारीसाथे प्रसंग लइने पछी तमारे गमन करवुं योग्य छे. पछी सरसवाणीयें शंकरस्वामिने कह्युं के पतिना संन्यासथी प्रथमज वैधव्य पणाना भयथी में पृथ्वी तजी छे, तेथी हवे पृथ्वीनो स्पर्श नहि करुं. हे यति ! तुं तो पृथ्वीपर स्थित छो तेथी तारा प्रसंगमाटे एकविषय स्थिति केम होय. एम शंकरस्वामिने केहेनारीने फरी शंकरस्वामियें कह्युं के—हे माता ! तो पण पृथ्वीथी उंचे छ हाथ आकाशमां रहो अने मारी साथे सर्व वचननो प्रपंच संचार करीने पछी गमन करो. त्यारबाद शरुआतमां शंकरस्वामि साथे सर्वशास्त्र, वेद, इतिहास, पुराणोविषे समय प्रसंग करीने शंकरनो तिरस्कार करवामाटे जेमां दुःखें प्रवेश थइ शके छे एवुं जे कामशास्त्र तेना नायक तथा नायिकाभेद संबंधी, विस्तार पूर्वक सरसवाणी शंकरने पूछवा लागी, परंतु शंकरस्वामी ते विषयने जाणता न होता तेथी उत्तर दइ शक्या नहि. मौन रह्या. पछी सरसवाणी शंकरस्वामिने सत्य केहेवा लागी के आ शास्त्र तमारा जाणवामां आव्युं नथी. निश्चयपूर्वक ते शास्त्र तो हुंज जाणुं छुं. अवसरना जाणनार शंकर स्वामी [illegible]हेवा लाग्या के—हे माता ! आप अहींयांज छ महिना रहो, पछी [illegible] अर्थनो निश्चय करी हुं तमारा प्रश्ननो उत्तर आपीश. त्यार-

वाद शंकरस्वामी आग्रहपूर्वक सरस वाणीने त्यांज आकाशमंडलमां स्थापन करीने तथा सर्व शिष्योने योग्य स्थानकें मोकलीने १ हस्तामलक २ पद्मपाद ३ विधिवत् ४ आनंदगिरि ए चार शिष्यो सहवर्तमान पूजाता थका ते नगरथी पश्चिमदिशा नामा गढमां गया. सरसवाणीना प्रश्नोनो उत्तर जाणवा माटे, ते नगरनो राजा मरी गयो हतो, अने तेनुं शरीर ते समये चितामां प्रज्वलित थतुं हतुं ते शरीरने देखीने, शंकरस्वामियें पोतानुं शरीर ते नगर पासेना एक पर्वतनी गुफामां स्थापन करीने शिष्योने कह्युं के तमारे आ शरीरनुं रक्षण करवुं, अने पोते परकायप्रवेश विद्याथी, लिंगशरीरसंयुक्त, अभिमानसहित, ते राजाना शरीरमां ब्रह्मरंध्रथी प्रवेश कर्यो. तत्काल राजा सजीवन थया, शीतोपचार कर्यो, अने उत्सव करी तेने नगरमां लाव्या, राजा मृत्यु पाम्या नथी एम प्रसिद्ध करी दीधुं. हवे शंकर स्वामिने लोकोयें राज्यासनपर स्थापन कर्या. पछी राज्यसिंहासनपरथी उठी स्वामिजी पट्टराणीना मेहेलमां गया. त्यां जइ राणीसाथे कामक्रीडा करवा लाग्या. हवे शंकरस्वामिनी कुशलताथी तेने आलिंगन करवाथी सुख संजोग उत्पन्न थयो, तेथी शंकरस्वामियें राणीना मुखनी साथे पोतानुं मुख जोड्युं, पोतानी छाती राणीना बंन्ने स्तनो पर लगाडी, तेवीज रीतें नाभि पण नाभि साथे जोडी, पोताना पगथी राणीना पग संकोच्या, अर्थात् जंघामां जंघा मेलवी, अर्थात् एक शरीरवत् थइ गया. बंने जणां अत्यंत गाढ आलिंगन करवा लाग्यां; शंकरस्वामी राणीना कक्षास्थानमां हस्त स्पर्श करवाथी बहुज सुखमग्न थया. राणी तेना आलाप, चतुराई देखी चित्तमां विचारवा लागी के शरीरमात्रथी तो आ मारो पति छे, परंतु तेनो जीव मारो पति नथी, आ कोइ सर्वज्ञ छे. एवो विचार करीने राणीयें पोताना नोकरोने चारे दिशामां मोकल्या एवा फरमानथी के पर्वत अथवा गुफामां बार योजन सुधीमां जे जे शरीर जीवरहित होय ते सर्व चितामां भस्म करी द्यो. शंकरस्वामी विषयमां अत्यंत लुब्ध थया. राणीना नोकरो शंकरस्वामिना शरीरनुं रक्षण करनारा चार शिष्योने देखी ते शरीर लइ चितामां राखी तेने अग्निसंस्कार करवा लाग्या. शंकरस्वामिना चारे शिष्यो नगरमां आव्या, त्यां स्वामिजीने काम

लोलुप तथा विषयमां अति आसक्त देखीने राजा (शंकरस्वामी) सन्मुख नाटक करवा लाग्या. शंकरस्वामिने परोक्तिथी प्रतिबोध करवा लाग्या. ते परोक्ति नीचे मुजब.

(१) " यत्सत्यमुख्यशब्दार्थानुकूलं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (२) नह्येतत्त्वं विदितं नृपु जावं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (३) विश्वोत्पत्यादिविधिहेतु तत्त्वं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (४) सर्वचिदात्मकं सर्वमद्वैतं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्? (५) परतार्किकेरीश्वरसर्वहेतु, स्तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (६) यद्वेदांतादिजिर्ब्रह्म सर्वस्यं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (७) यज्जैमिनिनोक्तमखिलकर्म, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (८) यत् पाणिनिः प्राह शब्दस्वरूपं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन् (९) यत् सांख्यानां मतहेतुजूतं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१०) अष्टांगयोगेन अनंतरूपं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (११) सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१२) नह्येतदहश्यप्रपंचं तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१३) यद् ब्रह्मणोब्रह्मविपावीश्वराह्यजवन्, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१४) त्वद्रूपमेवमस्मान्निर्विदितं राजन्! तव पूर्वयत्याश्रमस्यम् " आ परोक्तियोथी राजा प्रतिबोध पाम्या, सर्व विद्यमान राजाना देहमांथी निकलीने चाल्या गया, पर्वतनी कंदरामां शोधतां शरीर प्राप्त न थयुं, एटलामां विशेष शोध करतां शरीरने चितामां दीठुं, देखतांज तेमां कपालना मध्यथी प्रवेश कर्यो. शरीरनी आसपास चारे बाजुए अग्नि सलगतो हतो तेथी निकलवुं दुष्कर थयुं, एटले लक्ष्मीनृसिंहनी स्तुति करी, स्तुति करतांज लक्ष्मीनृसिंहें स्वामिजीने जीवता अग्निमांथी बहार काढ्या. इति.

हे जव्य! हवे विचार करी जुर्ज. में आपने प्रथम जे कह्युं हतुं ते सत्य छे के नहि? प्रथम तो (१) ज्यारे सरसवाणीयें पुछेला प्रश्नोनो उत्तर शंकरस्वामी न आपी शक्या, त्यारे हवे कयो बुद्धिमान् निष्पक्षपाती स्वामिजीने सर्वज्ञ कही शके छे (२) वली ज्यारे पटराणी साथे विषयसेवन कर्युं त्यारे कामी केहेवामां कांइ पण शंका रहेछे? (३) अने ज्यारे शिष्योयें आवीने प्रतिबोध कर्यो त्यारे अज्ञानी पण अवश्य साबीत थया. (४) अने ज्यारे चितामांथी निकली शक्या नहि, अने

काढवाने लक्ष्मीनृसिंहनी स्तुति करी अने लक्ष्मीनृसिंहें आवीने सलग-ता अग्निमांथी काढ्या, त्यारे शंकरस्वामी असमर्थपण सिद्ध थया. हवे ज्यारे शंकरस्वामियें फरीथी आवीने सरसवाणीना प्रश्नोना उत्तर आप्या, त्यारे सरसवाणीयें कह्युं--हे स्वामिन्! तुं सर्वज्ञ छो. जुओ के-मरण पामे-लाना शरीरमां प्रवेश करीने, तेहनी राणी साथे विषयसेवन करीने, ते-मज राणी पासेथी कांइक कामशास्त्रनी वातो शीखीने शुं सर्वज्ञ थइ शकाय छे? सर्वज्ञ तो थइ शक्या नहि, परंतु आ तो गद्धा उंटनो न्याय थयो. सरसवाणीयें स्वामिने सर्वज्ञ कह्या, अने स्वामियें सरसवाणीने सर्वज्ञ कही दीधी. वाह शुं सर्वज्ञोनी जोडी मली? सरसवाणी ब्रह्मनी शक्ति थइ, वली स्त्री बनीने मंडनमिश्रनी साथे विषयसेवन करवा ला-गी, पाछी सर्वज्ञ पण बनी गइ, तेम शंकरस्वामी परस्त्री साथे विषयसे वन करी, कांइक कामशास्त्र शीखी सर्वज्ञ थइ गया; आ ते गद्धाउंटनं न्याय थयो के बीजुं शुं थयुं? ज्यारे शंकरस्वामी पोतानुं स्थूल शरीर छोडे राजाना शरीरमां दाखल थया, अने ब्रह्मविद्या सर्वे भूली गया त्यारे ते शिष्योने उपदेश करवो पड्यो. जो न भूली गया होत तो तेओने तत्त्वम सिनो उपदेश करवानी शी जरुर हती? ज्यारे शंकरस्वामी स्थूल शरीरने बदली शक्या, अने परब्रह्मविद्याने भूली गया, त्यारे तो ब्रह्मविद्यानो संबंध, न लिंगशरीरनी साथे रह्यो के न आत्मानी साथे रह्यो, परंतु स्थूल शरीरनीज साथे रह्यो, तेथी एम सिद्ध थायछे के- ज्यारे वेदांती मरण पामेछे त्यारे तेनुं ज्ञानपण नाश पामेछे. कारण के स्थूलशरीरनी साथेज ज्ञाननो संबंध रहेछे, आत्मानी साथे रेहेतो नथी. वली आपें एम कह्युं हतुं के- शंकरस्वामियें प्रगट कथन करेला अद्वैत मतने कोण खंडन करी शकेछे? तो हे भव्य! ज्यारे शंकरस्वामिनुं चरित्रज असमं-जसछे, तो पछी तेनो कथन करेलो मत कोण सयुक्तिक समजी शके छे?

पूर्वपक्षः- "पुरुषएवेदं" इत्यादि श्रुतियोथी अद्वैतज सिद्ध थायछे.

उत्तरपक्षः- आ पण तमारूं केहेवुं असत् छे, कारण के जो पुरुषमा-त्ररूप अद्वैततत्त्व होय तो तो आ जे कोइ सुखी, कोइ दुःखी इत्यादि देखाय छे ते सर्व परमार्थथी असत् थइ जशे. ज्यारे एम थशे त्यारे आ जे केहेवुं छे के- "प्रमाणतोऽधिगम्य संसारनैर्गुण्यं तद्विमुखया प्रज्ञया

तदुच्छेदाय प्रवृत्तिरित्यादि—अर्थः—संसारनुं निर्गुणपणुं प्रमाणथी जाणीने, संसारथी विमुख बुद्धि थइने, आ संसारनो उच्छेद करवामाटे प्रवृत्ति करे. पछी आ केहेवुं ते आकाशना फुलना सुगंधनुं वर्णन करवा सरखुं छे, कारण के ज्यारे अद्वैतरूपज तत्त्व छे त्यारे तो नरकादि जवभ्रमणरूप संसार क्यां रह्यो ? के संसारने निर्गुण जाणी तेनो उच्छेद करवानी प्रवृत्ति थाय.

पूर्वपक्षः— तत्त्वथी पुरुष अद्वैतमात्रज छे, अने आ जे संसार निर्गुण वर्णन करेल छे, ते जेम चित्रामण करेली स्त्रीनां सर्व अंगोपांग सारां नरसां प्रतीत थाय छे तेमज सर्व संसार प्रतीत थायछे, सर्व जीवोने हमेशां तेमज प्रतिभासन थइ रहेलछे. परंतु चित्रामण करेली स्त्रीना अंगोपांगना सारा नरसापणानी पेठे सर्व भ्रांतिरूप अथवा भ्रांतिजन्य छे.

उत्तरपक्षः—आ जे तमारूं केहेवुं ते असत् छे, आ वातमां कांइ वास्तविक प्रमाण नथी. जो कदि अद्वैत सिद्ध करवाने पृथग्भूत प्रमाण मानशो तो तो द्वैतापत्ति थशे, कारण के प्रमाण विना कोइनो पण मत सिद्ध थतो नथी, जो कदि प्रमाण विनाज सिद्ध मानशो, तो तो सर्व वादियो पोत पोताना मानेला मतने सिद्ध करी लेशे. वली भ्रांति पण प्रमाणभूत अद्वैतथी भिन्न न मानवी जोइये, नहि तो प्रमाणभूत अद्वैत अप्रमाणज थइ जशे, भ्रांति ज्यारे अद्वैतनुंज रूप थइ त्यारे तो पुरुष रूप थइ, अने भ्रांतिस्वरूपवालो पुरुषज छे नहि, त्यारे तत्त्वव्यवस्था तो कांइपण सिद्ध न थइ. जो कदि भ्रांति भिन्न मानशो तो द्वैतापत्ति आवशे अने अद्वैत मतनी हानि थशे. जो कदी स्तंभने कुंभादिकथी भेद मानवो तेनेज भ्रांति केहेशो तो निश्चयथी सत्स्वरूप कुंभादि कोइ जगें तो जरूर हशे. अभ्रांतिने दीठा विना कदापि भ्रान्ति देखवामां आवशे नहि. पूर्वे जेणें साचो सर्प दीठो नथी तेने दोरडामां सर्पनी भ्रांति कदापि नहि आवे. यथा—नाड दृष्टपूर्वसर्पस्य, रज्ज्वां सर्पमतिः क्वचित् ॥ ततः पूर्वानुसारित्वाद्, भ्रांतिरभ्रांतिपूर्विका ॥ १ ॥ आ कथनथी अद्वैततत्त्व खंडन थइ गयुं. वली पुरुष अद्वैततत्त्व अवश्य बीजाने निवेदन करवुं, पोते पोताने नहि. पोतामां तो व्यामोह छे नहि. जो कदी केहेनारमां व्यामोह होय तो तो अद्वैतनी प्रतिपत्ति (सिद्धि) कदापि नहि थाय.

पूर्वपक्षः—ज्यारे आत्माने व्यामोह छे त्यारे तो अद्वैततत्त्वनो उपदेश कर्यो जाय छे?

उत्तरपक्षः— ज्यारे आत्मानो व्यामोह दूर थशे त्यारे तो आत्मा अवश्य अवस्थांतरने प्राप्त थशे, ज्यारे अवस्था बदलाशे, त्यारे अवश्य द्वैतापत्ति थइ जशे. वली ज्यारे अद्वैत तत्त्वनो उपदेशक परने उपदेश करशे त्यारे अवश्य परने मानवो पडशे. पछी अद्वैततत्त्व परने निवेदन करवुं अने अद्वैततत्त्व मानवुं आ कथन तो मारो पिता कुंवारो (बाल) ब्रह्मचारी छे तेना जेवुं थयुं. आ वचन केहेवाथी उन्मत्ताइनो दोष आवशे. पोताने अने परने बंनेने जो मानशे तो द्वैतापत्ति अवश्य थशे. आ कारणथी अद्वैतमत युक्तिविकल छे.

पूर्वपक्षः— परमब्रह्मरूप सिद्धज सकल भेदज्ञान प्रत्ययोना निरालंबनपणांनी सिद्धि छे.

उत्तरपक्षः—आ कथन पण तमारूं ठीक नथी. कारण के परम ब्रह्मनीज सिद्धि नथी. जो छे तो स्वतः सिद्धि छे के परतः सिद्धि छे? स्वतः सिद्धि तो नथी, जो होय तो तो कोइनो पण विवाद रहे नहि. जो परतः सिद्धि छे तो शुं अनुमानथी छे के आगमथी छे? जो कहो के अनुमानथी छे तो ते अनुमान केवुं छे?

पूर्वपक्षः—ते अनुमान आ छे. विवादरूप जे अर्थ छे ते प्रतिभासांत प्रविष्ट ब्रह्मभासनी अंतर छे, प्रतिभासमान होवाथी, जे जे प्रतिभासमान छे ते ते प्रतिभासांत प्रविष्टज देखायछे, जेम प्रतिभास आत्मा प्रतिभासमान छे, सकल अर्थ सचेतन अचेतन विवादरूप छे ते कारणथी प्रतिभासांत प्रविष्टछे. घटपटादि आ अनुमान छे.

उत्तरपक्षः—आ अनुमान तमारूं सम्यक् नथी (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत आ त्रणे प्रतिभासांत प्रविष्ट होवाथी साध्यरूपज थया.

पूर्वपक्षः—त्यारे तो (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत, आ त्रणेन नहि होवापणाथी अनुमानज नहि बनी शके. जो एम कहो के (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत आ त्रणे प्रतिभासांत प्रविष्ट नथी, तो तेउंनीज साथे हेतु, व्यभिचारी थशे, जो एम कहो के अनादि अविद्या वासनाना बलथी हेतु दृष्टांत जे छे ते प्रतिभासना बाहिरनी पेठे निश्चय

करेछे, जेम प्रतिपाद्य, प्रतिपादक, सत्रा, सत्रापति जननी पेठे, ते कारणथी अनुमान पण थइ शकेछे, अने ज्यारे सकल अनादि अविद्यानो विलास दूर थइ जाशे त्यारे तो प्रतिभासांत प्रविष्ट प्रतिभास थशे. विवाद पण नहि रहे, पतिपाद्य प्रतिपादक साध्य साधक भाव पण रहेशे नहि. पठी तो अनुमान करवानुं पण कांइ फल नहि. आपज अनुभवमान परमब्रह्म वने ठते देश काल अव्यवछिन्न स्वरूप प्रगट थतां निर्व्यभिचार, सकल अवस्था व्यापकपणा वालामां अनुमाननो कांइ प्रयोगज जोइतो नथी.

उत्तरपक्ष—जो अनादि अविद्या प्रतिभासांत प्रविष्ट ठे तो तो विद्या थइ गइ. त्यारे हवे असत्रूप (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांतआदि भेद केम देखी शकाय. जो कहो के प्रतिभासनी बाहिरभूत ठे तो तो अविद्या प्रतिभासमान ठे के अप्रतिभासमान ठे ? ते अविद्या प्रतिभासमान रूप होवाथी अप्रतिभासमान तो नहि. जो एम कहो के प्रतिभासमान ठे, तो तेनीज साथे हेतु, व्यभिचारी ठे. तथा प्रतिभासनी बाहिरभूत होवाथी तेनो प्रतिभासमान होवाथी जो कदी तमारा मनमां एम होय के अविद्या जे ठे ते नथी प्रतिभासमान के नथी अप्रतिभासमान, नथी प्रतिभासनी बाहिर के नथी प्रतिभासनी अंदर प्रविष्ट, नथी एक के नथी अनेक, नथी नित्य के नथी अनित्य, नथी व्यभिचारिणी के नथी अव्यभिचारिणी, सर्वथा विचारने योग्य नथी, सकल विचारांतर अतिक्रांत स्वरूप ठे, रूपांतरना अभावथी अविद्या जे ठे ते नीरूपता लक्षण ठे, आ पण तमारो अज्ञाननो विस्तार ठे, तेवी नीरूपता स्वभावने आ अविद्या ठे, आ अप्रतिभासमान ठे, एम कोण कथन करवाने समर्थ ठे ? जो एम कहो के आ अविद्या प्रतिभासमान ठे तो पठी केवीरीतें अविद्या नीरूप सिद्ध थशे, जे वस्तु जे स्वरूपथी प्रतिभासमान ठे, ते तेज वस्तुनुं रूप ठे; तथा अविद्या जे ठे ते विचारगोचर ठे के विचारगोचरतारहित ठे ? जो कहो के विचारगोचर ठे तो तो नीरूप नहि, जो विचारगोचर नथी तो तो तेने माननार महामूर्ख ठे. ज्यारे विद्या, अविद्या बंने सिद्ध ठे, त्यारे एक परम ब्रह्म अनुमानथी केम सिद्ध थया ? आ केहेवाथी उपनिषद्मां जे एक ब्रह्मने कहेनारी

श्रुति छे ते पण खंडन थइ गइ. तेमज "सर्वं वै खल्विदं ब्रह्मेत्यादि" वचनने परमात्मानो अर्थांतर होवाथी द्वैतापत्ति थइ जशे, जो एम कहेशो के अनादि अविद्याथी एम प्रतीत थायछे तो तो पूर्वोक्त दूषणोनो प्रसंग आवशे. सबब अद्वैतनी सिद्धि वंध्यापुत्रनी शोभा जेवी छे. ते कारणथी अद्वैतमत युक्तिविकल छे. तेथी एकज ईश्वर जगत् पेहेलां हता ए केहेवुं मिथ्या छे. आ प्रथम ईश्वरने माननारना मतनुं खंडन थयुं.

हवे बीजा ईश्वर जगत्ना उपादान कारणवाला, एक ईश्वर अने बीजी सामग्री, आ बंने पदार्थ अनादि छे. सामग्री जे छे ते नीचे मुजब छे.

(१) पृथ्वी (२) जल (३) अग्नि (४) वायु आ चारेना परमाणुओ, (५) आकाश (६) दिशा (७) आत्मा (८) मन (९) काल आ नव वस्तु नित्य छे, अनादिछे, कोइनी बनावेली नथी. ईश्वर, आ पूर्वोक्त सामग्रीथी आ सृष्टिने रचेछे. मतावलंबियें जेवी रीतें ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानेल छे ते रीति लखियें छियें. उपजातिछंद ॥ कर्त्तास्ति कश्चिज्जगतः सचैकः, ससर्वगः सस्ववशः सनित्यः ॥ इमाः कुहेवाकविडंबनाः स्यु, स्तेषां न येषामनुशासकस्त्वम् ॥ १ ॥ आ जगत् प्रत्यक्षादि प्रमाणथी लक्ष्य छे. चराचररूप त्रणे जगत् तेनो कोइ एवो पुरुष रचनार छे के जेनुं स्वरूप कही शकातुं नथी. ईश्वरने जगत्कर्त्ता माननारा वादी एवुं अनुमान करेछे के–पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादि सर्वे, बुद्धिमान् कर्त्तानां करेलां छे,कार्य होवाथी,जे जे कार्य छे ते सर्वे बुद्धिमान् कर्त्तानां करेल छे.जेवो घट तेवुं आ जगत् छे, ते कारणथी जगत् बुद्धिवालानुं रचेलुं छे. जेबुद्धिवाला छे तेज ईश्वरछे,एम पण न केहेशो के आ तमारो हेतु असिद्ध छे,शा कारणथी असिद्ध छे? जुओ. पृथ्वी,पर्वत, वृक्षादि पोतपोताना कारण समूहथी उत्पन्न थयेल छे ते कारणथी कार्यरूप छे, तथा अवयवी छे, तेथी कार्यरूपछे, सर्ववादियोनो एवो निश्चय छे. तथा एम पण न केहेवुं के आ तमारो हेतु अनेकांतिक छे, तथा विरुद्ध छे, कारण के अमारो हेतु विपक्षथी अत्यंत दूर गयेल छे तथा एम पण न

मानथी जे साध्य छे, तेना शत्रुभूत बीजा साध्यने साधनारा अनुमानना अभावथी, तथा एम पण न केहेवुं के ईश्वर, पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादिना कर्त्ता नथी, कारण के मुक्त आत्मानी पेठे शरीर विनाना छे. आ पाछलना तमारा अनुमाननो वैरी अनुमान छे ते ईश्वरने जगत्कर्त्ता सिद्ध थवा देतुं नथी. कारण के तमे तो ईश्वरने शरीरविनाना सिद्ध करीने जगत्ना अकर्त्ता सिद्ध कर्या, परंतु अमे तो ईश्वर शरीरवाला मानेला छे ते कारणथी तमारुं अनुमान असत्य छे. वली अमारो हेतु निरवद्य छे तथा ईश्वर एक छे. कारण के जो बहु ईश्वर मानियें तो तो एक कार्य करवामां ईश्वरोनी जूदी जूदी बुद्धि थइ जाय अने तेउने मना करनार तो कोइ छे नहि तेथी कार्य केम उत्पन्न थाय? कोइ ईश्वर पोतानी इच्छाथी चार पगवालो मनुष्य रचे, वली बीजो ईश्वर छ पगवालो रची दे, अने त्रीजो बे पगवालो रचे, तो चोथो आठ पगवालो रचे, एवी रीतें सर्व वस्तु विलक्षण विलक्षण रचाय तो सर्व जगत् असमंजसरूप थइ जाय. परंतु एम नहि तेथी ईश्वर एकज होवा जोइये. वली ईश्वर सर्वगत सर्वव्यापी छे, जो ईश्वर सर्वव्यापक न होय तो त्रण भुवनमां जे एक साथे उत्पन्न थनारां कार्य छे ते सर्व एक कालमां कदी उत्पन्न नहि थाय. जेम के कुंभारादि ज्यां हशे त्यांज कुंभादि कार्य करी शकशे. परंतु देशांतरमां कदी तेउ नहि करी शके. तेमज ईश्वर सर्वज्ञ छे, जो सर्वज्ञ न होय तो सर्व कार्योनां उपादान कारणो केम जाणी शकशे? जो कार्योनां उपादान कारण न जाणे तो जगत् विचित्र केम रची शके? तथा ईश्वर स्वतंत्र छे, बीजा कोइने आधीन नथी, ईश्वर पोतानी इच्छाथी सर्व जीवोने सुखदुःखनुं फल आपे छे. कह्युं छे केः— ईश्वरप्रेरितोगच्छेत्, स्वर्गं वा स्वभ्रमेव वा ॥ अन्योजंतुरनीशोय, मात्मनः सुखदुःखयोरिति ॥ अर्थः—ईश्वरनीज प्रेरणाथी जगत्वासी जीव, स्वर्ग तथा नरकमां जाय छे, कारण के ईश्वर विना कोइ जीव पोते पोताने सुख दुःखनुं फल आपवाने समर्थ नथी. जो ईश्वरने परतंत्र मानियें तो मुख्य कर्त्ता ईश्वर रेहेशे नहि, एक बीजाने आधीन मानवाथी अनवस्था दूषण लागी जशे. ते हेतुथी ईश्वर स्ववश छे परंतु पराधीन नथी. वली ईश्वर नित्य छे जो कदी अनित्य होय तो तेने उत्पन्न करनार बीजो कोइ होवो जोइयें,

ते तो नथी. ते हेतुथी ईश्वर नित्यज छे. पूर्वोक्त विशेषणयुक्त ईश्वर (जगवान्) जगत्कर्त्ता छे. इति पूर्वपक्ष.

उत्तरपक्षः—हे वादि ! आप जे एम कहो छो के पृथ्वी, पर्वत वृक्षादि बुद्धिमान् कर्त्तानां रचेलां छे, ते अयुक्त छे, कारण के आ आपना अनुमानमां व्याप्तिनुं ग्रहण थइ शकतुं नथी, अने हेतु जे होय छे ते सर्वत्र व्याप्तिमां प्रमाणथी सिद्ध थया थकाज पोताना साध्यने सिद्ध करी शके छे. आ कथनमां सर्ववादियो एकमत छे.

हवे प्रथम आप कहो के जो ईश्वर जगत् रचे छे तो पूर्वे कह्या मुजब ते ईश्वर, शरीरवाला छे के शरीरविनाना छे ? जो एम कहो के ईश्वर शरीरवाला छे तो अमारा सरखा दृश्य शरीरवाला छे के पिशाचादिनी पेठे अदृश्य शरीर वाला छे ? प्रथम पक्ष तो प्रत्यक्ष बाधित छे कारण के ते ईश्वरना विनाज वर्तमानमां पण उत्पन्न थनारां तृण, वृक्ष, इंद्रधनुष्, वादलां प्रमुख कार्यो देखियें छियें. "अनित्य शब्दप्रमेयत्वात्" जेम आ प्रमेयत्व हेतु साधारण अनेकांतिक छे तेमज आ कार्यत्वहेतु साधारण अनेकांतिक छे.

बीजो पक्ष मानशो तो शुं ईश्वरनुं शरीर नथी देखी शकातुं ते ईश्वरना माहात्म्यथी नथी देखी शकातुं के अमारा माठा अदृष्टना प्रजावथी ? अर्थात् अमारा माठा कर्मना प्रजावथी नथी देखी शकातुं ? जो एम केहेशो के ईश्वरना माहात्म्यथी ईश्वरनुं शरीर देखातुं नथी तो आ पक्षमां कोइ पण प्रमाण नथी के जेथी ईश्वरनुं माहात्म्य सिद्ध थाय, परंतु वादी जो तपावेलुं जसत पीवानी हिंमत करे तो कदाचित् मानी लइयें. आ तमारा कथनमां इतरेतर आश्रय दूषण आवे छे. जो ईश्वर माहात्म्य विशेष सिद्ध थाय तो अदृश्य शरीरवाला सिद्ध थाय, जो अदृश्य शरीरवाला सिद्ध थाय तो माहात्म्य विशेष सिद्ध थाय. बीजो पक्ष—जो पिशाचादिनी पेठे ईश्वरनुं अदृश्य शरीर मानशो तो तो संशयनी निवृत्ति थशे नहि. जेम के—शुं ईश्वर नथी के—जेथी तेनुं शरीर नजरे पडतुं नथी ? त्यारे तो वांजणीना पुत्रना शरीरनी जेम, अथवा तो अमारा पूर्वना पापोना प्रजावथी ईश्वरनुं शरीर देखातुं नथी. आ संशय कदी दूर नहि थाय. जो एम कहो के अमारा ईश्वर, शरीररहित छे तो तो दृष्टांत तेमज दार्ष्टांतिक ए बंने विषम थइ जशे अने हेतुविरुद्ध थ-

इ जशे, कारण के घटादि कार्योना कर्त्ता कुंजारादि शरीरवालाज देखियें ठियें, अने ईश्वरने ज्यारे शरीररहित मानियें त्यारे तो ईश्वर कांइ पण कार्य करवाने समर्थ नहि थाय; जे आकाशनी जेम नित्य व्यापक अक्रिय ठे ते अकर्त्ता ठे. आ हेतुथी शरीरसहित के शरीररहित ईश्वरनी साथे कार्यत्वहेतुनी व्याप्ति सिद्ध थती नथी, तथा आपनो हेतु कालात्ययापदिष्ट पण ठे, आपना साध्यना धर्मिनो एक देश वृक्ष, वीजली, वादलां, इंद्रधनुष्आदिना आज पण कोइ बुद्धिमान् कर्त्ता देखाता नथी, ते कारणथी प्रत्यक्षथी वाधित थया पठी तमे पोतानो हेतु कह्यो. तेथी तमारो हेतु कालात्ययापदिष्ट सिद्ध थयो. आ तमारा कार्यत्वहेतुथी बुद्धिमान् ईश्वर जगत्कर्त्ता कदी सिद्ध थता नथी.

हवे वीजी रीतें जगत्कर्त्ता खंरून करवानुं स्वरूप लखियें ठियें जे कोइ ईश्वरवादी एम कहे ठे के जगत् सर्व ईश्वरनुं रचेलुं ठे! ते तेनुं केहेवुं समीचीन नथी, कारण के जगत्कर्त्ता ईश्वर कोइ प्रमाणथी सिद्ध थता नथी.

पूर्वपक्षः—ईश्वरने जगत् कर्त्ता सिद्ध करनार अनुमान प्रमाण ठे. जुर्ज. जे यथोचित रीतें अभिमत फलने संपादन करवाने प्रवृत्त होय, तेनो अधिष्ठाता कोइ बुद्धिमान् अवश्य होवो जोइयें, जेम वांसला, आरि प्रमुख शस्त्र, काष्ठना वे कटका करवामां प्रवर्त्ते ठे, तेमज यथोचित रीतें सर्वजगत्ने सुख दुःखादि जे फल आपे ठे तेनो अधिष्ठाता कोइ बुद्धिमान् जरूर होवो जोइयें, आपें एम न केहेवुं के वांसला, आरि प्रमुख पोतेज काष्ठना वे कटका करवामां प्रवर्त्ते ठे, कारण के ते तो अचेतन ठे तेथी पोतानी मेले केम प्रवर्त्ती शके? जो एम कहो के वांसला, आरि प्रमुख स्वज्ञावथी प्रवर्त्ते ठे तो तो तेर्जनी निरंतर प्रवृत्ति होवी जोइये, वचमां कदी स्तब्ध थवां न जोइयें, पण एम ठे नहि; पूर्वोक्त हेतुथी यथोचित रीतें पोत पोतानां फलने साधनारा जे जीव ठे, तेर्जनो अधिष्ठाता ईश्वरज सिद्ध थाय ठे. तथा वीजुं अनुमान. जे परिमंमलादि, वृत्त, त्र्यंश, चतुरंश, संस्थानवाला गाम, नगरादि ठे, ते सर्वज्ञानवाननां करेलां ठे. जेम घटादि पदार्थ, तेमज पूर्वोक्त संस्थान संयुक्त पृथ्वी, पर्वत प्रमुख ठे. आ अनुमानथी पण जगत्कर्त्ता ईश्वर सिद्ध थाय ठे.

उत्तर पक्षः—जगत्कर्त्ता सिद्ध करनारुं आपनुं आ अनुमान अयुक्त ठे,

कारण के पूर्वोक्त तमारुं अनुमान जेम अमारा मतमां प्रथमथीज सिद्ध छे तेमज सिद्ध करे छे, ते कारणथी सिद्धसाधन दूषण तमारा अनुमानमां आवे छे. अमारा मतमां प्रथमथीज नीचे मुजब सिद्ध छे. संपूर्ण आ जगत्‌नी जे विचित्रता छे ते सर्वे कर्मना फलथी छे एम अमे मानियें छियें, कारण के आ भारत वर्षमां अनेक देशोमां, टापुओमां, हेमवंतादि पर्वतोमां अनेक प्रकारना मनुष्यादि प्राणी जे वास करे छे, तथा तेओने सुख दुःखादि अनेक तरेहनी जे अवस्था बनी रही छे ते सर्व अवस्थानुं कारण कर्मज छे. बीजुं कोइ नथी. वली देखवामां पण कर्मज कारण थइ शके छे, कारण के ज्यारे कोइ पुण्यवान् राजा राज्य करे छे, त्यारे तेना राज्यमां सुकाल, निरुपद्रव होय छे, ते, ते राजाना शुभ कर्मनो प्रभाव छे. ते कारणथी जे यथोचित रीतें जीवोने फल आपेछे ते कर्म छे. कर्म जीवने आधीन छे, अने जीव चेतन होवाथी बुद्धिमान् छे, तेथी बुद्धिमानने आधीन थइने कर्म यथोचित फल आपे छे. आ रीतें तमारा अनुमानमां सिद्धसाधन दूषण छे. जो एम केहेशो के अमेतो विशिष्ट बुद्धिवाला ईश्वरनेज सिद्ध करियें छियें, परंतु सामान्य बुद्धिवाला जीव नथी सिद्ध करता, तो तो तमारुं दृष्टांत साध्यविकल छे. वांसला, आरि प्रमुखमां ईश्वर अधिष्ठितपणांनो व्यापार तो उपलब्ध थतो नथी परंतु सुथारादिनो व्यापार अन्वयव्यतिरेकथी उपलब्ध थाय छे.

पूर्वपक्षः—सुथारादिपण ईश्वरनी प्रेरणाथीज ते ते काममां प्रवर्त्ते छे अमारुं दृष्टांत साध्यविकल नथी.

उत्तरपक्षः—त्यारे तो ईश्वर पण बीजा ईश्वरनी प्रेरणाथीज प्रवर्त्तता हशे, परंतु पोतानी मेले प्रवर्त्तता नहि होय, वली ते ईश्वरपण बीजा ईश्वरनी प्रेरणाथी प्रवर्त्तता हशे, एवी रीतें तो अनवस्था दूषण आवशे.

पूर्वपक्षः—वढईप्रमुख जीव तो सर्वे अज्ञानी छे तेथी ईश्वरनी प्रेरणाथीज पोत पोताना काममां प्रवर्त्ते छे, अने ईश्वर (भगवान्) तो सर्व पदार्थोना ज्ञाता छे तेथी अनवस्था दूषण नथी.

उत्तरपक्षः—आ तमारुं केहेवुं असत् छे. कारण के तेमां इतरेतर दूषण आवे छे. प्रथम ईश्वर जो सर्व पदार्थना यथाऽवस्थित स्वरूपना ज्ञाता सिद्ध थाय, तो अन्यनी प्रेरणा विना पोतेज प्रवर्त्ते छे एम सिद्ध थाय, जो

अन्यनी प्रेरणा विना ईश्वर पोतेज प्रवर्त्ते छे एम सिद्ध थाय तो तो सर्व पदार्थना यथावस्थित स्वरूप जाणनारा सर्वज्ञ सिद्ध थाय, ज्यां सुधी आ वंनेमांथी एक सिद्ध न थाय त्यां सुधी बीजानी सिद्धि कदी न थाय. वली हे ईश्वरवादि? अमे तमने पुछियें छियें के जो ईश्वर सर्वज्ञ तेमज वीतराग छे तो शा माटे बीजा जीवोने असत् व्यवहारमां प्रवर्त्तावे छे? कारण के जे विवेकी होय छे ते मध्यस्थज होय छे तेमणे तो जीवोने सत् व्यवहारमांज प्रवृत्त करवा जोइयें, परंतु असत् व्यवहारमां नहि प्रवृत्त करवा जोइयें, अने ईश्वर तो जीवोने असत् व्यवहारोमां पण प्रवर्त्तावे छे तेथी ईश्वरने सर्वज्ञ तेमज वीतराग केम केहेवा जोइये?

पूर्वपक्षः– ईश्वर तो सर्व जीवोने शुभ कर्म करवामांज प्रवर्त्तावे छे, तेथी भगवान् तो सर्वज्ञ अने वीतरागज छे; अने जे जीव अधर्म करनारा छे तेउने असत् व्यवहारमां प्रवर्त्तावीने पछी नरकपातनुं फल आपे छे, जेथी ते जीवो दुःखथी भरीने फरी पाप न करे, तेथी उचित फल देवाथी ईश्वर (भगवान्) विवेकवान् तेमज वीतराग सर्वज्ञ छे, तेमां कांइपण दूषण नथी.

उत्तरपक्षः–आ आपनुं केहेवुं विचारविनानुं छे, कारण के प्रथम पाप करवामां तो ईश्वरज प्रवृत्त करे छे, ईश्वर विना बीजो तो कोइ प्रेरक नथी, वली जीव पोते तो कांइ करी शकतो नथी कारणके ते तो अज्ञानी छे तेथी पापमां के धर्ममां पोते प्रवृत्त थइ शकतो नथी, तो पछी प्रथम पाप करावववामां जीवने प्रवर्त्तावचो. पछी नरकमां नाखीने तेनुं फल भोगवाववुं, पछी धर्ममां प्रवर्त्तावववो वाह? शुं ईश्वरनी ईश्वरता अने विचारपूर्वक काम छे?

पूर्वपक्षः–ईश्वर (भगवान्) जीवोने कदी प्रवर्त्तावता नथी परंतु जीव पोतेज प्रवर्त्ते छे. तेथी जे जीव जेवां कर्म करे छे, ते कर्मना वशथी ईश्वर (भगवान्) तेवां तेवां फल ते जीवोने आपेछे. जेम कोइ राजा राज्य करे छे ते चोरी करवानी मनाइ करे छे, कोइने चोरी करवानुं केहेता नथी, छतांपि कोइ सख्स चोरी करशे तो ते चोरने अवश्य राजा शिक्षा करशे, तेवीज रीतें ईश्वर पाप तो करावता नथी, परंतु पाप करनारने शिक्षा करे छे.

उत्तरपक्षः—आ तमारुं केहेवुं अयुक्त छे, कारण के राजा चोरने निषेध करवामां समर्थ नथी, कारण के गमे तेवो उग्रशासनवालो राजा होय अने ते मन वचन कायाथी चोरी प्रमुख पाप कर्म अटकाववा चाहे, परंतु लोक चोरी प्रमुख पाप कर्म कदापि सर्वथा छोडशे नहि अने ईश्वर तो सर्व शक्तिमान् तमे मानो छो तो पछी सर्व जीवोने पाप करवामां प्रवर्त्ततां केम मना करता नथी? जो ईश्वर जीवोने पाप करतां अटकावता नथी तो ईश्वरज जीव पासे पाप करावे छे, पछी जो तेउने दंड आपे तो पूर्वोक्त दूषण आवेछे. जो एम कहो के जीवोने पापमां प्रवर्त्ततां मना करवाने ईश्वर समर्थ नथी, तो पछी उंचा शब्दथी एम केहेशो नहि के "सर्व कांइ ईश्वरेंज कर्युं छे अने ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे" तथा जो जीव पाप पण पोतेज करे छे, अने धर्मपण पोतेज करे छे, तो फल पण पोतेज जोगवी लेशे हवे ईश्वर कर्त्तानी कल्पना व्यर्थ छे.

पूर्वपक्षः—धर्म अधर्म तो जीव पोतेज करेछे, परंतु तेना फलप्रदाता तो ईश्वरज छे, जीव पोतें करेला धर्म अधर्मनुं फल पोते जोगववाने समर्थ नथी, जेम चोर चोरी करेछे, तेमां चोरी (अधर्म) तो पोतेज करेछे, परंतु ते चोरीनुं फल (बंदीखानुं) जोगववुं ते पोते जोगवी शकतो नथी, बंदीखानामां नाखनार तो कोइ बीजो जोइयें.

उत्तरपक्षः— आ पण तमारुं केहेवुं असत् छे. कारण के जो जीव धर्म अधर्म करवामां समर्थ छे तो पछी तेनुं फल जोगववामां समर्थ केम नहि ? आ संसारमां जे जीव जेवा जेवा धर्म अधर्म करेछे तेवां तेवां धर्म अधर्मनां फल जोगववामां निमित्त पण बनी जाय छे, जेम चोर चोरी करेछे, ते चोरीनुं फल राजा आपेछे, वली कोढीयो थाय छे, शरीरमां कीडा पडेछे, अग्निमां बली जाय छे, पाणीमां डुबी जायछे, खड्गथी हणाय छे, तोप बंदुकना गोला गोलीथी मरी जायछे, हाट, हवेली, माटीनी खाण नीचे दबाइ अनेक तरेहथी संकट जोगवी मरी जाय छे, निर्धन थइ जाय छे, इत्यादि असंख्य निमित्तोथी पोतें करेला कर्मनां फलने जोगवे छे. अहींयां निमित्त विना बीजो ईश्वर फलदाता कोइ देखातो नथी, तेवीज रीतें नरक स्वर्गादि परलोकमां पण शुजाशुज कर्मफल जोगववानां असंख्य निमित्त छे. जो केहेशो के परस्त्रीगमन कर-

वाथी, इत्यादि पापफलमां शुं निमित्त मलशे, जेना योगथी फल जोगववानुं थशे ? ते वात तो हुं (ग्रंथकार) जाणतो नथी के आ पुण्य पापनुं आ निमित्त तमने मलीने फल थशे, कारण के मारुं एटलुं ज्ञान नथी के बराबर पुरे पुरां निमित्त बतावी शकुं, परंतु एटलुं कहि शकुंछुं के जीव जे जे पुण्य पाप करे छे तेनुं फल जोगववामां अवश्य कांइक निमित्त होवानुं, अने आवी रीतें फल जोगवशे, आ निमित्त मलशे, अमुक देशमां, अमुक कालमां जोगवशे, इत्यादि सर्व प्रत्यक्षपणें तो अर्हंत, जगवंत (परमेश्वर) सर्वज्ञना ज्ञानमां जासन थाय छे. निमित्त विना कोइपण फल जोगवी शकता नथी, ते कारणथी ईश्वर फलप्रदाता छे एवी कल्पना व्यर्थ छे. शुं एवुं पण बुद्धिमानोनुं केहेवुं छे के माणस रोटली तो पकावी शकेछे परंतु पोते खाइ शकतो नथी. तेमज ईश्वरने फलदाता कल्पना करवाथी एक बीजुं पण कलंक आप तेने लगावो छो. जेमके एक पुरुषें बीजा पुरुषने खड्गादि शस्त्रथी मार्यो, हवे मरनारने जे संकट प्राप्त थयुं, ते कोना योगथी ? कोनी प्रेरणाथी ? जो केहेशो के ईश्वरें ते शस्त्रवालाने प्रेरणा करी, तेथी तेणें तेने मार्यो, तो पछी ते मारनारने फांसी शा माटे मलेछे ? शुं ईश्वरनो एवो न्याय छे के प्रथम एक पुरुषना हाथथी बीजाने मरावबो, पछी ते मारनारने फांसी अपाववी, आ आपनी समजणें ईश्वरने बहुज अन्यायी सिद्ध करेल छे. जो एम कहो के ईश्वरनी प्रेरणा विना ते पुरुषें बीजा पुरुषने मार्यो, तेमज दुःख दीधुं तो तो निमित्तथीज सुख दुःखनुं जोगववुं सिद्ध थयुं, पछी ईश्वर फलदातानी कल्पना करवी ते अल्प बुद्धिवालानुं काम छे तथा हे ईश्वरवादि ! आपने एक वात पुछियें छियें के धर्मनुं फल, उन्मत्त देवांगनाउंना सुकोमल शरीरनो स्पर्श करवो, ते तो जीवोने सुखनुं कारण छे तेथी ईश्वरें दीधुं, परंतु अधर्मनुं फल घोरनरकना कुंरूमां पडवुं,अनेक प्रकारनां दुःख त्रास, कुंजीपाक, चर्म उत्कर्त्तन, अग्निमां प्रज्वलित थवुं, इत्यादि महादुःखो ईश्वर ते जीवोने शा वास्ते दीये छे ?

पूर्वपक्षः–जे जीवोए पाप करेलां छे तेउंने ते पापनुं फल अवश्य मलवुं जोइये ते कारणथी ईश्वर फल आपे छे,

उत्तरपक्षः–आ तमारा केहेवाथी तो ईश्वर व्यर्थज जीवोने पीडा आ-

पेठे, कारण के जो ईश्वर ते जीवोने पापनुं फल आपे नहि तो जीव पोते तो कर्मनां फल जोगवी शकता नथी. पठी नहि तो शरीर धारण करे के नहि तो नवुं पाप पण करे. पठी वेठा वेठा ईश्वरने शुं गलगलीयां थाय ठे के पाठा जीवोने नरकमां नाखी दीये ठे. जे मध्यस्थ जाववाला तथा परम दयालु होय ठे ते कोइ जीवने कदी निरर्थक पीडा आपता नथी,

पूर्वपक्षः–ईश्वर जगवान्, पोतानी क्रीडा वास्ते कोइने नरकमां नाखे ठे. कोइने तिर्यंच योनिमां नाखे ठे, कोइने मनुष्य बनावे ठे, तो कोइने स्वर्गमां उत्पन्न करे ठे, ज्यारे ते जीव नाचे ठे, कूदेठे, रोवेठे, पीटेठे, विलाप करेठे, त्यारे ईश्वर पोतानी रचेली बाजीनो तमासो जुए ठे, ते वास्ते जगत् रचे ठे.

उत्तरपक्षः–जो एम ठे तो ईश्वर प्रेक्षावान् (बुद्धिमान्) नथी, कारण के तेनी तो क्रीडा थाय ठे परंतु रांक जीवो तरफडी तरफडी, करुणास्पद थइ मरण पामेठे, तो पठी ईश्वरने दयालु मानवा ते केवी आपनी अज्ञानिता ठे? कारण के जे महापुरुष सर्वज्ञ दयालु ठे ते कदापि कोइ जीवने दुःख देवानी क्रीडा करता नथी, तो पठी ईश्वर क्रीडार्थी केम होइ शके? वली क्रीडा जे ठे ते रागवालाने होय ठे अने ईश्वर (जगवान्) तो वीतराग ठे, तो पठी ईश्वर (जगवान्) क्रीडा रसमां मग्न होय एम केम संजवे ?

पूर्वपक्षः–अमारा ईश्वर तो रागी द्वेषी ठे, ते कारणथी तेनामां क्रीडा करवानो संजव होइ शके ठे.

उत्तरपक्षः–त्यारे तो आपें मुख उज्वल करवाने वदले कालुं कर्युं. कारण के ज्यारे ईश्वर रागी द्वेषी थया त्यारे तो बीजा जीवोनी पेठे रागवाला थया. वीतराग न थया तेम सर्वज्ञ न थया. पठी तो अमारा सरखा थया. हवे जगत्ना रचनार केवी रीतें थइ शके ठे. ?

पूर्वपक्षः–अमें तो ईश्वरने रागद्वेषसंयुक्त सर्वज्ञ मानिये ठियें, ते कारणथी सर्व जगत्ना कर्त्ताठे.

उत्तरपक्षः–आ आपना कथनमां कोइपण प्रमाण नथी, जे प्रमाणथी ईश्वर रागी, द्वेषी, के सर्वज्ञ सिद्ध थाय?

पूर्वपक्षः–ईश्वरनो स्वजावज एवो ठे के रागी द्वेषी थवुं अने सर्वज्ञ पण

रेहेवुं,स्वज्ञावमां कोइ तर्क थई शकतो नथी,जेम अग्नि तो दाहक ठे परंतु आकाश दाहक केम नथी ? आ सवालमां उत्तर एमज देवाशे के अग्निमां दाहक स्वज्ञाव ठे, आकाशमां नथी, तेवी रीतें ईश्वरपण स्वज्ञावथी रागी द्वेषी तेमज सर्वज्ञ ठे.

उत्तरपक्षः–एवी रीतें तो कोइ वादी एम पण कही शके के आपनी सन्मुख आ जे गधेडुं खडुं ठे ते सर्व जगत्नुं रचनार ठे, जो आप एम पूठो के शा हेतुथी आ गर्दज्ञ जगत्नुं रचनार ठे ? तो ते वाबतमां एम उत्तर आपी शकाशे के ते गर्दज्ञनो स्वज्ञावज एवो ठे के जगत्ने रचीने, राग द्वेषवाला सर्वज्ञ थइने पठी गर्दज्ञ बनी जायठे. एवी रीतें तो महिष आदि सर्व जीवने वादी जगत्कर्त्ता सिद्ध करी देशे. पठी ईश्वर कोण थया, जे कांइ पोताना मनमां मान्युं ते बनावी लीधुं. आ तो ईश्वरने मोटुं कलंक लागेठे. आ हेतुथी ईश्वर (ज्ञगवान्) सर्वज्ञ तेमज वीतराग ठे. ते क्रीडाने अर्थे कदापि जगत्ने रचे नहि. वली हे ईश्वरवादि ! जो आपना केहेवा मुजब, ईश्वरें सर्व कांइ रच्युंठे तो तो त्रणशे त्रेसठ पाखंड मतनां सर्व शास्त्रो पण ईश्वरेंज रच्यां, अने शास्त्र तो सर्वे एक बीजाथी विरुद्ध ठे तो तेमांथी केटलां एक शास्त्र अवश्य सत्य अने केटलां एक असत्य पण होशे, त्यारे सत्य अने असत्य बंनेना उपदेशक ईश्वरज ठर्या, त्यारे तो ईश्वर पोतेज सर्व मतांतरियोने अरस परस लडावेठे. हजारो बलके लाखो मनुष्य आ मतोना झघडामां मरी जायठे. हवे जुर्ज के ईश्वरें शास्त्र शुं रच्युं ? जगत्मां एक मोटो उपद्रव रच्यो. एवां जुठां, साचां शास्त्र रचनारने महाधूर्त्त केहेवा जोइयें परंतु ईश्वर नहि. जो एम कहो के ईश्वरें तो सत्य शास्त्रज रच्यां ठे, असत्य रच्यांज नथी, असत्य तो जीवोए पोतेज बनावी लीधां ठे तो तो ईश्वरें जगत् पण रच्युं नहि होय, जगत् पण जीवोएज रच्युं हशे, कारण के ईश्वर सर्व वस्तुना कर्त्ता सिद्ध थया नथी.

वली आपें पूर्वे बीजुं अनुमान कर्त्तुं हतुं के जे जे आकारवाली वस्तु ठे ते ते सर्वे बुद्धिवालानी रचेली ठे. जेम के जुर्ज, जीर्ण कूप. अगर जो कारीगर त्यां उपलब्ध थतो नथी, तो पण अनुमानथी कारीगरज तेनो कर्त्ता सिद्ध थशे. जेम नवा कुवानो कर्त्ता उपलब्ध थायठे तेम.

उत्तर–आ आपनुं अनुमान समीचीन नथी. कारण के आकारवाला आपना हेतु, संध्या, वादलां, सर्पनी वंवी प्रमुख संस्थानवालामां छे, परंतु तेनो बुद्धिमान् कर्त्ता कोइ नथी. जो एम कहो के, वादलां, इंद्रधनुष्, सर्पनी वंवीप्रमुख संस्थानवालां बुद्धिमानोनां करेलां मनातां नथी त्यारे तो तेवीजरीतें पृथ्वी, पर्वत पण बुद्धिमानोना करेला नहि मानवा जोइयें.

आ पूर्वोक्त प्रमाणोथी कोइपण रीतें ईश्वर जगत्कर्त्ता सिद्ध थता नथी. हवे जे पुरुष ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानेछे तेउने अमे कहियें छियें के, ज्यां सुधी अमारी आ सघली युक्तियोनो उत्तर न अपाय त्यां सुधी ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानवा न जोइयें, जो कोइ ईश्वरवादी आ युक्तियोनो उत्तर पुरेपुरो देशे तो तो अमेपण जगत्कर्त्ता ईश्वर मानी लेशुं, ते विना कदापि नहि मानियें.

पूर्वपक्षः–ईश्वर जगत्ना कर्त्ता तो सिद्ध थता नथी, परंतु एक ईश्वर छे एम तो सिद्ध थायछे के नहि ?

उत्तरपक्षः–ईश्वर एकज छे, ए वात सिद्ध करनारुं कोइ प्रमाण नथी, तेथी ईश्वर एक सिद्ध केम थाय ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरना एकत्वने सिद्ध करनार आ प्रमाण छे. ज्यां बहु एकठा थइने एक काम करवा लागे त्यां जुदी जुदी मति होवाथी एक कार्यपण बनी शकतुं नथी. तेवीज रीतें जो ईश्वर अनंत होशे तो तो सृष्टि प्रमुख एकज कार्य करवामां न्यारी न्यारी मति थवाथी असमंजस कार्य बनशे. ते कारणथी ईश्वर एकज होवा जोइयें.

उत्तरपक्ष–आ तमारा प्रमाणथी तो ईश्वर एक सिद्ध थता नथी, कारण के पूर्वोक्त प्रमाणोथी ईश्वर कोइ वस्तुना कर्त्ता सिद्ध थता नथी. वली जुउ. एक मधपुडो बनाववामां सर्वे मांखियो एकमतवाली तो थायछे, परंतु ईश्वर, परमात्मा, निर्विकार, निरुपाधिक, ज्योतिःस्वरूपियोनो एकमत थइ शकतो नथी. आ मोटी आश्चर्यनी वातछे ? शुं तमे ईश्वरोने कीडाउथी पण बुद्धिहीन, अभिमानी, तेमज अज्ञानी बनावी दीधा, के ते सर्वेनो एकमत थइ शकतो नथी ?

पूर्वपक्ष–मांखियो बहु एकठी थइने मधपुडा आदि कार्य करेछे त्यांपण एक ईश्वरनाज व्यापारथी एक मधुपुडो बने छे.

उत्तरपक्षः– त्यारे घडो बनाववो, चोरी करवी, परस्त्रीगमन करवुं इत्यादि सर्व काम ईश्वरना व्यापारथी बनेलां सिद्ध थशे, अने जीव सर्व, अकर्त्ता सिद्ध थशे, पछी पुण्य पापनुं फल कोने मलशे? अने नरक स्वर्गमां जीवने केम मोकलाशे?

पूर्वपक्ष–कुंजारादि, चोरादि, सर्वजीव स्वतंत्रताथी पोतपोतानुं कार्य करेछे, आ प्रत्यक्षसिद्ध छे.

उत्तरपक्ष–शुं मांखियोयेंज तमारो कांइ अपराध कर्योछे, के तेने स्वतंत्र केहेता नथी? आ तमारा एक ईश्वरने मानवाथी तो एम पण प्रतीत थायछे के जो कदी अनंत ईश्वर मान्या जाय तो तो कदाचित् एक सृष्टि रचवामां विवाद थइ जाय पछी ते विवादने कोण दूर करी शके? शिरपंच ता कोइ नथी, वली एक ईश्वरने देखीने बीजो ईश्वर इर्ष्या करे के आ मारी तुल्य केम छे? इत्यादि अनेक उपद्रव उत्पन्न थइ जाय, तेथी ईश्वर एकज मानवा जोइयें. आ पण तमारी समज पूर्ण अज्ञानरूप घुणनामना कीडानी खाधेली छे, कारण के जो ईश्वर (जगवान्) सर्वज्ञ छे तो तो सर्वज्ञना ज्ञानमां एकज सरखुं जासन थवुं जोइयें, पछी विवाद शा कारणथी होय, वली ईश्वरतो राग,द्वेष,ईर्ष्या,अजिमान इत्यादि सर्व दूषणोथी रहित छे तो बीजा ईश्वरने देखीने इर्ष्या,अजिमान शा माटे करशे? जो ईश्वर थइने अंदर अंदर विवाद, ऊघडा,इर्ष्या, अजिमान करशे तो ते पामरोने ईश्वरज केम मानवामां आवशे? जो जगत्कर्त्ताज ईश्वर सिद्ध थता नथी तो विवाद ऊघडाज ईश्वरोने अंदर अंदर शा माटे थशे? ते कारणथी अनंत ईश्वर मानवामां कांइपण दूषण नथी. वली ईश्वर "सर्वगत" सर्वव्यापी छे एम मानवुं पण प्रामाणिक नथी. कारण के जे वादी ईश्वरने सर्वव्यापक माने छे ते शरीरथी व्यापक माने छे के ज्ञानस्वरूपथी? जो शरीरथी ईश्वरने सर्वव्यापक मानशे तो ईश्वरनुं शरीरज सर्वजगामां व्यापी जशे, बीजा पदार्थोने रेहेवा माटे जरापण अवकाश नही मले? ते कारणथी ईश्वर शरीरथी तो सर्वव्यापक नथी.

प्रश्नः– शुं ईश्वरने पण शरीर छे के आप एवो विकल्प करोछो?

उत्तरः–हे जव्य! एवो पण आ जगत्मां मत छे,जे ईश्वरने देहधारी माने छे.

प्रश्नः– ए कयो मत छे, जेणें शरीरधारी ईश्वर मानेल छे?

उत्तरः– तौरेत नामनो ग्रंथ छे, तेमां एम लख्युं छे के, ईश्वरें अबरहामने त्यां रोटी खाधी, तथा याकुबनी साथे कुस्ती करी; आ लखाणथी प्रतीत थाय छे के ईश्वर देहधारी छे. वली शंकरदिग्विजयना बीजा प्रकरणमां शंकरस्वामिना शिष्य आनंदगिरि तेज ग्रंथना आदिमां लखे छे के "हुं सर्वज्ञ तुं" ते लखियेंछियें. "ज्यारे नारदजीए जोयुं के आ लोकमां बहुज कपोलकल्पित मत उत्पन्न थया छे, अने सनातन धर्म लुप्त थयो छे, त्यारें ते तत्काल ब्रह्माजीपासे पहोच्या. अने जइने केहेवा लाग्या के हे पिताजी! आपनो मत तो प्रायः रह्यो नथी, अने लोकोए अनेक मत चलाव्या छे, तेथी आ वातनो कांइ उपाय करवो जोइये; ते सांभली ब्रह्माजी बहु वखत सुधी विचार करीने, पुत्र, मित्र, भक्त जनोंने साथे लइने पोताना लोकथी निकली शिवलोकमां प्रवेश करता हवा. त्यां जइ जुए छे तो मध्याह्नमां क्रोड सूर्यनो प्रकाश होय नहि, तथा क्रोड चंद्रमा समान शीतल, जेने पांच मुख छे, चंद्रमा मुगटमां छे विजलीवत् पिंगलि जटा धारण करी छे, अने पार्वती जेना वामाऊ अंगमां छे एवा सर्वना ईश्वर, महादेव दीठा. पछी ब्रह्माजीयें नमस्कार करी स्तुति करी; अने केहेवा लाग्या के हे महादेव! सर्वज्ञ, सर्वलोकेश, सर्वसाक्षी, सर्वमय, सर्व कारण इत्यादि–आ लखवाथी प्रगट प्रतीत थाय छे के ईश्वर देहधारी छे, जो देहधारी ईश्वर न होय तो पछी पांच मुख केम होय? आ लखाणथी ईश्वर शरीररहित सिद्ध थता नथी. हवे जो शरीरधारी ईश्वर होय तो तो आ लोकमां ईश्वरज व्यापी रहेशे, अने बीजा पदार्थोने रेहेवामाटे बीजो लोक जोइशे. जो एम कहो के ज्ञानात्माथी ईश्वर सर्वव्यापक छे तो तो सिद्धसाध्य नथी; अमे पण ज्ञानस्वरूपथी तो भगवानने सर्वव्यापी मानियेंछियें. परंतु शुं, तमारा वेदथी विरुद्ध न होय? कारण के वेदोमां शरीरथीज सर्व व्यापक कहेल छे. यथा. "विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पादित्यादि श्रुतेः" आ श्रुतिथी सिद्ध थाय छे के ईश्वर शरीरथीज सर्वव्यापक छे, अने तेम होवाथी पूर्वोक्त दूषणो आवे छे तेथी ईश्वर सर्वव्यापक नथी. वली आप कहो छो के ईश्वर सर्वज्ञ छे, परंतु तमारा ईश्वर सर्वज्ञ पण नथी; कारण के अमे जे सृष्टिकर्त्ता ईश्वरना खंडन क-

रनारा छियें, ते तेनाथी विपरीत चालियें छियें, तेथी श्रमने तेउंए शा-
माटे रच्या ? जो एम केहेशो के जन्मांतरोथी उपार्जन करेलां जे जे
तमारां शुजाशुज कर्म छे ते कर्मोने श्रनुसार तमने ईश्वर फल आपे छे,
तो पछी तमारा केहेवाथीज ईश्वरनी स्वतंत्रतापर पाणी फर्युं; कारण के
जो श्रमारां कर्मोविना ईश्वर फल श्रापी शकता नथी तो तो ईश्वरने
कांइ आधीन नथी; जेवां श्रमारां कर्म हशे तेवुं श्रमने फल मलशे, जो
एम कहो के ईश्वर जे इछे ते करे तो तो शुं जाणियें के ईश्वर शुं कर-
शे, धर्मियोने नरकमां नाखशे के पापियोने स्वर्गमां मोकलशे ? जो एम
कहो के परमेश्वर न्यायी छे, जेवुं जेवुं जे करे छे, तेवुं तेवुं तेने फल श्रा-
पे छे, तो वली तेज परतंत्रतारूप दूषण ईश्वरमां लागे छे. वली ईश्वर
नित्य छे एम केहेवुं ते पण तमारा पोताना घरमांज सुंदर लागे छे, का-
रण के नित्य तो ते वस्तुने कहियें के जे त्रणे कालमां एकरूप रहे. जो
ईश्वर नित्य छे तो शुं तेनामां जगत् बनाववानो स्वजाव छे के नहि?जो
एम कहो के तेनामां जगत् रचवानो स्वजाव छे तो ईश्वर निरंतर जगत्ने
रच्या करशे,कदाऽपि बंध रहेशे नहि,कारण के जगत् रचवानो स्वजाव तो
तेनामां नित्य छे. जो एम केहेशो के ईश्वरमां जगत् रचवानो स्वजाव नथी
तो तो ईश्वर कदापि जगत् रचशे नहि, कारण के जगत् रचवानो स्व-
जाव तेनामां नथी. तथा जो ईश्वरमां जगत् रचवानो स्वजाव एकांत
नित्य छे तो तो प्रलय कदापि नहि थाय, कारण के ईश्वरमां प्रलय क-
रवानो स्वजाव नथी. जो एम कहो के ईश्वरमां रचवानी तेमज प्रलय
करवानी बंने शक्तियो नित्य छे तो तो कदापि जगत् रचाशे पण नहि,
तेम तेनो प्रलय पण थशे नहि, कारण के परस्परविरुद्ध एवी बे शक्ति-
यो एक स्थानमां एककालमां कदापि रेहेती नथी. जो रेहेशे तो जगत्
रचाशे नहि, तेम तेनो प्रलय थशे नहि; कारण के जे कालमां रचनारी
शक्ति रचशे तेज कालमां प्रलय करनारी शक्ति प्रलय करशे, श्रने जे
कालमां प्रलय करनारी शक्ति प्रलय करशे तेज कालमां रचनारी शक्ति
रची देशे; एवी रीतें ज्यारे शक्तियोनो परस्पर विरोध थशे त्यारे जगत्
रचाशे नहि तेम तेनो प्रलय पण थशे नहि. हवे तो श्रमारोज मत सि-
द्ध थयो. कारण के जगत् कोइयें रचेल नथी तेम तेनो कदापि प्रलय

पण थतो नथी, तेथी आ जगत् अनादि अनंत सिद्ध थयुं. जो एम कहो के ईश्वरमां बंने शक्तियो नथी तो पछी जगत् रचाशे पण नहि तेमज तेनो प्रलय पण थशे नहि. तेथी पण जगत् अनादि अनंत सिद्ध थयुं. जो एम कहो के ईश्वर रचवानी इच्छा करे छे त्यारे रचे छे, अने प्रलय करवानी इच्छा करे छे त्यारे प्रलय करे छे तेमां शुं दूषण ? तो तो ईश्वरनी शक्तियो अनित्य थई. जले अनित्य होय, तेमां अमारे शुं हानि छे ? पण जुओ. ईश्वरनी शक्तियो अनित्य छे तो तो ईश्वर पण अनित्य थशे, कारण के ईश्वर पोतानी शक्तियोथी अभेद छे, जो एम कहो के शक्तियो ईश्वरथी भेदरूप छे तो पछी शक्तियो नित्य होवाथी जगत् रचाशे नहि तेम तेनो प्रलयपण थशे नहि, अने ईश्वर अकिंचित्कर सिद्ध थशे. कारण के ज्यारे ईश्वर सर्वशक्तिओथी रहित छे, त्यारे तो कांइपण करवाने समर्थ नथी. पछी जगत् रचवामां केम समर्थ थशे ? वली शक्तिओनुं उपादान कारण कोण थशे ? पछी ईश्वरनो अभाव थइ जशे. कारण के ज्यारे ईश्वरमां शक्तिज कांई नथी त्यारे ते ईश्वर शेनो ? तो तो आकाशना फुलसमान असत् छे. पछी जगत्कर्त्ता कोने मानशो ?

हवे खरडज्ञानिओनो ईश्वरवाद लखियेंछियें. खरडज्ञानी कहे छे के, जगत्मां जेटला पदार्थ छे तेना विलक्षण, विलक्षणसंयोग, आकृति, गुण तेमज स्वभाव मालम पडे छे. जो कदी तेओनो तथा तेओना नियमोनो कर्त्ता कोइ न होय तो ते नियमो कदि बने नहि; कारण के जड पदार्थमां मलवानुं तेमज जुदा थवानुं यथावत् सामर्थ्य नथी. ते हेतुथी ईश्वर कर्त्ता अवश्य होवा जोइयें.

उत्तर पक्ष–प्रथमज अमे जगत्कर्त्ता ईश्वरनुं खंडन करी चुक्या छियें, तो पछी आप जगत्कर्त्ता केम मानो छो ? वली आपें कह्युं के जगत्ना पदार्थोमां जुदा जुदा स्वभाव मालम पडे छे, तेथी ईश्वर सिद्ध थाय छे; परंतु आ कथनथी ईश्वर जगत्कर्त्ता सिद्ध थता नथी, कारण के सर्व पदार्थोमां अनंत शक्तिओ छे, तेथी पोतपोतानी शक्तिओथी सर्व पदार्थो पोतपोतानां कार्य करे छे. पदार्थोना संयोगमां निमित्त आ छे. १ काल, २ स्वभाव, ३ नियति (भवितव्यता) ४ जीवोनां कर्म,[१] ५ जीवोनो उद्यम;

१ प्रारब्ध–दैव–अदृष्ट–जीवकृत धर्माधर्म–क्रिया–पुण्याई.

आ पांच निमित्त विना वीजुं कोइपण निमित्त नथी, ए पांचनुं स्वरूप आगल उपर लखवामां आवशे.

प्रत्यक्षमां पण आ पांचे निमित्तोथी सर्व कांइ उत्पन्न थाय छे ते जोइयें छियें. जेम के वीजांकुर ज्यारे वीज ववाय छे, त्यारे काल पण यथानुकूल होवो जोइयें, तेमज वीज, जल अने पृथ्वी इत्यादिना स्वभाव पण अवश्य होवा जोइयें, तेमज नियति पण कारण छे–जे जे पदार्थोना स्वभाव छे ते ते पदार्थोना तेवा तेवा जे परिणाम थाय छे तेनुं नाम नियति छे; वली अष्टविध कर्मपण कारण छे. तथा [१]पुरुषकार (जीवोनो उद्यम) पण कारण छे. आ पांच वस्तु अनादि छे, कोइयें रचेल नथी; कारण के वस्तुना जे जे स्वभाव छे ते ते सर्व अनादिथी छे. जो कदी वस्तुमां पोतपोताना स्वभाव न होय तो तो कोइ वस्तुज सतरूप रेहेशे नहि. सर्व शशशृंगवत् असत् थइ जशे. वली प्रत्यक्ष देखाय छे एवां, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चंद्रमा इत्यादि पदार्थो एवीरीतें अनादिरूपथी सिद्ध छे, तेमज पृथ्वीउपर जे जे रचना देखाय छे ते सर्व प्रवाहथी एमज चाली आवे छे. वली जगत्‌ना जे जे नियमो छे ते सर्व आ पांच निमित्त विना थइ शकता नथी. ते कारणथी सर्वे पदार्थो पोतपोताना नियमोमां छे. जो तमे द्रव्यनी शक्तिनेज ईश्वर मानी लेशो तो तो अमने कांइ हानि नथी; कारण के अमे द्रव्यनी अनादि शक्तिनुं नाम इश्वर राखी लेशुं, अने ज्यारे तमे द्रव्यनी अनादि शक्तिने ईश्वर मानी त्यारे तमारो अमारो विवाद दूर थयो; पछी तमे जे लख्युं छे के जडमां यथावत् मलवानी शक्ति नथी, ते पण तमारुं लखाण मिथ्या थयुं. वली जुओ के जगत्‌मां जड पदार्थो अनेक तरेहथी पोतपोतानी मेले पूर्वोक्त पांच निमित्तोथी पोतपोतामां मली जाय छे. जेम के सूर्यना किरणो वादलामां पडवाथी इंद्रधनुष्युं वनवुं, संध्यानुं होवुं, पांच वर्णनां वादलांनी एकत्र घटा थवी, चंद्र सूर्यनी आस पास कुंमालां थवां, आकाशमां पवनोना मेलापथी जल तेमज अग्निनुं उत्पन्न थवुं, तेमज वरसाद वरसवाथी घास तृणादि अनेक प्रकारनी वनस्पतिनुं उत्पन्न थवुं, तथा अनेक प्रकारना कीट पतंग प्रमुख जीवोनुं उत्पन्न थवुं इत्यादि;

१ जीवकृत पुरुपार्थ वा तेणें करेलो शुभाशुभ यत्न.

आ पांचे निमित्त विना कोइ वस्तुने बनावतां ईश्वर देखातो नथी. जरा पक्षपात छोडी विचार करो ? ईश्वर कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थइ शके छे ? कारण के पृथ्वी, आकाश, चंद्र सूर्य इत्यादि तो द्रव्यार्थिक नयना मतथी अनादि छे. पछी तेने वास्ते पुछवुं थाय के आ कोणें बनाव्या ? तो हवे अमे पुछियें छियें, ईश्वरने कोणें बनाव्या ? जो कहेशो के ईश्वरने तो कोइयें बनाव्या नथी, ते तो अनादिथी बन्या बनेलाज छे, तो पछी पृथ्वी प्रमुख केटला एक पदार्थो पण बन्या बनेला अनादिथीज ते एम मानवामां शुं लज्जा आवे छे ?

खरडज्ञानी कहे छे के—स्वभावथी जगत्नी उत्पत्ति जे माने छे तेना मतमां आ दोष आवे छे. जो पृथ्वी स्वभावथी थाय छे तो तेनो कर्त्ता तेमज नियंता होय नहि, वली आ पृथ्वीथी जुदी दश कोश उपर आकाशमां पोतानी मेले बीजी पृथ्वी थइ जात,जे आज सुधीबनी नथी तेथी एम जणाय छे के ईश्वर कर्त्ता छे.

उत्तरपक्षः— आप कांई विचार करो छो के नहि ? जो विचारशो तो पूर्वोक्त केहेवुं अयुक्त लागशे. कारण के अमे कहियें छियें के पृथ्वी विगेरे अनादि छे, कोईयें बनावेल नथी, अने तमे कहो छो के आकाशमां उंचे दश कोशने अंतरे बीजी पृथ्वी केम नथी बनती ? हवे विचारो के आ तमारो सवाल समजणवालो छे ? आ तमारा प्रश्नना उत्तरमां कोइ एम पुछे के जो ईश्वर स्वभावथी बन्या होय तो ईश्वरथी अलग बीजा ईश्वर केम उत्पन्न थता नथी ? जो एम कहो के ईश्वर अनादि छे तेथी बीजा नवा ईश्वर केम बने ? तेवी रीतें अमे पण कही शकियें छियें के पृथ्वी अनादि छे,नवी नथी बनती,तो पछी दश कोश आकाशमां केम बने ?

पूर्वपक्षः— जो वस्तु पोते पोतानी मेलेज बनीजाय तो सर्वपरमाणु एकठा केम मली जता नथी?अथवा एकेक थईने विखरीपण केम जता नथी?

उत्तरपक्षः— जड कांई अमारी आज्ञा मानता नथी के अमारा केहेवाथी एकठा थईने एकरूप थई जाय, अथवा एक एक थई विखरी जाय; पूर्वोक्त पांच निमित्त ज्यां मलवानां हशे त्यां एकत्र थशे, ज्यां निमित्त नहि मले त्यां एकठां थशे नहि.

पूर्वपक्षः—सर्व परमाणुओने एकत्र मलवामां पांचनिमित्त केम मलतांनथी?

उत्तरपक्षः– अनादि संसारनी जे नियतिरूप मर्यादा छे ते कदापि अन्यथा थती नथी. जो कदी थाय तो, संसारमां जे जीवो जन्म लहे छे ते सर्वे स्त्रीनाज, अथवा पुरुषनाज रूपथी केम उत्पन्न न थाय ? जो एम कहो के जेवां जेवां जेणे कर्म कर्यां होय तेवां तेवांज तेने फल मले छे, पछी फक्त स्त्री आदि स्वरूपथीज केम उत्पन्न थाय ? तो हवे अमे पुछियें छियें के, सर्वजीवोयें स्त्री होवानां के पुरुष होवानां जुदां जुदां कर्म केम कर्यां ? एकसरखां कर्म केम न कर्यां ? उत्तरमां एम केहेशो के, संसारमां ए सनातनथी रीत छे के सर्वजीव सरखां कर्म कदापि करता नथी; त्यारे तो परमाणुमां पण सनातनथी एज स्वभाव छे के एकत्र कदापि मलवुं नहि, तेमज एकएक थइ विखराइ पण जवुं नहि. हे पूर्वपक्षि! आ तमारा ईश्वर जे जगत् रचेछे ते तमारा केहेवाथी, अगाऊ अनंत सृष्टिउं रची चुक्या छे, तेमज एकेक जीवोने अशुभकर्मोनां फल अनंतवार दइ चुक्या छे, तो पण ते जीवो आजसुधी पाप कर्याज करे छे, तो हवे तेउने शिक्षा करवाथी ईश्वरने शुं लाभ थयो ? के अनंत कालथी आ विडंबनामां पडी रह्या छे ? वली ईश्वरने सृष्टि रचवानुं पण शुं प्रयोजन हतुं ?

पूर्वपक्षः– ईश्वरने सृष्टि नहि रचवानुं शुं प्रयोजन हतुं ?

उत्तरपक्षः– वाह रे अज्ञशिरोमणि ! आ तमे शुं उत्तर आप्यो ? शुं आ तमारा उत्तरथी विद्वान् माणस उपहास नहि करे ? ईश्वर जो सृष्टि रचे तो ईश्वरताज नष्ट थइ जाय; आ वृत्तांत, उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें.

पूर्वपक्षः– ईश्वरनी जे शक्तिउं छे ते सर्वे पोत पोतानुं काम करेछे, जेम आंख देखवानुं काम करेछे, कान सांभलवानुं काम करेछे, तेवी रीतें ईश्वरमां जे रचनाशक्ति छे, ते रचना करवाथीज सफल थायछे, ते वास्ते जगत् रचेछे.

उत्तरपक्षः–जो तमे ईश्वरने सर्व शक्तिमान् मान्या तो ईश्वरनी सर्व शक्तिउं सफल थवी जोइये. पछी तो ईश्वर एक सुंदर पुरुषनुं रूप रचीने १ जगत्नी सर्व सुंदर सुंदर स्त्रियो साथे भोग करे,२ चोर थनी चोरी करे, ३ विश्वास घातिपणुं करे, ४ जीवहत्या करे, ५ जूठ बोले, ६ अ-

न्याय करे, ७ अवतार लइ गोपियो साथे कल्लोल करे, ८ कुब्जा साथे ज्ञोग करे, ए बीजानी स्त्रीने जगवी लइ जाय, १० शिरपर जटा राखे, ११ त्रण आंख बनावे, १२ बेलपर चढे, १३ शरीरपर विज्ञूति लगावे, १४ एक स्त्रीने वामार्द्धांगमां राखे, १५ कोइ मुनिनी पासे नागा थइ नाचे, १६ कोइने वरदान आपे, १७ कोइने शाप दे, १८ चार मुख बनावी एक स्त्री राखे, १९ पोतानी पुत्री साथे ज्ञोग करे, २० संग्राम करे, २१ स्त्रीने चोरी लइ जाय तो पढी ते स्त्रीने माटे रोतो फरे, २२ एक पोतानो जाइ बनावे, पढी ज्यारे संग्राममां तेने शस्त्र लागे, त्यारे जाइना दुःखथी बहु रोवे, २३ पोते पोताने अज्ञानी समजे, २४ जाइनी चिकित्सा वास्ते वैद्य बोलावे, २५ सर्व कांइ खाय, २६ पीये, २७ नाचे, २८ कुदे, २ए रोवे, ३० पीटे, पढी, ३१ निर्मल, ३२ ज्योतिःस्वरूप, ३३ निरहंकार, ३४ सर्व व्यापक, बनी बेसे इत्यादि शक्तिउं ईश्वरमां ढे के नहि ? जो ढे तो, पूर्वोक्त सर्व काम ईश्वरने करवां पडशे, जो नहि करे तो ईश्वरनी सर्व शक्तिउं सफल नहि थवानी ? पढी तो ईश्वर महादुःखी थइ जशे. कारण के जेने नेत्र तो मलेलां ढे, अने तेने देखवानुं न मले तो, ते केवो दुःखी थाय ढे ? जो एम कहो के पूर्वोक्त अयोग्य शक्तिउं ईश्वरमां नथी, तो तो सर्व शक्तिमान् ईश्वर ढे एम कदापि न केहेवुं जोइयें. जो एम कहो के योग्य शक्तिउंनी अपेक्षायें अमे सर्वशक्तिमान् मानियें ढियें, तो तो जगत् रचवानी शक्ति पण अयोग्यज ढे, ते पण परमात्मामां नथी. ते शक्तिनी अयोग्यता, उपर लखी आव्या ढियें. तथा हे पूर्वपक्षि ! ज्यारे ईश्वरें प्रथम सृष्टि रची हती, त्यारे स्त्री, पुरुषो तो न होतां, हवे विचारो के माता पिता विना मनुष्य केम उत्पन्न थयां हशे ?

पूर्वपक्षः—ज्यारे ईश्वरें सृष्टि रची हती, त्यारेज बहुपुरुष, तेमज बहु स्त्रियो, माता पिता विना रच्यां हतां,त्यारपढी गर्जथी उत्पन्न थवा लाग्यां.

उत्तरपक्षः—आ प्रमाणरहित केहेवुं कोइपण विद्वान् मानशे नहिं. कारण के माता पिता विना कदापि पुत्र उत्पन्न थइ शकतो नथी. जो कदी ईश्वरें प्रथम माता पिता विना पुरुष, स्त्री उत्पन्न कर्यां हतां तो आज पण घड्यां घडाव्यां, बन्यां बनाव्यां स्त्री पुरुष केम नथी मोकलता? गर्जधारण करावयां, स्त्रीपुरुषनां मैथुन करावयां, गर्जवासनां दुःख जो-

गवाववां, योनियंत्रद्वारा खेंची कढाववां, इत्यादि संकट शात्रास्ते रच्यां? ईश्वरें अनंतवार सृष्टि रची, अने प्रलय कस्यो, त्यारे तो थाक्या नहि तो शुं मनुष्योनेज बनाववाथी थाक चडवानो छे? के घडेला घडावेला बनेला बनावेला मोकली शकता नथी? माता पिता विना पुत्र उत्पन्न थाय ए कदापि बनी शकतुं नथी, ते हेतुथी जगत्नो प्रवाह अनादिथी तेवीज रीतें तरतमता रूपें चालतो आवेलो सिद्ध थाय छे.

पूर्वपक्ष–जो कदी ईश्वर सर्व वस्तुना कर्ता न होय, अने जीवज कर्त्ता होय तो तो जीव पोतेज शरीर धारण करी लेशे. वली शरीरने कदापि छोडशे नहि, पोते पोतानां सारां फल जोगवी लेशे, अने कदी मरशे नहि.

उत्तरपक्षः–आपें जे कह्युं ते सर्व कर्मने वश छे, परंतु जीवने आधीन नथी, जो एम कहो के कर्मपण जीवेंज कस्यां हतां, त्यारे अशुज कर्म जीवें केम कस्यां? कारण के कोइपण पोतानुं बुरुं करतां नथी; आ वातनो उत्तर तो अपाई गयो छे, परंतु तमारी समजण थोडी छे तेथी समजता नथी. कारण के जीवोनी जे जे शुज अशुज अवस्था छे, ते सर्व कर्मोनुं फल छे. वली जीव, कर्म करवामां तो प्रायः स्वतंत्रज छे, परंतु फल जोगववामां स्ववॆश नथी. कारण के जेम कोइ जीव धनुष्यथी तीर चलावे अने पछी पकडवा चाहे तो ते जेम तेनामां सामर्थ्य नथी, तेमज कोई जीव विष खाय, ते खावामां तो स्ववश छे परंतु ते विषना वेगने रोकवामां जेम समर्थ नथी, तेम कर्म करवामां तो जीव प्रायः स्वतंत्र छे परंतु फल जोगववामां परवश छे. वली जेम वर्त्तमान कालमां रेलगाडी, तथा तार जीवोए बनावेला छे ते चालती रेलगाडी तथा जता तारना वेगने, जेटलो वखत तेनी कलनी प्रेरणा शक्ति बंध पडती नथी तेटलो वखत, कोइ जीव रोकी शकता नथी, तेवीज रीतें कर्मफलना वेगने रोकवामां जीवपण समर्थ नथी. वली जीवने जवांतरमां कोण लई जाय छे? तथा जीवना शरीरनी रचना, आंखोना पडदा, अनेक प्रकारना रंग बेरंगी, हाड, चामडी, लोही, वीर्य इत्यादि रचना कोण रचे छे? तेनुं पूर्ण स्वरूप ज्यां (१४७) कर्म प्रकृतिनुं स्वरूप लखशुं त्यांथी जाणवुं. ते हेतुथी ईश्वर जगत् कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थता नथी. विशेष

१सारासार–नहाना मोहोटा उंचनीच वा न्यूनाधिक–के समविषम सुखिदुःखी. २स्वतंत्र.

रीतें जगत्कर्त्ता ईश्वरनुं खंडन जाणवुं होय तो (१) श्रीसंमतितर्क, (२) द्वादशसार नयचक्र, (३) स्याद्वादरत्नाकर, (४) अनेकांतजय पताका, (५) शास्त्रसमुच्चयस्याद्वादकल्पलता, (६) स्याद्वादमञ्जरी, (७) स्याद्वादरत्नाकरावतारिका, (८) सूत्रकृतांग, (९) नंदीसिद्धांत, (१०) शब्दांभोनिधिगंध हस्ति महाभाष्य, (११) प्रमाणसमुच्चय, (१२) प्रमाणपरीक्षा, (१३) प्रमाणमीमांसा, (१४) आप्तमीमांसा, (१५) प्रमेय कमलमार्त्तंड, (१६) प्रमेयदिनमार्तंड, (१७) न्यायावतार, (१८) धर्मसंग्रहणी, (१९) तत्त्वार्थ, (२०) षड्दर्शनसमुच्चय. इत्यादि जैनमतना ग्रंथ जोई लेवा. ते कारणथी जे कामी, क्रोधी, कपटी, धूर्त्त, परस्त्री गामी, स्वस्त्रीगामी, नाचनारा, गानारा, वजावनारा, रोपीटकरनारा, भस्म लगावनारा, माला जपनारा, संग्राम करनारा, डमरु आदि वाजां वगाडनारा, वरदान अथवा शाप देनारा, विनाप्रयोजन अनेक संकटमां पडनारा, इत्यादि अढारे दूषणसहित छे ते कुदेव छे. तेने ईश्वर मानवा तेज मिथ्यात्व छे. आ कुदेवोने माननारा पत्थरनी नाव उपर बेठा छे. ते कारणथी लखवानुं प्रयोजन एटलुंज छे के कुदेवने कदापि अर्हंत भगवंत परमेश्वर मानवा नहि.

इतिश्री तपागच्छीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्यमुन्यानंदविजयात्माराम विरचितजैनतत्त्वादर्शभाषांतरेकुदेवनिर्णयनामाद्वितीयःपरिच्छेदःसंपूर्णः॥२॥

॥ अथ तृतीयपरिच्छेदप्रारंभः ॥

त्रीजा परिच्छेदमां गुरुतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें. जैनमतमां गुरुनां लक्षण आ प्रमाणे लखेलां छेः— महाव्रतधराधीरा, भैक्षमात्रोपजीविनः ॥ सामायिकस्थाधर्मोप, देशकागुरवोमताः ॥ १ ॥ अर्थः—अहिंसादि पांच महाव्रत धारण करनारा तथा पालनारा, अने आपत्ति समये धैर्य राखनारा, पोताना धारण करेला व्रतमां दूषण लगावी कलंकित नहि करनारा, तथा बेंतालीश दूषणरहित माधुकरी भिक्षावृत्ति करी, पोताना चारित्र धर्मना, तथा शरीरना निर्वाहवास्ते भोजन करनारा, भोजन पण पुरूं पेट भरी नहि करनारा, भोजनने वास्ते अन्न, पाणी रात्रिमां नहि राखनारा, तथा धर्म साधननां उपकरण वर्जी बीजो कांइ पण

संग्रह नहि करनारा, धन, धान्य, सुवर्ण, रौप्य, मणि, मोती, प्रवालादि काइपण परिग्रह नहि राखनारा, तथा राग द्वेपना परिणामरहित, माध्यस्थवृत्तिथी सदा वर्तनारा, तथा जीवोना उद्धारवास्ते, अर्हंत जगवंत परमेश्वरें सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप धर्म, स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण करेल छे, तेनो जव्यजीवोने उपदेश करनारा, परंतु ज्योतिष शास्त्र, अष्टांगनिमित्तशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति-सेवाप्रमुख अनेक शास्त्र, जेथी धर्ममां बाधा पहोंचे तेवां शास्त्रोनो उपदेश नहि करनारा, कारण के लौकिक शास्त्रो बुद्धिमान् पुरुपो वर्त्तमानमां पण बहु अध्ययन करे छे, तेमज सांसारिक विद्यानां नवीन, नवीन अनेक पुस्तको बनावेछे. तथा पाश्चात्य पुरुपोनी बुद्धि जोइ आ देशना लोको पण सांसारिक विद्यामां बहुज निपुण थाय छे, अने ते कारणथी जीवोने धर्म पामवो बहुज मुश्केल थायछे, तेथी फक्त धर्मनोज उपदेश करनारा, एवा लक्षणवाला गुरु जैनमतमां छे अर्थात् जैनमतमां गुरुनां एवां लक्षणो छे.

प्रथम पांच महाव्रत साधुने धारण करवां कह्यां छे ते पांच महाव्रत कयां छे? ते कहियें छियें. अहिंसासूनृतास्तेय, ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः ॥ पंचभिः पंचभिर्युक्ता, भावनाभिर्विमुक्तये ॥ २ ॥ अर्थः–(१) अहिंसा (जीवदया) (२) सूनृत (सत्यवचन बोलवुं) (३) अस्तेय (साधुने उचित, आप्या विना वस्तु न लेवी ते) (४) ब्रह्मचर्य पालवुं (५) सर्व परिग्रहनो त्याग. ए पांच महाव्रत छे, तथा आ पांच महाव्रतोमां एकेक महाव्रतनी पांच पांच जावना छे. साधु आ पांच महाव्रत, तथा पचीश जावना, मोक्षने वास्ते पाले.

आ पांच महाव्रतमांथी प्रथम महाव्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. न यत् प्रमादयोगेन, जीवितव्यपरोपणं ॥ त्रसानां स्थावराणां च, तदहिंसाव्रतं मतं ॥ ३ ॥ अर्थः–त्रस, (द्वींद्रियादि) अने स्थावर, (पृथ्वीकाय) (अपकाय-तेउकाय-वाउकाय-वनस्पतिकाय) आ सर्व जीवोने प्रमादवश थइ मारे नहि. प्रमादनां लक्षणो; राग, द्वेप, असावधानपणुं, अज्ञान, मन वचन कायानुं चंचलपणुं, धर्मनेविपे अनादर इत्यादि. प्रमादने वश थइ जे प्राणातिपात करवो, तेनो जे त्याग, तेनुं नाम अहिंसा व्रत छे.

बीजा महाव्रतनुं स्वरूप लखिये छियें. प्रियं पथ्यं वचस्तथ्यं, सूनृतव्रत मुच्यते ॥ तत्तथ्यमपिनो तथ्यमप्रियं चाहितं च यत् ॥ ४ ॥ जे वचन सांजलवाथी बीजा जीव हर्ष पामे,ते वचनने प्रियवचन कहियें,तथा जे वचन जीवोने पथ्यकारि होय, परिणाम सुंदर होय, अर्थात् जे वचनथी जीवने जविष्यमां बहुज सारुं थाय, तथा जे वचन सत्य होय, एवुं वचन जे बोलवुं ते सूनृत व्रत कहियें; अने जे वचन अप्रिय तथा अहितकारि होय ते सत्य होय तो पण सत्य नथी. आ व्रतविषे कांइक विशेष लखियेछियें. जे वचन व्यवहारमां जलें सत्यज होय, परंतु ते जो बीजा जीवने दुःखदायक होय तो ते वचन साधु न बोले. जेम के काणाने काणो केहेवो, चोरने चोर केहेवो, कुष्टीने कुष्टी केहेवो, इत्यादि; वली जे वचन जीवोने जविष्यमां अनर्थकारक होय तेपण वसुराजानी पेठे बोले नहि. जो आ बंने वचनो बोले तो ते साधुने सूनृत व्रतमां कलंक लागी जाय, कारण के आ बंने वचनो असत्यमांज गणेलां छे.

हवे त्रीजुं महाव्रत लखियें छियें. अनादानमदत्तस्या,ऽस्तेयव्रतमुदीरितं ॥ बाह्याः प्राणानृणामर्थो, हरता तं हताहि ते ॥ ५ ॥ अर्थः—अदत्त मालेकना आप्या विना लई लेवुं तेनो जे नियम ते अस्तेय व्रत कहियें. नामांतर अचोरीव्रत. अदत्तादान, चार प्रकारनुं छे (१) जे वस्तु साधुने लेवा योग्य छे, जेम के अचित्त, जीवरहित वस्तु, तृण, काष्ठ, पाषाणादि, ते तेना स्वामिना पुछ्या विना लई लेवी, ते स्वामि अदत्त. (२) तथा जेम कोई घेटुं, बकरी, गाय प्रमुख जीव, जेनो स्वामी बीजा हिंसकजीवने तेनी किंमत लई आपे, अथवा किंमत विना आपे, अने लेनारें आपेली वस्तु लीधी छे, परंतु ते जीवें पोतानुं शरीर आपेलुं नथी, ते हेतुथी जीवअदत्त. (३) तथा आधाकर्मादि आहार प्रमुख जे जे वस्तु,अचित्त, जीवरहित पण छे, अने आपेली पण ते वस्तुना स्वामियें ज छे, परंतु तीर्थंकर जगवंतें निषेध करी छे. पछी जो साधु ते वस्तुने ग्रहण करे तो तीर्थंकर अदत्त (४) तथा जे वस्तु निर्दोष छे, जेम के वस्त्र आहारादि, अने ते वस्तुना स्वामियें ते आपेली छे, तेमज तीर्थंकर जगवंतें तेनो निषेध पण करेलो नथी, छतांपि गुरुनी आज्ञाविना ते वस्तुने जो साधु लहे तो अदत्त. आ व्रतमां आ चारे प्रकारनुं अदत्त

न लेवुं. जेटलां व्रत, नियम छे, ते सर्वे अहिंसा व्रतनी रक्षावास्ते वाड समान छे, आ त्रीजा व्रतना पालनथी, अहिंसा व्रतनीज रक्षा थाय छे; अने जो त्रीजुं व्रत न पाले तो अहिंसा व्रतने दूषण लागे छे, कारण ए छे के लक्ष्मी जे छे ते मनुष्योना वाह्य प्राण छे. ज्यारे मनुष्य कोइनी चोरी करे छे, त्यारे निश्चयथी ते तेना प्राणोनोज नाश करे छे. ते कारणथी चोरी करवी ते महापाप छे. सर्व चोरीनो जे त्याग, तेनुंज नाम त्रीजुं अदत्तादान त्यागरूप महाव्रत छे.

हवे चोथा महाव्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. दिव्यौदारिककामानां, कृतानुमतिकारितैः ॥ मनोवाक्कायतस्त्यागो, ब्रह्माष्टादशधा मतम् ॥ ६ ॥ अर्थः—दिव्य (देवताना) वैक्रिय शरीर संबंधी जे कामजोग, तथा औदारिक (तिर्यंच, मनुष्यना) शरीर संबंधी जे काम जोग, अर्थात् वैक्रिय तेमज औदारिक ए बंने शरीरनी साथे विषयसेवन करवुं, तेमज बीजाउने विषयसेवन कराववां, तेमज विषयसेवन जे करे तेने अनुमति आपवी, आ ब जेद, मनथी, वचनथी, तेमज कायाथी ए रीतें अढार प्रकारथी मैथुनसेवननो जे त्याग तेने ब्रह्मचर्य व्रत कहियें छियें.

हवे पांचमुं महाव्रत लखियें छियें. सर्वजावेषु मूर्छाया, स्त्यागः स्यादपरिग्रहः ॥ यदि सत्स्वपि जीयेत, मूछया चित्तविप्लवः ॥ ७ ॥ अर्थः—संपूर्ण जे सारा जाव पदार्थ, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जावरूप, तेनेविषे जे मूर्छा- ममत्वजाव- मोह, तेनो जे त्याग, ते अपरिग्रह व्रत कहियें. जेनी पासे पोताना शरीर विना बीजी कांइ वस्तु नथी तेने पण निष्परिग्रह पणुं छे एम न कहियें, परंतु जेने, सर्व वस्तुउ उपरथी मूर्छा-ममत्व-मोह गयेलो होय तेनेज निष्परिग्रही कहियें. कारण के जेनी पासे वस्तु कोइ नथी, परंतु नथी एवी वस्तुनी चाहना जेने लागी रही छे ते त्यागी नहि. जो ज्ञानद्वारा मूर्छा त्याग्या विना त्यागी थवातुं होय तो कुतरा तेमज गधेडा पण त्यागी थवा जोइयें. सबब जे पुरुष ममत्वरहित छे ते निष्परिग्रही छे. पछी तेनी पासे धर्मसाधन करवानां केटलां एक उपकरण पण छे तो पण मूर्छाना अजावथी ते परिग्रह नथी.

हवे पूर्वोक्त एकेक महाव्रतनी पांच पांच जावना लखियें छियें. जावनाजिर्जावितानि, पंचजिः पंचजिः क्रमात् ॥ महाव्रतानि नो कस्य, सा-

धयत्यव्ययं पदम् ॥ १ ॥ अर्थः— आ पांच महाव्रतोनी पचीशज्ञावनाथी जे कोइ ते ते महाव्रतने रंजित (वासित) करे, अर्थात् पांच पांच ज्ञावनापूर्वक अखंड महाव्रत पाले तो एवो कोइ जीव नथी के तेने ते महाव्रत मोक्ष पद न प्राप्त करावे ?

हवे प्रथम महाव्रतनी पांच ज्ञावनां लखियें ठियें. मनोगुप्त्येषणादानै, र्याज्निः समितिज्निः सदा ॥ दृष्टान्नपानग्रहणे, नाहिंसां ज्ञावयेत् सुधीः ॥ १ ॥ अर्थः— मनने पापना काममां न प्रवर्त्तावे, परंतु पापना काममांथी खेंची लीए. तेनुं नाम मनोगुप्ति ठे. जो मनने पाप काममां प्रवर्त्तावे, अने वाह्य वृत्तिथी हिंसा न पण करे तो पण प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी पेठे सातमा नरकमां गमन करवा योग्य पापकर्म उत्पन्न करे ठे. ते कारणथी मुनियें अवश्य मनोगुप्ति करवी जोइयें. ए प्रथम ज्ञावना. तथा एषणा समिति–आहारादि चारे वस्तु, आधाकर्मादि बेंतालीश दोषरहित लहे. बेंतालीश दूषणोनुं संपूर्ण स्वरूप जोवुं होय तो पिंडनिर्युक्ति शास्त्र (७०००) श्लोक प्रमाण ठे ते जोइ लेवुं. ए बीजी ज्ञावना. तथा आदाननिक्षेप- पात्र, दंड, फलक प्रमुख जे कांइ लेवुं पडे, तथा ज्रूमि उपर राखवुं पडे, ते प्रथम तो नेत्रथी देखीने, रजोहरणथी पुंजीने, पठी लहे तेमज राखे; कारण के विंठी, सर्पादि अनेक झेरी जीव, जो ते उपकरण उपर बेठा होय तो ते करडे, अने बीजी विचारा अनाथ जीव बेठा होय तो हाथना स्पर्शथी ते मरी जाय, अने तेथी जीवहत्यानुं पाप लागे, ते वास्ते जे काम करे ते यत्नपूर्वक करे. ए त्रीजी ज्ञावनां. तथा ज्यारे चालवानी जरूर पडे त्यारे पोतानी आंखथी चार हाथ प्रमाण जमीन देखीने चाले, जे नीचुं जोइने चाले ठे, तेने केटला एक गुण तथा लाज्र प्राप्त थाय ठे,प्रथम तो पगने ठोकर लागती नथी, बीजुं, जेने परिग्रहनो त्याग न होय तेने पडीगयेला पैसा तेमज रूपैया आदि मली जाय, त्रीजुं, कोइनी वहु, दीकरी सन्मुख नजर करतो नथी तेथी उत्तम मनुष्य ठे, एम लोकमां प्रसिद्ध थाय, चोथुं जीवनी रक्षा करवाथी धर्मनी प्राप्ति थाय ठे. इत्यादि. ए चोथी ज्ञावना. तथा जे अन्न पाणी साधु लहे ते प्रकाशवाली जग्यामां लहे, अंधकारवाली जग्यामां न लहे; कारण के अंधकारवाली जग्यामां एक तो जीव

नजरे पडता नथी, वली साप, विंछी करडवानो जय रहे छे. तथा गृहस्थनुं कांइ आजूषण प्रमुख गयुं होय तो तेना मनमां शंका उत्पन्न थाय के, कोण जाणे अंधारामां साधुज लइ गया होय? वली अंधारामां सुंदर साधुने देखीने कदाचित् कोइ उत्कट विकारवाली स्त्री उग्र स्पर्श करे, अने ते वखते वीजा देखता होय तो धर्मनी अत्यंत निंदा थाय, वली साधुनुं मन पण अंधारामां स्त्रीने देखीने ज्रष्ट थाय, साधु स्त्रीने पकडे, स्त्री पोकार करे, एटले विशेष धर्मनी हानि थाय; साधुउ उपर अप्रीति थाय, ते कारणथी अंधकारवाली जग्यामां साधु अन्नादि न लहे. ए पांचमी जावना.

हवे वीजा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छियें. हास्यलोजजय क्रोध, प्रत्याख्यानैर्निरंतरम् ॥ आलोच्य जाषणमपि, जावयेत् सूनृतं व्रतं ॥ १ ॥ अर्थः–प्रथम कोइनी हांसी न करे, हांसीनो त्याग करे, कारण के जे पुरुष वीजानी हांसी करशे, ते अवश्य जुठुं वोलशे. परनी हांसी करवी ते महा अनर्थनुं कारण छे. श्रीहेमचंद्रसूरिकृत रामायणमां लख्युं छे के, रावणनी वेन शूर्पनखानी श्रीरामचंद्र तेमज लक्ष्मणजीये हांसी करी तेथी शूर्पनखा क्रोधायमान थइ, पोताना जाइ रावणनी पासे गइ; अने सीतानुं वर्णन कर्युं, पछी रावणें सीतानुं हरण कर्युं, मोटुं युद्ध थयुं, जेनी आज लोको नकल वनावे छे. आ सारी रामायणनुं निमित्त शूर्पनखानी हांसी छे. ते वास्ते परहास्यनो त्याग करे. प्रथम जावना. वीजो, लोजनो त्याग करे, कारण के जे लोजी हशे ते अवश्य पोताना लाजने वास्ते जूठुं वोलशे. ए वीजी जावना. तथा जय न करवो, कारण के जयवंत पुरुष पण जूठुं वोली दीये छे. ए त्रीजी जावना. तथा क्रोध करवानो त्याग करे, कारण के जे पुरुष क्रोधवश थशे ते वीजानां छतां, अछतां दूषणो अवश्य वोलशे, तेथी क्रोधत्यागरूप चोथी जावना. तथा प्रथम मनमां विचार करी पछी वोले, कारण के विचार विना वोलशे ते अवश्य जूठुं वोलशे, ते वास्ते विचारपूर्वक वोलवुं ते पांचमी जावना.

हवे त्रीजा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छियें. आलोच्यावग्रहयाञ्चा,ऽजीक्ष्णावग्रहयाचनं ॥ एतावन्मात्रमेवैत, दित्यवग्रहधारणं ॥ १॥

समानधार्मिकेन्यश्च, तथावग्रहयाचनं ॥ अनुज्ञापि तथा नाम्ना, सनमस्तेयन्नावना ॥ २ ॥ अर्थः—जे मकानमां साधुने रेहेवुं होय, ते मकानना स्वामिनी प्रथम आज्ञा लेवी, मकाननो मालेक आज ठे एम जाणीने आज्ञा लेवी. जो स्वामिनी आज्ञाविना रहे तो स्तेय लागे. तेमज घरनो मालेक कदाचित् रात्रिमां क्रोधवश थइ साधुने बहार काढे तो रात्रिमां क्यां जवुं ? इत्यादि अनेक क्लेश उत्पन्न थाय, ते वास्ते मकानना मालेकनी आज्ञा लइ ते मकानमां रेहेवुं. ए प्रथम न्नावना. उपाश्रयना स्वामिनी वारंवार आज्ञा लेवी, कारण के कोइ साधु कदाचित् रोगी थइ जाय, त्यारे जंगल पुरीषमूत्र करवाने अवश्य जगा जोइयें. गृहस्वामिनी आज्ञाविना जो तेना मकानमां मलमूत्र करे तो चोरी लागे. ते वास्ते गृहस्वामिनी वारंवार आज्ञा लेवी. ए बीजी न्नावना. तथा उपाश्रयनी न्नूमिनी मर्यादा करी लहे के अमुक जग्यासुधी अमने आपनी आज्ञा ठे, जो मर्यादा न करे तो अधिक न्नूमि उपयोगमां लेवाथी चोरी लागे ठे. ते वास्ते प्रथमज मर्यादा करे. ए त्रीजी न्नावना. तथा जे साधु समानधर्मी होय, अने ते कोइ जग्यामां प्रथम उतरेला ठे, पठी बीजा साधु जो ते मकानमां उतरवा चाहे तो प्रथमना साधुनी आज्ञा विना उतरे नहि. जो प्रथमना साधुनी आज्ञा न लहे तो स्वधर्मी अदत्त लागे. ए चोथी न्नावना. तथा साधु जे कांइ अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, शिष्यादि लहे, ते सर्वे गुरुनी आज्ञाथी लहे, जो गुरुनी आज्ञा विना कांइ वस्तु लहे तो गुरु अदत्त लागे. ए पांचमी न्नावना.

हवे चोथा व्रतनी पांच न्नावना लखियें ठियें. स्त्रीपंढपशुमद्वेश्मा, सनकुड्यांतरोज्झनात् ॥ सरागस्त्रीकथात्यागात्, प्राग्रतस्मृतिवर्जनात् ॥ १ ॥ स्त्रीरम्यांगेक्षणस्वांग, संस्कारपरिवर्जनान् ॥ प्रणीतात्यशनत्यागात्, ब्रह्मचर्यं तु न्नावयेत् ॥ २ ॥ अर्थः—जे घरमां, आसनमां के न्नींतने अंतरे देवी अथवा मनुष्यनी स्त्री वसती होय, अथवा देवांगना के मनुष्य स्त्रीनी लेपमय के चित्रामण प्रमुखनी मूर्त्ति होय, तथा जे घरमां नपुंसक वेदवाला रेहेता होय, तथा जे मकानमां पशु, गाय, महिषी, घोडी, बकरी, गाडरी प्रमुख तिर्यंच स्त्री राखवामां आवती होय, तथा जे मकानमां कामसेवन करनारी स्त्रीना शब्द तथा बीजा मोह उत्पन्न करनारा

शब्द तथा तेना आभूषणोना शब्द श्रवण थता होय, ते मकानमां तथा तेनी एक भींतने अंतरे साधु न रहे. ए प्रथम भावना. तथा सराग (प्रेमसहित) स्त्रीनी साथे वार्त्तालाप न करे, अथवा रागवाली स्त्री साथे वार्त्ता न करे, तथा स्त्रीना, देश, जाति, कुल, वेष, भाषा, स्नेह शृंगार प्रमुखनी कथा सर्वथा न करे; कारण के रागवाली स्त्रीनी साथे जे पुरुष स्नेहसहित कामशास्त्र प्रमुखनी वार्त्ता करशे ते अवश्य विकार भावने प्राप्त थशे, ते वास्ते सरागस्त्री साथे कथा न करे. ए बीजी भावना. तथा दीक्षा लीधा पहेलां गृहस्थावासमां स्त्रीनी साथे जे कामक्रीडा, वदनचुंबन, चोरासी कामासनथी विषयसेवन प्रमुख क्रीडा करी होय, तेने फरी मनमां कोइ वखत स्मरण न करे, कारण के पूर्वक्रीडा स्मरण रूप इंधनथी कामाग्नि फरी धुंधवा लागी जाय छे. ए त्रीजी भावना. तथा अविवेकी मनुष्योने देखवा, तेमज वांछवा योग्य स्त्रीनां अंगोपांग, मुख, नयन, स्तन, जंघा, होठ प्रमुख तेने सरागदृष्टिथी जोवां, तथा अपूर्व विस्मय रसना पूरमां मग्न थइ आंख फाडी स्त्री सन्मुख जोवुं, इत्यादि वर्जे; परंतु रागरहित दृष्टिथी जो कदाचित् देखवामां आवी जाय तो दोष नहि. तथा पोताना शरीरने सुधारे, स्नान, विलेपन, धूपथी सुगंधित करे, नख, दांत, केश, समारे अने चक्षुनी कंगी, सूरमाथी विभूषा करे, इत्यादि शरीरसंस्कार न करे. कारण के स्त्रीनां रमणीय अंगोपांग देखवाथी, दिवानी शिखामां जेम पतंगिउं भस्म थाय छे, तेम कामी पुरुष पण कामाग्निमां भस्म थाय छे. आ शरीर सर्व अशुचिनुं मूल छे, तेने शृंगार करवो ते अज्ञानता छे. जेम मलीन वस्तुनी कोथली उपर चंदननुं लेपन करवामां आवे तो शुं ते कोथली सुगंधमय थाय छे? तेवुंज आ शरीर छे. वली आ शरीर अंते स्मशाननी मूठीभर राख थई जाय छे तो शावास्ते तेनी विभूषा करवामां व्यर्थ काल गमाववो जोइयें? ए चोथी भावना. तथा प्रणीत, स्निग्ध, मधुरादि रस, तेनो अधिक आहार करवो, तथा रूक्षभोजन पण संपूर्ण पेट भरी खावुं, आ बंने प्रकारना आहारनो त्याग करे; कारण के जे पुरुष, निरंतर स्निग्ध, मधुर रसनो आहार करशे ते जरुर धातुपुष्ट थशे, पछी वेद उदयथी अवश्य कुशील सेवन करशे. तेमज भिक्षावृत्तिमां रूक्षभोजन पण प्रमाणथी अधिक करवाथी काम उ-

त्पन्न थइ जाय छे, तेमज अधिक खावाथी शरीरने पीडा उत्पन्न थाय छे, वली विषूचिकाप्रमुख रोग थाय छे, ते वास्ते प्रमाणथी अधिक भोजन पण न करे. पूर्व पुरुषोए खावानी मर्यादा आ प्रमाणें लखी छे, यतः ॥ अद्धमसणस्स सव्वं, जणस्स कुज्जा दवस्स दोभागे ॥ वाउपविआरणठा, छब्भाय ऊणगं कुज्जा ॥ १ ॥ भावार्थः– मतिपूर्वक पोताना उदरना छ भाग करवा, तेमांथी त्रणभाग अन्नथी, अने बे भाग पाणीथी पूरवा, अने एक भाग खाली राखवो. जेथी श्वासोश्वास सुखें सुखें प्राप्त थया करे. ए पांचमी भावना.

हवे पांचमा महाव्रतनी पांच भावना लखियें छियें. स्पर्शे रसे च गंधे च, रूपे शब्दे च हारिणि॥ पंचसु इंद्रियार्थेषु गाढं गार्ध्यस्य वर्जनं ॥१॥ एतेष्वेवामनोज्ञेषु, सर्वथा द्वेषवर्जनं ॥ आकिंचन्यव्रतस्यैवं, भावनाः पंच कीर्त्तिताः ॥ २ ॥ अर्थः–स्पर्शादि मनोहर पांचे विषयोमां जे अत्यंत गृद्धिपणुं ते वर्जवुं तेमज स्पर्शादि अमनोज्ञ पांचे विषयोमां द्वेष न करवो. ए पांचमा महाव्रतनी पांच भावना. पूर्वोक्त पांच महाव्रत, तेमज पचीश भावना जेमां होय ते, तथा चरणसित्तरी अने करणसित्तरी संयुक्त जे होय ते जैनमतमां गुरु कहेल छे.

हवे चरणसित्तरीना सित्तेर भेद लखिये छियें. यतः ॥ वयसमण धम्म संजम, वेयावच्चं च बंभ गुत्तीओ॥नाणाइ तियं तवको,हनिग्गहाइंइ चरण मेयं ॥ १ ॥ अर्थः–पांच प्रकारनां व्रत, दश प्रकारना श्रमणधर्म, सत्तर प्रकारना संयम, दश प्रकारनां वैयावृत्त्य, नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यगुप्ति, त्रण प्रकारें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, बार प्रकारना क्रोधादिनिग्रह, ए सर्वमली सित्तेर भेद थया. तेमांथी पांच व्रतनुं स्वरूप भावनासंयुक्त उपर बतावेल छे.

हवे दशप्रकारें श्रमणधर्म लखियें छियें. यतः ॥ खंतिय मद्दवज्जव, मुत्तीतव संजमेय बोधव्वा ॥ सच्चं सोयं आकिं, चणं च बंभं च जइधम्मो ॥१॥ खंति (क्षमा) कदापि सामर्थ्य होय अथवा न होय तोपण बीजानां दुर्वचन सहन करवाना परिणाम–मनोवृत्ति, तेनुं नाम क्षमा छे. अर्थात् सर्वथा क्रोधनो त्याग, ते क्षमा. (२) मार्दव-कोमलपणुं-अहंकाररहितपणुं, एवा जे भाव, अथवा कर्म ते मार्दव; नम्र थइ अभिमाननो त्याग करवो ते.

(३) आर्जव-मनवचन कायाथी सरल तेनो जे भाव अथवा कर्म ते आर्जव मनवचन कायानी कुटिलतानो अभाव. (४) मुत्तीमोचनं-बाह्याभ्यंतरथी तृष्णानो त्याग, लोभनो त्याग ते मुक्ति. (५) तप-रसादि धातु अथवा अष्टप्रकारनां कर्म जेनाथी भस्म थाय ते अशनादि बार प्रकारें तप. (६) संयम-आश्रवनी त्यागवृत्ति (७) सत्यं-मृषावादविरति, जूठनो त्याग (८) शौच-संयमवृत्तिमां कलंकनो अभाव. (ए) आकिंचन- किंचित्मात्र द्रव्यनुं पोतानी पासें नहि होवापणुं(१०) ब्रह्मचर्य- सर्वथा मैथुननो अभाव. आ दश प्रकारना यतिधर्म जाणवा. वली मतांतरथी दशप्रकारें यतिधर्म आ रीतें कहेछे: यतः ॥ खंती मुत्ती अज्जव, मद्दव तहलाघवे तवे चेव ॥ संजम वियोग किंचण, बोधव्वे बंभचेरेय ॥ १ ॥ अर्थनी सुगमताथी विस्तार कर्यो नथी.

हवे सत्तर भेद संयमना लखियें छियें. यतः॥ पंचासवा विरमणं, पंचिंदिय निग्गहो कसाय जर्ड ॥ दंमत्तयस्स विरइ, सत्तरसहा संजमो होइ ॥ १ ॥ अथवा ॥ पुढवि दग अगणिमारुय, वणसइ खिति चउ पणिंदि अजीवा ॥ पहुप्पेह पमद्यण, परिठवण मणो वइ काए ॥२॥ अर्थः- ॥ उत्पन्न करियें कर्म जेनाथी ते आश्रव- तेना पांच प्रकार, पांच महाव्रतमां बताव्या छे ते (१) हिंसा (२) मृषा (३) चोरी (४) मैथुन (५) परिग्रह. आ पांचे आश्रवनो त्याग करे. तथा स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु तेमज श्रोत्र. आ पांचे इंद्रियोना स्पर्शादि पांचे विषयोविषे लंपटपणुं त्यागे. तथा क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चारे कषायने जीते. ए चारेना उदयने निष्फल करे, तेमज नहि उदय पाम्या होय तेने उत्पन्न न करे. तथा जीवनी चारित्रधर्मरूप लक्ष्मी जेनाथी दंमाय एवा खोटा मन वचन कायारूप जे त्रण दंम तेनी विरति करे. ए सत्तर भेद संयमना बताव्या. हवे प्रकारांतरथी संयमना सत्तर भेद बतावियें छियें. (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) पवन, (५) वनस्पति, (६) द्वींद्रियजीव, (७) त्रींद्रियजीव, (८) चतुरिंद्रियजीव, (ए) पंचेंद्रियजीव. पूर्वोक्त नवविध जीवोनी, मन, वचन अने कायाथी, करवी, करावची अने करनारने अनुमोदवारूप हिंसावृत्तिनो त्यांग, ते नव प्रकारना संयम- तेमां संरंभ, समारंभ, आरंभ तेनी समज आ छे. प्राणीना प्राणना विनाश करवानो संकल्प करवो ते

सरंज; जीवना प्राणने परिताप उपजाववो याने पीडा करवी ते समारंज; तथा जीवोना प्राणनो विध्वंस करवो ते आरंज; तथा (१०) अजीवसंयम, जे अजीव वस्तुने राखवाथी संयममां कलंक लागे. जेमके मांस, मदिरा, सुवर्णप्रमुख धातु, मोतीप्रमुख रत्न, अंकुशादि शस्त्र, इत्यादि अजीव वस्तु राखवाथी संयममां कलंक लागे, तेथी तेवी अजीव वस्तु न राखवी; अने अजीवरूप पुस्तक, तथा शरीर उपकरणादि, ते आ दूपमकाल प्रमुख दोषथी, बुद्धि, आयु, श्रद्धा, संवेग, उद्यम, बल इत्यादि सर्व हीन थइ गयेल छे. विद्यास्मरण रेहेती नथी. ते कारणथी आ कालमां पुस्तक राखवां, ते प्रतिलेखणा, प्रमार्जनपूर्वक यत्नथी राखवां. तथा (११) प्रेक्षासंयम—नेत्रथी देखी, बीज, हरिप्रमुख जीवरहित स्थानमां सुवुं, बेसवुं, चालवुं इत्यादि करवुं ते. तथा (१२) उपेक्षासंयम— गृहस्थने पापनो व्यापार करतां उपदेश करवो के आ काम तमे आवी रीतें करो ते; अथवा कोइ साधु संयमथी चलायमान थया होय तेने हितपूर्वक उपदेश करवो ते, तथा पार्श्वस्थादि साधु जेउ समाचारीथी ज्रष्ट थया होय, तेमज तेउ कोइ अनुचित काम करी रह्या होय, तेउने उपदेश करीश तो तेउ मानवाना नथी, एम कोइ साधु मनमां जाणी उदासीन रहे ते— तथा (१३) प्रमार्जन संयम— अवलोकन करेला स्थानमां वस्त्र, पात्रादि जो लेवां अथवा राखवां पडे तो प्रथम रजोहरणादिथी प्रमार्जन करीने पछी लेवां, राखवां के सुवुं, बेसवुं करे ते. तथा (१४) परिष्ठापना संयम— जात,पाणी, वस्त्र, पात्रादि जेमां जीव पडी गया होय तेने जीवरहित शुद्ध ज्रूमिकामां शास्त्रोक्तविधिथी जे परठववां ते. तथा (१५) मनःसंयम—मनमां द्रोह, ईर्ष्या, अजिमान न करवां, अने धर्मध्यानादिमां मन प्रवृत्त करवुं ते. तथा (१६) वचनसंयम-हिंसाकारी कठोरवचन न बोलवां, अने शुज्रवचननुं उच्चारण करवुं ते. तथा (१७) कायासंयम-गमनागमन करवामां, तथा अवश्य करवा योग्य कामोमां उपयोगपूर्वक कायाने प्रवर्त्तावती ते. आ सत्तर ज्नेद संयमना जाणवा.

हवे वैय्यावृत्तना दश ज्नेद कहियें छियें. आयरिय उवज्झाय, तवस्सि सेहे गिलाण साहुसु ॥ समणोन्न संघ कुलगण, वेयावच्चं हवइ दसहा ॥ १ ॥ अर्थः–(१) ज्ञानादि पांच आचारने पाले ते आचार्य, तथा सेवियें

जे ते आचार्य. तथा (२) जेनी पासे आवीने अध्ययन करीयें ते उपाध्याय. तथा (३) तप जे करे ते तपस्वी. तथा (४) जेणें नवुं साधुपणुं अंगीकार कर्युं होय ते शिष्य. तथा (५) ज्वरादि रोगवाला जे साधु ते ग्लान. तथा (६) धर्मथी डगनारने स्थिर करे ते स्थविर. तथा (७) जे साधुनी पोताना सरखी समाचारी होय ते समनोज्ञ. तथा (८) साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ए चारेनो जे समुदाय ते संघ. तथा (९) बहु एक सरखा गछोना, सजातिउना जे समूह ते कुल, चंद्रादि. तथा (१०) एक आचार्यनी वाचना वाला साधुउना समूह ते गण, गछ, कोटिकादि. पूर्वोक्त आचार्यादि दशेने अन्न, पाणी, वस्त्र, पात्र, मकान, (१) पीठ, (२) फलकें, (३) संस्तारक प्रमुख धर्म साधनोथी जे साहाय्य करवुं, शुश्रूषा करवी, तथा जंगलमां रोग उत्पन्न थवाथी औषध करवां, तथा नाना प्रकारना उपसर्गोथी पालना करवी तेनुं नाम वैय्यावृत्त छे.

हवे जे शीलवान् साधु नव वाडसहित शील पाले तेने नवविध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति कहे छे. ते लखियें छियें. यतः ॥ वसहि कह निसिंदिय, कुड्डंतर पुव्वकीलिय पणीए ॥ अइमायाहार विभू, सणाइ नव बंभ गुत्तीउ ॥ १ ॥ अर्थः– १ (वसहि) वस्ति- जे ब्रह्मचारी साधु होय ते स्त्री, पशु, पंडकसंयुक्त जे वस्ति होय त्यां न रहे. तेमां प्रथम स्त्री, बे प्रकारनी छे, एक देवी, बीजी “ मानुषी” मनुष्यणी; ते बंनेना बे बे भेद छे, एक असल, बीजी तेनी मूर्त्ति के चित्रामनी मूर्त्ति. आ बंने प्रकारनी स्त्री न होय ते वस्तीमां रहे. तथा पशु जे तिर्यंचणी, गाय, कुतरी, पाडी, घोडी, बकरी, घेटी प्रमुख जे वस्तिमां नहि रहेती होय त्यां रहे. तथा पंडक. नपुंसक, त्रीजा वेदवाला, अत्यंत मोहमय काम करनारा, स्त्री अने पुरुष बंनेनी साथे विषय सेवनारा, जे वस्तिमां रेहेता होय त्यां ब्रह्मचारी न रहे. कारण के आ त्रणे संयुक्त वस्तिमां रेहेतां थकां तेउनी काम विकारनी चेष्टा देखवाथी, ब्रह्मचारीना मनमां विकार उत्पन्न थवाथी ब्रह्मचर्यने बाधा थाय छे. जेम उंदर तेमज बिलाडी एक जगामां रहे तो उंदरने सुख नहि, तेमज आ त्रणे संयुक्त वस्तिमां रेहेवाथी शीलवान्ने शियलमां उपद्रव थाय. आ प्रथम ब्रह्मचर्यगुप्ति.

१ पाटला, २ पाटियुं. ३ संथाराआदि.

(कह) कथा. केवल स्त्रियोनेज, तथा एकली स्त्रीने धर्मदेशना वचनना प्रवंधरूप कथा न कहे, तथा स्त्रीनी कथा न करे ॥ यथा ॥ कर्णाटी सुरतोपचारचतुरा, लाटी विदग्धा प्रिया ॥ इत्यादि कथा न करे. कारण के आ कथा राग उत्पन्न करवानो हेतु छे. तथा स्त्रीना, देश, जाति, कुल, वेष, जाषा, गति, विभ्रम, इंगित¹, हास्य, लीला, कटाक्ष, स्नेह, रति, कलह, शृंगार इत्यादि जे विषय रसनी पोषण करनारी कामिनीनी कथा ते कदी न करे, जो करे तो अवश्य मुनिनुं मन पण विकार पामे. आ बीजी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति.

३ (निसिज्ज) आसन– स्त्रियोनी साथे एक आसनपर न वेसवुं, तथा जे जगा अथवा आसनथी स्त्री उठी होय ते आसन अथवा स्थानमां बे घडी सुधी साधु न बेसे, कारण के ते जग्यामां तत्काल वेसवाथी स्त्रीनी स्मृति थाय छे, तेमज स्त्रीना वेसवाथी शय्या अथवा आसन, मेलथी मलिन थवाथी स्त्रीना स्पर्शवाला आसनादिना स्पर्शथी विकार उत्पन्न थाय छे. आ त्रीजी ब्रह्मचर्यगुप्ति.

४ (इंदिय) इंद्रिय, अविवेकी लोकोने देखवा योग्य स्त्रियोनां अंगोपांग जे नाक, स्तन, जंघा प्रमुख तेउने ब्रह्मचारी साधु अपूर्व रसमां मग्न थइने, नेत्र फाडीने देखे नहि. कदाचित् दृष्टि पडी जाय तो पठी एवी चिंतवना पण न करे के वाह शुं विशाल सुंदर लोचन छे ! वाह शुं नासिका सीधी छे ! तथा इछवा योग्य बंने स्तन छे ! जो स्त्रीनां पूर्वोक्त अंगोपांगनुं एकाग्र रसमां मग्न थइ चिंतवन करे तो अवश्य मोहाधीन थइ मन विकार प्राप्त थाय. आ चोथी ब्रह्मचर्यगुप्ति.

५ (कुड्डंतर) कुड्यांतर. जे जींत, तट्टी के कनातने अंतरे स्त्री पुरुष मैथुन सेवन करतां होय, तेमज तेउना शब्द संजलाता होय, त्यां ब्रह्मचारी साधु न रहे. आ पांचमी गुप्ति.

(पुव्वकीलिय) पूर्वक्रीडा. पूर्वे गृहस्थ अवस्थामां स्त्रीनी साथे जे विषय, जोग, क्रीडा, करी, होय, तेनुं स्मरण न करे. जो करे तो कामाग्नि प्रज्वलित थाय. आ छठी गुप्ति.

(पणीय) प्रणीत. अति चिकाशवाला, मीठा दूध, दहीं, प्रमुख अति

१ आंतर अने बाह्य–मानस तथा शारीर, हाव भावादि चेष्टित.

धातुपुष्ट करनार आहार निरंतर न करे. जो करे तो वीर्यनी वृद्धि थवाथी अवश्य वेदोदय थाय, पठी जरूर विषयसेवन करे, कारण के जीर्ण कोथलीमां विशेष रूपैया जरियें तो जरुर फाटी जाय. आ सातमी गुप्ति.

(अइमायाहार) अतिमात्राहार. ते रूद्, लुखी जिह्वा पण प्रमाणथी अधिक न खाय, कारण के अधिक खावाथी पण विकार थइ जाय ठे, तेमज शरीरने विषूचिकादि पीडा थवानुं कारण ठे. आ आठमी गुप्ति.

(विज्ञूसणाइ) विज्ञूषणादि, शरीरनी विज्ञूषा, ते स्नान, विलेपन, धूप, नख, दांत, केश, जेमनी सुंदरता वास्ते करवा, समारवा, तथा विज्ञूषा वास्ते तिलक करवुं, सुरमो, काजल आखमां सारवा, तथा सुकोमल करवा सारु हाथ, पग, साबु तेल प्रमुखथी मसली गरमपाणीथी धोवां, इत्यादि शरीरनी विज्ञूषा न करे. आ नवमी ब्रह्मचर्यगुप्ति. आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा माटे नव वाड ठे.

हवे ज्ञानादि त्रण कहियें ठियें. यथार्थ वस्तुनो जे यथार्थ बोध करे ते ज्ञान. ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय तथा क्षयोपशम थवाथी उत्पन्न थयो जे बोध, तेनां हेतु जे द्वादशांग, तेमज द्वादश उपांग, तथा प्रकीर्णक जे उत्तराध्ययनादि ते सर्व ज्ञान कहियें. तथा बीजुं दर्शन—१ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, एमोक्ष, आ जीवादि नवतत्त्वनुं जे स्वरूप तेमां श्रद्धा (रुचि) करवी. जेम के ए नवतत्त्व सत्य ठे, मिथ्या नथी. एवी तत्त्वरुचि तेनुं नाम दर्शन. तथा त्रीजुं सर्वपापना व्यापारोथी ज्ञान, श्रद्धानपूर्वक निवृत्त थवुं तेनुं नाम चारित्र ठे. तेमां देशविरति चारित्र तो ज्यां गृहस्थाश्रम धर्मनुं स्वरूप लखशुं त्यांथी जाणवुं; अने जे सर्वविरति चारित्र ठे तेनुं स्वरूप तो आ गुरुतत्त्व वर्णनमां लख्या करियें ठियें.

हवे बार प्रकारना तपनुं स्वरूप लखियें ठियें. यतः ॥ अणसण मूणोयरिया, वित्तीसंखेवण रसच्चाउ ॥ काय कलेसो संली, एयाय वद्यो तवो होई ॥ १ ॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सद्याउ ॥ जमणं उस्सग्गो विय, अप्तिंतरउ तवो होइ ॥ २ ॥ अर्थः—१ अनशन व्रत करवां २ ऊणोदरी—थोडुं खावुं ३ वृत्तिसंक्षेप—अनेक प्रकारना अभिग्रह करवा ४ रसत्याग—दूध, दहीं, घी, तेल, गोल, मीठां पक्वान्न तेउनो त्याग करवो.

५ कायक्लेश–वीरासन, दंमासन, प्रमुख अनेकतरेथी कायाने कष्ट आपवुं. ६ संलीनता–पांचे इंड्रियोने पोत पोताना विपयोथी रोकवी. आ ठ प्रकारें वाह्यतप. १ प्रायश्चित्त–जे कांइ अयोग्य काम कर्युं होय ते गुरुनी पासे जे प्रमाणे कर्युं होय ते प्रमाणे प्रगटपणे केहेवुं; पढी ते पापनी निवृत्तिवास्ते गुरुपासे यथायोग्य दंम लेवो, अने नविष्यमां फरी ते पाप न करवुं तेनुं नाम प्रायश्चित्त तप ठे, २ विनय–पोतानाथी गुणाधिकनुं बहुमान करवुं ते. ३ वैयावृत्त पोतानाथी गुणाधिकनी नक्ति करवी ते. ४ स्वाध्याय (१) पोते नणवुं वीजार्जने नणाववुं. (२) संशय उत्पन्न थयां थकां गुरुने पुठवुं. (३) पोते अध्ययन करेलुं वारंवार स्मरणमां लाववुं (४) जे कांइ अध्ययन कर्युं होय तेना तात्पर्यनुं एकाग्र चित्तथी चिंतवन करवुं.(५)धर्मकथा करवी ते संक्षेपमां–वांचना,पृछना,परावर्त्तना,अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, ए पांच रूपें ठे. ५ ध्यान. १ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान. आ चारमां आर्त्त अने रौद्रध्यान तजवां अने धर्म अने शुक्लध्यान अंगीकार करवां. ६ व्युत्सर्ग्ग सर्व उपाधिर्जनो त्याग करवो ते. आ ठ प्रकारें आभ्यंतर तप. सर्व मली वार प्रकारनां तप ठे.

क्रोध, मान, माया, अने लोन. आ चारेनो निग्रह करवो. ए प्रमाणे पांच महाव्रत,दश श्रमणधर्म, सत्तर नेदें संयम, दशप्रकारें वैय्यावृत्त,नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, त्रण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वार प्रकारें तप, क्रोधादि चार निग्रह, सर्वमली सित्तेर नेद चारित्रना ठे. ते वास्ते तेने चरणसित्तरी कहेठे.

हवे करणसित्तरीना नेद लखियें ठियें. यतः ॥ पिंमविसोही समिई, नावण पडिमाय इंडियनिरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीर्ज, अनिग्गह चेव करणं तु ॥ १ ॥ अर्थः पिंमविशुद्धि १ आहार, २ उपाश्रय, ३ वस्त्र, ४ पात्र. आ चार, वस्तुर्जने साधु वेंतालीश दूपणरहित लहे. तेनुं नाम पिंडविशुद्धि ठे. वेंतालीश दोपनुं संपूर्ण स्वरूप जोवुं होय तो पिंडनिर्युक्तिनामा ग्रंथ नद्रबाहुस्वामिकृत ठे तेनी मलयगिरिसूरिकृत टीका सात हजार श्लोक प्रमाण ठे ते, तथा पिंमविशुद्धि ग्रंथ जिनवल्लन सूरिकृत ठे तेनी जिनपति सूरिकृत टीका ठे ते तथा प्रवचनसारोद्धार श्रीनेमिचंद्र सूरिकृतसूत्र तथा तेनी सिद्धसेनसूरिकृत टीका ठे ते तथा श्रीहेमचंद्रसूरिकृत योगशास्त्र अवलोकन करवां.

हवे पांच समितिनुं स्वरूप लखिये छियें. प्रथम इर्यासमिति. चालवानुं नाम इर्या केहेवाय छे, अने सम्यक् आगमने अनुसार जे प्रवृत्ति, चेष्टा करवी ते समिति कहियें. त्रस स्थावरजीवोने अन्नयदान आपनार जे मुनि, ते, प्रयोजन निमित्तें चालवुं पडे त्यारे केवीरीतें चाले ? प्रथम तो प्रसिद्ध रस्ते चाले, जे रस्तो सूर्यना किरणोथी तपेलो होय प्रांशुक-जीवरहित होय, तथा स्त्री, पुरुषना संघट्टरहित होय, ते रस्ते जीवोनी रक्षानिमित्तें अथवा पोताना शरीरनी रक्षानिमित्तें पगना अंगुठाथी चार हाथ प्रमाण जूमिका आगल देखीने चाले. तेनुं नाम इर्यासमिति छे. ते प्रमाणे साधु जो चाले, तेमज बीजुं काम करे, ते काममां कदाचित् कोइ जीव मरी पण जाय तो पण साधुने पाप लागतुं नथी, कारण के तेनो उपयोग बहुज शुन्न छे. तथा २ नाषासमिति. पापसहित नाषा, तथा कठोरनाषा जेम के तुं धूर्त्त छे, कामी छे, राक्स छे, एवा चार्वाकप्रमुख बोले तेवा शब्दो तथा निंदनीय शब्दो न बोले. परंतु बीजाने सुखदायक, बोलवामां अल्प, बहु प्रयोजनने साधनार, अने संदेहविनानां एवां वचन बोले ते नाषासमिति. तथा ३ बेंतालीश दूषणरहित आहारादि ग्रहण करे ते एषणासमिति. तथा ४ आसन, संस्तारक, पीठ, फलक, वस्त्र, पात्र, दंमादि आंखथी देखीने उपयोगपूर्वक लेवां, राखवां, करवां ते आदाननिक्षेप समिति. तथा ५ पुरीष, प्रस्रवण, थूंक, श्लेष्म, शरीर मल, वस्त्र, अन्न, पाणी जे शरीरने उपयोगनां न होय ते सर्वने जीवरहित जूमिकामां स्थापन करे ते; पांचमी परिस्थापना समिति. आ पांच समिति कही.

हवे बार नावना लखियें छियें. प्रथम अनित्य नावना,बीजी अशरण नावना, त्रीजी संसार नावना, चोथी एकत्वनावना, पांचमी अन्यत्वनावना, छठी अशुचिनावना, सातमी आश्रवनावना, आठमी संवरनावना, नवमी निर्जरानावना, दशमी लोकस्वनावनावना, अग्यारमी बोधिदुर्लन्न नावना, बारमी धर्मना कथन करनारा अरिहंत छे. आ बार नावना रात्रियें तथा दिवसें जेवी रीतें नावबा योग्य छे तेवी रीतें अन्यास करवो. आ बार नावनानुं कांइक स्वरूप लखियें छियें.

१ अनित्य नावना- जेनुं शरीर वज्रसमान, सुंदर तेमज कठण हतुं,

ते पण अनित्यरूप राक्षसना जक्ष थया, तो पछी केलना गर्न समान निःसार जे जीवोनां शरीर छे ते आ अनित्यरूप राक्षसथी केवी रीतें वचशे ? वली लोको बिलाडीनी पेठे आनंदित थइने दूधनी पेठे विषय सुखनो स्वाद लहेछे, परंतु लाकडीना मारने देखता नथी; जावार्थ ए छे के, विषयजोगमां मग्न थइ आनंद तो माने छे, परंतु जन्मांतरमां नरकपतनरूप संकटथी मरता नथी. वली जीवोनां शरीर पाणीना परपोटा समान, छे, तथा जीवित ध्वजासमान चंचल छे, लावण्य, स्त्री, परिवार, आंखनी पांपण जेम चंचल छे, युवावस्था हाथीना काननी पेठे चंचल छे, स्वामिपणुं स्वप्ननी श्रेणी समान छे, लक्ष्मी वीजली जेम चपल छे, एवी रीतें सर्व पदार्थोनुं अनित्यपणुं विचारतां, प्यारा स्त्री पुत्रादि मरी जाय तो पण पोताना मनमां शोक न करे; अने जे मूर्ख जीव, सर्व जावने नित्य मानेछे ते जीर्ण पांदडानी कुंपडीनो नाश थवाथी पण रात दिवस रुदन करेछे. ते कारणथी तृष्णानो नाश करी ममत्व रहित थइ शुद्धबुद्धिवाला जीव अनित्यजावना जावे.

२ अशरणजावना- पिता, माता, पुत्र, जार्या प्रमुख विद्यमानछतां, अत्यंत आधि व्याधिना समूहरूप शृंखलामां वंधायेला रुदन करता जीवोने कर्मरूप योद्धा, यमराज (काल) ना मुखमां प्रक्षेप करतां थकां (फेंकेछे त्यारे) वहुज दुःख थाय छे. जे लोक शरणरहित अनाथ छे, ते शुं करशे ? तथा नाना प्रकारना शास्त्रविषयोने जाणनारा, तथा अनेक प्रकारना मंत्र, यंत्रोनी क्रिया जाणनारा, तथा ज्योतिष विद्याना जाणनारा, तथा अनेक प्रकारनी औषधि, रसायन प्रमुख वैद्यक शास्त्रनी तमाम क्रियामां कुशल, एवा विद्वानोनी कुशलता तथा क्रिया, कालनी सामे कांइपण करवामां समर्थ थइ नहि. तथा नाना प्रकारना शस्त्रोवाला शूरवीर योद्धाउनी सेनाथी परिवेष्टित, (चो तरफ वीटायेला) तथा नानाप्रकारना मदझर हाथीउनी जेने वाड छे, एवा इंद्र, वासुदेव, चक्रवर्त्तिसमान वलवान् पण कालना घरमां खेंचाता चाल्या जाय छे. अत्यंत दिलगीरी के प्राणियोने कोइनुं शरण नथी. तथा पृथ्वीनुं छत्र अने मेरुनो दंड करवाने समर्थ, तेमज जेने अल्पपण क्लेश न

१ सांकल वा वेडी.

होतो एवा अनंत बलवान् तीर्थंकरपण लोकोने कालथी बचाववाने समर्थ नथी तो पछी बीजो कोण समर्थ छे ? स्त्री, पुत्र मित्रादिना स्नेहरूप नूतने दूर करवा वास्ते शुद्धमति जीव अशरण नावना नावे.

३ संसारनावना कहियेंछियें. बुद्धिमान् तेमज बुद्धिहीन, सुखी तेमज ङुःखी, रूपवान् तेमज कुरूपवान्, स्वामी तेमज सेवक, वैरी, राजा तेमज प्रजा इत्यादि देवतामनुष्य, तिर्यंच, नारकिना अनेक प्रकारना कर्मवशथी वेप धारण करीने आ संसाररूप अखाडामां आ जीव नाटक करेछे. तथा महारंन, मांसनक्षण, मदिरापानादि कारणोथी अनेक प्रकारनां पापनो बंध करीने, महाअंधकारवाली नरकनूमिकामां जइ पडे छे, त्यां अंगछेदन, अग्निप्रज्वलनादि क्लेशरूप महाङुःख जे जीवने थाय छे ते ङुःखोनुं स्वरूप केवली पण कथन करी शकता नथी. आ नरकगति कही.तथा कपट,जुठुं बोलवुं इत्यादि कारणोथी प्राणी तिर्यंचगतिमां सिंह, वाघ, हाथी, मृग, बेल, बकरी प्रमुखनां शरीर धारण करेछे. तथा ते गतिमां क्षुधा, तृषा, वध, बंधन, ताडन, तर्जन, रोग, हलवहन इत्यादि जे ङुःख सदा ते जीवोने सहन करवां पडेछे ते केहेवाने कोण समर्थ छे ? आ तिर्यंच गति कही.

तथा खाद्य[1], अखाद्य[2], विवेकशून्यता, मनमां लज्जानो अनाव, मा, बेन, दीकरी गमन करवामां एक समानता,निःशंकता[3] वल्लन छे ज्यां, एवा अनार्य मनुष्यमां, निरंतर जीवघात, मांसनक्षण, चोरी, परस्त्रीगमनादि अत्यंत कनिष्ठ पापकर्म महाङुःख उत्पन्न करनार ज्यां थया करे छे,तथा आर्यदेशमां पण क्षत्रिय, ब्राह्मणादि, अज्ञान, दरिद्रता, कष्ट, दौर्नाग्य पणुं रोगादिथी पीडित छे, तथा पराधीनता, माननंग, सेवकनावप्रमुख ङुःख, निरंतर नोगववां पडेछे ज्यां, तथा अग्निमां अत्यंत तपावेली सुइउं, जेम एक एक रोममां एक एक सूइ कोइ जुवान पुरुषने परोववामां आवे तेम ते सघली, समकालें चारे बाजुए परोववामां आवे तेथी जे ङुःख उत्पन्न थाय तेनाथी आठ गणुं ङुःख स्त्रीना गर्नमां ज्यारे उत्पन्न थाय छे त्यारे नोगवे छे, ते ङुःखथी अनंतगणुं ङुःख जन्मसमयें नोगवे छे, तथा बाल अवस्थामां मल, मूत्र, धूलमां आलोटवुं. तथा मूर्खता

१ भक्ष्य. २ अभक्ष्य. ३ निर्भयपणुं.

प्रमुख तथा युवावस्थामां धन उपार्जन करवानुं दुःख, इष्ट वस्तुनो वियोग, अनिष्ट वस्तुनो संयोग इत्यादि, तथा वृद्धावस्थामां शरीरनुं कंपवुं, नेत्रनुं बलहीनपणुं, तथा श्वास, खांसी प्रमुख अनेक व्याधिथी महादुःखोनुं उत्पन्न थवुं इत्यादि ज्यां निरंतर छे त्यां एवी कइ दशा छे के प्राणी सुख प्राप्त करे ? आ मनुष्यगति कही- तथा सम्यक् दर्शनादि पालवाथी जे जीव देवता थाय छे ते पण शोक, विषाद, मत्सर, भय, अल्प ऋद्धिथी इर्ष्या, काम, मद, क्षुधा प्रमुखथी पीडित थवाथी पोतानुं आयुष्य दीन मनवालां थइने पूर्ण करे छे. आ देवगति कही. आ प्रमाणे मोक्षाभिलाषी जीव संसारभावना भावे.

४ एकत्वभावना कहियें छियें. जीव एकलोज उत्पन्न थाय छे, अने एकलोज मरण पामे छे; एकलोज कर्म करे छे, अने एकलोज तेनुं फल भोगवे छे. वली जीवें अत्यंत कष्ट भोगवी जे धन उपार्जन करेलुं छे ते धन तो स्त्री, मित्र,पुत्र,बंधु प्रमुख खाइ जशे, अने जे पाप कर्म ते धन उपार्जन करवामां बांध्यां छे तेनुं फल तो तेने एकलानेज नरक, तिर्यंच गतिमां जइने भोगववुं पडेछे आ केवुं आश्चर्य छे ? तथा आ जीव, आ देहने वास्ते, रात दिन अटन करे छे, दीनपणुं धारण करे छे, धर्मथी भ्रष्ट थाय छे, पोताना हितमां ठगाय छे, न्यायथी दूर रहेछे इत्यादि अनेक कृत्य करे छे, परंतु आ देह, आत्मानी साथे परभवमां एक पगला जेटली जगा सूधी पण ते साथे आवशे नहि. हवे विचार करो के आ देह शुं करशे ? शुं मदद आपशे ? वली सगां वाहालां सर्व पोत पोताना स्वार्थमां तत्पर छे, वास्तवमां कोइ तारुं नथी, ते वास्ते हे बुद्धिमन् ! तुं पोताना हितने माटे धर्म करवामां प्रयत्न करय, आ प्रमाणे एकत्व भावना भावे.

५ अन्यत्वभावना कहियें छियें. आ संसारमां तुं कोइनो नथी अने कोइ तारुं नथी. माता, पिता, स्त्री, पुत्र, भाइ प्रमुख सगां तथा संबंधियो. ज्यां सुधी ताराथी तेउनी कार्यसिद्धि थाय छे त्यां सुधी तुं तेउना प्राण समान वाहालो छे तेम तेउ मानशे परंतु स्वार्थसिद्धिमां भंग थये जाणे एक बीजाने लेशमात्र संबंध नथी एम भासन थतां वेर भाव पण उत्पन्न थशे. वली आ देहने छोडी जीव परलोकमां जाय छे तेथी आ शरीरथी जीव भिन्न छे तेम छतां अनेक प्रकारनां खान, पान, भोग.

उपभोग, सुगंध, लेपनप्रमुखथी शरीरनी पुष्टि करवी ते पण व्यर्थ छे. कदाचित् आ शरीरने कोइ लाकडी प्रमुखथी मार मारे तो पण समता राखी सहन करवुं जोइये. जे पुरुष अन्यत्वभावना भावे तेने शरीर, धन, पुत्रादिना वियोगथी दुःख शोक थतो नथी. आ पांचमी अन्यत्व भावना कही.

६ अशुचि भावना कहियें छियें. जेम लूणनी खाणमां जे पदार्थ पडे छे ते लूण थइ जायछे, तेम आ कायामां जे आहारप्रमुख पडे छे ते मलरूप थइ जाय छे, एथी आ काया अपवित्र छे, तथा रुधिर अने शुक्र (वीर्य) एनेना मेलापथी आ काया (गर्भ) उत्पन्न थाय छे, जरा (उदर) विंटाएली होय छे, माता जे आहारप्रमुख ग्रहण करेछे तेना रसथीज आ गर्भ वृद्धि पामे छे, एवा आ देहने कोण बुद्धिमान् पवित्र मानेछे? तथा मिष्ट स्वाद, अने सुगंधमय मोदक, दूध, दहिं प्रमुख पक्वरस, इक्षुरस, कमोद प्रमुख धान्य, घेवर प्रमुख मिष्टान्न, तथा आम्र प्रमुख फल जे खावामां आवे छे ते तत्काल मलरूप थइ जाय छे, एथी आ अशुचि कायाने, महामोहांध पुरुष पवित्र मानेछे, तथा पाणीना सो घडाथी स्नान करीने तथा सुगंधमय पुष्प, कस्तूरि प्रमुख द्रव्यो लगावीने, उपरनी चामडी तो केटलो एक वखत मुख्य जीव शुचि सुगंधमय करे छे, परंतु मध्य भागमां रहेलो विष्टानो कोठो केम पवित्र करी शके तेम छे? तथा अत्यंत आनंदनी वृद्धि करनारां द्रव्योथी मघमघायमान थइ रहेली दिशा, तथा चंदन, कस्तूरि, कर्पूर, अगर, कुंकुम प्रमुख वस्तुओ पण आ शरीरनो तेमनी साथे संबंध थाय छे, त्यारे अल्पकालमां दुर्गंधरूप थइ जाय छे, तो पछी विचारो के आ कायाने कोण बुद्धिमान् पवित्र माने? ए प्रमाणेनी अशुचिरूपता आ शरीरनी विचारीने बुद्धिमान् पुरुष आ शरीरनी ममता न करे. आ छठ्ठी अशुचिभावना कही.

७ आश्रवभावना कहियें छियें. मन, वचन, अने कायाना योगथी शुभाशुभकर्म जे जीव ग्रहण करे छे, तेनुं नाम आश्रव, जिनेश्वर भगवान् कहे छे. सर्व जीवोविषे मैत्री भावना, गुणाधिक जीवोमां प्रमोदभावना, अविनीत शिष्यादिमां मध्यस्थ भावना, अने दुःखी जीवोमां करुणाभा-

वना. आ चारे जावनाउंथी जे जीवोनां अंतःकरण निरंतर वासित होय, ते पुण्यवान् जीवो बेंतालीश प्रकारनां पुण्य उपार्जन करे ठे, अने आर्त्त-ध्यान, रौद्रध्यान, पांच प्रकारनां मिथ्यात्व, सोल प्रकारना कषाय, पांच प्रकारनां विषय, तेउंनाथी जेउंनां अंतःकरण वासित होय ते ब्यासी प्रकारनां पापकर्म उपार्जन करेठे. तथा सर्वज्ञ अर्हत् जगवंत, गुरु, सिद्धांत द्वादशांग, चार प्रकारना संघ इत्यादिना जे गुणानुवाद कीर्त्तन करेठे तेमज हितकारी सत्यवचन बोलेठे ते जीव शुजकर्म उपार्जन करेठे. तथा श्रीसंघ, देव, गुरु, धर्म तथा धर्मि प्रमुखना जे अवर्णवाद बोले, तथा असत्य अने कपोलकल्पित मतनो जे उपदेश करेठे ते जीव अशुजकर्म उपार्जन करे ठे, तथा जे जीव वीतराग देवनी चंदन पुष्पादिथी पूजा करे, तथा साधुनी जक्ति, विश्रामण प्रमुख, करे तथा पापथी काया गोंपवे ते जीव शुजकर्म उपार्जन करे ठे. तथा जे जीव, मांसजक्षण, सुरापान, जीवघात, चोरी, जुगार, परस्त्रीगमनादि करे ते अशुज कर्म उपार्जन करे ठे. ए अनुक्रमथी मन, वचन, कायाथी शुजाशुज आश्रव उपार्जन कराय ठे. आ प्रकारें आश्रवजावना जे जीव जावे ते अनर्थ परंपरानो त्याग करेठे अने महानंदस्वरूप मोक्षने देनारी, दुःख दावानल पर मेघसमान एवी शर्मावलि (नित्यसुखश्रेणी) अंगीकार करेठे. आ प्रमाणे सातमी आश्रवजावना कही.

८ संवरजावना कहियें ठियें. आश्रवनो निरोध ते संवर. ते संवर बे प्रकारथी ठे. एक सर्वसंवर तथा बीजो देशसंवर, तेमां सर्वसंवर तो अयोगी केवलीमां होय ठे, अने देशसंवर एक बे इत्यादि आश्रवनो त्याग करनारमां होय ठे. वली संवरना बीजा बे प्रकार ठे. एक द्रव्यसंवर तथा बीजो जावसंवर. तेमां जे कर्म पुजल आश्रवथी जीव ग्रहण करेठे तेउंने देशथी अथवा सर्वथी आवता रोकवा ते द्रव्यसंवर, अने जवहेतु क्रियानो त्याग करवारूप आत्माना जे शुज अध्यवसाय, ते जावसंवर. जे बुद्धिमान् मिथ्यात्व, अविरति, कषाय प्रमुख आश्रवोनो निरोध करे, अने आर्त, रौद्र ध्यान तजी धर्म, शुक्लध्यान ध्यावे, क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने मृदुताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोजने संतोषथी जीते, इंद्रियोना इष्ट अनिष्ट विषयोने राग द्वेष त्यागवाथी

जीते, ए रीतें जे जीव संवरजावना जावे तेने मोक्षरूप लक्ष्मी अवश्य वशवर्तिनी थाय ठे. आ प्रमाणे संवरजावना कही.

ए हवे निर्जरा जावना कहियें ठियें. संसारनी हेतुजूत जे कर्मनी संतति तेनो अतिशयथी जे नाश करे ते निर्जरा कहेवाय ठे. निर्जरा बे प्रकारनी ठे. सकाम निर्जरा तथा अकाम निर्जरा. तेमांथी सकाम निर्जरा तो उपशांत चित्तवाला साधुने होय ठे, अने बीजा जीवोने अकाम निर्जरा होय ठे. बीजा जीवोने जे अकाम निर्जरा थाय ठे ते कर्मनो पाक स्वयमेव थाय ठे तेथी तथा उपायथी पण कर्मनो नाश थायठे. जेम आम्रफल पोतानी मेलेज वृक्षनी मालीपर विद्यमान ठतां पाकी जाय ठे, अने कोडवादि परालनी अंदर दाखल करवाथी पण पाकी जाय ठे. तेवीज रीतें निर्जरा पण बे प्रकारनी ठे. अमारा कर्मनी निर्जरा थाय एवा आशयवाला जीव जे तप प्रमुख करे ठे तेउने सकाम निर्जरा थाय ठे, अने एकेंद्रियादि जे जीव ठे तेउने विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु शीतोष्ण, वर्षा, दहन, ठेदन, वध, बंधन, प्रमुख कष्ट जोगववाथी जे कर्म निर्जरा थाय ठे. तेनुं नाम अकाम निर्जरा ठे. एं प्रमाणे तपप्रमुख करीने निर्जरानी वृद्धि करे, एम नवमी निर्जरा जावना जावे. इति.

१० हवे लोकस्वजाव जावना कहियें ठियें. आ पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा, तेमज नरक, स्वर्ग, लोकाकाश सर्व मली एकलोक केहेवायठे. जैनमतना सिद्धांतमां ते संपूर्ण लोकनो आकार आ प्रमाणे बतावेलो ठे. जेम कोई पुरुष जामो पेहेरीने पोतानी कमरमां बंने हाथ लगाडी, पग पसारी उनो होय, तेनो जेवो आकार होय तेवो आ लोकनो आकार ठे. षड्द्रव्यथी पूर्ण ठे, उत्पत्ति, स्थिति तेमज लय ए त्रणे स्वरूपसंयुक्त ठे, अनादि अनंतठे, कोइनो रचेल नथी, उर्ध्वलोक, अधोलोक तेमज तिर्छालोक, एवा तेना त्रण स्वरूपमां सर्व जीव पुजल तेनी अंदर प्रवर्त्ते ठे, बहार कांइ नथी, बहार तो फक्त एक आकाश ठे ते आकाश पण अनंत ठे, आ आकाशनुं नाम जैनशास्त्रमां अलोक लखेलठे. अधोलोकमां जुदी जुदी नीचे उपर सात पृथ्वी ठे, तेमां नरकवासी जीव रहेठे, अने कोइ जगाए जवनपति तथा व्यंतरपण रहेठे, तिर्छालोकमां मनुष्य, तिर्यंच तेमज व्यंतर रहेठे, उर्ध्वलोकमां देवता रहेठे, विशेषथी लोकस्वरूप जाणवुं होय तो

वना. आ चारे जावनार्उथी जे जीवोनां अंतःकरण निरंतर वासित होय, ते पुण्यवान् जीवो बेंतालीश प्रकारनां पुण्य उपार्जन करे ठे, अने आर्त्त-ध्यान, रौद्रध्यान, पांच प्रकारनां मिथ्यात्व, सोल प्रकारना कषाय, पांच प्रकारना विषय, तेउनाथी जेउनां अंतःकरण वासित होय ते ब्यासी प्रकारनां पापकर्म उपार्जन करेठे. तथा सर्वज्ञ अर्हत् जगवंत, गुरु, सिद्धांत द्वादशांग, चार प्रकारना संघ इत्यादिना जे गुणानुवाद कीर्त्तन करेठे तेमज हितकारी सत्यवचन बोलेठे ते जीव शुजकर्म उपार्जन करेठे. तथा श्रीसंघ, देव, गुरु, धर्म तथा धर्मि प्रमुखना जे अवर्णवाद बोले, तथा असत्य अने कपोलकल्पित मतनो जे उपदेश करेठे ते जीव अशुजकर्म उपार्जन करे ठे, तथा जे जीव वीतराग देवनी चंदन पुष्पादिथी पूजा करे, तथा साधुनी जक्ति, विश्रामण प्रमुख, करे तथा पापथी काया गोंपवे ते जीव शुजकर्म उपार्जन करे ठे. तथा जे जीव, मांसजक्षण, सुरापान, जीवघात, चोरी, जुगार, परस्त्रीगमनादि करे ते अशुज कर्म उपार्जन करे ठे. ए अनुक्रमथी मन, वचन, कायाथी शुजाशुज आश्रव उपार्जन कराय ठे. आ प्रकारें आश्रवजावना जे जीव जावे ते अनर्थ परंपरानो त्याग करेठे अने महानंदस्वरूप मोक्षने देनारी, दुःख दावानल पर मेघसमान एवी शर्मावलि (नित्यसुखश्रेणी) अंगीकार करेठे. आ प्रमाणे सातमी आश्रवजावना कही.

८ संवरजावना कहियें ठियें. आश्रवनो निरोध ते संवर. ते संवर बे प्रकारथी ठे. एक सर्वसंवर तथा बीजो देशसंवर, तेमां सर्वसंवर तो अयोगी केवलीमां होय ठे, अने देशसंवर एक बे इत्यादि आश्रवनो त्याग करनारमां होय ठे. वली संवरना बीजा बे प्रकार ठे. एक द्रव्यसंवर तथा बीजो जावसंवर. तेमां जे कर्म पुद्गल आश्रवथी जीव ग्रहण करेठे तेउने देशथी अथवा सर्वथी आवता रोकवा ते द्रव्यसंवर, अने जवहेतु क्रियानो त्याग करवारूप आत्माना जे शुज अध्यवसाय, ते जावसंवर. जे बुद्धिमान् मिथ्यात्व, अविरति, कषाय प्रमुख आश्रवोनो निरोध करे, अने आर्त, रौद्र ध्यान तजी धर्म, शुक्लध्यान ध्यावे, क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने मृदुताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोजने संतोषथी जीते, इंद्रियोना इष्ट अनिष्ट विषयोने राग द्वेष त्यागवाथी

जीते, ए रीतें जे जीव संवरज्ञावना ज्ञावे तेने मोक्षरूप लक्ष्मी अवश्य वशवर्तिनी थाय ठे. आ प्रमाणे संवरज्ञावना कही.

ए हवे निर्जरा ज्ञावना कहियें ठियें. संसारनी हेतुज्जूत जे कर्मनी संतति तेनो अतिशयथी जे नाश करे ते निर्जरा कहेवाय ठे. निर्जरा वे प्रकारनी ठे. सकाम निर्जरा तथा अकाम निर्जरा. तेमांथी सकाम निर्जरा तो उपशांत चित्तवाला साधुने होय ठे, अने बीजा जीवोने अकाम निर्जरा होय ठे. बीजा जीवोने जे अकाम निर्जरा थाय ठे ते कर्मनो पाक स्वयमेव थाय ठे तेथी तथा उपायथी पण कर्मनो नाश थायठे. जेम आम्रफल पोतानी मेलेज वृक्षनी कालीपर विद्यमान ठतां पाकी जाय ठे, अने कोड्रवादि परालनी अंदर दाखल करवाथी पण पाकी जाय ठे. तेवीज रीतें निर्जरा पण बे प्रकारनी ठे. अमारा कर्मनी निर्जरा थाय एवा आशयवाला जीव जे तप प्रमुख करे ठे तेउने सकाम निर्जरा थाय ठे, अने एकेंद्रियादि जे जीव ठे तेउने विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु शीतोष्ण, वर्षा, दहन, ठेदन, वध, बंधन, प्रमुख कष्ट ज्ञोगववाथी जे कर्म निर्जरा थाय ठे. तेनुं नाम अकाम निर्जरा ठे. ए प्रमाणे तपप्रमुख करीने निर्जरानी वृद्धि करे, एम नवमी निर्जरा ज्ञावना ज्ञावे. इति.

१० हवे लोकस्वज्ञाव ज्ञावना कहियें ठियें. आ पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा, तेमज नरक, स्वर्ग, लोकाकाश सर्व मली एकलोक केहेवायठे. जैनमतना सिद्धांतमां ते संपूर्ण लोकनो आकार आ प्रमाणे वतावेलो ठे. जेम कोई पुरुष जामो पेहेरीने पोतानी कमरमां बंने हाथ लगाडी, पग पसारी उज्जो होय, तेनो जेवो आकार होय तेवो आ लोकनो आकार ठे. षड्द्रव्यथी पूर्ण ठे, उत्पत्ति, स्थिति तेमज लय ए त्रणे स्वरूपसंयुक्त ठे, अनादि अनंतठे, कोइनो रचेल नथी, उर्ध्वलोक, अधोलोक तेमज तिर्छालोक, एवा तेना त्रण स्वरूपमां सर्व जीव पुद्गल तेनी अंदर प्रवर्त्ते ठे, वहार कांइ नथी, वहार तो फक्त एक आकाश ठे ते आकाश पण अनंत ठे, आ आकाशनुं नाम जैनशास्त्रमां अलोक लखेलठे. अधोलोकमां जुदी जुदी नीचे उपर सात पृथ्वी ठे, तेमां नरकवासी जीव रहेठे, अने कोइ जगाए ज्ञवनपति तथा व्यंतरपण रहेठे, तिर्छालोकमां मनुष्य, तिर्यंच तेमज व्यंतर रहेठे, उर्ध्वलोकमां देवता रहेठे, विशेषथी लोकस्वरूप जाणवुं होय तो

यो,जे धर्म करे ठे ते पण धर्माजास ठे,धर्म नथी; ते कारणथी तेमनां वचन केम प्रमाण थइ शके? तेमज कुतीर्थिउंना जे जे शास्त्रोमां कंइ कंइ स्थलें दया, सत्यता प्रमुखनां कथन ठे ते पण केहेवाज मात्र ठे;परंतु तत्वथी ते पण कांइ नथी, कारण के यथार्थ तेमनुं स्वरूप तेउ जाणता जेम नथी, तेम यथार्थ पालता पण नथी. प्रथम तो ते शास्त्रोना जे उपदेशक ठे ते सर्वे कामाग्निमां प्रज्वलित हता. आ वात सर्वसुज्ञजनोने विदितठे. ते कारणथी अर्हंत जगवंतज सत्यार्थना उपदेशक ठे. वली महामदजर हाथियोनी घटाप्रमुख संपत्तिवालुं राज्य पामवुं, तेमज सर्वजनोने आनंद आपनारी संपदा पामवी,तेमज चंद्रमा समान निर्मल गुणोनो समूह पामवो, तेमज उत्कृष्ट सौजाग्यनो विस्तार पामवो. आ सर्वे धर्मनोज प्रजाव ठे. तथा समुद्र, जलकल्लोलथी पृथ्वीपर पोतानी मर्यादा मुकी फरतो नथी, तेमज मेघ सर्व पृथ्वीने जलथी रेलम ठेलम करतो नथी, तेमज चंद्र, सूर्य जे उदय पामे ठे, तेमज अंधकारनो नाश करेठे ते सर्व प्रजाव जयवंत धर्मनोज ठे. जेने कोइ वंधु नथी, मित्र नथी, नाथ नथी, जे रोगीने वैद्य नथी, जेनी पासे धन नथी, तेमज जेनामां गुण नथी, ते सर्वेना वंधु, मित्र, नाथ, वैद्य, तथा गुणनो निधान धर्म ठे. वली अरिहंतनो कथन करेलो जे धर्म ठे ते महापथ्य ठे. एवी रीतें जे जव्यजीव मनमां विचारे ते धर्ममां बहु दृढ थाय. एकज निर्मल धर्म जाववाने जे जीव निरंतर जावे तेसर्व पाप कर्मनो नाश करीने,अनेक जीवोने उपदेश द्वारा सुखी करीने परम पद (मुक्ति) प्राप्त करे ठे, तो पठी जे बारे जावना जावे तेने परमपद प्राप्त थवामां शुं आश्चर्य ठे? इति बार जावना.

हवे बार प्रतिमानुं स्वरूप कहियें ठियें. एक मासथी लइ सात माससुधी वृद्धि करवी, एम सात प्रतिमा थाय ठे. जेम के प्रथम एक मासनी, बीजी बे मासनी, एम एकेक मासनी वृद्धि करतां सातमी सातमासनी थाय ठे. आठमी सात दिनरातनी, नवमी सात दिनरातनी, दशमी सातदिनरातनी, अग्यारमी एक दिन रातनी अने बारमी प्रतिमा एक रात्रि प्रमाण होय ठे. प्रतिमा– अजिग्रह, प्रतिज्ञा आ एकज नाम ठे.

जे साधुउ आ बारे प्रतिमानो अंगीकार करी शकेठे, तेउंनुं स्वरूप

१ धर्म सरखो भासे पण तत्वविचारें जोतां कल्पित.

लब्धियें छियें. " संहननधृतियुक्तः " जेनुं संहनन वज्र रुषज नाराच होय, ते परीषह सहन करवामां समर्थ होय छे, "धृति" जेने चित्तनुं स्वस्थपणुं होय, ते रति, अरतिथी पीडित थता नथी. "महासत्त्वः" जे महासत्त्ववंत होय, ते अनुकूल, प्रतिकूल उपसर्ग सहन करवामां विषाद धरता नथी. " जावितात्मा " जेनुं अंतःकरण सद्भावनाथी वासित होय, ते प्रतिमा वहन करी शके छे. ते जावना पांच छे. तेनुं विस्तारयुक्त स्वरूप व्यवहारजाष्यनी टीकाथी जाणवुं. ते जावना केवी रीतें जावे ? जेम आगममां छे तेम, तथा गुरु आचार्य आज्ञा आपे तेम. जो गुरु पोते प्रतिमा अंगीकार करे तो, नवीन आचार्य स्थापन करीने तेनी आज्ञाथी, तथा गच्छनी आज्ञा लइने करे. तथा प्रथम पोताना गच्छमांज रहीने प्रतिमा अंगीकार करवानुं प्रतिकर्म करे ते प्रतिकर्म आ छे–

मासादि सात जे प्रतिमा छे तेउनां प्रतिकर्मपण तेटलांज छे. वर्षाकालमां ए प्रतिमा अंगीकार करी शकाती नथी, तेमज प्रतिकर्म पण वर्षाकालमां करवुं नहि. प्रथमनी बे प्रतिमा एक वर्षमां, त्रीजी एकवर्षमां, चोथी एकवर्षमां, बाकी पांचमी, छठी, सातमी आ त्रणे प्रतिमाउनां एकवर्षमां प्रतिकर्म अने एक वर्षमां प्रतिमा, एम नववर्षमां सात प्रतिमा समाप्त कराय छे.

हवे जे आ प्रतिमा अंगीकार करे छे, तेउने केटलुं ज्ञान होय छे? यावत् किंचित् न्यून दश पूर्व होय छे, कारण के जेने संपूर्ण दश पूर्वनी विद्या होय छे तेनुं वचन अमोघ होय छे. ते वास्ते तेउए धर्मोपदेश आपवो जोइये. तेउना उपदेशथी अनेक जव्य जीवो उपर उपकार तेमज तीर्थनी वृद्धि थवाथी प्रतिमादि कल्प करवा जोइये. वली प्रतिमा अंगीकार करनाराउनुं जघन्यज्ञान नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु, जेनुं नाम आचार वस्तु छे, त्यां सुधी छे. तेटलुं ज्ञान सूत्र तथा अर्थ बंनेथी पूर्ण होय छे, कारण के निरतिशयज्ञानी होय तो कालादिक जाणी शके नहि. तथा "व्युत्सृष्ट" शरीरनी सार संजाल त्यागे, देवता प्रमुखना उपसर्ग सहे, जिनकल्पिनी पेठे उपसर्ग सहन करे, तथा एषणा, पिंमग्रहणप्रकार, जिक्षाग्रहणविधि, गच्छथी बाहार रेहेवुं, इत्यादि बाकीनुं वर्णन प्रवचनसारोद्धारनी बृहद्वृत्तिथी जोइ लेवुं आ चार प्रतिमा कही.

हवे इंद्रियनिरोध कहियें ठियें. "स्पर्शनं रसना घ्राणं चक्षुः श्रोत्रं चेति" आ पांच इंद्रिय, तथा स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, शब्द, आ पांच पूर्वोक्त इंद्रियना यथाक्रम विषय ठे. आ पांचे विषयोनो निरोध करवो, कारण के जो ते वशवर्त्ती नहि रहे तो अत्यंत अनर्थकारक तेमज क्लेशसागरमां डुबाडनारा थशे. ॥ यदन्यधायि ॥ आर्या ॥ सक्तः शब्दे हरिणः, स्पर्शे नागोरसे च वारिचरः ॥ कृपणपतंगोरूपे, भुजगो गंधेन च विनष्टः ॥ १ ॥ पंचसु सक्ताः पंच, विनष्टायत्र गृहीतपरमार्थाः ॥ एकः पंचसु सक्तः, प्रयाति जस्मांततां मूढः ॥ २ ॥ तुरगैरिव तरतरले, डुर्दांतैरिंद्रियैः समाकृष्य ॥ उन्मार्गे नीयंते, तमोघने डुःखदे जीवः ॥ ३ ॥ अनुष्टुप् ॥ इंद्रियाणां जये तस्मा, द्यत्नः कार्यः सुबुद्धिजिः ॥ तज्जयोयेन जविनां, परत्रेह च शर्मणे ॥ ४ ॥ प्रतिलेखना जैनसाधुउंमां प्रसिद्ध ठे तेथी विस्तारथी लखेल नथी.

हवे त्रण गुप्ति लखियें ठियें. मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति. आ त्रण गुप्तिनुं स्वरूप आ प्रमाणे ठे. अशुज मन वचन कायानो निरोध करवो अने शुज मन वचन कायानी प्रवृत्ति करवी. तेमां मनोगुप्ति त्रण प्रकारनी ठे. आर्त्त, रौद्रध्यानानुबंधी, कल्पनानो वियोग, ते प्रथम मनोगुप्ति, शास्त्रानुसार, परलोकने साधनारी, धर्मध्यानानुबंधवाली माध्यस्थ परिणति करवी ते बीजी मनोगुप्ति, अने संपूर्ण शुजाशुज मनोवृत्तिनो निरोध, अयोगी गुणस्थान अवस्थामां स्वात्मारामरूपता, ए त्रीजी मनोगुप्ति.

वचनगुप्ति वे प्रकारनी ठे. मुख, नेत्र, जूविकार, आंगली ठोडन, उंचा थवुं, खांसी खावी, हुंकारा करवा, पत्थर फेंकवा, इत्यादि हेतुथी पोतानुं सूचन करावबुं वर्जवुं, ए प्रथम वचनगुप्ति, कारण के जो चेष्टा द्वारा सर्वकांइ सूचवी दइए तो मौन रेहेवुं व्यर्थ ठे. बोलवुं, बीजाना प्रश्ननो लोकथी तेमज आगमथी अविरोध होय तेवो उत्तर देवो, तेमज बोलवुं ते पण मुखपासे वस्त्रादि राखी यत्ना पूर्वक बोलवुं, ते बीजी वचनगुप्ति. आ बंने जेदोथी वचननो निरोध, तेमज सम्यग्जापणरूप वचनगुप्ति जाणवी.

कायगुप्ति वे प्रकारे ठे. एक, चेष्टानो निषेध, बीजी आगमानुसारें चेष्टानो नियम करवो. तेमां देवता तथा मनुष्यादिना उपसर्गमां क्षुधा

तृषादि परीसहोनो संजव थये थके कायोत्सर्ग प्रमुख करीने कायाने निश्चल करवी, तथा अयोगी अवस्थामां सर्वथा कायानी चेष्टानो जे निरोध करवो, ते प्रथम कायगुप्ति. तथा गुरुथी प्रछन्नशरीर संस्तारक, नूम्यादि प्रतिलेखन, प्रमार्जनादि, जेम शास्त्रमां कहेल ठे, तेवी रीतें क्रियाकलापपूर्वक शयनादि साधुयें करवां, शयनासन लेवा, राखवा, आ सर्व कृत्योमां स्वछंद चेष्टानो त्याग करवो, मर्यादासहित कायानी चेष्टा करवी, ते बीजी कायगुप्ति.

हवे अजिग्रह, प्रतिज्ञा लखियें ठियें. ते अजिग्रह द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा जावथी चार प्रकारें ठे. तेनो विस्तार प्रवचनसारोद्धारवृत्तिमां ठे. आहारप्रमुखनां बेंतालीश दूषण, शास्त्रमां बतावेल ठे, तोपण पिंम, शय्या, वस्त्र, पात्र, आ चारज वस्तु सदोष न ग्रहण करवी तेथी ते चार दूषण, तथा पांच समिति, बार जावना, बार प्रतिमा, पांच इंद्रियनिरोध, पचीश प्रतिलेखना, त्रण गुप्ति, चार अजिग्रह ए सर्व मली सित्तेर करणसित्तरीना जेद कहे ठे.

प्रश्नः– चरणसित्तरी तेमज करणसित्तरी आ बंनेमां शुं विशेष ठे?

उत्तरः– जे नित्य करवुं ते चरण, अने प्रयोजन थयां थकां करीलेवुं अने प्रयोजन न होय त्यारे न करवुं ते करण, आ तेउमां जेद ठे. ए प्रमाणे चरणसित्तरी तथा करणसित्तरीना जेद समाप्त थया.

इत्यादि जैनमतना गुरुतत्वनुं स्वरूप लखवामां लाखो श्लोक लखाइ जाय तो पण संपूर्ण तेनुं स्वरूप जाणी शकाय नहि, ते वास्ते संक्षेपमांज स्वरूप बताव्युं ठे. जो विशेष जाणवानी इच्छा होय तो, श्री उंघनिर्युक्ति, श्री आचारांग, दशवैकालिक, बृहत्कल्पजाष्यवृत्ति, पंचकल्प चूर्णी, जितकल्पवृत्ति, महाकल्पसूत्र, कल्पसूत्र, निशीथ जाष्यचूर्णी, महानिशीथसूत्र, इत्यादि पदविजाग समाचारीनां शास्त्र जोइ लेवां.

प्रश्नः– जैनमतना शास्त्रोमां गुरुनुं स्वरूप जेवुं लखेल ठे, तेवी वृत्तिवाला जैनना कोइपण साधु देखवामां आवता नथी, तो पठी जैनमतना साधुउने आ कालमां गुरु केम मानवा जोइयें?

उत्तरः– आपें कोई गीतार्थनो परिचय कर्यो लागतो नथी, तेमज जैन मतना चरणकरणानुयोगना शास्त्रनुं अध्ययन पण कर्युं होय तेम ला-

गतुं नथी, अथवा तो कोइ गीतार्थ गुरुना मुखारविंदथी वचनामृतनुं पान पण कर्युं लागतुं नथी, जो आपें पूर्वोक्त कांइपण कर्युं होत तो आपने ते बावतनो संशय कदापि न उत्पन्न थयो होत. जैनमतमां छ प्रकारना निर्ग्रंथ कहेला छे. आ कालमां जैनमतना जे साधुउं छे ते पूर्वोक्त छ प्रकारमध्येथी बे प्रकारना छे, कारण के श्री जगवतीसूत्रना पचीशमा शतकना छठा उद्देशामां लख्युं छे के पांचमा कालमां बे प्रकारना निर्ग्रंथ होशे, तेउंनाथी तीर्थ प्रवर्त्तशे. कषायकुशील निर्ग्रंथ तो कोईमां परिणाम अपेक्षा होशे, मुख्य तो बेज रहेशे. वली जैनशास्त्रमां जे गुरुनी वृत्ति लखी छे, ते प्रायः उत्सर्गमार्गनी अपेक्षा छे, अने आ कालमां तो प्रायः अपवाद मार्गनी प्रवृत्ति छे, तेथी उत्सर्गवृत्तिवाला मुनि आ कालमां केवी रीतें होय ? कोइपण रीतें होई शकेज नहि, कारण के, नथी तेवुं वज्रऋषभनाराच संहनन,के नथी तेवुं मनोबल; नथी तेवी जीवोनी श्रद्धा, के नथी तेवो देशकाल, के नथी धैर्य, तो हवे आ कालमां तेवी उत्सर्गवृत्ति जीव केम करी शके ?

प्रश्नः– जो तेवी वृत्ति आ कालमां नथी तो तेउंने साधुपण केम केहेवा जोईयें ?

उत्तरः– आ आपनुं कहेवुं बहुज बेसमजनुं छे. कारण के व्यवहार सूत्रजाष्यमां लख्युं छे केः–गाथा पोक्करिणी आयारे, आणयण ते गाय गीयछे ॥ आयरिय उएए, आहरण हुंति नायवा ॥ १ ॥ सछ परिणा छक्काय, अहिगमो पिंड उत्तरिद्याए ॥ रूखे वसहे जूहे, जोहे सोहीय पुक्करिणी ॥ २ ॥ "दारगाहादो" आ बंने द्वारगाथानुं व्याख्यान जाष्यकारें पंदर जाष्यगाथाथी करेल छे. जो जाष्यगाथा जोवानी इछा होयतो व्यवहारजाष्यमां जोइ लेवी. अहियां तो ते पंदर गाथानो अर्थ जाषा (जाषांतर) मां लखियें छियें. पूर्वकालमां जेवी सुगंधमय फूलोवाली पुष्करिणी वावडीयो हती, तेवा फूलोवाली हाल नथी, परंतु पुष्करिणी वावडीयो तो छे,लोको आ सामान्य वावडीयोथी पोतानुं काम करेछे ॥ १ ॥ तथा संपूर्ण आचारप्रकल्प नवमा पूर्वमां हतुं, आ नवमा पूर्वमांथी उद्धार करीने पूज्यपाद वैशाखगणियें निशीथसूत्र रच्युं तो शुं आ निशीथने आचारप्रकल्प, न केहेवुं जोइयें ?॥२॥ पूर्वकालमां तालोद्घा-

टिनी अवस्वापिनी आदि विद्याना धारक चोर हता, अने आ कालमां तेवी विद्या तो नथी तो शुं चोरी करनारने हाल चोर न केहेवा जोइयें? ॥३॥ पूर्वकालमां चौदे पूर्वना पठन करनारने गीतार्थ केहेता हता, तो आ कालमां जघन्य आचारप्रकल्प निशीथ, अने मध्यम आचारप्रकल्प बृहत्कल्पनां अध्ययन करनारने शुं गीतार्थ न केहेवा जोइयें? ॥ ४ ॥ पूर्वकालमां श्रीआचारांगनुं शस्त्रप्रज्ञा अध्ययन जणवाथी, छेदोपस्थापनीय चारित्रमां स्थापन करता हता, तो शुं हाल दशवैकालिकनुं छ जीवनीय अध्ययन जणवाथी स्थापन न करवा जोइयें? ॥ ५ ॥ बीजा ब्रह्मचर्यना पांचमा उद्देशामां जे आमगंधी सूत्र छे ते सूत्रने अनुसारें पूर्वे मुनि आहारग्रहण करता हता, तो शुं हाल पिंडेषणा अध्ययन अनुसारें न ग्रहण करी शके? ॥६॥ पूर्वे आचारांग पठी उत्तराध्ययन जणता हता तो शुं हाल दशवैकालिक पठी न अध्ययन करी शके? ॥ ७ ॥ पूर्वे मत्तांगादि दशप्रकारना वृक्ष हता, तो शुं हाल आंबादि वृक्ष न केहेवा जोइयें? ॥ ८ ॥ पूर्वे बहु गायोना समूहवाला नवगोपने गोवाल केहेता हता, तो शुं हाल थोडी गायोवालाने गोवाल न केहेवा जोइयें? ॥९॥ पूर्वे सहस्रमल्ल योद्धा हता, तो शुं हाल कोइने योद्धो न केहेवो जोइयें? ॥ १० ॥ पूर्वे छमासी तपनुं प्रायश्चित्त हतुं तो तेने बदले हाल नीवी प्रमुखनुं प्रायश्चित्त न देवुं जोइयें? ॥ ११ ॥ एवी रीतें जो पूर्वकालना मुनियोनी वृत्ति हाल नथी तो शुं तेउने आचार्य अथवा साधु न केहेवा जोइयें? परंतु जरुर साधु मानवा जोइयें. तथा जीवानुशासन सूत्रनी वृत्तिमां पण लख्युं छे के पांचमा कालमां साधु पूर्वोक्त प्रकारना होय तो पण तेउने संयमी केहेवा जोइयें. तथा निशीथमां पण लख्युं छे ॥ भाष्यगाथा ॥ जासंजमया जीवे, सुतावंमूले गुणुत्तर गुणाय ॥ इत्तरियछेय संजम, नियंठवउसा पडिसेवी ॥१ ॥ आ गाथानी चूर्णीनो अर्थः— छकायना जीवोविषे ज्यां सुधी दयाना परिणाम हशे, त्यां सुधी बकुश निर्ग्रंथ तेमज प्रतिसेवना निर्ग्रंथ रहेशे, ते कारणथी प्रवचनशून्य तेमज चारित्ररहित, पंचमकाल कदापि नहि होय? वली मूलउत्तर गुणोमां दूषण लागवाथी चारित्र तत्काल नष्ट पण थतुं नथी. मूलगुणभंगमां बे दृष्टांत छे, उत्तरगुणभंगमां मंडपनुं दृष्टांत छे.

निश्चयनयथी, एक व्रतनो भंग थयो तो, सर्वव्रतनो भंग थाय छे, परंतु व्यवहारनयना मतथी तो जे व्रतनो भंग थयो होय, तेनोज भंग गणाय, बीजानो नहि; ते कारणथी बहु अतिचार लागवाथी संयम जतुं नथी; परंतु जो कुशील सेवे, तेमज धन राखे, अने काचुं सचित्त पाणी प्रवचन अनपेक्ष पीये, ते साधु नहि; ज्यां सुधी छेक प्रायश्चित्त लागे त्यां सुधी संयम सर्वथा जतो नथी. वली आ कालमां साधु नथी एम जे माने छे ते मिथ्यादृष्टि छे, कारण के स्थानांग सूत्रमां लख्युं छे के बहु अतिचार लागता देखीने, तेमज आलोचना, प्रायश्चित्त कोइने ग्रंथार्थ लेता देता नहि देखवाथी, कोइ एम कहे छे. हाल कोइ साधु नथी ते चारित्रभेदिनी विकथाना करनार छे. तथा श्रीभगवतीसूत्रना पचीशमा शतकना छठा उद्देशाना संग्रहणीकारश्रीमान् अभय देवसूरि, आ बंने निर्ग्रंथोनुं जे स्वरूप छे ते लखेछे. ॥ गाथा ॥ बउसं सबलं कब्बर; मेगठंतमिह जस्स चारित्तं ॥ अइयारपंकभावा, सोबउसो होइ निग्गंथो ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ बकुश, शबल, कर्बुर, आ त्रणे एकार्थवाची[१] छे, अतिचाररूप पंक लागवाथी एवुं जेनुं चारित्र छे ते बकुशनामा निर्ग्रंथ छे. आ भारतवर्षमां आ कालमां बकुश अने कुशील, ए बे निर्ग्रंथछे; बाकीना त्रणनो विछेद थयेल छे ॥ तथा चोक्तं परममुनिभिः ॥ बकुश कुशीला दोपुण, जातिछं तावहोहंति इति ॥ अर्थः—बकुश, कुशील ए बे प्रकारना निर्ग्रंथ ज्यां सुधी तीर्थ रहेशे त्यां सुधी रहेशे.

बकुश निर्ग्रंथना बे भेद छे, ते कहियें छियें. वस्त्र पात्रादि उपकरणनी जे विभूषा करे ते उपकरणबकुश, तथा हाथ पग नख मुखादि देहना अवयवोनी जे विभूषा करे ते शरीरबकुश. आ बे भेदना वली पांच भेद छे. ॥ गाथा ॥ उवगरण सरीरेसु,सोडुहा डुविहोवि होइ पंचविहो॥ अभोग अणाभोग, असंवुड संवुडे सुहुमे ॥२॥ अर्थः—प्रथमना बे पदोनो अर्थ उपर लखेलो छे पाछलना बे पदोनो अर्थ लखियें छियें. साधुने आ करवा योग्य नथी, एम जाणतां छतां पण जे ते कामने करे ते आभोग बकुश, अने जे अजाणपणाथी करे ते अनाभोगबकुश. मूल तथा उत्तर गुणमां जे गुप्तपणे छाना दोष लगावे ते संवृत बकुश, तथा मूल उ-

१ एक अर्थना कहेनार.

तर गुणोमां जे प्रगट दूषण लगावे ते असंवृत बकुश. नेत्र, नासिका, मुखादिना जे मल दूर करे ते सूक्ष्म वकुश. ए पांच भेद कह्या.

हवे उपकरणबकुशनुं स्वरूप लखियें छियें ॥ गाथा ॥ जो उपगरणे बउसो, सो धुवइअ पाउसे विवङ्कई ॥ ईत्नईय लण्हयाइं, किंचिविभूसाई भुंजईय ॥ १ ॥ व्याख्याः– उपकरणबकुश वर्षाऋतु विना पण जलद्वारथी वस्त्र धोवे छे, वर्षाऋतुमां तो सर्वे गछवासी साधुउने आज्ञा छे; वर्षाऋतु पेहेलां जो एकवार पोतानां सर्व उपकरण जलद्वारथी धोई लहे नहि तो वर्षाऋतुमां मलना संसर्गथी निगोदादि जीवोनी उत्पति थई जाय. वली बकुश निर्ग्रंथ वर्षाऋतु विना अन्यऋतुउमां पण जलद्वारथी वस्त्रादि धोई लहे छे, तेमज सुंदर, सुकुमाल वस्त्रनी पण वांछा राखेछे, तेमज उपकरण विभूषा अर्थात् शोभाने वास्ते पण कांइक पेहेरेछे. ॥ गाथा ॥ तहपत्त दंडयाइ, घठंमठं सिणेह कय तेय ॥ धारेइ विभूसाए, बहुंच बच्चेई उवगरणं ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ पात्र, दंडप्रमुख बहुज घसीने सुकमाल करे, तथा घी, तेल प्रमुख चोपडीने तेजवंत चमकदार करी राखे, तेमज विभूषामाटे बहुज उपकरण राखवाने चाहे अर्थात् राखे.

हवे शरीर बकुशनुं स्वरूप लखियें छियें ॥ गाथा ॥ देह बउसो अकज्जे, करचरण नहाइयं विभूसेइ ॥ डुविहोवि इमोइढ्ढि, इछइ परिवार पभिईय ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ शरीरबकुश कारण विना पण हाथ, पग, नखादिनी विभूषा करे, जलादिथी धोवे. ए प्रमाणे उपकरण तेमज शरीर बकुश निर्ग्रंथ परिवारप्रमुखनी ऋद्धि वांछेछे. ॥ गाथा ॥ पंडिच्च तवाइ कयं, जसंच इछेइ तंमि तुस्सइय ॥ सुहसीलो नयवाढं, जयइ अहोरत्तकिरियासु ॥ १ ॥ व्याख्याः–पंडितपणाथी तथा तपादिथी यशनी इछा करे ते यशनो लाभ थवाथी अत्यंत खुशी थाय, तेमज सुखशीलियो थाय, तेमज दिनरातनी समाचारी, क्रियामां बहु उद्यमी पण न होय ॥ गाथा ॥ परिवारोय असंजम, अविवित्तो होइ किंचि एयस्स । घंसीय पाउ तिल्लाई, मासणि कित्तरिय केसो ॥ १ ॥ व्याख्याः–तेनो जे परिवार होय ते असंयमी होय, वस्त्रपात्रादि मोहथी दूर करे नहि, हाथ, पग तेल साबु विगेरेथी चोपडी सुकोमल राखे, तेमज दाढी, मूछ अने मस्तकना वाल कातरथी कापे अर्थात् लोचने बदले अस्त्रा अथवा कातरथी

वाल दूर करे, परंतु लोच करे नहि. ॥ गाथा ॥ तह देसछेयारि, देहिं सबलेहिं संजुउ बउसो ॥ मोह क्खयछमप्पु, ठिउय सुत्तंमि नणियं च ॥ १ ॥ व्याख्याः–तथा देशछेद, सर्वछेद योग्य दोषोथी जेनुं चारित्र कर्बुर छे, परंतु जेना मनमां मोहक्षय करवानी इच्छा छे, अर्थात् मनमां संयम पालवानो उत्साह छे, परंतु संपूर्ण संयम पाली शकता नथी. आ पूर्वोक्त कृत्योथी संयुक्त होय तेने बकुश निर्ग्रंथ कहियें. वली सूत्रमां जे कहेलुं छे ते हवे लखियें छियें ॥ गाथा ॥ उवगरण देह चुक्का, रिद्धि रस गारवासिया निच्चं ॥ बहु सबल छेय जुत्ता, निग्गंथा बउसा नणिया ॥ १ ॥ आनोगो जाणंतो, करेइ दोसं अयाणमण नोगे ॥ मूलुत्तरे हि संवुड, विवरिय असंवुडो होइ ॥ २ ॥ अछि मुह मज्जमाणो, होइ अहा सुहमउ तहा बउसो ॥ सीलं चरणं जंजस्स, कुछियं सो इह कुसीलो ॥ ३ ॥ पडिसेवणा कसाए, डुहा कुसीलो डुहावि पंचविहो ॥ नाणे दंसण चरणे, तवेय अह सुहुमए चेव ॥ ४ ॥ इहनाणाइ कुसीलो उवजीवं होइ नाण पजिईए ॥ अह सुहुमो पुणतुस्सइ, एस तव सत्ति संसए ॥ ५ ॥ व्याख्या–उपकरण, देह शुरू राखे, रस, ऋद्धि अने शाता, आ त्रणे गारवमां नित्य मग्न रहे, उपकरणोथी अविविक्त रहे परिवार जेनो छेद योग्य, सबल चारित्रसंयुक्त होय, ते निर्ग्रंथ बकुश कहेवाय छे ॥१॥ साधुउने आ करवा योग्य नथी एम जाणतां छतां पण जे ते काम करेछे तेने आनोगबकुश कहियें, अने जे अजाणपणाथी अकृत्य करे तेने अनानोगबकुश कहियें, मूल उत्तर गुणोथी संयुक्त छे, लोक एम जाणे पण छे, परंतु गुप्त दोष लगावे छे तेने संवृतबकुश कहियें, अने जे प्रगटपणे मूल उत्तर गुणमां दोष लगावे तनेअसंवृतबकुश कहियें ॥ २ ॥ तथा जे आंख, मुख प्रमुख मांजे, मलादि दूर करे, तेने यथासूक्ष्म बकुश कहियें. आ बकुशना पांच नेद कह्या.

हवे कुशील निर्ग्रंथनुं स्वरूप लखियें छियें. शील अर्थात् चारित्र, ते चारित्र जेनुं कुत्सित होय ते कुशील निर्ग्रंथ, तेना बे नेद छे ॥ ३ ॥ प्रतिसेवनाकुशील तथा कषायकुशील, संज्वलन कषायोथी कुशील होय ते कषायकुशील. आ बंनेना वली पांच नेद छे ते कहिये छियें. १ ज्ञान

२ दर्शन ३ चारित्र ४ तप ५ यथासूक्ष्मतः ॥४॥ जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप, आ चारे आजीविकाने वास्ते करे ते ज्ञानादिकुशील थाने चारे प्रतिसेवनाकुशील, तथा आ तपस्वी छे इत्यादि पोतानी प्रशंसा श्रवण करी खुशी थाय ते पांचमा यथासूक्ष्म प्रतिसेवनाकुशील जाणवा. तथा जे ज्ञान, दर्शन, तप प्रमुखनो संज्वलन कपायना उदयथी व्यापार करे, ते ज्ञान, दर्शन, चारित्रना कपाय कुशील जाणवा. जे कषायकुशील छे ते कपायने वश थईने शाप दीएछे. मनथी जे क्रोध प्रमुखनुं सेवन करे ते यथा सूक्ष्मकषायकुशील, अथवा कषायथी जे ज्ञान प्रमुखनी विराधना करे ते ज्ञानादि कुशील जाणवा. कोइ आचार्य, तप कुशीलना स्थानमां लिंगकुशील कहे छे. आ बे प्रकारना निर्ग्रंथ पांचमा आरा पर्यंत रहेशे. जे कोई आ तरेहना साधुने साधु अथवा गुरु न माने ते जीव मिथ्यादृष्टि, बहुल संसारी, जिनमतना उत्थापक छे. एवा मिथ्यादृष्टिनी संगत पण करवी योग्य नथी.

इतिश्रीतपागच्छीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्यमुन्यानंदविजयात्मारामविरचितजैनतत्त्वादर्शभाषांतरेगुरुतत्त्वनिर्णयनामा तृतीयः परिच्छेदः संपूर्णः ॥

॥ अथ चतुर्थपरिच्छेदप्रारंभः ॥

आ चोथा परिच्छेदमां कुगुरु तत्वनुं स्वरूप लखिये छियें. ॥ श्लोक ॥ सर्वाभिलाषिणः सर्व, भोजिनः सपरिग्रहाः ॥ अब्रह्मचारिणोमिथ्यो, पदेशागुरवोमताः ॥ १ ॥ अर्थः– स्त्री, धन, धान्य, सुवर्ण, रुपाआदि सर्व धातु, तथा क्षेत्र, घर, हाट, हवेली प्रमुख सर्व स्थावर मिलकत तथा चतुष्पदादि अनेकप्रकारनां पशु, आ सर्वनी अभिलाषा करवानो जेनो स्वभाव छे ते सर्वाभिलाषी, तथा सर्व मद्यमांसादि बावीश अभक्ष्य, तथा बत्रीश अनंतकाय, तथा अन्य अनुचित आहारादि, आ सर्वनुं भोजन करवानो जेनो स्वभाव छे ते सर्वभोजिनः, तथा पुत्र, कलत्र, पुत्री प्रमुख सहवर्तमान प्रवर्त्ते ते सपरिग्रही, अने तेज कारणथी अब्रह्मचारी, जे अब्रह्मचारी, होय छे ते महादोषवान् होय छे तेथी अब्रह्मचारी एवो आ श्लोकमां जूदो उपन्यास करेलो छे. वली अगुरुपणानुं असाधारण

कारण कहियें छियें, मिथ्योपदेशाः, मिथ्या (वितथ) आप्तना उपदेश विनानो धर्मनो उपदेश छे जेनो ते अगुरु छे. अहियां कोई एवी शंका करे के धर्मना उपदेशदाता गुरु छे, छतां पण निःपरिग्रहादि गुणोनुं ते उपदेशदातामां शामाटे अस्तित्व होवुं जोइयें ? ते शंका दूर करवाना हेतुथी विशेष लखियें छियें.

॥ श्लोक ॥ परिग्रहारंजमग्ना, स्तारयेयुः कथं परान् ॥ स्वयं दरिद्रो नपर, मीश्वरीकर्त्तुमीश्वरः ॥ २ ॥ अर्थः—परिग्रह- स्त्री प्रमुख अने आरंज- जीवहिंसा अर्थात् सर्वाजिलाषी तथा सर्वजोजी आ बंने विषयोमां जे मग्न छे, अर्थात् आ बंने विषयरूप जवसमुद्रमां जे डुबेला छे, ते बीजा जीवोने केवीरीतें संसार सागरमांथी तारी शके तेम छे ? दृष्टांत के जे पुरुष पोतेज दरिद्र छे ते बीजाने धनवान् केवी रीतें करी शके तेम छे ? हवे प्रथम श्लोकना चोथा पदमां " मिथ्योपदेशागुरवोमताः" जे छे ते पदनो अर्थ विस्तारथी लखियें छियें. कुगुरुनो उपदेश आ प्रमाणे मिथ्या छे. आ मिथ्या उपदेशना स्वरूपमां प्रथम त्रणसे त्रेसठ मतनुं स्वरूप लखियें छियें. एकसो एंशी मत क्रियावादिना छे. तथा चोराशी मत अक्रियावादिना छे, तथा सडसठ मत अज्ञानवादिना छे, अने बत्रीश मत विनयवादिना छे, ए रीतें त्रणसे त्रेसठ मत थाय छे.

प्रथम क्रियावादिना मतनुं स्वरूप कहियें छियें. क्रियावादी कहेछे के कर्त्ताविना पुण्यबंधादिलक्षणरूप क्रिया थती नथी तेथी क्रिया, आत्मानीसाथे समवायसंबंधवाली छे. ए प्रमाणे तेमनो मत छे. क्रियावादी आत्मा प्रमुख नव पदार्थोंने एकांत अस्ति स्वरूपपणे मानें छे, आ क्रियावादिना एकसो एंशीमत, नीचे मुजब जाणी लेवा. १ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ बंध, ५ संवर, ६ निर्जरा ७ पुण्य, ८ अपुण्य, ए मोक्ष, आ नव पदार्थ अनुक्रमें पत्रादिपर लखवा; पछी जीव पदार्थना नीचे स्वतः तेमज परतः आ बे जेद स्थापन करवा. आ स्वतः परतः नीचे वली जुदा जुदा नित्य तेमज अनित्य एवा बे जेंद स्थापन करवा; पछी नित्य, अनित्य आ बंनेनी नीचे जुदा जुदा १ काल, २ ईश्वर, ३ आत्मा, ४ नियति ५ स्वजाव, आ पांच स्थापन करवा, त्यारबाद विकल्प करीलेवा, ते नीचे मुजब—यंत्रस्थापना.

जीव.			
स्वतः		परतः	
नित्य.	अनित्य.	नित्य.	अनित्य
१ काल.	१ काल.	१ काल.	१ काल.
२ ईश्वर.	२ ईश्वर.	२ ईश्वर.	२ ईश्वर.
३ आत्मा.	३ आत्मा.	३ आत्मा.	३ आत्मा.
४ नियति.	४ नियति.	४ नियति.	४ नियति.
५ स्वन्नाव.	५ स्वन्नाव.	५ स्वन्नाव.	५ स्वन्नाव.

विकल्प करवानी रीत कहियें बियें. अस्ति जीवः स्वतोनित्यः कालत इत्येकोविकल्पः ॥ १ ॥ अर्थः—आ आत्मा निश्चयें स्वस्वरूपथी कालथी उत्पन्न थयेल ठे. कालवादिना मतनो आ विकल्पठे. कालवादी, कालथीज जगतनी उत्पत्ति, स्थिति, तेमज लय माने ठे. वली कालवादी कहे ठे के चंपक, अशोक, सहकार, निंब, जंबु, कदंबादि जे वनस्पति ठे, तेउनी उपर फुलोनुं लागवुं, फलप्रमुखनुं बंधावुं ते कालविना थइ शकतुं नथी, तथा हिमकणसंयुक्त शीतनुं पडवुं, तथा नक्षत्रगर्जनुं धारण, वरसादनुं वरसवुं इत्यादि कालविना होतुं नथी, वली ठ ऋतुओना विन्नाग, तथा बाल, कुमार, यौवन, वृद्धादि अवस्था, तेपण कालविना थइ शकती नथी, जे जे प्रतिनियत काल विन्नागादि ठे, ते सर्वनो कालज नियंता ठे, जो कालने नियंता न मानियें तो कोइ वस्तुनी व्यवस्था थशे नहि कारण के जेम कोइ पुरुष मग रांधे ठे, ते मगपण कालविना रंधाइ आता नथी, नहि तो हांमली तथा इंधन प्रमुख सामग्रीना संयोगथी प्रथम समयमांज मग केम न रंधाइ जाय? ते कारणथी जे कर्त्ता ठे ते कालज ठे. तथा चोक्तं ॥ न कालव्यतिरेकेण. गर्नबालशुन्नादिकं ॥ यत् किंचिज्जायते लोके, तदसौ कारणं किल ॥ १ ॥ किंचित् कालादृते नैव, मुद्गपक्तिरपीक्ष्यते ॥ स्थाल्यादिसन्निधानेऽपि, ततः कालादसौ मतः ॥ २ ॥ कालान्नावे च गर्नादि, सर्वं स्यादव्यवस्थया ॥ परेष्टहेतुसद्नाव, मात्रादेव तदुद्भवात् ॥ ३ ॥ आ श्लोकोनो न्नावार्थ उपर लखेलो ठे. तथा ॥ कालः पचति नूतानि, कालः संहरते प्रजाः ॥ कालः सुप्तेषु जागर्त्ति, कालोहि दुरतिक्रमः ॥ ४ ॥ अहियां पर इष्ट हेतुना स-

भाव मात्रादिथी बीजाओए जे एम मानेल छे के स्त्री पुरुपना संयोग मात्र हेतुथी गर्भनी उत्पत्ति थायछे तो एक वर्प वयना स्त्री पुरुपना संयोगथी केम गर्भनी उत्पत्ति थती नथी ते कारणथी कालज गर्भनी उत्पत्तिनो हेतु छे. तेमज स्त्रीने गर्भ उत्पन्न थवामां ऋतुकाल होवो जोइये, ते विना स्त्री पुरुपना संयोगथी गर्भ केम उत्पन्न थतो नथी? वली कालज पकावे छे तथा पृथ्वी आदि भूतोने परिणामांतर प्रत्ये कालज पहोचाडे छे. तेमज पूर्व पर्यायथी पर्यायांतरमां लोकोने कालज स्थापन करे छे. वली सुप्त अवस्था प्राप्त थयेला प्राणियोनी रक्षापण कालज करेछे, ते कारणथी प्रत्यक्ष छे के काल दुरतिक्रम छे. कालने दूर करवामां कोइ समर्थ नथी, आ कालवादिनो विकल्प छे.

तेविजरीतें बीजा विकल्प पण जाणी लेवा. परंतु कालने स्थानकें ईश्वरनी योजना करवी, "यथा अस्ति जीवः स्वतो नित्यः ईश्वरतः" जीव पोताना स्वरूपथी नित्य छे, परंतु ईश्वर उत्पन्न करे छे. कारण के ईश्वरवादी सर्व जगत् ईश्वरनुंज करेलुं माने छे. जेने १ ज्ञान, २ वैराग्य, ३ धर्म, ४ ऐश्वर्य, आ चारे स्वतः सिद्ध होय, तेमज जे, जीवोना स्वर्ग, नरक, मोक्षादि गमनमां प्रेरक होय तेने ईश्वर कहियें. यथा॥ ज्ञानमप्रतिघं यस्य, वैराग्यं च जगत्पतेः ॥ ऐश्वर्यं चैव धर्मश्च, सहसिद्धं चतुष्टयं ॥ १ ॥ अज्ञोजंतुरनीशोय, मात्मनः सुखदुःखयोः ॥ ईश्वरप्रेरितोगछेत्, स्वर्गं वाश्वभ्रमेव वा ॥ २ ॥ इत्यादि.

त्रीजो विकल्प आत्मवादियोनो छे. "पुरुष एवेदं सर्वमित्यादि" जे काई देखाय छे ते सर्व पुरुषज छे एम आत्मवादियोनो मत छे.

चोथो विकल्प नियतवादियोनो छे. नियतवादियो कहे छे के पदार्थोमां एक एवुं सामर्थ्य छे के जे सामर्थ्यथी सर्व पदार्थ पोत पोताना स्वरूपनियमोथी तेवाने तेवाज बन्या रहेछे, परंतु अन्यथापणे थता नथी. वली तेज वताविये छियें. जे पदार्थ जे कालमां जेनाथी थाय छे, ते पदार्थ तेज कालमां, तेनाथी नियतरूपें थतो मालम पडेछे. तेम जो न होय तो कार्य कारण भावनी व्यवस्था नियामकना अभावथी कदापि थायज नहि. ते कारणथी कार्यनियतताथी उपर मुजब प्रतीत थती जे नियति तेने प्रमाण पंथमां कुशल एवो कयो पुरुप बाध करी शके छे?

जो नियति बाधित थई जाय तो बीजे स्थले प्रमाण मिथ्या थई जशे. तथा चोक्तं ॥ नियतैनेवरूपेण, सर्वे भावा भवंति यत् ॥ ततो नियति जाह्येते, तत्स्वरूपानुबंधतः॥ १ ॥ यद्यदेव यतो यावत्, तत्तदेव ततस्तथा.॥ नियतं जायते न्यायात्, कएनां बाधितुं क्षमः ॥ २ ॥ आ बंने श्लोकनो अर्थ उपर लख्यो छे.

पांचमो विकल्प स्वभाववादियोनो छे. स्वभाववादियो कहे छे के आ संसारमां सर्व पदार्थ स्वभावथीज उत्पन्न थाय छे ते कहे छे के माटीथी घट थाय छे, परंतु वस्त्र थतुं नथी, तेमज तंतुउथी वस्त्र थाय छे परंतु घटादि थता नथी, आ जे मर्यादापूर्वक थवुं छे ते स्वभाव विना कदापि थई शकतुं नथी. ते कारणथी जगत्मां जे कांई थाय छे ते सर्व स्वभावथीज थाय छे. वली बीजां कार्य तो दूर रहो परंतु आ जे मगनुं रंधावुं छे, ते पण स्वभावविना थतुं नथी, कारण के हांमी, इंधन, काल प्रमुख सामग्री विद्यमान छतां (कांगडु) करडु मग रंधाता नथी याने पाकता (चडता) नथी; ते कारणथी जे जेना सद्भावें विद्यमान होय, तेमज असद्भावें अविद्यमान होय ते ते अन्वयव्यतिरेकथी तेना कर्त्ता छे; स्वभावथीज मग रंधाय छे तेथी स्वभावज सर्व वस्तुनो हेतु छे.

आ पांच विकल्प स्वतः ईश पदथी होय छे, तेवीज रीतें पांच परतः ईशपदथी उपलब्ध थाय छे. परतः शब्दनो अर्थ एवो छे के, पर पदार्थोथी व्यावृत्तरूपें आ आत्मा निश्चयथी छे. तेवी रीतें नित्य शब्दथी दश विकल्प थाय छे, तेमज अनित्य पदथी पण दश विकल्प थाय छे. बंने एकठा करवाथी वीश थाय छे. आ वीश विकल्प जीव पदार्थ साथे थाय छे, तेवीज रीतें अजीवादि नवे पदार्थ साथे जुदा जुदा वीश विकल्प जाणी लेवा, एटले वीशने नवथी गुणतां एकसो एंशी मत क्रियावादिना थाय छे.

हवे अक्रियावादिना चोराशी मत लखियें छियें. अक्रियावादी कहे छे के पुण्य, पापरूप क्रिया कांइ नथी. कारण के पुण्य, पापरूपादि क्रिया तो स्थिर पदार्थोने लागे छे, अने जगत्मां स्थिर पदार्थ तो कोइ छे नहि, कारण के उत्पत्ति अनंतरज पदार्थनो विनाश थतो जाय छे. तथा श्लोक ॥ क्षणिकाः सर्वसंस्कारा, अस्थिराणां कुतः क्रिया ॥ भूतिर्येषां क्रिया सैव, कारकं सैव चोच्यते ॥१॥ अर्थः— सर्वसंस्कार पदार्थ क्ष-

णिक छे, तेथी अस्थिर पदार्थोने पुण्यपापादि क्रिया क्यांथी होय ? पदार्थोनुं जे होवुं, तेज क्रिया छे, तेज कारक छे, ते कारणथी पुण्यपापादि क्रिया नथी. आ अक्रियावादी आत्माने मानता नथी. तेना चोराशी मत जाणवानी आ रीत छे. १ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ संवर, ५ निर्जरा, ६ बंध, ७ मोक्ष, आ सात पदार्थ लखवा, पछी जीवादि साते पदार्थोनी नीचे जुदा जुदा स्व तेमज पर आ बे विकल्प लखवा, पछी आ बंनेनी नीचे जुदा जुदा १ काल, २ ईश्वर, ३ आत्मा, ४ नियति, ५ स्वभाव, ६ यदृछा, आ छ लखवा. अहियां नित्य, अनित्य आ बे विकल्प नहि लख्या तेनुं कारण ए छे के ज्यारे आत्मादि पदार्थज नथी त्यारे तेनां नित्य, अनित्यनो संभवज केम होय ? तथा यदृछावादी जे छे ते सर्व नास्तिक अक्रियावादी छे, ते कारणथी क्रियावादी यदृछावादी नथी. तेज कारणथी क्रियावादिना मतमां यदृछा पद ग्रहण करेल नथी. आ मतना चोराशी भेद आवी रीतें जाणवा ते कहियें छियें.

" नास्ति जीवः स्वतः कालत इत्येको विकल्पः " नथी जीव पोताना स्वरूपें कालथी उत्पन्न थयेल, आ एक विकल्प, तेवीज रीतें ईश्वरादिथी लईने यदृछा पर्यंत सर्व छ विकल्प थया, तेना अर्थ पूर्ववत् जाणवा, परंतु एटलुं विशेष के आ मतमां यदृछावादी अधिक छे.

प्रश्नः– यदृछावादिउनो शुं मत छे ?

उत्तरः– जे पदार्थोने संताननी अपेक्षा नियत, कार्य कारण भावें मानता नथी, परंतु जे कांइ थाय छे ते यदृछाथी थाय छे, अर्थात् कार्य कारण भाव नथी, परंतु यदृछाथीज थाय छे एम जे कहेछे ते यदृछावादि छे. वली तेउ कहे छे के पदार्थोनो पोत पोतामां कार्यकारणभावनो नियमज नथी, कारण के कार्यकारणभाव प्रमाणपूर्वक ग्रहण थई शकाताज नथी. जेम मृतकमेरूक (देरूका) थी मेरूक उत्पन्न थायछे, तेमज गोबरथी पण मेरूक उत्पन्न थाय छे; अग्निथी अग्नि उत्पन्न थाय छे, तेमज अरणिना काष्ठथी पण अग्नि उत्पन्न थाय छे; धूमाडाथी धूमाडो उत्पन्न थाय छे तेमज अग्निथी पण धूमाडो उत्पन्न थाय छे; कदलीना कंदथी केलां उत्पन्न थाय छे, तेमज केलांना बीजथी पण केलां उत्पन्न

थाय छे; बीजथी वटवृक्ष उत्पन्न थाय छे तेमज वटवृक्षनी शाखाथी पण वट वृक्ष उत्पन्न थाय छे; ते कारणथी नियमपूर्वक कार्यकारणभाव कोइ पण जगाये देखवामां आवता नथी. तेथी यदृछाथी कोइ जगे कांइ तो कोई जगे कांई एम थाय छे, एम मानवुं जोईयें, कारण के जो एम जाणुं के जे कांइ थाय छे ते यदृछाथी थाय छे तो बुद्धिमान् पुरुषें कार्यकारण भावने शावास्ते मानवा जोइयें. तेमज आत्माने क्लेश करवो जोइये. जेम स्वतःनी साथे छ विकल्प करवा तेमज परतःनी साथे पण छ विकल्प करवा. तेवी रीतें बार विकल्प थया ते बारेने जीवादि सात पदार्थो साथे गुणतां चोराशी भेद अक्रियावादिना थाय छे.

हवे त्रीजा अज्ञानवादिना भेद कहियें छियें. कुत्सित ज्ञान छे जेनुं ते अज्ञानवादि जाणवा; अथवा अज्ञानथी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानवादी; अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञान सारी वस्तु नथी कारण के जो ज्ञान हशे तो परस्पर विवाद थशे, जो विवाद थशे तो चित्त मलिन थशे, ज्यारे चित्त मलिन थयुं, त्यारे संसारनी वृद्धि थई. जेम के कोइ पुरुषें कोइ वस्तु विरुद्ध कही, ज्ञानियें ते सांभलीने ज्ञानना अभिमानथी, बहुज मलिन चित्तथी ते पुरुषनी साथे विवाद करवो शरु कर्यो, विवाद करतां थकां अत्यंत तीव्र मलिन चित्त थयुं तथा अहंकार वध्यो, ते चित्तनी मलिनता तथा अहंकारथी महापापकर्म उत्पन्न कर्यां, ते पापथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थई. ते कारणथी ज्ञान सारी वस्तु नथी, अने जो पोताने अज्ञानी मानिये तो अहंकारनो संभव थतो नथी, तेमज बीजाउनी उपर चित्तनुं मलिनपणुं पण थतुं नथी, तेथी कर्मनो बंध पण थतो नथी. वली जे कार्य विचारपूर्वक करियें तेमां महाकर्मनो बंध थाय छे. तेनुं फल पण महाभयानक प्राप्त थाय छे, अने जे काम मनना व्यापार विना करिये, तेमज मनना व्यापार विना कोइ जीवनो वध पण करियें तो तेनुं फल अवश्यमेव भोगववामां आवतुं नथी; अने ते काममां जे कांइ कर्मबंध थाय छे, ते पण चुनागछी वाली भिंत उपर रेतीनी मुष्टिना संबंधवत् स्पर्शमात्र थाय छे, परंतु बंध थतो नथी. ते कारणथी मोक्षगामि पुरुषोने अज्ञानज अंगीकार करवुं श्रेय छे, परंतु ज्ञान अंगीकार करवुं श्रेयस्कर नथी. आ अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञानने अमे मानी

पण लइयें, जो ज्ञाननो निश्चय करवानी समर्थता होय ? कारण के प्रथम तो ज्ञान सिद्धज थई शकतुं नथी. जूदे जे जे मतावलंबी पुरुष छे, ते सर्व परस्पर भिन्नज ज्ञान अंगीकार करे छे. ते कारणथी निश्चय करवामां केम समर्थ होय, के आ मतनुं ज्ञान सम्यक् छे अने आ मतनुं ज्ञान सम्यक् नथी ? जो एम कहो के सकल वस्तु समूहना साक्षात्कारी एवा ज्ञानवाला जे जगवान् छे तेना उपदेशथी जे ज्ञान थाय ते सम्यक् ज्ञान छे, अने तेना शिवाय बीजा मत छे तेनुं ज्ञान सम्यक् नथी, कारण के तेना मतमां जे ज्ञान छे ते सर्वज्ञनुं कथन करेल नथी.

अज्ञानवादी कहे छे के—आपनुं केहेवुं तो सत्य छे, परंतु सकल वस्तुसमूहना साक्षात् करनारा ज्ञानी, सुगत, ईश्वर, विष्णु ब्रह्मादिने अमे मानियें ? के जगवान् वर्धमान महावीर स्वामिने अमे मानियें ? वली एज संशय रह्यो, निश्चय थयो नहि के कोण सर्वज्ञ छे ? जो एम कहो के जे जगवानना चरण कमलने सर्व देवता, इंद्र परस्पर अहंपूर्वकविशिष्टविशिष्टतर विभूतिद्युतियी[१] संयुक्त सेंकडो विमानोमां बेसी सकल आकाश मंमलने आछादित करता थका, पृथ्वीपर उतरी पूजता हता ते जगवान् वर्धमान स्वामी सर्वज्ञ छे, परंतु सुगत, शंकर, विष्णु ब्रह्मादि नहि; कारण के सुगतादि सर्व अल्पबुद्धिवाला मनुष्य थया छे, परंतु सर्वज्ञ देव थया नथी, जो सुगतादि सर्वज्ञ थया होत तो तेउनी पण देवता, इंद्रें, पूजा करी होत, परंतु कोईनी देवता, इंद्रें पूजा करी नथी, ते कारणथी सुगतादि सर्वज्ञ थया नथी. हे जैन! आ जे सघलुं तमे कह्युं ते पोताना मतना रागथी कह्युं छे; परंतु ते वातथी इष्ट सिद्धि थती नथी. कारण के वर्धमान स्वामिनी देवता, इंद्र देवलोकथी आवीने पूजा करता हता, आ तमारुं केहेवुं अमे केम साचु मानी शकियें? जगवान् श्री महावीर स्वामिने थयांने आज बहुकाल व्यतीत थई गयो, वली तेना सर्वज्ञ होवामां कांइ पण साधक प्रमाण नथी. जो कहो के संप्रदायथी अर्थात् महावीरना शासनथी महावीर सर्वज्ञ सिद्ध थाय छे, तो तेमां एवो तर्क थशे के आ, जे तमारो संप्रदाय छे ते कोण जाणे कोई धूर्त्तनो चलावेलो हशे ? के कोइ सत्पुरुषनो चलावेलो हशे ?

१ कांतिवाप्रकाशके ऐश्वर्यप्रद्योततयी.

अमे तेमां शुं जाणी शकीये ? ते कारणथी सिद्ध करनारुं कोइ पण प्रमाण नथी, अने प्रमाण विना अमे मानियें तो प्रेक्षावान् शेना ? वली मायावान् पुरुष पोते सर्वज्ञ होता नथी तो पण पोते पोताने जगत्मां सर्वज्ञ थयेला प्रगट करी दीयेछे. इंद्रजालनी सत्तावीश पीठ छे, तेमांथी केटलीएक पीठना पाठक पोते पोतानुं तीर्थंकरनुं रूप, तेमज इंद्र, देवता पूजा करता होय, एम बनावी शके छे, तो पछी देवताउना आगमन, पूजा देखवाथी सर्वज्ञपणुं केम सिद्ध थाय, जेथी श्रीमहावीर स्वामिने अमे सर्वज्ञ मानियें ? तमारा मतना आचार्य सामंतभद्रस्तुतिकार पण कहेछे के ॥ श्लोक ॥ देवागमनजोयान, चामरादिविभूतयः ॥ मायाविष्वपि दृश्यंते, ह्यतस्त्वमसि नोमहान् ॥ १ ॥ भावार्थः— देवताउनां आगमन, आकाशमां चालवुं, छत्र चामरादि विभूति, आ सर्व आडंबर इंद्रजालीआमां पण थइ शके छे, ते हेतुथी हे भगवन् ! तुं अमोने महान् स्तुति करवा योग्य नथी. वली हे जैन ! तमारा केहेवाथी महावीरज सर्वज्ञ होय, तो पण आ जे आचारांगादि शास्त्र छे ते महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे एम केवी रीतें जाणी शकियें ? शुं जाणीयें के कोई धूर्त्ते रचीने महावीरनुं नाम राखी लीधुं होय ? कारण के आ वात इंद्रियज्ञाननो विषय नथी, अने अतींद्रिय ज्ञाननी सिद्धिमां कोई पण प्रमाण नथी.

भला कदी एम पण हो के आचारांगादि शास्त्र तो महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे तो पण श्रीमहावीर स्वामिना कथन करेला शास्त्रनो आज अभिप्राय छे, आज अर्थ छे, बीजो अर्थ नहि, एम केम जाणी शकाय ? कारण के शब्दना अनेक अर्थ छे, ते आ जगत्मां प्रगट सांभलवामां आवे छे. शुं जाणियें आज अक्षरोथी श्रीमहावीर स्वामियें कोइ अन्यज अर्थ कह्या होय, अने तमारी समजणमां तेज अक्षरोथी कांई जुदाज अर्थ भासन थता होय ? हवे तेनो निश्चय केवीरीतें थाय के आ अक्षरोना आज अर्थ भगवानें कह्या छे. जो तमे एवी रीतें मानी लीधुं होय के भगवानना समयमां गौतमादि मुनि हता, तेउए भगवानना मुखारविंदथी साक्षात् जे अर्थ श्रवण कर्या हता, तेज अर्थ आज पर्यंत परंपराथी चाल्या आवे छे, तेज कारणथी आचारांगादि

शास्त्रोना आज अर्थ छे, बीजा नथी. आ पण तमारुं केहेवुं अयुक्त छे, कारण के गौतमादि पण छद्मस्थ हता, अने छद्मस्थने बीजानी चित्त वृत्तिनुं ज्ञान होतुं नथी, बीजानी चित्तवृत्तिनी समज तो अतींद्रिय ज्ञानंनो विषय छे. छद्मस्थ तो इंद्रियद्वारा जाणी शके छे, इंद्रियज्ञानी सर्वज्ञना अभिप्रायने केवी रीतें जाणी शके के सर्वज्ञनो आज अभिप्राय छे ? आ अभिप्रायथी सर्वज्ञें आ शब्द कह्यो छे ? ते वास्ते भगवानना अभिप्राय तो गौतमादि जाणी शकता न होता, केवल जे वर्णावली भगवान् केहेता हता तेज वर्णावलि भगवाननी पाछल गौतमादि उच्चारण करता आव्या छे, परंतु भगवाननो अभिप्राय कोइयें जाणेलो नथी. जेम आर्यदेशोत्पन्न पुरुषनो शब्दोच्चार श्रवण करी म्लेछ पण तेवोज शब्दोच्चार करी शके छे, परंतु तात्पर्य कांइ जाणता नथी, तेवीज रीतें गौतमादि, महावीर स्वामिना अनुवादक हता; परंतु तेमना अभिप्राय जाणता न होता, ते कारणथी सम्यक् ज्ञान कोइ मतमां सिद्ध थतुं नथी; एक तो ज्ञान थवाथी, पुरुष अभिमानथी बहुज कर्म बांधीने दीर्घसंसारी थइ जाय छे, बीजुं सम्यक्ज्ञान कोइ मतमां छेज नहि, तेथी अज्ञानज श्रेय छे. ए प्रमाणें अज्ञानवादिनी श्रद्धा छे. ते अज्ञानी सडसठ प्रकारना छे. तेने जाणवानो आ उपाय छे. जीवादि नव पदार्थ कोइ पत्र पर लखवा, अने दशमा स्थानमां उत्पत्ति लखवी, जीवादि नवे पदार्थ नीचे जुदां जुदां सत्वादि सात पद स्थापन करवां, ते सात पद आ छे– १ सत्वं, २ असत्वं, ३ सदसत्वं, ४ अवाच्यत्वं,५ सदवाच्यत्वं, ६ असदवाच्यत्वं, ७ सदसदवाच्यत्वं. हवे १ सत्वं–ते स्वरूपथी विद्यमानपणुं, २ असत्वं– पररूपथी अविद्यमानपणुं, ३ सदसत्वं– ते स्वरूपथी तथा पररूपथी विद्यमानपणुं, तेमां अगर जो के सर्व वस्तु स्वपर रूपथी निरंतर स्वभावथी सदसत्स्वभाव छे, तो पण कोइक जगाये कदाचित् उद्भूतरूपथी विवक्षा करवामां आवे, ते हेतुथी आ त्रण विकल्प थाय छे, तथा अवाच्यत्वं ते तेजसत्व, असत्व ज्यारे युगपत्[१] एक शब्दथी केहेवानी इछा करियें, त्यारे तेनो वाचक कोइपण शब्द नथी तेथी अवाच्यत्वं, आ चारे विकल्पनुं सकलादेश एवुं नाम कहियें, का-

१ एक कालावच्छिन्न.

अमे तेमां शुं जाणी शकीये ? ते कारणथी सिद्ध करनारुं कोइ पण प्रमाण नथी, अने प्रमाण विना अमे मानियें तो प्रेक्षावान् शेना ? वली मायावान् पुरुष पोते सर्वज्ञ होता नथी तो पण पोते पोताने जगत्मां सर्वज्ञ थयेला प्रगट करी दीयेछे. इंद्रजालनी सत्तावीश पीठ छे, तेमांथी केटलीएक पीठना पाठक पोते पोतानुं तीर्थंकरनुं रूप, तेमज इंद्र, देवता पूजा करता होय, एम बनावी शके छे, तो पछी देवताउंना आगमन, पूजा देखवाथी सर्वज्ञपणुं केम सिद्ध थाय, जेथी श्रीमहावीर स्वामिने अमे सर्वज्ञ मानियें ? तमारा मतना आचार्य सामंतभद्रस्तुतिकार पण कहेछे के ॥ श्लोक ॥ देवागमनभोयान, चामरादिविभूतयः ॥ मायाविष्वपि दृश्यंते, ह्यतस्त्वमसि नोमहान् ॥ १ ॥ भावार्थः- देवताउंनां आगमन, आकाशमां चालवुं, छत्र चामरादि विभूति, आ सर्व आडंबर इंद्रजालीआमां पण थइ शके छे, ते हेतुथी हे भगवन् ! तुं अमोने महान् स्तुति करवा योग्य नथी. वली हे जैन ! तमारा केहेवाथी महावीरज सर्वज्ञ होय, तो पण आ जे आचारांगादि शास्त्र छे ते महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे एम केवी रीतें जाणी शकियें ? शुं जाणीयें के कोई धूर्त्तें रचीने महावीरनुं नाम राखी लीधुं होय? कारण के आ वात इंद्रियज्ञाननो विषय नथी, अने अतींद्रिय ज्ञाननी सिद्धिमां कोई पण प्रमाण नथी.

भला कदी एम पण हो के आचारांगादि शास्त्र तो महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे तो पण श्रीमहावीर स्वामिना कथन करेला शास्त्रनो आज अभिप्राय छे, आज अर्थ छे, बीजो अर्थ नहि, एम केम जाणी शकाय ? कारण के शब्दना अनेक अर्थ छे, ते आ जगत्मां प्रगट सांभलवामां आवे छे. शुं जाणियें आज अक्षरोथी श्रीमहावीर स्वामियें कोइ अन्यज अर्थ कह्या होय, अने तमारी समजणमां तेज अक्षरोथी कांई जुदाज अर्थ भासन थता होय ? हवे तेनो निश्चय केवीरीतें थाय के आ अक्षरोना आज अर्थ भगवानें कह्या छे. जो तमे एवी रीतें मानी लीधुं होय के भगवानना समयमां गौतमादि मुनि हता, तेउंए भगवानना मुखारविंदथी साक्षात् जे अर्थ श्रवण कर्या हता, तेज अर्थ आज पर्यंत परंपराथी चाल्या आवे छे, तेज कारणथी आचारांगादि

शास्त्रोना आज अर्थ छे, बीजा नथी. आ पण तमारुं केहेवुं अयुक्त छे, कारण के गौतमादि पण छद्मस्थ हता, अने छद्मस्थने बीजानी चित्त वृत्तिनुं ज्ञान होतुं नथी, बीजानी चित्तवृत्तिनी समज तो अतींद्रिय ज्ञाननो विषय छे. छद्मस्थ तो इंद्रियद्वारा जाणी शके छे, इंद्रियज्ञानी सर्वज्ञना अभिप्रायने केवी रीतें जाणी शके के सर्वज्ञनो आज अभिप्राय छे ? आ अभिप्रायथी सर्वज्ञें आ शब्द कह्यो छे ? ते वास्ते भगवानना अभिप्राय तो गौतमादि जाणी शकता न होता, केवल जे वर्णावली भगवान् केहेता हता तेज वर्णावलि भगवाननी पाछल गौतमादि उच्चारण करता आव्या छे, परंतु भगवाननो अभिप्राय कोइयें जाणेलो नथी. जेम आर्यदेशोत्पन्न पुरुषनो शब्दोच्चार श्रवण करी म्लेछ पण तेवोज शब्दोच्चार करी शके छे, परंतु तात्पर्य कांइ जाणता नथी, तेवीज रीतें गौतमादि, महावीर स्वामिना अनुवादक हता; परंतु तेमना अभिप्राय जाणता न होता, ते कारणथी सम्यक् ज्ञान कोइ मतमां सिद्ध थतुं नथी; एक तो ज्ञान थवाथी, पुरुष अभिमानथी बहुज कर्म बांधीने दीर्घसंसारी थइ जाय छे, बीजुं सम्यक्ज्ञान कोइ मतमां छेज नहि, तेथी अज्ञानज श्रेय छे. ए प्रमाणें अज्ञानवादिनी श्रद्धा छे. ते अज्ञानी सडसठ प्रकारना छे. तेने जाणवानो आ उपाय छे. जीवादि नव पदार्थ कोइ पत्र पर लखवा, अने दशमा स्थानमां उत्पत्ति लखवी, जीवादि नवे पदार्थ नीचे जुदां जुदां सत्त्वादि सात पद स्थापन करवां, ते सात पद आ छे– १ सत्त्वं, २ असत्त्वं, ३ सदसत्त्वं, ४ अवाच्यत्वं, ५ सदवाच्यत्वं, ६ असदवाच्यत्वं, ७ सदसदवाच्यत्वं. हवे १ सत्त्वं–ते स्वरूपथी विद्यमानपणुं, २ असत्त्वं– पररूपथी अविद्यमानपणुं, ३ सदसत्त्वं– ते स्वरूपथी तथा पररूपथी विद्यमानपणुं, तेमां अगर जो के सर्व वस्तु स्वपर रूपथी निरंतर स्वभावथी सदसत्स्वभाव छे, तो पण कोईक भगाये कदाचित् उद्भूतरूपथी विवक्षा करवामां आवे, ते हेतुथी आ त्रण विकल्प थाय छे, तथा अवाच्यत्वं ते तेजसत्व, असत्त्व ज्यारे युगपत् एक शब्दथी केहेवानी इच्छा करियें, त्यारे तेनो वाचक कोईपण शब्द नथी तेथी अवाच्यत्वं, आ चारे विकल्पनुं सकलादेशा एवुं नाम कहियें, का-

१ एक कालावच्छिन्न.

रण के आ चारे सकल वस्तु विषयने ग्रहण करे छे. ५ वली जो एक जागमां सत्, अने बीजा जागमां अवाच्य, युगपत् विवक्षा करियें तो सद वाच्यत्वं, ६ जो एक जागमां असत् अने बीजा जागमां अवाच्य, तो असदवाच्यत्वं, तथा ७ जो एकजागमां सत्य, बीजा जागमां असत्य, त्रीजा जागमां अवाच्य युगपत् कल्पना करियें तो सदसदवाच्यत्वं आ साते विकल्पोथी बीजा विकल्प कोई पण नथी. जो कदी कोई करी ले तो तेनो ते सातना अंतरमांज समावेश थई जशे, परंतु सातथी अधिक विकल्प कदापि थशे नहि. आ साते विकल्पने नवगुणा करे त्यारे त्रेसठ थाय छे, अने १ सत्त्वं, २ असत्त्वं, ३ सदसत्त्वं, ४ अवाच्यत्वं, आ उत्पत्तिना चार विकल्प आदिथी होय छे ते त्रेसठमां प्रक्षेप करियें, त्यारे सडसठ मत अज्ञानवादिना थाय छे. हवे आ साते विकल्पोना अर्थ लखियें छियें. कोण जाणे छे के जीव सत्य छे, आ एक विकल्प. जीव सत् छे एम कोईपण जाणतुं नथी, कारण के तेने ग्रहण करनारुं कोई प्रमाण नथी. कदाचित् कोई जाणी पण लहे के जीव सत् छे तो तेथी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थई, कारण के ज्यारे ज्ञान थशे, त्यारे अजिनिवेश, अजिमान, चित्तमलिनता, विवाद, ऊघडा विगेरे अनेक, लोकोना प्रसंगमां वधी जशे, पछी ज्ञानवान् बहुज कर्म बांधी दीर्घतर संसारी थशे. आ प्रमाणे बीजा विकल्पनो पण अर्थ जाणी लेवो. इति.

हवे विनयवादिनो मत कहियें छियें. विनयथी जे प्रवर्त्ते ते वैनयिकाः आ विनयवादिनां लिंग तेमज शास्त्र नथी. तेउ केवल विनयथीज मोक्ष माने छे. विनयवादियोना बत्रीश मत छे. ते आ प्रमाणे. १ सुर, २ राजा, ३ जाति, ४ ज्ञाति, ५ स्थविर, ६ अधम, ७ माता ८ पिता, आ आठेनो मन, वचन, कायाथी, तेमज देशकालपूर्वक उचित दान दइने विनय करवो. आ चार साथे आठ गुणा करता बत्रीश जेद थया. इति.

ए प्रमाणे सर्वमली त्रणसे त्रेसठ मत थया. आ सर्व मतधारी तेमज तेनी प्ररूपणा करनारा, सर्वे कुगुरु छे, कारण के आ सर्वे मतो मिथ्या दृष्टियोना छे. सर्व एकांतवादि छे, वली स्याद्वादरूप अमृतस्वादथी रहित छे, तेउनां मानेलां तत्व, प्रमाणथी बाधित छे; आ सर्वमतोनुं पूर्वाचार्योयें अनेकयुक्तियोथी खंमन करेल छे. जव्यजीवोने जाणवा वास्ते,

मदिरापानिना प्रलाप जेवुं छे. कारण के तमे प्रथम पक्षमां काल एकांत एक नित्य व्यापी मानेल छे, तो हवे केवी रीतें ते कालनो पूर्वापर व्यवहार होय ?

पूर्वपक्षः—सहचारिना संगथी एक वस्तुनो पण पूर्वापर कल्पनामात्र व्यवहार थइ शके छे. जेम सहचारि भरतादिना पूर्वापर व्यवहार छे, तेवीज रीतें भरतादि सहचारियोना संगथी कालनो पण कल्पनामात्र पूर्वापर व्यपदेश थाय छे. सहचारियोथी व्यपदेश, सर्वे तार्किकोना मतमां प्रसिद्ध छे. यथा, " मंचाः क्रोशंतीति " जेम मंचा गालो दीयेछे.

उत्तरपक्षः—आ पण असमंजस कथन छे. कारण के आ कथनमां इतरेतर दोषनो प्रसंग आवे छे. ते कहियें छियें. सहचारि भरतादिनो कालना योगथी पूर्वापर व्यवहार थयो, अने कालनो पूर्वापर व्यवहार, सहचारि भरतादिना योगथी थयो; जो एक सिद्ध नहि थाय तो बीजुं पण सिद्ध नहि थाय. उक्तं च ॥ एकत्वव्यापितायां हि, पूर्वादित्वं कथं भवेत् ॥ सहचारिवशात्तच्चे, दन्योन्याश्रयतागमः ॥ १ ॥ सहचारिणां हि पूर्वत्वं, पूर्वकालसमागमात् ॥ कालस्य पूर्वादित्वं च, सहचार्यवियोगतः ॥ २ ॥ प्रागसिद्धावेकस्य, कथमन्यस्य सिद्धिरिति ॥ ते कारणथी प्रथम पक्ष श्रेय नथी.

जो बीजो पक्ष मानशो तो ते पण अयुक्त छे. कारण के समयादि रूप परिणामी कालविषे काल एकज छे तोपण विचित्रपणुं उपलब्ध थाय छे. जुओ. एक कालमां मगने रांधतां कोइ रंधाय छे, कोइ रंधाता नथी, तथा समकाल एक राजानी नोकरी करतां थकां एक नोकरने अल्प कालमांज नोकरीनुं फल मली जाय छे, अने बीजाने बहु काल व्यतीत थया छतां पण तेवुं फल मलतुं नथी; तथा समकालें खेती करतां छतां एक खेडुतने बहु धान्य उत्पन्न थाय छे, अने बीजाने अल्प, बगडेलुं तेमज खंडित उत्पन्न थाय छे; तथा समकालें कोडीओनी मूठी भरीने जमीन उपर नांखियें तो केटलीएक कोडीओ चती पडे छे, अने केटलीएक ऊंधी पडे छे. हवे जो कालज एकलुं कारण होय तो सर्व मग एकज कालमां रंधावा जोइयें, परंतु तेम थतुं नथी, इत्यादि, ते कारणथी निःकेवल कालज जगतनी विचित्रतानो कर्त्ता नथी. परंतु

कालादि सामग्रीना मलवाथी कर्म कारण छे, आ सिद्ध पक्ष छे. इति प्रथम कालवादिना मतनुं खंडन.

बीजा ईश्वरवादी अने त्रीजा अद्वैतवादी आ मतोनुं खंडन ईश्वरवादमां लखी आव्या छिये, त्यांथी जाणी लेवुं.

हवे चोथो मत नियतिवादियोनो छे तेनुं खंडन लखियें छियें. नियतिवादी कहे छे के सर्व पदार्थना कर्त्ता नियति छे. जे तत्त्वांतर थाय ते नियति केहेवाय. ते नियति पण ताडन पामती अति जीर्ण वस्त्रनी पेठे विचाररूप ताडनाने नहि सहन करी शकती सेंकडो कटकाने प्राप्त थाय छे. ते कहियें छियें. हे नियतवादि! तमारुं जे नियतिनाम तत्त्वांतर छे ते भावरूप छे के अभावरूप छे? जो कहो के भावरूप छे तो पछी एकरूप छे के अनेकरूप छे? जो कहो के एकरूप छे, तो वली नित्य छे के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो पदार्थोनी उत्पत्ति आदिमां केवीरीतें हेतुरूप छे? कारण के जे नित्य होय छे ते कोइनुं पण कारण थइ शकतुं नथी. कारण के जे नित्य छे ते सर्व कालमां एकरूप होय छे. नित्यनुं लक्षण-"अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावतया नित्यत्वस्य व्यावर्णात्" एवुं छे. जे क्षरे नहि, तेमज उत्पन्न पण न थाय, स्थिर एक स्वभावथी रहे ते नित्य. हवे जो नियति ते नित्यरूपथी जो कार्य उत्पन्न करे तो तो हमेशां तेजरूपथी कार्य उत्पन्न करे, कारण के तेना स्वरूपमां कांइपण विशेष नथी एकज रूप छे, अने हमेशां तेजरूपथी तो कार्य उत्पन्न करती नथी, कारण के कदी एक जातनुं तो कदी बीजी जातनुं कार्य उत्पन्न थतुं देखियें छियें. वली एक बीजी पण वात ए छे के जे बीजा, त्रीजा, आदि क्षणमां नियतिने कार्य करवानुं छे, ते सर्व कार्य प्रथम क्षणमांज उत्पन्न करी लेवुं जोइये, कारण के ते नियतिनो जे नित्य करणस्वभाव बीजा, त्रीजा आदि क्षणमां छे ते स्वभाव प्रथमक्षणमां पण विद्यमान छे. जो प्रथम क्षणमां द्वितीयादि क्षणवर्ती कार्य करवानी शक्ति न होय तो द्वितीयादि क्षणमां पण कार्य न थवुं जोइये. कारण के प्रथम द्वितीयादि क्षणमां कांइ पण विशेष नथी. जो प्रथम द्वितीयादि क्षणमां नियतिना रूपमां परस्पर विशेष मानशो तो तो स्वाभाविक रीतें नियतिना रूपमां अनित्यता आवी जशे. "अताद-

वस्थ्यमनित्यतां ब्रूम- इति वचनप्रामाण्यात्" जे जेवुं होय ते तेवुं न रहे. ते अनित्य. ते वचन प्रमाणथी तेने अमे अनित्य कहियें छियें.

पूर्वपक्षः–नियति नित्य, विशेष रहितज छे, तो पण ते ते सहकारिनी अपेक्षाथी कार्य उत्पन्न करे छे, अने जे सहकारि छे ते प्रतिनियत देश कालवालां छे, ते कारणथी सहकारिना योगथी कार्य अनुक्रमें थाय छे.

उत्तरपक्षः–आ पण तमारुं केहेवुं असमीचीन छे. कारण के सहकारि जे छे, ते पण नियतिथीज प्राप्त थाय छे, अने नियति जे छे ते प्रथम क्षणमां पण तेने करनार स्वभाववाली छे, जो द्वितीयादि क्षणमां बीजा स्वभाववाली नियति मानशो तो तो नित्यपणानो नाश थशे. ते कारणथी प्रथम क्षणमां सर्व सहकारियोनो संभव होवाथी प्रथम क्षणमांज सर्व कार्य करवानो प्रसंग थयो. वली एक बीजी वात छे के सहकारिओना विद्यमानपणाथी कार्य थयुं, अने सहकारिओना न होवापणाथी कार्य न थयुं, त्यारे तो सहकारिओज अन्वयव्यतिरेक न्यायथी कारण छे, एम कल्पना करवी जोइयें, परंतु नियति कारण थइ नहि,कारण के नियतिमां व्यतिरेकनो असंभव छे. उक्तं च ॥ श्लोक ॥ हेतुनान्वयपूर्वेण, व्यतिरेकेण सिद्ध्यति ॥ नित्यस्याव्यतिरेकस्य, कुतोहेतुत्वसंभवः ॥ १ ॥ हवे जो पूर्वोक्त दूषणोना भयथी अनित्य पक्ष मानशो तो तो ते नियतिनां दरेक क्षणे अन्य अन्य रूप थवाथी नियति बहुरूप थइ गइ, अने तमे जे नियति एकरूप मानी हती ते तमारी प्रतिज्ञाने व्याघात थवानो प्रसंग आव्यो. वली जे पदार्थ क्षणक्षयी होय छे, ते कोइनुं कार्य कारण थइ शकतुं नथी. वली एक बीजी पण वात छे के, जो नियति एकरूप होय तो तेनाथी जे कार्य उत्पन्न थाय ते सर्व एकरूपज होवां जोइयें. कारण के कारणनो भेद थया विना कार्यमां कदापि भेद थइ शकतो नथी. जो तेम थइ जाय तो ते कार्यभेद निर्हेतुकज थवानो, अने हेतुविना कोइ कार्यनो भेद नथी. जो नियति अनेकरूप मानशो तो तो ते नियतिथी अन्य अनेकरूपी विशेषण विना नियति नानारूप कदापि नहि थाय. जेम के वरसादनुं पाणी, काली, पीली, उखर जमीनना संबंध विना अनेकरूप थइ शकतुं नथी. यदुक्तं ॥ "विशेषणं

विना यसा, न तुल्यानां विशिष्टतेति वचनप्रामाण्यात् " ते कारणथी अवश्य ते नियतिथी अन्य नानारूप विशेषण नियतिना जेद मानवा जोइयें. ते अनेकरूप विशेषणोनुं होवुं ते शुं ते नियतिथीज थाय छे के कोइ बीजाथी थाय छे ? जो कहो के नियतिथीज थाय छे तो ते नियति स्वतः एकरूप होवाथी ते नियतिथी उत्पन्न थयेला विशेषणोनी अनेक रूपता केवी रीतें थाय ?

जो *विचित्र कार्यनी अन्यथा अनुपपत्तिथी नियति पण विचित्ररूपज* मानशो, तो नियतिनी विचित्रता बहु विशेषणो विना नहि थाय, ते कारणथी ते नियति विषे विशेष्य अनेक अंगीकार करवा जोइये. हवे ते विशेषणोना जे जाव छे ते, ते नियतिथीज थाय छे के कोइ बीजाथी? इत्यादि. तेज फरी आव्युं. ते कारणथी अनवस्था दूषण लागेछे.

हवे जो एम कहो के बीजाथी थाय छे, तो ते पक्ष पण अयुक्त छे. कारण के नियति विना बीजा कोइने तमे हेतु मानेला नथी, तेथी आ तमारुं केहेवुं कांइ कामनुं नथी. वली एम मानशो के नियति अनेक रूप छे, तो तमारा मतना बे बेरी विकल्प अमे तमारी सन्मुख खडा करिये छियें. जो तमारी नियति अनेकरूपछे तो मूर्त्त छे के अमूर्त्त छे ? जो कहो के मूर्त्त छे तो नामांतरथी कर्मनेज अंगीकार कर्यो. कारण के कर्म पुद्गलरूप होवाथी मूर्त्तपण छे अने अनेकरूप पण छे. तो तो तमारो अने अमारो एक मत थइ गयो. कारण के अमे जेने कर्म मानियें छियें, तेज कर्मने नामांतरथी तमे नियति मानी लीधी; परंतु वस्तु एकज छे. जो नियतिने अमूर्त्त मानशो तो ते अमूर्त्त होवाथी सुखदुःखनो हेतु थशे नहि. जेम के आकाश अमूर्त्त छे परंतु सुखदुःखनो हेतु नथी. पुद्गलज मूर्त्त होवाथी सुखदुःखनो हेतु थइ शकेछे. जो तमे एम केहेशो के आकाशपण देशजेदथी सुखदुःखनो हेतु थाय छे. जेम के मारवाड देशमां आकाश दुःखदायक छे, अने बीजा जलवाला देशोमां सुखदायक छे. आ पण तमारुं केहेवुं असत् छे. ते मारवाड आदि देशोमां पण आकाशमां रहेला जे पुद्गलो छे ते पुद्गलथीज सुख दुःख थाय छे. जेम के मरुस्थल प्रायः जलथी रहित छे. अने रेती घणीज छे, तेथी रस्ते चालतां पग रेतीथी घसाय छे, जेथी परसेवो बहुज

थाय छे. वली उनालामां सूर्यना किरणोथी रेती बहुज तपी जाय छे त्यारे चालतां बहुज संताप थाय छे, अने पाणीपण पुरुं पीवाने मलतुं नथी, तेथी खोदीने काढतां अनेक प्रयत्न करवा पडे छे. ते कारणथी ते देशोमां बहुज दुःख छे, अने सजल देशोमां तेवां कारणो नथी तेथी तेवां दुःख पण नथी; आ हेतुथी पुद्गलज सुखदुःखना हेतु छे, परंतु आकाश नथी.

जो नियतिने अभावरूप मानशो तो तेपण तमारो पक्ष अयुक्त छे: कारण के अभाव जे छे ते तुच्छरूप छे, शक्तिरहित छे, अने कार्य करवामां समर्थ नथी. जुओ के कटक कुंडलादिनो जे अभाव छे ते कटक कुंडल उत्पन्न करवाने समर्थ नथी; अने तेमज देखवामां आवे छे. जो कटक कुंडलादिनो अभाव कटक कुंडलादि उत्पन्न करे तो तो जगत्मां कोइ दरिद्रि रहे नहि.

पूर्वपक्षः—घटाभाव जे छे ते मृत्पिंड छे, ते माटीना पिंडथी घट उत्पन्न थाय छे, तो पछी अमारा केहेवामां अयुक्तता शी छे? माटीनो पिंड तुच्छरूप नथी, कारण के ते पोताना स्वरूपथी विद्यमान छे, तो पछी अभाव पदार्थनी उत्पत्तिमां हेतु केम न थइ शके?

उत्तरपक्षः—आ पण तमारो पक्ष असमीचीन छे, कारण के माटीना पिंडनुं जे भावस्वरूप छे ते भाव अभावने अरसपरसमां विरोध होवाथी अभाव स्वरूप थइ शकतुं नथी. कारण के जो भावरूप छे तो अभाव केम थाय? अने जो अभावरूप छे तो भावरूप केम थाय? जो एम कहो के स्वस्वरूप अपेक्षायें भावरूप छे अने परस्वरूप अपेक्षायें अभाव रूप छे ते वास्ते भाव अभाव बंनेनां जुदां निमित्त होवाथी कांइपण दूषण नथी. आ केहेवाथी तो माटीनुं पिंड, भाव अभावरूप अनेकांतात्मिकरूपें तमने प्राप्त थयुं, परंतु आ अनेकांतात्मिकपणुं जैनोनाज मतमां शोभे छे. कारण के जैनमतवालाज सर्व वस्तुने स्वपरभावादि स्वरूपथी अनेकांतात्मिक माने छे; परंतु ते तमारा सरखा एकांतग्रहग्रस्त मतवालाओने शोभतुं नथी, जो एम कहो के माटीना पिंडमां जे पररूपनो अभाव छे, ते तो कल्पित छे, अने जे भावरूप छे ते तात्त्विक छे, ते कारणथी अनेकांतात्मिकवाद अमारा मतमां आवतो नथी, तो तो ते माटीना पिंडथी घट केम थशे? कारण के ते मृत्पिंडमां परमार्थथी घ-

टना प्रागभावनो अभाव छे. जो प्रागभाव विना पण ते मृत्पिंडथी घट थइ जाय तो तो सूत्रपिंडादिथी पण घट केम न थाय ? जेवो मृत्पिंडमां घट प्रागभावनो अभाव छे, तेवोज सूत्रपिंडादिमां पण घट प्रागभावनो अभाव छे. तथा ते मृत्पिंडथी खरशृंग केम थइ जतां नथी ? ते कारणथी पूर्वोक्त तमारुं केहेवुं कांइ नहि एवुं छे. तथा तमे जे कह्युं हतुं के जे वस्तु जे अवसरे जेनाथी थाय छे. तेज वस्तु कालांतरें पण तेज अवसरें तेनाथी नियतिरूपथी थती देखाय छे. आ जे तमारूं केहेवुं छे ते वास्तविक छे. कारण के कारणसामग्रीना अनादि नियमोथी कार्य पण तेज अवसरें तेनाथी नियतरूपेंज थाय छे. ज्यारे कारणशक्तिना नियमथी कार्य थइ गयुं, त्यारे प्रमाणपंथनो कुशल कोण एवो प्रेक्षावान् छे के प्रमाणथी वाधित नियतिनो अंगीकार करे इति नियतिखंडनं ॥

हवे पांचमा स्वभाववादिनुं खंडन लखियें छियें. स्वभाववादी एम कहे छे के, आ संसारमां सर्व भाव पदार्थ स्वभावथीज उत्पन्न थाय छे. आ स्वभाववादिओनो मत नियतिवादना खंडनथीज खंडन थइ गयो. कारण के जे दूषणो नियतिवादिना मतमां कहेलां छे ते सर्व दूषणो प्रायः आ मतमां पण समानज छे. जेम के आ जे तमारो स्वभाव छे ते भावरूप छे के अभावरूप छे ? जो कहो के भावरूप छे तो एकरूप छे के अनेकरूप छे ? इत्यादि सर्व दूषण नियतिनी जेम केहेवां.

एक बीजी पण वात छे के स्वभाव आत्माना भावने कहे छे. ते स्वभाव कार्यगतहेतु छे के कारणगत हेतु छे ? कार्यगत तो नथी, कारण के ज्यारे कार्य थइ जशे, त्यारे कार्यगत स्वभाव थशे, परंतु कार्य थयाविना कार्यगत स्वभाव केम थाय अने जो कार्य थइ गयुं तो तेनो हेतु स्वभाव केम थाय ? जे जेनो अलब्ध लाभ संपादन करवामां समर्थ होय ते तेनो हेतु छे, अने कार्य तो निष्पन्न थवाथी आत्मलाभ प्राप्त थयो छे; नहि तो ते स्वभावनेज अभावनो प्रसंग थइ जशे, त्यारे तो ते स्वभाव कार्यनो हेतु केवीरीतें थशे ? जो कहो के कारणगत हेतु छे तो ते तो अमने पण संमत छे. ते स्वभाव प्रतिकारण भिन्न छे, तेथीज माटीथी घट थाय छे, परंतु पट थतुं नथी, माटीना पिंडमां पटादि थवानो स्वभाव नथी. तेवीज रीतें तंतुओथी पटज थाय छे, घटादि थता नथी,

कारण के तंतुउंमां घट थवानो स्वन्नाव नथी. ते कारणथी जे तमे कह्युं हतुं के माटीथी घटज थाय छे, पटादि थता नथी, ते तो सर्व कारणगत स्वन्नाव मानवाथी सिद्ध थयेलानेज सिद्ध कर्युं छे. आ पक्ष अमारा मतने बाधक नथी. वली तमे जे कह्युं हतुं के मगमां रंधावानो स्वन्नाव छे, कांगडु (कोरडू) मां नथी, इत्यादि. तेपण कारणगत स्वन्नाव अंगीकार करतांज सर्व समीचीन थइ जायछे, जेम के एक कांगडु मग छे ते स्वकारणवशथी तेवा रूपवालो थयेल छे; हांडी, इंधन, कालादि सामग्रीनो संयोग छे तो पण रंधातो नथी, अने स्वन्नाव जे छे ते कारणथी अन्नेद छे तेथी सर्व वस्तु सकारणज छे. आ पक्ष सिद्ध छे. इति क्रियावादिना मतनुं खंमन.

हवे अक्रियावादिउंना मतमां जे यदृछावादिछे तेउंनुं एवुं केहेवुं छे के वस्तुउंना नियमपूर्वक कार्य कारणन्नाव नथी इत्यादि ते तेमनुं केहेवुं कार्यकारणना विवेचनवाली बुद्धिना रहितपणाने सूचवे छे. कारण के कार्यकारणने प्रतिनियतपणानो संन्नव छे. ते कहियेंछियें. शालुक (देडका) थी शालुक उत्पन्न थायछे ते निरंतर शालुकथीज थायछे, परंतु गोवर (छाण) थी थता नथी, अने गोवरथी जे शालुक उत्पन्न थायछे, ते निरंतर गोवरथीज उत्पन्न थायछे, परंतु शालुकथी थता नथी. वली आ बंने जातनां देडकांउं शक्तिवर्णादि विचित्र,ताथी तेमजपरस्पर जात्यंतर होवाथी एकरूप पण नथी. वली अग्निथी जे अग्नि उत्पन्न थायछे तेपण निरंतर अग्निथीज उत्पन्न थायछे, परंतु अरणीना काष्ठथी उत्पन्न थतो नथी, अने अरणीना काष्ठथी जे अग्नि उत्पन्न थायछे ते निरंतर अरणीना काष्ठथीज उत्पन्न थायछे परंतु अग्निथी उत्पन्न थतो नथी. वली बीजथी केलां उत्पन्न थवां इत्यादि अनेक बाबतोमां परस्पर न्निन्नता होवाथी तेनो खुलासो पण तेजछे. वली एक हकीकत एवी छे के जे केलां कंदथी उत्पन्न थायछे तेपण परमार्थथी तो बीजथीज थायछे, एटले परंपराए तो बीजज कारण छे. तेवीज रीतें वड आदिनी शाखापण एकदेशथी उत्पन्न थती छतां परमार्थथी तो बीजथीज उत्पन्न थायछे. विशेष हकीक एवी छे के शाखाथी जे शाखा उत्पन्न थाय छे ते उत्पन्न थनारी शाखानी हेतु शाखा छे एम लोक व्यवहार चालतो नथी, कारण के वडनुं बीजज सर्व शाखा, प्रशाखा

समुदायरूप वडनुं कारण छे एम जगत्मां प्रसिद्ध छे; तेवीज रीतें शाखाना एक जागथी उत्पन्न थयेल वड, परमार्थथी मूल, ते वडशाखारूपज छे, तेथी ते मूल पण बीजथीज उत्पन्न थयेल मानवुं जोइये ते कारणथी कोइपण स्थलें कार्यकारणजाव व्यजिचारी नथी. इति यदृछावादिमतखंडन.

हवे अज्ञानवादिना मतनुं खंडन लखिये छियें. अज्ञानवादी कहेछे के ज्ञान श्रेय नथी, कारण के ज्यारे ज्ञान थायछे, त्यारे परस्पर विवादना योगथी चित्तमां क्लेश थवाना कारणथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थाय छे. इत्यादि. अज्ञानवादिउनुं आ कथन मूर्खतासूचक छे. जुउ के बीजी वात तो दूर रही परंतु प्रथम अमे आपने बे सवाल पुछिये छियें, मुख्य ए छे के ज्ञाननो तमे जे निषेध करोछो ते शुं ज्ञानथी करोछो के अज्ञानथी करोछो? जो कहो के ज्ञानथी करियें छियें, तोपछी केम कही शको के अज्ञान श्रेयछे? आ कथनथी तो ज्ञानज श्रेय थयुं ज्ञानविना अज्ञानने स्थापन करवाने कोइ समर्थ नथी. जो पूर्वोक्त कथन स्वीकारशो तो तमारी प्रतिज्ञाने व्याघातनो प्रसंग आवशे. जो केहेशो के अज्ञानथी निषेध करिये छियें तो तेपण अयुक्त छे, कारण के अज्ञानमां ज्ञानने निषेध करवानुं सामर्थ्य नथी. कारण के अज्ञानमां कोइनेपण सिद्ध करवानी के बाध करवानी शक्ति नथी; ज्यारे अज्ञानमां ज्ञानने निषेध करवानुं सामर्थ्य नथी त्यारे ज्ञानज श्रेयछे एम सिद्ध थयुं, वली तमे कह्युं छे के ज्यारे ज्ञान थायछे त्यारे परस्पर विवादना योगथी चित्त, क्लेशादि जावने प्राप्त करेछे, तेपण आपनुं विना विचारनुं कथन छे. अमे परमार्थथी ज्ञानी तेनेज कहियें छियें के जेनो आत्मा विवेकथी पवित्र होय; अने जे ज्ञाननो गर्व न करे, तेमज अल्पज्ञानी थइ कंठ लगी मदिरापान करनारनी जेम उन्मत्त वचनो बोले अने सर्व जगत्ने तृण सदृश माने, ते परमार्थथी अज्ञानीज छे, कारण के तेने ज्ञाननुं फल प्राप्त थयुं नथी. ज्ञाननुं फल तो रागद्वेषादि दूषणोनो त्यागजावछे. ज्यारे तेम थयुं नहि त्यारे परमार्थथी तेनामां ज्ञानज नथी. उक्तं च ॥ तज्ज्ञानमेव न जवति, यस्मिन्नुदिते विजाति रागगणः ॥ तमसः कुतोस्ति शक्ति, र्दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुम् ॥१॥ एवा ज्ञानी विवेकथी पवित्र आत्मावावाला परजीवोने हित करवामां एकांत रसिया होय. एवा ज्ञानी कदापि विवाद करशे, तो पण प-

रजीवोना उपकार वास्तेज विवाद करशे; अने राजा आदि निपुण बुद्धि- वाला परीक्षकोनी परिषद् (सभा) मांज करशे, अन्यथा करशे नहि. तीर्थंकर गणधरादियें एवी रीतें वाद करवाने फरमान करेल छे. ज्यारे ते आज्ञा मुजब वाद थशे त्यारे चित्तनी मलिनता, के कर्मनो बंध, के तेथी थती दीर्घतर संसारनी वृद्धि केवी रीतें थशे? ज्ञानवान्नो जे वाद छे ते केवल वादि नरपति आदि परीक्षकोना अज्ञानने दूर करवा वास्तेछे स- म्यक्ज्ञान प्रगट थवाथी अत्यंत उपकार थायछे. ते कारणथी ज्ञानज श्रेय छे.

वली अज्ञानवादी कहे छे के तीव्र अध्यवसायथी जे कर्म उत्पन्न था- य छे, तेनाथी दारुणविपाक फल थाय छे, ते तो अमे मानियें छियें, परंतु अशुभ अध्यवसायनो हेतु ज्ञान नथी. अने अज्ञान तो अशुभ अध्यवसायनो हेतु देखवामां आवे छे. फक्त एटली वात छे के ज्ञान विद्यमान छतां कदाचित् कर्मदोषथी अकार्यमां प्रवृत्ति पण थाय तो पण ज्ञानना बलथी क्षणे क्षणे संवेग भावनाथी तीव्र अशुद्ध परिणाम थता नथी, ते तो अनुभवाय छे.

जेम कोइ पुरुष राजाआदिना दुष्ट फरमानथी विषमिश्रित अन्न, जाणतां छतां पण मनमां भयभीत थइ जमशे, तेवीजरीतें सम्यक्ज्ञानी पण कथंचित् कर्मदोषथी अकार्यपण आचरशे, तो पण संसारनां दुःखो- थी तेनुं मन भयभीत थशे, परंतु निःशंक थशे नहि अने संसारथी भ- यभीत थवुं तेनुंज नाम संवेग छे. तेथी संवेगवान् तीव्र अशुभ अध्य- वसायवाला थता नथी वली तमे जे कह्युं हतुं के अज्ञानज सत्पुरुषोने मोक्ष प्राप्त करवा वास्ते श्रेय छे, परंतु ज्ञान श्रेय नथी, ते कथनपण मूढतासूचक छे. जेनुं नामज अज्ञान छे ते श्रेय केवीरीतें करी शके छे? वली तमे कह्युं हतुं के अमे ज्ञानने मानी पण लहियें, जो ज्ञाननो नि- श्चय करवामां कोइ समर्थ होय तो; आ पण मूर्खवचन छे. अगर जो के सर्वमतवाला परस्पर भिन्नज ज्ञान अंगीकार करे छे, तो पण जेनुं व- चन दृष्टेष्टबाधित नथी, तेमज पूर्वापर व्याहत नथी, तेज सम्यक् रूप जाणवुं. तेवुं वचन तो भगवाननुंज कहेलुं होइ शकेछे. तेज प्रमाण छे. बीजानुं नहि. वली कह्युं हतुं के बौद्धपण पोताना बुद्ध भगवानने सर्वज्ञ

माने छे, इत्यादि. तेपण असत् छे, कारण के दृष्टेष्टथी तेउनां वचन बाधित छे. तेनुं स्वरूप आगल लखवामां आवशे.

वली तमे कह्युं हतुं के वर्धमानस्वामी जले सर्वज्ञ होय, परंतु ते वर्धमान स्वामिनां कथन करेलां आज आचारांग आदि शास्त्र छे. तेनी केम प्रतीति थाय? आ तमारी शंकानो पण खुलासो थइ गयो, कारण के बीजा कोइनुं एवुं दृष्टेष्टबाधारहित वचन नथी.

वली तमे कह्युं हतुं के, आचारांग आदि शास्त्र जे छे ते वर्धमान स्वामि सर्वज्ञनां कथन करेलां छे तोपण वर्धमान स्वामिना उपदेशनो आज अर्थ छे, अन्य नथी, इत्यादि. तेपण अयुक्त छे. कारण के जगवान्, वीतराग छे, अने जे वीतराग होय छे ते कोइने कपट उपदेश दइ जूलावो खवरावता नथी; कारण के विप्रतारणहेतु जे रागादि दोषनो समूह, ते जगवानमां नथी. वली सर्वज्ञ जे होय छे ते जाणेछे के आ शिष्य विपरीत समज्यो छे अने आ सम्यक् समज्यो छे. तेथी जे विपरीत समज्यो होय तेने मना करे. अने जगवानें गौतमादिने मना करी नथी तेथी सिद्ध थाय छे के गौतमादिए जे जाणेल छे ते सम्यक् जाणेलुं छे. वली जे कह्युं हतुं के गौतमादि छद्मस्थ छे इत्यादि. तेपण असार छे, कारण के छद्मस्थपण उक्त रीतिथी जगवानना उपदेशथीज यथार्थ वक्ता निश्चयें थइ शके छे. तेमज विचित्र अर्थोवाला शब्द पण जगवानेंज कहेल छे. ते शब्द जेवुं जेवुं प्रकरण होय तेवा तेवा अर्थना प्रतिपादक थइ शके छे. ते कारणथी कांइपण तेमां दूषण नथी. कारण के ते ते प्रकरणने अनुसारें तेवो तेवो अर्थ निश्चयपूर्वक थइ शके छे, अने गौतमादिए जे जे स्थलें जे जे शब्दनो जेवो जेवो अर्थ करेल छे, ते जगवानें निषेध करेल नथी, ते उपरथी जणाय छे के गौतमादिए यथार्थ जाणेलुं छे; अने शब्दोना अर्थपण यथार्थज करेला छे. अने जे कांइ गौतमादियें कहेलुं छे तेना अर्थनो पण आचार्योनी अविछिन्न परंपराथी आज पर्यंत तेवोज बोध थाय छे. एम तो नज केहेवुं के आचार्योनी परंपरा अमने प्रमाण नथी? कारण के अविपरीत याने सम्यक् अर्थ कथन करनारी आचार्योनी परंपराने जूठी ठरावबाने कोइ पण समर्थ नथी.

---

१ ठगवाना कारण रूप.

वली एक एवो सवाल छे के तमारो जे मत छे ते आगममूल छे के अनागममूल छे? जो कहो के आगममूल छे तो तो आचार्योनी परंपरा केवी रीतें अप्रामाणिक थइ शके छे? आचार्योनी परंपरा विना आगमनो अर्थज केवी रीतें जाणी शकाय? जो कहो के अनागममूल छे, तो तो उन्मत्तना विचित्र वचननी पेठे प्रामाणिक थशे नहि.

पूर्वपक्षः– अगर जो अमारो मत अनागममूल छे तोपण युक्तिसंयुक्त छे तेथी अमे मानियें छियें.

उत्तरपक्षः– अहो "दुरंतः स्वदर्शनानुरागः" केवो पोताना मतउपर तीव्र राग छे. कारण के आ पूर्वापरविरुद्ध जाषण तो अज्ञान मतनुं जूषण हशे?

पूर्वपक्षः– केवीरीतें अमारुं बोलवुं पूर्वापरविरुद्ध छे.

उत्तरपक्षः– युक्तियो जे होय छे ते ज्ञानमूलज होय छे, अने तमे तो अज्ञाननेज श्रेय मानो छो, तो पछी तमारा मतमां युक्तियो सत्य केवी रीतें होवानो संजव छे? तेथी तमे पूर्वापरविरुद्ध अर्थना जापक छो, ते कारणथी तमारो मत कांइ पण कामनो नथी. इति अज्ञानवादिमतखंडन.

हवे विनयवादिना मतनुं खंडन लखियेंछियें. जे विनयथीज मुक्ति माने छे तेपण मोहथी एकांतवादीज छे. जे मुक्तिमार्गमां प्रवर्त्तनारा छे तेउनो जे विनय करवो, तेज विनय मुक्तिनुं अंग छे.

अने "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग्गइति वचनात्" मुक्तिमार्ग तो सम्यग् दर्शन, ज्ञान, अने चारित्ररूप छे, एम तत्वार्थ सूत्रनुं प्रमाण छे. तेकारणथी ज्ञान आदिनो तथा ज्ञान आदिना आधारजूत बहुश्रुत आदि जे पुरुष छे, तेउनो विनय, बहुमान, तथा ज्ञान आदिनी वृद्धि करवी ते परंपराए मुक्तिनुं अंग थइ शके छे. परंतु सुर, नृपति आदिनो विनय तो संसारनो हेतु छे. कारण के जे जेनो विनय करे छे, ते तेना गुणोनुं बहुमान करेछे. अने सुर, नृपति प्रमुखमां विषयजोग प्रधान गुण छे. ज्यारे तेउनो विनय कर्यो त्यारे तो विनय करनारें जोगोने बहुमान आप्युं, अने ज्यारे जोगोने बहुमान आप्युं त्यारे दीर्घ संसार मार्गनी प्रवृत्ति करी ते कारणथी एकांत विनयथी जे मुक्ति मानेछे तेपण असत् वादीछे. कारण के ज्ञान आदिथी रहित साक्षात् मुक्तिनुं अंग नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्रथी रहित पुरुष, केवल पादपतन आदि विनयथी मुक्ति

प्राप्त करी शकतो नथी, परंतु ज्ञानआदिसहित होय तोज प्राप्त करी शके-छे. तेथी ज्ञान आदिज साक्षात् मुक्तिनां अंग थयां, विनय नहि.

पूर्वपक्षः– अमे केम जाणियें के ज्ञान आदिज मुक्तिनां अंग छे ?

उत्तरपक्षः– आ संसारमां मिथ्यात्व, अज्ञान, अने अविरति, आ त्रणथी आत्माने कर्मवर्गणानो संबंध थाय छे. अने कर्मनो जे क्षय थवो तेज मुक्ति छे. "मुक्तिः कर्मक्षयादिति वचनप्रामाण्यात्" अने कर्मनो क्षय तो त्यारे थशे के ज्यारे कर्मबंधनां कारणोनो उछेद थशे, अने कर्मनां कारण तो मिथ्यात्व आदि उपर बतावेलां त्रण छे. तेथी मिथ्यात्वना प्रतिपक्षि सम्यक्दर्शन, अज्ञानना प्रतिपक्षि सम्यक्ज्ञान, अने अविरतिना प्रतिपक्षी सम्यक् चारित्र, जे छे, तेउनी सेवा करतां थकां ज्यारे ते त्रणे प्रकर्ष भावने प्राप्त थशे, त्यारेज कर्मनां कारणो सर्वथा दूर थशे, अने ज्यारे कारणो दूर थशे, त्यारे निर्मूल कर्मोछेद थवाथी मुक्ति थशे. ते कारणथी ज्ञान आदिज मुक्तिनां अंग छे, परंतु विनय मात्र नथी. अने ज्ञान आदिनो विनय, ते परंपराथी मुक्तिनुं अंग छे, परंतु सक्षात् मुक्तिना हेतु तो ज्ञान आदिज छे- अने जैनशास्त्रमां कइक स्थलें "सर्वकल्याणभाजनं विनयः" एम जे लखेलुं छे ते ज्ञान आदिनी प्रवृत्ति निमित्तें छे. अने जो विनयवादीपण ए प्रमाणे माने तो विनयवादीपण अमारा मतमांज प्रवर्त्ते छे. अने विवादनो अभाव थाय छे. इति विनयवादिमतखंडन.आ समुच्चय (३६३) मतनुं किंचित्मात्रस्वरूप लखेल छे.

हवे भव्यजीवोने शीघ्रबोध थवावास्ते षड्दर्शनोनुं कांइक स्वरूप लखियें छियें. तेमां प्रथम बौद्धदर्शननुं स्वरूप कहियें छियें. बौद्धमतमां गुरुनुं लिंग आ प्रमाणे छे. १ मस्तकमुंडित २ चर्मआसन ३ कमंडलु ४ धातुरक्त वस्त्र, आ तेउनो वेष छे. अने शौचक्रिया अतिशय छे. कोमल शय्यापर सुवुं, सवारमां उठी पेय पीवुं, मध्याह्नकालें भात खावो, दिवसना बीजा भागमां पाणी पीवुं, द्राक्ष, खांड, साकर, खावी अर्धरात्रिमां मरण थाय तो मोक्ष; आ बौद्धोनुं वर्त्तन छे. तथा मनगमतां भोजन करवां, मनगमती शय्यापर सुवुं, आसनपर बेसवुं, स्थानमां रेहेवुं, एवी सुंदर सामग्रीथी मुनि सुंदर ध्यान करी शकेछे, तथा भिक्षापात्रमां जे कांइ पडे ते सर्व शुद्ध एम मानी मांसपण खाइ जाय छे, अने ब्र-

ह्मचर्यादि पोतानी क्रियामां बहुज दृढ होय ले. आ तेउनो आचार ले. १ धर्म, २ बुद्ध, ३ संघ, आ त्रणने रत्नत्रय कहेले, अने शासनना विघ्नने नाशकरनारी तारा देवी ले एम माने ले. तेमज विपश्यादि सात बौद्ध अवतार, जेउनी मूर्त्तिउना कंठमां त्रण त्रण रेखानां चिह्न होय ले, तेउने जगवान् माने ले, सर्वज्ञ माने ले.

वली बुद्ध जगवानने जे जे नामथी वर्णन करे ले ते लखियें लियें, १ बुद्ध, २ सुगत, ३ धर्म्मधातु, ४ त्रिकालवित् ५ जिन, ६ बोधिसत्त्व, ७ महाबोधी, ८ आर्य, ९ शास्ता, १० तथागत, ११ पंचज्ञान, १२ षडभिज्ञ, १३ दशार्ह, १४ दशभूमिग, १५ चतुस्त्रिंशज्जातकज्ञ, १६ दशपारमिताधर, १७ द्वादशाक्ष, १८ दशबल, १९ त्रिकाय, २० श्रीघन, २१ अद्वय २२ समंतजद्र, २३ संगुप्त, २४ दयाकूर्च, २५ विनायक, २६ मारजित्, २७ लोकजित्, २८ मुखजित्, २९ धर्मराज, ३० विज्ञानमात्रक, ३१ महामैत्र, ३२ मुनींद्र. आ बत्रीश नाम बुद्ध जगवाननां कहेले. वली सात बुद्धपण माने ले. १ विपशी, २ शिखी, ३ विश्वजू ४ क्रकुछंद, ५ कांचन, ६ काश्यप, ७ शाक्यसिंह. लेला शाक्यसिंह बुद्धनां नाम. १ शाकसिंह, २ अर्कबांधव, ३ राहुलसू ४ सर्वार्थसिद्ध, ५ गौतम, ६ मायासुत, ७ शुद्धोदन सुत, ८ देवदत्ताग्रज. तथा १ जिक्षु, २ सौगत, ३ शाक्य, ४ शौद्धोदनी, ५ सुगत, ६ तथागत, आ शून्यवादि बौद्धनां नाम ले. तथा १ शौद्धादनी, २ धर्मोत्तर, ३ अर्वट, ४ धर्मकीर्त्ति, ५ प्रज्ञाकर, ६ दिग्नाग, ७ रामट. इत्यादि तेमना ग्रंथ करनारा गुरु ले. तथा १ तर्कजापा, २ न्यायबिंडु, ३ हेतुबिंडु, ४ अर्वट, ५ तर्ककर्मलशेत, ६ न्यायप्रवेश, ७ ज्ञानपारं. इत्यादि तेउनां तर्कशास्त्रोनां नाम ले. तथा बौद्धोनी चार शाखा लेः १ वैजाषिक, २ सौत्रांतिक ३ योगाचार, ४ माध्यमिक.

हवे बौद्धमतनुं स्वरूप लखियें लियें. बौद्ध चार वस्तु माने ले. १ डुःख, २ समुदाय, ३ मार्ग, ४ निरोध. तेमां जे डुःख ले ते पांच स्कंध रूप ले. तेनां नाम १ ज्ञान स्कंध, २ वेदना स्कंध, ३ संज्ञा स्कंध, ४ संस्कार स्कंध, ५ रूप स्कंध. आ पांच विना आत्मा आदि बीजो कोइपण पदार्थ नथी. आ पांच स्कंधनो अर्थ, १ रूपविज्ञानं, रसविज्ञानं, इत्यादि निर्विकल्प जे विज्ञान ले, ते ज्ञान स्कंध. २ सुखाडुःखा, अडुःखसुखा,

आ वेदना स्कंध छे, आ वेदना पूर्वकृत कर्मथी थायछे. ३ सविकल्पक ज्ञान ते संज्ञास्कंध. ४ पुण्य, अपुण्यादि धर्म समुदाय ते संस्कार स्कंध, आ संस्कारना प्रवोधथी पूर्व अनुभवनुं स्मरणादि थाय छे. ५ पृथ्वी, धातु आदि, तेमज रूपादि, आ रूपस्कंध छे. आ पांचेथी न्यारो आत्मादि कोई पदार्थ नथी. आ पांचे स्कंध, सर्व एक क्षणमात्र रहे छे, नित्य नथी, तेम विशेष वखत पण रेहेनारां नथी. आ दुःख तत्वना पांच भेद कह्या.

हवे दुःख तत्वनां कारणभूत समुदाय तत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. आ जगत्मां रागद्वेषनो जे समूह उत्पन्न थाय छे, ते रागद्वेषनो समूह केवो छे ? "आत्मा आत्मीयभावाख्यः" आ हुं छुं आ मारुं छे, एवो जे संबंध, तथा आ परछे, आ परनी वस्तु छे, एवो जे संबंध तेज छे नाम जेनुं, तेनाथी जे राग द्वेषादि उत्पन्न थाय छे, तेनुं नाम समुदाय तत्व छे. आ दुःख अने समुदाय वेज संसारनी प्रवृत्तिना हेतु छे.

आ बंनेना विपक्षीभूत १ मार्ग, २ निरोध, तत्व छे; तेनुं स्वरूप लखियें छियें. "परमनिःकृष्टं कालं क्षणं" क्षणमां जे थाय ते क्षणिक छे. सर्व पदार्थ क्षण मात्र रही नाश पामे छे. आत्मा के कोई सर्वकाल स्थायीनथी. पूर्व क्षणनो नाश थवाथी तेना सरखो उत्तरक्षण उत्पन्न थायछे. पूर्व ज्ञानमां उत्पन्न थयेली वासना ते उत्तर ज्ञानमां शक्ति छे. अने क्षणोनी परंपरापूर्वक जे मानसी प्रतीति थाय तेनुं नाम मार्ग छे. ते निरोधनुं कारण जाणवुं. हवे निरोध तत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. निरोध एटले मोक्ष. चित्तनी जे निःक्लेश अवस्था तेनुं नाम निरोध छे. नामांतरथी मोक्ष केहेवाय छे. आ दुःखादि चारेने आर्यसत्व कहे छे. अने आ जे चारे तत्व अनंतर कहेल छे ते सौत्रांतिक बौद्धमतनी अपेक्षाथी छे.

हवे जो भेदरहित समुच्चय बौद्धमतनी विवक्षा करियें तो बौद्धमतमां बार पदार्थ छे. तेमां १ श्रोत्र, २ चक्षु, ३ घ्राण, ४ रसन, ५ स्पर्शन, आ पांच इंद्रिय, अने पांच इंद्रियना पांच विषय, तथा १ चित्त, २ शब्दायतन. धर्म जे सुख दुःखादि तेनुं जे आयतन (घर). ते शुं छे. आ सर्व बारतत्वनुं नाम आयतन कहे छे. अने आ बारे आयतन क्षणिक छे. पूर्वोक्त प्रकारें चार आयतन सौत्रांतिक मतनां, अने सामान्य प्रकारें बार आयतन बौद्धमतनां कह्यां. बौद्धमतमां प्रमाण बे छे. एक प्र-

त्यक्ष, बीजुं अनुमान. आ बे प्रमाणज माने छे. इतिसंक्षेपमात्रं बौद्धदर्शनं.

हवे नैयायिकदर्शन लखियें छियें. नैयायिकमतनुं बीजुं नाम गौतम मत पण छे. आ नैयायिकोना गुरु १ दंड राखे छे, २ मोटी कोपीन पेहेरेछे, ३ कांबली उढेछे, ४ जटा राखेछे, ५ शरीरें भस्म लगावेछे, ६ नीरस आहार करेछे, ७ खभापर तुंबी राखेछे, ८ प्रायः वनमां रहेछे, ९ आतिथ्य कर्ममां तत्पर होय छे, १०कंद मूल, फल खाय छे, ११ केटलाएक स्त्री राखेछे, अने केटलाएक स्त्री राखता नथी,१२ जे स्त्री राखता नथी ते उत्तम गणायछे, १३ पंचाग्नि तापेछे,१४ जटामां प्राणलिंग धरे छे,१५ उत्तर संयम अवस्था ज्यारे प्राप्त थाय छे त्यारे नग्न थई परिभ्रमण करेछे, १६ सवारमां दांत, हाथ, पग विगेरे धोई शिवनुं ध्यान करेछे, १७ भस्म त्रण त्रण वखत अंगने स्पर्श करे छे, १८ भक्तजन तेउने वंदना करे, ते " ॐ नमः शिवाय कहेछे, १९ गुरुभाईने शिवाय नमः एम कहे छे, तेउनुं एम पण केहेवुं छे के जे पुरुष शैवी दीक्षा बार वर्ष सुधी पाली पछी ते छोडी दीये, अने दास दासी थई जाय तो पण निर्वाण पद प्राप्त करेछे. तेउना देव शंकर छे, ते शंकर सर्व सृष्टिना संहारकर्त्ता छे.

शंकरना अढार अवतार माने छे, तेनां नाम लखिये छियें १ नकुलीश, २ कौशिक, ३ गार्ग्य, ४ मैत्र, ५ कौरुष, ६ ईशान, ७ अपरगार्ग्य, ८ कपिलांड, ९ मनुष्यक, १० अपरकुशिक, ११ अत्रि, १२ पिंगलाक्ष, १३ पुष्पक, १४ बृहदाचार्य, १५ अगस्ति, १६ संतान, १७ राशिकर, १८ विद्यागुरु. आ अढार तेना तीर्थेशछे. तेनी बहुज सेवा करेछे, तेनो पूजन, प्रणिधानविधि तेना शास्त्रथी जाणी लेवो.

अक्षपाद मुनि अर्थात् गौतममुनि तेमना गुरुछे. तेना मतमां भरट पूजनीय छे, ते कहेछे के, देवतानी सन्मुखरही नमस्कार न करवो. नैयायिक मतमां जेवुं लिंग, वेष देवादि स्वरूपछे, तेवुंज वैशेषिक मतमां पण छे कारणके नैयायिक, वैशेषिक मतनां प्रमाण तथा तत्त्वोमां थोडोज भेद छे. तेवास्ते आ बंने मत सरखांज छे. आ बंने तपस्वी केहेवाय छे. अने तेना शैवादिक चार भेद छे. १ शैव, २ पाशुपत, ३ महाव्रतधर ४ कालमुख. तेना अवांतर भेद भरट, भक्तलैंगिक, तापसादि छे, भरटादिउने व्रत ग्रहणमां ब्राह्मणादि वर्णोनो नियम नथी, परंतु जेनी शिवविषे भक्ति

होय, ते व्रती जरटादि थायछे, परंतु नैयायिक सदा शिवजक्त होवाथी तेउंनुं नाम शैव केहेवाय छे, अने वैशेषिको पाशुपत केहेवाय छे.

आ नैयायिकोना मतमां १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ शब्द, आ चार प्रमाण छे अने तेउं १ प्रमाण, २ प्रमेय, ३ संशय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत,६सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ९ निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंडा, १३ हेत्वाजास, १४ छल, १५ जाति, १६ निग्रहस्थान. आ सोल पदार्थ मानेछे. तेनो विस्तार अतिशय होवाथी अहिंयां करेल नथी. आत्यंतिक डुःखोनो जे वियोग तेने मोक्ष कहेछे. तेना अक्षपाद मुनिकृत न्यायसूत्र, २ वात्स्यायनमुनिकृत जाष्य, ३ उद्योतकर मुनिकृत न्यायवार्तिक, ४ वाचस्पतिकृत तात्पर्यटीका, ५ उदयनकृत तात्पर्यपरिशुद्धि ६ श्रीकंठाजयतिलकोपाध्यायकृत न्यायालंकारवृत्ति, ७ जासर्वज्ञप्रणीत न्यायसार, तेनापर अढार टीका छे, तेमां न्यायजूषण नामनी टीका प्रसिद्ध छे ८ जयंतरचित न्यायकलिका, ९ न्यायकुसुमांजलि. आ नैयायिकना तर्कग्रंथछे. इति नैयायिकमतसंक्षेपवर्णन.

हवे वैशेषिकमत पण अत्र लखियें छियें. वैशेषिक मत नैयायिक तुल्य छे, परंतु विशेष एटलो छे के आ मतवाला बे प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान. अने तत्व ७ माने छे. १ ड्रव्य,२ गुण,३ कर्म,४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय. आ ७ जावरूप मानेछे. तेउंनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवुं होय तो वैशेषिक मतना ग्रंथो तथा तपगछाचार्य श्रीगुणरत्नसूरिविरचित, षड्दर्शनसमुच्चय ग्रंथनी टीका जोवी. वैशेषिक मतना तर्कग्रंथ.१ श्रीधर आचार्यकृत कंदली ६००० श्लोक. २ वैशेषिक सूत्र ३००० श्लोक, ३ प्रशस्तकरजाष्य ७०० श्लोक, ४ व्योमशिवाचार्यकृत व्योममती टीका ९००० श्लोक, ५ उदयनकृत किरणावली ६००० श्लोक, ६ श्रीवत्स आचार्यकृत लीलावती टीका ५००० श्लोक ७ आत्रेय तंत्र, हाल विछेद गयेलछे. वैशेषिक मतवाला कहेछे के शिवजीए उलूकनुं रूप धरीने कणाद मुनिपासे वैशेषिकमत प्रकाश कर्यो. तेथी तेनुं बीजुं नाम औलुक्य पण छे. इति वैशेषिकमतवर्णन.

हवे सांख्य मत लखियें छियें. सांख्य मतना साधुउंनुं स्वरूप जाणवा माटे प्रथम तो तेमनां लिंगादि लखियें छियें. तेउ त्रिदंडी पण होय छे,

कोपीन पेहेरे छे, धातुरक्त वस्त्र राखे छे, कोई शिरपर शिखा राखे छे, कोई जटा राखे छे, कोई मस्तक पर क्षौरमुंडकरावे छे, मृगचर्मनुं आसन राखे छे, ब्राह्मणना घरनुं अन्न खाय छे, कोई पांचज ग्रास खाय छे, बार अक्षरनो जाप करे छे, तेउना भक्त ज्यारे गुरुने वंदना करेछे त्यारे " ॐ नमो नारायणाय " एम कहे छे, त्यारे गुरु तेउने " नमो नारायणाय " एम कहे छे, अने महाभारतमां जेनुं नाम " बीटा " लखेल छे, काष्ठनी मुखवस्त्रिका मुखना निःश्वासना निरोध वास्ते राखे छे, जेथी मुखश्वासथी जीवहिंसा न थाय. ॥ श्लोक ॥ ते प्राणादनुयातेन, श्वासेनैकेन जंतवः ॥ हन्यंते शतशो ब्रह्म, न्नणुमात्राक्षरवादिनः ॥१॥ सांख्य गुरु जलना जीवोनी दया वास्ते पाणी गलवा सारु पोतानी पासे गलणुं राखेछे, अने पोताना भक्तोने पाणी गलवा सारु त्रीश आंगल लांबुं अने वीश आंगल पोहोलुं अने जाडुं एवुं गलणुं राखवानो उपदेश करेछे. वली जे जीव पाणी गलवा पछी निकले ते तेज पाणीमां पाछा प्रक्षेप करे छे, कारण के मीठापाणीना पूरा खारा पाणीमां मरी जाय छे, अने खारा पाणीना पूरा मीठा पाणीमां मरी जाय छे. तेथी जुदां जुदां पाणी एकठां करता नथी. पाणीना सूक्ष्म एक बिंदुमां जेटला जीव छे ते जीवोनी काया जो भ्रमर समान बनाववामां आवे तो ते जीवो त्रण लोकमां समाय नहि. आ तेउनो पाणी गलवानो विचार छे.

सांख्य बे प्रकारना छे, एक प्राचीन, बीजा नवीन. नवीननुं बीजुं नाम पातंजलपण छे. प्राचीन सांख्य ईश्वरने मानता नथी. नवीन सांख्य ईश्वरने माने छे. जे निरीश्वर छे ते नारायणने पर माने छे, अने तेना जे आचार्य छे ते विष्णु प्रतिष्ठाकारक चैतन्यप्रमुख शब्दोथी केहेवाय छे. सांख्य मतनुं स्वरूप बतावनारा आचार्यनां नाम. कपिल, आसुरि, पंचशिख, भार्गव, उलूक, ईश्वर, कुल. तेउ शास्त्रकर्त्ता छे. सांख्यमत वाला कापिलपण केहेवाय छे. तथा कपिलनुं परमर्षि एवुं बीजुं नाम छे, तेथी तेउ पारमर्षा पण केहेवाय छे. बनारसमां तेउ संख्याबंध छे. मास उपवास पण करे छे. ब्राह्मण जे छे ते अर्चिमार्गथी विरुद्ध धूममार्गानुगामी छे, अने सांख्य अर्चिमार्गानुयायी छे; ब्राह्मणोने वेद पर प्यार छे तेथी यज्ञमार्गानुयायी छे, अने सांख्य हिंसाथी पूर्ण, एवा जे वेद तें-

त्वगुणनुं चिह्न प्रसन्नता, २ रजोगुणनुं चिह्न संताप, ३ तमोगुणनुं चिह्न दीनपणुं. हवे १ प्रसाद, २ बुद्धिपाटव, ३ लाघव, ४ प्रश्रय. ५ अनभिष्वंग, ६ अद्वेष, ७ प्रीत्यादि, आ सत्वगुणनां कार्यलिंग छे, १ ताप, २ शोष, ३ भेद ४ चलचित्त, ५ स्तंभ, ६ उद्वेग, आ रजोगुणनां कार्यलिंग छे. तथा १ दैन्य, २ मोह, ३ मरण, ४ असादन, ५ बीभत्सा, ६ ज्ञान गौरवादि, ७ आ तमोगुणनां कार्यलिंग छे. कार्योथी सत्त्वादि गुणनो भास थाय छे. तथा लोकमां जे कांइ सुख उपलब्ध थाय छे, जेम के १ आर्जव, २ मार्दव, ३ सत्य, ४ शौच, ५ लज्जा, ६ बुद्धि, ७ क्षमा, ८ अनुकंपा, प्रसादादि, आ सर्व सत्त्वगुणनां कार्य छे; तेमज जे कांइ दुःख उत्पन्न थाय छे जेम के १ द्वेष, २ द्रोह, ३ मत्सर ४ निंदावचन, ५ बंधन, तापादिस्थान, आ सर्व रजोगुणनां कार्य छे; तेमज जे कांइ मोह उपलब्ध थाय छे, जेमके १ अज्ञान, २ मद, ३ आलस्य, ४ भय, ५ दैन्य, ६ कृपणता, ७ नास्तिकता, ८ विषाद, ९ उन्माद, स्वप्नादि आ सर्व तमोगुणनां कार्य छे. आ सत्त्वादि परस्पर उपकारी त्रण गुणोथी सर्व जगत् व्याप्त छे; परंतु ऊर्ध्वलोकमां देवताउमां प्रधानपणे सत्त्वगुण छे, अने अधोलोक तिर्यंच, नरकविषे प्रधानपणे तमोगुण छे, तथा मनुष्यमां प्रधानपणे रजोगुणछे. आ त्रणे गुणोनी जे सम अवस्था तेनुं नाम प्रकृतिछे. ते प्रकृतिनां अपरनाम प्रधान, अव्यक्त एमपण छे. प्रकृति नित्यस्वरूप छे. " अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावं कूटस्थं नित्यं " आ नित्यनुं लक्षण छे. तथा आ प्रकृति जे छे, ते अन्वय, असाधारणी, अशब्दा, अस्पर्शा, अरसा, अगंधा, अव्यया, केहेवाय छे. जे मूल सांख्यछे ते दरेक आत्मानी साथ जुदा जुदा प्रधान मानेछे; अने जे नवीन सांख्यछे ते सर्व आत्माउमां एक, नित्य, प्रधान मानेछे. प्रकृति अने आत्माना संयोगथी सृष्टि थाय छे, ते कारणथी सृष्टि थवानो क्रम लखियें छियें.

ते प्रकृतिथी बुद्धि उत्पन्न थायछे.गाय आदि सन्मुख देखवाथी,आ गायछे, घोडो नथी, तथा आ स्थाणु छे, पुरुष नथी, एवो जे निश्चयरूप अध्यवसाय थाय छे तेनेबुद्धि कहेछे बीजुं तेनुं नाम महत्पण कहेछे. ते बुद्धिनां आठ रूप छे. १ धर्म, २ ज्ञान, ३ वैराग्य, ४ ऐश्वर्य, आचार सात्विक

तेह१ सुकुंकाष.

बुद्धिनां रूपछे . तथा १ अधर्म, २ अज्ञान, ३ अवैराग्य, ४ अनैश्वर्य, आचार तामसी बुद्धिरूपछे. ते बुद्धिथी अहंकार उत्पन्न थायछे. ते अहंकारथी सोल गुणनो समूह उत्पन्न थाय छे ते सोल गुण आ छे. १ स्पर्शनं, त्वक्, २ रसनं जिव्हा, ३ घ्राणं, नासिका, ४ चक्षुः, लोचन, ५श्रोत्रं, श्रवण, आ पांचेने बुद्धींद्रिय कहेछे, कारण के आ पांचे पोत पोताना विषयने जाणेछे. तथा पांच कर्मेंद्रियछे. १ पायु, गुदा, २ उपस्थ, पुरुष स्त्रीनुं चिह्न ३ वच, कंठादि आठस्थानथी उच्चाराय ते शब्द, ४ हाथ, ५ पग, आ पांचेथी पांच काम थायछे, १ मलोत्सर्ग, २ संजोग ३ वचन, ४ ग्रहण, ५ चलन, ते कारणथी आ पांचने कर्मेंद्रिय कहेछे. ११ मन, मन ज्यारे बुद्धींद्रियने मलेछे, त्यारे बुद्धींद्रियरूप थइ जायछे; अने कर्मेंद्रियने मलेछे त्यारे कर्मेंद्रियरूप थइ जायछे. आ मन जे छे ते संकल्पवृत्तिछे. तथा अहंकारथी पांच तन्मात्रा जेनी सूक्ष्म संज्ञा छे ते उत्पन्न थायछे. १ रूप तन्मात्रा, ते शुक्लकृष्णादि रूपविशेष, २ रसतन्मात्रा, ते तिक्तादि रस विशेष, ३ गंधतन्मात्रा, ते सुरभ्यादि गंधविशेष, ४ शब्दतन्मात्रा, ते मधुरादि शब्दविशेष, ५ स्पर्शतन्मात्रा, ते मृडुकाठिन्यादि स्पर्शविशेष, आ षोडशक गण छे. हवे पांचतन्मात्राउथी पांचभूत उत्पन्न थायछे, ते कहेछे. १ रूप तन्मात्राथी अग्नि उत्पन्न थायछे, २ रसतन्मात्राथी जल उत्पन्न थायछे, ३ गंध तन्मात्राथी पृथ्वी उत्पन्न थायछे, ४ शब्द तन्मात्राथी आकाश उत्पन्न थायछे ५ स्पर्श तन्मात्राथी वायु उत्पन्न थायछे एम पांच तन्मात्राओथी पंच भूत उत्पन्न थायछे. एम सर्व मली चोवीश तत्व प्रधान निवेदन कर्यां. " अने अकर्त्ता विगुण भोक्ता " एवुं पुरुष तत्व पचीशमुं नित्य चिद्रूप मानेछे. चोवीश तत्व रूप प्रधान. १ प्रकृति २ महान्, ३ अहंकार ८ पांच ज्ञानेंद्रिय, १३ पांच कर्मेंद्रिय, १४ मन, १९ पांच तन्मात्रा, २४ पांच भूत. एम चोवीश तत्व छे. तेमांथी प्रथम जे प्रकृति छे ते अनुत्पन्न होवाथी बुद्धि आदि सात प्रथमनां कारण छे, अने सोल पाछलनां कार्य छे, तेथी प्रथमनी सात प्रकृति विकृति केहेवाय छे, अने षोडशकगण कार्यरूप होवाथी विकृतिरूपछे; अने पुरुष जे छे ते न प्रकृति, न विकृति छे. नथी कोइथी उत्पन्न थयेल के नथी कोइने उत्पन्न करतो, ते कारणथी तेम्रो छे. ॥ तथाचेश्वरः कृष्णः

सांख्यसप्ततौ ॥ "मूलप्रकृतिरविकृति, महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त ॥ षोडशकश्च विकारो, न प्रकृतिर्नविकृतिः पुरुष इति ॥ अर्थः–ईश्वर कृष्ण, सांख्य मतना आचार्य सांख्यसप्ततिग्रंथमां लखेछे के. मूलप्रकृति अविकृति छे महत् आदि सात प्रकृतिविकृति छे, षोडशक विकार विकृति छे, अने पुरुष न प्रकृति, न विकृतिछे. तथा महदादि, प्रकृतिना विकार छे, ते व्यक्त थइने फरी अव्यक्तपण थइ जाय छे. ते अनित्यहोवाथी पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थइ जायछे; अने प्रकृति अविकृति रूप होवाथी पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थती नथी. तथा महत् आदिनुं अने प्रकृतिनुं स्वरूप सांख्य मतवाला आ प्रमाणे मानेछे. १ हेतुमत्, २ अनित्य, ३ अव्यापक, ४ सक्रिय, ५ अनेक, ६ आश्रित, ७ लिंग, ८ सावयव, ९ परतंत्र, १० व्यक्त. प्रकृति तेनाथी विपरीत छे. १ हेतुमत्, कारण वाला छे, महत् आदि, २ अनित्य, उत्पत्ति धर्मवालाछे, ३ अव्यापक, बुद्धि आदि अव्यापि छे, सर्वगत नथी, ४ सक्रिय, अध्यवसायसंयुक्त वर्तेछे, ते हेतुथी क्रिया सहित, सव्यापार चालवा वालांछे, ५ अनेक, त्रेवीश प्रकारना छे, तेथी, ६ आश्रित. आत्माना उपकार वास्ते प्रधानने अवलंबीने रहेछे ७ लिंग, जे जेमांथी उत्पन्न थायछे ते तेमांज लय पामे छे, "लयंक्वयं गच्छतीति लिंगं," पांच भूत, पांच तन्मात्राउमां लय पामेछे, पांच तन्मात्रा, दश इंद्रिय, अने मन, अहंकारमां लयपामेछे, अहंकार बुद्धिमां लयपामेछे, अने बुद्धि प्रकृतिमां लय पामेछे; प्रकृतिनो कोइमां पण लय थतो नथी. ८ सावयव, शब्द रूप, रस, गंध, स्पर्शादि संयुक्त छे, ९ परतंत्र, कारणने आधीन होवाथी, १० व्यक्त, तेवीज रीतें महदादि व्यक्त छे; प्रकृति तेनाथी विपरीत, सुगम छे. आ अल्पमात्र स्वरूप बतावेल छे, विस्तारथी जाणवुं होयतो सांख्य सप्तति आदि शास्त्रो जोवां.

हवे पचीशमा पुरुष तत्वनुं स्वरूप कहियें छियें. पुरुष "अकर्त्ता विगुणोभोक्ता, नित्यचिदभ्युपेतश्च" छे. पुरुषतत्व आत्माने कहे छे. १ आत्मा, विषय सुखादिनां कारण पुण्यादि करतो नथी तेथी "अकर्त्ता छे; कारण के आत्मा तृणमात्र पण तोडवाने समर्थ नथी; अने कर्त्ता प्रकृति छे, कारण के प्रकृतिमां प्रवृत्तिस्वभाव छे; तथा २ "विगुणः" सत्त्वादि गुणरहित छे, कारण के सत्त्वादि प्रकृतिना धर्म छे, तथा ३ "भो-

क्ता " आत्मा भोक्ता, भोगवनार छे, भोक्ता पण साक्षात् नथी, परंतु प्रकृतिना विकारभूत उभय मुख दर्पणाकार जे बुद्धि छे, तेमां संक्रमण थयां थकां निर्मल आत्मस्वरूपविषे सुख दुःखोना प्रतिबिंब उदय मात्रथी भोक्ता केहेवाय छे. " बुद्ध्यवसितमर्थं पुरुषश्चेतत " इतिवचनात्॥ जेम जासुस फुलनी समीप रेहेवाना कारणथी स्फटिकमां रक्तादि केहेवामां आवे छे, तेम प्रकृतिना निकट संबंधथी पुरुषपण सुख दुःखोनो भोक्ता केहेवाय छे. सांख्य मतना वादमहार्णवमां पण कहे छे " बुद्धिदर्पणसंक्रांतं, समर्थप्रतिबिंबकं ॥ द्वितीयं दर्पणं कल्पे, पुंसिअध्यारोहति ॥ १ ॥ तदेव भोक्तृत्वमस्य नत्वात्मनोविकारापत्तिरिति ॥ आनो तात्पर्य उपर बतावेल छे.

तथा कपिलनो शिष्य आसुरिपण कहे छे ॥ श्लोक ॥ विवक्तेदृक्परिणतौ, बुद्धौ भोगोऽस्य कथ्यते ॥ प्रतिबिंबोदयः स्वछे, यथा चंद्रमसोंभसि ॥ १ ॥ तथा विंध्यवासी सांख्याचार्य आत्माने तेवीज रीतें भोक्ता कहे छे. पुरुष अविकृत आत्माज छे, स्वनिर्भास अचेतन मन कर्त्ता छे. ते मननी निकटताथी उपाधि स्फटिकवत् देखाय छे; "नित्या या चिच्चेतना तथाऽभ्युपेतः " आ केहेवाथी पुरुषज चैतन्यस्वरूप छे. " नतु ज्ञानस्य " परंतु ज्ञान नथी, कारण के ज्ञाननो धर्म बुद्धि छे. तथा पतंजलि पण एमज कहे छे. तथा " पुमान् " आ जे एक वचन छे ते जातिनी अपेक्षाथी छे; परंतु आत्मा अनंत छे, कारण के जन्म मरणादि कारणोना नियम, तथा धर्मादि अनेक प्रवृत्ति देखवामां आवे छे. ते सर्व अनंत आत्मा सर्वगत तेमज नित्य छे. ॥ उक्तं च ॥ अमूर्त्तिश्चेतनो भोगी, नित्यः सर्वगतोऽक्रियः ॥ अकर्त्ता निर्गुणः सूक्ष्म, आत्मा कापिलदर्शनइति॥

सांख्यमत त्रण प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द. ते मतनुं नाम सांख्य अथवा शांख्य शा वास्ते कहे छे ? तेनो हेतु एवो छे के, संख्या प्रकृति तत्व पचीश रूप तेने जे जाणे अथवा भणे. ते सांख्य. तथा जो तालु शकाग्रथी बोलियें तो शांख्य एम केहेवाय. तेउना मतमां शंखध्वनि छे एम वृद्धोनो आम्नाय छे तेथी शांख्य नाम छे. वली शंख नामे कोई आद्य पुरुष थया छे. "तस्यापत्यं पौत्रादिरिति गर्गा

दित्वादय स्त्री प्रत्यये शांख्या पामि इदं दर्शनं शांख्यं शांखं वा " ॥ इति सांख्यमतसंक्षेपवर्णनं.

हवे मीमांसकमत लखियें ठियें. तेनुं बीजुं नाम जैमिनीय पण कहे-ठे. आ मतवाला सांख्यमतनी पेठे एकदंडी, त्रिदंडी होय ठे, धातुरक्त वस्त्र पहेरे ठे. मृगचर्मासन पर बेसे ठे, कमंमल राखेठे, शिरमुंमित करावेठे, संन्यासी प्रमुखद्विज आ मतमां होय ठे, वेद तेमना गुरु ठे, परंतु बीजा कोई वक्ता गुरु नथी. ते पोते पोताने संन्यस्तं संन्यस्तं कहे ठे, यज्ञोपवीतने धोईने त्रणवार तेनुं जल पीयेठे. आ मीमांसक बे प्रकारना ठे, एक याज्ञिकादि, ते पूर्वमीमांसक ठे, अने बीजा उत्तरमीमांसावादी ठे. याज्ञिकादि, कुकर्मना तजनार, यजनादि षट्कर्मना करनार, ब्रह्मसूत्रना धारक, गृहस्थाश्रममां स्थित, शूद्रनुं अन्नादि तजनार ठे, तेना पण बे भेद ठे, एक भट्ट, बीजा प्रभाकर; भट्ट ठ प्रमाण माने ठे, अने प्रभाकर पांच प्रमाण माने ठे. उत्तरमीमांसक वेदान्ति ठे, ब्रह्म अद्वैतज माने ठे " सर्वमेवेदं ब्रह्मेति भाषंते " तेपर प्रमाण आपे ठे के एकज आत्मा सर्वशरीरोमां उपलब्ध थाय ठे. ॥ श्लोक ॥ एक एवहि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः ॥ एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचंद्रवत् ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ " पुरुष एवेदं सर्वयद्भूतं यच्चभाव्यमिति वचनात् ॥ आत्मामांज लयथवुं तेनुं नाम मुक्ति ठे. बीजी कांइ मुक्ति नथी. ते मीमांसक द्विजज जेनुंनाम भगवत् ठे, ते चार प्रकारना ठे; १ कुटीचर, २ बहूदक, ३ हंस, ४ परमहंस. तेमां १ त्रिदंडी, सशिखा, ब्रह्मसूत्री, गृहत्यागी, यजमान, परिगृही, एकवार पुत्रना घरमां भोजन करे ठे, कुटीमां वसेठे तेने कुटीचर कहेठे, २ तुल्यवेष, पूर्वोक्त विप्रना घरमां नीरस भिक्षा भोजी विष्णुजापपर नदीना तीरपर रहे ठे, तेने बहूदक कहे ठे, ३ ब्रह्मसूत्र, शिखारहित, कषाय वस्त्र, दंडधारी, गाममां एकरात्रि अने नगरमां त्रण रात्रि रहे ठे, अग्नि ज्यारे धूमरहित थाय त्यारे ब्राह्मणना घरमां भोजन करे ठे अने तपथी शरीर शोषण करी, देशोमां फरता रहे ठे, तेने हंस कहे ठे हंसनेज ज्यारे ज्ञान थाय ठे, त्यारे चारे वर्णना घरमां भोजन करे ठे, पोतानी इछाथी दंड राखे ठे, ईशान दिशा सन्मुख जाय ठे जो शक्तिहीन थई जाय तो अनशन ग्रहण करे ठे, ४ वेदांत एकध्यायी, ते

परमहंस; केहेवाय छे; आ चारेमां पूर्वथी परस्पर अधिक चारे केवल ब्रह्माद्वैतवाद साधवामां व्यसनी छे, इत्यादि आ मतनुं स्वरूप छे.

हवे पूर्वमीमांसावादिर्जनो मत विशेषथी लखियें छियें. जैमिनीय वाला कहे छे के, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी वीतराग, सृष्टिआदिना कर्त्ता, आ पूर्वोक्त विशेषणयुक्त कोइपण देव नथी, के जे देवनुं वचन प्रामाणिक होय, प्रथम तो देवज कोइ वक्ता नथी, के जेनुं कहेलुं वचन प्रमाण थाय. अनुमानथी पुरुष सर्वज्ञ नथी, मनुष्य होवाथी, रथ्यापुरुषवत.

पूर्वपक्षः– किंकर थइ जेनी सुर, असुर सेवा करेछे, तेमज त्रण लोकमां ऐश्वर्यना सूचक, छत्र, चामरादि जेनी विभूति छे, ते सर्वज्ञ केम न होइ शके?

उत्तरपक्षः–आ विभूति तो इंद्रजालीआ पण रची शके छे, ते वातना साक्षी जैनमतना सामंतभद्र आचार्य पण छे॥ श्लोक॥ देवागमनभोयान, चामरादिविभूतयः ॥ मायाविष्वपि दृश्यंते, नातस्त्वमसि नो महान्.

पूर्वपक्षः– जेम अनादि सुवर्णनो मेल, क्षार प्रमुख अग्नि पुटादि क्रियाविशेषथी शोधातां, सुवर्ण सर्वथा निर्मल थइ जाय छे, तेम आत्मा पण निरंतर ज्ञानादि अभ्यासथी निर्मल थवाथी तेने सर्वज्ञपणांनो संभव केम न होय ? अवश्य होयज.

उत्तरपक्षः–आ तमारुं केहेवुं ठीक नथी; कारण के अभ्यास करवाथी शुद्धिनी तरतमताज थाय छे, परंतु परम प्रकर्ष अवस्था थती नथी, कारण के जे पुरुष चालवानो अभ्यास करे, अर्थात् कूदवानो, छलंग मारवानो, ठेकडो मारवानो अभ्यास करे,ते दशहाथ वीशहाथ कुदी शकशे, परंतु सो योजन कूदवानी शक्ति ते कदापि मेलवी शकशे नहि, अने सर्व लोक कूदी जवानो अभ्यास तो कदापि तेनाथी थइ शकशे नहि. तेवीज रीतें आत्मापण अभ्यासद्वारा सर्वज्ञ थइ शकतो नथी.

पूर्वपक्षः– मनुष्यने सर्वज्ञता भले न होय, परंतु ब्रह्मा विष्णु, महेश्वरादिने तो सर्वज्ञता होय छे, कारण के तेमने तो जगत् ईश्वर माने छे. ते वात कुमारिल पण कहे छे. "दिव्य देह होवाथी" ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तेउने सर्वज्ञता होय , मनुष्यने सर्वज्ञता केवीरीतें होय ?

उत्तरपक्षः–जे रागद्रूपमां मग्न छे निग्रह अनुग्रहमां ग्रस्तछे, काम सेवनमां तत्पर छे, एवा लक्षणवाला ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, सर्वज्ञ केवी

रीतें होइ शके छे ? कारण के प्रत्यक्ष प्रमाण तो सर्वज्ञसाधक नथी, कारण के तेतो (इंद्रियो) वर्तमान वस्तुनेज ग्रहण करेछे; अने अनुमानथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकज प्रवृत्त थइ शके छे; तेमज आगम पण सर्वज्ञनी सिद्धि करनारूं कोइ नथी; कारण के आगम सर्वे विवादास्पद छे; वली उपमान पण नथी, कारण के बीजा सर्वज्ञ कोइ होय तो उपमान बने, तेवीज रीतें अर्थापत्तिथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अन्यथा अनुपपद्यमान एवो कोइ पदार्थ नथी, जे होवाथी सर्वज्ञ सिद्ध थाय. ज्यारे भावग्राहक पांचे प्रमाणथी सर्वज्ञ सिद्ध न थया, त्यारे सर्वज्ञ अभाव प्रमाणना विषय थया. सर्वज्ञ प्रत्यक्षादि गोचरने अतिक्रांत होवाथी, शशशृंगवत् ज्यारे कोइ देव सर्वज्ञ नथी, अने तेवा सर्वज्ञ देवनुं कथन करेलुं ज्यारे कोइ शास्त्र नथी, त्यारे अतींद्रिय अर्थनुं ज्ञान केम थाय ? एवी मनमां आशंका करीने जैमिनि कहे छे के "तस्मात्" ते कारणथी अतींद्रिय इंद्रियोना विषयरहित जे, आत्मा, धर्म अधर्म, काल, स्वर्ग, नरक, परमाणु प्रमुख पदार्थो छे, तेउना करतल आमलकवत् साक्षात् देखनार कोइ नथी. ते हेतुथी नित्य जे वेदवाक्य छे, तेनाथीज यथार्थ तत्त्वनो निश्चय थाय छे. कारण के वेद, अपौरुपेय छे, अर्थात् कोइयें रचेला नथी, अनादि नित्य छे, ते वेदवचनोथी अतींद्रिय पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे, परंतु कोइ सर्वज्ञना कहेला आगमथी थतुं नथी, कारण के सर्वज्ञ कोइपण पूर्व कालमां थया नथी, वर्त्तमानमां छे नहि, अने भविष्यमां थवाना नथी. ॥ यथाहुस्ते ॥ अतींद्रियाणामर्थानां, साक्षात् द्रष्टा न विद्यते ॥ वचनेनहि नित्येन, यः पश्यति सपश्यति ॥ १ ॥

प्रश्नः–अपौरुपेय वेदना अर्थ केवीरीतें जाणी शकाय ?

उत्तरः– अमारी परंपरा जे अव्यवछिन्न छे तेनाथी जाणी शकाय छे. ते कारणथी तथा सर्वज्ञादिनो अभाव होवाथी प्रथम वेदनाज पाठ प्रयत्नथी करवा जोइयें. वेद चार छे, १ ऋगू, २ यजुप, ३ साम, ४ अथर्व. ए चारनो पाठ करी, पछी धर्मजिज्ञासा करवी जोइये ? धर्म अतींद्रि

१ विवादना स्थानरूप. २ बीजे प्रकारे. ३ उत्पन्न नहि (गिडन) थयेलो. ४ हथेलीमां. ५ आमळानी पेठे.

य छे. वली धर्म छे ते केवो छे? तथा क्या प्रमाणथी जाणियें? एवी जे जाणवानी इच्छा, तेनुं नाम जिजासा छे. ते जिज्ञासा केवी छे ते जिज्ञासा धर्म साधवानो उपाय छे, तेनुं नाम नोदना छे, ते नोदनानां निमित्त वेछे, एक जनक, बीजो ग्राहक छे. अहियां ग्राहक निमित्त जाणवुं. तेनुंज विशेष स्वरूप कहियेंछियें.

श्रेयः साधकद्रव्यादिविषे जीवोने प्रेरियें जेनाथी, ते नोदना, वेद वचननी करेली प्रेरणा छे ॥ इत्यर्थः ॥ धर्म नोदनाथी जणाय छे. ते कारणथी नोदनालक्षण धर्म छे, धर्म अतींद्रिय होवाथी नोदनाथीज जाणियें छियें. प्रत्यक्षादि बीजा कोइ प्रमाणथी जाणी शकातो नथी, कारण के प्रत्यक्षादि विद्यमाननाज उपलंभक छे. अने धर्म कर्त्तव्यतारूप छे अने कर्त्तव्यता त्रणेकाल स्वभाव वाली छे ते कर्त्तव्यतानुं ज्ञान नोदनाज उत्पन्न करी शके छे. आ मीमांसकोनो अभ्युपगम छे.

हवे नोदनानुं व्याख्यान करियें छियें. अग्निहोत्र, सर्व जीवोनी अहिंसा, दानादि क्रिया ते करवावास्ते जे प्रवर्त्तक, प्रेरक वेदोनां वचन छे. तेज नोदना छे. जेम के "अग्निहोत्रं जुहूयात् स्वर्गकामः" एवां जे प्रवर्त्तक वेदवचन छे, ते नोदना जाणवी. यथा ॥ "न हिंस्यात् सर्वभूतानि, तथा नवै हिंस्रो भवेत्" आ वचनोथी प्रेर्यां थकां द्रव्य, गुण, कर्मोथी हवनादिविषे जे प्रवृत्त थवुं, ते धर्म छे, अने आ वेदवचनो प्रेर्यां थकां पण जे न प्रवर्त्ते, अथवा विपरीत प्रवर्त्ते, तेने नरकादि अनिष्टफल थायछे. शाबरभाष्यमां पण एमज कहेल छे.

आ जैमिनीय छ प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द, ४ उपमान, ५ अर्थापत्ति, ६ अभाव. तेउनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवुं होय तो षड्दर्शन समुच्चयनी टीका जोवी. इति संक्षेपथी मीमांसकमत.

आ पांच दर्शन आस्तिक केहेवाय छे, अने छठुं जैनदर्शन छे. तेनुंस्वरूप आगलना परिच्छेदमां लखवामां आवशे. नास्तिकमत दर्शनमां नथी. "नास्तिकं तु न दर्शनमिति राजशेखरसूरिकृतषड्दर्शनसमुच्चयवचनात्" ॥ तो पण भव्य जीवोने जाणवा वास्ते तेनु कांइक स्वरूप लखियें छियें.

कपाली, भस्म लगावनार, योगी, ब्राह्मणादि, अंत्य जातिना लोक जेउने लोको वाममार्गी कहेछे, तेउ, तथा कौलिक इत्यादि नास्तिक

छे, तेना मतनुं नाम नास्तिक चार्वाक छे. तेओ जीव, पुण्य पापादि कांइ मानता नथी, चार भौतिक देह माने छे, तेमज सर्वजगत्ने पण चार भौतिक मानेछे.

वली केटला एक चार्वाक एक देशी, आकाशने पांचमुं भूत माने छे. पंचभूतात्मक जगत् छे एम कहे छे. भूतोथीज मद्य शक्तिमत् चैतन्य उत्पन्न थाय छे एम तेओनो मत छे. पाणीना परपोटानी जेम, शरीर छे तेज जीव छे एम तेओनुं मानवुं छे. आ मतवाला मद्य, मांस, खायछे; माता, बेहेन, दिकरी आदि जे अगम्यछे, तेओनी साथे गमन करे छे. ते नास्तिक वामी, दरेक वरसे एक दिवस सर्वे, एकस्थलें एकठा थायछे. स्त्रीओने नग्न करी तेओनी योनिनी पूजा करेछे, तेमज विषय सेवनपण करेछे इत्यादि, एवां बुरां काम करेछे के आ पुस्तकमां तेनुं वर्णन करतां मने शरम लागे छे. तेथी लखेल नथी. ते नास्तिक कामसेवन उपरांत बीजो धर्म मानता नथी, मतलब के कामनेज धर्म मानेछे.

आ मतनी उत्पत्ति जैनमतना शीलतरंगिणी नामना शास्त्रमां जे प्रमाणे लखेलीछे ते प्रमाणे कहियें छियें. बृहस्पति नामनो एक ब्राह्मण हतो. तेनुं बीजुं नाम देवव्यास हतुं. तेने एक बेहेन हती. ते बाल्यावस्थामां विधवा थइ हती. जेना आश्रयथी पोतानी जींदगी संपूर्ण करे एवुं कोइ तेणीना सासराना घरमां साधन न होतुं, तेथी निराधार थइने पोताना भाइना घरमां आवी रही. ते अत्यंत स्वरूपवती तेमज यौवनवती हती, आ समये बृहस्पतिनी पत्नी मृत्यु पामी हती, बृहस्पतिने काम वासनाथी पीडा थावा लागी, तेथी विषयासक्त थवाने लीधे पोतानी बेहेननी साथे विषयसेवन करवानी इच्छा थइ. विधवा बेहेनने प्रार्थना करी के हे बेहेन ? मारी साथे तुं विषयसेवन कस्य, त्यारे तेनी बेहेनें कह्युं के हे भाइ? आ वात उभयलोकविरुद्ध छे, तेथी केम करी शकुं ? कारण के प्रथम तो हुं तारी बेहेन छुं तेथी भाइनी साथे विषयभोग करुं तो अवश्य हुं नरकमां जाउं, अने आ वातजो जगत्मां प्रसिद्ध थाय तो, सर्वलोकने धिक्कार पात्र थाउं. एवी वात श्रवण करी बृहस्पतिए पोताना मनमां विचार कस्यो के, ज्यां सुधी तेणीना मनमांथी पाप, तेमज नरकादि दुःखनो भय दूर थशे नहि, त्यांसुधी ते मारी साथे कदापि संभोग

करशे नहि. एवो विचार करी पोते बृहस्पतिसूत्रनी रचना करी. ते सूत्रोथी, पुण्य पाप, स्वर्ग नरकनो अजाव सिद्ध करी, पोतानी वेहेनने ते शास्त्र श्रवण करावी प्रतिबोध कस्यो. ते बोधथी तेनी वेहेनें विचार कस्यो के आ शरीर ज्यारे पांचजौतिक छे, अने आ शरीरथी अतिरिक्त एवो आत्मा नामें वीजो कोइ पदार्थ नथी, त्यारे पुण्य पाप, नरक स्वर्ग कांइपण सिद्ध थतुं नथी. तेथी हवे आ मूर्ख लोकोनी शरम राखी मारी यौवन अवस्था शामाटे वृथा गुमावुं. एम निश्चय करी पोताना जाइनी साथे विषय जोग करवामां अत्यंत लुब्ध थइ गइ. ज्यारे लोकोना जाणवामां आ हकीकतआवी, त्यारे लोको तेउनी बहुज निंदा करवा लाग्या. ते सांजली बृहस्पतियें निर्लज्ज थइ लोकोने नास्तिक मतनो उपदेश करवो शरु कर्यो. ते उपदेशथी जे अत्यंतविषयी तथा अज्ञानी हता, तेउ तेना शिष्य थया. केटलोएक काल व्यतीत थयापछी तेना शिष्यो पोताना मतनुं बहुमान करवा वास्ते केहेवा लग्या के, आ अमारो मत देवताउना गुरु जे बृहस्पति नामना आकाशमां ग्रहछे तेमनो प्रवर्त्तावेलो छे. बृहस्पति करतां वीजो कोइ विशेष बुद्धिमान् नथी, तेथी अमारो मत सत्य छे. आ बृहस्पतिनी उत्पत्ति अमारा चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामिनी पेहेलां थयेली सिद्ध छे; कारण के श्रीमहावीर स्वामियें कथन करेला शास्त्रोमां चार्वाक मतनुं निरूपण करेलुं छे. चार्वाक मतनी उत्पत्ति ए प्रमाणे छे. तेमनां नाम चार्वाक, लोकायितादि छे "चर्व अदने चर्वंति, जक्षयंति तत्त्वतोनमन्यंते पुण्यपापादिकं परोक्षवस्तुजातमिति चार्वाकाः" मयाकश्यामाकेत्यादि सिद्ध, छे. उणादिदंडकेन शब्दनिपातनं. लोका निर्विचाराः सामान्यालोकास्तद्वदाचरंति स्मेति लोकायिताः लोकायितकाइत्यपि ॥ बृहस्पतिप्रणीतमतत्त्वेन बार्हस्पत्याश्चेति" चर्व धातु जक्षण अर्थमां छे. चर्वण (जक्षण) करे अर्थात् जे पुण्य पापादि परोक्ष वस्तु समूहने न माने ते चार्वाक, मयाक श्यामाक इत्यादि सिद्धछे. श्रीहैमव्याकरणना उणादि दंडक प्रयोगथी निपातथी सिद्धछे. तथा लोक निर्विचारी छे, सामान्य लोकोनी पेठे जे आचरण कर्या करेछे ते लोकायिता लोकायितका एम पण केहेवाय छे. तेमज बृहस्पतिनी प्ररूपणाथी ते मतनुं नाम बार्हस्पत्य पण कहेछे.

हवे चार्वाकना मतनुं स्वरूप लखियें छियें. नास्तिक एम कहेछे के परलोकमां गमन करनार जीव, चेतनालक्षण काइ छे नहि. पांच भूतथी जे चेतन उत्पन्न थायछे, ते पण भूतोनो नाश थतां अहींयांज नाश पामी जाय छे. जो जीव परलोकथी आव्यो होय तो परलोकनुं ते स्मरण होवुं जोइये, परंतु ते तो थतुं नथी, ते कारणथी जीव परलोकथी आव्यो नथी तेमज परलोकमां जानारपण नथी. तथा जीवस्थानमां जो देव शब्द स्थापन करियें तो सर्वज्ञादिविशेषणविशिष्ट कोइ देव नथी, तथा मोक्षपण नथी, धर्म अधर्म नथी, पुण्य पाप नथी, पुण्य पापनुं जे फल स्वर्ग नरक, तेपण नथी. "तथाच तन्मतं ॥ एतावानेव लोकोयं, यावानिंद्रियगोचरः ॥ भद्रे वृकपदं पश्य, यद्वदंत्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥ अर्थः—जेटलो प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे,तेटलोज मनुष्यलोकछे. कारण के जे पदार्थ इंद्रियोथी ग्रहण थायछे तेज पदार्थछे, ते उपरांत बीजा कोइ पदार्थ नथी. ज्यारे लोक शब्दनो उच्चार करियें त्यारे लोकमां जे विद्यमान पदार्थछे तेज ग्रहण करवा, अने जे आ लोकथी पर एवा जीव, पुण्य, पाप, अने तेनां फल स्वर्ग, नरकादि छे एम मानेछे ते अप्रत्यक्ष होवाथी, असत्यछे. जो अप्रत्यक्षपण मानियें तो शशशृंग, वंध्यापुत्र आदिपण मानवा जोइयें. पांच प्रकारें प्रत्यक्षथी अनुक्रमें १ मृदु कठोरादि वस्तु, २ तिक्त कटु कषायादि द्रव्य, ३ सुरभि दुरभिरूप गंध, ४ भू, भूधर, भुवन, भूरुह, स्तंभ, कुंभ, अंभोरुहादि, नर, पशु, श्वापदादि, स्थावर, जंगम पदार्थोना समूह, ५ विविध, वेणु वीणादिनी ध्वनि, आ पांच विना बीजी कोइपण वस्तुनी प्रतीति थती नथी. पांच भूतोथी व्यतिरिक्त नरक, स्वर्गमां गमन करनार एवो जीवज ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध न थयो, त्यारे जीवनां सुख दुःखनां कारण धर्म, अधर्म, अने ते धर्म, अधर्मनि, उत्कृष्ट फल भोगववानी भूमि, स्वर्ग नरक, तथा सर्वथा पुण्य पापनो क्षयथवाथी उत्पन्न थनारू जे मोक्षसुख तेनुं जे वर्णन, ते सघलुं वर्णन आकाशमां चित्रामण करवा जेवुंछे. कारण के जीवनो नथी कोइयें स्पर्श कर्यो, नथी कोइयें तेनो खाइने स्वाद चाख्यो, नथी कोइयें तेने सुंघ्यो, नथी कोइयें तेने दीठो, के नथी कोइयें तेने शब्दवत् सांभल्यो, तेम छतां मूढमति शा वास्ते, जीवने मानीने, स्वर्गादि सुखोनी इच्छाकरी, मस्तक, दाढी, मूछ मुंडावी

अनेक प्रकारनां डुष्कर तप तपी, शीत, आतप, सहन करी फोगट आ शरीरने संकटोमां नाखी मनुष्यजन्म खराब करी रह्याठे ? आ तेमनी समजणनुंज डुःखठे. ॥ तडुक्तं ॥ तपांसि यातनाश्चित्राः, संयमोनोग वंचना ॥ अग्निहोत्रादिकं कर्म, बालक्रीडेव लक्ष्यते ॥ १ ॥ यावज्जीवं सुखं जीवेत्, तावद्वैषयिकं सुखं ॥ जस्मीजूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥ अर्थः– सुगम ठे, सारांश उपर बताव्यो ठे. इत्यादि कारणथी सिद्ध थाय ठे के जे इंड्रियगोचर (इंड्रयगम्य प्रत्यक्षठे) तेज तात्विक ठे. सारांश बीजां सुख कल्पित ठे.

हवे जे परोक्ष, अनुमान, आगम प्रमाण आदिथी जीव, अने पुण्य पाप आदिनुं स्थापन करे ठे, तेमज स्थापन करवामां कोई पण रीतें हठता नथी, तेउने प्रतिबोध करवा वास्ते दृष्टांत कहे ठे. " जड़े वृकपदं पश्येत्यत्रायं संप्रदायः " कोई पुरुष नास्तिक मतथी, अथवा सत्य अंतःकरणथी पोतानी जार्याने आस्तिक मतविषे दृढ प्रतिज्ञावाली जाणीने पोतानी शास्त्रोक्त युक्तियोथी निरंतर प्रतिबोध करे ठे, ज्यारे तेणीने प्रतिबोध लाग्यो नहि, त्यारे तेना पतियें विचार कस्यो के हवे उपायथी तेणीने प्रतिबोध लागे तेम ठे, एम पोताना चित्तमां चिंतवन करीने रात्रिना पाठला पहोरमां ते स्त्रीनी साथे नगरथी बहार निकली, पत्नीने केहेवा लाग्यो, हे वल्लजे ! नगरमां वसनारा जे लोको परोक्ष पदार्थोने अनुमान आदि प्रमाणोथी सिद्ध करे ठे, अने लोकोमां पोताने बहुश्रुत कहेवरावे ठे, तेउनी चतुराई हवे अवलोकन कर. एम कही, नगरना दरवाजाथी चोकसुधी झीणी धूलमां पोताना हाथथी वरुना पंजाना आकार पाडीदीधा. प्रातःकालमां ते वरुना पंजा देखीने बहुलोको राजमार्गमां एकठा थईगया. तेटलामां बहुश्रुत पण त्यां आवीगया. ते बहुश्रुत लोकोने केहेवा लाग्या के हे जाईयो ! वरुना पगोनी अन्यथा अनुपत्तिथी, निश्चयें कोईक वरु रात्रिमां वनथी अहींया आव्युं हतुं. आ सांजली नास्तिकमति पोतानी पत्नीने ए प्रमाणे केहेनारने बतावी, केहेवा लाग्यो के हे जड़े ! " वृकपदं " (वरुनापंजा) तुं जो. जे पंजाने वरुना पंजा अबहुश्रुत कहे ठे. लोकरुढिथी आ लोक बहुश्रुत कहेवरावे ठे, परंतु परमार्थथी तेउ महागोठ ठे. कारण के तेउ परमार्थ तो कांई जाण-

ता नथी. केवल देखा देखी रोलो करवा लागी रह्या छे, परमार्थथी तो तेउनुं वचन मानवा योग्य नथी. तेवीज रीतें घणा मतवाला धार्मिक, छद्म (धूतारा) वीजाउने ठगवामां तत्पर एवा तेउ कांइक अनुमान, आगमादिथी दृढपणें जीवादि पदार्थनी अस्ति सिद्ध करीने भोला लोकने वृथाज स्वर्गादि सुखोनो लोभ देखाडी भक्ष्यअभक्ष्य, गम्य अगम्य, हेय उपादेय, आदि संकटोमां नाखे छे. बहु मूर्ख लोकोने धार्मिकपणानो व्यामोह उत्पन्न करेछे, तेथी बुद्धिमानोये तेमनां वचन न मानवां जोइये. ते सांभली ते स्त्री पोताना पतिनां सर्व वचन मानवा लागी, तेथी तेणे पोतानी पत्नीने जे उपदेश कर्यो ते हवे लखियें छियें.

॥ श्लोक ॥ पिब खाद च चारुलोचने, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते ॥ नहि भीरु गतं निवर्त्तते, समुदायमात्रमिदं कलेवरं ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ हे सुंदरलोचन वालि ! तुं पेय अपेयनी व्यवस्था तजी दई मदिरापान कर्य, न केवल मदिराज पी, परंतु भक्ष्य अभक्ष्यनी दरकार कर्या विना मांसादि पण खा, तेमज गम्य अगम्यनो विचार दूर करी भोगोने भोगवी पोतानी युवावस्था सफल कर्य यौवनादि जे कांइ व्यतीत थई गयेल छे ते, हे वरगात्रि ! हे प्रधानांगि (उत्तमांगि !) फरी तने मलवानां नथी. अत्यंत काम राग जणाववा वास्ते बहु संबोधन पद कहेलां छे, तेथी पुनरुक्ति दोष नथी. कोईनी आशंका मनमां लाविने बृहस्पति मतवाला कहेछे के पोतानी इच्छाथी जे खान, पान, भोग, विलास करशे, तेउने परलोकमां कष्टपरंपरा पामवा सुलभ थशे, अने जे सुकृत करशे तेउने सुख यौवनादि भवांतरमां पामवा सुलभ थशे, आ प्रमाणेनी परनी आशंका दूर करवा वास्ते बृहस्पति कहे छे के हे भीरु ! बीजाना केहेवा मात्रथी नरकादि दुःखोनी प्राप्ति नथी. आ लोकना यौवनादिथी निवृत्त थवुं, अर्थात् आ लोकमां विषयभोगथी यौवननुं सुख न भोगववुं, अने परलोकमां अमने यौवनादि सुख फरी मलशे, एम परलोकना सुखनी इच्छाथी, तप, चारित्रादि कष्ट क्रिया करीने जे आ लोकना सुखनी उपेक्षा करे छे तेउ महामूढ छे.

वलि शुभाशुभ कर्मना योगथी आ जीवने अवश्य परलोकमां पण स्वकर्म हेतुक सुखदुःखादि वेदना थशे, एवि आशंका करनारनी शंका

मनमां लाविने बृहस्पति कहे छे के समुदायभूत चारेनो संयोगमात्र ज आ कलेवर (शरीर) छे; परंतु चारे भूतोना संयोगमात्रथी जुदो, बीजो भवांतरमां जावावालो, शुभाशुभ कर्मविपाकने भोगववा वालो एवो जीव नामनो कोइ पदार्थ नथी; अने चारे भूतनो जे संयोग छे ते विजलिना प्रकाशनी पेठे क्षणमात्रमां नाश पामी जाय छे. ते कारणथी परलोकनो भय तजी दे. हे हरिणाक्षि ! जेम मन माने तेम खा, पी भोग विलास कस्थ.

हवे प्रमेय प्रमाण बंने कहे छे. ॥ श्लोक ॥ पृथ्वी जलं तथा तेजो, वायुर्भूतचतुष्टयं ॥ आधारोभूमिरेतेषां, मानं त्वक्षजमेव हि ॥ १ ॥ अर्थः १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, आ चार भूत छे. आ चारेनी आधार पृथ्वी छे. अने कोई जगाये एवो पण पाठ छे के " चैतन्यभूमि रेतेषां " आ चारेने चैतन्यभूमि कहे छे, आ चारेना एकत्र रसथी चैतन्य उत्पन्न थाय छे. वली आ चार्वाकमतमां, आ चारे भूत, प्रमाणनी भूमिका, प्रमाणनो विषय तात्विक छे. तेमज आ चार्वाकमतमां प्रमाण तो एक प्रत्यक्षज छे.

हवे भूतचतुष्टयथी देहने चेतनता केम प्राप्त थाय छे ? एवी आशंका मनमां लावी कहे छे. ॥ श्लोक ॥ पृथ्व्यादिभूतसंहत्या, तथा देहपरीणतेः ॥ मदशक्तिः सुरांगेभ्यो, यद्वत्तद्वच्चिदात्मनि ॥ १ ॥ अर्थः—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, तेउना संयोगथी थयेलो देह परिणाम, ते देहमां,जेम मदिरानां अंगोथी उन्मादशक्ति उत्पन्न थाय छे तेम, चैतन्यशक्ति उत्पन्न थाय छे. परंतु देहथी अन्य जीव पदार्थ कोइ छे नहि. आदि शब्दथी पर्वतादि सर्वपदार्थ चारे भूतोथीज उत्पन्न थाय छे. ते कारणथी दृष्ट सुखनो त्याग न करवो. अने अदृष्टसुख वास्ते प्रवृत्त थवुं, आ तो लोकोनी मोटी मूर्खता छे, तेमज शांतरसमां मग्न थइमोक्ष सुखनुं वर्णन करेछे ते पण महामूढ छे. कारण के मैथुनसेवनथी बीजो कोइ पण धर्मनथी तेमज कोइ मोक्ष नथी, तेमज सुख नथी. इति चार्वाक मत संक्षेपवर्णन.

पूर्वोक्त मतोनुं जे वर्णन करेल छे, तेउना उपदेशक सर्व कुगुरु छे.कारण के तेउना मत युक्ति प्रमाणथी खंडित थइजाय छे. तेमज तेउ पूर्वापरव्याहत अने विरोधी छे.

पूर्वपक्षः—अहो जैन ! अरिहंतनां कहेलां तत्वो उपर तमने अत्यंत राग छे, तेथी तमे पोतानो मत निर्दोष ठरावो छो, अने अमारा मतने पूर्वापरविरोधी कहो छो, परंतु अमारा मतमां कांइपण पूर्वापरव्याहत पणुं नथी, कारण के अमारो मत तदन निर्दोष छे. तेथी अमारा मतमां कलंक देवुं ते अमृतना पुंजमां मशीनुं (वा माखीनुं अंग) बिंदु नाखवा समान छे.

उत्तरपक्षः—हेवादियो ? तमे पोत पोताना मतनो पक्षपात छोडी, मध्यस्थपणुं अवलंबन करी, निरभिमानता अंगीकार करी, तेमज सुन्दर बुद्धि धारण करी श्रवण करो. हुं तमारा मतोमां पूर्वापरव्याहतपणुं बतावुं छुं. प्रथम बौद्ध मतमां पूर्वापरविरोध बतावबो शरू करियें छियें.

बौद्धमतमां सर्व पदार्थ क्षणभंगुर कहीने पछी आ प्रमाणे कह्युं छे. " नाननुकृतान्वयव्यतिरेकं कारणं नाकारणं विषय इति " अर्थः— ज्ञान, अर्थ विद्यमान छतांज उत्पन्न थाय छे, परंतु अर्थ विना थतुं नथी. एवीरीतें अनुकृत अन्वय व्यतिरेक अर्थ ज्ञानने छे, अने कारण जेथकी अर्थज्ञान उत्पन्न थाय छे, ते कारणनेज विषय करे छे. आ केहेवाथी अर्थने बे क्षण स्थितिवालो कह्यो. ते आ प्रमाणे. अर्थरूप कारणथी ज्ञान कार्य उत्पन्न थाय छे, अने एकज समयमां कारण, कार्य, उत्पन्न थतां नथी, त्यारे तो ज्ञान पोताना जनक अर्थनेज ग्रहण करे छे. " नापरं नाकारणं विषय इति वचनात् " ॥ ज्यारे ए प्रमाणे थयुं त्यारे तो अर्थने बे समयनी स्थिति स्वाभाविकरीतें थइ गइ. अने बौद्धमतमां बे समय स्थितिवालो कोइ पदार्थ नथी. एक तो आ पूर्वापरविरोध छे.

तथा " नाकारणं विषय इत्युक्तं " जे पदार्थ ज्ञाननी उत्पत्तिमां कारण नथी, ते पदार्थने ज्ञान विषयपण करतुं नथी. एम कह्या छतां फरी योगिप्रत्यक्षज्ञानने अतीत अनागत पदार्थोनुं जाणनार कहेल छे, अने अतीत पदार्थ तो नष्ट थइगयेल छे, तथा अनागत पदार्थ उत्पन्न पण थयेल नथी, ते कारणथी अतीत, अनागत पदार्थ ज्ञानना कारण थइ शकता नथी, तो आ कारणने योगिप्रत्यक्षना विषय केहेवां, आ बीजो पूर्वापरविरोध छे.

तेवीज रीतें साध्य साधनोनी व्याप्ति, तेमज ग्राह्यकव्याप्ति ग्रहण क-

रावनारने, कारणपणाना अजावथी त्रिकालगत अर्थने विषय कहेनारने केम पूर्वापर व्याघात थशे नहि? कारण के कारणनेज प्रमाणनो विषय मानेल छे. ते वास्ते त्रीजो पूर्वापर विरोध छे.

तथा क्षणक्षय अंगीकार करवामां जेनो काल जिन्न जिन्न छे, एवा जे अन्वयव्यतिरेक, तेनी प्रतिपत्तिनो संजव थतो नथी, त्यारे तो साध्य साधनोनी त्रिकाल विषयव्याप्तिग्रहणमाननारने पूर्वापर व्याहृति केम नहि? आ चोथो पूर्वापरविरोध छे.

तथा सर्व पदार्थोने क्षणक्षयी मानीने पछी बुद्धे एम कह्युं छे. ॥ श्लोक ॥ इत एकनवते कल्पे, शक्त्या मे पुरुषोहतः ॥ तेन कर्मविपाकेन, पादे विद्धोस्मि जिक्षवः॥ १ ॥ आ श्लोकमां जन्मांतर विषयमां शब्दनो प्रयोग क्षणक्षयविरुद्ध बोलतां थकां बुद्धने पूर्वापरविरोध केम न केहेवो जोइयें आ पांचमो पूर्वापरविरोध छे.

तथा निरंश सर्व वस्तु छे एम प्रथम कहीने पछी फरी " हिंसाविरतिदानचित्तस्य संवेदनं अरुस्वगतं सद्रूव्य चेतनत्वस्वर्गप्रापण शक्त्यादिकं गृह्णदपि स्वर्गप्रापणशक्त्यादेरंशस्येति सांशतां पश्चाद्वदतः सौगतस्य कथं पूर्वापरविरुद्धं वचोन स्यात्" ए छठो विरोध छे.

तेवीज रीतें निर्विकल्पक प्रत्यक्ष प्रमाण नीलादि वस्तुउने सर्वप्रकारथी ग्रहण करतां छतां नीलादि अंशविषे निर्णय उत्पन्न करे छे, परंतु नीलादि अर्थगत क्षणक्षय अंशविषय निर्णय उत्पन्न करता नथी, एम सांशताने कहेतां थकां सौगतने पूर्वापरवचनविरोध सुबोधज छे. आ सातमो विरोध छे.

तथा हेतुने त्रण रूपवाला माने छे, अने संशयने वे उल्लेखवाला माने छे तेमज कहे छे, छतां सांश वस्तुने मानता नथी, आ पण आ. ठमो पूर्वापरविरोध छे.

तथा परस्पर नहि मलेला परमाणु निकटसंबंधवाला एकत्र थइने घटादिरूपपणे प्रतिजास थायछे, परंतु पोतपोतामां अंगांगीजावरूपें कोइपण कार्य आरंज करता नथी. आ बौद्धोनो मतछे. तेमां दूषण ए छे के परमाणुउ पोतपोतानामां नहि मली जवाथी घटनो एकजाग ज्यारे अमे हाथथी पकडियें त्यारे संपूर्ण घटने नहि रेहेवुं जोइयें. तथा घटने एक जा-

गथी उठावतां घटनो एक जागज उठवो जोइये, परंतु संपूर्णघट नहि उठवो जोइयें. तथा ज्यारे घटने तेनो कांठोप कडी अमे खेंचीयें, त्यारे घटनो एकदेशज अमारीपासे आववो जोइए, परंतु संपूर्ण घट न आववो जोइये, अने जलादिधारणरूप घटने अर्थक्रियालक्षण सत्त्व, अंगीकार करवा थकी सौगतोए परमाणुउंनुं मलवुं मानेलछे, अने तेना मतमां परमाणुउंनुं मलवुं छे नहि, ते कारणथी आ नवमो पूर्वापरविरोध छे. इत्यादि बौद्धमतमां अनेक पूर्वापरविरोधछे.

हवे बौद्धमतनुं थोडुं खंडन पण लखियें बियें. बौद्धोनो एवो मत छे के सर्व पदार्थ नैरात्म्य छे, अर्थात् आत्मस्वरूपें, पोताना स्वरूपथी सदा स्थिर रेहेवावाला नथी, एवी जे जावना, तेनुं नाम नैरात्म्यजावना छे. नैरात्म्यजावना रागादि क्लेशोनो नाश करनारी छे. जुउ. ज्यारे नैरात्म्यजावना थशे त्यारे पोताने पोताविषे, तथा पुत्र, जाई, जार्या, आदिविषे पण आत्मीय अजिनिवेश नहि थाय, अर्थात् "आ मारां छे" एवो मोह नहि थाय. कारण के जे पोताने उपकारी छे ते आत्मीय छे, अने जे पोताने प्रतिघातक छे ते द्वेष छे. ज्यारे आत्माज नथी, परंतु पूर्वापर क्षण तुटेलाउंनुं अनुसंधान छे, अने पूर्व पूर्व हेतुथी प्रतिबद्ध ज्ञान क्षण, तेज तेवी रीतें उत्पन्न थाय छे, त्यारे कोण कोनो उपकारक तथा उपघातक छे ? कारण के क्षणो, क्षणमात्र रेहेवाथी परमार्थथी उपकार, अनुपकार करीशकता नथी. ते वास्ते तत्ववेदियोने पोताना पुत्रादिमां आत्मीय अजिनिवेश नथी. तेमज वेरीयोविषे द्वेष नथी. अने लोकोने अनात्मीय पदार्थोमां जे आत्मीय अजिनिवेश छे, ते अतत्वमूल होवाथी अनादि वासनाना परिपाकें करेल छे. एम जाणवुं.

प्रश्नः—जो परमार्थथी उपकार्युपकारक जाव नथी तो एम केम कहो छो के जगवान् सुगत करुणावडे सर्व जीवोना उपकारवास्ते देशना आपता हवा ? अने क्षणिकपणुं पण जो एकांतज छे तो तो तत्ववेत्ता पण एक क्षणपछी नाश पाम्या, अने तत्ववेत्ता पण जाणता हता के हुं जूतकालमां हतो नहि अने जविष्यमां होवानो नथी, तो पछी मोक्षवास्ते शा माटे यत्न करे ?

उत्तरः—तमे जे कह्युं ते अमारो अजिप्राय नहि जाणवाथी अयुक्त छे.

ज्ञगवान् प्राचीन अवस्थाविषे अवस्थित छे, अने सकल जगत्ने रागद्वेषादिदुःखोथी संकुल जाणतां थकां, केवीरीतें आ सर्व जगत्नुं दुःख माराथी दूर थाय एवी दया उत्पन्न थवाथी नैरात्म्य क्षणिकत्वादि जाणतां छतांपण ते उपकार करवा योग्य जीवोने निःक्लेशक्षण उत्पन्न करवावास्ते स्वप्रजाहितकर राजानीपेठे पोतानी संतति बुद्धिविषे, सकल जगत् साक्षात् करवाने समर्थ एवी पोतानी संततिगत विशिष्टक्षणनी उत्पत्तिवास्ते यत्न आरंज्ञ करेछे. कारण के सफल जगत् साक्षात्कार कस्याविना सर्वने अक्षणविधान उपकार करवो अशक्य थाय तेथी समुत्पन्न केवल ज्ञान पूर्वस्थापन कृपाना विशेष संस्कारवशथी ज्ञगवान् कृतार्थज छे तो .ए देशना देवामां प्रवृत्त थायछे. तेथी ते देशना सांज्ञलीने निर्मल बुद्धिथी नैरात्म्यतत्त्व विचारतां थकां जीवनेज्ञावनाप्रकर्ष विशेषथी वैराग्य उत्पन्न थायछे, तेथी अनुक्रमें मुक्तिलाज्ञ थायछे. अने जे आत्माने मानेछे तेने मुक्तिनो संज्ञव नथी, कारण के परमार्थथी आत्मा विद्यमान ते आत्मा स्नेहना वशथी ते आत्माने सुखी थवानी तृष्णा थशे, अने तृष्णाने वश थवाथी सुखनां साधनोविषे ते प्रवृत्त थशे, एम ज्यारे गुणोमां राग करशे, ते रागथी ज्यांसुधी आत्माज्ञिनिवेश रहेशे त्यांसुधी संसार छे. ॥ आह च ॥ श्लोक ॥ ये पश्यंत्यात्मानं, तत्रास्याहमिति शाश्वतः स्नेहः ॥ स्नेहात् सुखेषु तृष्यति, तृष्णा दोषांस्तिरस्कुरुते ॥ १ ॥ गुणदर्शि परितृष्यन्, ममेति तत्साधनान्युपादत्ते ॥ तेनात्माज्ञिनिवेशो, यावत्तावत्ससंसारः ॥ २ ॥ इति बौद्धमत पूर्वपक्ष.

हवे जैनमतनी तरफथी उत्तरपक्षः— आ सर्व कहेवुं तमारा अंतःकरणमां वासकरेला महामोहना विलासनुं सूचक छे. आत्मानो अज्ञाव थतां बंध मोक्षादिनुं एकाधिकरणत्व नहि थाय ते बतावियें छियें.

हे बौद्धो! तमे आत्मा मानता नथी, परंतु पूर्वापर क्षण तूटेलानुं अनुसंधान ज्ञान क्षणोनेज मानोछो. ज्यारे एम मानशो त्यारे बंध अन्यने थयो, अने मुक्ति अन्यनी थइ; क्षुधा अन्यने लागी, तृप्ति अन्यने थइ; अनुज्ञव अन्यने थयो, अने स्मरण अन्यने थयुं; जुलाब अन्यें लीधो, अने रोगरहित अन्य थयो; तपःक्लेश अन्यने थयो, अने स्वर्गादिफल अन्यने प्राप्त थयुं; अज्यासनी प्रवृत्ति अन्यने थइ, अने अज्यासनुं फल

अन्यने थयुं; आ सर्व हकीकत अतिप्रसंग होवाथी युक्तियुक्त नथी. जो एम कहो के संताननी अपेक्षाथी बंध, मोक्षादिनुं एक अधिकरण थइश-केछे, तो तेपण ठिक नथी. कारण के संतानपण तमारा मतमां थइ शकतां नथी जुओ संतान जे छे ते संतानिथी भिन्नछे के अभिन्नछे? जो कहो के भिन्नछे तो पछी बे विकल्प अमे तमने सोंपियें छियें. ते संतान नित्य छे के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो तेने बंध मोक्षादिनो संभव नथी, कारण के सर्वकाल एकस्वभाव होवाथी तेनी अवस्था विचित्र थइ शकती नथी. अने तमेतो नित्य मानता नथी " सर्वं क्षणिकमिति वचनात् " हवे जो कहो के अनित्य छे तो तो तेज प्राचीन बंधमोक्षादि वैय्यधिकरण दूषण प्राप्त थयुं. जो कहो के अभिन्न छे, तो तो तेनाथी अभिन्न होवाथी तेना स्वरूपनी पेठे संतानिज थया, संतान थया नहि. ज्यारे एम थया त्यारे तो तदवस्थज पूर्वनुं दूषण छे. जो कहो के क्षणथी अन्य संतान कोइ नथी परंतु जे कार्यकारणभाव प्रबंधथी क्षण भावछे, तेज संतान छे, ते वास्ते दोष नथी; आ पण तमारुं केहेवुं अयुक्त छे, कारण के तमारा मतमां कार्यकारणभावपण घटतो नथी. तेज बतावियें छियें. प्रतीत्यसमुत्पादमात्र कार्यकारणभाव छे, तेथी यथाविवक्षित घटक्षण अनंतर घटक्षण छे, तेमज पटादिक्षणपण छे, अने जेम घटक्षणथी पेहेला अनंतर विवक्षित घटक्षण छे तेमज पटादिक्षणपण छे, त्यारे तो केवीरीतें प्रतिनियत कार्यकारणभावनो अवगम थाय ?

एक बीजुं पण दूषण छे ते ए छे के. कारणथी जे कार्य उत्पन्न थाय छे, ते सत् उत्पन्न थाय छे के असत् उत्पन्न थाय छे ? जो कहो के सत् उत्पन्न थाय छे तो कार्योत्पत्तिकालमां पण कारण सत् थयुं; त्यारे तो कार्य कारणने समकालतानो प्रसंग बन्यो; अने एककालमां बे पदार्थोना कार्यकारणभाव मान्या नथी, नहि तो माता पुत्रनो व्यवहार बनशे नहि. घटपटादिने पण परस्पर कार्यकारणभावनो प्रसंग थइ जशे. जो असत् पक्ष मानशो तो तेपण अयुक्त छे, कारण के जे असत् छे, ते कार्य थइ शकतुं नथी. नहि तो खरशृंगथीपण कार्य उत्पन्न थयुं जोइये. वली अत्यंताभाव, प्रध्वंसाभाव, बंने जगाए वस्तुसत्तानो संभव होवाथी, आ बंनेनुं कांइपण विशेष थयुं नहि, जो कहो के प्रध्वंसा-

नावमां वस्तु हती, ते कारणथी हेतु छे, त्यारे तो ज्यारे हती त्यारे हेतु न होतो, अन्यदा हेतु थयो, एम तो बहु सारी तत्वव्यवस्था थइ.

वली एक बीजी वात छे के– तद्भावे भाव एवा अवगममां कार्य कारणभावनो अवगम छे, ते जो तद्भावे भाव छे, ते शुं प्रत्यक्षथी प्रतीत थाय छे के अनुमानथी प्रतीत थाय छे? प्रत्यक्षथी तो प्रतीत थतो नथी, कारण के पूर्ववस्तुगत प्रत्यक्षथी पूर्ववस्तु परिछिन्न थइ, अने उत्तर वस्तुगतथी उत्तरवस्तु परिछिन्न थइ, अने आ बंनेनुं अनुसंधान करनार त्रीजुं स्वरूप तो कोइ मानता नथी, ते कारणथी ते अनंतर तेनो भाव छे, एवो केम अवगम थाय? ते तो तेने पण प्रत्यक्षपूर्वक होवाथी अनुमानथी पण न थाय, अने अनुमान तो लिंगलिंगिसंबंधग्रहणपूर्वक प्रवृत्त थाय छे, अने लिंगलिंगिनो संबंध तो प्रत्यक्षथी ग्राह्य छे, जो अनुमानथी संबंधग्रहण करियें, तो अनवस्था दूषण आवे छे; अने कार्य कारणभावविषे प्रत्यक्ष प्रवृत्त थतुं नथी, ते कारणथी अनुमाननी पण प्रवृत्ति नथी. तेवीजरीतें ज्ञानना बंनेक्षणोना परस्पर कार्यकारणभावनो अवगमपण निषेध थयो जाणवो. त्यांपण स्वसंवेदनथी पोतपोताना रूप ग्रहणमां परस्परस्वरूप अनवधारणथी तदनंतर हुं उत्पन्न थयो छुं, अने हुं तेनो जनक छुं, एवी अवगति नहि होवाथी तमारा मतमां कार्य कारणभाव नथी, तेमज तेनो अवगमपण नथी, तेथी, एक संतति पतित थवाथी बंधमोक्षनुं एकाधिकरण छे, आ केहेवुं तमारुं मृषा छे. आ केहेवाथी जे कहेछे के उपादेय उपादान क्षणोनो परस्पर वास्यवासकभाव होवाथी, उत्तरोत्तर विशिष्ट विशिष्टतर क्षणोत्पत्तिथी मुक्तिनो संभव छे, तेपण उपादेय उपादान भावना उक्तरीतिथी अनुपपद्यमान होवाथी प्रतिक्षिप्त जाणवां; अने जे वास्यवासकभाव कहेल छे, तेपण तत्फलनीपेठे एककालमां बंने होय त्यारे होइ शके छे. "उक्तं चान्यैरपि" "अवस्थिताहि वास्यंते, भावाभावैरवस्थितेः" तो केवीरीतें उपादेय उपादान क्षण बंनेने परस्पर असाहित्य होवाथी वास्यवासकभाव होय? उक्तं च ॥ वास्यवासकयोश्चैव, मसाहित्यान्नवासता ॥ पूर्वक्षणैरनुत्पन्नो, वास्यतें नोत्तरः क्षणः ॥ १ ॥ उत्तरेण विनष्टत्व, न्न च पूर्वस्य वासना ॥ इति ॥

एक बीजी वात एवी छे के वासना वासकथी भिन्न छे के अभिन्न छे.?

जो कहो के भिन्न छे तो तो ते वासनायें करी शून्य होवाथी अन्यने वस्तु अंतरवत् कदापि वासित करशे नहि. जो कहो के अभिन्न छे तो तो वास्यक्षणमां वासनानो संक्रम कदापि थशे नहि. तेवी रीतें तेना स्वरूपनी पेठे तेनाथी अभिन्न होवाथी वासकनी पण संक्रांति छे. जो कहो के संक्राति छे तो अन्वयनो प्रसंग आवशे, तेथी तमारुं केहेवुं कोइपण कामनुं नथी, अने तमे जे कह्युं हतुं के सकलजगत् रागद्वेषादि दुःखसंकुल जाणतां थकां सकल जगत्‌नो दुःखोथी केवीरीतें हुं उद्धार करुं ? इत्यादि. आ पण पूर्वापर असंबंध छे. कारण के तमारो क्षणिक मतज पूर्वापर तुटेलो परमार्थथी असत् छे. वली क्षणोनुं रेहेवानुं कालमान एक परमाणुना व्यतिक्रममात्र छे. ते कारणथी उत्पत्तिथी व्यतिरिक्त तेनी कोइ क्रिया उपपद्यमान थती नथी. "भूतिर्येषां क्रियासैव, कारकं सैव चोच्यते" इति वचनात् ॥ तेथी ज्ञानक्षणोनुं उत्पत्ति अनंतर गमनथी, अवस्थान नथी, पूर्वापर क्षणोथी अनुगम नथी, ते कारणथी तेउने परस्परस्वरूप अवधारण नथी, तेमज उत्पत्ति अनंतर कोइ व्यापार नथी, तो केवीरीतें मारी सन्मुख आ अर्थ साक्षात् प्रतिभासे छे ? आ प्रकारें अर्थनो निश्चयमात्र करवामां पण अनेकक्षणोनो संभव छे; अनुस्यूत (संतति रूप) थइ उत्पन्न थाय छे. अने ते संततिरूपना अभावथी सकल जगत् रागद्वेषादि दुःखसंकुलतानो क्यांथी विचार होय ? अने दीर्घकालना अनुसंधानथी शास्त्रार्थनुं चिंतवन पण क्यांथी होय ? जेना प्रभावथी सम्यक् उपाय जाणीने विशेष दयाथी मोक्षवास्ते घटना थाय ?

पूर्वपक्षः– आ जे सर्व व्यवहार छे ते ज्ञानक्षणोनी संततिनी अपेक्षाथी छे, पछी तमे शा वास्ते आ पक्षमां दूषण आपो छो ?

उत्तरपक्षः– सुकुमारप्रज्ञोदेवानांप्रियः सदैव सप्तघटिकामध्यमिष्टान्नभोजनमनोज्ञाशयनीयशयनाभ्यासेन सुखैधितो" परंतु वस्तुना यथार्थतत्त्वविचारवामां तमारी बुद्धि कुशल थइ नथी तेथी अमारुं केहेवुं तमारी समजमां आवतुं नथी. कारण के ज्ञानसंततिविषे पण तेज दूषण छे. जे अमे उपर कहेल छे तेज बतावियें छियें. वैकल्पिक तेमज अवैकल्पिक जे ज्ञानक्षण छे, ते परस्पर अनुगमना अभावथी परस्पर स्वरूप जाणती नथी, अने क्षणमात्र उपरांत रेहेती नथी, त्यारे हवे केवी रीतें

पूर्वापर अनुसंधानरूप दीर्घकालिक सकल जगत् दुःखिपणानो विचार शास्त्रविचारणरूप आ व्यवहार होय ? आंख मीचीने जरा विचारो तो सही ? इत्यादि. बौद्धमतनुं खंडन- नंदिसिद्धांत, संमतितर्क, द्वादशारनयचक्र, अनेकांतजयपताका, स्याद्वादरत्नाकर, स्याद्वादरत्नावतारिका प्रमुख अनेक शास्त्रोमां बहु सारीरीतें करेल छे. ते जोइलेवुं. इति बौद्धमतखंडन॥

हवे नैयायिकमतमां पूर्वापर व्याहतपणुं छे ते कांइक लखियें छियें. सत्तायोगथी सत्व छे एम कहीने सामान्य, विशेष, समवाय, आ पदार्थोने सत्ताना योग विनाज सत् केहेनारने पूर्वापरवचन व्याहतपणुं केम न थाय ?

२ ज्ञान पोते पोताने जाणतुं नथी, पोताने पोताविषे क्रियानो विरोध छे, ते कारणथी; एम कहीने फरी कहेछे के ईश्वरनुं जे ज्ञान छे ते पोते पोताने जाणेछे, अने स्वात्माविषे क्रियाना विरोध मानता नथी, तो हवे केम स्ववचनविरोध न थयो ?

३ वली दीपक जे छे ते पोते पोतानो प्रकाश करनार छे, अने अहिंयां स्वात्मविषे क्रियाविरोध मानता नथी, आ पूर्वापर वचन व्याहतछे.

४ वीजाने ठगवावास्ते छल, जाति, निग्रहस्थान, तेउने तत्वरूपपणाथी उपदेश करतां थकां अक्षपादऋषिनुं वैराग्यवर्णन एवुं छे के जेम अंधकारने प्रकाशवालुं केहेवुं तेना सदृश आ केम पूर्वापरव्याहत नहि.

५ आकाशने निरवयवी स्वीकारीने फरी तेनो गुण जे शब्द छे ते एकदेशमां सुणावी आपे छे, सर्वत्र नहि. तेथी तो आकाशने सांशता थइ गइ. आ पूर्वापरव्याहतपणुं छे.

६ सत्ता योगथी सत्व छे, अने योग सर्व वस्तुउमां सांशता होवाथी थाय छे, अने सामान्यने निरंश एक माने छे. आ पूर्वापरव्याहत वचन केम नहि ?

७ समवाय, नित्य एक स्वभाव माने छे, अने सर्व समवायी पदार्थोनी साथे संबंध नैयत्य (स्वसत्ता)थी थवाथी समवाय, अनेक अनेक स्वभाववालो थइ गयो. आथी तो पूर्वापरविरोध थयो.

८ "अर्थवत् प्रमाणं" अर्थ सहकारी छे जेनो ते अर्थवत् प्रमाण, एम कहीने फरी योगिप्रत्यक्षने अतीतादि अर्थ विषय कहेनारने केम

पूर्वापर विरोध न होय ? कारण के अतीतादि जे ठे ते विनष्ट, अनुत्पन्न होवाथी सहकारी थइ शकता नथी.

ए तथा स्मृति गृहीतग्राहि होवाथी प्रमाण मानता नथी. " अनर्थ जन्यत्वेन " अर्थ विना होवाथी, तेमज गृहीतग्राही होवाथी प्रमाण नथी; अने धारावाही ज्ञान तो गृहीतग्राही ठे, तेने पण अप्रमाणता होवी जोइयें. परंतु धारावाहि ज्ञानने नैयायिक तेमज वैशेषिक प्रमाण माने ठे. अने स्मृतिने अनर्थजन्य होवाथी ज्यारे अप्रमाण मानी, त्यारे अतीत अनागत अनुमानपण अनर्थजन्य होवाथी प्रमाण न थयां; अने अनुमानने शब्दनी पेठे त्रिकालविषयक माने ठे, कारण के धुमाडाथी वर्त्तमान अग्नि अनुमेय ठे, अने मेघोन्नतिथी थवानी वृष्टि, तेमज नदीनुं पूर देखवाथी थयेली वृष्टिनुं अनुमान, आ बंने अनर्थजन्य ठे, तो पठी धारावाहि ज्ञान, अने अनर्थजन्य अनुमान, आ बंनेने तो प्रमाण मानवां, अने स्मृतिने प्रमाण नहि मानवी, आ पूर्वापरविरोध ठे.

१० ईश्वरनुं सर्वार्थविषय प्रत्यक्ष ज्ञान, इंद्रियार्थसन्निकर्षनिरपेक्ष मानोठो ? के इंद्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न मानोठो ? जो एम कहो के इंद्रियार्थसंन्निकर्षनिरपेक्ष मानियें ठियें, तो तो " इंद्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमित्यत्र सूत्रे " सन्निकर्षोपादान निरर्थक थशे; कारण के ईश्वरप्रत्यक्षज्ञान सन्निकर्ष विना पण थइ शके ठे, जो एम कहो के ईश्वरप्रत्यक्षज्ञान, इंद्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न मानियेंठियें, तो तो ईश्वरना मनने अणुमात्र प्रमाण होवाथी युगपत् सर्वपदार्थोनी साथे संयोग नहि थशे; त्यारे तो ईश्वर ज्यारे एक पदार्थने जाणशे, त्यारे बीजो पदार्थ विद्यमान ठतां पण तेने जाणी शकशे नहि; तेथी तो अमारी जेम ते ईश्वरने सर्वज्ञता कदापि प्राप्त थशे नहि, कारण के सर्व पदार्थोनी साथे युगपत् सन्निकर्ष तो थइ शकतो नथी; जो एम कहो के सर्वपदार्थोने अनुक्रमें जाणवाथी सर्वज्ञ ठे, तो तो दीर्घकालें सर्वपदार्थोने जाणवाथी ईश्वरनी जेम अमने पण सर्वज्ञ केहेवा जोइयें. वली एक बीजी वात ए ठे के, अतीत, अनागत पदार्थ जे ठे ते विनष्ट, अनुत्पन्न होवाथी मननी साथे तेनो सन्निकर्ष थइ शकतो नथी; अने वर्तमान पदार्थनो संयोग थाय ठे, तथा अतीत अनागत पदार्थ तो ते अवसरे असत् ठे, तेथी म-

ईश्वरनुं ज्ञान केवीरीतें अतीत अनागत अर्थनुं ग्राहक होइ शके? अने तमे तो ईश्वरनुं ज्ञान सर्वार्थग्राहक मानो छो, तेथी पूर्वापरविरोध सहज थइ गयो. तेवीज रीतें योगियोने पण सर्वार्थग्राहक ज्ञाननो दुर्धर विरोध जाणी लेवो.

११ कार्यद्रव्य प्रथम उत्पन्न थवाथी तेनुं रूप पाछलथी उत्पन्न थाय छे, आश्रय विना गुण केवीरीतें उत्पन्न थइशके? एम केहेवा अनंतर कहेछे के कार्यद्रव्यनो विनाश थया पछी तेना रूपनो नाश थाय छे. आ पूर्वापर विरोध छे, कारण के ज्यारे कार्यद्रव्यनो नाश थयो त्यारे आश्रय विना रूप केवीरीतें रही शक्युं?

नैयायिक तेमज वैशेषिक जगत्ना कर्त्ता ईश्वरने माने छे. आ पण तेउनुं एक महामूढतानुं चिह्न छे; कारण के ईश्वर, जगत्ना कर्त्ता कोइपण प्रमाणथी सिद्ध थइ शकता नथी. आ हकीकतनुं बीजा परिछेदमां वहुज विस्तारथी वर्णन करेलुं छे, तो पण भव्य जीवने बोध थवा वास्ते थोडो विस्तार अहियां पण करियें छियें.

केटलाएक कहेछे के, साधुउपर उपकारवास्ते तेमज दुष्टोनो संहार करवावास्ते ईश्वर युगयुगमां अवतार धारण करेछे; तेमज सुगतादि केटलाएक एम कहेछे के, मोक्ष प्राप्त कर्या पछी पोताना तीर्थने क्लेशमां देखीने भगवान् फरी अवतार धारण करेछे. यथा ॥ ज्ञानिनो धर्मतीर्थस्य, कर्त्तारः परमं पदं ॥ गत्वा गछंतिभूयोपि, भवं तीर्थनिकारतइति ॥ १ ॥ जे फरी संसारमां अवतार लहेछे, ते परमार्थथी मोक्षरूप थयाज नथी, कारण के तेनां सर्व कर्म क्षय थयां नथी. जो मोहादि कर्म क्षय थयां होय तो ते पोताना मतनो तिरस्कार देखीने शावास्ते पीडा पामे? तेमज अवतार धारण करे? जो साधुउना उपकार अर्थे तेमज दुष्टोना संहार वास्ते अवतार लहेछे, एम होय तो तो ते असमर्थ थया, कारण के अवतार लीधा विना ते काम करी शकता नथी, जो करी शकता होत तो, गर्भावासमां शा वास्ते पडे? ते उपरथी साबीत थायछे के तेनां सर्व कर्म क्षय थयां नथी, जो क्षय थयां होत तो कदापि अवतार लेत नहि ॥यदुक्तं॥ दग्धे बीजे यथात्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥ कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति भवांकुरः ॥ १ ॥ उक्तं च श्रीसिद्धसेनदिवाकरपादैरपि ॥ भवाभिगामुकानां,

प्रबलमोहविजृंभितं ॥ श्लोक ॥ दग्धेंधनः पुनरुपैति जवं प्रमथ्य, निर्वाणमप्यनवधारितजीरनिष्टं ॥ मुक्तः स्वयं कृततनुश्च परार्थशूर, स्त्वच्छासन प्रतिहतेष्विह मोहराज्यं ॥ १ ॥ इत्यलं विस्तरेण ॥

पूर्वपक्षः—सुगतादि, ईश्वर जले न होय, परंतु सृष्टिना कर्त्ता तो महादेव ईश्वर ठे, ते केम मानता नथी ?

उत्तरपक्षः—जगत्कर्त्ता ईश्वरनी सिद्धिमां प्रमाणनो अजाव ठे, ते कारणथी मानता नथी.

पूर्वपक्षः—जगत्कर्त्तानी सिद्धिमां प्रमाण ठे. पृथिव्यादि कोइ बुद्धिमाननां करेलां ठे. घटादि जेम कार्यरूप होवाथी; आ हेतु असिद्ध नथी. पृथिव्यादि सावयव होवाथी कार्यत्वनी प्रसिद्धि होवाथी; तेमज जुर्व. पृथिवी, पर्वत, वृक्षादि सर्व सावयव होवाथी घटवत् कार्यरूप ठे, वली आ हेतु विरुद्ध पण नथी, निश्चयपूर्वक करेला घटादिविषे कार्यत्वहेतु देखवाथी, वली जेनो कर्त्ता नथी तेनाथी व्यावृत्त होवाथी अनेकांतिक पण नथी, तेमज प्रत्यक्ष आगमपूर्वक अबाधित विषय होवाथी कालात्ययापदिष्ट पण नथी, आ निर्दोष हेतुथी जगत्कर्त्ता ईश्वर सिद्ध थाय ठे.

उत्तरपक्षः— प्रथम पृथिव्यादि बुद्धिमाननां बनावेलां ठे, आ सिद्ध करवा वास्ते कार्यत्वहेतु जे तमे कहोठो, ते हेतु शुं सावयवत्व ठे ? के प्राग्वत् स्वकारणसत्ता समवाय ठे ? के "कृतं" एवा प्रत्ययनो विषयत्व ठे ? के विकारित्व ठे ? जो एम कहो के सावयवत्वस्वरूप ठे, तो आ सावयवपणुं शुं अवयवोविषे वर्त्तमानत्व ठे ? के अवयवोथी आरज्यमाणत्व ठे ? के प्रदेशत्व ठे ? के सावयव एवी बुद्धिविषयत्व ठे ?

प्रथम पक्षविषे अवयव सामान्य होवाथी आ हेतु अनेकांतिक ठे. तथा अवयवोविषे वर्त्तमान पण निरवयव तेमज अकार्य कहे ठे, तथा बीजा पक्षमां हेतु साध्य समान ठे. जेवी रीतें पृथिवी आदिने कार्यत्व साध्य ठे, तेवीजरीतें परमाणु आदिने अवयव आरज्यत्व ठे. त्रीजा पक्षमां आकाशनी साथे हेतु अनेकांतिक ठे, कारण के आकाश प्रदेशवालुं ठे, परंतु कार्य नथी. चोथा पक्षमां आकाशनी साथे हेतु व्यभि-

चारी छे, कारण के जे व्यापक होय छे, ते निरवयव होता नथी, अने जे निरवयव होय छे ते परमाणुवत् व्यापक होता नथी.

तथा प्रागसतः (असत्थी पूर्वे) स्वकारण सत्ता समवाय कार्यत्व पण नथी, कारण के तेनां लक्षणनो अजाव होवाथी तेनुं नित्यपणुं छे. जो तेनुं लक्षण हशे तो तो पृथ्वी आदिना कार्यत्वने पण नित्यतानो प्रसंग आवशे, त्यारे तो बुद्धिमाननुं बनावेल केवीरीतें सिद्ध करशो ? एक बीजुं पण दूषण ए छेके योगियोना सर्व कर्मक्षय थयां थकां पक्षांतपातिविषे अप्रवृत्त होवाथी आ हेतु असिद्ध छे, कारण के सत्ता, स्वकारणसमवाय आ बंनेना अजावथी, योगिप्रत्यक्ष प्रध्वंसाजावरूप थइ जायछे.

तथा "कृतं" एवा प्रत्ययनुं जे विषयत्वछे, ते पण कार्यत्व थइ शकतुं नथी. खनन उत्सेचनादिथी कृतं आकाशं एवां अकार्य आकाशमांपण वर्त्तमान होवाथी अनेकांतिक छे.

तथा विकारत्वने पण कार्यत्वनो अनुषंग छे. सत् वस्तुनो जे अन्यजाव, ते विकारित्व छे, तो तो ईश्वरने पण विकारित्व पणुं छे, अपर बुद्धिमत् हेतुकत्व प्रसंग आववाथी अनवस्था थइ जशे. जो एम कहो के ईश्वर विकारी नथी, तो तो कार्यनुं कारित्वपणुं दुर्घट छे. एवी रीतें कार्यस्वरूपने विचारतां थकां उपपद्यमान होवाथी " कार्यत्वात् " आ हेतु असिद्ध छे. वली एक बीजुं दूषण ए छे के कदी थाय कदी न थाय, तेने लोकमां कार्यत्वनी प्रसिद्धि छे, परंतु आ जगत् तो तमारा महेश्वरनी पेठे सदा सत्य होवाथी तेनुं केवीरीतें कार्यत्व होय?

पूर्वपक्षः– ते जगत्नी अंतर्गत तृणादिने कार्यत्व होवाथी जगत्ने पण कार्यत्व छे.

उत्तरपक्षः– महेश्वर अंतर्गत बुद्धि आदिने तथा परमाणु आदि अंतर्गत पाकज रूपादिने कार्यत्वरूप होवाथी, महेश्वरने तथा परमाणु आदिने कार्यत्वनो अनुषंग थशे, त्यारे तो आ ईश्वरने बुद्धिमत् हेतुकत्व प्रसंगथी अनवस्था दूषण आवेछे, तथा अपसिद्धांतनो अनुषंग थायछे. तथा हे ईश्वरवादि! जेम तेम करी जगत्ने कार्यत्वपणुं जले हो, परंतु कार्यमात्र हेतु तमे अहियां मानेल छे ? के कार्यविशेष हेतु मानेलछे.

जो प्रथमपक्ष मानशो तो तो तेथी बुद्धिमत् कर्तृविशेषसिद्धि नथी, कारण के तेनी साथे व्याप्तिनी सिद्धि नथी, परंतु कर्तृ सामान्यनी सिद्धि थायछे. जो एमज मानशो तो तो हेतु अकिंचित्कर छे. साध्यनी विरुद्ध साधवाथी हेतु विरुद्ध छे, ते कारणथी कार्यत्वकृत बुद्धि उत्पादक बुद्धिमत् कर्त्तानी गमक नथी; अने जो सर्व सारूप्यमात्रथी गमकत्व होय तो तो बाष्प आदिने पण अग्नि प्रति गमकत्वनो प्रसंग थशे, अने महेश्वर आत्मत्वपणे सर्वजीव सदृश होवाथी १ संसारिपणानो, २ किंचित्सत्वपणानो, ३ संपूर्ण जगत्‌ना अकर्तृत्वपणाना अनुमापकनो तेने अनुषंग छे, कारण के तुल्य आक्षेप समाधान होवाथी; ते कारणथी बाष्प तेमज धूम आ बंने कोइ अंशे साम्य पण छे, तोपण कांइक एवुं विशेष छे के जेथी धूम अग्निनो गमक छे, परंतु बाष्पादि नथी. तेवीज रीतें पृथ्वी आदिने बीजां कार्योथी पण कांइक विशेष अंगीकार करो.

जो बीजो पक्ष मानशो तो हेतु असिद्ध छे, कार्यविशेषना अभावथी. अथवा जीर्णकूप प्रासाद आदिनी पेठे अक्रिया देखनारानेपण कृत बुद्धि उत्पादकनो प्रसंग छे, जो एम कहो के समारोपथी प्रसंग थतो नथी, तोपण बंने जगाए एक सदृश होवाथी केम थतो नथी? बंने जगाए कर्त्ताने अतींद्रियत्वना अविशेषथी.

पूर्वपक्षः– प्रामाणिकने अहिंयां कृतबुद्धि छे.

उत्तरपक्षः– केवीरीतें त्यां तेने कृतत्वनो अवगम होय? अनुमानथी अथवा अनुमानांतरथी आद्य पक्षमां परस्पर आश्रय दूषणछे. जुओ. सिद्ध विशेषण हेतुथी आ अनुमाननुं उत्थान छे, तेनुं उत्थान थवाथी हेतुना विशेषणनी सिद्धि छे; अने बीजापक्षमां अनुमानांतरने पण सविशेषण हेतुथी उत्थान थशे, त्यांपण अनुमानांतरथी तेनी सिद्धिछे. एवी रीतें अनवस्था दूषण आवेछे. ते कारणथी कृतबुद्धि उत्पादकत्वरूप विशेषण सिद्धि नथी, त्यारे तो विशेषण असिद्ध हेतु छे.

वली जे कहेछे के खातप्रतिपूरित पृथ्वीना दृष्टांतथी कृतकोने आत्मविषें कृतबुद्धि उत्पादकत्वनो अभाव छे, तेपण असत् छे. त्यां आकृति भूभागादि सारूप्यने तेना उत्पादकना अभावथी, तेना अनुत्पादकनी उत्पत्तिथी.

वली एम पण न केहेवुं के पृथ्वी आदिमांपण अकृत्रिम संस्थान

सारूप्यछे, जेनाथी आकृतिमत्त्वबुद्धि उत्पन्न थायछे, तेनेज न मानवाथी अपसिद्धांतनी प्रसक्ति थशे, एवी रीतें कृतबुद्धि उत्पादकत्वरूप विशेषण असिद्ध थवाथी हेतुविशेषण असिद्ध छे, ते सिद्ध थाउं तोपण आ हेतु घटादिनी पेठे शरीरादिविशेषपनेज बुद्धिमत्कर्त्ताने अहियां साधवाथी हेतुविरुद्ध छे.

प्रश्नः– एवीरीतें दृष्टांत दार्ष्टांतिक साम्य अन्वेषणमां सर्व जगाए हेतुउनी अनुपपत्ति थशे.

उत्तरः– एम नथी, धूमादि अनुमानथी महानसथी बीजा साधारण अग्निनी प्रतिपत्तिथी; अहियांपण एवीजरीतें बुद्धिमत् सामान्य प्रसिद्धिथी हेतुविरोध नथी, एमपण केहेवुं अयुक्तछे, कारण के दृश्यविशेष आधारनेज ते सामान्यने कार्यत्वहेतुनी प्रसिद्धि छे, परंतु अदृश्यविशेष आधारने नथी, तेनी स्वप्नामांपण प्रतिपत्ति नथी. ते सामान्यवालाने खरशृंग आधार छे. तेवास्ते जेवा कारणथी जेवुं कार्य उपलब्ध थायछे, तेवुंज अनुमान करवुं योग्य छे. यथावत् धर्मात्मक अग्निथी यावत् धर्मात्मकस्य धूमनीउत्पत्ति छे, सुदृढ प्रमाणथी प्रतिपन्नछे, तेवाज धूमथी तेवाज अग्निनुं अनुमान छे. एम कहीने साध्य साधन बंनेने विशेषणथी व्याप्तिविषे ग्रहण करतां थकां सर्व अनुमाननी उछेद प्रसक्ति छे. इत्यादि जे केहेवुं छे तेपण खंडन थयुं.

तथा बीजने वाव्याविना जे तृणादि उत्पन्न थायछे, तेनी साथे आ कार्यत्वहेतु व्यभिचारी छे. अनेक कार्य देखवामां आवेछे, तेउमांथी केटलांएकतो बुद्धिमान्नां करेलां देखायछे, जेमके घटादि.

वली केटलांएक तेनाथी विपरीत देखायछे, जेम के वाव्याविनानां तृणादि. जो एम कहो के अमे सर्वने पक्षमां लइ लेशुं, तो तो "सश्यामस्तत्पुत्रत्वादितरतत्पुत्रवत्" इत्यादि पण गमक होवां जोइये, पछी तो कोइपण हेतु व्यभिचारी थशे नहि ज्यां ज्यां व्यभिचार थशे, त्यां त्यां तेने पक्षमां करी लेशे. तथा आ हेतु ईश्वर बुद्धि आदिथीपण व्यभिचारी छे, ईश्वर बुद्धि आदिने कार्यत्व थयां थकांपण समवायि कारणथी ईश्वरादिथी भिन्न बुद्धिमत् पूर्वकत्वना अभावथी. जो अहींयां पण एवीरीतें मानशो तो अनवस्था दूषण आवशे. तथा आ कार्यत्वहेतु कालात्ययापदिष्ट पण छे. वाव्याविना उत्पन्न थयेलां तृणादिविषे बुद्धि-

मत् कर्त्तानो अभाव प्रत्यक्ष प्रमाणथी, अग्निना अनुष्णत्व साध्यविषे द्रव्यत्व हेतुवत् मालम पडेछे.

प्रश्नः— अंकुर तृणादिनापण अदृश्य ईश्वर कर्त्ताछे

उत्तरः— आ पण ठीक नथी. त्यां अदृश्य ईश्वरनुं होवुं आज प्रमाणथीछे? के कोइ बीजा प्रमाणथी छे ? प्रथम पक्षमां चक्रक दूषण छे. आ प्रमाणथी तेनो सद्भाव सिद्ध थाय, तो अदृश्य होनार ईश्वरना अनुपलंभनी सिद्धि थाय, तेनी सिद्धि थतां कालात्ययापदिष्टनो अभाव सिद्ध थाय, तेनी पछी आ प्रमाणनी सिद्धि थाय, बीजो पक्ष तो अयुक्तछे. ईश्वरना भाव अवेदिक प्रमाणना अभावथी होय, त्यां प्रमाणनो सद्भाव तोपण १ईश्वर अदृश्य होवामां शुं शरीरनुं अविद्यमानपणुं कारण छे? २ के विद्यादि प्रभावछे? ३ के जातिविशेषछे? प्रथम पक्षमां अशरीरी होवाथी मुक्त आत्मावत् कर्त्तापणानी अनुपपत्ति छे.

प्रश्नः— शरीरनो अभाव छतां पण ज्ञानेछा प्रयत्न आश्रयत्वथी शरीर उत्पन्न करीने ईश्वर कर्त्ता थइ शकेछे.

उत्तरः— आ पण आपनुं विना विचारनुंज केहेवुं छे, कारण के शरीर संबंधथीज तेनी प्रेरणा थवाथी शरीरनो अभाव थतां मुक्त आत्मानी पेठे तेनो असंभव थवाथी तेमज शरीरना अभावथी ज्ञानादि आश्रयत्वनो पण असंभव छे, तेनी उत्पत्तिमां तेने निमित्त थवाथी अन्यथा मुक्तात्माने पण तेनी उत्पत्ति थशे. वली विद्यादि प्रभाव अदृश्यपणामां हेतु थतां सर्वदा तो नहि, परंतु कोइक वखत तो देखावा जोइये. कारणके विद्यावान् सदा अदृश्य रेहेता नथी. पिशाचादिनी पेठे जातिविशेष पण अदृश्यमां हेतु नथी, कारण के ईश्वर एकछे, एकमां जाति होती नथी; जाति भेद जे थायछे, ते अनेकव्यक्तिनिष्ठ थायछे. ईश्वर दृश्य अथवा अदृश्य भले होय, परंतु १ शुं सत्ता मात्रथी? २ के ज्ञानवत्त्व होवाथी? ३ के ज्ञानेछा प्रयत्नवत्त्व होवाथी? ४ के तत्पूर्वक व्यापारथी? ५ के ऐश्वर्यथी पृथिव्यादिनुं कारण छे ?

प्रथम पक्षमां कुलाल आदिनेपण सत्व अविशेष होवाथी जगत्कर्त्तानो अनुषंग थशे. बीजा पक्षमां योगियोनेपण जगत्कर्त्तानी आपत्ति आवशे. त्रीजो पक्ष ठीक नथी, कारण के अशरीरने प्रथमज ज्ञानादि

आश्रयत्वनो प्रतिषेध करेलछे. चोथानोपण संजवनथी, कारण के अशरीरनो कायवचनना व्यापारपणानो असंजव छे; अने ऐश्वर्यपण शुं ज्ञातपणुंछे? के कर्त्तापणुंछे? के वीजुं कांइछे? जो कहो के ज्ञातपणुंछे, तो शुं ज्ञातृत्व मात्रछे? के सर्वज्ञातृपणुंछे ? प्रथम पक्षमां तो ज्ञाताज थशे, परंतु ईश्वर थशे नहि, अमारा सरखा वीजा ज्ञाताउनी जेम. वीजा पक्षमां, सर्वज्ञपणुं तो तेने थशे, परंतु सुगतादि जेम ईश्वरपणुं नहि थाय.

हवे जो एम कहो के कर्तृत्वपणुंछे, तो तो कुंजकारादिनेपण अनेक कार्य करवाथी ऐश्वर्यनी प्रसक्ति थशे, अने इछा प्रयत्न विना वीजी कोइपण वस्तु ईश्वरना ऐश्वर्यने वंधनकारक नथी.

एक वीजी वात ए छे के, ईश्वरने जगत् वनाववामां शुं यथारुचि प्रवृत्तिछे? के कर्मवशथी ते जगत् वनावेछे? के दयाथी वनावेछे? के क्रीडावास्ते वनावेछे? के निग्रह अनुग्रह करवावास्ते वनावेछे ? के स्वजावें वनावेछे? प्रथम पक्षमां, कदाचित् वीजी तरेहनी सृष्टि थइ जशे. वीजा पक्षमां, ईश्वरनी स्वतंत्रतानो नाश थशे. त्रीजा पक्षमां, सर्व जगत् सुखीज करवुं जोइये.

पूर्वपक्षः– ईश्वर शुं करे? जेवां जेवां जीवोए कर्म करेलां छे, तेवां तेवां दुःख सुख ते कर्मना कारणथी ईश्वर तेउने आपेछे.

उत्तरपक्षः– त्यारे तेमां ईश्वरनो पुरुषार्थ शुं? जो कर्मनीज अपेक्षाथी कर्त्ताछे, तो तो ईश्वरनी कल्पना करीने शुं करवुंछे? कर्मनाज वलथी सर्व कांइथइजशे. चोथा, पांचमा पक्षमां, ईश्वर, रागी द्वेषी थइ जशे, त्यारे तो ईश्वर केवीरीतें सिद्ध थशे? जुउ. क्रीडा करवाथी वालकनी पेठे ईश्वर रागवान् छे, अने निग्रह, अनुग्रह करवाथी राजानी पेठे ईश्वर रागी, द्वेषीछे.

जो एम कहो के ईश्वरनो स्वजावज जगत् रचवानो छे, तो तो जगत् स्वजावथीज थयेल छे एम मानी ल्यो. हवे ईश्वरनी कल्पना शा वास्ते करो छो? ते वास्ते कार्यत्वहेतु बुद्धिमत्कर्त्ता ईश्वरने सिद्ध कर्त्ता नथी. तेज कारणथी नैयायिक, वैशेषिक जे जगत्कर्त्ता ईश्वरने माने छे ते अज्ञानतासूचक छे. विशेषथी जगत् कर्त्ता ईश्वरनुं खंडन जोवुं होय तो सम्मतितर्क ग्रंथ जुउ.

हवे नैयायिक जे सोल पदार्थ माने छे, ते पण वालकनो खेल छे, सो-

ल पदार्थ घटता नथी. सोल पदार्थनां नाम– १ प्रमाण २ प्रमेय, ३ संशय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत, ६ सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ९ निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंडा, १३ हेत्वाभास, १४ छल, १५ जाति, १६ निग्रहस्थान.

हेय उपादेय प्रवृत्तिरूपें पदार्थोनी जेनाथी परिछित्ति करियें ते प्रमाण " तत्त्वमीयतेऽनेनेति प्रमाणं " ते प्रमाण १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ शब्द, आ चार प्रकारे छे. " तत्रेंद्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षं इति गौतमसूत्रं" भावार्थः– इंद्रिय अने अर्थना संबंधथी जे उत्पन्न थयेल, व्यपदेशरहित, व्यभिचाररहित, निश्चयात्मक, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे. प्रत्यक्ष प्रमाणनुं आ लक्षण सत्य नथी. ज्यां आत्मा अर्थ ग्रहण प्रति साक्षात् व्यापारियें तेज प्रत्यक्ष प्रमाण छे. ते अवधि, मनःपर्यव, अने केवल छे; अने नैयायिकोयें जे प्रत्यक्ष वतावेल छे ते तो उपाधिद्वारा प्रवृत्ति थवाथी अनुमानना पेठे परोक्ष छे. जो उपचारें प्रत्यक्ष मानियें तो तो वास्तविक छे, परंतु तत्वचिंतामां उपचारनो व्यापार थइ शकतो नथी.

अनुमान प्रमाण त्रण प्रकारें माने छे. १ पूर्ववत्, २ शेषवत्, ३ सामान्यतोदृष्ट. कारणथी कार्यनुं जे अनुमान ते पूर्ववत्, कार्यथी कारणनुं जे अनुमान ते शेषवत्. तथा एक आम्र वृक्ष फलरूप देखीने, जगत्मां आम्रवृक्षो फलरूप थयेला छे, एम जाणवुं; अथवा देवदत्तादिमां गति पूर्वक स्थानथी, स्थानांतरनी प्राप्ति देखीने सूर्यमां पण गतिनुं अनुमान करवुं ते, सामान्यतोदृष्ट छे. त्यां पण अन्यथानुपपत्तिज गमक छे, कारणादि नथी; कारण के अन्यथानुपपत्ति विना कारणने कार्यप्रति व्यभिचार थाय छे, अने ज्यां अन्यथानुपपत्ति छे त्यां कार्य कारणादि विनापण गमक भाव देखियें छियें. ते वतावियें छियें. कृत्तिकाने देखवाथी अनुमान थाय छे के रोहिणीनो उदय थशे. ॥ श्लोक ॥ अन्यथानुपपन्नत्वं, यत्र तत्र त्रयेण किं ॥ नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किं ॥ ॥ १ ॥ तथा एक वीजी वात ए छे के, ज्यारे नैयायिकनुं करेलुं प्रत्यक्ष प्रमाणज प्रमाण न थयुं तो अनुमान जे प्रत्यक्षपूर्वक छे ते केवी रीतें प्रमाण होय ? तथा " प्रसिद्धसाधर्म्यात् " अर्थात् प्रसिद्ध साधर्म्यथी जे साध्यनुं साधन छे ते उपमान प्रमाण छे जेवी गाय छे तेवुं

रोऊ छे. अहींयां पण संज्ञा संज्ञी संबंधनी प्रतिपत्ति उपमाननो अर्थ छे. तेमज अन्यथानुपपत्ति सिद्ध थवाथी उपमाननो पण अनुमानमां अंतर्भाविज छे, परंतु पृथक् प्रमाण नथी. जो एम कहो के अहींयां अन्यथानुपपत्ति नथी, तो तो व्यभिचारी होवाथी उपमान प्रमाणज नथी. शाब्द पण सर्वे, प्रमाण नथी. परंतु आप्तप्रणीत जे आगम छे, तेज प्रमाण छे; अने अर्हंत विना वीजा कोइ आप्त नथी, ते वातनो निर्णय देखवो होय तो सम्मतितर्क, नंदीसिद्धांत, आप्तमीमांसादि शास्त्र जोइ लेवां. वली एक वीजी वात ए छे के आ चारे प्रमाण, आत्मानुं ज्ञान छे; अने ज्ञान वस्तुना गुणोने पृथक् पदार्थ मानियें, तो तो रूप रसादिने पण पृथक् पदार्थ मानवा जोइयें. जो एम कहो के प्रमेय ग्रहण करवाथी, तेमज इंद्रियार्थ होवाथी तेपण ग्रहण कराय छे. आ पण तमारुं केहेवुं युक्तियुक्त नथी; कारण के द्रव्यथी पृथक् गुणोनो अभाव छे. द्रव्यग्रहण करवामां गुणोनुं ग्रहण थइ जाय छे ए सिद्ध छे. ते कारणथी गुणने पृथक् पदार्थ मानवा वास्तविक नथी.

२ प्रमेयना भेद, १ आत्मा, २ शरीर, ३ इंद्रिय, ४ अर्थ, ५ बुद्धि, ६ मन, ७ प्रवृत्ति, ८ दोष, ए प्रेत्यभाव, १० फल, ११ दुःख, १२ अपवर्ग. १ आत्मा सर्वनो दृष्टा तेमज भोक्ता छे; अने इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, ज्ञान, तेर्हनाथी अनुमेय छे, ते तो अमे जीवतत्वमां ग्रहण करेल छे. २ शरीर आत्मानुं भोगायतन छे, इंद्रिय भोगनां साधन छे ३-४ इंद्रिय अर्थ (विषय) भोग्य छे, ते पण शरीरादि जीव अजीवग्रहणरूपें अमे ग्रहण करेल छे.५ बुद्धि, ते उपयोगरूप ज्ञानविशेष छे, तेनो जीवस्वरूप ग्रहण करवामां समास थाय छे. अर्थात् जीवतत्वमां ते आवी जाय छे. ६ मन, ते सर्व विषय अंतःकरण छे. युगपत् ज्ञाननुं न होवुं ते मननुं लिंग छे, तेमां द्रव्यमन पौद्गलिक छे, तेनो अजीव तत्वमां समावेश थाय छे. अने भाव मन, ज्ञानरूप आत्मानो गुण छे, ते जीवतत्वमां ग्रहण कराय छे. ७ आत्मानी इच्छानुं नाम प्रवृत्ति छे, ते सुख दुःख थवानुं कारण छे, ते ज्ञानरूप होवाथी तेनो जीवतत्वमां समास थाय छे. ८ आत्माना अध्यवसाय, जे राग, द्वेष, मोहादि दोष छे, ते दोष पण जीवना अभिप्रायरूप होवाथी तेनो जीवतत्वमां समावेश थाय छे. ते वास्ते पृथ-

क् पदार्थ नथी. ए प्रेत्यभाव, परलोकनो सद्भाव, ते पण जीव अजीव विना बीजुं कांइ पण छे नहि, १० फल, जे सुख दुःखनुं भोगववुं, तेनोपण जीवना गुणमां अंतर्भाव छे, तेथी पृथक् पदार्थ मानवुं वास्तविक नथी. ११ दुःख, आ पण फलथी जुदुं नथी. १२ जन्म मरणप्रबंध उच्छेदरूपें सर्व दुःखनुं दूर करवुं, ते मोक्षनुं लक्षण छे, ते अपवर्ग तो अमे नवतत्त्वमां मानेल छे.

३ आ शुं छे? एवा अनिश्चयरूप प्रत्ययने संशय कहे छे, ते पण निर्णय ज्ञानवत् आत्मानोज गुण छे.

४ जेनाथी प्रयुक्त थया थकां प्रवर्त्ते छे, तेनुं नाम प्रयोजन छे, ते पण इच्छाविशेष होवाथी आत्मानो गुण छे.

५ अविप्रतिपत्ति विषयमां प्राप्त जे अर्थ ते दृष्टांत छे, ते पण जीव अजीव पदार्थथी पृथक् नथी, तेथी न्यारो पदार्थ नथी, कारण के अवयव ग्रहण करवामां तेनुं पण ग्रहण थइ जशे.

६ सिद्धांत चार प्रकारेछे. १ सर्वतंत्राविरुद्धः सर्व शास्त्रोमां अविरुद्ध. जेम के स्पर्शनादि इंद्रियछे, अने स्पर्शादि इंद्रियार्थछे, तथा प्रमाणथी प्रमेयनुं ग्रहण थायछे. २ समानतंत्रसिद्धः परतंत्रासिद्धः प्रतितंत्रासिद्धांतः जेमके सांख्य मतवालानो असत् आत्मलाभ प्राप्त थतो नथी, अने सत्नो सर्वथा विनाश नथी. ३ अधिकरणसिद्धांतः, जेनी सिद्धि थतां बीजापण अर्थ अनुषंगथी सिद्ध थइ जाय ते. ४ "अपरीक्षितार्थाभ्युपगमत्वात्तद्विशेषपरीक्षणमभ्युपगमसिद्धांतः" जेमके कोइयें कह्युं के, शब्द शुं वस्तुछे? कोइक कहेछे, शब्द द्रव्यछे. ते शब्द नित्यछे? के अनित्यछे? इत्यादि विचार आ चारे प्रकारना सिद्धांत ज्ञानविशेषथी अतिरिक्त नथी, अने ज्ञानविशेष, आत्मानो गुणछे, गुणिने ग्रहण करवाथी ग्रहण करेलछे तेथी पृथक् पदार्थ नथी.

७ अवयवाः; प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, आ पांचे अवयवने जो शब्दमात्र मानियें तो तो पुद्गलरूप होवाथी तेनो अजीवतत्त्वमां समावेश थायछे, अने जो ज्ञानरूप मानियें तो जीवतत्त्वमां तेनो समावेश थायछे. तेथी तेमने पृथक् पदार्थ केहेवा ठीक नथी.

जो ज्ञानविशेपने पृथक् पदार्थ मानियें तो तो पदार्थ अनेक थइ जशे, कारण के ज्ञानविशेप अनेक प्रकारना छे.

८ संशयथी उपरांत भवितव्यता प्रत्ययरूप सत् अर्थ पर्यालोचनात्मक तेने तर्क कहेछे. जेमके आ स्थाणु अथवा पुरुप जरूर हशे. आ पण ज्ञानविशेपजछे; ज्ञानविशेप ज्ञाताथी अभिन्नछे, तेथी पृथक् पदार्थ कल्पवो वास्तविक नथी.

९ संशय, तेमज तर्कथी उत्तरकालभावि निश्चयात्मक एवुं जे ज्ञान, तेनुं नाम निर्णय छे. आ पण ज्ञानविशेपछे अने निश्चयरूप होवाथी, प्रत्यक्षादि प्रमाणना अंतर्भाव थवाथी पृथक् पदार्थ कल्पवो वास्तविक नथी.

१०–११–१२ वाद, जल्प, वितंडा, प्रमाण तर्क साधन उपालंभ सिद्धांत अविरुद्ध पंच अवयवसंयुक्त पक्ष, प्रतिपक्षनुं जे ग्रहण करवुं तेनुं नाम वादछे. ते वादतत्व शिष्य अने आचार्यनो ज्ञानवास्ते थायछे. तथा तेज वाद बीजाने जीतवावास्ते, तेनीसाथे छल, जाति निग्रहस्थानथी साधन उपालंभ ते जल्पछे. तथा ते वादज प्रतिपक्षस्थापनारूपेंज वितंडा छे. आ वाद, जल्प, वितंडा ए त्रणेनो भेदज थइ शकतो नथी; कारण के तत्वनुं चिंतवन करवामां तत्वना निर्णयार्थें वाद करवो जोइयें, परंतु छल, जाति आदिथी तत्वनो निश्चय थइ शकतो नथी; कारण के छलादिं बीजाने ठगवावास्ते करवामां आवेछे. तेनाथी तत्वनिर्णयनी प्राप्ति थइ शक्ती नथी. जो तेउनो भेदपण मानशो, तोपण तेउ पदार्थ थइ शकता नथी. कारण के जे परमार्थथी वस्तु छे, तेज पदार्थछे. वाद तो पुरुपनी इछाने आधीन छे, नियतरूप नथी, ते कारणथी पदार्थ नथी. वली कुकडां, कुतरां, मेढां एउना वादमांपण पक्ष, प्रतिपक्ष ग्रहण करियें तो तेउनेपण तत्वज्ञाननी प्राप्ति थवी जोइयें; परंतु ते तो तमे मानता नथी, तेथी वाद, जल्प, वितंडा, पदार्थ नथी.

१३ हेत्वाभास १ असिद्ध, २ अनेकांतिक, ३ विरुद्ध. आ त्रण प्रकारेंछे. हेतु तो नथी, परंतु हेतुनी जेम भासन थायछे, तेथी हेत्वाभास कहेछे. ज्यारे सम्यक् हेतुउनीज तत्व व्यवस्थिति नथी, त्यारे हेत्वाभासोनुं तो केहेवुंज शुं? कारणके जे नियत स्वरूपथी रहे ते वस्तुछे, अने

हेतु तो कोइ साध्य वस्तुमां हेतु छे, अने बीजी साध्य वस्तुमां अहेतुछे, ते कारणथी नियत स्वरूपवालो नथी.

१४–१५–१६ छल, जाति, निग्रहस्थान. आ त्रणे पदार्थ नथी. कारण के आ त्रणे वास्तवमां कपटरूपछे. जेउए तेमने तत्वरूपें कथन करेल छे, तेउना ज्ञान, वैराग्यमाटे शुं कहेवुं ? आ संसारमां जे चोरी, ठगाइ, हाथफेरी प्रमुख शिखवे, तेउनेपण तत्वज्ञानना उपदेशक मानवा सरखुंछे, ए प्रमाणे नैयायिक मतना सोल पदार्थनुं खंडन समजवुं. विशेष जाणवा इच्छनारें न्यायकुमुदचंद्र अवलोकन करवो. आ खंडन सूत्रकृतांग सिद्धांतथी लखेल छे. जुउ बारमुं अध्ययन. इति नैयायिकदर्शनखंडन.

हवे वैशेषिकमतखंडन लखियें छियें. वैशेषिकनां कहेलां तत्व पण तत्व नथी. तेउए १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, एम छ तत्व मान्यां छे. तेमां द्रव्य नव छे, १ पृथिवी, २ अप्, ३ तेज, ४ वायु, ५ आकाश, ६ काल, ७ दिक्, ८ आत्मा, ९ मन. प्रथमनां चारे द्रव्योने भिन्न भिन्न द्रव्य मान्यां छे ते वास्तविक नथी; कारण के परमाणु जे छे ते प्रयोग विश्रसाथी पृथिवी आदिना रूप पणें परिणमे पण छे, तो पण पोताना द्रव्यपणांने तजता नथी, अने अति प्रसंग होवाथी अवस्थाभेदें द्रव्यना भेद मानवा ते योग्य नथी. वली आकाश तथा कालने तो अमे पण द्रव्य मानियें छियें, अने दिशा तो आकाशनुं अवयव भूत छे. तेथी पृथक् द्रव्य नथी. आत्मा शरीरमात्रव्यापी उपयोग लक्षण तेने अमे द्रव्य मानियें छियें. द्रव्यमन पुद्गलद्रव्य अंतर्भावि छे, अने भावमन जीवनो गुण होवाथी, आत्मा अंतर्भावी छे. वैशेषिक कहे छे के जेम पृथिवीत्वना योगथी पृथिवी छे, इत्यादि. आ पण तेउनुं केहेवुं स्वप्रक्रियामात्र छे कारण के पृथिवीथी अन्य बीजुं कोई पृथिवीपणुं नथी, जेना योगथी पृथ्वी थाय. परंतु सर्व जे कांइ छे ते सामान्य विशेषात्मक छे, नरसिंहाकारवत् उभयस्वभाव छे.

नान्वयः सहि भेदत्वा,न्नाभेदोन्वयवृत्तितः ॥ मृद्भेदद्वयसंसर्ग, वृत्ति जात्यंतरं घटः ॥ १ ॥ भावार्थः— घटमां मृत्तिकानो अन्वय नथी, पृथु बुध्न उदराकारादि हेतुथी भेद छे, तेमज अन्वयवर्त्ति होवाथी घटनो मृत्तिकाथी एकांत भेद पण नथी, अर्थात् घट मृत्तिका रूपज छे. अन्वय

व्यतिरेक बंनेना मलवाथी घट जात्यंतर रूप छे, अर्थात् मृत्तिकाथी कथं चित् भेदाभेदरूप छे. यथा ॥ न नरः सिंहरूपत्वा, न्न सिंहोनररूपतः ॥ शब्दविज्ञानकार्याणां, भेदोजात्यंतरं हि सः ॥ १ ॥ भावार्थः–सिंहरूप होवाथी नर नथी, अने नररूप होवाथी सिंहपण नथी, तो शुं छे? १ शब्द, २ विज्ञान, ३ कार्य, तेउना भेद होवाथी नरसिंह, त्रीजी जातिछे.

२ रूप, रस, गंध, स्पर्श, तेउनी रूपि द्रव्यमां प्रवृत्ति छे, अने विशेष गुण छे, तथा १ संख्या, २ परिमाण, ३ पृथक्त्व, ४ संयोग, ५ विभाग, ६ परत्व, ७ अपरत्व, आ सामान्य गुण छे, तेउनी सर्वद्रव्यमां प्रवृत्ति छे. तथा १ बुद्धि, २ सुख, ३ दुःख, ४ इछा, ५ द्वेष, ६ प्रयत्न, ७ धर्म, ८ अधर्म, ९ संस्कार, आ आत्माना गुण छे. तथा गुरुत्व पृथ्वी तथा जलमां छे, द्रव्यत्व पृथ्वी, जल, तेमज अग्निमां छे, स्नेह जलमांज छे, वेगनाम संस्कार ते मूर्त्त द्रव्योमांज छे, अने शब्द आकाशनो गुण छे. तेमां संख्यादि सामान्य गुण रूपादि पेठे द्रव्यस्वभाव होवाथी परउपाधिथी गुणज नथी. वली गुण जो द्रव्यथी पृथक् थइ जाय तो द्रव्यना स्वरूपनो नाश थइ जशे. " गुणपर्यायवंत् द्रव्यं " आ केहेवाथी गुण द्रव्यथी भिन्न नथी. द्रव्यग्रहण करवामां गुणनुं ग्रहण थइ जाय छे, तेज युक्त छे परंतु गुणने पृथक् पदार्थ मानवो, युक्त नथी. तथा शब्द आकाशनो गुण नथी, कारण के ते तो पौद्गलिक छे, अने आकाश तो अमूर्त्त छे. बाकी जे वैशेषिकें कहेल छे ते प्रक्रियामात्र छे, साधन दूषणोनुं अंग नथी.

३ कर्म पण गुणनी पेठे पृथक् पदार्थ मानवो अयुक्त छे.

४ सामान्य वे प्रकारें छे. एक पर, बीजुं अपर. तेमां पर सामान्य महासत्ता नाम छे. द्रव्यादि त्रण पदार्थोमां व्यापि छे, अने अपर ते द्रव्यत्व, गुणत्व, कर्मत्वादि छे. तेमां महासत्ताने पृथक् पदार्थ मानवुं अयुक्त छे; कारण के सत्तामां जे सत् प्रत्यय छे, ते शुं कोई बीजी सत्ताना योगथी छे? के स्वरूपथी छे? जो कहो के बीजी सत्ताना योगथी छे तो ते सत्तामां सत्प्रत्यय वली बीजी सत्ताना योगथी होवो जोइयें. एम करतां अनवस्था दूषण आवे छे. वली जो कहो के स्वरूपथी, सत् छे तो तो द्रव्यादि पण स्वरूपथी सत् छे. त्यारे हवे बकराना, गलाना स्तनोनी पेठे निष्फल सत्तानी कल्पना करवानुं शुं प्रयोजन छे. वली द्रव्यादि स-

त्ताना योगथीज सत् केहेवाय छे ? के सत्तासंबंध विनाज सत्स्वरूप छे ? जो कहो के स्वतःज सत्स्वरूप छे, तो सत्तानी कल्पना करवी व्यर्थ छे. जो कहो के सत्ताना योगथी सत् छे तो तो शशविषाणपण सत्ताना योगथी सत् होवां जोइयें. यथा ॥ स्वतोऽर्थाः संतु सत्ताव, त्सत्तया किं सदात्मना ॥ असदात्मसु नैषा स्या, त्सर्वथातिप्रसंगतः ॥ १ ॥ इत्यादि. आ दूषणो तुल्य योगक्षेम होवाथी अपर सामान्यमांपण जोडी देवां. वळी अमे पण वस्तुउं सामान्य विशेषरूप होवाथी तेउंने कथंचित् सामान्यरूप मानियेंजछियें. ते वास्ते द्रव्यग्रहण करवामां सामान्यनुं ग्रहण थइगयुं, तेहेतुथी सामान्य, द्रव्यथी पृथक् पदार्थ नथी.

५ विशेष अत्यंत व्यावृत्ति बुद्धिनो हेतु होवाथी वैशेषिकोए मानेल छे. हवे जुउं. ते विशेषमां जे विशेषबुद्धि छे, ते अपर विशेषोथी छे ? के स्वतःज स्वरूपथी छे ? अपर विशेषहेतु तो लागतो नथी, अनवस्था, तेमज विशेषमां विशेषनो अंगीकार नथी. जो कहो के स्वतःज विशेषबुद्धिनो हेतु छे, तो पछी विशेषोने द्रव्यथी अतिरिक्त पदार्थ कल्पवा व्यर्थ छे. अने द्रव्यथी अव्यतिरिक्त विशेषोने, सर्व वस्तुउं सामान्य विशेषात्मक होवाथी, अमे पण मानियें छियें.

६ समवाय, अयुतसिद्ध आधार आधेयभूतोना जे इह प्रत्ययनो हेतु छे, ते समवाय केहेवाय छे. वळी समवाय नित्य, तेमज एक छे, एम वैशेषिक माने छे. ते समवाय नित्य होवाथी, समवायी पण नित्य होवां जोइयें. जो समवायी अनित्य छे, तो समवाय पण अनित्य होवो जोइये ? कारण के समवायनो आधार समवायी छे. तथा समवाय एक होवाथी समवायी पण एकज होवो जोइयें अथवा समवायी अनेक होवाथी समवाय पण अनेक होवा जोइयें. वळी समवाय जे पदार्थोनो समवायी संबंध करे छे, ते समवाय ते पदार्थोनी साथे पोतानो संबंध बीजा समवायना योगथी करे छे ? के पोतेज पोतानो संबंध करे छे ? जो कहो के बीजा समवायथी करे छे, तो तो अनवस्था दूषण छे, अने समवायपण बीजो छे नहि. जो कहो के पोतानो संबंध करे छे, तो तो गुण क्रियादि पण द्रव्यथी स्वरूपें तथा अविष्वग् जावसंबंधथी संबंधी छे. तो हवे समवाय कल्पवो पण व्यर्थ छे.

एवीरीतें वैशेषिक मतमां पण सम्यक् पदार्थोनुं कथन आप्तोक्त नथी. तथा नैयायिक, वैशेषिक मतमां जे मोक्ष माने छे तेपण प्रेक्षावानोने मानवा योग्य नथी. तेउं तो ज्यारे आत्मा ज्ञानथी रहित थाय, अर्थात् जडरूप थइजाय, त्यारे आत्मानो मोक्ष मानेछे. एवा मोक्षने कयो बुद्धिमान् उपादेय माने? कारण के एवो कोण बुद्धिमान् होय के सर्वसुख तेमज ज्ञानथी रहित थइ पाषाणतुल्य पोतानो आत्मा करवा चाहे? तेकारणथी कोइयें वैशेषिकनुं उपहास्य पण करेल छे. यथा ॥ श्लोक॥ वरं वृंदावने रम्ये, क्रोष्टुत्वमभिवांछति ॥ न तु वैशेषिकीं मुक्तिं, गौतमोगंतुमिछति ॥ १ ॥ स्वर्गनां सुख उपाधिसहितछे, अवधिवालां छे, तेमज परिमित आनंदरूप छे, अने मोक्ष तो निरुपाधिक, निरवधिक, अपरिमित आनंद ज्ञानसुखस्वरूप, विचक्षण पुरुष कहेछे. जो मोक्ष होवुं पाषाण तुल्य छे, तो एवो मोक्ष प्राप्त करवानुं कांइ प्रयोजन नथी. तेनाथी तो संसारज सारो छे के जे संसारमां डुःखमिश्रित सुख भोगववामां आवेछे. जरा विचार तो करो के थोडा सुखने भोगववुं ते सारूं छे? के सर्वसुखनो उछेद सारो छे? इत्यादि विशेष चर्चा, स्याद्वादमंजरीनी टीकाथी जाणवी. ते कारणथी नैयायिक, वैशेषिक बंने मत उपादेय नथी.

हवे सांख्यमतनुं खंडन लखियें छियें. सांख्यमत वास्तविक नथी. जुउं. परस्परविरोधी एवां सत्व, रज, तमोगुणोनुं प्रकृति रूपोनुं गुणीविना एकत्र अवस्थान अर्थात् रेहेवुं ते युक्त नथी. जेम कृष्ण, श्वेतादि गुण, गुणिविना एकत्र रही शकता नथी तथा महत् आदि विकार होवामां, प्रकृतिमां विषमता उत्पन्न करनार कोइपण कारण नथी; कारण के प्रकृति विना बीजी कोइ वस्तु सांख्य मानता नथी. आत्माने अकर्त्ता, अकिंचित्कर मानेछे. जो स्वभावथी वैषम्य मानशो, तो निर्हेतुकतानी आपत्ति आवशे, कारण के कार्य कदी होय, अने कदी न होय, ते हेतु विना थइ शकतां नथी. तेमज खरशृंगादि जे नित्य असत् छे, अने आकाशादि जे नित्य सत्छे ते हेतुथी नथी. यथा ॥ नित्यसत्त्वमसत्त्वं वा, हेतोरन्यानपेक्षणात् ॥ अपेक्षातोहिभावानां, कदाचित्तत्वसंभवः ॥ १ ॥

वली स्वभाव प्रकृतिथी भिन्न छे? के अभिन्न छे? भिन्न तो नथी,

कारण के प्रकृति विना सांख्योए बीजी कांइवस्तु मानेली नथी. जो कहो के अभिन्न छे तो तो प्रकृति छे, स्वभाव नथी.

वली महत् तेमज अहंकार ज्ञानथी भिन्न अमे देखता नथी. जुओ, बुद्धि अध्यवसायमात्र छे, अने अहंकार हुं सुखी, हुं दुःखी, एवा स्वरूपवालो छे. आ बंनेमां चिद्रूप होवाथी आत्मानुं गुणपणुं छे, परंतु जडरूप प्रकृतिनो विकार नथी.

वली तन्मात्राथी भूतोनी जे उत्पत्ति मानेछे, जेम के १ गंधतन्मात्राथी पृथ्वी, २ रसतन्मात्राथी जल, ३ रूपतन्मात्राथी अग्नि, ४ स्पर्शतन्मात्राथी वायु, ५ शब्दतन्मात्राथी आकाश, आ तेओनुं मानवुं युक्त नथी. जो बाह्यभूतनी अपेक्षाथी कहेता होतो अयुक्तछे. आ बाह्य पांच भूतो निरंतर विद्यमान होवाथी तेनी उत्पत्ति नथी. "न कदाचिदनीदृशं जगत् इतिवचनात्" अर्थात् आ जगत् प्रवाहथी अनादि कालथी एवुंज चाल्युं आवे छे.

जो एम कहोके दरेक शरीरनी अपेक्षाए अमे मानियें छियें तेओमां, त्वचा, हाड, कठणलक्षणा पृथिवीछे, श्लेष्म, रुधिर, द्रव लक्षण जल छे, पक्ति (जठर) लक्षण अग्नि छे, पानापान (श्वासोच्छ्वास) लक्षण वायु छे, सुषिर (पोलाण) लक्षण आकाश छे. आ पण केहेवुं ठीक नथी; कारण के तेमां पण केटलाएक शरीरोनी उत्पत्ति पितानुं शुक्र अने माताना रुधिरथी थायछे, त्यां तन्मात्राओनो गंधपण नथी, अने अदृष्ट वस्तुओने कारण कल्पवामां अतिप्रसंग दूषण छे. वली इंडां, उद्भिज्ज, अंकुरादिनी उत्पत्ति पण बीजी वस्तुओथी थती देखवामां आवेछे. ते कारणथी महत्, अहंकार आदिनी उत्पत्ति सांख्योए जे पोतानी प्रक्रियाथी मानी छे, ते युक्तिरहित मानी छे. केवल पोताना मतना रागथीज मानेली छे, वली आत्माने अकर्त्ता माने छे, तेथी तो कृतनाश, अकृत अभ्यागमनुं दूषण आवेछे, तेमज बंध मोक्षनो अभाव थायछे, अने निर्गुण होवाथी आत्मज्ञानशून्य थइ जायछे. पूर्वोक्त सर्व युक्तिहीन होवाथी बालप्रलापमात्र छे.

हवे सांखमतना मोक्षनो विचार करियें. "प्रकृति पुरुषांतरपरिज्ञानात् मुक्तिः" अर्थात् प्रकृति पुरुषथी अन्य छे एवुं ज्यारे ज्ञान थाय छे, त्यारे मुक्ति थायछे. यथा ॥ शुद्धचैतन्यरूपोयं, पुरुषः पुरुषार्थतः ॥ प्रकृत्यंतरमज्ञात्वा, मोहात्संसारमाश्रितः ॥ १ ॥ भावार्थ— पुरुष परमार्थथी शुद्ध

चैतन्यरूप छे. पोते पोताने प्रकृतिथी एकमेक समजेछे. आ मोहथी संसारने आश्रित थइ रहेल छे. ते हेतुथी प्रकृति सुखादिस्वभावथी ज्यांसुधि विवेकपूर्वक ग्रहण करशे नहि, त्यांसुधि मुक्ति नथी; तेमज केवलज्ञाननो उदय थवाथीज मुक्ति छे, ए पण असत् छे. कारण के आत्मा एकांत नित्यछे, अने सुखादि, उत्पाद, व्यय स्वभाववालां छे; त्यारे तो विरुद्ध धर्म संसर्गथी आत्माथी प्रकृतिनो भेद प्रतीतज छे, तो हवे मुक्ति केम नहि?

हवे ते तो संसारी विचार करतो नथी, तेवास्ते मुक्ति नथी, जो एम कहेशो तो तो तमारा केहेवाथी कदापि मुक्ति थशे नहि. एवो विवेक अध्यवसाय संसारिने कदापि थइ शकतो नथी, तेज घताविषे छियें.

ज्यां सुधी संसारी छे. त्यां सुधी विवेक परिभावनाथी संसारीपणुं दूर थतुं नथी. तेवास्ते विवेक अध्यवसायना अभावथी कदापि संसारथी छुटवानुं नथी.

तथा आ सृष्टि पेहेलां तो केवल आत्मा छे, एम तमे मानो छो, तो पछी आत्माने संसार क्यांथी लपटायो? जो कहो के निर्मल आत्माने संसार लपटाय छे, तो तो मोक्ष थया पछी पण संसार लपटाशे; हवे विचारो के मोक्ष शुं थयो? केवल विटंबना थइ.

पूर्वपक्षः–सृष्टि पेहेलां आत्माने दिदृक्षा थइ, ते दिदृक्षाना जोरथी प्रधाननी साथे पोतानुं एकरूप देखायुं; तेथी संसारी थयो. ज्यारे प्रकृतिनुं दुष्टपणुं ध्यानमां आव्युं, त्यारे प्रकृतिथी वैराग्य थयो. पछी प्रकृति विषे दिदृक्षा न रही, त्यारे संसारपण न रह्यो.

उत्तरपक्षः–आ तमारुं केहेवुं स्वकृतांतविरुद्ध होवाथी अयुक्त छे. जुओ. दिदृक्षा, देखवानी अभिलाषानुं नाम छे. ते अभिलाषा पूर्वे देखेला पदार्थोमां तेना स्मरणथी थाय छे. प्रकृति तो पूर्वे कदापि तेणे देखी नथी, तो केवीरीतें तेनेविषे स्मरण अभिलाषा होय? जो एम कहो के अनादि वासनाना बलथी प्रकृतिमांज स्मरण अभिलाषा छे, तोपण असत् छे, कारण के वासनापण प्रकृतिनो विकार होवाथी प्रकृति पेहेलां न होती. जो एम कहो के वासना आत्माना स्वभावरूप छे. तोतो आत्मस्वरूपनी जेम वासनानो कदापि अभाव थशे नहि, अने मोक्षपण क-

दापि थशे नहि, ए प्रमाणे सांख्य मतपण बालकना खेलसमान थयो. इति सांख्यमतखंडन.

हवे मीमांसक मतनुं खंडन लखतां, तेना मतनुं स्वरूप तो पूर्वे बतावेल छे, अने वेदांतियोना ब्रह्म (अद्वैत) नुं खंडन ईश्वरवादमां बीजा परिछेदमां विस्तारपूर्वक करेलुं छे, तेथी आ स्थलें वर्णन करेलुं नथी. इति मीमांसकमत.

हवे जैमिनीय मतनुं खंडन लखियेंछियें, जैमिनीय कहे छे के "हिंसागाध्यात्" जे हिंसा इंद्रियोना रसवास्ते, अथवा कुव्यसन निमित्तें करियें तेज हिंसा अधर्मनो हेतु छे. प्रमादना उदयथी कसाइ, माछिउनी जेम. अने वेदोमां जे हिंसा कही छे ते हिंसा नथी, परंतु धर्मनो हेतु छे, देवता, अतिथि, पितृउनी प्रीति संपादक होवाथी, तथाविध पूजा उपचारनी पेठे. वली आ प्रीतिनुं संपादन करवुं असिद्ध नथी. कारण के कारीरी प्रमुख यज्ञोना स्वसाध्य विषे वृष्टि आदि फलोनुं जे अव्यभिचारिपणुं छे, ते यज्ञ करवाथी जे देवता तृप्त थाय छे, ते वृष्टि आदिनो हेतु छे. तेवीजरीतें "त्रिपुरार्णववर्णित छगल" अर्थात् बकराना मांसनो होम करवाथी परराज्यनुं जे वश थवुं छे, तेपण तेमांसनी आहुतियोथी तृप्त थयेला देवताउनोज प्रभाव छे, अने अतिथि प्रति पण "मधु संपर्कसंस्कारादिसमास्वादजा" प्रत्यक्षज देखाय छे. अने पितृउने माटे जे श्राद्ध करवामां आवे छे, ते श्राद्धथी पितृउ तृप्त थतां, स्वसंताननी वृद्धि प्रत्यक्षज देखाय छे. वली ते बाबतमां आगम पण प्रमाण आपेछे. आगममां देवनी प्रीतिवास्ते, अश्वमेध, नरमेध, गोमेध, आदि यज्ञ करवा कहेल छे, अने अतिथिविषय "महोक्षं वा महाजं वा, श्रोत्रियाय प्रकल्पयेदिति" एवुं कहेलुं छे. वली पितृउनी प्रीति वास्ते आ प्रमाणें लखेलुं छे.

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन, त्रीन् मासान् हारिणेन तु ॥ औरभ्रेणाथ चतुरः, शाकुनेनेह पंच तु ॥ १ ॥ षण्मासश्छागमांसेन, पार्षतेनेह सप्त वै ॥ अष्टावेणस्य मांसेन, रौरवेण नवैव तु ॥ २ ॥ दशमासांस्तु तृप्यंति, वराहमहिषामिषैः ॥ शशकूर्मयोर्मांसेन, मासानेकादशैव तु ॥ ३ ॥ संवत्सरं तु गव्येन, पयसा पायसेन तु ॥ वार्ध्रीणसस्य मांसेन, तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ ४ ॥ आ श्लोक स्मृतिना छे. अर्थः—जो

पितृउने मत्स्यनुं मांस आपे तो, पितृउ वे माससुधी तृप्त रहेछे. जो हरिणनुं मांस आपे तो, त्रणमाससुधी तृप्त रहेछे, जो मेंढानुं मांस तेउने आपे तो, चारमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, जो जंगली कुकडानुं मांस तेउने आपे तो, पांचमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, जो वकरानुं मांस तेउने आपे तो, छमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, पृषत्बिंडुयुक्त जे हरिण होय, तेपार्षत कहेवायछे, तेनुं मांसजो पितृउने देवामां आवे तो, पितृउ सातमास सुधी तृप्त रहेछे,जो एणमृगनुं मांस देवामां आवेतो,आठमास-सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो मोटा काला मृगनुं मांस देवामां आवे तो, नवमाससुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो सूअर, अने महिषनुं मांस देवामां आवेतो, दशमास सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो ससला अने काचवा वंनेनुं मांस देवामां आवे तो, अग्यार मास सुधी पितृउ तृप्त रहेछे,जो गायनुं दुध अथवा खीर देवामां आवे तो, वार माससुधी पितरो तृप्त रहेछे, अने वहुज बूढा थयला लांवा कानवाला धोला वकरानुं मांस आपवामां आवे तो, वार वर्षसुधी पितरो तृप्त रहेछे. आ प्रमाणे मीमांसको माने छे.

हवे तेनुं खंडन लखियें छियें. हे मीमांसक? वेदोमां जे हिंसा कहिछे, ते धर्मना हेतुरूप कदापि थइ शकेछे? तमारा केहेवामां प्रत्यक्ष स्ववचन विरोध छे. जुउ. जो धर्मनो हेतु छे, तो हिंसा केवी रीतें छे? जो हिंसा छे, तो धर्मनो हेतु ते केवी रीतें थइ शकेछे? यथा ॥ श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यतां ॥ आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ॥ १ ॥ इत्यादि. जो धर्म कहेलो छे, तो हिंसा केवी रीतें धर्म थइ शकेछे? कारण के मातापण छे, अने ते वंध्यापण छे, एम कदी थइ शकतुं नथी.

पूर्वपक्षः–हिंसा कारणछे, अने धर्म तेनुं कार्य छे.

उत्तरपक्षः–आ तमारूं केहेवुं असत् छे. कारण के जे जेनी साथे अन्वय व्यतिरेकवालुं होय छे, ते तेनुं कार्य थायछे. जेम माटीना पिंड प्रमुखनुं घटादि कार्यछे, तेम धर्म कांइ हिंसाज कर्याथी थतो नथी,कारण के तप, दान, स्वाध्याय प्रमुखपण धर्मनां कारण छे.

पूर्वपक्षः–अमे सामान्य हिंसाने मानता नथी, परंतु विशिष्ट हिंसा-नेज धर्म कहियेंछियें. विशिष्ट हिंसा तेज छे, जे वेदोमां करवी कही छे.

उत्तरपक्षः–जो वेदनी हिंसा धर्मनी हेतु छे, तो शुं जे जीव यज्ञादिमां

मारवामां आवेछे, ते मरता नथी? ते कारणथी धर्म छे? अथवा शुं मरण समये तेउने आर्त्तध्याननो अजाव छे? ते कारणथी धर्म छे? अथवा जे जीव यज्ञादिमां मारवामां आवेछे. ते मरीने स्वर्ग प्राप्त करेछे? ते कारणथी धर्मछे? प्रथम पक्ष तो वास्तविक नथी, कारण के प्राणनो त्याग करतां तो ते जीवने प्रत्यक्ष देखियें छियें. बीजो पक्ष पण असत् छे, कारण के बीजाना मननुं ध्यान डुर्लक्ष्य छे, ते कारणथी आर्त्तध्याननो अजाव कहेवो, तेपण परमार्थशून्य वचनमात्र छे; आर्त्तध्याननो अजाव तो शुं थवानो हतो परंतु अरे डुःखी छियें ? छे कोइ करुणासागर के अमने छोडावे? एम पोतानी जाषामां कहेतां कहेतां पोतानी जापाथी विरस अरराट करतां, दीनमुखवालां, तेमज चक्षु फाडी चारे दिशाए जोतां, इत्यादि चिह्न देखवाथी, ते बिचाराउनुं आर्त्तध्यान स्पष्ट उपलब्ध थाय छे.

पूर्वपक्षः– जेम लोढानो गोलो पाणीमां डुबी जाय छे, तेनां जो पातलां पतरां करवामां आवे तो ते जेम पाणीमां नहि डुबतां तरे छे, तेमज जेम विष मृत्यु पमाडनार छे, तो पण मंत्रोथी संस्कार करतां थकां गुणकारि थाय छे, तथा जेम अग्नि दाहकस्वजाववालो छे, तो पण सत्यशीलादिना प्रजावथी दाहक थतो नथी, तेवीज रीतें वेदमंत्रादिथी संस्कार पामेली हिंसा दोषनुं कारण नथी. तेमज वेदोक्त हिंसा निंदनीय कदापि नथी; कारण के ते हिंसा करनारा याज्ञिक ब्राह्मणो जगत्मां पूजनीय देखाय छे.

उत्तरपक्षः– पूर्वोक्त तमारुं सर्व कथन असत् छे, कारण के जेटलां दृष्टांत तमे कह्यां ते सर्व वैषम्य छे; तेथी सिद्धि कांइपण थइ शकती नथी. लोढानो गोलो पतरांरूप थइ जल उपर जे तरे छे ते परिणामांतर थवाथी तरे छे, इत्यादि; परंतु वेदमंत्रोथी संस्कार करीने ज्यारे पशुउने मारवामां आवे छे, त्यारे तेउमां परिणामांतर शुं थाय छे ? शुं ते परिणामांतरथी, ते पशुउने मारतां डुःख थतुं नथी ? डुःखथी तो तेउ प्रगट अरराट शब्द करे छे. तो हवे लोहपत्रनुं दृष्टांत केवी रीतें समीचीन थइ शके छे ?

पूर्वपक्षः– यज्ञमां जे पशु मारवामां आवे छे, ते सर्व देवता थइ जाय छे, आ यज्ञ करवामां परोपकार छे.

उत्तरपक्षः– आ कथनमां प्रमाण शुं छे ? प्रत्यक्ष प्रमाण तो नथी, कारण के ते तो इंद्रिय संबंध वर्त्तमान वस्तुनुं ग्राहक छे. “ संबंधोवर्त्तमानं च, गृह्यते चक्षुरादिनेति वचनात्. ” तेमज अनुमान पण नथी, कारण के तत्प्रतिबद्ध लिंग कोइपण देखातुं नथी. वली आगम प्रमाण पण नथी, कारण के आगम तो ऋगडानुं घर छे, तेथी तमारुं कथन सिद्ध थयुं नहि. तथा अर्थापत्ति अने उपमान आ बंने अनुमाननी अंतर्गत छे, तेथी अनुमानना खंडनथी ते बंनेनुं पण खंडन थइ गयुं.

पूर्वपक्षः– जेम तमे जिनमंदिर बनावतां पृथ्वीकायादि जीवोनी हिंसा थतां परिणामविशेषथी तेने पुण्यरूपें कल्पोछो, तेम अमे पण यज्ञमां जे हिंसा कराय छे, ते पुण्यनिमित्त थाय छे, एम मानियें छियें, कारण के वेदोक्त विधि विधानरूप परिणामविशेष अहींयां पण निःसंदेह होवाथी केम पुण्य न थाय ?

उत्तरपक्षः– परिणामविशेष पण तेज, पुण्यनुं कारण थाय के ज्यां बीजो कोइ उपाय न होय, तेमज यत्नाथी प्रवृत्ति होय. तेवी प्रवृत्ति जिनमंदिरमां थइ शके छे. वली जिनमंदिर विना श्री जगवान्नी प्रतिमा रही शकती नथी, जे स्थानमां प्रतिमा राखवामां आवे तेनुं नाम जिनमंदिर छे. जो कहो के जिनप्रतिमा पूजवाथी शुं लाज छे ? तो अमारो सवाल ए छे के पुस्तकमां ककारादि अक्षर लखोछो, ते लखवाथी शुं लाज छे ? जो कहो के ककारादि अक्षरोनी स्थापना देखवाथी वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, तो तेवीजरीतें जिनप्रतिमा देखवाथी जिनेश्वर जगवान्ना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे. जो कहो के प्रतिमा तो कारीगरें पाषाणनी बनावी छे, तेथी शुं ज्ञान थाय छे? तो अमे पुछियेंछियें के वेद, कुरान, इंजील प्रमुख पुस्तक लिखारीउंए शाही तेमज कागलोथी बनावेलां छे, तेउनाथी शुं ज्ञान थाय छे ? जो कहो के ज्ञान तो अमारी समजणथी थाय छे, अक्षरोनी स्थापना अमारा ज्ञाननुं निमित्त कारण छे; तेवीज रीतें जिनेश्वर देवना स्वरूपनुं ज्ञान तो अमारी समजणथी थाय छे, परंतु ते स्वरूपनुं निमित्त कारण प्रतिमा छे. कारण के जो बुद्धिमान् पुरुष, कोइ वस्तुनो नकशो अर्थात् चित्र नहि देखे तो ते वस्तुनुं स्वरूप कदापि जाणी शकशे नहि. ते कारणथी जे बुद्धिमान् छे ते अवश्य स्थापना माने छे.

कारः ॥ पुढवाइयाण जइविहु, होइ विणासो जिणालयाहिंतो ॥ तव्वि-सयावि सुदिट्ठिस्स, नियम उंअत्थि अणुकंपा ॥ १ ॥ ए आहिं तो बुद्धा, विरिया रक्खंति जेण पुढवाई ॥ इत्तो निव्वाणगया, अवाहया आजवम-णंतं ॥ २ ॥ रोगसिरावेहोइव, सुविज्ज किरियाव सुप्पउत्ताउ ॥ परिणाम सुंदरच्चिय, चिठ्ठासे वाह जोगेविति ॥ ३ ॥ भावार्थः– यद्यपि जिनमंदिर बनाववामां पृथिवीकायादि जीवोनी हिंसा थाय छे, तोपण सम्यक् दृष्टि जीवोनी ते जीवो उपर निश्चयपूर्वक अनुकंपा छे ॥ १ ॥ तेउंनी हिंसाथी निवृत्त थइने ज्ञानियो निर्वाण पामेला छे. केवा निर्वाणने? अनंतकाल-सुधी रेहेनारा अव्यावाध सुखमय निर्वाणने ॥ २ ॥ जेम रोगिनी नाडी प्रमुखने बहुज कालथी वैद्य विंधे छे, ते वैद्यना प्रयोगमां परिणामनी सुंदरताथी कदाचित् ते रोगी मरणपण पामे तोपण वैद्यने जेम पाप नथी, तेमज जिनमंदिर बनाववामां यत्नपूर्वक प्रवर्त्तता पुरुषोने, ते जीवो उ-पर अनुकंपाज छे, अने वेदकथन मुजव वध करवामां किंचित् मात्र प-ण पुण्य अमे देखता नथी.

पूर्वपक्षः– ब्राह्मणोने पुरोडाश (यज्ञमां होमवानुं बलिदान) आदि प्रदान करवाथी पुण्यानुबंधी गुण थाय छे.

उत्तरपक्षः–आ तमारूं केहेवुं वास्तविक नथी. कारण के पवित्र सुव-र्णादिप्रदान मात्रथी पण पुण्यउपार्जननो संभव थायछे, अने कृपण, दीन अनाथ, पशुगणने मारवां, तेमज तेउंना मांसनुं दान करवुं, आ केवल त-मारी निर्दयता तेमज मांसलोलुपताज बतावी आपेछे.

पूर्वपक्षः–अमे निःकेवल प्रदानमात्रज पशुवध क्रियानुं फल मानता थी, परंतु भूति (लक्ष्मी) आदिपण प्राप्त थायछे. यदाह श्रुतिः "श्वेत-मायव्यमजमालभेत भूतिकामइत्यादि" भावार्थः–श्वेतवर्णना वकराने, जेनो स्वामीवायु देवताछे, एवा वकराने आलभेत हिंसेत् अर्थात् मारे, कोण मारे? लक्ष्मीना कामी मारे.

उत्तरपक्षः–आ तमारूं केहेवुं पण व्यभिचार पिशाचथी ग्रस्त थवाथी अप्रामाणिक छे. कारण के भूति (लक्ष्मी) अन्य उपायथी पण साध्यमानछे.

पूर्वपक्षः– परंतु यज्ञमां वकराप्रमुख जे मारवामां आवेछे, ते मरीने देवगति प्राप्त करेछे, आ यज्ञमां मरनार जीवो उपर उपकार छे.

उत्तरपक्षः–आ तमारूं केहेवुं पण प्रमाणना अन्नावथी वचनमात्र छे, कारण के यज्ञमां मारवामां आवेला पशुर्ठमांथी कोइ पण सद्गतिनो लान थवाथी हर्षवंत थइ आ लोकमां पाछो आवी स्वर्गना सुखनुं निरूपण करतो देखातो नथी.

पूर्वपक्षः–आ कथनमां आगम प्रमाण छे. यथा ॥ औषध्यःपशवोवृक्षा, स्तिर्यंचः पक्षिणस्तथा ॥ यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः प्राप्नुवंत्युच्छ्रितं पुनरित्यादि॥ न्नावार्थः–औषधी, अजादि पशु, किंजल्क (कमलनाफुलमांरेहेनार) आदि पक्षी, जेर्ठनो यज्ञमां होम करवामां आवेछे, तेर्ठ उन्नति प्राप्त करेछे.

उत्तरपक्षः–आ पण तमारूं केहेवुं वास्तविक नथी. तमारूं आगम पौरुषेय छे के अपौरुषेय छे, इत्यादि विकल्पोनुं हवे पछी खंडन करवामां आवशे. वली श्रौत (वैदिक) विधिथी पशुर्ठने मारवाथी जो स्वर्ग प्राप्ति थती होय तो तो कसाइ प्रमुख पण स्वर्गवासी थइ जशे. तथाच पठन्ति पारमर्षाः ॥ यूपं छित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमं ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ १ ॥ वली जो अपरिचित, अस्पष्टचैतन्य, अनुपकारी पशुर्ठने मारवाथी स्वर्गप्राप्ति थती होय तो, परिचित, स्पष्ट चैतन्य, तेमज परमोपकारी मातपितादिने मारवाथी याज्ञिकोने तेनाथी विशेष पदनी प्राप्ति थशे. तेथी तेमपण करवुं जोइयें.

पूर्वपक्षः–"अचिंत्योहि मणिमंत्रौषधीनां प्रन्नावइति वचनात्" ते कारणथी वेदना मंत्रोनी अचिंत्य शक्ति होवाथी ते मंत्रोथी संस्कार करायेला पशुने मारवाथी अवश्य स्वर्गप्राप्ति थायछे.

उत्तरपक्षः–आ कथन पण व्यन्निचारी छे. कारण के आ लोकमां जेम विवाह,गर्न्नाधान,जन्मसमयादिविषे ते मंत्रोनो व्यन्निचार देखवामां आवेछे, तेम अदृष्ट स्वर्ग आदिमां पण तेर्ठना व्यन्निचारनुं अनुमान करियें छियें. कारण के वेदोक्तमंत्रोथी संस्कार करायेला विवाहनी अनंतरज स्त्री, विधवा, अल्पायुष्य, दरिद्रताप्रमुख उपद्रवथी वियोगी रहेती, देखवामां आवेछे. तेमज वेदमंत्रोना संस्कार विना पण केटलाएक विवाह (लग्न) करनारा सुखी, धनवान् इत्यादि देखवामां आवेछे.

पूर्वपक्षः–जे विवाहआदिमां विधवा आदि थइ जायछे, त्यां क्रियाना वैगुण्य (खामी) थी विसंवाद (विरुद्धता) थायछे.

उत्तरपक्षः—आ तमारा केहेवाथी ते संशय कदी दूर थशे नहि. शुं त्यां क्रियानुं वैगुण्य विसंवादनो हेतुछे? के वेदमंत्रोनी असमर्थता विसंवादनो हेतु छे?

पूर्वपक्षः—जेम तमारा मतमां "आरोग्ग वोहिलाजं समाहिवरमुत्तमं दिंतु" इत्यादि वचनोनुं कालांतरेंज फल चाहोछो, तेम अमारा अजिमत वेदवचनोना फलनी पण आ लोकमां कल्पना करता नथी, परंतु लोकांतरमांज तेनुं फल थायछे, ते कारणथी विवाह आदिना उपालंजनो अवकाश नथी.

उत्तरपक्षः—अहो विचित्रवादि! जेम वर्त्तमान जन्मविषे विवाह आदिमां प्रयुक्त मंत्रसंस्कारथी तेनुं फल जविष्य जन्ममां थाय छे, तेमज बीजा, त्रीजा आदिजन्ममां पण विवाहआदिना पुण्यहेतु मानवाथी अनंतजवोनुं अनुसंधान थशे, एम तो कदापि संसारनी समाप्ति जेम थशे नहि, तेम कोइने मोक्षप्राप्ति पण थशे नहि. तेथी सिद्ध थयुं के वेदज अपर्यवसित (अनंत) संसार वल्लरी (वेल) नुं मूल छे. जैननी आरोग्यादि प्रार्थना, असत्य, अमृषा जाषा छे, परिणाम विशुद्धिनुं कारण होवाथी दोष कर्ता नथी; कारण के तेमां जावआरोग्य प्रमुखनी जे विवक्षा छे, अने ते आरोग्यपणुं, चतुर्गति संसाररूप जावरोगने क्षय करवारूप होवाथी, उत्तम फल छे; तेने वास्ते जे प्रार्थना करवी ते विवेकवान्ने केम आदरवा योग्य न होय? एम पण न केहेवुं के परिणामशुद्धिथी ते फलनी प्राप्ति नथी, कारण के सर्ववादिछने जावशुद्धिथी फल पामवामां विवाद नथी, वली एमपण न कहेवुं के वेदविहित हिंसा बुरी नथी, कारण के सम्यक्दर्शन, ज्ञानसंपन्न, अर्चिमार्गप्रतिपन्न वेदांतवादियोयें पण तेने निंदी छे. "तथाच तत्त्वदर्शिनः पठन्ति ॥ श्लोक॥ देवोपहारव्याजेन, यज्ञव्याजेन वाथवा ॥ घ्नंति जंतून् गतघृणा, घोरां ते यांति डुर्गतिं ॥ १ ॥ वैदांतिकाअप्याहुः ॥ अंधे तमसि मज्जामः, पशुजिर्ये यजामहे ॥ हिंसा नाम जवेद्धर्मो, न जूतोन जविष्यति ॥ तथा अग्निर्मामेतस्मात् हिंसाकृतादेनसोमुंचतुछांदसत्वान्मोचयतु इत्यर्थः" व्यासेनाप्युक्तं॥ ज्ञानपालिपरिक्षिप्ते, ब्रह्मचर्यदयांजसि ॥ स्नात्वातिविमले तीर्थे, पाप पंकापहारिणि ॥ १ ॥ ध्यानाग्नौ जीवकुंडस्थे, दयामारुतदीपिते ॥ असत्

कर्म समित्क्षेपै, रग्निहोत्रं कुरूत्तम ॥ २ ॥ कषायपशुभिर्दुष्टै, धर्मकामार्थ नाशकैः॥ शममंत्रहुतैर्यज्ञं, विधेहि विहितं बुधैः ॥३॥ प्राणिघातात्तुयोधर्म, मीहते मूढमानसः ॥ सवांछति सुधावृष्टि, कृष्णादिमुखकोटरात् ॥४॥ इ०

वली यज्ञ करनाराउं पूजाय ठे एम जे.तमे कहो ठो ते पण असार ठे, कारण के अज्ञानि जनोज़ तेउंनी पूजा करे ठे, परंतु बुद्धिमान् करता नथी; मूर्खोनुं पूजन अप्रामाणिक ठे, कारण के मूर्ख तो कुतरा, गधे-डाने पण पूजेठे.

वली तमे कह्युं के वेदविहिता हिंसा, देवता, अतिथि, पितृप्रीतिसं-पादक होवाथी दोषरूप थती नथी, आ पण असत्य ठे, कारण के देव-ताउंने तो संकल्पमात्रथीज अभिमत आहारना रसनो स्वाद प्राप्त थइ जाय ठे, वली देवताउंना शरीर वैक्रिय रूप ठे, ते तमारी जुगुप्सित प-शुमांसादि आहुति लेवाने इछावान् थताज नथी. जो देवताउंने पण केवल आहारी मानशो, तो देवताउंनां शरीर तमे जे मंत्रमय मान्यां ठे, तेने विरोध आवशे, तेमज अभ्युपगम (करेला निर्णय)ने बाध आवशे, देवताउंनां शरीर मंत्रमय तमारा मतमां असिद्ध नथी. "चतुर्थ्यंतं पदमेव देवता इति जैमिनीयवचनप्रामाण्यात् ॥ तथाच ॥ मृगेंद्रः शब्देतरत्वे यु-गपद्भिन्नदेशेषु यष्टेषु न सा प्रयाति सांनिध्यं मूर्त्तत्वादस्मदादिवदिति "

तथा जे वस्तुनी आहुति देवताउंने आपो ठो, ते तो भस्म भावमात्र थई जाय ठे, तो पठी देवता शुं ते भस्म अर्थात् राख खाय ठे ? तेथी तमारुं कहेवुं प्रलापमात्र ठे.

वली आ जे त्रेताग्नि ठे ते तेत्रीश क्रोड देवताउंनुं मुख ठे, " अग्नि मुखावै देवा इति श्रुतेः " त्यारे तो उत्तम, मध्यम, अधम सर्वे देवता एकज मुखथी खानारा सिद्ध थया; सर्वे पोतपोतामां जूठ (अजीठुं) खा-नारा बनी गया, तेथी तो अनार्योथी पण अधिक थईगया,कारण के अ-नार्यो जो के एकपात्रमां एकठा खाय ठे, परंतु एक मुखथी खाता नथी.

वली एक शरीरमां अनेक मुख ठे, ए.वात तो अमे आगल पण सां-भलता हता, परंतु अनेक शरीरोनुं एक मुख, आ तो मोटुं आश्चर्य ठे; ज्यारे सर्व देवताउंनुं एक मुख मान्युं, त्यारे कोईपुरुषे जो एक देवतानुं पूजादिथी आराधन कर्युं, अने बीजा देवताउंनी निंदा करी विराधना

करी, तो तो एक मुखथी युगपत् अनुग्रह, निग्रह वाक्यना उच्चारणमांज व्यभिचारनो प्रसंग आवशे.

वली मुख देहनो नवमो भाग छे, ज्यारे देवताउनां मुखज दाहात्मक छे, त्यारे एकेक देवतानुं शरीर दाहात्मक होवाथी त्रणे भुवन भस्मीभूत थईजवां जोइयें ? आटली चर्चाथी सर्युं.

वली कारीरी यज्ञादिमां वृष्टयादि फलनो जे अव्यभिचार छे, ते फलमां आहुतिथी संतुष्ट थयेला देवतानो अनुग्रह जे तमे कहोछो ते पण अनेकांतिक छे, कोइस्थलें व्यभिचार पण देखवामां आवे छे. ज्यां व्यभिचार नथी, त्यां पण आहुतिनुं भोजन करवाथी अनुग्रह नथी, परंतु ते देवताविशेष, अतिशय ज्ञानी छे, पोताने उद्देशीने करेला पूजा उपचारने देखीने, पोताना स्थानमांज स्थित थया थका, पूजा करनारउपर प्रसन्न थईने, तेनुं कार्य पोतानी इछाथी करी आपे छे. अनुपयोगथी नहि जाणता, अथवा जाणता थका पण, पूजकना अभाग्यथी कार्य नथी पण करता ? कारण के द्रव्य, क्षेत्र, काल भावआदिनी सहायताथी कार्यनुं थवुं नजरे पडेछे; अने ते जे पूजा उपचार छे, ते निःकेवल पशुउनाज मारवाथी थई शके छे एम नथी, परंतु बीजी रीतें पण थइ शके छे, तो पछी जेनुं फल एक पापरूपज छे एवी सौनिक (कसाइ) वृत्ति करवाथी शुं लाभ छे ?

वली जे छगल अर्थात् बकरानुं मांस होमवाथी परराज्य वश करनारी सिद्धादि देवीने संतुष्ट करवानुं जे अनुमान छे, तेमां शुं आश्चर्य छे ? केटलाएक क्षुद्र देवताउ तेवीज रीतें संतुष्ट थाय छे, त्यां पण ते दुष्ट देवता पोतानी पूजा देखीने राजी थाय छे, परंतु मलिन मांस खावाथी राजी थता नथी. जो कदी होम करेली वस्तुने खाता होय तो निंबपत्र कडवांतेल, आरनाल (वाकला) धूमांश आदि होम करेलां द्रव्य पण तेउनुं भोजन थई जशे. वाह ! शुं तमारा देवता सुंदर भोजन करे छे ?

वली अतिथिनी परोणागत सुंदर संस्कार करेला पक्वान्न आदिथी पण थई शके छे, तो पछी तेउने वास्ते महोक्ष, महाअजादिनी कल्पना करवी, ते निःकेवल तमारी निर्विवेकता बतावी आपे छे.

वली श्राद्धादि करवाथी पितरोनी जे प्रीति मानो छो, ते पण अने-

कांतिक ठे, कारण के केटलाएक श्राद्ध करता नथी तो पण तेउंनी संतान वृद्धि देखवामां आवे ठे. जुंगनाटोलानी जेवी वृद्धि देखाय ठे. तेथी श्राद्ध आदि जे करवुं ठे, ते मुग्ध लोकोने विप्रतारण (ठगवा) मात्रज फल थाय ठे. जे पितरो लोकांतर पामेला ठे, ते पोताना शुन्न अशुन्न कर्मोने अनुसारे देव, नारकादि गतियोमां सुख डुःख नोगवी रह्या ठे, तो पठी तेउ पुत्र प्रमुखें आपेला पिंडोने केवी रीतें नोगववानी इब्रा करी शके ठे ? " तथाच युष्मद्यूथिनः पठन्ति ॥ मृतानामपि जंतूनां, श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणं ॥ तंनिर्वाणप्रदीपस्य, स्नेहः संवर्द्धयेच्छिखामिति ॥

तथा श्राद्ध करवाथी ते पितरोने पुण्य केवीरीतें पहोंचे ठे ? कारण के पुण्यतो वीजाए करेलुं ठे, वली पुण्य पोते जड रूप ठे, तथा पगरहित ठे, तेथी पितरोने पहोंची शकतुं नथी. जो कहो के उद्देश तो पितरोनो ठे, परंतु पुण्य, श्राद्धकरनारा पुत्रादिने थाय ठे, ते पण केहेवुं वास्तविक नथी. पुत्रादिने पुण्य थतुं नथी, तेनुं कारण ए ठे के पुत्रादिना मनमां वासना एवी नथी के जे कार्य अमे करियें ठियें तेनुं फल अमने मले, तो पठी पुण्यनी नावना विना पुण्य फल मलतुं नथी. ते कारणथी पितरो के पुत्रादि कोइने श्राद्ध करवानुं फल मलतुं नथी, परंतु अधरथीज त्रिशंकुना दृष्टांतनी पेठे विलीन थई जाय ठे.

वली पापानुवंधि जे पुण्य ठे, 'ते तत्त्वथी पापरूपज ठे' जो कहो के ब्राह्मण जे कांइ खाय ठे, ते पितरोने गमे ठे, ते वात सत्य ठे एवी प्रतीति तो तमनेज थती हशे, अमारी नजरमां तो ब्राह्मणोनुं मोटुं पेट थयेलुं आवे ठे, परंतु तेउंना पेटमां प्रवेश करीने, पितरो खाता होय एम कदापि देखता नथी. नोजन अवसरे ब्राह्मणोना उदरमां प्रवेश करता पितरोनुं कांइपण चिह्न अमारी दृष्टिए पडतुं नथी. केवल ब्राह्मणोज तृप्त थता देखियें ठियें.

वली तमे कह्युं हतुं के अमारी पासे आगम प्रमाण ठे, तो पुठियें ठियें के, ते तमारुं आगम पौरुषेय ठे ? के अपौरुषेय ठे ? जो कहो के पौरुषेय ठे, तो शुं ते सर्वज्ञनुं करेलुं ठे ? के असर्वज्ञनुं करेलुं ठे ? जो प्रथम पक्ष मानशो तो तमारा मतने व्याहति थशे, कारण के तमारो आ सिद्धांत ठे. " अतींड्रियाणामर्थानां, साक्षाद्द्रष्टा न विद्यते ॥ नित्ये-

न्योवेदवाक्येभ्यो, यथार्थत्वविनिश्चयः ॥ १ ॥ सारांश के अतींद्रिय पदार्थोनो कोइ साक्षात् दृष्टा नथी. वीजो पक्ष मानशो तो दूषणवाला (असर्वज्ञ) कर्त्तानां शास्त्रो उपर विश्वास थतो नथी. जो कहो के अपौरुषेय छे, तो संभवज थइ शकतो नथी. स्वरूप निराकरणथी घोडाना शृंगरूप पुरुष क्रियानुगत तेनुं रूप छे, सारांश के पुरुषक्रिया विना ते केवी रीतें थइ शके छे ? ते कारणथी जे साक्षर वचन छे, ते पौरुषेयज छे, कुमार संभवादि वचननी जेम. वेद पण वचनात्मकज छे " तथा चाहुः ॥ ताल्वादिजन्मा ननु वर्णवर्गो, वर्णात्मकोवेद इति स्फुटं च ॥ पुंसश्च ताल्वादिरतः कथं स्या, दपौरुषेयोयमिति प्रतीतिः ॥ १ ॥ इति " श्रुतिने अपौरुषेय अंगीकार करी, तो पण तदर्थव्याख्याने पौरुषेयज अंगीकार करी छे. अन्यथा " अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः " तेनो अर्थ " स्वमांसं नक्षयेत् इति " एम नियामकना अभावथी केम न थई जाय ? ते कारणथी शास्त्रने पौरुषेयज मानवां ते श्रेय छे. तमारा हठथी कदी वेद अपौरुषेय मानियें, तो तेथी वेदनी प्रमाणता थशे नहीं, कारण के प्रमाणता आप्त पुरुषने आधीन छे. ज्यारे वेद प्रमाण न थया, त्यारे ते वेदनुं कथन, तथावेदानुसारिणी स्मृतियो पण प्रमाणभूत थयां नहीं, तेथी हिंसामय यज्ञ तथा श्राद्धादिविधि पण प्रमाणथी विरुद्ध थया.

पूर्वपक्षः– " न हिंस्यात् सर्वभूतानि " इत्यादिथी जे हिंसानो निषेध करेलो छे, ते औत्सर्गिकमार्ग छे, अर्थात् सामान्य विधि छे, अने वेदविहिता जे हिंसा छे ते अपवाद मार्ग छे. अर्थात् विशेष विधि छे. ते कारणथी, तथा अपवाद उत्सर्गथी वलवान् होवाथी वेदविहिता हिंसा दोषनुं कारण नथी " उत्सर्गापवादयोरपवादविधिर्वलीयानिति न्यायात् " तमारा जैनमतमां पण हिंसाना एकांत निषेध नथी. केटलांएक कारणोमां पृथ्वीकायादि जीवोनी हिंसा करवानी आज्ञा छे. वली ज्यारे साधु रोग पीडित थाय छे, तेमज असमर्थ अने ग्लान थाय छे, त्यारे आधाकर्मादि आहार ग्रहण करवानी पण आज्ञा छे, तेवीज रीतें अमारा मतमां याज्ञिकी हिंसा देवता, अतिथिनी प्रीतिवास्ते पुष्ट आलंवनरूप होवाथी अपवादरूप छे, ते कारणथी तेमां दोष नथी.

उत्तरपक्षः– अन्यकार्यवास्ते उत्सर्गवाक्य, अने अन्यकार्यवास्ते अप-

वादवाक्य, केहेवां, ते उत्सर्ग, अपवाद कदी पण थइ शकतां नथी. परंतु जे अर्थवास्ते शास्त्रमां उत्सर्ग कहेल होय. तेज अर्थवास्ते अपवाद केहेवो जोइये; त्यारेंज उत्सर्ग अपवाद थइशके छे. ते वंने उन्नत निम्नादि (उंचां नीचां) व्यवहारवत् परस्पर सापेक्ष होवाथी एक अर्थनां साधक थइ शके छे. जेम के जैनोए संयम पालवा अर्थे नवकोटि विशुद्ध आहार ग्रहण करवो, ते उत्सर्गमार्ग छे. तेवीज रीतें द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी आपत्तिमां पडतां गत्यंतरना अभावथी, पंचकादि यत्नापूर्वक अनेषणीय आहारादिने ग्रहणकरवा ते अपवादमार्ग छे, तेपण संयम पालवाने वास्तेज छे. एमपण न केहेवुं के जेसाधुने मरणज एक शरण छे, तेने गत्यंतर अभावनी असिद्धि छे. ॥ उक्तं चार्षैः ॥ सव्वछ संजमं सं जमाउ, अप्पाणमेवरखिज्जा ॥ मुच्चइ अइ वायाउ, पुणो विसोहीनया विरइ ॥१॥ इत्यागमात् ॥ भावार्थः—सर्वरीतें संयम पालवो, जो संयममां दूषण लागवाथी प्राणनी रक्षा थती होय तो संयममां दूषण पण लगावीने रक्षण करवुं, प्राण रेहेवाथी प्रायश्चित्तद्वारा ते पापथी मुक्त थइ शुद्ध थवाशे, अने अविरतिपणुं पण रहेशे नहि. वली आयुर्वेदमां पण कह्युं छे के, जे वस्तु कोइ रोगमां कोइ अवस्थामां अपथ्य छे, तेज वस्तु तेज रोगमां वीजी अवस्थामां देश, काल जोइ आपे तो पथ्य छे. देशादि अपेक्षाए ज्वरवालाने दहीं पण खावा देवामां आवे छे. तथा च वैद्याः ॥ कालाविरोधि निर्दिष्टं, ज्वरादौ लंघनं हितं ॥ ऋतेऽनिलश्रमक्रोध , शोककामकृतज्वरात् ॥ १ ॥ जेम प्रथम अपथ्यनो परिहार करवो, अने वीजी अवस्थामां तेनेज भोगववचां, आ वंने प्रसंगें रोगनुं निवारण करवानुं प्रयोजन छे. तेथी एम सिद्ध थाय छे के एकज वस्तुविषयक उत्सर्ग अपवाद छे.

तमारो उत्सर्ग एक अर्थवास्ते छे, अने, अदवाद वीजा अर्थ वास्ते छे. जुउ. " न हिंस्यात् सर्वभूतानि " आ जे उत्सर्ग छे, ते दुर्गतिना निषेध वास्ते छे, अने जे तमारो अपवाद, हिंसा छे, ते देवता, अतिथि, पितृउनी प्रीतिसंपादन अर्थे छे. ते कारणथी परस्पर निरपेक्ष होवाथी, उत्सर्ग, अपवाद विधि थइ शकता नथी. हवे विचारो के तमारो अपवाद, उत्सर्गविधिथी केवीरीतें बलवान् थइ शके छे ?

एम पण न कहेवुं के वैदिक हिंसानो जे विधि छे, ते स्वर्गहेतु हो·

वाथी, डुर्गतिना निषेधवास्तेज छे. वैदिक हिंसा स्वर्गनो हेतु नथी. ते उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें. वैदिक हिंसा विना पण स्वर्गप्राप्ति थइ शके छे. गत्यंतरना अन्नावमांज अपवाद थइ शके छे. यज्ञ करवाथी स्वर्गनो निषेध थाय छे, एम अमेज मात्र कहेता नथी, परंतु व्यासजी पण कहे छे. यदाह व्यासमहर्षिः ॥ पूजया त्रिपुलं राज्य, मग्निकार्येण संपदः ॥ तपः पापविशुद्ध्यर्थं, ज्ञानं ध्यानं च मुक्तिदं ॥ १ ॥ अहिंयां अग्निकार्य शब्दवाच्यना यागादि विधि उपायांतरथी जे संपत् साध्य छे, तेनोज हेतु कहेतां थकां, आचार्य ते यागने सुगतिनो हेतुज कदर्थन करी गया छे, तथा तेज व्यासजी नाव अग्निहोत्र " ज्ञान पाली " इत्यादि श्लोकोथी स्थापन करी गया छे. इति मीमांसकमतखंडन. ॥ ५ ॥

हवे चार्वाकमतनुं खंडन लखियेंछियें. चार्वाक कहेछे के आत्माज नथी. तेथी मतावलंबी पुरुषो शा वास्ते वचन कलह करे छे ? ज्यारे आत्मानोज अन्नाव छे, त्यारे जैन, बौद्ध, सांख्य, नैयायिक, वैशेषिक, तेमज जैमिनीय, आ जे छ दर्शनो छे, तेउं शा वास्ते निःकेवल लोकोने न्रममां नाखीने नोगविलासथी छोडावे छे ? वास्तवमां आत्मा एवी कोइ वस्तुज नथी,ते कारणथी अमारो मत सुंदर छे.जो आत्मा होय तो तेनी सिद्धि बतावो?

उत्तरपक्षः– प्रतिप्राणी स्वसंवेदन प्रमाण चैतन्यनी अन्यथा अनुपपत्तिथी सिद्ध छे. जुउं. आ जे चैतन्य छे, ते न्रूतोनो धर्म नथी, जो न्रूतोनो धर्म होय, तो तो पृथिवीनी कठिनतानी पेठे सर्व कालें, सर्व स्थलें उपलब्ध थवो जोइयें, ते सर्वदा उपलब्ध थतो नथी, कारण के लोष्टादिमां, तेमज मृत अवस्थामां चैतन्य उपलब्ध थतुं नथी.

पूर्वपक्षः– लोष्टादिमां, तेमज मृत अवस्थामां पण चैतन्य छे, केवल शक्ति रूपें छे, ते कारणथी उपलब्ध थतुं नथी.

उत्तरपक्षः–बे विकल्प न उल्लंघन करवाथी आ तमारुं कहेवुं अयुक्त छे. जुउं. ते शक्ति चैतन्यथी विलक्षण छे ? के चैतन्यज छे ? जो कहो के विलक्षण छे, तो तो शक्तिरूपें चैतन्य छे एम कहो नहि. कारण के पट विद्यमान छतां, पटरूपें घट रहेतोज नथी " आह च ॥ प्रज्ञाकरगुप्तोपि ॥ रूपांतरेण यदित, त्तदेवास्तीति मारटीः ॥ चैतन्यादन्यरूपस्य, नावे तद्विद्यते कथम् ॥ १ ॥ जो बीजो पक्ष मानशो तो तो चैतन्यज ते श-

क्ति छे. पछी ते शक्ति उपलब्ध केम थती नथी ? जो कहो के आवृत थवाथी उपलब्ध थती नथी, तो ते पण ठीक नथी, कारण के आवृति शब्दनो अर्थ आवरण छे. ते आवरण शुं विवक्षित परिणामनो अभाव छे ? के परिणामांतर छे ? के भूतोथी अतिरिक्त बीजी वस्तु छे ? तेमां, विवक्षित परिणामनो अभाव तो नथी. कारण के एकांत तुच्छ होवाथी ते विवक्षित परिणाम अभावने आवरण शक्ति नथी, अन्यथा तेनुं अतुच्छरूप होवाथी, ते पण भावरूप थइ जाय. ज्यारे भावरूप थाय, त्यारे पृथिवी आदिमांथी अन्यतम थाय, कारण के "पृथिव्यादीनि भूतानि तत्त्वमिति वचनात्" अने पृथिवी आदि जे भूत छे ते चैतन्यनां व्यंजक छे, परंतु आवरक नथी, तेथी, केवीरीतें आवरणपणुं सिद्ध थाय ?

जो कहो के परिणामांतर छे, तो तेपण अयुक्त छे, कारण के परिणामांतर पण भूतस्वभाव होवाथी भूतोनी पेठे चैतन्यव्यंजकज थइ शके छे, आवरक थइ शकतुं नथी.

जो कहो के भूतोथी अतिरिक्त वस्तु छे, तो ते कहेवुं बहुज असंगत छे. कारण के भूतोथी अतिरिक्त (न्यारी) वस्तु मानवाथी "चत्वार्येव पृथ्व्यादिभूतानि" तत्त्वसंख्याने व्याघात थइ जशे.

वली जुओ के आ जे चैतन्य छे ते एक एक भूतनो धर्म छे ? के सर्व भूतसमुदायनो धर्म छे ? एक एक भूतनो धर्म तो लागतो नथी, कारण के एक एक भूतमां देखातो नथी, तेमज एक एक परमाणुमां संवेदन उपलब्ध थतुं नथी. जो दरेक परमाणुमां होय तो पुरुष, सहस्र चैतन्य वृंदनी पेठे परस्परभिन्नस्वभाव थाय, परंतु एकरूप चैतन्य नज थाय, अने देखवामां तो एकरूप आवे छे. "अहं पश्यामि" अर्थात् हुं देखुं छुं. हुं करूंछुं, एवो सकल शरीर अधिष्ठाता एक उपलब्ध थाय छे.

जो समुदायनो धर्म मानो तो पण प्रत्येकमां अभाव होवाथी असत् छे. कारण के जे प्रत्येक अवस्थामां असत् छे, ते समुदायमां थइ शकतुं नथी. जेम रेती समूहमांथी तेल.

जो कहो के मद्यांगोमां मदशक्ति नथी. समुदायमां थइ जायछे, तेम चैतन्यपण थइ जाय तो, शुं दोष छे? आ पण अयुक्त छे. कारण के प्रत्येक मद्य अंगमां मदशक्ति अनुयायी माधुर्यादि गुण देखाय छे; जुओ.

माधुर्यादि इक्षुरसमां धातकी फूलोथी थोडी विकलता उत्पादक शक्ति देखियें ठियें, तेवी रीतें चैतन्य, सामान्य प्रकारथी भूतोमां उपलब्ध थतुं नथी ; तो केवीरीतें भूतसमुदायथी चैतन्य थइ शकेठे? प्रत्येकमां असत् ठे ते समुदायमां थइ जाय तो, सर्व समुदायथी सर्व कांइ थनी-जवां जोइयें. ए अति प्रसंग थशे.

वली जो तमे चैतन्यने धर्म मानेल ठे, तो धर्मने अनुरूप धर्मीपण अवश्य मानवो जोइशे. जो अनुरूप नहि मानशो तो तो जम अने कठिनता आ बंनेने धर्म, धर्मि मानवा जोशे. एमपण न कहेशो के भूतज धर्मि ठे, कारण के भूत, चैतन्यथी विलक्षण ठे. जुर्ज. चैतन्य बोधस्वरूप, तेमज अमूर्त्त ठे; अने भूत तेनाथी विलक्षण ठे; तो केवीरीतें तेर्जनो परस्पर धर्म, धर्मिनाव थइ शकेठे? वली आ चैतन्य भूतोनुं कार्यपण नथी, कारण के अत्यंत विलक्षण होवाथी कार्यकारणनाव कदापि थइ शकतो नथी. उक्तं च ॥ काठिन्याबोधरूपाणि, भूतान्यध्यक्षसिद्धितः॥ चेतना च न तद्रूपा, सा कथं तत्फलं नवेत् ॥ १ ॥

वली जो चैतन्य भूतकार्य होय, तो तो सर्वजगत् प्राणिमय होवुं जोइयें. जो कहो के परिणतिविशेष सद्भावना अनावथी सकल जगत् प्राणिमय थइ जतुं नथी, तो ते परिणतिविशेष सद्भाव सर्वत्र शा वस्ते थतो नथी? ते परिणति पण भूतमात्र निमित्तज ठे, तो केवी रीतें तेनुं कोइ स्थलें होवुं न होवुं सिद्ध थइ शकेठे? वली ते परिणतिविशेष केवा स्वरूपवालो ठे? जो कहो के कठिनादिरूप ठे, कारण के घुणादि जंतु काष्ठादिमां उत्पन्न थता देखियें ठियें, ते कारणथी ज्यां कठिनत्वादि विशेष ठे, ते प्राणिमय ठे, बीजा नहि. आ पण व्यनिचार देखवाथी असत् ठे. जुर्ज. अशिष्टपण कठिनत्वादि विशेष ठतां कोइ स्थलें होयठे, अने कोइ स्थलें होता नथी, अने कोइस्थलें कठिनत्वादि विशेष विना-पण संस्वेदज घन आकाशमां संमूर्छिम उत्पन्न थायठे.

वली केटलाएक जीव समानयौनिकपण विचित्रवर्ण संस्थानवाला देखाय ठे. जुर्ज. गोवरआदि एकयोनिवालां पण केटलांएक कालां शरीरवालां तो केटलांएक पीलां शरीरवालां होयठे, बीजां विचित्रवर्णवालां होयठे. संस्थानपण तेर्जनां परस्पर भिन्न ठे. जो भूतमात्रनिमित्त चैतन्य

होय तो तो एकयोनिवालां सर्व एकवर्ण, संस्थानवालां होवां जोइयें. परंतु तेम तो थतां नथी. ते कारणथी आत्माज तेवा तेवा कर्मना वशथी तेवा उत्पन्न थायछे. एम निश्चयें मानवुं जोइयें.

जो कहो के आत्मा होय तो गमनागमन करतां केम न उपलब्ध थवो जोइयें? कारणके केवल देह विद्यमानज संवेदन उपलब्ध थायछे, अने देहनो अभाव थतां भस्म अवस्थामां देखातो नथी, ते कारणथी आत्मा नथी, परंतु संवेदनमात्रज एक छे, ते संवेदन देहनुं कार्य छे, देहमांज आश्रित छे. भींतना चित्रनी जेम. चित्र भींत विना रही शकतुं नथी, तेमज वीजी भींतपर संक्रमण पण थइ शकतुं नथी, अने भींतनी साथेज तेनो विनाश थायछे. संवेदननुं पण तेवीज रीतें जाणी लेवुं. आ कथनपण असत् छे. कारणके आत्मा स्वरूपथी अमूर्त्त छे; अने आंतर शरीर अति सूक्ष्म छे, तेकारणथी दृष्टिगोचर नथी. तदुक्तं ॥ अंतराभावदेहोपि, सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यते ॥ निष्क्रामन् प्रविशन् वात्मा, नाभावोऽनीक्षणादपि॥ ॥ १ ॥ ते कारणथी आंतःशरीरयुक्त पण आत्मा, जतां आवतां देखातो नथी, परंतु लिंगथी उपलब्ध थायछे. जुओ. तत्काल उत्पन्न थयेला कृमि जीवने पण पोताना शरीरविषे ममत्व थायछे. घातकने जाणीने दोडी जायछे, जेने जेनेविषे ममत्व छे, ते पूर्व ममत्व अभ्यास पूर्वक छे. तेवुंज देखायछे. केम के ज्यां सुधी कोइ वस्तुना गुण दोष जाणता नथी, त्यां सुधी ते वस्तुमां कोइने पण ममत्व थतुं नथी. ते कारणथी जन्मनी आदिमां जे शरीरपर ममत्व छे, ते शरीर परिशीलन अभ्यासपूर्वक संस्कार निबंधन छे. ते सबबथी आत्मानुं जन्मांतरथी आववुं सिद्ध थायछे. उक्तं च ॥ शरीरग्रहरूपस्य, चेतसः संभवो यदा ॥ जन्मादौ देहिनां दृष्टः, किन्न जन्मांतरा गतिः ॥ १ ॥

हवे आगति प्रत्यक्षथी देखाती नथी, तो केवीरीतें तेनो अनुमानथी बोध थाय? आ तमारा केहेवाथी कांइ दूषण आवतुं नथी. कारण के अनुमेय अर्थविषे प्रत्यक्षनी प्रवृत्ति थइ शकती नथी. परस्पर विषयने परिहार करीने प्रत्यक्ष, अनुमाननुं प्रवर्त्तवुं बुद्धिमान लोको मानेछे. हवे तमारूं दूषण केवीरीतें लागेछे? आह च ॥ अनुमेयेस्ति नाध्यक्ष, मिति केयात्रदुष्टता ॥ अध्यक्षस्यानुमानस्य, विषयो विषयो नहि ॥ १ ॥

वली जे चित्रनुं दृष्टांत तमे आप्युं छे, ते पण विषम होवाथी अयुक्त छे. जुओ. चित्र तो अचेतन, तथा गमनस्वजावरहित छे. आत्मा तो चैतन्य छे, तथा कर्मवशथी गमनागमन करे छे, तो केवीरीतें दृष्टांत तेमज दार्ष्टांतिकनी साम्यता थई? जेम देवदत्त कोइ विवक्षित गाममां केटलाएक दिवस रहीने, पछी बीजे गाम जई रहे छे, तेम आत्मा पण विवक्षित जवमां देहनो त्याग करी जवांतरमां देह रचीने रहे छे.

वली तमे कह्युं के संवेदन देहनुं कार्य छे ते पण वास्तविक नथी. कारण के चक्षुरादि इंडियद्वारा उत्पन्न थवाथी चाक्षुषादि संवेदन कथंचित् देहथी पण उत्पन्न थाय छे, परंतु जे मानस ज्ञान छे, ते केवी रीतें देहनुं कार्य थई शकेछे? तथा ते मानसज्ञान देहथी उत्पद्यमान थतुं होय तो, इंडिय रूपथी उत्पन्न थाय छे? के अनिंडिय रूपथी उत्पन्न थाय छे? के केश नखादि लक्षणथी उत्पन्न थाय छे? प्रथम पक्ष तो ठीकं नथी. जो इंडियरूपथी उत्पन्न थतुं होय, तो तो इंडिय बुद्धिवत् वर्त्तमामान अर्थनुंज ग्राहक होवुं जोइयें. इंडियज्ञान वर्त्तमान अर्थनेज ग्रहण करी शके छे, ते सामर्थ्यथी उत्पन्न थतुं मानस ज्ञान पण इंडिय ज्ञानवत् वर्त्तमान अर्थनेज ग्रहण करी शकशे.

हवे ज्यारे चक्षु रूप विषय व्यापार करे छे, त्यारेज रूपविज्ञान उत्पन्न थाय छे, बीजे वखते थतुं नथी. हवे ते रूपविज्ञान वर्त्तमान अर्थ विषय छे, कारण के वर्त्तमान अर्थ विषयज चक्षुनो व्यापार थाय छे. अने रूपविषयव्यावृत्तिना अजावमां मनोज्ञान छे, ते कारणथी ते नियत कालविषयक नथी. तेवीज रीतें बीजी इंडियोमां पण जाणी लेवुं. हवे केवीरीतें मनोज्ञानने वर्त्तमान अर्थग्रहण प्रसक्ति होय? उक्तं च ॥ अक्ष व्यापारमाश्रित्य, जवदक्षजमिष्यते ॥ तद्व्यापारोन तत्रेति, कथमक्षजवं जवेत् ॥ १ ॥

जो कहो के अनिंडिय रूपथी छे, तो पण ते अचेतन होवाथी अयुक्त छे. वली केश नखादि तो मनोज्ञानथी स्फुरित चिद्रूप उपलब्धज थतो नथी, तो केवीरीतें तेउनाथी मनोज्ञान होय? आह च ॥ चेतयंतो न दृश्यंते, केशश्मश्रुनखादयः॥ ततस्तेभ्यो मनोज्ञानं, जवतीत्यति साहसं॥१॥

जो केशनखादिथी प्रतिबद्ध मनोज्ञान होय तो तो तेउनो उछेद थतां

मनोज्ञान मूलबीज रहेशे नहि. वली केशनखादिनो उपघात थतां ज्ञानपण उपहत थवुं जोईयें ? परंतु ते तो थतुं नथी, ते कारणथी त्रीजो पक्ष पण ठीक नथी.

वली बीजी वात ए छे के मनोज्ञानमां सूक्ष्म अर्थ पृथक् करणपणुं तेमज स्मृतिपाटवादि जे विशेष छे, ते अन्वयव्यतिरेकथी अभ्यासपूर्वक देखाय छे. जुओ. तेज शास्त्र इहां, अपोहादि प्रकारथी जो वारंवार विचारियें, तो सूक्ष्म, सूक्ष्मतर अर्थावबोध उल्लास थाय छे, अने स्मृतिपाटव अपूर्व वृद्धि पामे छे. एवीरीतें एकशास्त्रविषे अभ्यास करतां करतां सूक्ष्मार्थ स्पष्टीकरण शक्ति थतां, तेमज स्मृतिपाटव वधतां, अन्य शास्त्रोमां पण स्वाभाविक रीतें सूक्ष्म अर्थावबोध तेमज स्मृतिपाटव उल्लास पामे छे, ए प्रमाणे अभ्यासहेतुक सूक्ष्मार्थ स्पष्टीकरणादि मनो ज्ञानमां विशेष देखिये छियें. वली कोइने अभ्यास विना पण देखियें छियें. ते वास्ते अवश्य परलोकनो अभ्यास हेतु छे. शा कारणथी ? कारणनी साथे कार्यनुं अन्यथा अनुपपन्नपणुं छे, ते प्रतिबंधथी तेना अदृष्ट कारणनी पण सिद्धि छे. ते कारणथी जीवनुं परलोक गमन सिद्ध थायछे.

वली देह, क्षयोपशमनो हेतु छे, तेथी देहने पण कथंचित् ज्ञाननो उपकारी अमे मानियें छियें. देह दूर थवाथी सर्वथा ज्ञाननी निवृत्ति थती नथी. जेम के अग्निथी घटमां कांइक विशेषता थाय छे, परंतु अग्निथी घटमां कांइक विशेषता थाय छे, परंतु अग्निनी निवृत्ति थतां, घटनो मूलबीज उछेद थतो नथी. केवल कांइक विशेष छे ते दूर थई जाय छे, जेम के सुवर्णनी द्रवता. तेवी रीतें अहींयांपण देहनी निवृत्ति थतां तत्प्रतिबद्धज कांइक ज्ञानविशेष निवृत्त थाय छे, परंतु ज्ञाननो समूल उछेद थतो नथी. जो देहनेज ज्ञाननुं निमित्त मानशो, तेमज देहनी निवृत्ति थतां ज्ञाननी निवृत्ति मानशो, तो तो स्मशानमां देह भस्म थतां तो ज्ञान नाश पामे, परंतु देह विद्यमान छतां मृत अवस्थामां केम होतुं नथी ?

जो कहो के प्राण अपान पण ज्ञानना हेतु छे. तेओना अभावथी ज्ञान रहेतुं नथी. ते कहेवुंपण वास्तविक नथी. कारण के प्राण अपान ज्ञानना हेतु थई शकता नथी, परंतु ज्ञानथीज तेओनी प्रवृत्ति थाय छे. जुओ. ज्यारे

प्राण अपान करनारो मंद करवानी इच्छा करे छे, त्यारे मंद थाय छे, अने ज्यारे दीर्घनी इच्छा करे छे, त्यारे दीर्घ थाय छे. जो देहमात्र नैमित्तिक प्राणापान होय, अने प्राणापान नैमित्तिक विज्ञान होय, तो तो इच्छाने आधीनपणे प्राणापाननी प्रवृत्ति थशे नहि. कारण के जेनुं निमित्त देह छे, एवी जे उज्वलता तेमज श्यामता, ते इच्छाने आधीन थइ प्रवृत्त थती नथी. जो प्राणापान ज्ञाननुं निमित्त होय, तो प्राणापान मंद तेमज दीर्घ थवाथी, ज्ञानपण अल्प तेमज विशेष थवुं जोइयें. कारण के जेनुं कारण हीन अथवा अधिक थशे, तेनुं कार्यपण हीन अथवा अधिक थशे. जेम माटीनो पिंड मोटो अथवा नानो हशे, तो घट पण मोटो अथवा नानो थशे. नहि तो ते कारण थशे नहि. तमने पण प्राणापान न्यून अधिक थवाथी, ज्ञान न्यून अधिक थतुं नथी. परंतु तेथी उलटुं थतुं तो देखाय छे. कारण के मरण अवस्थामां प्राणापान अधिक थाय छे तो पण विज्ञान घटी जाय छे.

जो कहो के मरण अवस्थामां वातपित्तादि दोषोथी देह विगुणी थई जवाथी प्राणापाननी वृद्धि थतां पण ज्ञाननी वृद्धि थती नथी. तेथीज रीतें मृतअवस्थामां पण देह विगुणीभूत थवाथी चैतन्य नथी. आ पण तमारुं कथन असमीचीन छे. जो एम थाय तो तो मरीजनारां पण जीवतां थवां जोईयें ॥ तथा हि ॥ " मृतस्य दोषाः समीभवंति " अर्थात् मरण पछी वातपित्तादि दोष रहेता नथी, अने ज्वरादि विकार न देखावाथी दोषोनुं अविद्यमानपणुं प्रतीत थाय छे. वली दोषोनुं जे समपणुं छे तेज आरोग्यता छे, "तेषां समत्वमारोग्यं क्षयवृद्धिविपर्ययः" ॥ इति वचनात् ॥ आरोग्यताभवथी देहने फरीथी जीवतां थवुं जोईयें, नहि तो देह कारणज नथी. चित्तनी साथे देहने अन्वय व्यतिरेक नथी. जो मरेलो जीवतो थाय तो अमे पण देहने कारण मानी लहियें.

पूर्वपक्षः— आ फरी जीवतां थई उठवानो प्रसंग तमारो अयुक्त छे. कारण के, अगर जो के दोष तो देहने वैगुण्यें करीने निवृत्त थइ गयेल छे, तो पण वैगुण्यपणानो परिणाम निवृत्त थतो नथी. जेम के अग्निथी काष्ठमां करायेलो विकार, अग्नि निवृत्त थया छतां पण ते निवृत्त थतो नथी.

उत्तरपक्षः— आ तमारुं केहेवुं अयुक्त छे. कारण के विकारपण बे प्र-

कारना छे. एक विकार निवृत्त थइ जाय छे, अने बीजो निवृत्त थतो नथी. निवृत्त विकार जेम के अग्निकृत सुवर्णमां द्रवता. अनिवृत्त विकार जेम के अग्निकृत काष्ठमां श्यामता. वायुआदि जे दोष छे, ते निवृत्त विकार छे. चिकित्सा प्रयोगथी देखियें छियें. जो वायुआदि दोषपण अनिवृत्त विकार होय तो तो चिकित्सा विफल थई जाय. एमपण न कहेवुं के मरणनी पहेलां दोष निवृत्तविकार आरंभक छे, अने मरण समये दोष अनिवृत्त विकार आरंभक छे, कारण के एकने एकज जगाए निवृत्त, अनिवृत्तरूप बंने विकार थइ शकता नथी.

पूर्वपक्षः—व्याधि बेप्रकारना छे, एम लोकमां प्रसिद्ध छे- एक साध्य, बीजा असाध्य. साध्यव्याधि, चिकित्साथी दूर थइ जायछे. असाध्य, चिकित्साथी दूर थता नथी. हवे जुओ बे प्रकारना व्याधि सिद्ध छे के केम?

उत्तरपक्षः—आ कथन असत् छे. तमारा मतपूर्वक असाध्य व्याधिज थईशके नहि. व्याधिनुं असाध्यपणुं, आयुना क्षयपणाथी थायछे, कारणके ते व्याधिमां वैद्यनो योग, तथा समान औषध छतां पण कोइ मरी जायछे, अने कोइ मरतुं नथी; अने जे प्रकृतिल कर्मोना उदयथी चित्रादि व्याधिछे, ते हजार औषधोथी पण साध्य थइ शकता नथी. आ बंने प्रकारना व्याधिनुं स्वरूप परमेश्वरनां वचन जाणनाराओना मतमांज सिद्ध छे; परंतु तमारा भूतमात्र तत्त्ववादियोना मतमां सिद्ध थइ शकतुं नथी. दोषकृत विकार दूर करवामां, वैद्यना तेमज समर्थ औषधिना अभावथी व्याधि वृद्धिमान थइ जायछे, त्यारे ते व्याधि असाध्य थइ जायछे, अने तेथी सर्व आयुष्यनो अपक्रम अर्थात् क्षय ते करी नांखेछे; केटला एक दोषो उपशांत थवाथी अकस्मात् मृत्यु पामे छे अने केटलाएक अत्यंतदुष्ट दोषोथी पीडातां छतांपण मृत्यु पामता नथी. आ वात तमारा मतमां सिद्ध थइ शकती नथी. आह च ॥ दोषस्योपशमेप्यस्ति, मरणं कस्यचित् पुनः ॥ जीवनं दोषदुष्टत्वे,ऽप्येतन्न स्याद्भवन्मते॥१॥ अमारा मतमां तो ज्यांसुधी आयुष्य होय, त्यां सुधी दोषोथी पीडातांछतां पण प्राणी जीवतो रहेछे, अने ज्यारे आयुःक्षय थइ जायछे, त्यारे दोषोना विकार विनापण मृत्यु पामेछे. ते कारणथी देह ज्ञाननुं निमित्त नथी.

वली एक सवाल छे के, देहने जे तमे ज्ञाननुं कारण मानो छो, ते शुं

सहकारि कारण मानोछो ? के उपादान कारण मानो छो ? जो सहकारि कारण मानोछो तो तो अमे पण देहने क्षयोपशमनो हेतु तो मानियें छियें, कथंचित् विज्ञाननो हेतु मानियेंछियें. जो उपादान कारण मानशो तो तो अयुक्तछे. उपादान कारण तो ते थइ शके, जे कारण विकारि थतां कार्यपण विकारि थइ जाय, जेम के मृत्तिका तेमज घट; अने अहिंयां तो देह विकार पामतां छतां पण संवेदन विकार पामतो नथी; तेमज देह विकार पाम्या विनापण भय शोकादिथी, संवेदन विकार पामेलो देखायछे. ते कारणथी देह संवेदननुं याने ज्ञाननुं उपादान कारण थइ शकतो नथी. उक्तं च॥ अधिकृत्य हि यद्वस्तु, यः पदार्थोविकार्यते ॥ उपादानं न तत्तस्य, युक्तं गोगवयादिवत् ॥ १ ॥ आ केहेवाथी जे कहेछे के मातापितानुं चैतन्य, पुत्रना चैतन्यनुं उपादान कारण छे, तेपण खंडन थइ जायछे. जुओ. मातापिता विकारी थतां पुत्र विकारी थतो नथी; अने जे जेनुं उपादान कारण छे, ते ते कार्यथी अभेद होयछे, जेमके माटी तथा घट. जो माता, पितानां चैतन्य, पुत्रनां चैतन्यथी अभेदरूप होय तो तो, पुत्रनुं चैतन्य, पण माता पिताना चैतन्यथी अभेद थवुं जोइयें. तेम नथी, तेथी तमारूं कथन प्रमाणरहित छे. ए प्रमाणे सर्व हेतु जोतां भूतोनो धर्म, अथवा भूतोनुं कार्य चैतन्य नथी. परंतु आत्मा स्वतः सिद्ध छे. विशेषथी चार्वाकमतनुं खंडन जोवुं होय तो संमतितर्क तथा स्याद्वादरत्नाकरादि ग्रंथो जोइ लेवा. इति चार्वाकमत खंडन. आ परिछेदमां कुगुरुनां जे लक्षणो कह्यां छे, ते चाहेतो जैनना साधुमां होय के चाहे तोअन्यमतना साधुओमां होय, ते सर्वने कुगुरु कहेवा जोइयें.

इति श्रीतपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविनयशिष्यमुन्यानंदविजयात्माराम विरचितजैनतत्त्वादर्शगुर्जरभाषांतरे कुगुरुस्वरूपनिर्णयनामा चतुर्थः परिछेदः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम परिछेद प्रारंभः ॥

पांचमा परिछेदमां धर्मतत्त्वनुं स्वरूप लखियेंछियें. दुर्गतिमां पडतां जीवने धारण करी राखे, अर्थात् दुर्गति प्राप्त न थवा दे ते धर्म कहेवाय छे. धर्मना त्रण भेद छे. १ सम्यक्ज्ञान, २ सम्यक् दर्शन, ३ सम्यक्चारित्र. प्रथम सम्यक् ज्ञाननुं स्वरूप संक्षेपथी लखियें छियें. यथा ॥ य-

थावस्थिततत्त्वानां, संक्षेपाद्विस्तरेण वा ॥ योवबोधस्तमत्राहुः, सम्यक् ज्ञानं मनीषिणः ॥ १ ॥ अर्थः–यथावस्थित नयप्रमाणयुक्त प्रतिष्ठित छे स्वरूप जेनुं एवां जे जीव, अजीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्षरूप सात तत्त्व, प्रकारांतरें पुण्य, पाप अधिक होवाथी नवतत्त्व, तेनो जे अवबोध अर्थात् ज्ञान, ते सम्यक् ज्ञान जाणवुं. ते ज्ञान क्षयोपशमविशेषथी कोइ जीवने संक्षेपथी, तेमज कोइ जीवने विस्तारपूर्वक थाय छे. ते नवतत्त्वमांहेना प्रथमजीवतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें, जीव कहो अथवा आत्मा कहो आ बंने एकज वस्तुनां नाम छे.

प्रश्नः–जैनमतमां आत्मानुं शुं लक्षण छे ?

उत्तरः–चैतन्य लक्षण छे.

प्रश्नः– जैनमतमां जीव, प्राणी, आत्मा कोने कहेछे, जरा विस्तारथी स्वरूप बतावो ?

उत्तरः–यः कर्त्ता कर्मभेदानां, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥ संसर्त्ता परिनिर्वाता, सह्यात्मा नान्यलक्षणः॥ १ ॥ भावार्थ. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद अने योगथी कलुषित, अर्थात् मलीन थइने वेदनी आदि कर्मोनो कर्त्ता, तथा ते करेलां कर्मोनां सुखदुःखादि फल तेनो भोक्ता, तथा नरक, तिर्यंच आदि गतिविषे कर्मोना विपाकना उदयथी भ्रमणकरनार, तेमज सम्यक् दर्शनादि रत्नत्रयीथी उत्कृष्ट पुरुषार्थपूर्वक संपूर्ण कर्मांशने दूर करनार अर्थात् निर्वाण प्राप्त करनार तेज आत्मा छे, तेज प्राणी छे, तेज जीव छे. जुओ नंदीसूत्र. आत्मानी सिद्धि चार्वाकमतखंडनमां लखी आव्या छियें. जो विशेषथी आत्मानी सिद्धि जोवी होय तो शब्दांभोनिधि, गंधहस्तिमहाभाष्य जोवां. आत्मा सर्वव्यापी पण नथी. एकांत नित्य, कूटस्थपण नथी. एकांत अनित्य क्षणिकपण नथी. परंतु शरीरमात्रव्यापी कथंचित् नित्यानित्यरूप छे. तेनुं खंडन मंडन विस्तारथी जोवुं होय तो स्याद्वादरत्नाकर, रत्नाकरावतारिका, अनेकांतजयपताका प्रमुख शास्त्रथी अवलोकन करवुं. अहींयां विस्तार करवाथी ग्रंथ वधि जाय, तेमज वांचनार आलस करे ते सबबथी, विशेष वर्णन कर्युं नथी.

जीव बे प्रकारना छे. एक मुक्तरूप, बीजा संसारी. बंने प्रकारना जीव अनादि अनंत छे. ज्ञान, दर्शन तेओनुं लक्षण छे. मुक्तस्वरूप आत्मा (परमा-

त्मा) सर्व एक स्वजाव छे. जन्मादि क्लेशोथी वर्जित छे. अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य, अनंत आनंदमय स्वस्वरूपमां स्थित छे. निर्विकार निरंजन, ज्योतिःस्वरूप छे.

संसारी जीव बे प्रकारना छे. एक स्थावर. बीजा त्रस. स्थावरना पांच ज्ञेद छे. १ पृथिवीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय. वली त्रसना चार ज्ञेद छे. १ द्वींद्रिय, २ त्रींद्रिय, ३ चतुरिंद्रिय, ४ पंचेंद्रिय. स्थावर सर्व एक स्पर्शेंद्रिय वालाज छे. शंख, गंडोलां, जलो, चंदणग, कृमि, अलसीयां प्रमुख जीव, एक स्पर्शेंद्रिय अर्थात् शरीर, तेमज रसनेंद्रिय अर्थात् मुख, एम बे इंद्रियवाला छे. मांकड, जू, कीडी, धीमेल, उधी, मंकोडाप्रमुखजीव, पूर्वोक्त बे इंद्रिय, तथा एकनासिका, एम त्रण इंद्रियवालां छे. मांखी, मछर, डांस, कंसारी, वींछी, तीड, ज्ञमरा प्रमुख जीव पूर्वोक्त त्रण इंद्रिय तथा एक चक्षु एम चार इंद्रियवालां छे. नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ए पंचेंद्रिय जीव छे. स्पर्शन, रसना, घ्राण नेत्र, कान, आ पांचेंद्रियवालां छे. स्थावर जीव पण बे प्रकारना छे. एक सूक्ष्म नामकर्मना उदयथी. सूक्ष्म. बीजा बादर नामकर्मना उदयथी, बादर. स्थावर तथा त्रस जीव, समुच्चय छपर्याप्ति वालां छे, छपर्याप्तिनां नाम. १ आहार पर्याप्ति, २ शरीरपर्याप्ति, ३ इंद्रियपर्याप्ति, ४ श्वासोछ्वास पर्याप्ति, ५ जाषापर्याप्ति, ६ मनःपर्याप्ति.

हवे पर्याप्तिनुं स्वरूप लखियेंछियें. पर्याप्ति अर्थात् शक्ति १ आहार ग्रहण करवानी जे शक्ति, ते आहारपर्याप्ति, २ शरीर रचवानी जे शक्ति, ते शरीरपर्याप्ति, ३ इंद्रिय करवानी शक्ति, ते इंद्रियपर्याप्ति छे, एम छए पर्याप्तिनुं स्वरूप जाणवुं. पूर्वोक्त छ पर्याप्तिमध्येथी जे जे जीवने जेटली जेटली पर्याप्ति होवी जोइये. ते करतां ओछी पर्याप्ति होय तो ते जीव अपर्याप्ति कहेवाय छे, स्थावर जीवमां प्रथमनी चार पर्याप्ति छे, बे इंद्रियवाला, त्रण इंद्रियवाला, अने चार इंद्रियवाला जीवोमां मनविना पांचपर्याप्ति छे. पंचेंद्रिय जीवमां छ पर्याप्ति छे. १ पृथिवीकाय, २ जलकाय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, आ चारेमां असंख्य जीव छे. वनस्पति कायना बे प्रकार छे. प्रत्येक वनस्पतिकायमां असंख्य जीव छे, साधारण वनस्पतिकायमां अनंतजीव छे. स्थावर तथा त्रसजीवना जघन्य (१४) ज्ञेद

छे, मध्यम (५६३) भेद छे, अने उत्कृष्ट अनंत भेद छे. मध्यमना भेदोमां (१४) भेद नरकगतिवालांना छे, (४८) भेद तिर्यंच गतिवालांना छे, (३०३) भेद मनुष्य गतिवालाना छे, (१९८) भेद देवगतिवालाना छे. मध्यमना सर्व मली एम (५६३) भेद छे. तेउंनुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होय तो प्रज्ञापन्नसिद्धांत, तथा जीवविचार प्रकरण आदि शास्त्रो जोवां.

प्रश्नः— हे जैन ? बे इंद्रियादि जीव तो जीवलक्षणसंयुक्त होवाथी जीव सिद्ध थाय छे. परंतु पृथिवी आदि पांच स्थावरोमां अमे जीव केवी रीतें मानियें ? पृथिवी आदिमां जीवनुं कांइ पण चिह्न उपलब्ध थतुं नथी.

उत्तरपक्ष— अगर जो पृथिवी आदिमां जीवनुं प्रगट चिह्न देखातुं नथी, तो पण अव्यक्त रूपें जीवनुं चिह्न छे तेथी जीव सिद्ध थाय छे. जेम धत्तुराथी, अने मदिरापान आदिना निस्साथी मूर्छित थयेला जीवमां अव्यक्तलिंग थइ जवा छतां जीवपणुं छे, तेम पृथिवी आदिमां पण जीवपणुं मानवुं जोइये.

प्रश्नः— मदिरानी मूर्छामां श्वासोच्छ्वास देखवाथी अव्यक्तपणामां पण चेतना लिंग छे, परंतु पृथिवी आदिमां तेवुं चेतनतानुं लिंग कांइ पण नथी, तेथी तेउंने केम चैतन्य मानवामां आवे ?

उत्तरपक्ष— तमे कहो छो तेवुं चैतन्य नथी, परंतु पृथ्वीकायमां आयमां, स्वआकारमां रहेलां लवण, विद्रुम, पाषाण आदिमां, अर्श मांस अंकुरनी जेम समानजातीय अंकुर उत्पत्तिपणुं छे. वनस्पति जेम चेतनपणानुं चिह्न छे. ते कारणथी अव्यक्त उपयोगादिलक्षण होवाथी पृथ्वी सचेतन छे एम सिद्ध थाय छे.

प्रश्नः—विद्रुम पाषाणादि पृथ्वी कठणरूप छे. सबब कठिनरूप होवाथी पृथ्वी सचेतन केम होइशके ?

उत्तरः—जेम शरीरमां अस्थि अर्थात् हाड अनुगत छे, ते कठण छे तो पण सचेतन छे. तेम जीवानुगत पृथ्वीनुं शरीरपण सचेतन छे, वली पृथ्वी, अप्, तेज वायु, वनस्पति, तेउंनां शरीर जीव सहित छे, छेद्य, भेद्य, उत्क्षेप्य, भोग्य, घ्रेय, रसनीय, स्पृश्य द्रव्य होवाथी. सास्ना (बलदना गलांनी नीचेनी खूल ' गलधी ') तथा विषाण (शींगडां) नीपेठे संघातवत्

पृथिवी आदिमां छेद्यत्वादि जे देखियें छियें, तेने कोइ पण गोपवी शकतुं नथी. वली एमपण न कहेवुं के पृथिवी आदिनां जीवशरीर जे साधवां छे ते अनिष्ट छे, कारण के सर्व पुद्गल द्रव्यने द्रव्यशरीर एम पण मानियेंछियें. तेमां जीवसहित, तथा जीवरहित जे विशेष छे ते आ प्रमाणे छे; शस्त्रथी अनुपरत जे पृथिवी आदि छे, ते हाथ पगना संघातवत् संघात न होवाथी कदाचित् सचेतन छे, तेवीज रीतें शस्त्रथी उपहत थवाथी हाथ आदि पेठे अचेतनपण छे, ते अचेतनज छे.

प्रश्नः— प्रश्रवणवत् अर्थात् मूत्रनी पेठे जीवनुं लक्षण न होवाथी जल जीव नथी.

उत्तरपक्षः— हेतु असिद्ध होवाथी, आ पण कहेवुं वास्तविक नथी. जुओ. हाथीनुं शरीर कलल अवस्थामां (तरत उत्पन्न थयेली स्थितिमां) द्रवरूप तेमज सचेतनरूप देखाय छे. तेवीज रीतें जलमां पण जाणवुं. वली इंडामां रसमात्र छे, परंतु अवयव कोइपण उत्पन्न थयेल नथी, तेमज व्यक्त हाथपगादि पण नथी, तो पण सचेतन छे, ते उपमाए जलपण सचेतन छे. आ तेमां प्रयोग छे- द्रवरूप होवाथी शस्त्रथी अनुपहत थकुं हाथीना शरीरना उपादानभूत कललवत् जल सचेतन छे. आ हेतुमां विशेषणना उपादानथी अर्थात् ग्रहणथी प्रश्रवण दूधादिमां व्यभिचार नथी. तथा अनुपहतद्रव्य होवाथी इंडामां रहेला कललवत् जल सात्मक छे. वली हिमादि कोइक अवस्थामां अप्काय होवाथी बीजा उदकनी जेम सचेतन छे तथा कोइ जगाए भूमि खोदवाथी स्वाभाविक संभव होवाथी मेंडकवत् जल सचेतन छे. तेमज आकाशमां उत्पन्न थतुं जल, वादलादि विकारथी थयेलुं स्वतःज उत्पन्न थइने पडवाथी मत्स्यवत् सचेतन छे. तथा शीतकालमां नदीप्रमुखमां बहु शीत पडतां, बहु, अने अल्प शीत पडतां अल्प, उष्मा देखाय छे, ते उष्मा सजीव हेतुकज छे. अल्प विशेष मलेलां मनुष्योना शरीरोनी जेम अल्प बहु उष्मा थाय छे. जलमां शीतस्पर्शज छे एम वैशेषिक कहे छे. तथा शीत कालमां शीत बहुज पडवाथी प्रातःकालमां तलाव आदिनी पश्चिम दिशामां उभा रही, तलाव आदि जोइयें, तो ते तलावमांथी निकलतो वाष्पसमूह देखाय छे; तेपण जीव हेतुकज छे. तेनो प्रयोग एवो छे के शीतकालमां

जे वाष्प थाय छे, ते उष्ण स्पर्शवाली वस्तुथी थाय छे. शीतजलथी सेचनकरेला शीतकालमां मनुष्य शरीरनी वाष्पनी जेम. वली उकरडामां कूडा कचवरमांथी धूआ (वाष्प) निकले छे, त्यां पण अमे पृथ्वीकायना जीव मानियेंछियें आ हेतुउथी जल सजीव सिद्ध थाय छे.

प्रश्नः– तेजस्कायमां जीव केवीरीतें सिद्ध थाय छे ?

उत्तरपक्षः– जेम रात्रिमां खद्योत (आगीआ कीडा) नुं शरीर जीवशक्तिथी बनेलुं प्रकाशवान् छे, तेम अंगारादिपण प्रकाशमान होवाथी सचेतन छे. तथा जेम ज्वरनी उष्मा जीवना प्रयोग विना अर्थात् अस्तित्व विना होती नथी, तेम अग्निमां पण जीवविना गरमी थती नथी. जुउ के मृतकशरीरमां ज्वर कदापि होतो नथी. एवा अन्वयव्यतिरेकथी अग्नि सचेतन जाणवो. वली प्रयोग आ छे, आत्माना संयोगथी प्रगट थयो छे अंगाराप्रमुखने प्रकाश परिणाम, शरीरस्थ होवाथी खद्योत शरीर परिणामवत्. तथा आत्मा संयोगपूर्वक शरीरस्थ होवाथी ज्वर उष्मवत् अंगाराप्रमुखमां उष्णता छे. एमपण न कहेवुं के सूर्यनी उष्मा साथे अनेकांतिक हेतु छे. सूर्यमां जे उष्मा छे ते पण आत्मसंयोग पूर्वकज अमे मानियेंछियें. तथा अग्नि सचेतन छे, कारण के यथायोग्य आहार करवाथी वृद्धि आदि विकार मालम पडवाथी पुरुषना शरीरनी जेम. इत्यादि लक्षणोथी अग्नि सचेतन छे.

प्रश्नः– वायुकाय (पवन) मां जीवसत्ता केवी रीतें सिद्ध करो छो ?

उत्तरपक्षः– जेम देवताउनां शरीर शक्ति प्रभावथी, तेमज मनुष्योनां शरीर अंजनादि विद्यामंत्रना प्रभावथी, अदृश्य थइजवाथी नेत्रथी देखातां नथी, तोपण विद्यमान चेतनावालां छे, तेम वायुकाय सूक्ष्म परिणाम होवाथी, परमाणुनी जेम, नेत्रथी देखातां नथी तोपण विद्यमान चेतनावालां छे. तेमज अग्निथी दग्ध पाषाणखंडगत अग्निवत्; प्रयोग आ छे. बीजाउनी प्रेरणाविना, नियमपूर्वक तिर्यक् गति होवाथी वायु चेतनावान् छे. गवाश्वादिवत् तिर्यक् गतिना नियमथी; परमाणुनी साथे व्यभिचार नथी. वली शस्त्रथी अनुपहत होवाथी वायु सचेतन छे.

वनस्पतिकायमां तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी जीव सिद्धज छे. ते कारणथी अहिंयां तेनो विस्तार कर्यो नथी. सर्वज्ञना कथन करेलां आगमपण पृ-

थ्वी जल, अग्नि, पवन, वनस्पतिमां जीवसत्ता कहे छे. तेम छतां कदा-
पि कोइ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, तेमज पंचेंद्रियमां पण जीव न-
हि माने तो तेउनी अमान्यताथी अमने कांइ हानि नथी. आ संक्षेपथी
जीवस्वरूप वर्णन कर्युं, विस्तारनी अभिलाषावालाए जैनसिद्धांत जोवा.

हवे बीजुं अजीवतत्व कहियेंछियें. अजीवनां लक्षणो जीवनां लक्ष-
णोथी विपरीत छे. जे ज्ञानथी रहित होय, रूप, रस, गंध, स्पर्शवाला
होय, नर, अमरादिगतिमां न गमन करनार होय, ज्ञानावरणीयादि क-
र्मना कर्त्ता न होय, तेमज ते कर्मफलना भोक्ता न होय, अने जडस्व-
रूप होय, ते अजीव छे. ते अजीवना पांच प्रकार छे. १ धर्मास्तिकाय, २
अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ काल.

१ धर्मास्तिकायनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. जेम मत्स्यना संचारनुं अपे-
क्षाकारण पाणी छे, तेम जीव तथा पुद्गलने गतिपणे परिणमतां जे अ-
पेक्षाकारण होय ते धर्मास्तिकाय छे. यद्यपि जीव तथा पुद्गल स्वशक्तिथी
चाले छे, परं तु तेउने गतिसहायक गुणप्रदाता धर्मास्तिकाय पदार्थ छे.
ते लोकव्यापी छे, नित्य छे, अवस्थित छे, अरूपीछे असंख्यप्रदेशी छे. ज्यां
सुधी आ धर्मास्तिकाय द्रव्य छे, त्यांसुधी लोकनी मर्यादा छे. जो धर्मा-
स्तिकाय द्रव्य न मानियें, तो लोक अलोकनी मर्यादा रहे नही. ज्यां सुधी
धर्मास्तिकाय द्रव्य वर्त्तेछे, त्यांसुधी जीव, पुद्गल गति करेछे. तेनुं संपूर्ण
स्वरूप जैनमतना ग्रंथो अध्ययन कर्या शीवाय जाणी शकाय नहि.

२ बीजुं अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे. तेनुं स्वरूप धर्मास्तिकाय सदृश जा-
णवुं, परंतु तफावत ए छे के, आ द्रव्य जीव, पुद्गलने स्थिति सहायक छे
जेम पंथीजन रस्तामां चालतां थाकी जायछे, त्यारे विश्राम लेवा सारू
वृक्षादिनी छायामां बेसेछे, ते प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करेछे, परंतु आ-
श्रय विना स्थिति थइ शकती नथी, तेम जीव पुद्गल गतिकरतां करतां
स्थिति करवा प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करेछे, परंतु अपेक्षाकारणरूप
वृक्षनी छाया जेम अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे.

३ त्रीजुं आकाशास्तिकाय द्रव्य छे. तेनुं स्वरूप पण धर्मास्तिकाय
सदृश छे. परंतु विशेष आ प्रमाणे छे. आ द्रव्य लोकालोकव्यापीछे अव-
काशदानलक्षण छे. जीव, पुद्गलने रहेवामां अवकाश आपेछे. आ

त्रणेद्रव्य एक बीजामां मली गयेलांछे. ज्यांसुधी आकाशास्तिकाय, धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय छे, त्यांसुधी लोक छे, अने ज्यां केवल आकाशास्तिकाय छे, अने बीजुं कांइ नथी, ते अलोक छे.

चोथुं पुद्गलास्तिकाय द्रव्य छे. परमाणुउनुं नाम पण पुद्गल छे, तेमज परमाणुउना समूहनां घट, पटादि कार्य छे, तेउने पण पुद्गलज कहेछे. एक परमाणुमां, एकवर्ण, एकरस, एकगंध, बे स्पर्श छे, कार्य तेनुं लिंग छे. वर्णथी वर्णांतर, रसथी रसांतर, गंधथी गंधांतर, अने स्पर्शथी स्पर्शांतर थइ जायछे. परमाणु द्रव्यरूपें अनादि अनंत छे, पर्यायरूपें सादि सांत छे. परमाणुउनां जे कार्य छे, तेउमां कोइकतो प्रवाहथी अनादि अनंत छे, अने कोइ सादि सांत छे. जे जडरूप देखाय छे, ते सर्व परमाणुउनां कार्य छे. सुकेली वनस्पति, तेमज अग्निप्रमुख शस्त्रोथी परिणामांतर प्राप्त थयेलां पृथिवी आदि सर्व पुद्गल छे. समुच्चय पुद्गल द्रव्यमां, पांच वर्ण, पांच रस, बे गंध, आठ स्पर्श, पांच संस्थान, छे. कालो, लीलो, रातो, पीलो, धोलो, आ पांच वर्ण छे. तीखो, कडवो, कषायेलो, खाटो, मीठो, आ पांच रस छे. सुगंध, दुर्गंध, आ बे गंध छे. खरखरो, सुवालो, हलवो, नारे, टाढो, उनो, चीकणो अने लूखो आ आठ स्पर्श छे. तेना विशेषवर्णादि थाय छे, ते सर्व एक बीजाना मेलापथी थाय छे, पुद्गलोमां अनंत शक्तिउ छे, अनंत स्वनाव छे. १ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ नाव, इत्यादि ते ते निमित्तोना मलवाथी विचित्र परिणाम तेना थाय छे.

५ पांचमुं कालद्रव्य छे. ते प्रसिद्धछे. आ पांचे द्रव्य अजीव छे. इति.

हवे पांच निमित्तनुं स्वरूप लखियेंछियें. १ काल, २ स्वनाव, ३ नियति, ४ पूर्वकृत, ५ पुरुषकार, तेउनुं स्वरूप श्रीसिद्धसेन दिवाकर आचार्यकृत सम्मतितर्क ग्रंथमां विस्तारथी बतावेल छे. ते पांचमांथी जो एकने माने तो ते मिथ्याज्ञान, अने मिथ्या दृष्ट छे. जो पांचेना समवायने माने तोसम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् दृष्ट छे. आ पांचे निमित्तमांहेना १ काल, २ स्वनाव, ३ नियति, आ त्रण निमित्तोनुं स्वरूप क्रियावादिना मतमां लखी आव्या छियें, ४ पूर्वकृत (कर्म) नुं स्वरूप आगल कर्म स्वरूपनो विस्तार करवामां आवशे त्यां करवामां आवशे. ५ पुरुषकार, ते जीवोनो उद्यम छे, आ पांचे निमित्तोथी जगत् प्रवृत्ति निवृत्ति थइ

रहीछे. आ पांच निमित्तोथीज जीव नरकादि गतियोमां जायछे; तेमज सुख दुःखनां फल जोगवे छे. आ पांच निमित्त विना फल प्रदाता ईश्वरादि कोइ पण नथी, जो कोइ वादि आ पांच निमित्तोना समवायने ईश्वर माने, तो तो अमे पण ईश्वर कर्त्ता मानी लेशुं, कारण के जैनमतनी तत्त्वगीतामां लखेलुं छे के, द्रव्यमां जे अनादिद्रव्यत्व शक्ति छे, तेज सर्वपदार्थोने उत्पन्न करेछे, तेमज लय करेछे, ते शक्ति चैतन्य अचैतन्यादि अनंत स्वजाववाली छे तेने ईश्वर कर्त्ता मानवाथी जैनमतने कांइ हानि थती नथी.

३ हवे पुण्यतत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. "येन शुजप्रकृत्या आत्मकं कर्म जीवान् सुखं ददाति तत् पुण्यं" इत्यादि जेणे करी अर्थात् जे शुज प्रकृतिथी पोते करेलां कर्म जीवोने सुख आपे छे ते पुण्य. पुण्य उपार्जन करवानां नव कारण छे, "उक्तं च स्थानांगे" अन्नपुणे पाणपुणे लेणपुणे सयणपुणे मणपुणे वयपुणे कायपुणे नमोक्कारपुणे इति सूत्रं ॥ व्याख्या १ पात्रने अन्ननुं दान आपवाथी जे तीर्थंकरनामादि पुण्य प्रकृतिनो बंध थाय ते अन्नपुण्य छे, तेवीजरीतें २ पीवाने जल आपवुं, ३ वस्त्र आपवां, ४ रहेवाने स्थानक आपवां ५ सुवा, वेसवाने आसन आपवां, ६ गुणीजनने देखी मनमां संतोष, खुशी मानवी, ७ गुणिजनोनी वचनथी प्रशंसा करवी कायाथी पर्युपासना अर्थात् सेवा करवी ए गुणि जनोने नमस्कार करवो आ पुण्य उपार्जन करवानी वावतो कही, ते कांइ जैनमतवालाउने देवावास्ते कही, एटलुंज नहि परंतु कोइपण मतवालो अथवा कोइपण दान देवायोग्य प्राणी होय, तेने अनुकंपाथी जे कोइ दान आपे ते अवश्य पुण्य उपार्जन करे परंतु तफावत एटलो छे, के पात्रने जे दान आपवामां आवशे, ते पुण्य तेमज मोक्ष बंनेनो हेतु थशे, अने अनुकंपाथी जे वीजाने दान देवामां आवशे, ते केवल पुण्य उपार्जन करवानोज हेतु थशे. जैनमतना कोइ शास्त्रमां पुण्य करवानो निषेध नथी कारण के जैनमतक्ष रुषजदेवादि चोवीश तीर्थंकरो थयेला छे; तेउए दीक्षा लेतां पहेलां एकक्रोड आठ लाख सोनैया दिन दिन प्रति एकवर्षसुधी दान आपेल छे. ते कारणथी जैनमतमां प्रथम दान-

धर्म छे. जैनमतना शास्त्रमां बीजी केटलीएक रीतथी पुण्य उपार्जन थायछे एम लखेलुं छे.

४ हवे पुण्यनां फल बेंतालीश प्रकारें भोगववामां आवेछे ते बेंतालीश प्रकार लखियेंछियें. १ जेना उदयथी जीव शाता भोगवे छे ते शाता वेदनीय, २ जेना उदयथी जीव क्षत्रियादि उंचा कुलमां उत्पन्न थाय छे ते उच्चगोत्र, ३ जेना उदयथी जीव मनुष्यगतिमां उत्पन्न थाय छे ते मनुष्यगति, ४ जेना उदयथी जीव देवगतिमां उत्पन्न थाय छे ते देवगति, ५ वक्रगतिए परान्नवमां जतां, बलदने नाथ घालीने सिधो चलाववानी जेम, जे उपजवाने स्थानकें जीवने पहोंचाडे तेने आनुपूर्वी कहे छे. मनुष्य गतिमां जीवने लाववाने उदयमां आवे ते मनुष्यानुपूर्वी, ६ देवानुपूर्वी, ७ जेना उदयथी जीव पंचेंद्रियपणुं पामे छे ते पंचेंद्रियजाति, हवे पांच जातनां शरीर कहियेंछियें. ८ जेना उदयथी जीव औदारिक वर्गणानां पुद्गलो ग्रहण करीने औदारिक शरीरनी रचना करे छे, अर्थात् औदारिक शरीरपणे परिणमावे छे, ते औदारिक शरीर, तेवीजरीतें ९ वैक्रियशरीर. १० आहारक शरीर, ११ तैजसशरीर, १२ कार्मणशरीर, एम पांच शरीरनी प्रकृतिउनो अर्थ समजवो. तथा अंगोपांग त्रण छे. तेमां अंग, शिरप्रमुख, उपांग, आंगली प्रमुख, बाकीनां अंगोपांग छे. जेम के १ शिर, २ छाति, ३ पेट, ४ पीठ, ५-६ बंने हाथ ७-८ बंने साथल, आ आठ अंग छे, आंगली प्रमुख उपांग छे, नखादि अंगोपांग छे. जेना उदयथी जीवने प्रथमना त्रण शरीरना अंगोपांगनी उत्पत्ति थाय, तेनां नाम, १३ औदारिक अंगोपांग, १४ वैक्रिय अंगोपांग, १५ आहारक अंगोपांग, १६ जेना उदयथी जीव प्रथमनुं संहनन जेनुं नाम वज्रऋषभ नाराच छे, ते प्राप्त करे छे, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. वज्रनाम कीलिका (खीली) छे, तथा ऋषभ एटले परिवेष्टन पट्ट अर्थात् उपर लपेटवाना हाडरूप पाटो, तथा नाराच, ते मर्कटबंध, आ त्रणे रूपथी जे उपलक्षित छे तेने वज्रऋषभ नाराच संहनन कहे छे, हाडना संचय सामर्थ्यनुं नाम संहनन छे. आ संहनन औदारिक शरीरवालाउमांज होय छे. १७ जेना उदयथी जीवने प्रथमना समचतुरस्र संस्थाननी प्राप्ति थाय, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे. सम अर्थात् तुल्य, जेनुं शरीर चारे बाजुएथी तुल्य, लक्षणयुक्त, प्रमाण

सहित, सुंदर आकार, पोताना आंगल प्रमाणे एकसो आठ आंगल प्रमाणशरीर थाय ते; हवे वर्ण, रस, गंध, अने स्पर्श, कहियें ठियें. १८ कृष्णादिवर्ण, १९ तिक्तादिरस, २० सुरज्यादिगंध, २१ मृडु आदि स्पर्श, जेना उदयथी शुज होय, २२ जेना उदयथी मध्यम वजनदार शरीरनी प्राप्ति थाय, अर्थात् लोहनी जेम अत्यंत जारे नहि, अने आकडाना कपासनी जेम अति हलकुं पण नहि, परंतु मध्यमपरिणामी होय, तेने अगुरु लघु नामकर्म कहीयें. २३ जेना उदयथी वीजाने हणीशके, तथा शरीरनी आकृति एवी होय के जेने देखीने वीजाउने अजिजव अर्थात् असामर्थ्यता थाय ते पराघातनामकर्म कहीयें, २४ जेना उदयथी उच्छ्वासनलब्धि, अर्थात् श्वासोच्छ्वास लेवानी शक्ति जीवने थाय ठे, ते उच्छ्वासनामकर्म, २५ जेना उदयथी जीवनुं शरीर प्रकाशवालुं तथा सूर्यना बिंबनी जेम वीजाने ताप उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय ठे, ते आतपनामकर्ग, २६ जेना उदयथी चंद्रबिंबनी जेम शीतलताने उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय, ते उद्योतनाम कर्म; २७ जेना उदयथी जीवने विहायस्नाम आकाश, तेमां जे गति, ते विहायोगति, ते गति राजहंससदृश होय, ते सुविहायोगति नामकर्म, २८ जेना उदयथी जीवने शरीरनां अंगोपांग आदिने नियतस्थानमां स्थापन करनार सूत्रधार (कारीगर) समान, अर्थात् नसो, जाल, मस्तकनी खोपरी, हाड, चक्षु, कान, केश, नखादि शरीरना सर्व अवयवो योग्यस्थानें रचनार नामकर्मनी प्राप्ति थाय ते निर्माणनामकर्म, २९ जेना उदयथी जीवने त्रसपणानी प्राप्ति थाय, ते त्रसनामकर्म, उष्णप्रमुखथी त्रस थतां विवक्षित स्थान तजी ठाया प्रमुखमां गति करे, तेमज छींड्रियादि पर्यायनां फल जोगवे, ते त्रस. ३० जेना उदयथी जीव बादर (स्थूल) शरीरवाला थाय, ते बादर नामकर्म, ३१ जेना उदयथी जीव पूर्वे कहेली ठ पर्याप्ति पूर्ण करे ठे, ते पर्याप्त नामकर्म, ३२ जेना उदयथी एक एक जीवने एक एक शरीर प्राप्त थाय ठे, ते प्रत्येक नामकर्म, ३३ जेना उदयथी जीवने हाडप्रमुख अवयवो स्थिर, निश्चल होय ठे, ते स्थिरनामकर्म, ३४ जेना उदयथी जीवने मस्तकप्रमुख अवयवो शुज होय ठे. ते शुजनामकर्म, ३५ जेना उदयथी सौजाग्यवान्

अर्थात् सर्वलोकने प्रिय जीव थाय, ते सुभगनामकर्म, ३६ जेना उदयथी जीवनो स्वर कोयलनी सदृश मीठाशवालो थाय ते सुस्वरनामकर्म, ३७ जेना उदयथी जीवनुं वचन उपादेय अर्थात् सर्वलोकने माननीय थाय, ते आदेयनामकर्म, ३८ जेना उदयथी विशिष्ट कीर्त्ति तथा यश जगत्मां जीवनी विस्तार पामे ते यशःकीर्त्तिनामकर्म; ३९ जेना उदयथी जीवनी चोसठ इंद्रो पूजा करे, तेमज त्रिभुवनमां पूज्यपणुं जेनाथी जीवने प्राप्त थाय, तेमज धर्म तीर्थनी प्रवर्त्तना जेनाथी थाय, ते तीर्थंकर नामकर्म, ४० तिर्यंचोनुं आयु, ४१ मनुष्यआयु, ४२ देव आयु, आ त्रण आयुनी प्रकृति आयुकर्मनी छे. जेना उदयथी जीव ते ते गतिमां जइ ते ते भवमां स्थिति करे छे, आ बेतालीश प्रकारथी पुण्यफल जीवने भोगववामां आवें छे.

४ हवे पापतत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. येनाशुभप्रकृत्या आत्मकं कर्म जीवान् दुःखं ददाति तत् पापं " जे अशुभप्रकृतिथी पोते करेलां कर्म जीवोने दुःख आपे ते पाप, तेमज आत्माना आनंदरसने पीये (भस-करे) ते पाप. तथा पुण्यथी विपरीत, ते पाप, आ पाप नरकादिफल प्रवर्त्तक होवाथी अशुभ छे, पुण्यनी जेम तेनो आत्मानी साथेज संबंध छे, कर्मपुद्गलरूप छे. अगर जो के बंधतत्त्व अंतर्भूतज पुण्यपापा छे, तो पण तेउंनुं स्वरूप पृथक् पृथक् नानाविध, परमतभेदनिरासार्थ कहेवामां आवेलुं छे. परमतभेद आ प्रमाणे छे. केटलाएक मतवाला कहेछे के केवल एक पुण्यज छे, परंतु पाप नथी, कोइमतवादी कहेछे के एक पापज छे, पुण्य नथी. वली कोइ मतवादी एम पण कहेछे के मेचकमणि जेम पुण्य पाप बंने परस्पर अनुविद्ध स्वरूपछे, तेथी मिश्र सुखदुःखफलना हेतु छे; ते कारणथी साधारण पुण्यपाप एकवस्तुज छे, वली केटलाएक कहेछे के मूलथी कर्मज नथी. जगत्मां सर्व विचित्रता स्वभावथीज सिद्ध छे. पूर्वोक्त सर्वमतो मिथ्या छे. कारण के सुख दुःख बंने पृथक् पृथक् अनुभववामां आवेछे. ते कारणथी तेउंना कारणभूत पुण्य पाप पण स्वतंत्रज अंगीकार करवा योग्य छे, परंतु एकलुं पुण्य, के एकलुं पाप, के एकलुं पुण्यपाप मिश्र मानवुं ठीक नथी.

कर्मअभाववादी नास्तिक तेमजवेदांती कहे छे के पुण्यपाप, आका-

शनां फुलसमान असत् छे, सत् नथी तो हवे पुण्यपापनां फल नोगववानां स्थान स्वर्ग, नरक केम मानी शकाय ?

उत्तरपक्षः- पुण्यपापनो अन्नाव मानशो तो सुख दुःख निर्हेतुक उत्पन्न मानवां पडशे, तेम मानवामां प्रत्यक्ष विरोध आवे छे. जुर्ज. मनुष्य पणुं सदृश छे, परंतु कोइ स्वामीछे, कोइ सेवकछे; कोइ लाखोनां उदर पोषण करेछे, कोइ पोतानुं पण उदर पोषण करी शकतो नथी; कोइ देवतानी पेठे निरंतर सुख नोगविलास करे छे, कोइ नारकीनी पेठे निरंतर दुःख नोगवी रह्या छे. ते कारणथी अनुन्नूयमान सुख दुःखना निबंधनन्नूत पुण्य पाप अवश्य मानवां जोइयें. ज्यारे पुण्य पाप मान्यां, त्यारे तेउना अत्यंत उत्कृष्ट फल नोगववानां स्थान स्वर्ग, नरक पण मानवां जोइशे. जो तेम नहि मानशो तो अर्द्धजरतीय न्यायनो प्रसंग आवशे, अर्धुं शरीर वृद्ध, अर्धुं जुवान. ते बाबतमां प्रयोग अर्थात् अनुमानपण छे. सुख दुःख कारणपूर्वक छे, अंकुर जेम कार्य होवाथी, तेवास्ते जे सुख दुःखनां कारण छे, ते मानवां जोइयें, जेम अंकुरनां बीज.

पूर्वपक्षः-नीलादि जे मूर्त्त पदार्थ छे, ते स्वप्रतिन्नासि अमूर्त्त ज्ञाननां जेम कारण छे, तेम अन्न, फूलमाला, चंदन, स्त्रीप्रमुख मूर्त्त दृश्यमानज सुख अमूर्त्तनां कारण छे, सर्प, विष, कंमू (खस) आदि दुःखनां कारण छे. तो हवे शावास्ते अदृश्य पुण्यपापनी कल्पना करोछो ?

उत्तरपक्षः-आ तमारूं कहेवुं अयुक्त छे, कारण के ते कथनमां व्यन्निचार छे. जुर्ज. बे पुरुषोनी पासे तुल्य साधन छे, तोपण फलमां अत्यंत तफावत देखवामां आवेछे. तुल्य अन्नादि नोगववामांपण कोइने आह्लाद (हर्ष) तथा शरीरपुष्टि थायछे, अने बीजाने रोगोत्पत्ति थायछे. आ फलन्नेद अवश्य सकारणछे; नहितो नित्य सत् नित्य असत् थवुं जोइयें, कारण के जे वस्तु (कार्य) कदी थाय, कदी न थाय, ते कारणविना कदापि तेम थतां नथी, अथवा कारणानुमानथी कार्य, पुण्य पाप जाणी शकायछे, त्यां कारणानुमान आ छे, दानादि शुन्न क्रियानां, तेमज हिंसादि अशुन्न क्रियानां फलन्नूत कार्य, कृष्यादि क्रियावत् कारण होवाथी छे. जे आ क्रियाउनां फलन्नूत कार्य छे, ते पुण्य पाप जाणवां. जेम खेती करवानी क्रियानां फल, कमोद, जुवार, घउं प्रमुख छे.

पूर्वपक्षः—जेम कृष्यादि क्रियानां दृष्ट फल कमोद प्रमुखछे, तेम दानादि, तेमज पशुहिंसादि क्रियानां दृष्टफल श्लाघा, मांसभक्षण, निर्दयता आदिछे, तो हवे शावास्ते अदृष्ट पुण्यपापनां फल कल्पवां जोइयें? कारणके जनसमुदाय विशेषें करी दृष्ट फलमांज प्रवृत्त थायछे, खेती, वेपार प्रमुख हिंसादि क्रियामां बहु लोको प्रवर्ते छे, अने अदृष्ट दान फलादि क्रियामां थोडा लोक प्रवर्त्तेछे. ते कारणथी कृषि हिंसादि अशुभ क्रियाओनां अदृष्ट फल पापरूप अमे मानता नथी.

उत्तरपक्षः—जो आ तमारूं कथन वास्तविक होय, तो तो परभवमां फलना अभावथी मरण अनंतरज सर्व जीव प्रयत्नविना मोक्ष प्राप्त करशे. तथा संसार प्रायः शून्य थइ जशे, संसारमां कोइपण दुःखी होशे नहि, मात्र दानादि शुभ क्रियाना करनारा, तेमज तेनां फल भोगवनारा रहेशे; परंतु तेम नथी, संसारमां दुःखी बहुज देखवामां आवेछे, अने सुखी थोडाज देखायछे, ते कारणथी साबीत थायछे के कृषि, वाणिज्य, हिंसादि क्रिया निबंधन अदृष्ट पापरूप फल दुःखी जीवोने छे, अने दानादि अदृष्ट पुण्यफल सुखी जीवोने छे.

प्रश्नः—जे सुखीछे ते हिंसादि क्रियाथी, अने जे दुःखीछे ते दानादि क्रियाथी एम केम न बने?

उत्तरः—एम बनतुं नथी, कारणके हिंसादि अशुभ क्रिया करनारा बहु छे, अनेदानादि शुभ क्रिया करनारा थोडाछे, आ कारण अनुमानछे. हवे कार्य अनुमान कहिये छियें. जीवोमां आत्मत्व समान छतां नर पशु आदि देहोमां कारणनी विचित्रताथी कार्य विचित्र देखायछे, जेमके घटनां दंड, चक्र, चीवरादि सामग्री संयुक्त कुंभकार; हवे एम पण कहेवाय के, देखाय छे जे माता, पिता ते आ देहनां कारण छे, परंतु पुण्य पाप नथी, कारण के मातापिता एकज छे छतापि पुत्रोना देहोमां विचित्रता देखायछे, आ विचित्रता, अदृष्ट (शुभाशुभ कर्म) विना थइ शकती नथी. ते कारणथी जे शुभ देह छे, ते पुण्यनुं कार्य छे; अने अशुभ देहछे ते पापनुं कार्यछे, आ कार्यानुमान सिद्धछे. सर्वज्ञ वचन प्रमाणथी पुण्यपापनीसत्ता पण सिद्धछे. विशेष जाणवानी इछावालाए विशेषावश्यकनी टीका जोवी.

पाप, प्राणातिपात आदि अढार पापस्थानकोथी बंधायछे, अने ते

ब्याशी प्रकारथी जोगववामां आवेछे. ते ब्याशी प्रकार आ प्रमाणे छे. पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय, नव दर्शनावरण, छवीश मोहनीय प्रकृति, चोत्रीश नामकर्मप्रकृति, एक अशाता वेदनी, एक नरकायु. एक नीचगोत्र, सर्व मळी ब्याशी प्रकार थया तेउनुं विस्तारथी स्वरूप लखियेंछियें.

ज्ञानावरण कर्मनी पांच प्रकृति छे. ज्ञानना पांच प्रकार छे १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, आ बंने अनिलाप प्लावितार्थ (वाणीतर्क) ग्रहण रूप ज्ञान छे. ३ अवधिज्ञान, इंद्रियोनी अपेक्षाविना आत्माने रूपी विषयक साक्षात् अर्थग्रहण करनारुं ज्ञान, ४ मनः पर्यवज्ञान, मनमां चिंतित अर्थने साक्षात् ग्रहण करनारुं ज्ञान, ५ केवलज्ञान, लोकालोकना सकल पदार्थस्वरूपनासन करनारुं ज्ञान. आ पांचे ज्ञाननां जे आवरण ते ज्ञानावरण छे, १ मतिज्ञानावरण, २ श्रुतज्ञानावरण, ३ अवधिज्ञानावरण, ४ मनः पर्यवज्ञानावरण, ५ केवलज्ञान आवरण. १ जेना उदयथी जीव मतिहीन, निःप्रतिना होय ते मतिज्ञानावरण, २ जेना उदयथी जीवने कांइपण जणतां न आवडे ते श्रुतज्ञानावरण, ३ जेना उदयथी अवधिज्ञान न थाय, ते अवधिज्ञानावरण, ४ जेना उदयथी मनः पर्यवज्ञान न थाय ते मनःपर्यवज्ञानावरण, ५ जेना उदयथी केवल ज्ञान न थाय ते केवलज्ञानावरण.

हवे अंतराय कर्मनी पांच प्रकृति कहियें छियें. १ जेना उदयथी, आपवानी वस्तु पण छे, गुणवान् पात्र पण छे, दाननुं फल पण आपनार जाणे छे, परंतु दान आपी शकतो नथी, ते दानांतराय, २ जेना उदयथी, देवा योग्य वस्तु पण छे, दातारपण बहुज प्रसिद्ध छे, मागनारपण मागवामां अत्यंत कुशल छे छतांपि मागनारने कांइ पण न मले, ते लाभांतराय, ३ जेना उदयथी, एकवार जोगववायोग्य वस्तु आहारादि विद्यमान पण छे, परंतु जीवथी जोगवी न शकाय, ते जोगांतराय, ४ जेना उदयथी, वारंवार जोगववा योग्य वस्तु शयन, अंगनादि विद्यमान पण छे, परंतु जीवथी जोगवी न शकाय, ते उपजोगांतराय, ५ जेना उदयथी युवान, रोगरहित, पुष्टांग, तथा बलवान् छतां पण पोतानी शक्ति फोरवी शकाय नहि, ते वीर्यांतराय.

हवे दर्शनावरण कर्मनी नव प्रकृति कहियें छीयें. सामान्य अवबो-

धनुं नाम दर्शन छे, तेनुं जे आवरण ते दर्शनावरण. दर्शनावरणना नव भेद मध्येथी प्रथमना चार भेद मूलथीज दर्शन लब्धिना आवरक छे. जेम के १ चक्षुदर्शनावरण, २ अचक्षुदर्शनावरण, ३ अवधिदर्शनावरण, ४ केवलदर्शनावरण; तथा निद्रा पांच छे, ते आवरण क्षयोपशमथी लब्ध आत्मलाभनी दर्शनलब्धियोने आवरक छे. तेओनुं विशेषस्वरूप आ प्रमाणे छे. चक्षुथी सामान्यग्राही जे बोध, ते चक्षुदर्शन, जेना उदयथी ते लब्धिनो जे व्याघात थाय, ते चक्षुदर्शनावरण; तेमज जेना उदयथी चक्षु विना चार इंद्रिय, तथा मनथी पोत पोताना विषयनुं जे सामान्यपणे ग्रहण थाय, एवा अचक्षुदर्शननुं जे आछादन थाय, ते अचक्षुदर्शनावरण; जेना उदयथी सामान्यपणे जे रूपि द्रव्यनुं मर्यादा पूर्वक ग्रहण थाय छे, एवा अवधिज्ञाननुं जे आछादन थाय ते अवधिदर्शनावरण; जेना उदयथी समस्त वस्तुनुं सामान्यपणे, वर प्रधान ज्ञायकभावें प्रगट थवाथी देखवुं थाय ते केवल दर्शन, तेनुं जे आछादन थाय ते केवलदर्शनावरण. चैतन्यने सर्व प्रकारें अतिकुत्सित करे, सामान्य ग्रहणरूप दर्शन उपयोग तेनो विघ्न करे ते निद्रा जाणवी. तेना पांच भेद छे. १ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ स्त्यानर्द्धि. १ जेमां चपटी वजावतां निद्रा लेनार जागी उठे ते सुखप्रतिबोध निद्रा, २ जेमां बहुज हलाववाथी, कपडा खेंचवाथी, निद्रा लेनार दुःखें जागे, अर्थात् जेथी अतिशय निद्रा आवे ते निद्रानिद्रा, ते कर्म प्रकृतिनां नाम पण तेज छे, ३ बेठां बेठां तथा उभां उभां जीवने जे निद्रा आवे ते प्रचला, ४ चालतां, चालतां जीवने जे निद्रा आवे ते प्रचला प्रचला, ५ स्त्याना नाम पिंडीभूत, ते पिंडीभूत थइ छे ऋद्धि अर्थात् आत्मशक्ति जे निद्रामां ते स्त्यानर्द्धि. ते निद्रामां जीवने वासुदेवना बलथी अर्ध बल थाय छे, आ निद्रामां जीव केटलांएक कार्य पण करे छे, परंतु ते कार्यनुं तेने कांइ भान रहेतुं नथी. पाछलनी त्रणे निद्रानी कर्मप्रकृतिनां नाम पण तेज छे.

हवे मोहनीय कर्मनी प्रकृति लखियें छियें. तत्त्वार्थ श्रद्धानने जे विपरीत करे ते मोहनीय छे. तेमां १ मिथ्यात्वज जे मोह ते मिथ्यात्व मोहनीय कहीए, मिथ्यात्व, मोहकर्मनी उत्तर प्रकृति छे. यद्यपि मिथ्यात्व

१ अजिग्रहिक, २ अनजिग्रहिक, ३ सांशयिक, ४ अजिनिवेशिक, ५ अनाजोगादि, अनेक प्रकारथी छे, तो पण यथावस्थित वस्तुतत्त्वना अश्रद्धानथी सर्व जेदो एक मिथ्यात्वरूपज गणाय छे, मिथ्यात्व, मोहनीय कर्मनी प्रथम प्रकृति छे; तथा कषाय मोहनीयना सोल जेद छे. कारण के क्रोधादि पण तत्त्वश्रद्धानथी आत्माने ज्रष्ट करे छे. ते सोल जेद आ प्रमाणे छे. १ अनंतानुवंधी क्रोध, २ अनंतानुवंधीमान, ३ अनंतानुवंधीमाया, ४ अनंतानुवंधीलोज, तेवीजरीतें ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोज, तेमज प्रत्याखानी क्रोध, मान, माया, लोज, तथा ४ संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोज, सर्व मली सोल कषाय मोहनीय छे.

जें क्रोधादि अनंत संसारनां मूल कारण छे, तथा जेनुं अनंत जवानुवंधिशील छे, तेमां जेनो स्वजाव एवो छे के जेवी पछरनी रेखा, जेनी साथे ककेश थाय, तेनी साथे ते ज्यां सुधी जीवे त्यां सुधी रोष छोडे नहि, ते अनंतानुवंधी क्रोध छे. तथा जे मान, पछरना स्थंजनी जेम कदापि नमे नहि, तथा जे माया, वांसनी जडसमान कदापि सरल न होय, तथा जे लोज कृमीना रंगसमान कदापि दूर न थाय एवा जे क्रोध, मान, माया अने लोजयुक्त परिणाम, तेनुं नाम अनंतानुवंधि क्रोधादि कर्म प्रकृति छे. तथा अप्रत्याख्यान, जेमां नञ् अल्पार्थ वास्ते छे, तेथी, जेना उदयथी थोडुं पण प्रत्याख्यान थतुं नथी, तेने अप्रत्याख्यान कहे छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे, क्रोध पृथ्वीनी रेखा समान, मान हाडना स्थंज समान, माया वकराना शींग समान, लोज कर्दमना डाघ समान, तेनी स्थिति एक वर्षनी छे. तथा जेना उदयथी सर्व विरतिपणुं जीवने प्राप्त न थाय, ते प्रत्याख्यानावरण कषाय छे. तेमां क्रोध, रेणु (धूल) नी रेखा समान, मान काष्ठना स्थंज समान, माया गोमूत्रनी धारावाही समान, लोज खंजनना रंग समान, तेनी स्थिति चार मासनी छे. तेमज जेना उदयथी केवलज्ञान प्राप्त न थाय ते संज्वलन कषाय छे, तेमां क्रोध, पाणीमां लीटी समान, मान नेतरना स्थंजसमान, माया वांसनी छोल समान, लोज हलदरना रंग समान, तेनी स्थिति पंदर दिवसनी छे. ए प्रमाणे संक्षेपथी सोल कषायनुं स्वरूप छे.

हवे नव नोकषायनुं स्वरूप लखियें छियें. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद,

हास्य, रति, अरति, शोक, जय, जुगुप्सा, आ नव नोकषाय मोहनीय प्रकृतिछे. नो एटले सहकारीपणुं. कषायने जे सहायकारी थाय ते नोकषाय कहेवाय छे. तेनुं स्वरूप कहीयें छियें. १ जेम पित्तना उदयथी मिठी वस्तुनीअजिलाषाथायछे, तेम जेना उदयथी स्त्री पुरुषनी अजिलाषा करे छे, ते स्त्रीवेद उदय; आ वेद उदय फुंफक (धुणीना) अग्नि समानछे, जेम धुणीनो अग्नि खोजवाथी वधतो जायछे, तेम स्त्रीना स्तन कक्षास्पर्शथी स्त्रीवेद प्रबल उदय पामेछे. तथा २ जेम कफना उदयथी खाटी वस्तुनी अजिलाषा थायछे, तेम जेना उदयथी पुरुष, स्त्रीनी अजिलाषा करेछे, ते पुरुषवेद उदय, आ वेद उदय तृणना अग्नि समानछे, जेम तृणनो अग्नि एकजवार प्रज्वलित थइ, तत्काल शांतपण थइ जायछे, तेम पुरुषवेद तत्काल एकवार उदय थायछे, अने तत्काल शांतपण थायछे. तथा ३ जेम पित्त अने कफना उदयथी खाटी मीठी वस्तुनी अजिलाषा थायछे, तेम जेना उदयथी स्त्री तेमज पुरुष बंनेनी अजिलाषा थायछे ते नपुंसकवेद छे. आ वेदनो उदय नगरदाहना अग्निसमानछे. तथा ४ जेना उयदथी निमित्तसह, तेमज निमित्तविना पण हसवुं आवे, ते हास्य, मोहकर्मनी प्रकृतिछे. तथा ५ जेना उदयथी रमणीय वस्तुउमां जीव रमे, खुशी थाय, ते रतिनामा मोहकर्मनी प्रकृति छे. तथा ६ जेना उदयथी रतिथी विपरीतपणुं थाय ते अरतिनामा मोहकर्मनी प्रकृतिछे. तथा ७ जेना उदयथी प्रियवियोगादिमां विकल मन, ग्लानि, क्रंदन, परिदेवनादि जीव करे, ते शोकनाम मोहकर्मनी प्रकृति छे. तथा ८ जेना उदयथी सनिमित्ततथा निमित्त विना जीवने बीक (जीति) लागे ते जयनामा मोहकर्मनी प्रकृति छे. तथा ९ जेना उदयथी गंदी, मलीन वस्तु देखवाथी नाक चढाववुं थाय, ते जुगुप्सानामा मोहकर्मनी प्रकृति छे. सर्व मली पीसतालीश जेद कह्या.

हवे नामकर्मनी चोत्रीश प्रकृति पापरूप छे, तेनां नाम कहियें छियें. १ नरकगति, २ तिर्यंचगति, ३ नरकानुपूर्वी, ४ तिर्यंचानुपूर्वी, ५ एकेंड्रिय जाति, ६ द्वींड्रिय जाति, ७ त्रींड्रियजाति, ८ चतुरिंड्रिय जाति,१३ पांच संहनन, १८ पांच संस्थान, १९ अप्रशस्तवर्ण, २० अप्रशस्त गंध, २१ अप्रशस्तरस, २२ अप्रशस्तस्पर्श, २३ उपघात, २४ कुविहायोगति,

२५ स्थावर, २६ सूक्ष्म, २७ अपर्याप्त, २८ साधारण, २९ अस्थिर, ३० अशुभ, ३१ असुभग, ३२ दुःस्वर, ३३ अनादेय, ३४ अयशःकीर्त्ति.

तेउनुं स्वरूप आ प्रमाणे. १ जेना उदयथी जीवनुं नारकीनाम पडे, तथा नरक स्थानमां जाय ते नरकगति, २ तेवीज रीतें तिर्यंचगति पण जाणवी, ३ जेना उदयथी नरकगतिमां जतां जीवने बे समयादि विग्रहगतिथी अनुश्रेणीमां नियत गमन परिणति थाय, ते नरकगतिने सहचारी होवाथी नरकानुपूर्वी कहेवाय, ४ तेवीज रीतें तिर्यंचानुपूर्वीपण जाणवी. ५ जेना उदयथी पृथिवी, जल, अग्नि, पवन, वनस्पति, मां जीव उत्पन्न थाय ते एकेंद्रिय जाति. ६ जेना उदयथी जीवने बे इंद्रिय प्राप्त थाय ते दींद्रियजाति, ७ तेवीज रीतें त्रींद्रियजाति, ८ तेमज चतुरिंद्रिय जाति.

१३ प्रथम संहनन वर्जिने बाकीनां पांच संहनन, रुषभनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलिका सेवार्त्त छे, तेनुं स्वरूप कहियें छियें. रुषभपरिवेष्टनपट्टः नाराचउभयतोमर्कटबंधः" जेमां बंने पासें बे हाडोने मर्कट बंधथी बांधीने पट्टनी आकृति समान हाडनी पट्टी उपर विंटेलि होय ते रुषभनाराच संहनन छे; तथा जेमां वज्ररुषभहीन, बंने पासें मर्कटबंध होय, ते नाराच संहनन छे, तथा जेमां एक पासें मर्कटबंध, अने बीजे पासें, खीलीथी वींधेलुं हाड होय, ते अर्धनाराच संहनन छे, तथा जेमां रुषभनाराच, बंनेथी वर्जित, मात्र कीलिकाथी वींधेलां बंने हाड, एवो जे हाडनो संचय, ते कीलिका संहनन छे, तथा जेमां बंने हाडकां स्पर्शमात्र लक्षणयुक्तछे, अने चंपी मुठी करावबाथी जेमां आर्त्ति (पीडा) थाय, ते सेवार्त्त संहनन छे.

२८ आद्य संस्थान वर्जिने, बाकीनां पांच संस्थाननुं स्वरूप कहियें छियें. १ न्यग्रोधपरिमंडल, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ हुंडक. तेमां १ न्यग्रोधवत् अर्थात् वडवृक्षनी जेम परिमंडल, ते न्यग्रोध परिमंडल, जेम वडनुं झाड उपरना भागमां संपूर्ण अवयववालुं होयछे, अने नीचेना भागमां तेवुं होतुं नथी, तेम जेनो नाभिनी उपरनो विस्तार संपूर्ण लक्षणवालो, अने नीचेनो तेवा लक्षणसंयुक्त नहि ते न्यग्रोध परिमंडल संस्थान. तथा २ सादि, आ संस्थानमां नाभिनी नीचेना शरीरनो भाग सुंदराकार लक्षणो संयुक्त, परंतु नाभिनी उपरनो भाग विसंवादी, ते सादिसंस्थान,

तथा ३ हाथ, पग, मस्तक, ग्रीवा यथोक्त लक्षणादियुक्त अने बाकीनो शरीरनो कोठो अर्थात् उदरादि मध्यभाग लक्षणादि रहित, ते वामन संस्थान, तथा ४ उदरादि लक्षणसंयुक्त, अने हाथ पगादि लक्षणो रहित ते कुब्ज संस्थान, तथा ५ जेमां शरीरनुं एकपण अवयव सुंदर न होय ते हुंड संस्थान, जाणवां.

२२ जेना उदयथी वर्णादि चारे अप्रशस्त होय, तेनुं स्वरूप कहियें छियें. जेनुं दर्शन अतिबीभत्स छे, एवा कृष्णादि वर्णवाला प्राणियो थाय छे, ते अप्रशस्त वर्णनाम, ते वर्ण पांचप्रकारना छे, तेणें करी जे जीव युक्त होय, ते अप्रशस्तवर्ण नाम, तथा जेना उदयथी मुएला तेमज सडेला उंदरादिनी दुर्गंध जेवी गंध जे प्राणियोना शरीरमां होय ते अप्रशस्त गंध नाम; तथा जेना उदयथी प्राणियोना शरीरमां रसनेंद्रियने दुःखदायी स्वभाववाला एलीआ जेवा कडवा तिखाआदि असार रस होय, ते अप्रशस्तरसनाम; तथा जेना उदयथी स्पर्शेंद्रियने उपतापना हेतुरूप एवा कर्कशादि स्पर्शविशेष जीवोना देहमां होय ते अप्रशस्त स्पर्शनाम. जाणवा.

२३ जेना उदयथी पोतानाज शरीरना अवयवोथी प्रतिजिह्वा, (पडजीभी) गलवुं, मेदवृद्धि थवी, अतिलांबा थवुं, चोर दांतादि शरीरमां वधवाथी शरीरने पीडा आपे, ते उपघातनाम; तथा २४ जेना उदयथी जीवोनी खर तथा उंटना जेवी चाल थाय, ते कुविहायोगति; तथा २५ जेना उदयथी पृथिवीआदि एकेंद्रियमां जीव उत्पन्न थाय ते स्थावरनाम; तथा २६ जेना उदयथी लोकव्यापि सूक्ष्म, पृथिवी कायादिमां जीव उत्पन्न थाय, ते सूक्ष्मनाम; तथा २७ जेना उदयथी आहारप्रमुख पूर्वोक्त पर्याप्ति पुरी न थाय, ते अपर्याप्तनाम; तथा २८ जेना उदयथी अनंतजीवोनुं साधारण एक शरीर होय, ते साधारणनाम; तथा २९ जेना उदयथी जिह्वादि अवयवो शरीरमां अस्थिर होय, ते अस्थिरनाम; तथा ३० जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अवयवो अशुभ होय, ते अशुभनाम, तेनुं कारण ए छे के, कोइनो हाथ लागी जाय तो ते रोष करतो नथी, परंतु पग लागवाथी क्रोध करे छे, ३१ जेना उदयथी जीवने जे जे देखे, तेने ते जीव अनिष्ट लागे, उद्वेगकारी लागे ते असुभगनाम, ३२ जेना उदयथी जीवनो स्वर कठोर, अप्रिय, घोघरा जेवो लागे, ते दुःस्व-

र नाम, ३३ जेना उदयथी जीव सप्रमाण, युक्तियुक्त बोले तोपण तेनुं कहेवुं कोइ न माने, ते अनादेयनाम, ३४ जेना उदयथी जीव, ज्ञान, विज्ञान, विनय, दानादिगुणयुक्त छे, तोपण जगत्‌मां तेनी यशःकीर्त्तिने वदले निंदा प्रमुख थाय ते अयशःकीर्त्ति नाम. एरीते जाणवी.

जेना उदयथी जातिप्रमुखथी विकल, जीव थाय छे, ते नीचगोत्र.जेउ चांमाल ढेढ जंगी वाघरी प्रमुख जातिमां जन्मेछे ते नीचगोत्रवाला कहेवायछे "कुलं गूयते संशव्यतेऽनेन हीनोयमजातिरित्यादिशब्दैरिति गोत्रं कुलं नीचमिति विशेषणाऽन्यथानुपपत्त्या नीचैर्गोत्रमित्यर्थः"

प्रश्नः– नीचगोत्रना उदय, नीचकुलमां जन्मवुं, जीवोनी साथे खानपान न करवां, तेउनी छूत मानवी, अने निंदा जुगुप्सा करवी; पूर्वोक्त तमे जे मानोछो तथा करोछो, ते तमारी मोटी अज्ञानता छे, कारण के मनुष्यत्वधर्ममां सहु सरखां छे, हाथपगादि अवयवो पण सरखां छे, तो हवे एकने उंच मानवो, अने वीजाने नीच मानवो, आ मान्यता ब्राह्मण तथा जैनिउए जारतवर्षमां वहुकालथी वहुज जूदी करी राखी छे, ए मान्यतामां मुक्तिनुं शुं अंग छे ? वली जुउ जरतखंडवासी जैन, हिंदुउ शिवाय सर्व अन्यदेशोना वसनाराउ, कोइनेपण उंच नीच गणता नथी, सर्व एकसाथे खानपानकरवामां बुरुं मानता नथी, तेथी तमारी मान्यता, मूढता अर्थात् अंधपरंपरावाली छे, वास्तवमां कोइ उंच नीच नथी.

उत्तरः–आ तमारुं कथन, अमारो हेतु नहि समजवाथी वे समजवालुं छे. अमारो अजिप्राय एवो छे के आ जगत्‌मां जे कांइ थाय छे ते निमित्तविना थतुं नथी. जुउ. आ जे जिल्ल, कोली, वाघरी, घोरी, जंगी, ढेढ, चंडाल, कसाइप्रमुख असज्य जातिना लोक गाममां, गामवहार, के जंगलोमां रहेछे, तेउ अनेक प्रकारनां हिंसायुक्त अनाचरणीय कामो निरंतर करे छे, तेउ अतिदुर्गंधि शरीरवाला, अतिवीजत्स वचन वोलनारां, तेमज महाबुरां कर्मनुं चिंतवन करनारां, तथा अतिकनिष्ट आहार करनारां, हमेशां प्रवर्ते छे, पूर्वोक्त सर्व तेउने नीच गणवानां निमित्त छे, हवे ते निमित्तोने जो तमे मानता न हो, तो तमे आत्मस्वरूप नहि समजवाथी नास्तिक छो, अने ते नास्तिक विचारवालाउनुं खंडन तो अमे पूर्वे लखी आव्या छियें. जो कहो के ते निमित्तोने अमे मानि-

येठियें, तो तो तेठनां एवी असत्यजाति तथा कुलमां उत्पन्न थवानां कारणो पण मानवां जोइयें. जे कर्मना उदयथी एवा कुल, जातिमां तेठ उत्पन्न थाय ठे, ते कर्मनुं नामज नीच गोत्र कर्म ठे; आ नीचगोत्रना प्रजावथी बीजापण बहुपाप प्रकृतिठनो उदय थाय ठे, जेथी तेठ क्लेशादि दुःखो अत्यंत पामे ठे, बुद्धिहीनता, क्रोधयुक्त स्वजाव, निर्दयता, कुत्सित आहार, पशुठनी जेम जंगलवास, धर्मकर्मथी पराङ्मुख, सत्संगरहित, गम्यागम्यविवेकरहित, जक्ष्याजक्ष्य, पेयापेयविचारशून्य, आ सर्वनुं मुख्य कारण नीचगोत्र ठे. जेम धनवान् तेमज निर्धन अनेक बावतोमां एकसरखां थतां नथी, तेम नीचगोत्रवालां उंचगोत्रवालां साथे समान थइ शकतां नथी.

जो एम कहो के विलायतमां सर्व एकसरखां ठे, तो ते वातमां अमे आश्चर्य मानता नथी, कारण के ज्यां सर्व जीवोना, गोत्रकर्मनो एकसरखो बंध होय, त्यां सर्व एकसरखा थइ शके ठे, अने मान्यता पण सर्वेनी एकसरखी थाय ठे, परंतु ज्यां उंचनीचपणानी मान्यता, पूर्वोक्त कारणसर थाय ठे, त्यां उंचनीच गोत्रनो व्यवहारपण अवश्य थाय ठे. परंतु असत्य, हीन जातिठने जे बुरी (जुंमी) माने ठे, तेठने अमे बुद्धिमान् कहेता नथी, कारण के अमारो एवो निश्चय ठे के बुराइ तो खोटां कर्म करवाथी थाय ठे. जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य थइ बुरां काम, जेवां के जीवहिंसा, असत्यता, चोरी, परस्त्रीगमन, परनिंदा, विश्वासघात, कृतघ्नता, मांसजक्षण, मदिरापान, जुगार प्रमुख करशे, तेठने अवश्य अमे बुरां मानशुं, अने नीचजातिवालां हशे; ठतांपि जो तेठ सुकर्म जेवां के, दया, सत्य, चोरीनो त्याग, परस्त्रीत्याग इत्यादि करशे तो तेठने अमे उत्तम मानीशुं. हवे विचारो के अमारी समज बुरी केवीरीते होइ शके ठे? वली नीचगोत्रवालां साथे जे खानपाननो व्यवहार राखता नथी, तेनुं कारण तो कुलरुढि ठे, अने तेठनी जे निंदा करे ठे तेठ तो महाअज्ञानी ठे, कारण के अमारो सिद्धांत एवो ठे के निंदा कोइनी पण करवी न जोइये, वली तेठनी जे बूत माने ठे. तेपण कुलाचार ठे, वली एक एवुं पण कारण ठे के, जो के मनुष्यत्व धर्मथी सर्व सरखां ठे, तोपण जेम माता, बहेन, दीकरी, जार्या, सर्वे स्त्रीत्व स्वरूपें समान ठे, तोपण

तेउंमां गम्य अगम्यनो विचार छे, तेवीजरीतें उंचनीचपणाना विज्ञागनो विचार छे. आ व्यवहार ब्राह्मण तथा जैनियोये चलाव्यो नथी, परंतु ते जीवोना जलां, बुरां कर्मोना उदयथी चालेलो छे. आ प्रमाणे परस्पर जातियोमां खान पान नहिं करवानो व्यवहार मिसर देशमां पण हतो, तेथी सिद्ध थाय छे के उंच नीच गोत्रना प्रजावथीज उंच नीच जाति, कुल थाय छे.

तथा आयुकर्मनी नरक आयुनी प्रकृति पापमां गणायछे. नरकशब्दनी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे. "नरान् प्रकृष्टपापफलजोगाय गुरुपापकारिणः प्राणिनोनरानित्युपलक्षणत्वात् कायंति शब्दयंतीति नरकास्तेष्वायुस्तद्भवप्रायोग्यसकलकर्मप्रकृतिविपाकानुजवकारणं प्राणधारणं यत्तन्नरकायुष्कं तद्विपाकवेद्यकर्मप्रकृतिरपि नरकायुष्कमिति ॥"

तथा वेदनीकर्मनी अशाता वेदनी पापप्रकृतिमां गणायछे. अशाता नाम दुःखनुं छे, जेना उदयथी जीव दुःख जोगवे छे ते अशातावेदनी छे. आ प्रमाणे.

ज्ञानावरण पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरण नव, मोहनी छवीश, नामकर्मनी चोत्रीश, नीच गोत्र एक, नरकायु एक, अशातावेदनी एक, सर्व मली व्याशीजेदें पापफल जोगववामां आवेछे. इति.

हवे आश्रवतत्त्वनुं स्वरूप लखियें छियें. "आश्रवन्ति, आगछन्ति कर्माणि जीवेषु येन सआश्रवः" जेनाथी जीवोने कर्मनी प्राप्ति थाय ते आश्रव १ असत् देव, २ असत् गुरु, ३ असत् धर्म, तेउंविषे सत् देव, सत् गुरु अने सत् धर्म एवी जे रुचि ते मिथ्यात्व, तथा हिंसादिथी न निवर्त्तवुं, ते अविरति, तथा मद्यप्रमुख ते प्रमाद, तथा क्रोधादि ते कषाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग, आ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, पांचे पुनर्बंधक जीवना ज्ञानावरणीय आदि कर्मना बंधना हेतु छे, तेउंने जैनमतमां आश्रव कहेछे. ते मिथ्यात्वादि शुजाशुज कर्मबंधना हेतु होवाथी तेज आश्रव छे. आ तात्पर्य छे.

प्रश्नः–प्रथम, बंधोनो अजाव छतां, आश्रवनी उत्पत्ति केम होय? जो कहो के आश्रवथी पहेलां बंध छे, तो तो ते बंध पण आश्रवहेतु

विना थइ शकतो नथी. कारण के जे जेनो हेतु ठे, ते तेनो अन्नाव ठतां थइ शकतो नथी, जो होय तो, अतिप्रसंग दूषण आवशे.

उत्तरः-आ कहेवुं असत् ठे, कारणके आश्रवने पूर्वबंधनी अपेक्षाए कार्यपणुं ठे, अने उत्तरबंध अपेक्षाए कारणपणुं ठे, तेवीजरीतें बंधने पण पूर्वउत्तर आश्रवनी अपेक्षाए कार्यत्व, कारणत्व जाणवुं, बीजांकुरनी जेम. बंध, आश्रव बंनेने परस्पर कार्यकारणन्नावनो संबंध ठे; तेथी अहींयां इतरेतर दूषण नथी. प्रवाह अपेक्षाए बंने अनादि ठे.

आश्रव पुण्यपापनो बंधहेतु होवाथी बे प्रकारें ठे. आ बंने प्रकारना मिथ्यात्वादि उत्तर न्नेदोना उत्कर्ष, अपकर्ष अर्थात् अधिक, न्यूनपणाथी अनेक प्रकार ठे. आ शुन्नाशुन्न मन, वचन, कायाना व्यापार रूप आश्रवनी सिद्धि पोताना आत्मामां स्वसंवेदनादि प्रत्यक्षथी ठे, अने बीजाउमां वचन अने कायाना व्यापारनी प्रत्यक्षथी सिद्धि ठे, बाकीनाउनी तेना कार्यथी उत्पन्न थता अनुमानथी जाणवी, तेमज आप्तप्रणीत आगमथी पण जाणवी.

आश्रवना उत्तरन्नेद बेंतालिश ठे. पांच इंद्रिय. चार कषाय, पांच अव्रत, पचीशक्रिया, त्रणयोग.

जीवरूप तलावमां, कर्मरूप पाणी जेनाथी आवे, ते आश्रव. ते गरनालां प्रथम तो पांच इंद्रिय ठे. तेनुं स्वरूप कहिये ठियें १ स्पर्शियें स्वविषय स्पर्शलक्षण, जेनाथी, ते स्पर्शनेंद्रिय, २ "रस्यते आस्वाद्यते रसोऽनयेति" आस्वादिये, रस लहियें जेनाथी, ते रसना (जिव्हा) इंद्रिय, ३ सूंघीए गंध जेनाथी, ते घ्राणेंद्रिय, ४ चक्षु ते नेत्रेंद्रिय, ५ सांन्नलीये शब्द जेनाथी, ते श्रोत्रेंद्रिय. मूलन्नेदनी अपेक्षाथी आ पांच इंद्रिय, आश्रवनां पांच कारण ठे.

"क्रुध्यति कुप्यति" सचेतन, अचेतन वस्तुउ उपर जेणें करी प्राणी सनिमित्त, निर्निमित्त कोप करे ते क्रोध मोहनीयकर्म ठे, तेनो उदय ते पण क्रोध ठे. तथा मान ते मृडुतानो अन्नाव, तेना बे प्रकार ठे. प्राप्त थयेली वस्तुउवडे जे अहंकार थाय ते मद, अने अप्राप्त ठतां अहंकारी वृत्ति ते मान. ते मदना आठ प्रकार ठे. १ जातिमद, २ कुलमद, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ ज्ञानमद, ६ लान्नमद, ७ तपमद, ८ ऐश्वर्यमद,

१ पोतानी माताना पक्षनो अहंकार करे, जेम के मारी माता मोटा घरवालानी दीकरी छे, इत्यादि. एवीरीतें पोताने उंचा मानी श्लाघा करे अने वीजाउंनी ते वावतमां निंदा करे ते जातिमद. २ पोताना पिताना पक्षनुं अभिमान करे, जेमके मारा पितानुं कुल उंचुं छे, अने वीजाउंनी ते वावतमां निंदा करे, ते कुलमद. ३ पोताना वलनुं अभिमान करे, अने वीजाना वलनी निंदा करे ते वलमद. ४ पोताना रूपनुं अभिमान करे, अने वीजाना रूपनी निंदा करे ते रूपमद. ५ पोताने महाज्ञानी माने, अने वीजाने तुछमति माने ते ज्ञानमद, ६ तप करीने अभिमानथी पोताना मनमां माने के मारा समान कोइ तपस्वी नथी ते तपमद. ७ पोते पोताने मोटो नशीवदार माने, अने वीजाने हीनपुण्यवाला समजे ते लाभमद. ८ पोतानी ठकुराइनुं अभिमान करे. अने वीजाने घास फुस समान गणे ते ऐश्वर्यमद. ते प्रमाणे मानना पण समजवा. तथा "मयति गछति" जायछे जे जे विकारोथी वीजाने ठगवावास्ते जीव ते माया कहेवाय छे. तथा जेनाथी परधन प्राप्त करवामां जीवने गृद्धिपणुं होय, ते लोभ कहेवाय छे ते चारे कषाय कहेवाय छे.

हवे पांच अव्रतनुं स्वरूप कहिये छियें. पांच इंद्रिय, त्रण वल, मनवल, वचन वल, कायवल, तथा श्वासोछ्वास अने आयु, आ दश प्राण छे. ते दश प्राणना योगथी जीवने पण प्राण कहिये. ते प्राणोनो जे वध अर्थात् नाश ते प्रथम प्राणवध याने जीवहिंसा जाणवी. २ मृषावाद अर्थात् जुठुं वोलवुं. ३ अदत्तादान अर्थात् वीजानी वस्तु चोरी लेवी. ४ मैथुन (अब्रह्मसेवन) स्त्री पुरुषनुं जोडुं ते मिथुन, ते वंनेना मेलापथी जे कर्म थाय ते मैथुन. ५ परिग्रह सर्व वाजुएथी ग्रहण याने एकत्र करीयें, चार गतिनां निवंधन कर्म जेनाथी ते परिग्रह. आ पांच अव्रतना चार चार भांगा छे तेनुं स्वरूप लखिये छियें.

प्रथम हिंसाना चार भांगानुं स्वरूप, १ द्रव्यें हिंसा, परंतु भावें नहि, २ द्रव्यें हिंसा नहि, परंतु भावें छे, ३ द्रव्यें हिंसा अने भावें पण हिंसा, ४ द्रव्यें हिंसा नहि, अने भावें पण नहि. प्रथमना भंगनुं स्वरूप एवुं छे के साधुने समाचारी, प्रतिलेखना करतां, मार्गमां विहार करतां, नदी प्रमुख उतरतां, नावमांवेसी नदी ओलंगता, नदीमां साध्वी आदिने

ते पोताने घेर पाछो आवेथी तेने आपवानी बुद्धिपूर्वक लइ, पोताना घरमां राखेछे, आ दृष्टांतमां बीजानुं द्रव्य, तेनी रजा शिवाय, तेना कवजामांथी लइ लेवाथी द्रव्यें चोरी थायछे, परंतु बदध्यानतनो अभाव होवाथी भावेंचोरी थती नथी तेवीरीतें बीजी बाबतमां पण समजवुं.

बीजाभंगमां कोइ पुरुष चोरी तो करतो नथी, परंतु चोरी करवाना अध्यवसाय तेना मनमां थया करेछे, ते द्रव्यथी चोरी नहि, परंतु भावें चोरी छे. वली वीतराग सर्वज्ञ परमात्मानी आज्ञाना भंग करनाराउने पण भावचोर कहेलाछे. त्रीजा भंगमां, कोइ पुरुष चोरी करेछे, तेमज तेनो अध्यवसाय पण चोरी करवानो छे ते द्रव्यें तथा भावें चोरी छे. चोथो भंग पूर्ववत् शून्य छे.

हवे मैथुनना चारभंग कहियें छियें. जे साधु जलमां डुबती साध्वीने देखीने, तेने काढवाने वास्ते पकडे, तेमज कोइ गृहस्थ उंचेथी पडीजती कोइ स्त्रीने तेना रक्षणार्थे पकडे, तेमज कोइगांडी थइ गयेली नुकशान करती स्त्रीने पकडे, तेवा प्रसंगोमां पकडवुं ते द्रव्यें मैथुन छे. परंतु भावें नथी. बीजा भंगमां–कोइ पुरुष, स्त्रीने भोगवतो नथी, परंतु तेना मनमां स्त्रीसेवन करवानी अभिलाषा बहुज रह्या करेछे, ते द्रव्यें मैथुन नहि, परंतु भावें मैथुन छे. त्रीजा भंगमां–स्त्रीसाथे मैथुन अभिलाषापूर्वक करवुं ते द्रव्यें तथा भावें मैथुन छे. चोथो भंग पूर्ववत् शून्य छे.

हवे परिग्रहना चार भंग कहियें छियें. कायोत्सर्गमां स्थित रहेला कोइ मुनिना गलामां कोइ सख्स हारादि आभूषण पहेरावी दे, ते जोइने बीजा अजाण्या पुरुषो, मुनिने परिग्रहवाला धारे, परंतु मुनिने ते पदार्थपरपरिग्रहबुद्धि नथी तेवा प्रसंगमां द्रव्यें परिग्रह कहेवाय, परंतु मुनि भावें परिग्रही नथी. बीजा भंगमां–कोइपुरुष पासे एक कोडी पण नथी परंतु धन मेलववानी बहुज अभिलाषा रह्या करे, ते भावें परिग्रही छे. द्रव्यें नहि. त्रीजा भंगमां–धनपण पासे होय, अने धन मेलववानी अभिलाषा पण रह्या करे, ते द्रव्यें तथा भावें परिग्रही छे. चोथो भंग पूर्ववत् शून्य छे. सर्वभंगमां बीजो तथा त्रीजो भंग निश्चयथी अविरतिरूप छे.

हवे पचीश क्रियानुं स्वरूप लखियें छियें १ शरीरथी जे क्रिया थया

करे, ते कायिकी क्रिया. २ कसाइ प्रमुख शस्त्रथी परजीवोने उपघात करी पोताना आत्माने नरकगतिमां जवाना अधिकारी करे ते अधिकरण क्रिया. ३ जीव तथा अजीव उपर द्वेषनी चिंतवना करवी ते प्राद्वेषिकी क्रिया. ४ पोताने तथा परने जे परिताप उपजाववो ते पारितापनिकी क्रिया. ५ एकेंद्रिय प्रमुख जीवोने हणवा तथा हणाववानी जे क्रिया ते प्राणातिपातिकी क्रिया. ६ पृथ्वीकायादि जीवना उपघात कराववा तथा करषा सारू कर्षण प्रमुख करवुं, कराववुं ते आरंभिकी क्रिया. ७ धनधान्यादि नवविध परिग्रह मेलवतां, तथा तेना रक्षणसारू मूर्छाना परिणाम बनेला राखवा सारू जे क्रिया करवी पडे ते पारिग्रहिकी क्रिया. ८ बीजाने ठगवा सारू कपट युक्त जे क्रिया करवी पडे ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ए जिनवचन असद्दहतां विपरीत प्ररूपणा प्रमुख करवाथकी जे क्रिया लागे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० संयमने विघातकारक कषायोना उदयथी पच्चखाण कीधा विना जे सर्ववस्तुनी क्रिया लागे ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया. ११ कौतुककरी अश्वादि जोवां तेमज रागादि कलुषित चित्तथी जीव, अजीवने जोवा ते दृष्टिकी क्रिया. १२ राग, द्वेष, मोह संयुक्त चित्तथी स्त्री आदिना शरीरने स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया. १३ जीव तथा अजीवसंबंधी जे राग द्वेष थाय, जेम के बीजाने घेर हस्ती, घोडा, वस्त्र प्रमुख देखी द्वेष धरे, जे ए वस्तुउ तेनी पासे क्यांथी? एम चिंतवता कर्म बंध करे ते प्रातित्यकी क्रिया. १४ पोताना अश्वप्रमुखने जोवावास्ते आवेला स्त्री पुरूषोने प्रशंसा करता जोइने हर्ष धारण करे, तेमज स्त्री प्रमुखने जोजन करवा आवतां जे क्रिया लागे ते, अथवा दुध, दहीं, घी, तेल प्रमुखनां जाजन उघाडां रहेतां तेमां त्रस जीव आवी पडे. ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया. १५ परउपदेशित पापमां लांबा वखतसुधी प्रवर्तवुं, तथा पापना जावथी अनुमोदना करवी ते नैसृष्टिकी क्रिया, १६ कोइ पुरुष अत्यंत अजिमानथी उश्केराइने क्रोधित चित्त थयो थको, जे काम नोकरपासे कराववा जेवुं होय ते पोताना हाथथी करे ते स्वहस्तिकी क्रिया. १७ अर्हंत जगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करीने पोतानी बुद्धिथी जीवाजीवादि सूक्ष्म पदार्थोनी प्ररूपणा करवासारू जे क्रिया करे ते आज्ञापनिकी क्रिया. १८ बीजाना अछतां खोटां आचरणो

प्रगट करवां, तेमनी पूजानो नाश करवो, तेम करवाथी जे उत्पन्न थाय ते वैदारणिकी क्रिया. १९ जे उपयोगथी विपरीत ते अनाभोग, तेनाथी उपलक्षित जे क्रिया ते अनाभोगक्रिया. देख्या विना तेमज पूजन, प्रमार्जन कर्याविना भींत तेमज भूमि प्रमुखउपर शरीरादिनो निक्षेप करवो ते अनाभोगक्रिया. २० पोतानी तेमज परनी अपेक्षा तेनुं नाम अवकांक्षा छे, तेनाथी जे विपरीत ते अनवकांक्षा, तेज कारण छे जेनुं ते अनवकांक्षा प्रत्ययिकी क्रिया, तात्पर्य एमछे के, जिनोक्त कर्त्तव्य विधियोमां जे पोताने तेमज परने जे क्रिया हितकारी होय तेमां प्रमादने वश थइ जे आदर न करवो ते अनवकांक्षा प्रत्ययिकी क्रिया २१ चालवा, दोडवा प्रमुख कायाना व्यापार, तथा हिंसाकारी, कठोर जूठ बोलवाना वचनना व्यापार, अने परद्रोह, ईर्ष्या, अभिमानादि मनोव्यापार, ए त्रणेनुं जे करवुं ते प्रयोग क्रिया. २२ जेनाथी विषयग्रहण करियें ते समुदान इन्द्रिय तेनी जे क्रिया, देश तेमज सर्व उपघातरूप व्यापार ते समुदान क्रिया. कोइ एवुं मोटुं पाप करियें के जेथी आठे कर्मनुं समुदायपणे ग्रहण थाय ते समुदान क्रिया. २३ माया तेमज लोभथी जे क्रिया थाय ते प्रेम प्रत्ययिकी क्रिया. २४ क्रोध तेमज मानथी जे क्रिया थाय, ते द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया. २५ चालवाथी जे क्रिया लागे ते इर्यापथिकी क्रिया. आ क्रिया वीतरागने लागे छे तेमज अप्रमत्त मुनियोने पण लागे छे.

हवे आ पचीश क्रियानुं व्याख्यान करियें छियें. १ कायिकी क्रिया बे प्रकानी छे, एक अनुपरता कायिकी क्रिया अने बीजी अनुपयुक्त कायिकी क्रिया, तेमां अत्यंत दुष्ट एवा मिथ्यादृष्टि जीवोनो, मन वचननी अपेक्षारहित परजीवने पीडा कारक कायानो उद्यम ते प्रथम भेद तथा प्रमत्त संयतनो उपयोग विना अनेक कर्तव्य रूप कायानो व्यापार ते बीजो भेद. २ आधिकरणिकी क्रियाना बे प्रकार छे. एक संयोजना, बीजी निवर्त्तना. तेमां विष, गरल, फांसी, धनुष, यंत्र, तलवार, प्रमुख शस्त्रोने, जीवोने मारवावास्ते संयोजन अर्थात् एकत्र करवां, जेम धनुषने तीरनो मेलाप करवो इत्यादि, ते प्रथम भेद, तथा तलवार, तोमर, शक्ति, तोप, बंधुक इत्यादिने नवां सरस बनाववां, ते बीजो भेद. ३ जे निमित्तथी क्रोध उत्पन्न थाय ते निमित्त जीव तथा अजीव बे छे. तेमां जीव ते प्राणी,

अने अजीवमां खुंटो, कांटो, पथ्थर प्रमुख, तेउना उपर द्वेष करे ते प्रदोष क्रिया. ४ पोताना हाथथी, तेमज बीजाना हाथे जीवोने मार मारवो पीटवो ते परितापना, तेना बे भेद छे. पुत्रकलत्रादिना वियोगथी दुःखी थइने पोताने हाथें छाती तेमज शिर कुटवुं ते प्रथम भेद. तथा पुत्र, शिष्यादिने मार मारवो ते बीजो भेद. ५ प्राणातिपातिकी क्रिया बे प्रकारे छे. एक तो पोताने हाथे पोतानो घात करवो जेम के कुवामां पडी मरवुं, पर्वतउपरथी गरीपडवुं, अग्निमां झंपापात करवो, झेर खावुं प्रमुख स्वात्मघातिकी क्रिया ते महापापरूप क्रिया छे ते प्रथम भेद. तथा कषायने आधीन थइ बीजा जीवोनो नाश करवो ते बीजो भेद. ६ जीव अजीवनो आरंभ करवो जेथी पृथ्वी कायादि छकायना जीवोनो उपघात थाय, एवां लक्षणो जे क्रियामां होय ते आरंभिकी क्रिया. ७ जीव अजीवनो परिग्रह करवो, तेनामां अत्यंत मूर्छा राखी प्रवर्त्तवुं ते परिग्रहिकी क्रिया ८ माया (कपट) युक्तरीतें स्वार्थवृत्ति साधवी ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ९ विपरीत वस्तुनुं श्रद्धान तेज छे निमित्त जेनुं, ते मिथ्यात्वदर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० जीवने हणवाना, तेमज मद्यमांसादि पिवा खावानो जेमां त्याग नहि, एवा जे असंयति जीवनी क्रिया ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया. ११ घोडाप्रमुख जीव तथा रथप्रमुख अजीवोने जोवा वास्ते जवुं ते दृष्टिकी क्रिया. १२ जीव, अजीव, स्त्री, पुतली आदिने रागथी स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया. १३ जीवनी तेमज अजीवनी अपेक्षाथी जे कर्मबंध थाय ते प्रातीत्यकी क्रिया. १४ जीव ते पुत्र, स्त्री, भाइप्रमुख, अने अजीव ते, घर, आभूषण प्रमुख तेउने जोवासारू लोको आवे, तेउनी प्रशंसाथी ते वस्तुउनो स्वामी हर्षित थाय ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया. १५ जीव मनुष्यादि, अजीव पथ्थरादि तेउने फेंकवा ते नैस्रष्टिकी क्रिया १६ पोताना हाथथी जीव तेमज अजीवनी प्रतिमाने ताडन प्रमुख करे ते स्वहस्तिकी क्रिया. १७ जीव, अजीवनी मिथ्या प्ररूपणा करवी, तेमज जीव, अजीवने मंत्रथी बोलाववां ते आज्ञापनिकी क्रिया १८ जीव, अजीवने विदारवा, ते वैदारणिकी क्रिया. १९ उपयोग विना वस्तु लेवी, तेमज भूमि प्रमुख उपर मुकवी ते अनाभोग क्रिया. २० इह लोक विरुद्ध तेमज परलोकविरुद्ध चोरी, परस्त्रीगमनादि दुराचरण सेववां,

मनमां करवुं नहि ते अनवकांक्षा प्रत्यय क्रिया. २२ अष्टविध कर्मपरमाणुउंनुं जे ग्रहण करवुं ते समुदान क्रिया. २३ रागजनक वीणादिना शब्दादिनो जोग करवो ते प्रेमप्रत्ययिकी क्रिया. २४ पोताउपर तेमज परउपर द्वेष करवो ते द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया. २५ मात्र योगोथी जे क्रिया लागे ते केवली तेमज अप्रमत्त मुनिनी इर्यापथिकी क्रिया. आ पचीश क्रियानुं बहुज संक्षेपथी स्वरूप कहेलुं छे. विस्तारथी जाणवानी अभिलाषावालाए शब्दांजोनिधि गंधहस्तिमहाजाष्य जोवां. आ पचीश क्रियाउंमां केटलीएक जोतां एकसरखी लागे, परंतु ते एक सरखी नथी. दरेकनुं स्वरूप तदन पृथक् पृथक् छे.

हवे त्रण योगनुं स्वरूप लखियें छियें. १ मननो व्यापार ते मनोयोग. २ वचननो व्यापार ते वचनयोग. ३ कायानो व्यापार ते काययोग. एप्रमाणे सर्व मली आश्रवना बेंतालीश भेद थया. तेनाथी जीवने शुजाशुज कर्मनी आमदानी थायछे. इति.

हवे संवरतत्वनुं स्वरूप लखियें छियें. पूर्वोक्त आश्रवथी जीवने आवतां कर्मने रोकनार अर्थात् आश्रवनुं रूंधन करनार ते संवर छे. ते संवरना सत्तावन जेद छे. पांच समिति, त्रण गुप्ति, दश यतिधर्म, बार जावना, बावीश परिसह, पांच चारित्र, सर्व मली सत्तावन थया. तेमांथी पांच समिति, त्रण गुप्ति, दशविध यतिधर्म, अने बार जावनानुं स्वरूप तो गुरूतत्व वर्णनमां लखि आव्या छिये. तेथी त्यांथी जाणवुं.

हवे बावीश परीसहनुं स्वरूप लखियें छियें १ क्षुधा परिसह. क्षुधा एटले जूख. जूखनी वेदना सर्ववेदनाथी अधिक छे. ज्यारे जूख लागे, त्यारे पोतानी प्रतिज्ञाथी जंग थाय नहि. तेमज आर्त्तध्यान पण करे नहि. सम्यक् परिणामें क्षुधा सहन करे, २ तेमज पिपासा जे तृषा तेपण सम्यक् परिणामें सहन करे. ३ शीतपरीसह. ज्यारे अत्यंत शीत पडे, त्यारे पण अकल्पनिक वस्त्रोनी वांछा न करे. जेवां जीर्णप्राय वस्त्र होय तेनाथी टाढ सहन करे, अग्नि तापे नहीं, सम्यक् प्रकारें शीतसहन करे, ४ उष्णपरीसह—सूर्यना सख्त तडकामां पण चालतां थकां उपानह प्रमुखनी वांछा करे नहि, तेमज सख्त गरमी, उकलाट छतां पवनपंखानी इछा करे नहीं, परंतु सम्यक् प्रकारें आताप सहन करे. ५ दंश मशकपरीसह. जांस तथा

मछर अने मांकड प्रमुख करडे त्यारे धूंमाडो करी, तथा उष्णजल प्रमुख रेडी तेउनुं निवारण न करे परंतु सम्यक् परिणामें तेउंए करेली वेदना सहन करे. ५ अचेल परीसह–सर्वथा वस्त्रनो अभाव, ते अचेल परीसह नहि; वस्त्रादि पण आगममां जे प्रमाणे राखवाने कह्यां छे तेप्रमाणे राखे तो ते परिग्रह नहि. वस्त्रादि उपर मूर्छा रह्या करे तो ते परिग्रह छे. उक्तं च ॥ जंपि वछंच पायं च, कंवलं पायपुछणं ॥ सोपि संजम लज्जाठा, धारिंति परि हरंति य ॥ १ ॥ नसो परिग्गहो वुत्तो, नाइ पुत्तेण ताइणा ॥ मुछा परिग्गहो वुत्तो, इश्वुत्तं महेसणत्ति ॥ २ ॥ चेलनाम वस्त्रनुं छे, ते शीर्ण अर्थात् फाटेलां तेमज जीर्ण होय, तोपण अकल्पनिक वस्त्र न लहे, ते अचेल परिसह. ७ अरतिपरीसह. संयम पालतां अरति जे उत्पन्न थाय ते सम्यक् प्रकारे सहन करे, ते सहन करवानो उपाय श्रीदशवैकालिकनीप्रथम चूलामां अढार वस्तुनुं स्वरूप चिंतवन करवुं, ते छे, तेथी अरति दूर थाय छे. ८ स्त्रीपरीसह. स्त्रियोनां अंगोपांग, संस्थान, मुखाकृति, हास्य, विनोद, सौंदर्यता प्रमुखनुं मनमां चिंतवन न करे, स्त्रियोने मोक्ष मार्गमां अर्गला समान जाणी तेउना तरफ विकार बुद्धिथी नेत्र फेरवे नहि. ए चर्यापरीसह. चर्या एटले चालवुं, घररहित, ग्राम नगरादिमां अनियतवास, ममत्वरहित मासकल्पादि करवा ते. १० निषद्यापरीसह. निषद्या एटले रहेवानुं स्थान, जे स्थान स्त्री, पंडग रहित होय ते स्थानमां रहेतां थकां इष्ट अनिष्ट उपसर्ग थाय तोपण पोताना मनमां चारित्रथी चलायमान न थाय ते. ११ शय्यापरीसह. जेने विषे शयन करीए ते शय्या, संस्तारक, वसति; संस्तारक एटले सुवानुं आसन, ते शय्या तथा आसन, कोमल, कठिन, उंचुं, नीचुं, धूल, कांकरावालुं अथवा कुडी जगामां होय, तेमज वसति एटले स्थान, शीत अथवा गरमीवालुं होय तो पण मनमां उद्वेग न करे अने दुःख सम्यक् प्रकारें सहन करे ते. १२ आक्रोश परीसह. कोइ अनिष्ट वचन कहे त्यारे विचारे के, ते पुरुष साची वातने वास्ते मने अनिष्ट कहेछे, तेथी तेना उपर मारे कोप करवो ते वास्तविक नथी. कारण के ते सख्स मारो हितचिंतक होवाथी मने शिखामण आपेछे. तेथी हवेथी मारे तेवी भूल करवी नहि. जो ते सख्स जुठी वात जाणी मने अनिष्ट कहेछे, तो पण

ते वात जूठी होवाथी मारे तेना उपर कोप करवो वास्तविक नथी एम विचारी सम्यक् प्रकारे सहन करे. १३ वधपरीसह. हस्तादिथी कोइ मार मारे तो सम्यक् परीणामे सहन करे, जेम के आ मारूं शरीर अवश्य एकवखत नाश पामवानुं छे.

तेथी जे सख्स मने ताडन करेछे, तेथी जे दुःख मने थाय छे, ते मारा करेलां कर्मनुं फल छे, ते तो फक्त निमित्तमात्र छे, एम विचारी वध थतां सुधी सहन करे ते. १४ याचनापरीसह. याचना एटले मागवुं. साधुने, अन्न, वस्त्रादि सर्व वस्तुओ मागवाथीज मलेछे, तेथी तेवी बुद्धिथी सम्यक् प्रकारें परीसह सहन करे १५ अलाभपरीसह. साधुने कोइवस्तुनी इछा थइ छे, ते वस्तु गृहस्थना घरमां बहु छे, साधु मागवा गया, परंतु गृहस्थें आपी नहि, साधु मनमां खेद धरे नहि, तेमज नहि आपनारनुं बुरूं पण चिंतवे नहि, तेमज कठोरवचनपण तेने कहे नहि, समता धारण करे, मनमां विचारे के आजे न मली तो आवती काले मली जशे इत्यादि १५ रोग परीसह. ज्वर अतिसारादि रोग ज्यारे थाय, त्यारे जे साधु गछ बहार होय, ते तो औषध पण न खाय, अने जे साधु गछवासी होय ते गुरु लाघवता विचारीने शास्त्रमां कहेली रीतमुजब औषधोपचार करे, अने रोग सम्यक् विचारणाथी सहन करे. १७ तृणस्पर्शपरीसह. दर्भादि कठोर तृणनो स्पर्श सम्यक् प्रकारें सह. १८ मलपरीसह. साधुना शरीरमां परसेवो थवाथी रजप्रमुख शरीरे लागी कठिन मेल चोटी जाय छे, तेवामां उनालाना तापथी ते मेल पललतां दुर्गंध उत्पन्न थवाथी उद्वेग थाय, तोपण स्नानादिथी शरीरनी विभूषा साधु न करे ते. १९ सत्कारपरीसह. सेवक जनोए वस्त्र, अन्न, पानादिथी साधुने बहुज सत्कार कर्यो होय, तोपण मनमां अभिमान न करे, तेमज बीजा मतना साधुओनी तेमना भक्तलोक पूजा भक्ति करे छे, अने जैनमतना साधुनी कोइ दरकार पण करतुं नथी एम जाणे तोपण मनमां विषाद न करे ते. २० प्रज्ञापरीसह. अत्यंत बुद्धिशाली थया छतां मनमां अभिमान न करे, तेमज अल्पबुद्धिवंत छतां "हुं महामूर्ख छुं, सर्वने पराभवनुं स्थान छुं" एवी दीनता तेमज शोक मनमां लावे नहि. २१ अज्ञानपरीसह. में चौद पूर्वनुं अथवा तो अगीयार अंगनुं अध्ययन कर्युं छे,

तेमज उपांग, छेद, प्रकरण प्रमुख अनेकग्रंथो मने कंठस्थ छे, तथा हुं ज्ञाननो समुद्र छुं एम साधु अभिमान न करे, अथवा हुं आगम ज्ञानरहित छुं धिक्कार छे निरक्षर कुकिंजर एवा मने एवी दीनता पण न करे; परंतु विचार करे के निःकेवल ज्ञानावरण कर्मना क्षयोपशमथी मारूं आ स्वरूप छे, स्वकृतकर्मनुं फल छे, कां तो जोगवतां दूर थशे, अथवा तो तप अनुष्ठानथी दूर थशे? एम विचारपूर्वक परीसह सहे. २२ दर्शनपरीसह, शास्त्रमां देवता तथा तेमना इंद्र सांजलवामां आवे छे, परंतु प्रसंगे सहाय कोइ करतुं नथी, तेथी शुं खबर पडे के देवता के इंद्र छे? के नहि? तेमज अन्यमतवालाउंनी ऋद्धि, वृद्धि देखीने जिनोक्त तत्वमां संदेह न करे, तेमज मनमां विकलता न पामे ते. आ बावीश परीसह सहन करतां साधु संवरजावी कहेवाय छे. तेनुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होय तो श्रीशांतिसूरिकृत उत्तराध्ययन सूत्रनी बृहद्वृत्ति, तथा तत्त्वार्थसूत्रनी वृत्ति अवलोकन करवी.

हवे पांच प्रकारना चारित्र लखियें छियें. १ सामायक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहार विशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र, ५ यथाख्यात चारित्र. आ पांच चारित्रना धारण करनारा साधु पण पांच प्रकारना छे. आ कालमां प्रथमना बे प्रकारना चारित्रने धारण करनार साधु छे. त्रण प्रकारना पाछलनां चारित्र विछेद गयां छे. आ पांचे चारित्रनुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होयतो देवाचार्यकृत नवतत्त्वप्रकरणनी टीका, तथा श्रीजगवती, अने पन्नवणा सूत्रनी वृत्ति जोवी. संवरना एप्रमाणे आश्रवने रोकनार सत्तावन जेद थया.

हवे निर्जरातत्त्वनुं स्वरूप लखियें छियें. जेनाथी जीवनी साथे बंधायेला कर्म देशथी तेमज सर्वथी क्षय थाय, ते निर्जरा. ते निर्जरा जेनाथी अर्थात् जे साधनथी थाय तेनुं नाम तप छे. ते तपना बार प्रकार छे. तेनुं संक्षेपथी स्वरूप गुरुतत्त्व निर्णयमां कथन करेलुं छे, विस्तारथी जोवानी इछावालाए, नवतत्त्व प्रकरण वृत्ति, श्रीवर्द्धमानसूरिकृत आचारदिनकर शास्त्र, श्रीरत्नशेखरसूरिकृत आचारप्रदीप, श्रीजगवती सूत्र तथा श्रीउववाइ सूत्र जोवां. इति निर्जरातत्त्व.

हवे बंधतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें. बंधना चार प्रकार छे, १ प्रकृति-

बंध, २ स्थितिबंध, ३ अनुभाग (रस) बंध, ४ प्रदेशबंध, जीव प्रदेश अने कर्म पुद्गलोनुं परस्पर दुध अने पाणी जेम एकत्र मली जवुं ते बंध कहेवाय छे. बंध शब्द बंदीवान वाचक छे. जेम बंधवो केदमां स्वतंत्र रही शकतो नथी, तेम आत्मा ज्ञानावरणीयादि कर्म जंजीरथी स्वतंत्र रही शकतो नथी. आ कर्मबंधमां छ विकल्पो छे, ते कहिये छियें.

१ कोइ वादी कहेछे के, जीव निर्मल, पुण्यपापना बंधरहित हतो, पछी पुण्यपापनो तेने बंध थयो छे. आ प्रथम विकल्प छे. आ विकल्प मिथ्या छे, कारण के निर्मलजीव कर्मनो बंध करी शकतो नथी. वली कर्म विना संसारमां उत्पन्न पण थइ शकतो नथी. जो निर्मल जीव कर्मनो बंध करे, तो तो मोक्षस्थ जीवपण कर्मनो बंध करी ले. जो मोक्षस्थ जीवने कर्म बंध थयो, तो मोक्षनो अभाव थयो. जो मोक्ष नहि, तो मोक्षना उपाय जे शास्त्र तेमज शास्त्रना बनावनारा सर्व मिथ्यावादी थशे. तेमज तेउ नास्तिकमति बनी जशे. वली एम पण छे के निर्मल आत्मा संसारमां शरीरना अभावथी कर्मबंध केवीरीतें करी शकशे?

२ बीजो विकल्प कर्म पहेलां हतां, अने जीव पछीथी बन्योछे, आ विकल्प पण मिथ्या छे, कारण के जीव विना कर्म कोणें कर्यां हतां; केमके कर्त्ता विना कर्म थइशकतां नथी. वली प्रथमना कर्मोनुं फल पण आ जीवने मली शके नहि, कारण के ते कर्म तेनां करेलां नथी. जों कर्म कर्या विना कर्मनुं फल मले तो अतिप्रसंग दूषण आवे; तेमज कर्म कर्या विना ईश्वरपण कर्म फल भोगववावास्ते नरककुंभमां जइ पडशे. वली जीव पाछलथी बन्योकेवीरीतें? जीवनुं उपादान कारण तो कोइ नथी. जो कहो के ईश्वर जीवनुं उपादान कारण छे, तो कारण समान कार्य पण थवुं जोइयें. जेम ईश्वर निर्मल, निष्पाप, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी छे, तेम जीव होवो जोइये परंतु जीव तेवो नथी. वली जो ईश्वर जीवोनुं उपादान कारण होय, तो तो ईश्वरज जीवो बनीने अनेक प्रकारना क्लेश तथा जन्ममरण, गर्भावासादि दुःखोने भोगवनार थया. हवे जुउ. ईश्वरें पोतेज पोताना पगमां आ कुहाडो शावास्ते मार्यो? पूर्णानंद पद छोडीने संसारनी विडंबनामां केम फसाया? वली पोते पोताने निष्पाप करवा वास्ते वेदादिशास्त्रद्वारा अनेक तरेहथी तपजपादि क्लेश करवा,

शावास्ते बताव्या? ते कारणथी सिद्ध थायछे के पूर्वोक्त सर्वकथन अज्ञानतासूचक छे.

३ त्रीजो विकल्प. जीव अने कर्म बंने एकसाथे उत्पन्न थयां. आ विकल्पपण मिथ्या छे. कारण के जे वस्तुओ समकाले उत्पन्न थायछे, ते परस्पर कार्यकारणरूप थइ शकती नथी. जो कर्म जीवनां करेलां सिद्ध न थयां तो कर्मफलपण जीव भोगवशे नहि. आ प्रत्यक्षविरोध छे; कारण के जीव तो कर्म भोगवता देखिये छियें. वली आ पक्षमां जीव तथा कर्मनुं कोइ उपादान कारण नथी. तेथी आ विकल्पपण असत्य छे.

४ चोथो विकल्प. जीव तो छे, परंतु जीवने कर्म नथी आपण मिथ्या छे. कारण के जो जीवने कर्म नथी तो जीव सुखदुःख केवीरीतें भोगवी शके? कर्म विना संसारनी विचित्रता कदापि थइ शकशे नहि, ते कारणथी आ विकल्पपण मिथ्या छे.

५ पांचमो विकल्प जीव तेमज कर्म, बंने नथी. आ विकल्प तदन असत्य छे. ज्यारे जीवज नथी, त्यारे जीव अने कर्म नथी एम कहेनार कोण छे? एम कहेनार जीव छे? के कोइ बीजो छे? सबब आ स्ववचन विरोध छे तेथी आ पक्षपण मिथ्या छे.

६ छठो विकल्प, जीव अने कर्म, आ बंने अनादि, अपश्चानुपूर्वी छे.

प्रश्नः— जो जीव अने कर्म बंने अनादि छे, तो जीवनी जेम कर्मनो पण कदापि नाश न थवो जोइयें?

उत्तरः— कर्म जे अनादि छे ते प्रवाह अनादि छे, ते कारणथी तेनो क्षय थइ जाय छे.

प्रश्नः— तमे जे बंध कहोछो ते निर्हेतुक छे? के सहेतुक छे? जो कहो के निर्हेतुक छे, तो तो "नित्यसत्वं" अथवा "नित्य असत्वं" थइ जशे, कारण के जे वस्तुनो हेतु नथी ते आकाशवत् नित्य सत् होय छे, अथवा खरशृंगवत् नित्य असत् होय छे. तेमज निर्हेतुक होवाथी मोक्षनो अभाव थइजशे. जो कहो के सहेतुक छे, तो कहो के ते बंधनो शुं हेतु छे?

उत्तरपक्षः— आ बंधना मूलहेतु चार छे, अने उत्तर हेतु सत्तावन छे. प्रथम चारप्रकारनो बंध कहिएछीए. ते चारमां प्रथम तो प्रकृतिबंध

ठे. ते प्रकृति कइ कइ ठे? तेमज तेनो बंध शुं ठे? ज्जुउ. मूलप्रकृति आठ ठे. १ मत्यादि ज्ञाननुं जे आवरण, आठादन, ते ज्ञानावरण. २ सामान्य बोध, चक्षुआदिनुं जे आवरण ते दर्शनावरण. ३ सुख उःख वेदियें (ज्ञोगवियें) ते वेदनीय. ४ मोहें, जीवने विचित्रता प्राप्त करावे ते मोह. ५ सर्वथा जे कर्म चाल्यां जाय "एति याति चेत्यायुः" जेना उदयथी जीव जीवे ठे ते आयु. ६ नमावे, जे शुज्ञाशुज्ञ गत्यादि रूपें आत्माने, ते नामकर्म. ७ गोत्र शब्दनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे. "गां वाचं त्रायत इति गोत्रं" जेना उदयथी जीव ऊंच नीच कुलवालो कहेवाय ठे, ते गोत्र. ८ अंतर एटले वचमां आववुं, लाज्ञादिना वचमां आववुं, अर्थात् दान, लाज्ञादि जीवने प्राप्त थतां न थवा दे, ते अंतराय. आ आठ स्वज्ञावरूप कर्म, जे जीवनी साथे क्षीर, नीरनीपेठे मिथ्यात्वादि हेतुउथी बंधाइ जाय तेनुं नाम प्रकृतिबंध ठे. २ तेज आठ प्रकृतियोनी स्थिति अर्थात् कालमर्यादा, जेम के आ प्रकृति आटला वखतसुधी आत्मानी साथे रहेशे, पठी नहि रहे, जेनाथी एवी स्थिति थाय ते स्थितिबंध. ३ तेज आठ प्रकृतियोमां तीव्र, मंद रस जे करे, ते अनुज्ञागबंध. ४ कर्म प्रदेशनुं जे प्रमाण; जेम के आटला परमाणु आ प्रकृतिमां ठे, ते परमाणुउनो आत्मानी साथे जे बंध ते प्रदेशबंध.

हवे ते चार प्रकारनां बंधनो विस्तारथी बोध थवा लाडवानुं दृष्टांत लखियेंठियें. जेम कोइ लाडवो त्रिकटुनो बनावेलो होय अर्थात् सुंठ, पीपर, अने मरीनो बनावेलो होय, ते त्रिकटुथी बनेली वस्तुनो स्वज्ञाव वायुने हरण करवानो ठे, तेवीज रीतें शीतद्रव्योथी बनेली वस्तुउनो स्वज्ञाव पित्तहरण करवानो ठे, तथा अरडुसो अने क्षारादि वस्तुउनो स्वज्ञाव कफहरण करवानो ठे, तेजप्रमाणे कर्मोनो पण स्वज्ञाव ठे, कोइ कर्मनो ज्ञानावरण स्वज्ञाव ठे, तो कोइनो दर्शनावरणस्वज्ञाव ठे, ते प्रकृति (स्वज्ञाव) बंध. २ कोइ लाडवो एक दिवस रही बगडी जाय ठे. कोइ बे दिवस, कोइ चार, ठ, आठ, दश, पंदर तो कोइ पक्ष, माससुधी रहे ठे. अने पठी बगडे ठे, तेवीजरीतें कोइ कर्मनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्त, तो कोइनी प्रहर, दिवस, पक्ष, मास यावत् सीत्तेर कोटाकोटी सागरोपमसुधीनी ठे, ते प्रमाणे स्थिति करी फल दइ चाली जाय ठे, ते

स्थितिबंध. ३ जेम कोइ लाडवानो रस कडवो तो कोइनो मीठो, कशायलो छे, तेमज कोइ कर्मनो रस सुखरूप तो कोइनो दुःखरूप; संसारमां जे जे अवस्था जीवोनी थया करे छे ते ते सर्व कर्मना अनुजाग (रस) थीज थाय छे, ते रसबंध. ४ जेम कोइ लाडवो वजनमां पांच तोलानो. तो कोइ पाशेर, अडधो शेर, शेरनो होय छे, तेम कोइ कर्मना प्रदेश गणतरीमां थोडा तो कोइ घणा एम होय छे, ते प्रदेशबंध आ दृष्टांत कर्मग्रंथनुं छे.

हवे बंधहेतुउनुं स्वरूप लखियेंछियें. १ मिथ्यात्व, ते तत्वार्थ श्रद्धानरहित थवुं. २ अविरति, ते पापथी निवृत्त थवाना परिणामनो अजाव. ३ कषाय, तेमां कष अर्थात् संसार अथवा कर्म, तेनो जे आय कहेतां लाज ते कषाय, क्रोध, मान माया, लोजरूप. ४ योग, ते मन, वचन, कायानो व्यापार. आ चारनो विस्तार, सत्तावन जेद छे.

हवे ते उत्तरहेतु सत्तावननुं स्वरूप लखियेंछियें, १ मिथ्यात्वना पांच प्रकार छे. १ अजिग्रहमिथ्यात्व, २ अनजिग्रहमिथ्यात्व, ३ अजिनिवेश मिथ्यात्व, ४ संशयमिथ्यात्व, ५ अनाजोगमिथ्यात्व.

१ अजिग्रहमिथ्यात्वनुं स्वरूप. जीव एम जाणे के, जे कांइ हुं समजेलो हुं ते सत्य छे, बीजानी समज ठीक नथी, एम मनमां धारी सत्य, असत्यनी परीक्षा करवानी मनमां अजिलाषा नहि, तेमज सत्य असत्य स्वरूपनो निरधार करवानो विचार पण नहि. आ मिथ्यात्व दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारकोने होय छे, ते पोताना मनमां एम विचारे छे के मत अमे अंगीकार कर्यो छे ते सत्य छे, बीजा सर्वमत असत्य छे एवा जेना परिणाम ते अजिग्रहमिथ्यात्व.

२ अनजिग्रहमिथ्यात्व. जीव एम माने के सर्वमतो सारा छे, सर्व मतोथी मोक्षप्राप्ति थाय छे, तेथी कोइ पण मतने बुरो कहेवो ते वास्तविक नथी सर्वने नमस्कार करवा. आ मिथ्यात्व सर्व बाल गोपालादि जेउए कोइपण दर्शनने अंगीकार करेल नथी तेउने छे. कारण के तेउ अमृत तथा विष बंनेने एकसरखुं माननारा छे.

३ अजिनिवेशमिथ्यात्व. जे पुरुष जाणीने जूठुं बोले, जेम के प्रथम तो स्मृतिदोषथी, वा अज्ञानताथी, शास्त्रार्थमां जूलपडी, पछी कोइ वि-

द्धान् कहे के तमे आ वातमां आ प्रमाणे जूल खाउंछो. ते प्रमाणे बराबर पोताना जाणवामां आवतां छतां, पोतें कहेला असत्यवादमां कदाग्रह ग्रहण करे, जात्यादि अजिमानथी वारंवार कहेवा छतां न माने, विरुद्ध स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियो बनावीने, पोताना कथन करेला मतने सिद्ध करे, वादमां हार पामे तोपण मत मुके नहि. एवा कदाग्रहवाला जीव, अतिपापी, तेमज बहुलसंसारी थाय छे. एवुं मिथ्यात्व प्रायः जे जैनी जैनमतने विपरीत कथन करे छे तेनामां थइ जाय छे. तेवा कदाग्रही गोष्ठामहिल प्रमुख थाय छे. जाष्यकार श्री अजयदेवसूरि नवांगीवृत्तिकारक, नवतत्वप्रकरणना जाष्यमां कहेछे के "गोठा माहिलमाइणं, जं अजिनिविसितु तयं" आदिशब्दथी बोटिक शिवजूतिने पण आजिनिवेशिक मिथ्यात्ववाला जाणवा.

४ संशयमिथ्यात्व. ते जिनोक्त तत्वमां शंका करवी, जेम के जीव असंख्य प्रदेशी छे ? के नथी ? इत्यादि. एवीरीतें सर्व पदार्थमां शंका करवी, तेनाथी जे उत्पन्न थाय ते सांशयिक मिथ्यात्व. "तदाह जाष्यकृत् ॥ सांशयिकं मिथ्यात्वं तदशेषया शंकासंदेहोजिनोक्ततत्वेष्विति" ॥ संशय मिथ्यात्व होवानां कारणो श्रीजिनजद्रगणि क्षमाश्रमण ध्यानशतकमां लखे छे के. प्रथम तो जैनमत स्याद्वादरूप अनंतनयात्मक छे, ते कारणथी समजवोज कठिन छे, तेमज सप्तजंगीनुं सकलादेशी, विकलादेशी स्वरूप, अष्टपक्ष, सातसें नयस्वरूप, चार निक्षेप, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, तथा १ उत्सर्ग, २ अपवाद, ३ उत्सर्गापवाद, ४ अपवादोत्सर्ग, ५ उत्सर्गोत्सर्ग, ६ अपवादापवाद, तथा विधिवाद, चारित्रानुवाद, इत्यादि अनंतनय अपेक्षाए जैनमतनां शास्त्र कथन करेलां छे, ज्यां सुधी जे अपेक्षाथी जे शास्त्रस्वरूप कथन करेलुं छे ते अपेक्षाथी ते स्वरूपने न समजे, त्यां सुधी जैनमतनी यथार्थ समज पामवी अतिकठिन छे, तेवी समजण पामवावास्ते बहुज निर्मलबुद्धि जोइये. ते प्रायःथोडा जीवोने छे, तेमज शास्त्रना अर्थ बतावनारा संपूर्ण विद्धान् गुरु जोइए, ते देखाता नथी. इत्यादि निमित्तोथी संशयमिथ्यात्व थाय छे.

५ अनाजोगमिथ्यात्व. जे जीवोने उपयोग नथी के धर्म, अधर्म शुं वस्तु छे? एवा जे विकलेंद्रियादि जीव, तेउने अनाजोगमिथ्यात्व होय छे.

ए प्रमाणे मिथ्यात्वना पांच भेद छे, तेउना पण बीजा अनेक भेद थाय छे, परंतु ते सर्वे आ पांचनी अंतर्भूत समजवा. ते आ प्रकारे छे.

१ प्ररूपणामिथ्यात्व. जिनवाणीरूप जे सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, टीका, तेनाथी विपरीत प्ररूपणा करवी ते.

२ प्रवर्त्तनामिथ्यात्व. जे काम मिथ्यादृष्टि जीवो धर्म जाणीने करे छे, तेउनी देखादेखीए, तेउना करवा मुजब करे ते.

३ परिणाममिथ्यात्व. मनना परिणाम विपरीत रहे, मनमां कदाग्रह होय ते टले नहि, तेमज शुद्ध शास्त्रार्थ माने नहि ते.

४ प्रदेशमिथ्यात्व. मिथ्यात्वना प्रदेश जे सत्तामां छे, तेनुं नाम प्रदेशमिथ्यात्व, आ चार भेदोना पण अनेक भेद छे, तेमांथी केटला एक लखियेंछियें

१ धर्म जे वीतराग, सर्वज्ञें प्ररूपेलो छे, तेने अधर्म माने. २ जे हिंसा प्रवृत्ति प्रमुख आश्रवमय अशुद्ध अधर्म छे, तेने धर्ममाने, ३ जे सत्यमार्ग छे तेने मिथ्यात्व (असत्य) मार्ग माने. ४ जे विषयियोनो मार्ग छे तेने सत्यमार्ग माने. ५ जे साधु सत्तावीश गुणें विराजमान छे तेने असाधु कहे, ६ जे आरंभ परिग्रह, कषायमां रक्त, तेमज जेना उपदेशथी लोकोने सांसारिक विषयोमां मस्तपणुं, कुवासना, कुबुद्धि इत्यादि उत्पन्न थाय, एवा पथ्थरनी नावसमान अन्यलिंगी कुलिंगी, तेमने साधु कहे. ७ छकायना जीवोमां अजीवपणुं माने. ८ सुवर्ण, काष्ट प्रमुख अजीवने जीव माने. ए मूर्त्तपदार्थोने अमूर्त्त माने. १० अमूर्त्त पदार्थोने मूर्त्त माने. आ दशभेदमिथ्यात्वना छे.

वली छ भेद मिथ्यात्वना छे ते कहियें छियें. १ लौकिकदेव, २ लौकिक गुरु, ३ लौकिक पर्व, ४ लोकोत्तर देव, ५ लोकोत्तर गुरु, ६ लोकोत्तर पर्व.

१ लौकिक देवगत मिथ्यात्व. जे देव रागद्वेषथी भरेला छे, एक उपर कृपावान् थाय छे, बीजानो विनाश करे छे, स्त्रीना भोगविलासमां मग्न छे, जेणें अनेक प्रकारनां शस्त्र धारण करेलां छे, पोतानी ऐश्वर्यताना जे अभिमानी छे, जेना हाथमां जपमाला छे, सावद्यभोग भोगवे छे, पंचेंद्रियवध चाहाय छे, एवा देवने परमेश्वर मानवा, परमेश्वरना अंश अवतार मानवा, तेउनुं पूजन करवुं. इत्यादि. ते लौकिक देवगत मि-

थ्यात्व छे. तेना अनेक भेद छे, तेनुं स्वरूप मिथात्वसित्तेरी प्रमुख ग्रंथथी जाणवुं.

२ लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व. जे अढार पापस्थाकोनुं सेवन करे, नव प्रकारना परिग्रह राखे, गृहस्थाश्रम पाले, स्त्री, पुत्रपरिवारवाला होय, कुलिंगीहोय, मनःकल्पित नवा नवा वेष बनावी स्वकपोलकल्पित मत चलावे, आडंबर राखे, बाह्य परिग्रह तो कदाच त्यागेल होय, तो पण अभ्यंतर ग्रंथिउमां मग्न होय, तजे नहि, गुरुनाम धरावी मंडल परिवारें विचरे, जेनी अनादिनी भूल मटेली न होय, जेने शुद्धसाध्यनी पिछान न होय तेवाउने गुरु माने, तेउनुं बहु मान करे, तेउने मोक्षप्रदाता जाणी दान दे, तेउने परम पात्र जाणे, एवाज जीवना परिणाम ते लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व छे.

३ लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व. १ आजापडवो, २ प्रेतबीज, ३ गुरुत्रीज, ४ गणेशचोथ, ५ नागपांचम, ६ जीलणांछठ, ७ शीली सातम, ८ बुध अष्टमी, ९ नोली नवमी, १० विजयदशमी, ११ व्रत एकादशी, १२ वत्स बारश, १३ धनतेरश, १४ अनंतचौदश, १५ अमावास्या, १६ सोमवती अमावास्या, १७ रक्षाबंध, नालीएरी पुनम, १८ होली, १९ आदित्यवारादि, २० सोमप्रदोष, २१ उत्तरायण, २२ अन्य संक्राति, २३ ग्रहण, २४ नवरात्रि, २५ श्राद्ध, २६ पीपलेपाणी सेचन, २७ अश्व, गर्दभपूजन, २८ गोत्राटी, २९ अन्नकूट, ३० दसुरा, ३१ स्मशानपूजन, ३२ कबरमेला, इत्यादि अनेक लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व छे.

४ लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व. ते देव श्री अरिहंत, धर्मना आकर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार, परमपूज्य, सकलदोषरहित, एवा शुद्ध, निरंजन देवनी स्थापना रूप जे प्रतिमा, तेनी पासे, आ लोकना अनेकप्रकारना पौद्गलिक सुखभोग मेलववानी वांछा करे, जेम के हे भगवन्! जो आ मारुं काम थशे तो, तमारी मोटी पूजा, आंगी रचावीश, छत्र चडावीश, दीपमाल, रोशनी करावीश, इत्यादि, तेमज परभवमां मने आपनी भक्ति पूजाथी इंद्र, चक्रवर्त्तिपणुं, तथा देव, नरपतिनी पदवी प्राप्त थाय इत्यादि, तथा मारा तथा पुत्र स्त्री प्रमुखना रोग प्रमुखनो नाश थाय इत्यादि पौद्गलिक सुखवास्ते, तेमज दुःखना

निवारणवास्ते भावपूर्वक वीतराग देवने मानवा, ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व छे. दृष्टांत. जे पुरुष चिंतामणी रत्नो दातार होय, तेनी पासे काचना कटकानी मांगणी करवी ते जेम हास्यास्पद तेमज अज्ञानता छे, ते समान आ इछा छे, तेथी अयोग्य छे, जेने कर्मप्रकृति स्वरूपनुं ज्ञान तेमज अनुभव न होय तेज एवी मागणी करे छे.

५ लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व पोते निर्गुणी छतां साधुनो वेष राखे, जीववाणीने उत्थापी, पोताने मनःकल्पित उपदेश आपे सूत्रना साचा अर्थने छोडे, एवा उत्सूत्रना प्ररूपक तेउने गुरु जाणी, तेउनुं बहुमान भक्ति पूजा करवी ते तथा जे साधु गुणवान् होय, तपस्वी होय, चारित्रपात्र होय, आचारवंत, तेमज यथोक्तक्रियावंत होय, तेमनी आ लोकना सुखवास्ते, तेमज परलोकना पौद्गलिक सुखवास्ते, सेवा करे बहुमान करे, मनमां एम पण जाणे के जो तेमनी बहु सारी रीतें सेवा करीश तो तेमनी मेहेरवानीथी, धन ऋद्धि स्त्रीपुत्रादि परिवार मने प्राप्त थशे, एवा परिणाम ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व.

६ लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व. जिनेश्वर भगवानना पांच कल्याणकनी तिथियोने दिनें, तथा बीजा पर्वने दिने, धन, स्त्री, पुत्रादिवास्ते तप, जपादि धर्मकरणी करवी ते लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व छे. इत्यादि मिथ्यात्वना अनेक भेद छे, परंतु ते सर्वे पूर्वोक्त अभिग्रहादि मिथ्यात्वमां अंतर्भूत छे.

हवे बार प्रकारनी अविरतिनुं स्वरूप कहियें छियें. पांच इंद्रिय, अने छठुं मन, तेमज छ काय, मली बार प्रकार छे, तेमनुं स्वरूप एवुं छे के, पांचे इंद्रियोने पोत पोताना विषयोमां प्रवर्त्तावबी, ते पांच तथा कोइ पण पापमय वस्तुथी मननो निरोध न करवो ते, तथा छ जीवनिकायनी हिंसामां प्रवृत्ति करवी, ते सर्वे मली बार अविरति छे.

हवे कषाय बंधना पचीश भेदनुं स्वरूप कहियें छियें. अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, मली सोल, तथा नव नोकषाय, १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ स्त्रीवेद, ८ पुरुषवेद, ९ नपुंसकवेद

मळी पचीश कषाय, संसार स्थितिनां मूल कारणो छे, तेमनुं विस्तारथी कथन आगल करेलुं छे.

हवे योगनामें बंध हेतुनुं स्वरूप लखियें छियें. ते मन, वचन, काय, एम योगना त्रण प्रकार छे. आ त्रणना उत्तर भेद पंदर छे. मनोयोगना चार भेद, वचनयोगना चार भेद तथा काययोगना सात भेद सर्व मळी पंदर भेद छे.

मननाम अंतःकरणनुं छे, तेना चार प्रकार छे. १ सत्य मनोयोग, २ असत्य मनोयोग, ३ मिश्र मनोयोग, ४ व्यवहार मनोयोग, मन शुं वस्तु छे? कायाना व्यापारथी पुद्गल ग्रहण करीने, ते पुद्गलोने चिंतन धर्मरूपें काढवां ते द्रव्यमन छे; अने ते पुद्गलोना संयोगथी जे ज्ञान उत्पन्न थाय तेनुं नाम भावमन छे. ते ज्ञानथी व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने ते व्यवहारथी मन पण सत्यादि व्यपदेशने प्राप्त थाय छे. वळी उपचारें द्रव्यमन पण ज्ञायक छे. वळी मन शब्दथी मनोयोग, तेनो इंद्रियावरण कर्मना क्षयोपशमथी उत्पन्न थयुं जे मनोज्ञान, तेनाथी परिणत आत्माने बलाधान करवावाळी मनोवर्गणाना संबंधथी उत्पन्न थयुं जे वीर्य विशेष, ते अहींया मन जाणवुं. तेवीज रीतें वचनयोग, ते वचननी वर्गणा अर्थात् परमाणुओनो समूह, ते वचन वर्गणाथी उत्पन्न थयुं जे सामर्थ्यविशेष, आत्मानी परिणति, ते वचनयोग जाणवां. ते मनोयोग तथा वचनयोगना मळी आठ प्रकार छे.

प्रथम मनमां जे सत्य व्यवहारनुं चिंतवन करवुं, ते सत्यमन, जेमके जीवादि पदार्थ द्रव्यरूपें नित्य, पर्यायरूपें अनित्य, एम अनेकांतपणे चिंतववुं, ते सत्यमनोयोग. तेनाथी विपरीतपणे जीवादि पदार्थोनुं स्वरूप वचन निरपेक्षपणे चिंतववुं, तेमज धर्म नथी, पुण्यपाप नथी स्वर्ग नरक नथी इत्यादि चिंतवन करवुं ते असत्य मनोयोग. तेवीजरीतें सत्यचिंतवन वचनरूपें बोलवुं ते सत्यवचनयोग, अने असत्यचिंतवन वचनरूपें बोलवुं ते असत्यवचनयोग. तथा कांइक असत्य, जेम के आ गाममां आजे दश जन्म्या, तथा दश मुआ, तेमां कांइक साचुं अने कांइक जुठुं चिंतवन करवुं तथा गोवर्गने देखीने चिंतववुं के आ सर्वे गायो छे, पछी तेमां बलद पण होय ते मिश्रमनोयोग, अने ते प्रमाणे

बोलवुं ते मिश्र वचन योग. तथा आमंत्रणा, याचना, जेम के हरिचंद्र अहिंयां आवे, दामोदर आ वस्तु आपे, इत्यादि जे चिंतववुं, तेथी जिनवचन विरोधाय नहि, तेथीअसत्यपण नहि, अने आराधक पण नहि, तेथी सत्यपण नहि. जेथी ए प्रमाणे चिंतवन करवुं ते व्यवहार मनोयोग अर्थात् असत्य मृषा मनोयोग, अने तेज प्रमाणें बोलवुं. ते व्यवहार वचनयोग. ए प्रमाणे मनोयोग तथा वचनयोगना आठ भेद थया.

हवे सत्यवचनना दशप्रकार छे तेनुं स्वरूप कहिएछिए. १ जनपद सत्य, जे देशमां जे वस्तुने जे नामथी बोलता होय, ते देशमां ते नाम सत्य छे, जेम के कोकणदेशमां पाणीने पिछ कहेछे, कोइ देशमां मोटा पुरुषने बेटो कहे छे, वली बेटाने काको कहे छे, पिताने भाइ कहेछे, सासुने आइ कहेछे, इत्यादि. ते जनपद सत्य छे. २ सम्मत सत्य, जेम के पंकथी (कादवथी) मेडक, शेवाल, कमलादि उत्पन्न थाय छे, तोपण पंकज शब्दें कमलज विद्वान् पुरुषोए सम्मत करेल छे, परंतु मेडक, शेवाल तेउ मानता नथी. ३ स्थापना सत्य, जे प्रतिमा जेनी होय, तेने तेना नामथी बोलवी ते स्थापना सत्य, जेम के महावीर, पार्श्वनाथजी आदि अर्हंतनी प्रतिमा होय, ते प्रतिमाने, महावीर, पार्श्वनाथजी कहे तो ते सत्य छे, परंतु तेने पथ्थर कहेनार मृषावादी छे; जेम के शाहीथी कागल उपर अक्षरोनी स्थापना करवाथी. तेउने ऋग्, यजु, साम, अथर्व वेद कहेवाय छे, तेमज आचारांगादि अंग कहेवाय छे, तथा काष्ठना आकारविशेषने कमाड कहेवाय छे, इंट, चुना, पथ्थरना आकार विशेषने स्थंभ कहेवाय छे; पुस्तकमां त्रिकोणादि चित्र काढ्यां होय, तेने आर्यावर्त्त, भरतखंड, हिंदुस्थान, अमेरिका इत्यादि कहेवाय छे, तथा श्याहीथी कागलपर आकृति करवाथी ककार, खकार कहेवाय छे. ए प्रमाणे बोलवुं ते सत्य छे. ए प्रमाणेनी स्थापनाउ जोवाथी मनुष्यनी कार्य सिद्धि अवश्य थाय छे, ते सर्वने अनुभव थयेल छे. ए प्रमाणे सिद्धि थती न होय तो मनुष्यो स्थापना शावास्ते करे? ते कारणथी महावीर तथा पार्श्वनाथजीनी प्रतिमाने श्रीमहावीर तथा श्रीपार्श्वनाथजी कहेवा ते स्थापना सत्य छे, तेमां विशेष ए छे के, जे देव शुद्ध छे, तेनी स्थापना पण शुद्ध छे, अने जे देव शुद्ध नथी, तेनी स्थापना पण शुद्ध नथी;

परंतु ते स्थापनाने, ते देव कहेवा ते वात सत्य ठे. ४ नाम सत्य, कोइ पुरुषें पोताना पुत्रनुं नाम कुलवर्द्धन राखेलुं ठे, अने जे दिवसथी ते पुत्रनो जन्म थयेल ठे, ते दिवसथी तेना कुलनो नाश थतो जाय ठे, तो पण ते पुत्रने कुलवर्द्धन नामथी बोलावे तो ते सत्य ठे. ५ रूप सत्य. कदापि गुणोथी भ्रष्ट होय तो पण साधुना वेषवालाने साधु कहे तो ते सत्य ठे. ६ प्रतीत अर्थात् अपेक्षा सत्य. जेम के मध्यमानी अपेक्षाए अनामिका आंगलीने नानी कहेवी ते. ७ व्यवहार सत्य. जेम के पर्वत बले ठे, रस्तो चाले ठे, इत्यादि. ८ भावसत्य. जेम के तोतामां पांच रंग ठे, तोपण तोताने लीला रंगवालो कहेवो इत्यादि. ए योगसत्य. जेम के दंडना योगथी दंडी कहेवो, इत्यादि. १० उपमा सत्य. जेम के मुख, चंद्र समान ठे, इत्यादि. दशप्रकारनां सत्य ठे.

हवे दशप्रकारनां जूठ कहियेंठियें. १ क्रोधमिश्रित अर्थात् क्रोधने वश थइ वचन बोलवां ते असत्य, २ मानना उदयथी बोलवां, ३ मायाना उदयथी बोलवां, ४ लोजना उदयथी बोलवां, ५ रागना बंधनथी बोलवां, ६ द्वेषना उदयथी बोलवां, ७ हास्यने वश थइ बोलवां, ८ जयने वश थइ बोलवां, ए विकथा करवी, १० जे बोलवाथी जीवनी हिंसा थाय. आ दश प्रकारनां असत्य वचन ठे.

हवे दश प्रकारनां मिश्रवचन कहियेंठियें, १ उत्पन्न मिश्रित. जेम के खबर विना कहेवुं के आजे आ गाममां दशबालक जन्म्या ठे, इत्यादि. २ विगतमिश्रित, जेम के खबर विना कहेवुं के आजे आ गाममां दशमाणस मुआं ठे, इत्यादि. ३ उत्पन्न विगत मिश्रित. जेम के खबर विना कहेवुं के आजे आ गाममां दश जन्म्या ठे, अने दशज मुआ ठे, ४ जीवमिश्रित. ते जीव अजीवना राशिने कहेवुं के आ जीव ठे. ५ अजीव मिश्रित. ते अन्नना राशिने कहेवुं के आ अजीव ठे. ६ जीवाजीवमिश्रित ते जीव अजीव बंने माटे मिश्रजाषा बोलवी ते. ७ अनंतमिश्रित. ते मूल आदि अवयवोमां केटलीएक जगाए अनंत जीव ठे, अने कोइजगाए प्रत्येक जीव ठे, तेठने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहेवुं ते, ८ प्रत्येक मिश्रित. ते प्रत्येकजीवोने अनंतकाय कहेवां ते. ए अद्धामिश्रित. ते बे घडी तडको थया ठतां कहे के दिवस उग्यो ठे. १० अद्धा-

मिश्रित. एक घडीरात्रि गइ होय तथापि कहेके दिवसनो उदय छे. आ दश प्रकारनां मिश्रवचनो छे.

हवे व्यवहार वचनना बार भेद कहियेंछियें. १ आमंत्रण करवुं के हे भगवन्! २ आज्ञापना, ते आ काम करो, आ वस्तु लावो, ३ याचना–आ वस्तु आपशो, ४ पृछना–आ गाम जवानो रस्तो कयो छे? ५ प्रज्ञापना–धर्मस्वरूप आ प्रमाणे छे. ६ प्रत्याख्यानी–आ काम अमने करवुं कल्पे नहि. ७ इच्छानुलोम–यथा सुखं. ८ अनभिगृहीत–ते वातनी मने खवर नहि. ए अभिगृहीत–मने ते वातनी खवर छे. १० संशय–तेनुं स्वरूप एम केम होय? ११ स्पष्ट प्रगट अर्थ कहेवा. १२ अस्पष्ट अप्रगट अर्थ कहेवा.

हवे काययोगना सातभेदनुं स्वरूप कहियेछियें–काययोग अर्थात् आत्माना निवासभूत पुद्गल द्रव्य घटित, जेम वृद्ध तथा दुर्वलने अवष्टंभभूत लाकडी छे, तेम विषम काममां जेना योगथी जीवना वीर्यनुं परिणाम सामर्थ्य; जेम अग्निना संयोगथी घडानी रक्तता थाय छे, तेवीजरीतें आत्माने कायाना करण संवंधथी वीर्यपरिणाम छे. आ काययोगना सात भेद. १ औदारिक काययोग, २ औदारिक मिश्र काययोग, ३ वैक्रिय काययोग, ४ वैक्रिय मिश्र काययोग, ५ आहारक काययोग, ६ आहारक मिश्र काययोग, ७ कार्मण काययोग. प्रथमना वे काययोग, मनुष्य अने तिर्यंचमां होय छे. त्रीजो चोथो काययोग स्वर्गवासी देवताउमां होय छे. पांचमो, छठो काययोग चौदपूर्वधर साधुउमां होय छे. सातमो काययोग, जीव ज्यारे काल करी परभव गमन करे छे, त्यारे रस्तामां तेनी साथे होय छे; तेमज समुद्घात अवस्थामां केवलीने होय छे; आहार पाचन करवामां समर्थ एवुं तैजस शरीर, कार्मण योगनी अंतर्भूत होवाथी तेनुं पृथक् ग्रहण करवामां आव्युं नथी. ए प्रमाणे सात भेद काययोगना वताव्या. सर्व मली वंधतत्वना उत्तरभेद सत्तावन थया.

हवे मोक्ष तत्वनुं स्वरूप कहियेंछियें. प्रथम मोक्षनी व्याख्या कहियेंछियें. "जीवस्य कृत्स्नकर्मक्षयेण यत्स्वरूपावस्थानं तन्मोक्ष उच्यते" ॥ भावार्थः–जीवनां ज्ञानावरणादि सर्वकर्मनो क्षय थवाथी तेनुं जे स्वरूप अवस्थान ते मोक्ष छे. ते मोक्ष, जीवनो धर्म छे. अने धर्म, धर्मी क-

थंचित् अनेद होवाथी, धर्मी जे सिद्ध, तेनी जे प्ररूपणा ते पण मोक्षप्ररूपणा ठे; कारण के मोक्ष जे ठे ते जीवपर्याय ठे, ते जीवपर्याय कथंचित् सिद्ध जीवथी अभिन्न ठे; जीवना पर्याय सर्वथा जीवथी भिन्न थइ शकता नथी. यडुक्तं ॥ द्रव्यं पर्यायवियुतं, पर्यायाद्रव्यवर्जिताः ॥ क कदा केन किंरूपा, दृष्टा मानेन केन वेति ॥ १ ॥ नावार्थ–द्रव्य पर्यायोथी रहित, अने पर्यायो द्रव्यथी रहित एम कोइ जगाए, कोइ अवसरें, कोइ प्रमाणे, कोइरूपें कोइपुरुषें देखेल ठे ?

हवे सिद्धोनुं स्वरूप नवप्रकारें, सूत्रकार तेमज भाष्यकार कहे ठे. १ सत्पदप्ररूपणा, २ द्रव्यप्रमाण, ३ क्षेत्र, ४ स्पर्शना, ५ काल, ६ अंतर, ७ भाग, ८ भाव, ए अल्पबहुत्व आ नव द्वार ठे. १ सत्पदप्ररूपणा द्वार. मोक्षपद सत्पद ठे, वियमान पद ठे, ठतुं पद ठे, शा कारणथी ? एक पद ठे तेथी, कारण के जगत्मां जेटला एकपदवाची घटपटादि पदार्थ ठे, ते सर्व अवश्य ठता ठे, अने जे जे बे बे पदवाची पदार्थ ठे, ते ते पदार्थ ठता पण ठे, अने अठता पण ठे. जेम अश्वशृंग, वंध्यापुत्र, आकाशकुसुम. आ बे पदनां नाम ठे ते अठतां ठे, तेमज गोशृंग, राजपुत्र, केतकी कुसुम, आ बे पदनां नाम ठतां ठे. ते न्यायें मोक्षपद एकपदवाची होवाथी वियमान पद ठे. ते मोक्षपद याने सिद्धपद गति आदि चौद पदोमां जोडवां. जेम के १ गति पांच ठे, १ नरकगति, २ तिर्यग्गति, ३ मनुष्यगति, ४ देवगति, ५ सिद्धगति, तेमां सिद्धगति शिवाय बाकीनी चारगतिमां सिद्ध नथी. ययपि १ कर्म सिद्ध, २ शिल्पसिद्ध, ३ वियासिद्ध, ४ मंत्रसिद्ध, ५ योगसिद्ध, ६ आगमसिद्ध, ७ अर्थसिद्ध, ८ यात्रासिद्ध, ए अभिप्रायसिद्ध, १० तपःसिद्ध, ११ कर्मक्षयसिद्ध. एम अनेक प्रकारना सिद्ध, आवश्यक निर्युक्तिकारें कथन करेल ठे, तो पण अहींयांतो जे कर्मक्षयथी सिद्ध थया ठे तेनोज अधिकार ठे. तेउनेज मोक्ष पर्याय ठे, बीजाउने नहि. २ इंद्रियो पांच ठे, एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पंचेंद्रिय, आ पांचे प्रकारमां सिद्ध नथी; कारण के शरीरनो सर्वथा नाश थाय ठे त्यारे सिद्ध थवाय ठे, ज्यां शरीर ठे, त्यां इंद्रियो ठे, सिद्धने शरीर नथी तेथी ते अतींद्रिय ठे. ३ ठकाय. १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वाउकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रस-

काय, आ छए कायमां सिद्धपणुं नथी, कारण के सिद्ध कायरहित छे अर्थात् अशरीरी छे. ४ योग. त्रणप्रकारें योग छे, मन, वचन, काययोग; तेमां केवल काययोग एकेंद्रिय जीवने छे, अने द्वींद्रियादिथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यंत जीवने, काययोग तथा वचनयोग छे, अने संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त जीवने त्रणे योग छे, आ त्रणे योगमां सिद्धपणुं नथी, अने सिद्ध तो मन वचन, काययोगनो अभाव थाय छे त्यारे थवाय छे तेथी सिद्ध अयोगी छे. ५ वेद. त्रणप्रकारें छे, स्त्री, पुरुष, नपुंसक, आ त्रणे वेदमां सिद्धपणांनो अभाव छे, त्रणे वेदनो क्षय करवामां आवे त्यारे सिद्धपणुं प्राप्त थाय छे, तेथी सिद्ध अवेदी छे. ६ कषाय. चार प्रकारें छे. क्रोध, मान, माया, लोभ. आ चारेनो अभाव थाय त्यारे सिद्धपणुं प्राप्त थाय छे तेथी सिद्ध अकषायी छे. ७ ज्ञान. ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, आ पांच प्रकारें ज्ञान छे, अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, आ त्रण अज्ञान छे, तेमां प्रथमना चार ज्ञानमां अने त्रण अज्ञानमां सिद्धपणुं नथी, एक केवल ज्ञानमां सिद्धपणुं छे, ते केवलज्ञान अहियां सिद्धपणानुं जाणवुं, परंतु सयोगी अवस्थानुं नहि. ८ चारित्र. सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात, आ पांच चारित्र, तेमज तेना प्रतिपक्षी देशसंयम तथा असंयम; ते पांचे चारित्रमां तेमज बंने विपक्षमां सिद्धपणुं नथी, कारण के ते सर्वे शरीर विद्यमान होय छे, त्यारे होय छे, अने सिद्ध तो शरीररहित छे. ए दर्शन, चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवल, आ चार दर्शनोमां प्रथमना त्रणमां सिद्धपणुं नथी, परंतु केवल दर्शनमां केवलज्ञाननी पेठे सिद्धपणुं छे. १० लेश्या. कृष्ण, नील कापोत, तेजु, पद्म, शुक्ल, आ छए लेश्यामां सिद्धपणुं नथी, कारण के लेश्या भवस्थजीवनो पर्याय छे, अने सिद्ध अलेशी छे. ११ भव्य, अभव्य, आ बंने अवस्थामां सिद्धपणुं नथी, कारण के जेने सिद्धपदनी प्राप्ति थशे ते भव्यजीव कहेवाय छे, अने सिद्धोने नवी पदवी तो कांइ प्राप्त करवानी नथी, तेथी भव्यपणुं सिद्धमां नथी. वली जेने सिद्ध थवानी योग्यता कोइपणकालमां न होय ते अभव्य कहेवाय छे, सिद्धना जीव एवा नथी, कारण के अतीतकालमां तेउमां एवी योग्यता हती, तेथी सिद्ध अभव्य

पण नथी. सिद्ध, नो भव्य, नो अभव्य छे, एम आप्तवचन छे. १२ सम्यक्त्व–क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम, सास्वादन अने वेदक, आ पांच प्रकार सम्यक्त्वना छे. तेउना विपक्षी, मिथ्यात्व अने मिश्र छे. तेउमांथी क्षायिक वर्जीने चार सम्यक्त्वमां तेमज मिथ्यात्व अने मिश्रमां सिद्धपणुं नथी, कारण के ते सर्वे क्षयोपशमिकादि भाववर्ती छे; अने क्षायिक सम्यक्त्वमां सिद्धपणुं छे; परंतु क्षायिक सम्यक्त्व पण बे तरेहनुं छे, एकशुद्ध, बीजुं अशुद्ध, तेमां शुद्ध, अपाय, सत् द्रव्य रहित, भवस्थ केवलीउने छे, अने सिद्ध परमात्मा शुद्ध स्वभावरूप सम्यक्दृष्टि छे, सादि अपर्यवसान छे, अने अशुद्ध अपाय सहचारी श्रेणिकादिनुं ते क्षायिक, सादि सपर्यवसान छे; तेमां अशुद्ध क्षायिकमां सिद्धपणुं नथी, कारण के तेने अपाय सहचारी छे, अने शुद्ध क्षायिकमां सिद्धपणुं छे; कारण के सिद्धपणामां क्षायिक सम्यक्त्व विद्यमान छे. अपाय नाम मतिज्ञानांशनुं छे, अने सत् द्रव्य, शुद्ध सम्यक्त्वना दलियानुं नाम छे, ए बंनेनो अभाव थाय छे, त्यारे शुद्ध क्षायिक सम्यक्त्व थाय छे. १३ संज्ञा–त्रण प्रकारे छे. १ हेतुवादोपदेशिनी, २ दृष्टिवादोपदेशिनी, ३ दीर्घकालिकी. आ त्रणमां दीर्घकालिकी संज्ञाथी जे संज्ञी छे, तेज व्यवहारमां प्रायः ग्रहण कराय छे. जेने संज्ञा होय ते संज्ञी, जेम के आ में कर्युं छे, आ करुं छुं, आ करीश, एम त्रिकाल विषयवाला, मनोविज्ञानवाला जे जीव छे, तेउज संज्ञी कहेवाय छे. तेउनाथी जेउ विपरीत छे तेउ असंज्ञी कहेवाय छे, आ संज्ञी, असंज्ञी बंनेमां सिद्ध पद नथी, कारण के सिद्ध तो नो संज्ञी, नो असंज्ञी छे. १४ आहार–त्रण प्रकारना छे, १ उज आहार, २ लोम आहार. ३ प्रक्षेप आहार, आ त्रणे आहारमां सिद्धपणुं नथी, कारण के सिद्ध अणाहारी छे. इति.

२ द्रव्यप्रमाण द्वार, गणतरीमां सिद्धना जीव अनंत छे. ३ क्षेत्रद्वार-ते आकाशना एकदेशमां सर्व सिद्धोनुं स्थान छे, ते आकाश देशनुं प्रमाण शुं छे? धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्य ज्यांसुधि छे, त्यां सुधी लोकछे. एवो जे लोक तेना आकाशना असंख्यमा भाग जेवा भागमां सिद्ध रहे छे. ४ स्पर्शना द्वार–जेटला आकाश भागमां सिद्ध रहे छे, तेनाथी स्पर्शना भाग किंचित् अधिक छे. ५ कालद्वार–एक सिद्ध आश्री सादि

अनंतकाल, अने सर्वसिद्ध आश्री अनादि अनंतकाल जाणवो. ६ अंतरद्वार–सिद्धोनी वचमां अंतर नथी, सर्व सिद्धो मली एक रूपवत् रहे छे, ७ नागद्वार–सर्वसिद्ध, सर्व जीवराशिने अनंतमे नागे छे. ८ नावद्वार–सिद्धोनो क्षायिक पारिणामिक नाव छे, वाकीना नाव नथी. ए अल्पवहुत्वद्वार–ते सर्वथी थोडा अनंतर सिद्ध छे. जेने सिद्ध थयां, एक समय थयो होय ते अनंतर सिद्ध कहेवाय छे. परंपरसिद्ध अनंत गणा थयाछे. सिद्ध होवामां उत्कृष्ट अंतरकाल ठ मास छे. ए प्रमाणे मोक्षतत्वनुं स्वरूप संक्षेप मात्र कह्युं. कांइक विशेष स्वरूप हवे पठीना परिछेदमां चौद गुणस्थानकना वर्णनमां वतावदामां आवशे. विस्तारथी जाणवानी इछावालाए, नंदीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र, सिद्धप्राभृतसूत्र, सिद्धपंचाशिका, देवाचार्यकृत नवतत्वप्रकरणवृत्ति, ग्रंथो जोवा. इति श्रीतपागछीयमुनिश्री बुद्धिविजयशिष्य मुन्यानंदविजयात्मारामविरचितजैनतत्वादर्शगुर्जरजाषांतरे नवतत्वस्वरूपनिर्णयनामा पंचमः परिछेदः संपूर्णः ॥

॥ अथ षष्ठपरिछेदप्रारंजः ॥

आ परिछेदमां चौद गुणस्थानकोनुं स्वरूप किंचित् मात्र लखियें ठियें. जैनमतमां जव्य जीवोने शिवमंदिर चडवा वास्ते गुणोनी श्रेणी, तेज निसरणीछे. ते गुणश्रेणीरूप निसरणीमां पगथरणरूप, गुणोथी गुणांतर प्राप्तिरूप, जे स्थान अर्थात् जूमिका छे, ते चौद छे. तेनां नाम. १ मिथ्यात्व गुणस्थानक, २ सास्वादन गुणस्थानक, ३ मिश्र गुणस्थानक, ४ अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक, ५ देशविरति गुणस्थानक, ६ प्रमत्तसंयत गुणस्थानक, ७ अप्रमत्त वादरगुणस्थानक, ८ अपूर्वकरण गुणस्थानक, ए अनिवृत्तवादर गुणस्थानक, १० सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक, ११ उपशांतमोह गुणस्थानक, १२ क्षीणमोह गुणस्थानक, १३ सयोगिकेवलि गुणस्थानक, १४ अयोगि केवलि गुणस्थानक.

प्रथम मिथ्यात्वगुणस्थानकनुं स्वरूप लखियेंठिये. तेमां पण प्रथम व्यक्त मिथ्यात्वनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. जे स्पष्ट चैतन्य, संज्ञी पंचेंड्रिय जीवनी अदेव, अगुरु, अधर्म, तेउमां अनुक्रमें, देव गुरु, धर्मनी बुद्धि, ते व्यक्तमिथ्यात्व छे. उपलक्षणथी, जीवादि नव पदार्थोमां जीवनी श्रद्धानो अजाव, जिनोक्त तत्वथी विपरीत प्ररूपणा, जिनोक्त तत्व-

स्वरूपमां संशय तथा जिनोक्ततत्वमां दूषणोनो आरोप इत्यादि, व्यक्त मिथ्यात्व छे. तथा आभिग्रहिकादि जे पांच मिथ्यात्व छे, तेमांथी अनाभोगिक मिथ्यात्व अव्यक्त मिथ्यात्व छे, अने बाकीनां चार व्यक्त मिथ्यात्व छे; तथा "अधम्मे धम्मसन्ना इत्यादि" दश प्रकारनां जे मिथ्यात्व छे, ते सर्व व्यक्त मिथ्यात्व छे. बीजुं अनादि कालथी मोहनीय प्रकृतिरूप मिथ्यात्व, आत्माना सत् दर्शनरूप गुणनुं आछादक, जीवनी साथे निरंतर अविनाभावि ते अव्यक्त मिथ्यात्व छे.

हवे मिथ्यात्व गुणस्थानक शा कारणथी कहेवामां आवे छे, ते लखियेछियें. अनादि अव्यक्त मिथ्यात्व, अव्यवहार राशिवर्ती जीवमां निरंतर होय छे, ते जीवने व्यक्त मिथ्यात्वनी बुद्धिनी जे प्राप्ति तेज मिथ्यात्व गुणस्थानक छे.

प्रश्नः–मिथ्यात्व गुणस्थानकमां सर्व जीवोनां स्थान मले छे, एम जैनशास्त्रनुं कथन् छे, छतांपि व्यक्त मिथ्यात्वनी बुद्धिने गुणस्थानरूपता कहो छो तेनुं शुं कारण छे ?

उत्तरः–सर्वभाव सर्व जीवोए पूर्वे अनंतवार प्राप्त करेला छे, ते वचन प्रमाणथी जे प्राप्तव्यक्तमिथ्यात्वबुद्धिवाला जीवो व्यवहार राशिवर्ती छे तेवोज प्रथम गुणस्थानकवाला कहेवाय छे. परंतु अव्यवहार राशिवर्त्ति जीव तेवा नथी, कारण के तेओ अव्यक्तमिथ्यात्ववाला छे, ते कारणथी दोष नथी.

हवे मिथ्यात्वरूप दूषणनुं स्वरूप कहियेंछियें. जेम कोइ मनुष्य मदिराना उन्मादथी नष्टचैतन्य थवाथी हित, अहित कांइ पण जाणतो नथी, तेवीज रीतें मिथ्यात्ववासित जीव सम्यक् धर्म अधर्म जाणतो नथी ॥ यदाह ॥ मिथ्यात्वेनालीढचित्तानितांतं, तत्वातत्वं जानते नैव जीवाः ॥ किं जात्यंधाः कुत्रचिद्वस्तुजाते, रम्यारम्यं व्यक्तमासादयेयुः ॥ १ ॥ भावार्थः–जेम जन्मांध पुरुषो वस्तुओनी जाति, तेमज रम्य अरम्य स्वरूपने जाणी शकतो नथी, तेमज मिथ्यात्वथी जे जीवोनां अंतःकरण वासित छे, ते तत्वात्वना स्वरूपने बिलकुल जाणि शकता नथी.

हवे मिथ्यात्वनी स्थिति कहियेछियें. अभव्य जीवोनी अपेक्षाए, तेमज सामान्य प्रकारें अव्यक्त मिथ्यात्वनी स्थिति अनादि अनंत छे; भ-

व्यजीवोनी अपेक्षाए तेज स्थिति अनादि सांत छे. आ स्थिति सामान्य प्रकारें बतावी छे, हवे जो मिथ्यात्व गुणस्थानकनी स्थिति विचारियें तो भव्यजीवोनी अपेक्षाए अनादि सांत छे, तेमज सादि सांत पण छे, अने अभव्य जीवोनी अपेक्षाए अनादि अनंत छे. ज्यारे मिथ्यात्व गुणस्थानकमां जीव वर्त्ते छे, त्यारे एकसो वीश बंध प्रायोग्य कर्म प्रकृतियोमांथी १ तीर्थंकरनाम कर्मनी प्रकृति, २ आहारक शरीर, ३ आहारक अंगोपांग, आ त्रण प्रकृतिनो बंध करतो नथी. बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो बंध करे छे; तथा एकसो बावीश कर्मप्रकृति जे उदय प्रायोग्य छे, तेमांथी १ मिश्र मोहनीय, २ सम्यक्त्व मोहनीय, ३ आहारक शरीर, ४ आहारक उपांग, ५ तीर्थंकरनाम, आ पांच प्रकृति शिवाय, बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो तेने उदय छे, अने एकसो अडतालीश कर्म प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे सास्वादन गुणस्थानकनुं स्वरूप लखिए छीयें. तेमां प्रथम आ गुणस्थानकनुं कारणभूत उपशम सम्यक्त्व छे, तेनुं स्वरूप कहीए छियें. जीवमां अनादिकालथी रहेला मिथ्यात्व कर्मनी उपशांति थवाथी, ग्रंथि भेदकरणकाल पछी औपशमिक सम्यक्त्व, जीवने प्राप्त थाय छे. आ सामान्यस्वरूप कथन कर्युं. विशेषस्वरूप आ प्रमाणे छे. औपशमिक सम्यक्त्व बे प्रकारनुं छे. १ अंतरकरण औपशमिक सम्यक्त्व, २ स्वश्रेणीगत अर्थात् उपशमश्रेणीगत औपशमिक सम्यक्त्व. हवे अपूर्वकरण करीने जेणें ग्रंथिभेद कर्यो छे, ते मिथ्यात्व कर्म पुद्गलनी राशिना त्रण पुंज करे छे, ते त्रण पुंज आ प्रमाणे छे. १ शुद्ध, २ अर्द्धशुद्ध, ३ अशुद्ध, तेमां शुद्ध पुंज सम्यक्त्व मोहनीय छे, अर्द्धशुद्ध पुंज मिश्रमोहनीय छे, अने अशुद्धपुंज मिथ्यात्वमोहनीय छे. १ जेम मदन कोद्रवा, जे खावाथी मीणो चडे, तेने खांडी, तुस उतारी, छाण पाणी दइ, शुद्ध करतां, ते कोद्रव खाधाथी, जेम खानारने विशेष मादकता न थाय, तेम जीवने विकल करे, जेथी संदेह, विपर्यय अने मूढताथी जीवतत्वनी परीक्षा करी शके नहि, एवां जे मिथ्यात्वनां दल, तेने यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अने अनिवृत्तिकरण ए त्रणकरणना प्रयोगें शोधतां ते दलनो मात्र एकठाणीउ रस रहे, जेथी जीवतत्वनी परीक्षा विषे मुंझाय नहि, परंतु आत्मस्व-

जावरूप औपशमिक तेमज क्षायिक सम्यक्त्व, तेने उदयें न होय, अने सूक्ष्मपदार्थनेविषे देश शंकायें मेल उपजावे तेथी ते शुद्धदल (पुंज) नुं नाम सम्यक्त्व मोहनीय छे. २ जे मिथ्यात्वदल अर्द्धखांड्या मदनकोद्रवानी पेठे अर्द्धविशुद्ध जे दल, जेथी बेठाणीउं रसमात्र रहे, अने तेम थवाथी जीवने तत्वरुचि न होय, अने अतत्वरुचि पण न होय, एवी मिश्ररुचि जे कर्मदल उपजावे ते मिश्र मोहनीय कर्म छे. ३ अशुद्धपुंज, ते जेवो बांध्यो हतो तेवोज चोठाणीउं, त्रण ठाणीउं तेमज बेठाणीउंरस जे अनुपहत सर्वघाति रसयुक्त कर्मदल, तुषसहित अणखांड्या मदन कोद्रवानी पेठे उन्मादजन्य होवाथी, तत्वसद्दहणामां विपर्यास पणुं करे तेथी ते दल (पुंज) नुं नाम मिथ्यात्व मोहनीय छे. आ त्रण पुंज जे जीव करे नहि, परंतु उदय आवेला मिथ्यात्वने जे क्षय करे छे, अने जे उदय नथी आव्या तेने उपशमावे छे, एवा अंतर्मुहूर्त्त काल सुधी सर्वथा मिथ्यात्वना अवेदक जीवने अंतरकरणमां औपशमिक सम्यक्त्व थाय छे, आ प्रथमभेद छे. तथा उपशम श्रेणि प्रतिपन्नने मिथ्यात्व अनंतानुबंधीनो उपशम थतां स्वश्रेणिगत औपशमिक सम्यक्त्व थाय छे, ते बीजो भेद. आ बंने प्रकारनुं उपशम सम्यक्त्व, सास्वादननी उत्पत्तिमां मूल कारण छे.

हवे सास्वादननुं स्वरूप लखिये छियें. औपशमिक सम्यक्त्ववालो जीव, शांत थयेला अनंतानुबंधी चारे कषायोमांथी क्रोधादि एक पण उदय पाम्या थकां औपशमिकरूप गिरिशिखरथी पडतां; ज्यां सुधी मिथ्यात्वरूप भूतलने प्राप्त थतो नथी, त्यां सुधी, एक समयथी लइने ७ आवलिका सुधी सास्वादन गुणस्थानकवर्त्ती होय छे.

प्रश्नः– व्यक्त बुद्धि प्राप्ति रूप प्रथम, तेमज मिश्रादि गुणस्थानोना उत्तरोत्तर चढण रूपोने तो गुणस्थानकपणुं योग्य छे, परंतु सम्यक्त्वथी पडनार सास्वादनने गुणस्थानपणानो केम संभव होय?

उत्तरः–मिथ्यात्व गुणस्थानकनी अपेक्षाए सास्वादन पण उर्ध्व आरोहण रूप होवाथी गुणस्थान छे. वली मिथ्यात्व गुण अभव्य जीवोने पण थाय छे, परंतु सास्वादन तो भव्य जीवोनेज थइ शके छे, भव्य जीवोमां पण जेउनेज संसार, अर्ध पुद्गल परावर्त्तन, जेटलो बाकी रह्यो

होय, तेउनेज थाय छे, ते कारणथी सास्वादनने पण मिथ्यात्व गुणस्थानकथी आरोहणरूप गुणस्थानकत्व थइ शके छे. सास्वादन गुणमां वर्ततो जीव १ मिथ्यात्व, ४ नरकत्रिक, ८ एकेंद्रियादि जातिचार, ए आतपनाम, १० स्थावर नाम, ११ सूक्ष्म नाम, १२ अपर्याप्त नाम, १३ साधारणनाम, १४ हुंडक संस्थान, १५ सेवार्त्तसंहनन, १६ नपुंसक वेद. आ सोल प्रकृतिनो बंधव्यवछेद करे छे, बाकीनी एकसो एक प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा ३ सूक्ष्मत्रिक, ४ आतप, ५ मिथ्यात्वोदय, ६ नरकानुपूर्वी, आ छ प्रकृतिनो उदय व्यवछेद होवाथी १११ प्रकृति वेदे छे, तथा तीर्थंकर नामनी सत्ता विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे त्रीजा मिश्रगुणस्थानकनुं स्वरूप लखियें छियें. दर्शनमोहनीय प्रकृतिरूप मिश्रमोहकर्मना उदयथी जीवविषये जे समकाल, समरूपें, सम्यक्त्व मिथ्यात्वना मलवाथी अंतर्मुहूर्तसुधी मिश्रित नाव ते मिश्रगुणस्थानक कहेवाय छे. जे जीव सम्यक्त्व मिथ्यात्व बंनेना एकत्र मलवाथी मिश्रनावमां वर्त्ते छे, ते मिश्रगुणस्थानस्थ कहेवाय छे; कारण के मिश्रपणुं जे छे ते बंनेना मेलापनुं एक जात्यंतररूप छे ते बंने नावोनुं जात्यंतर एकरूप होवामां दृष्टांत आ प्रमाणे छे. जेम घोडी तथा गधेडाना संयोगथी जात्यंतर खच्चर उत्पन्न थाय छे, तथा जेम साकर अने दहींना मेलापथी जात्यंतर शिखंड उत्पन्न थाय छे, तेम जीवने, सर्वज्ञ तेमज असर्वज्ञ, बंनेना कहेला धर्मोमां समबुद्धिथी एकसरखी श्रद्धा उत्पन्न थाय, ते जात्यंतर नेदात्मक होवाथी मिश्रगुणस्थानक थाय छे, ज्यारे जीव मिश्र गुणस्थानस्थ होय छे, त्यारे परनवना आयुनो बंध करतो नथी, तेमज मिश्रगुणस्थानकमां छतां जीव मृत्यु पण पामतो नथी, क्यां तो सम्यक् दृष्टि थइ सम्यक् दृष्टि गुणस्थानकमां आवी मरे छे, अथवा तो कुदृष्टि थइ मिथ्यात्वगुणस्थानमां पाछो जइ मरे छे. आ मिश्रनी जेम बारमा क्षीणमोह, तेमज तेरमा सयोगी गुणस्थानोमां पण जीव मृत्यु पामतो नथी. बाकीना अगियार गुणस्थानकोमां जीव मृत्यु पामे छे. वली मिथ्यात्व, सास्वादन अने अविरति सम्यक्दृष्टि, आ त्रण गुणस्थानकोज जीवनी साथे परनवमां जाय छे. बाकी अगियार जातां नथी. तथा जे जीवोए मिथ्यात्वादि गुणस्थानोमां पूर्वे आयु बांधेल छे, अने पछी तेउने

जो मिश्रगुणस्थान प्राप्त थाय छे,तो ज्यारे तेउं मरे छे त्यारे जे गुणस्थानमां तेउंए आयु बांधेल छे, ते गुणस्थानमां जइने तेउं मरेछे, अने तेउंनी गतिपण मृत्यु पामेलाना गुणस्थानकने अनुसारें थाय छे. वली मिश्रगुण स्थानकवाला जीव, १ तिर्यंच गति, २ तिर्यंचायु, ३ तिर्यंचानुपूर्वी, ६ स्त्यानर्द्धित्रिक, ७ दुर्जग, ८ दुःस्वर, ए अनादेय, १३ अनंतानुबंधी चार, १७ मध्यनां चार संस्थान, २१ मध्यनां चार संहनन, २२ नीचगोत्र, २३ उद्योतनाम, २४ अप्रशस्त विहायोगति, २५ स्त्री वेद. आ पच्चीश प्रकृतिनो बंधव्यवछेद करेछे, तथा मनुष्यायु अने देवायु आ बंने आयुष्यना बंध करता नथी, आ सत्तावीश प्रकृतिविना बाकीनी चम्मोतेर प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा ४ अनंतानुबंधी चार, ५ स्थावरनाम, ६ एकेंद्रिय, ए विकलत्रिक, तेउंनो उदय व्यवछेद थवाथी, तेमज मनुष्यानुपूर्वी, अने तिर्यगानुपूर्वी आ बंनेनो उदय न होवाथी, एकसो प्रकृतिनो उदय वेदेछे, अने पूर्वोक्त १४७ प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे चोथा अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानकनुं स्वरूप लखियेछियें. तेमां प्रथम सम्यक्त्व प्राप्तिनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. संज्ञी पंचेंद्रिय जव्य जीवने यथोक्त तत्त्व, यथावत् सर्वेवित्प्रणीत तत्त्वोमां, जीवादि पदार्थोमां, निसर्गथी अर्थात् पूर्वजव अभ्यासविशेषथी उत्पन्न थयो जे अत्यंत निर्मल गुणात्मकरूपस्वजाव, ते स्वजावथी, अथवा गुरुना उपदेशश्रवणथी, रुचिजावना जे प्रगट—उत्पन्न थाय छे, ते सम्यक्त्व, सम्यक्श्रद्धान लक्षण कहेवाय छे. यदाह ॥ रुचिर्जिनोक्ततत्त्वेषु, सम्यक् श्रद्धानमुच्यते ॥ जायते तन्निसर्गेण, गुरोरधिगमेन वा ॥ १ ॥ हवे अविरति सम्यक्दृष्टिपणानी उत्पत्ति कहियेछियें. बीजो कषाय जेनुं नाम अप्रत्याख्यान छे, एवा जे क्रोध, मान, माया, लोज, जेना उदयथी दूर रह्युं छे विरतिपणुं, ते कारणथी केवल सम्यक्त्वमात्र जेउंने होय, एवा गुणस्थानवाला जीवोने, चोथुं अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक होय छे. तात्पर्य ए छे के, जेम कोइ पुरुष, न्यायोपार्जित धन, जोग, विलास, सौंदर्यतायुक्त उत्तमकुलमां जन्म्यो छे, परंतु दुरंत जुगारआदि दुर्व्यसनो सेवन करतां, अनेक अन्यायि कार्यो करवाथी, अपराधी थतां तेने राज्यदंम याने शिक्षा जोगवतां, जेनाथी अजिमान खंडन थयुं छे, एवा

जे कोटवालादि, तेउंनाथी विडंबना पामतां, पोतानां व्यसनजनित कर्मोने विरूप जाणी, पोताना कुलनी सुंदरसुख संपत्तिनी अभिलाषा पण करे छे, तो पण कोटवालोथी छुटीने पूर्वोक्तसुखनो श्वासोछ्वासपण जेम लइ शकतो नथी, तेम आ जीव पण अविरतिपणाने बुरा कर्मनुं फल जाणे छे, अने विरतिना सुंदरसुखनी अभिलाषा पण करे छे, परंतु कोटवाल समान बीजा कषायना बंधनथी छुटवानेज हिंमत पण करी शकतो नथी, अने अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानकनो अनुभव करे छे.

हवे चोथा गुणस्थानकनी स्थिति कहियेछियें. आ गुणस्थानकनी उत्कृष्टी स्थिति तेत्रीश सागरोपमथी कांइक अधिक छे. ते सर्वार्थ सिद्धादि विमानवासिउंनी स्थिति तथा मनुष्यायु अधिकनी, अपेक्षाए छे. वली आ सम्यक्त्व जीवने अर्धपुद्गल परावर्त्तन संसार बाकी रहे छे, त्यारे प्राप्त थाय छे, ते पहेलां थतुं नथी.

हवे सम्यक् दृष्टिनां लक्षण कहियेछियें. १ दुःखी जीवोनां दुःख दूर करवानी जे चिंता, तेनुं नाम अनुकंपा छे. २ कोइ कारणथी क्रोध उत्पन्न पण थइ जाय, तो पण तीव्र अनुशय अर्थात् वैरभावनो अभाव जेनाथी रहे छे तेनुं नाम प्रशम छे. ३ शिवमंदिर चडवावास्ते सोपान समान, सम्यग् ज्ञानादि साधनोमां उत्साह लक्षण अर्थात् मोक्षाभिलाप तेनुं नाम संवेग छे. ४ अत्यंत कुत्सिततर अर्थात् अत्यंत कनिष्ठ एवा संसार रूप बंदीखानामांथी निकलवा वास्ते परम वैराग्यरूप दरवाननी सेवना करवी तेनुं नाम निर्वेद छे. ५ श्री सर्वज्ञप्रणीत समस्तभावोनुं यथार्थ चिंतवन तेनुं नाम आस्तिक्यता छे. आ पांच लक्षण जे जीवमां होय ते भव्यजीव सम्यक् दर्शनथी अलंकृत होय छे.

हवे सम्यक्दृष्टि गुणस्थानवर्त्ति जीवोनुं गतिस्वरूप कहियेछियें. तेमां प्रथम, जीवना परिणाम विशेषरूप जे करण, तेना त्रण प्रकार छे. १ यथाप्रवृत्तिकरण, २ अपूर्वकरण, ३ अनिवृत्तिकरण, पर्वतमांथी निकलती नदीना जलथी आलोड्यमान पथ्थरनी जेम घोलना घंचना न्यायें, जीव आयुकर्म शिवाय बाकीनां साते कर्मनी स्थिति किंचित् उणी एक कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण जे अध्यवसाय विशेषथी करी, ग्रंथिदेश सुधी आवे छे, ते यथाप्रवृत्तिकरण कहेवाय छे, तथा २ जे पूर्वे अप्राप्त एवा अ-

ध्यवसाय विशेषथी जे ग्रंथिने, घननिविड रागद्वेष परिणति रूप कहे छे ते ग्रंथिने भेदवानो जे आरंभ, ते अपूर्वकरण कहेवाय छे. तथा ३ जे अध्यवसायविशेषथी ग्रंथिभेद करीने अनिवृत्त थकां परमआनंद जनक सम्यक्त्व प्राप्त करे छे तेनुं नाम अनिवृत्तिकरण छे. आ त्रणे करणनुं स्वरूप श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणआचार्य आवश्यकना शुद्धांभोनिधि गंधहस्ती महाभाष्यमां त्रण पंथीजनना दृष्टांतथी आ प्रमाणे व्याख्यान करे छे. त्रण पंथीजनो एक नगर जवा सारु निकलतां जंगलना उज्जड रस्तापर चाल्या जता हता. चालतां चालतां विकाल वेला थइ गइ अर्थात् सूर्यअस्त थयो. पंथीजनो मनमां बहुज डरवा लाग्या. तेटलामां तत्काल बे चोर तेउनी नजीक आवी पहोंच्या. चोरोने देखी त्रण मांहेनो एक पंथी जन डरीजवाथी दोडी पाछो भागी गयो. एकने बंने चोरोए पकडी लीधो, अने त्रीजो पंथीजन बंने चोरो साथे लडतां लडतां तेउने मारी कुटीने मुद्दाम नगरें पहोंची गयो. आ दृष्टांतने दार्ष्टांत (सिद्धांत) रूप आ प्रमाणे घटाववुं. उजड जंगल ते मनुष्यभव छे, कर्मोनी स्थिति ते लांबो रस्तो छे, भयनुं स्थानक ते गांठ छे, रागद्वेष ते बंने चोर छे, नगर ते मोक्षस्थान छे. जे पुरुष चोरथी डरी पाछो भागी गयो, तेनी संसारमां परिभ्रमण करवानी स्थिति अधिक छे, जे पुरुषने चोरोए पकडी लीधो, तेमज चोरथी लुंटायो ते पण दुःखी तेमज परिभ्रमण करनार छे, अने जे पुरुष चोरोने मारी कुटी नगर पहोंचीगयो ते सम्यक्दृष्टि मोक्षनगर पहोंचनार तथा सुख प्राप्त करनार छे.

हवे कीडीउना दृष्टांतथी त्रण करणनुं स्वरूप कहियेछियें. जेम कीडीउनो समूह बिलमांथी निकली एक खुंटानी आसपास फर्या करे छे, तेमांथी केटलीएक कीडिउ खुंटा उपर चडे छे, अने केटलीएक खुंटा उपर पहोंचतां पांख आववाथी उडी चाली जाय छे, तेवी रीतें आ त्रण करणनी बाबतमां पण जाणी लेवुं. ज्यारे जीवो यथाप्रवृत्ति करण करीने ग्रंथि देशने प्राप्त थाय छे, अने अपूर्वकरण करी ग्रंथिनो भेद करे छे, त्यारे ग्रंथिभेदकर्या पछी कोइक जीव मिथ्यात्व पुद्गलनी राशिने वेहेंचीने १ मिथ्यात्वमोह, २ मिश्रमोह, ३ सम्यक्त्वमोह, रूप त्रण पुंज करे छे; अने ज्यारे अनिवृत्तिकरण करी विशुद्धमान थतां, उदय आवेला मि-

थ्यात्वनो क्षय करे, अने नहि उदय आवेला मिथ्यात्वने उपशमावे, त्यारे क्षयोपशमिक सम्यक्त्वनी तेउने प्राप्ति थाय छे. ज्यारे जीवोने क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न थाय छे, त्यारे मनुष्यगति अने देवगतिनी प्राप्ति थाय छे. तथा अपूर्वकरण करीने, जेउए त्रण पुंज कर्या छे, एवा जीवो चोथा गुणस्थानकथीज क्षपकपणानो जो आरंभ करेछे, तो अनंतानुबंधी चार कषाय तथा मिथ्यात्व मोह, अने सम्यक्त्व मोह, रूप त्रण पुंज ए सातेनो क्षय करतां तेउने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. हवे ते क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव जो ते वखते अवद्धायु होय तो तेज जवमां मोक्ष प्राप्त करे छे, अने जो आयुनो बंध कर्या पछी क्षायिक सम्यक्त्ववान् थया होय तो त्रीजा जवमां मोक्ष पामे छे, अने जो असंख्यात वर्ष जीवनारा मनुष्य, वा तिर्यंचनुं आयु बांध्या पछी क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थयुं होय तो चोथे जवे मोक्ष प्राप्त करे छे.

हवे अविरति गुणस्थानवर्त्ती जीवनां कृत्य लखियें छियें. व्रतनियम तो तेउने कांइपण होतुं नथी, परंतु देवश्रीवीतराग, जगवान्, परत्मानी तथा पूर्वोक्त लक्षणवाला गुरुमहाराजनी तथा चतुर्विध श्रीसंघनी पूजा, जक्ति, नमस्कार, वात्सल्यादि कृत्यो करे छे, तथा प्राजाविक श्रावक होवाथी शासननी उन्नति तथा शासननी प्रजावना करे छे. चतुर्थ गुणस्थानकवालो जीव, १ तीर्थंकर नामकर्म, २ मनुष्यायु, ३ देवायु, आ त्रण, प्रकृति त्रीजा गुणस्थानवालाथी अधिक बांधे छे, तेथी सत्तोतेर प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा मिश्र मोहनो व्यवछेद थवाथी, अने चार आनुपूर्वी, तथा सम्यक्त्व मोहनो उदय थवाथी, एकसो चार कर्मप्रकृतिने वेदेछे. क्षायिक सम्यक्त्ववालाने १३० कर्मप्रकृतिनी सत्ता होय छे. अने उपशम सम्यक्त्ववालाने चोथा गुणस्थानकथी ते अग्यारमा गुणस्थानकपर्यंत १४० कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे, अने क्षायिक सम्यक्त्ववालाने जे जे गुणस्थानकमां जेटली जेटली कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे ते यथानुक्रम लखवामां आवशे.

हवे पांचमा देशविरति गुणस्थानकनुं स्वरूप लखीयें छीयें. सम्यक् तत्त्वाववोधथी उत्पन्न थयो जे वैराग्य, ते वैराग्यथी जीवने सर्व विरतिपणानी वांछा थायछे, परंतु सर्व विरतिघातक प्रत्याख्यान नामना कषायना उदयथी तेनामां सर्वविरतिपणुं अंगीकार करवानुं सामर्थ्य होतुं

नथी, परंतु जघन्य, मध्यम उत्कृष्टरूप देशविरति ते थइ शकेछे. जघन्य देशविरतिपणामां आकुट्टि स्थूलहिंसा प्रमुखनो त्याग, मद्यमांसादि परिहार, तेमज पंचपरमेष्ठि नमस्कार स्मरणादि छे. यदाह ॥ आउट्टि थूल हिंसाइ, मद्यमंसाइ चायउ ॥ जहन्नो सावउ होइ, जो नमुक्कार धारउ ॥ १ ॥ तथा मध्यम देशविरति अद्रुद्रादि न्यायसंपन्न वैभवादि धर्मयोग्यताना गुणोसहित, तथा गृहस्थ उचित षट्कर्मधर्ममां तत्पर, द्वादश व्रतना पालक, सदाचारवान्, एवा होय ते मध्यम श्रावक जाणवा. तथा उत्कृष्ट देशविरति सचित्तआहारना त्यागी होय, प्रतिदिन एकासणुं करे, ब्रह्मचारी होय, महाव्रत अंगीकार करवानी इच्छावाला होय, अने गृहस्थनो धंधो त्यागेलो होय ते उत्तम श्रावक जाणवा. आ त्रण प्रकारनी विरतिमांथी एकपण प्रकारनी विरति होय ते श्रावक कहेवाय छे. देशविरति गुणस्थानकनी उत्कृष्टी स्थिति देशउणी कोटिपूर्वनी छे.

हवे देशविरतिपणामां ध्याननो संभव कहीयें छियें. आ गुणस्थानकवाला जीवोमां १ अनिष्टयोगार्त्त, २ इष्टयोगार्त्त, ३ रोगचिंतार्त्त, ४ अग्रशौचार्त्त, आ चार पादरूप आर्त्तध्यान, तथा १ हिंसानंदरौद्र, २ मृषानंद रौद्र, ३ चौर्यानंदरौद्र, ४ संरक्षणानंदरौद्र, आ चार पादरूप रौद्रध्यान, मंद होय छे. जेम जेम देशविरतिपणुं विशेष थतुं जायछे. तेम तेम आर्त्त रौद्रध्यान मंद मंदतर थतुं जाय छे. वली जेम जेम देशविरतिपणुं अधिक थतुं जाय छे, तेम तेम धर्मध्यान अधिक अधिक थतुं जाय छे, परंतु मध्यमरूपेंज रहेछे; उत्कृष्ट धर्मध्यान देशविरतिपणामां होतुं नथी. जो उत्कृष्ट धर्मध्यान थइ जाय तो, सर्व विरतिपणुं थइ जाय.

प्रश्नः—पांचमा गुनस्थानमां धर्मध्यान केवी तरेहनुं होय?

उत्तरः— गृहस्थधर्म उचित षट्कर्म, एकादश प्रतिमा, तथा श्रावक व्रतपालनरूप होय. षट्कर्म आ प्रमाणे छे. १ तीर्थंकर भगवंत वीतराग सर्वज्ञनी प्रतिमाद्वारा पूजा करवी, २ गुरुनी सेवा करवी, ३ स्वाध्याय, ४ संयम (इंद्रियदमन) ५ तप, ६ दान. यदाह ॥ देवपूजा, गुरूपास्तिः, स्वाध्यायः संयमस्तपः ॥ दानं चेति गृहस्थानां, षट्कर्माणि दिने दिने ॥ १ ॥ तथा प्रतिमा ते अभिग्रहविशेषने कहेवामां आवे छे ॥ गाथा ॥ दंसण वयसामाइय, पोसहपडिमा अबंभ सचित्ते ॥ आरंभपेस उद्दिठ, व-

ज्ञाए समण नूए य ॥१॥ प्रतिमानुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होय तो श्रीपंचाशक नामा शास्त्रमां प्रतिमा पंचाशक जोवुं तथा श्रावकनां व्रत बार छे. तेनुं विस्तारथी कथन हवे पछी करवामां आवशे. आषट्कर्म एकादश प्रतिमा अने बार व्रत पालवामां मध्यम, धर्मध्यान होय छे. देशविरति गुणस्थानस्थ जीव, अप्रत्याख्यान चार कषाय, मनुष्यगति, मनुष्यायु, मनुष्यापूर्वी, आद्यसंहनन, औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, सर्व मली दशकर्मप्रकृतिनो बंधव्यवछेद करवाथी, सडसठ कर्म प्रकृतिनो बंध करे छे. तथा अप्रत्याख्यान चार, मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यंचानुपूर्वी, नरकत्रिक, देवत्रिक, वैक्रियद्विक, डुर्नग, अनादेयं, अयशःकीर्त्ति, आ सत्तर कर्म प्रकृतिनो उदयव्यवछेद थवाथी सत्याशी कर्म प्रकृतिनुं फल नोगवे छे, अने एकसो आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता छे.

पांचमा गुणस्थान उपरनां जे जे गुणस्थानको छे तेमांथी तेरमुं गुणस्थानक बाद करीने बाकीनां सर्व गुणस्थानकोनी पृथक् पृथक् अंतर्मुहूर्त्तमात्र स्थिति छे, अने छठुं तथा सातमुं गुणस्थानक हिंडोला समानं होवाथी तेनुं उत्कृष्ट कालमान देश उणुं पूर्व कोटि वर्ष छे.

हवे छठा प्रमत्त संयत गुणस्थानकनुं स्वरूप लखियेछियें. सर्व विरति साधु छठा प्रमत्त गुणस्थानकवाला होय छे, ते साधु केवा होय छे? अहिंसादि पांचमहाव्रतना धारक होय छे. ते साधु प्रमत्त शा कारणथी थाय छे? प्रमादसेवन करवाथी प्रमत्त थाय छे. ते प्रमाद पांच प्रकारे छे. ॥ गाथा ॥ मज्जं विषय कसाय, निद्दा विगहीय पंचवी नणिया ॥ ए ए पंच पमाया, जीवं पाडंति संसारे ॥ १ ॥ नावार्थः— मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, तेमज विकथा, आ पांच प्रमाद छे. ते जीवने संसारमां नाखे छे. जे साधु आ पांच प्रमादसंयुक्त होय, तथा जो तेने संज्वलन चोथा कषायनो उदय होय, तो महाव्रतधारक साधु पण अंतर्मुहूर्त सुधी अवश्य सप्रमाद होवाथी प्रमत्त थाय छे. जो अंतर्मुहूर्त्तथी उपरांत प्रमाद सहित वर्ते तो ते प्रमत्त गुणस्थानकथी पण नीचे पडी जाय छे, जो अंतर्मुहूर्तमां प्रमाद रहित थाय तो फरी अप्रमत्त गुणस्थानमां आरोहण करे छे.

हवे प्रमत्त संयत गुणस्थानमां ध्याननो संनव कहियेछियें. आ गुण-

स्थानमां मुख्य तो आर्त्तध्यान छे, उपलक्षणथी रौद्रध्याननो पण संजव छे, कारण के हास्यादि छ नोकषायनुं प्रवर्त्तवुं छे. तथा आज्ञा आदि आलंबनयुक्त धर्मध्याननी गौणता छे. धर्मध्यानना चार पाद छे. १ आज्ञा, २ अपाय, ३ विपाक, ४ संस्थान, यथा ॥ आज्ञापायविपाकानां, संस्थानस्य विचिंतनात् ॥ इत्थं वा ध्येयजेदेन, धर्मध्यानं चतुर्विधं ॥ १ ॥ सर्वज्ञ अर्हंत जगवंतें जे कांइ कथन करेल छे, ते सर्व सत्य छे, मारी समजमां जे जे वस्तुस्वरूप यथार्थ आवतुं नथी, तेनुं मुख्य कारण मारी बुद्धिनी मंदता छे, वली डुषम कालना प्रजावथी तेमज संशय परास्त करनारा गुरुना अजावथी इत्यादि अनेक कारणोथी जिनेश्वर जगवानें कथन करेला तत्वनी सूक्ष्मता मारी समजमां आवती नथी, परंतु अर्हंत जगवंतनुं कथन निःस्वार्थि, एकांत हितकारक, तथा मृषा बोलवाना निमित्त विनानुं इत्यादि जे चिंतवन करवुं ते आज्ञाविचयनामा प्रथम जेद छे.२ राग द्वेष कषायादि जे आश्रव छे, तेनाथी इहलोक परलोकमां अपाय (कष्ट) उत्पन्न थाय छे, ते महाअनर्थना हेतु छे, एवुं जे चिंतवन करवुं ते अपायविचयनामा बीजो जेद छे. ३ क्षणे क्षणे कर्मफलोदय जे विचित्ररूप उत्पन्न थाय छे, तेनाथी सुखडुःखादि जोगवतां, हर्ष, शोक नहि करतां, पूर्वकृत कर्मनो विपाक छे इत्यादि जे चिंतववुं ते विपाक विचयनामा त्रीजो जेद छे. ४ आ लोक अनादि अनंत छे. सर्व पदार्थ उत्पाद, व्यय, ध्रुवरूप छे, तथा पुरुषाकार लोकनुं संस्थान छे, एवुं जे चिंतवन करवुं ते संस्थानविचय नामा चोथो जेद छे. इत्यादि आलंबनयुक्त धर्म ध्याननी गौणता प्रमत्त गुणस्थानमां छे, परंतु सप्रमाद होवाथी मुख्यता नथी.

हवे जो कोइ प्रमत्त गुणस्थानमां निरालंबन धर्मध्यान कहेता होय तो तेनो निषेध करेलो छे, जिनजास्कर (जिनसूर्य) एम कहीगया छे के ज्यां सुधी साधु प्रमादसंयुक्त होय, त्यांसुधी तेने निरालंबन धर्मध्यान होतुं नथी. कारण के प्रमत्तगुणस्थानमां मध्यम धर्मध्याननी पण गौणता कही छे, मुख्यता कही नथी, ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानमां निरालंबन धर्मध्याननो संजव नथी.

हवे जेउ आ अर्थ (कथन) नो स्वीकार न करे तेने कहिये छियें.

के जे साधु सप्रमादी थइने आवश्यक, सामायिकादि षडावश्यक साधक अनुष्ठाननो परिहार करीने, निश्चल, निरालंबन धर्मध्याननो आश्रय करे, ते साधु मिथ्यात्व मोहित जावथी मूढ थयो थको, श्रीसर्वज्ञ प्रणीत जैनागम (सिद्धांत) जाणतो नथी. ते व्यवहारनो त्याग करी दूर वेठो छे, अने निश्चयने प्राप्त करी शक्यो नथी; अने जे जैन सिद्धांतना ज्ञाता छे, तेउ तो व्यवहारपूर्वक निश्चयने साधे छे. यदाह ॥ जइ जिणमयं पवज्जह, तामा विवहारनिछए मुयह ॥ विवहार नउ छे ए, तित्थुछेउ जउ जणिउं ॥ १ ॥ अर्थः— जो जैनमतने अंगीकार करता हो, तेमज जैनमतना साधु थता हो तो व्यवहार, निश्चयनो त्याग करो नहि, जो व्यवहारनो उछेद करशो तो तीर्थनो उछेद थइ जशे, आ कथन उपर दृष्टांत कहीये छियें. कोइ पुरुष पोताना घरमां निरंतर वाजरानी रोटली खाय छें, एकाद दिवस कोइ गृहस्थें तेने निमंत्रण करी अपूर्व मिष्टान्न आहारनुं जोजन कराव्युं. आ मिष्टान्न आहारथी स्वादनो लोलुपी थइने ते पोताना घरनी वाजरानी रोटली निःस्वाद जाणी खातो नथी, अने अंतःकरणमां दुःप्राप्य मिष्टान्ननी अजिलाषा करी रह्यो छे, मिष्टान्न मलतुं नथी, अने वाजरानी रोटली अरुचिकर थवाथी खातो नथी, तेथी उजयभ्रष्ट थइ अंते दुःखी थाय छे, तेवीज रीतें आ जीव पण कदाग्रहरूप जूत वलगी जवाथी प्रमत्त गुणस्थानसाध्य स्थूलमात्र पुण्य पुष्टिनां कारण, षडावश्यकादि कष्टक्रिया करतो नथी, अने कदाचित् प्रमत्त गुणस्थानमां जेनो लाज छे, एवुं निर्विकल्प मनोजनित, समाधिरूप निरालंवन, ध्यानांश अमृत आहारतुल्य प्राप्त थाय छे, तेनाथी उत्पन्न थयो जे परमानंद सुखस्वाद, ते चित्तमां रेहेवाथी प्रमत्त गुणस्थानगत षडावश्यकादि कष्टक्रियाकर्म वाजरानी रोटली समान जाणी, तेनुं सम्यक् रीतें आराधन करतो नथी, अने मिष्टान्न तुल्य निरालंवन ध्यानांश तो प्रथम संहननना अजावथी प्राप्त करी शकतो नथी, तेथी आवश्यकादि क्रिया नहि करवाथी उजयभ्रष्ट थाय छे. आ पंचम कालमां महामुनि, ऋषिउए निरालंवन ध्याननो मनोरथज करेलो छे ॥ तथा च पूर्वमहर्षयः ॥ चेतोवृत्तिनिरोधनेन करणग्रामं विधायोद्धशं । तत् संहृत्य गतागतं च मरुतो धैर्यं समा-

श्रित्य च ॥ पर्यंकेन मया शिवाय विधिवत्, स्थित्वैक जूजूदरी मध्य. स्थेन कदाचिदर्पितदृशा, स्थातव्यमंतर्मुखं ॥ १ ॥ चित्ते निश्चलतांगते प्रशमिते, रागादि निद्रामदे । विद्राणेऽक्षकदंबके विघटिते, ध्वांतभ्रमारंजके ॥ आनंदे प्रविजृंजिते पुरपते, ज्ञाने समुन्मीलिते । मां रक्ष्यंति कदा वनस्थमजितो डुष्टाशयाः श्वापदाः ॥ २ ॥ तथा श्रीसूरप्रजाचार्याः चित्तावदातैर्नवदागमानां, वा जेष जैरागरुजं निवर्त्य ॥ मया कदा प्रौढसमाधिलक्ष्मी, इत्यादि ॥ तथा श्रीहेमचंद्रसूरयः ॥ वनपद्मासनासीनं, क्रोडस्थितमृगार्जकं ॥ कदा घ्रास्यंति वक्रो मां, चरंतो मृगयूथपाः ॥ १॥ शत्रौ मित्रे तृणे स्त्रैणे, हेम्नेऽश्मनि मणौ मृदि ॥ मोक्षे जवे जविष्यामि, निर्विशेषमतिः कदा ॥ २ ॥ जावार्थः– चित्तवृत्तिनो निरोध करीने, इंद्रियसमूह अने तेना विषयोने दूर करीने. पवन अर्थात् श्वासोह्वासनी गत्यागतिनुं रोधन करीने, धैर्यतानुं अवलंवन करीने, पद्मासन वेसीने, कल्याण करवा निमित्ते, विधियुक्त, कोइ, पर्वतनी कंदरा (गुफा) मां वेसीने, एकवस्तु उपर स्थिर दृष्टि करी मुजने अंतर्मुख रहेवुं योग्य ठे. ॥ १ ॥ चित्त निश्चल थतां, राग, द्वेष, कषाय, निद्रा अने मद शांत थतां इंद्रियसमूहकृत विकार दूर थतां, ज्रमारंजक अंधकार प्रलय थतां, ज्ञाननो प्रकाश थतां, अने आनंद प्रगट वृद्धिमान् थतां, आत्म अवस्थामां स्थित एवा मारा जीवने वनमां रहेतां, डुष्टाशयवाला सिंह क्यारे रक्षा करशे ? ॥ २ ॥ वली श्रीसूरप्रजाचार्य पण कहे ठे, हे जगवन् ! तमारा आगम रूप जेषजथी, राग रूप रोगनिवर्त्तवाथी, निर्मल चित्तयुक्त थये, क्यारे एवो दिवस आवशे के जे दिवसे हुं समाधिरूप लक्ष्मीनुं दर्शन करीश ? इत्यादि. तथा श्री हेमचंद्र सूरि कहे ठे के, वनमां पद्मासनथी बेठां थकां, मारा खोलामां मृगनुं बच्चुं आवी वेसे, अने हरणनो स्वामि कालियार मारा मुखने सूंघे, ते समये हुं मारी समाधिमां निश्चल रहुं ॥ १ ॥ तथा शत्रुमां, मित्रमां, तृणमां, स्त्रियोमां सुवर्णमां तेमज पाषाणमां, मणिमां तेमज माटिमां, अने मोक्षमां तेमज संसारमां एकसरखी मतिवालो क्यारे हुं थइश ? ॥ २ ॥ तेवीजरीतें मंत्री वस्तुपाल, तथा परमतमां जर्तृहरिए पण मनोरथ करेला ठे, अने मनोरथ जे लोक करे ठे ते डुःप्राप्य वस्तुनोज करे ठे. जे वस्तु कष्टविना

सुखे मलती होय तेनो मनोरथ कोइ पण करतुं नथी. जे निरंतर मिष्टान्न खाय छे, अने मोटुं राज्य जोगवे छे, ते कदापि मिष्टान्न जोजन तथा राज्य जोगववानो मनोरथ करता नथी. ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानस्थ विवेकि पुरुषोए, परमसंवेग जावथी अप्रमत्त गुणस्थानकनो स्पर्श कर्यो होय ते पण सर्व प्रकारें परम शुद्ध परमात्मतत्त्व संवित्तिनो मनोरथ करवो, परंतु षट्कर्म, षडावश्यकादि व्यवहार क्रियानो परिहार न करवो, अने जे मूढ (अज्ञानी) योग ग्रहथी ग्रस्त छे, तेमज सदाचार व्यवहारथी पराङ्मुख छे, तेनो योगपण कांइ कामनो नथी, तेमज तेनो आ लोक पण नथी, अने परलोक पण नथी, अर्थात् ते जीवो जडात्मा होवाथी उजयज्रष्ट थाय छे ॥ यतः॥ ये तु योगग्रहग्रस्ताः, सदाचार पराङ्मुखाः ॥ एप तेषां च योगोऽपि, न लोकोपि जडात्मनां ॥ १ ॥ इत्यादि. ते कारणथी साधुयें दिवसे तेमज रात्रिमां जे जे दूषणो तेमने लाग्यां होय, तेनो उछेद करवा वास्ते अवश्य षडावश्यकादि क्रिया करवी जोइयें. ज्यां सुधी उपरनां गुणस्थानकोथी साध्य जे निरालंबन ध्यान छे, ते प्राप्त न थाय, त्यां सुधी करवी जोइयें.

प्रमत्त गुणस्थानस्थ जीव, चार प्रत्याख्याननो बंध व्यवछेद होवाथी त्रेसठ प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा तिर्यग्गति, तिर्यगानुपूर्वी, नीचगोत्र, उद्योत तथा प्रत्याख्यान चार आ आठप्रकृतिनो उदय व्यवछेद थवाथी अने आहारक शरीर तेमज आहारक अंगोपांगनो उदय होवाथी एकाशी प्रकृति वेदे छे, अने एकसो आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे सातमा अप्रमत्तगुणस्थानकनुं स्वरूप लखिये छियें. पांच महाव्रतधारी साधु पांच प्रमादना अजावें, अप्रमत्तगुणस्थानस्थ होयछे. तेने संज्वलन चार कषायनो, तेमज नोकषायनो पण उदय मंद होयछे, तात्पर्य के, संज्वलन कषाय तेमज नोकषायनो जेवो जेवो मंद उदय होय तेवो तेवो साधु अप्रमत्त होय. यदाह ॥ यथा यथा न रोचंते, विषयाः सुलजा अपि ॥ तथा तथा समायाति, संवित्तौ तत्वमुत्तमं ॥ १ ॥ यथा यथा समायाति, संवित्तौ तत्वमुत्तमं ॥ तथा तथा न रोचंते, विषयाः सुलजा अपि ॥ २ ॥ अर्थः—जेम जेम सुखें प्राप्त थता विषयो रुचता नथी, तेम तेम उत्तमतत्त्व संवित्तिनो लाज थतो जाय छे, तथा जेम जेम उत्त-

मतत्त्व संविचिनो लाभ थतो जाय छे, तेम तेम सुखें प्राप्त थता विषयो रुचता नथी. वली अप्रमत्तगुणस्थानकवाला जीव जेम जेम मोहनीयकर्मनो उपशम करवामां तेमज क्षय करवामां निपुण थता जाय छे तेम तेम सद्ध्याननो आरंभ करे छे.

दूर कयोंछे सर्वप्रमाद जेणें एवा जे जीव, तथा पंचमहाव्रतधारक साधु, अष्टादश सहस्र शीलांग लक्षण संयुक्त, सदागमअभ्यासी ज्ञानवान् एकाग्रध्यानवान् (ज्ञान ध्यान रूप धन होवाथी) मौनी मौनवान् (कारण के मौनवान्ज ध्यानरूप धनवान् होइ शके छे) एवा पवित्रमुनि पूर्वोक्त सम्यक्त्वमोह, मिश्रमोह, मिथ्यात्वमोह अने अनंतानुबंधी चार, आ सात प्रकृति विना एकवीश प्रकृतिरूप मोहनीय कर्मने उपशम करवामां तेमज क्षय करवामां ज्यारे सन्मुख थायछे, त्यारे सालंबन ध्यान तजीने निरालंबन ध्यानमां प्रवेश करवानो आरंभ करेछे. आ निरालंबन ध्यानमां प्रवेश करनारा योगी त्रण प्रकारना छे. १ यथा प्रारंभकाः, २ तन्निष्ठाः, ३ निष्पन्नयोगाः ॥ यदाह ॥ सम्यग् नैसर्गिकीं वा, विरतिपरिणतिं, प्राप्य सांसर्गिकीं वा ॥ क्वाप्येकांते निविष्टाः, कपिचपलचलन्मानसस्तंभनाय, शश्वन्नासाग्रपाली, घनघटितदृशो, धीरवीरासनस्था । ये निष्पापाः समाधे, र्विदधति विधिनाऽरंभमारंभकास्ते ॥ १ ॥ कुर्वाणोमरुतासनेंद्रियमनः क्षुत्तर्पनिद्राजयं।योंतं जल्पति रूपणान्निरसकृत,तत्त्वं सन्मन्यस्यति ॥ सत्वानामुपरि प्रमोदकरुणा मैत्रीदृशं मन्यते। ध्यानाधिष्ठितचेष्टयाऽभ्युदयते, तस्येह तन्निष्ठता ॥ २ ॥ उपरतबहिरंतर्जल्पकल्लोलमाले, लसदविकलविद्या पद्मिनीपूर्णमध्ये ॥ सततममृतमंतर्मानसे यस्य हंसः, पिबति निरुपलेपः सोत्र निष्पन्नयोगी ॥ ३ ॥

हवे अप्रमत्तगुणस्थानमां ध्याननो संभव कहीये छिये, सर्वज्ञनुं कथन करेलुं धर्मध्यान मैत्रीप्रमुख अनेक भेदरूप छे ॥ यदाह ॥ मैत्र्यादिभिश्चतुर्भेदं, यद्वाज्ञादि चतुर्विधं ॥ रूपस्थादि चतुर्धा वा, धर्मध्यानं प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥ मैत्रीप्रमोद कारुण्य, माध्यस्थानि नियोजयेत् ॥ धर्मध्यानमुपस्कर्तुं, तद्धि तस्य रसायनं ॥ २ ॥ आज्ञापायविपाकानां, संस्थानस्य चिंतनात् ॥ इत्थं वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यानं प्रकीर्तितं ॥ ३ ॥ धर्मध्यान मैत्रीनामप्रमुख चार भेद छे. तथा आज्ञाविचयप्रमुख चार भेदे छे, अने

रूपस्थ प्रमुख चार भेदें छे. प्रथम मैत्रीभावादि चार भेदनुं स्वरूप कहीये छियें. १ सर्वजीव साथे प्रेमभावनुं चिंतवन करवुं, सर्व जीवनुं भलुं चाहवुं, कोइ जीवनुं बुरुं चाहवुं नहि, सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी ते मैत्रीभावना, २ गुणवंत प्राणीउपर तेमज ज्ञानीप्रमुख उत्तम जीवोनां शुभकार्योथी तेउनुं बहुमान करवुं तथा हर्ष करवो ते प्रमोद भावना, ३ दुःखी तेमज दीन प्राणीउनुं शुभ चिंतवन करी तेउनुं दुःख दूर करवानी, तेमज धर्महीन प्राणीने धर्म पमाडवानी अभिलाषा ते करुणाभावना, ४ हिंसादि अघोर कर्मना करनारा तेमज देवगुरु अने धर्मनी निंदा करनारा एवा दुष्ट आशयवाला जीवोनुं बुरुं नहि चाहतां, तेउ पोतपोताना कर्मवश छे, एम विचारी तेउना उपर रागद्वेष नहि राखतां मध्यम परिणामें वर्तवुं ते माध्यस्थ भावना. बीजा आज्ञाविचय प्रमुख चार भेदनुं स्वरूप छठ्ठा गुणस्थानक विचारमां वर्णन करेलुं छे. हवे रूपस्थादि चार भेदनुं स्वरूप कहीयें छियें. १ रूपमां रह्या छतां पण आमारो जीव अरूपी अनंतगुणी छे, परंतु अरिहंतना अतिशयनुं अवलंबन करी ते स्वरूप साथे आत्मस्वरूपनी एकता ते रूपस्थध्यान, २ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव, तेमां अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय अने साधुपणाना सर्व गुणछे, एम निर्धार करी गुणीना गुणरूप पिंडनुं ध्यान, करवुं ते पिंडस्थध्यान, ३ अरिहंतादि पंचपरमेष्टीना गुणनुं स्मरण करी तेनुं वाणी व्यापाररूप ध्यान ते पदस्थध्यान, ४ निरंजन, निर्मल, संकल्प विकल्परहित, अभेद एक शुद्ध सत्तास्वरूप, चिदानंद, तत्वामृतरूप, असंग, अखंड, अनंत गुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान ते रूपातीतध्यान. ए प्रमाणे जिनेश्वरभगवानें कथन करेलुं धर्मध्यान अप्रमत्तगुणस्थानमां मुख्य वृत्तिए अर्थात् प्रधानपणे होयछे. रूपातीतभेद शुक्लध्यानरूप होवाथी अंशमात्र गौणपणे रहेछे, अप्रमत्तगुणस्थानमां आवश्यक क्रियानो अभाव छे, छतांपि शुद्धपणुं छे ते कहीयें छियें.

अप्रमत्तगुणस्थानमां सामायिकादि षट् आवश्यक नथी. व्यवहार क्रियारूप नथी, परंतु निश्चयसामायिकादि छे. सामायिकादि सर्व आत्माना गुण छे "आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे" अ-

र्थात् आत्माज सामायिक छे, आत्माज सामायिकनो अर्थ छे. अ सिद्धांतनां वचन छे.

प्रश्नः—अप्रमत्तगुणस्थानमां व्यवहार क्रियारूप षट्कावश्यक शा वास्तेनहि

उत्तरः—अप्रमत्त गुणस्थानमां सत् ध्यानना योगथी निरंतर ध्यनमांज प्रवृत्ति छे. स्वाभाविकी, सहज, नित्य संकल्पविकल्परूपमालानो अभाव होवाथी आत्मा निर्मल एकस्वभावरूप रहेछे, आ गुणस्थानमा वर्त्तता जीव, भावतीर्थस्नान करीने परमशुद्धि प्राप्त करेछे. यदाह ॥ दाहोवसमं तण्हाइ, छेयणं मलप्पवाहणं चेव ॥ तिहिं अछेहिं निउत्तं, तम्हातं दवउं तिछं ॥ कोहंमिउ निग्गहिये, तण्हाइ छेयणं जाण ॥ २ ॥ अठवियं कम्मरयं, वहुएहिं भवेहिं संचियं जम्हा ॥ तव संयमेण धोयइ, तम्हातं भावओ तिछं ॥ ३ ॥ अर्थः— दाह उपशांत करे, तृषा छीपावे, शरीरनो मल दूर करे, आ त्रण अर्थने सिद्ध करनारां गंगा, मागधादि द्रव्यतीर्थ कहेवाय छे, १ क्रोधनो निग्रह करवाथी दाहउपशम थाय छे, लोभनो निग्रह करवाथी तृषानो छेद थाय छे, अने अनेक भवनी संचय करेली अष्टकर्मरूप रजथी आत्मस्वरूपने लागेलो मेल, तप संयमथी धोवाथी, आ गुणस्थान भावतीर्थ कहेवाय छे. अन्यच्च ॥ रुद्धप्राणप्रचारे, वपुषि नियमिते, संवृतेऽक्षप्रपंचे । नेत्रस्पंदे निरस्ते, प्रलय मुपगतें, तर्विकल्पेंद्रजाले ॥ भिन्ने मोहांधकारे, प्रसरति महसि, कापि विश्वप्रदीपे । धन्योध्यानावलंबी, कलयति परमानंदसिंधौ प्रवेशं ॥ १ ॥ अर्थः— श्वासोश्वासनुं गमनागमन जेणें रोकेलुं छे, जेणें पोताना शरीरने स्वाधीन कर्युं छे, जेणें पांचे इंद्रियोने पोतपोताना विषयथी रोकेली छे. जेणे नेत्रोनो संचार बंध करेलो छे, जेणे अंतर्विकल्परूप इंद्रजालनो नाश करेलो छे, जेणें मोहरूप अंधकारनो लय करेलो छे, अने जेने त्रिभुवनप्रकाशक ज्ञानप्रदीप प्रगट थयेल छे, एवा ध्यानावलंबी पुरुषने धन्य छे, जे परमानंदरूपसमुद्रमां प्रवेश करे छे.

अप्रमत्त गुणस्थानस्य जीव, १ शोक, २ रति, ३ अरति, ४ अस्थिर, ५ अशुभ, ६ अयश, ७ अशाता वेदनी, आ सात प्रकृतियोनो बंधव्यवछेद करे छे, १ आहारक, २ आहारक उपांग, अने जो देवायु न बांधे । अठावन प्रकृतिनो बंध करे छे, अने देवायु बांधे तो ठगणसाठ प्र-

कृतिनो बंध करे छे, तथा स्त्यानर्द्धित्रिक अने आहारकद्विकनो उदय व्यवच्छेद करे तो छोंतेर प्रकृतिनुं फल वेदे छे, अने १३८ प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे आठमा अपूर्वकरण, नवमा अनिवृत्तिबादर, दशमा सूक्ष्म संपराय, अगीआरमा उपशांतमोह, बारमा क्षीणमोह, आ पांच गुणस्थाननुं स्वरूप सामान्य प्रकारें लखिये छियें.

चारित्रमोहनीयनी एकवीश प्रकृति उपशमाववा तेमज क्षय करवा वास्ते, अत्यंत विशुद्ध अध्यवसायथी, वीर्यविशेष उल्लसित थये थके, तेनो रसघात, स्थितिघात, गुणश्रेणि, गुणसंक्रम, अपूर्वस्थितिबंध, जेम धूरसमयथी थवा मांडे ते अपूर्वकरणनामा आठमुं गुणस्थान छे, तेनुं नाम अपूर्वकरण कहेवानो हेतु ए छे के आ गुणस्थानमां अपूर्व आत्म गुणनी प्राप्ति थाय छे.

जे भोग दीठा होय, सांभल्या होय, तेमज अनुभव्या होय, तेनी कांक्षारूप संकल्प विकल्पनो ज्यां अभाव थवाथी, निश्चय, प्रधान परिणतिरूप, परमात्मैकस्वरूप भावनी जे स्थानमां निवृत्ति थती नथी, ते कारणथी तेनुं नाम अनिवृत्ति गुणस्थान कहेवाय छे, तेनुं नाम अनिवृत्ति बादर कहेवानो हेतु ए छे के अहींयां अप्रत्याख्यानादि बार कषाय, तथा नव नोकषायने उपशमाववा वास्ते तेमज क्षय करवा वास्ते बहुज उद्यम थाय छे, तेथी ते नवमुं अनिवृत्ति बादर छे.

तथा सूक्ष्म परमात्मतत्व भावना बलथी सत्तावीश प्रकृतिरूप मोह उपशांत थतां तथा क्षय थतां, एक सूक्ष्म खंमभूत लोभनुं अस्तित्व ज्यां छे ते सूक्ष्मसंपराय नामा गुणस्थानक छे. संपराय, कषायनामवाची छे, ते कारणथी आ गुणस्थानकनुं नाम सूक्ष्मसंपराय छे.

तथा उपशमकज उपशम मूर्त्तिरूप सहजस्वभावबलथी सकल मोह कर्म उपशांत करवाथी उपशांतमोहनामक अगीआरमुं गुणस्थान तथा क्षपकनेज क्षपकश्रेणि मार्गथी दशमा गुणस्थानथीज निःकषाय, शुद्ध, आत्मभावना बलथी, सकल मोहनो क्षय करवाथी क्षीणमोह नाम बारमुं गुणस्थानक होय छे.

हवे अपूर्व करणादि अंशथीज बंने श्रेणी आरोहनुं स्वरूप कहियेछियें.

अपूर्व करण स्थानमां आरोह समयमां अपूर्वकरणना प्रथम अंशथीज उपशमक, उपशमश्रेणिए चढेछे, अने क्षपक, क्षपकश्रेणिए चढेछे.

हवे प्रथम उपशम श्रेणिए चढवानी योग्यता कहियेछियें. उपशमक मुनि शुक्ल ध्याननो प्रथम पायो, जेनुं स्वरूप हवे पछी कथन करवामां आवशे, तेनुं ध्यान करतां उपशमश्रेणि अंगीकार करे छे. केवी स्थितिवाला ते मुनि छे ? पूर्वगत श्रुतना धारक, निरतिचार चारित्रवान्, प्रथमना त्रण संहननयुक्त, एवा मुनि उपशम श्रेणि करे छे.

उपशमश्रेणिवाला मुनि जो अल्प आयुष्यवाला होय तो काल करीने पांच अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थाय छे, परंतु जेउने प्रथम संहनन होय तेज अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थाय छे. बीजा संहननवाला अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थता नथी, सेवार्त्त संहननवाला चोथा महेंद्रदेव लोकसुधी जइ शके छे, अर्थात् त्यां सुधी उत्पन्न थाय छे. बाकीना कीलिकादि चार संहननवाला बबे देवलोक उत्तरोत्तर वृद्धि करतां, त्यां सुधी गमन करी शके छे. प्रथम संहननवाला मोक्ष सुधी गमन करी शके छे; अने जेनुं आयुष्य सात लव अधिक होत तो ते अवश्य मोक्षें जात तेज सर्वार्थसिद्ध विमानमां उत्पन्न थाय छे, यदाह ॥ सत्तलवा जइ आउं, पहुप्पमाणं तउंहु सिज्झंता ॥ तित्तियमित्तं नहुयं, तत्तो लवसत्तमा जाया ॥१॥ सव्वठ सिद्धनामे, उक्कोसठिसु विजय माईसु ॥ एगावसेसगब्भा, हवंति लवसत्तमा देवा ॥ २ ॥

प्रश्नः—उपशम श्रेणिवाला मोक्षयोग्य केवीरीतें थइ शके छे ?

उत्तरः—सात लव, एक मुहूर्त्तनो अगीआरमो भाग छे. हवे लव सात बाकी रह्युं छे आयुष्य जेने, एवा उपशम श्रेणि खंडित करनारा, पराङ्मुख थयेला, सातमा गुणस्थानकमां आवीने फरी क्षपक श्रेणि मांडीने सातलवनी वचमांज क्षीणमोह गुणस्थानक प्राप्त करी अंतःकृत केवली थइ मोक्ष गमन करे छे. ते कारणथी दूषण नथी. तथा जे पुष्टायुवाला उपशम श्रेणि करे छे. ते अखंडित श्रेणिथी चारित्र मोहनीयनो उपशम करीने अगीआरमा गुणस्थानकें पहोंची उपशम श्रेणि समाप्त करी नीचे पडे छे.

हवे उपशमकजः अपूर्वादि गुणस्थानकोमां जे करे छे ते कहियेछीयें.

श्रेणि ते नवमां करी शकता नथी. यदाह ॥ जीवोहु एक जम्मंमि, इक्कसिं उवसामगो ॥ खयति कुज्जानो कुज्जा, दोवारे उवसामगो ॥ १ ॥

हवे उपशम श्रेणिवालाना नवोनी संख्या कहियें ठियें. आ संसारमां एकजीव आश्रयी अनेक नवमां थइ चार वार उपशम श्रेणि थाय ठे, अने एकनवमां बे वार थाय ठे. यदाह ॥ उवसम सेणि चउक्कं, जायइ जीवस्स आनवं नूणं ॥ तो पुण दो एगनवे, खवगे स्सेणी पुणोएगा ॥ १ ॥ उपशम श्रेणिनी स्थापना आ आगलना मंत्रथी जाणी लेवी. आ मंत्रनी संवादक आ गाथा ठे. गाथा ॥ अणदंसण पुंसिछी, वेयठक्कं च पुरिसवेयं च ॥ दोदो एगंतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ १ ॥ अर्थः- प्रथम अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोननो उपशम करे ठे, पठी मिथ्यात्वमोह, मिश्रमोह, अने सम्यक्त्व मोहने उपशमावे ठे, पठी नपुंसकवेद, पठी स्त्रीवेद, पठी हास्य, रति, अरति, नय, शोक, जुगुप्सा, ठ नोकषायने उपशमावे ठे, पठी पुरुषवेद, पठी अप्रत्याख्यानी क्रोध, तथा प्रत्याख्यानी क्रोध, पठी संज्वलन क्रोध, पठी अप्रत्याख्यानी मान, तथा प्रत्याख्यानी मान, पठी संज्वलन मान, पठी अप्रत्याख्यानी माया तथा प्रत्याख्यानी माया, पठी संज्वलन माया, पठी अप्रत्यख्यानी लोन, तथा प्रत्याख्यानी लोन, पठी संज्वलन लोन ए प्रमाणे अनुक्रमें उपशांत करे ठे.

हवे क्षपक श्रेणिनुं स्वरूप कहियेंठियें. आठमा गुणस्थानकनी पेहेलां योगी (क्षपक मुनि) क्षपक श्रेणिए चडीने कर्मक्षय करवामां प्रवृत्त थतां जे जे क़र्म प्रकृतिनो क्षय करे ठे, ते लखीए ठीयें. चरमशरीरी, अवद्धायु, अल्पकर्मीने क्षपकमुनिनो चोथा गुणस्थानमां नरकायुनो क्षय थइ जवाथी, तथा पांचमा गुणस्थानमां तिर्यगायुनो क्षय थइ जवाथी, सातमा गुणस्थानमां देवायुनो क्षय थइ जाय ठे. वली अहींयां सातमा गुणस्थानमां दर्शनमोहसप्तकनो पण क्षय थइ जाय ठे. त्यार पठी क्षपकमुनिने एकसो आडत्रीश कर्मप्रकृतिनीज सत्ता रहे ठे त्यारे, आठमा गुणस्थानकनी प्राप्ति थाय ठे. केवी रीतें थाय ठे ? उत्कृष्ट धर्मध्यान, रूपातीत लक्षणरूप, तेनुं वारंवार सेवन करतां अन्यासरूप थई जवाथी तत्त्वप्राप्ति थाय ठे. यदाह ॥ अन्यासेन जिताहारो, ऽन्यासेनैव जितासनः ॥ अन्यासेन जितश्वासो, ऽन्यासेनैवानितत्रुटिः ॥ १ ॥

अभ्यासेन स्थिरं चित्त, मभ्यासेन जितेंद्रियः ॥ अभ्यासेन परानंदा-ऽभ्यासेनैवात्मदर्शनं ॥ २ ॥ अभ्यासवर्जितैर्ध्यानैः, शास्त्रार्थैः फलमस्ति न ॥ नवेन्नहि फलैस्तृप्तिः, पानीयप्रतिबिंबितैः ॥ ते कारणथी अभ्यासथीज विशुद्धतत्वानुयायिनी बुद्धि थाय छे.

हवे आठमा गुणस्थानमां शुक्लध्यान जेनुं स्वरूप हवे लखवामां आवशे तेनो आरंभ थाय छे ते कहिये छियें. शुक्लध्याननो प्रथम पायो पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार नामनो छे. तेनुं ध्यान करनार मुनि वज्ररुषजनाराच नामा प्रथम संहननयुक्त होय छे.

हवे ध्यान करनारनुं स्वरूप कहियेंछियें. योगींद्र, क्षपकमुनींद्र, व्यवहार अपेक्ष्य, ध्यान करवाने योग्य थाय छे, शुं करीने? निविड, दृढ, पर्यंकासन करीने, केवी रीतें? निश्चल आसन करीने; कारण के आसन जयज ध्यानना प्रथम प्राण छे. यदाह ॥ आहारासण निद्दा, जयं च काऊण जिणवर मएण ॥ जाइज्ज नियं अप्पा, नवइठं जिणवरिंदेण ॥ १ ॥ पर्यंकासन जंघाना अधोभागमां पग उपर करवाथी थाय छे. वली केटलाएक सिद्धासन करेछे, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. ॥ योनिं वामपदा परेण निबिडं, संपीड्य शिश्नं हनुं । न्यस्योरस्यचलेंद्रियः स्थिरमना लोलां च ताल्वंतरे ॥ वंशस्थैर्यतया सुनिश्चलतया, पश्यन् भ्रुवोरंतरं । योगी योगविधिप्रसाधनकृते, सिद्धासनं साधयेत् ॥ १ ॥ वली आसननो कांइ नियम नथी एम पण बतावेलुं छे, जे आसनथी चित्तनी स्थिरता थाय, एवुं गमे तेवा प्रकारनुं आसन होय, ते वास्तविक छे. वली ते योगींद्र केवा होय छे? नासिकाना अग्रभागमां जेणे नेत्रनी दृष्टि स्थापन करेली छे, एवा प्रसन्ननेत्रवाला छे, कारण के नासाग्रन्यस्त लोचनवालाज ध्यानना साधक होय छे ॥ यदाह ॥ ध्यानदंडकस्तुतौ ॥ नासावंशाग्रभाग, स्थितनयनयुगो, मुक्तताराप्रचारः । शेषाक्षक्षीणवृत्ति, स्त्रिभुवनविवरो, भ्रांतयोगैकचक्षुः ॥ पर्यंकातंकशून्यः, परिगलितघनो, श्वासनिःश्वासवातः । सद्ध्यानारंभमूर्त्ति, श्चिरमवतु जिनो, जन्मसंभूतिभीतेः ॥ १ ॥ वली ते योगींद्र केवा होय छे? किंचित् उन्मीलित अर्द्धविकसित नेत्र छे जेनां, कारण के योगियोनां समाधिसमयमां नेत्र अर्द्धविकसित होय छे. ॥ यदाह ॥ गंभीरस्तंभमूर्तिं, व्यपगतकरणं, व्यापृ-

तिर्मंदमंदं । प्राणायामोललाट, स्थलनिहितमना, दत्तनासाग्रदृष्टिः ॥ नाऽत्युन्मीलन्निमील, न्नयनमतितरां, बद्धपर्यंकबंधो । ध्याने प्रध्याय शुक्लं, सकलविदन्नव, यः सपायाज्जिनोवः ॥ १ ॥ वली केवा छे ते योगींद्र ? मन, चित्त, अंतःकरणना विकल्परूप व्यापारने बंध कर्यो छे, जेणें कारण के विकल्पज दृढकर्म बंधननो हेतु छे. यदाह ॥ शुन्नावाह्यशुन्नावापि, विकल्पा यस्य चेतसि ॥ सस्वं बध्नात्ययः स्वर्ण, बंधना तेन कर्मणा ॥१॥ वरं निद्रा, वरंमूर्छा, वरं विकलताऽपि वा ॥ नत्वार्त्तरौद्रदुर्लेश्या, विकल्पाकुलितं मनः ॥ २ ॥ वली ते योगी केवा छे ? संसारनो उच्छेद करवा वास्ते उद्यम छे जेनो एवा छे, कारण के नवने उच्छेद करवानी अन्निलाषावाला ध्यानवानेज योगनी सिद्धि थाय छे. यदाह ॥ उत्साहान्निश्चयाद्धैर्या, त्संतोषात्तत्त्वदर्शनात् ॥ मुनेर्जनपदत्यागा, त्पड्न्नियोगः प्रसिद्ध्येदिति ॥ १ ॥ तथा योगींद्रमुनि पवनने उर्ध्व प्रचाराति दशमद्वार गोचर प्राप्त करे छे. शुं करीने प्राप्त करे छे ? अपानद्वार मार्गथी गुदाने रस्ते पोतानी इच्छाथी निकलता पवनने संकोचीने, मूलबंध युक्ति पूर्वक करे छे. ते मूलबंध आ छे ॥ पार्ष्णिन्नागेन संपीड्य, योनिमाकुंचयेद्गुदं ॥ अपानमूर्ध्वमाकृष्य, मूलबंधोनिगद्यते ॥ १ ॥ आ आकुंचन कर्मेज प्राणायामनुं मूल छे. ॥ यदुक्तं ॥ ध्यानदंडस्तुतौ ॥ संकोच्यापानरंध्रं हुतवह सदृशं, तंतुवत्सूक्ष्मरूपं । धृत्वा हृत्पद्मकोशे, तदनु च गलके तालुनि प्राणशक्तिं ॥ नीत्वा शून्यां, पुनरपि खगतिं, दीप्यमानं समंतात्, लोकालोकावलोकां, कलयति सकलां यस्य तुष्टो जिनेशः ॥ १ ॥

हवे पूरक प्राणायामनुं स्वरूप कहियेंछियें. योगी पूरक ध्यानना योगथी अतिप्रयत्नपूर्वक सर्व देहगतनाडीसमूहने पवनथी पूरे छे. शुं करीने ? बार आंगल सुधी पवननुं आकर्षण करीने, अर्थात् बहारथी सर्व बाजुएथी चार आंगलप्रमाणे पवनने खेंचीने पूरेछे. तात्पर्य ए छे के आकाश तत्व वहेतां थकां नासिकानी अंदरज पवन होयछे, अग्नितत्व वहेतां थकां चार आंगल प्रमाण बहार पवन उर्ध्वगति स्फुरे छे, वायु तत्व वहेतां छ आंगल प्रमाण बहार पवन तिर्यग् स्फुरे छे, पृथ्वीतत्व वहेतां थकां आठ आंगल प्रमाण बहार पवन मध्यम नागमां रहे छे, अने जल तत्व वहेतां थकां बार आंगल प्रमाण पवन नीचे वहे छे. एवी

रीते बार आंगल पर्यंत वारुण मंडल प्रचार अमृतमय पवन आकर्षणथी तेनुं नाम पूरकध्यानकर्म कहेवाय छे.

हवे रेचक प्राणायाम कहियें छियें. पूरक ध्याननी अनंतर साधक योगी, योगसामर्थ्यथी तेमज प्राणायाम अभ्यासवलथी रेचकनामा पवन, नाभिकमल उदरथी हलवे हलवे बहार काढे छे, तेनुं नाम रेचक ध्यान छे. यदाह ॥ वज्रासनः स्थिरवपुः स्थिरधीः सचित्त, मारोप्य रेचक समीरणजन्मचक्रे ॥ स्वांतेन रेचयति नाडिगतं समीरं, तत्कर्म रेचक मिति प्रतिपत्तिमेति ॥ १ ॥

हवे कुंभक ध्यान कहियें छियें. योगी कुंभकनामा पवन, नाभिपंकज कुंभक ध्यान अर्थात् कुंभककर्मप्रयोगथी कुंभवत् अर्थात् घडारूपें अतिशयेंकरी स्थिर करे छे. ॥ यदाह ॥ चेतसि श्रयति कुंभकचक्रं, नाडिकासु निविडीकृतवातः ॥ कुंभवत्तरति यज्जलमध्ये, तद्वदंति किल कुंभककर्म ॥ १ ॥ इति लेशमात्र प्राणायामस्वरूपं.

हवे पवन जीतवाथी मन वश थाय छे, तेनुं स्वरूप कहियेंछियें. ज्यां मन छे, त्यां पवन छे, अने ज्यां पवन छे, त्यां मन छे. यदाह ॥ दुग्धांबुवत् संमिलितौ सदैव, तुल्यक्रियौ मानसमारुतौ हि ॥ यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्ति, र्यावन्मरुत्तत्र मनःप्रवृत्तिः ॥ १ ॥ तत्रैकनाशादपरस्य नाश, एकप्रवृत्तेरपरप्रवृत्तिः ॥ विध्वस्तयोरिंद्रियवर्गशुद्धि, स्तद्ध्वंसनान्मोक्षपदस्य सिद्धिः ॥ २ ॥ आ प्रमाणे पूरक, रेचक, कुंभक पवनोनां अनुक्रमें आकुंचन, निर्गमन साधीने, वायुनो संग्रह, तेमज चित्तनुं एकाग्रपणुं चिंतन करीने समाधिविषे निश्चलपणुं धारण करे छे, कारण के पवन जीतवाथीज मन निश्चल थाय छे. यदाह ॥ प्रचलति यदि, क्षोणी चक्रं, चलंत्यचला अपि । प्रलयपवन, प्रेंखालोला, श्चलंति पयोधयः ॥ पवन जयिनः, स्वावष्टंभ, प्रकाशितशक्तयः । स्थिरपरिणते, रात्मध्याना, च्चलंति न योगिनः ॥ १ ॥

हवे भावनीज प्रधानतानुं स्वरूप कहीयें छियें. क्षपक श्रेणि आरोह करतां प्राणायामनो क्रम अर्थात् प्रौढ पवननो अभ्यासक्रम जे कहेलो छे, ते प्रागल्भ्यता अर्थात् रूढिपूर्वक जे प्रसिद्ध छे, तेम बतावेलो छे परंतु प्राणायाम करे तोज क्षपकश्रेणिए चडी शके एवो कांइ नियम नथी,

कारण के क्षपकनो भावज क्षपक श्रेणिनुं कारण छे, परंतु प्राणायामादि जे आडंबर छे ते कारण नथी. यथा चर्पटिनापि ॥ नासाकंदं नाडीवृंदं, वायोश्चारः प्रत्याहारः ॥ प्राणायामो बीजग्रामो, ध्यानाभ्यासो मंत्रन्यासः ॥ १ ॥ हृत्पद्मस्थं भ्रूमध्यस्थं, नासाग्रस्थं श्वासांतःस्थं ॥ तेजः शुद्धं ध्यानं बुद्धः, ॐकाराख्यं सूर्यप्रभाख्यं ॥ २ ॥ ब्रह्माकाशं शून्याभासं, मिथ्याजल्पं चिंताकल्पं ॥ कायाक्रांतं चित्तभ्रान्तं, त्यक्त्वा सर्वं, मिथ्या गर्वं ॥ ३ ॥ गुर्वादिष्टं चिंतितमिष्टं, देहातीतं भावोपेतं ॥ त्यक्त्वा द्वंद्वं, नित्यानंदं, शुद्धं तत्वं जानीहि त्वं ॥ ४ ॥ अन्यच्च ॥ ओंकाराऽभ्यसनं विचित्रकरणैः, प्राणस्य वायोर्जया । त्तेजश्चिंतनमात्मकायकमले, शून्यांतरालंबनं ॥ त्यक्त्वा सर्वमिदं कलेवरगतं, चिंतामनोविभ्रमं । तत्वं पश्यत जल्पकल्पनकला, ऽतीतं स्वभावस्थितं ॥ १ ॥ आ सर्व रूढिपूर्वक क्षपक श्रेणिना आडंबर छे, परंतु तत्वथी तो मरुदेवादिवत् भावज प्रधान छे.

हवे शुक्ल ध्यानना प्रथम पायानुं नाम कहीयें छियें. मन, वचन, कायाना योगने वशकरनार मुनिने शुक्लध्याननो प्रथम पाद थाय छे, ते पाद केवो छे ? वितर्कसहित जे वर्ते ते सवितर्क, विचारसहित जे वर्ते ते सविचार, पृथक्त्वसहित जे वर्ते ते सपृथक्त्व. आ त्रणविशेषणयुक्त होवाथी शुक्लध्यानना प्रथम पायानुं नाम सपृथक्त्व, सवितर्क, सप्रविचार छे.

हवे आ त्रणे विशेषणोनुं स्वरूप कहीयें छीयें. पूर्वोक्त प्रथम शुक्लध्यान त्रयात्मक क्रमोक्रमें गृहीत विशेष त्रण रूपें छे. तेमां श्रुतचिंतारूप वितर्क छे, तथा शब्द अर्थ योगांतरमां जे संक्रमण करवुं ते विचार छे, अने द्रव्य, गुण, पर्यायादिथी जे अन्यपणुं छे ते पृथक्त्व छे.

हवे आ त्रणे विशेषणना प्रगट अर्थ कहियेंछियें, जे ध्यानमां अंतरंगध्वनिरूप वितर्क, विचार रूप होय ते सवितर्क ध्यान छे, कारण के स्वकीय निर्मल परमात्मतत्व अनुभवमय अंतरंग भावगत आगमना अवलंबनथी आ सवितर्कध्यान थाय छे. जे ध्यानमां पूर्वोक्त वितर्क विचारणरूप अर्थथी अर्थांतरमां संक्रमण होय, शब्दथी शब्दांतरमां संक्रमण होय, तथा योगथी योगांतरमां संक्रमण होय ते सविचार संक्रमण कहेवाय छे. तथा जे ध्यानमां पूर्वोक्त वितर्क सविचार अर्थ व्यंजन योगां-

तर संक्रमणरूप पण शुद्धात्मानी पेठे द्रव्यथी द्रव्यांतरमां जाय ठे, अथवा गुणोथी गुणांतरमां जाय ठे, अथवा पर्यायोथी पर्यायांतरमां जाय ठे, तेमां सहजावी ते गुण ठे; जेम के सुवर्णमां स्निग्धता, पीतता ठे, इत्यादि, अने क्रमजावी ते पर्याय ठे, जेमके सुवर्णमां मुद्रा, कुंडलादि. ते द्रव्यगुण पर्यायांतरोमां जे ध्यानमां अन्यत्व पृथक्त्व ठे ते सपृथक्त्व ठे.

हवे शुक्ल ध्यानथी जे शुद्धि थाय ठे ते कहियें ठियें. समाधिवान् योगी पूर्वोक्तत्रयात्मक पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार शुक्ल ध्यानने ध्यातां थकां परम प्रकृष्ट विशुद्धिने प्राप्त थाय ठे, ते शुद्धि केवी ठे? मुक्तिरूप लक्ष्मीना मुखने देखाडनारी ठे.

हवे तेनुं कांइक विशेष स्वरूप कहियें ठियें. यद्यपि आ शुक्लध्याननो पायो प्रतिपाती (पतनशील) उत्पन्न थाय ठे, तो पण अति विशुद्ध होवाथी अर्थात् अत्यंत निर्मल होवाथी उपरना गुणस्थानमां आरोह करवानी चाहना रह्या करे ठे, अर्थात् उपरना गुणस्थानमां दोडे ठे.

अपूर्वकरण गुणस्थानस्थ जीव निद्राद्विक, देवद्विक, पंचेंद्रियजाति, प्रशस्त विहायोगति, त्रसनवक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण, वैक्रिय उपांग, आहारक उपांग, आद्यसंस्थान, निर्माणनाम, तीर्थंकरनाम, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, उच्छ्वास. आ बत्रीश कर्मप्रकृतिनो बंधव्यवछेद थवाथी, ठवीश कर्म प्रकृतिनो बंध करे ठे. तथा ठेली त्रण संहनन, अने सम्यक्त्व मोह, आ चारनो उदयव्यवछेद थवाथी बोंतेर कर्म प्रकृति वेदे ठे. अने १३८ कर्म प्रकृतिनी सत्ता ठे. इति क्षपक श्रेणि आठमा गुणस्थाननुं स्वरूप.

हवे क्षपक, अनिवृत्तिनामा नवमा गुणस्थानकपर आरोह करे ठे त्यारे जे जे कर्म प्रकृतिनो ज्यां ज्यां क्षय थाय ठे, ते कहियें ठियें. क्षपकमुनि नवमा गुणस्थानकना नवजाग करे ठे. प्रथम जागमां सोल कर्म प्रकृतिनो क्षय करे ठे, ते आ प्रमाणे ठे, १ नरकगति, २ नरकानुपूर्वी, ३ तिर्यग्गति, ४ तिर्यंचानुपूर्वी, ५ साधारणनाम, ६ उद्योतनाम, ७ सूक्ष्म, ८ द्वींद्रियजाति, ९ त्रींद्रियजाति, १० चतुरिंद्रिय जाति, ११ एकेंद्रियजाति, १२ आतपनाम, १५ स्त्यानर्द्धित्रिक, १६ स्थावरनाम. तथा बीजा जागमां अप्रत्याख्यान कषायनी तथा प्रत्याख्यान क-

षायनी चोकडी क्षय करे छे. त्रीजा भागमां नपुंसक वेदनो अने चोथा भागमां स्त्रीवेदनो क्षय करे छे, पांचमा भागमां हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा छ नोकषायनो क्षय करे छे, बाद ध्याननी अति निर्मलताथी छठ्ठा भागमां पुरुषवेदनो, सातमा भागमां संज्वलन क्रोधनो, आठमा भागमां संज्वलन माननो, अने नवमा भागमां संज्वलन मायानो क्षय करे छे, तथा आ गुणस्थानमां वर्त्तता मुनि हास्य, अरति, भय, जुगुप्सा, आ चारनो व्यवछेद होवाथी, बावीश प्रकृतिनो बंध करे छे, अने हास्यषट्कनो उदयव्यवछेद थवाथी छासठ प्रकृतिने वेदेछे. तथा नवमा अंशमां मायापर्यंत प्रकृतियोनो क्षय करवाथी, पांत्रीश प्रकृति व्यवछेद थवाथी एकसो त्रण प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे क्षपकना दशमा गुणस्थानकनुं स्वरूप लखीयें छियें. पूर्वोक्त नवमा गुणस्थानक अनंतर क्षपकमुनि सूक्ष्म संपराय नामा दशमागुणस्थानपर आरोह करे छे. शुं करीने? क्षणमात्रमां संज्वलनना स्थूल लोभनो क्षय करतां थकां आरोह करे छे. सूक्ष्म संपराय गुणस्थानस्थ जीव, पुरुषवेद तथा संज्वलन चतुष्कनो बंधव्यवछेद थवाथी सत्तर प्रकृतिनो बंध करे छे, अने त्रण वेद तथा त्रण कषायनो उदयव्यवछेद थवाथी साठ प्रकृति वेदे छे, मायानी सत्ता व्यवछेद थवाथी एकसो बे प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे क्षपकमुनिने अगीआरमुं गुणस्थानक प्राप्त थतुं नथी, परंतु दशमा गुणस्थानकथी सूक्ष्म लोभना अंशोना सूक्ष्म खंड करतां करतां क्षपक, बारमा क्षीणमोहवीतराग गुणस्थानमां जाय छे. अहींयां क्षपक श्रेणि समाप्त करे छे. तेनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे. प्रथम अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षय करे छे, पछी मिथ्यात्व मोहनीयनो, पछी मिश्रमोहनीयनो, पछी सम्यक्त्व मोहनीयनो, पछी अप्रत्याख्यान चार कषायनो, पछी प्रत्याख्यान चार कषायनो, पछी नपुंसक वेदनो, पछी हास्यषट्कनो, पछी पुरुषवेदनो, पछी संज्वलन क्रोधनो, पछी संज्वलन माननो, पछी संज्वलन मायानो अने छेवटे संज्वलन लोभनो क्षय करे छे.

हवे बारमा गुणस्थानमां शुक्लध्याननो बीजो पायो प्राप्त थाय छे तेनुं स्वरूप कहियें छियें. क्षपकमुनि क्षीणमोही थवाथी बारमा गुणस्थान

मार्गमां परिणतिमान् थइने प्रथम शुक्लध्याननी रीतिमुजब बीजा शुक्लध्याननो आश्रय करे छे. केवी रीतें? वीतराग थइजवाथी "वीतराग" अर्थात् विशेषेण इतो (गतो), रागोयस्मात् सवीतरागः, वली ते क्षपक मुनि केवा छे? महायति, यथाख्यातचारित्री, शुद्धतर भावसंयुक्त एवा क्षपक शुक्लध्यानना बीजा पायानो आश्रय करे छे.

हवे तेज शुक्लध्यानना विशेषण नामसहित कहियें छियें. ते क्षीण मोहगुणस्थानवर्त्ती क्षपकमुनि, बीजा शुक्लध्यानने एकयोगथी ध्याय छे, यदाह ॥ एकं त्रियोगभाजा, माद्यं स्यादपरमेकयोगवतां ॥ तनुयोगिनां तृतीयं, नियोगानां चतुर्थं हि ॥ १ ॥ केवुं ध्यान छे? "अपृथक्त्वं पृथक्त्ववर्जितं, अविचारं विचाररहितं, सवितर्कगुणान्वितं वितर्कभाव गुणसंयुक्तं" एवां बीजो शुक्लध्यानने ध्यायछे.

हवे अपृथक्त्वनुं स्वरूप कहियें छियें. तत्त्वज्ञाता एकत्व अर्थात् अपृथक्त्व ज्ञानने धारण करे छे, ते एकत्वपणुं शुं छे? जे केवल निजात्मद्रव्य अर्थात् विशुद्ध परमात्मद्रव्य छे तेज अथवा तेज परमात्मा द्रव्यनो केवल एक पर्याय, अथवा केवल एकगुण ए प्रकारें एक द्रव्य, एक गुण, एक पर्याय, निश्चल अर्थात् चलनरहित ज्यां ध्यान करवामां आवे ते एकत्व छे.

हवे अविचारनुं स्वरूप कहीयें छीयें. जे सद्ध्यानकोविदोए शास्त्र आम्नायथी शुक्लध्याननुं रहस्य जाण्युं छे, तेउए अविचार विशेषणसंयुक्त बीजा शुक्लध्याननुं स्वरूप आ प्रमाणे कह्युं छे. पूर्वोक्तस्वरूपोमां व्यंजन अर्थयोगोमां अर्थात् शब्दार्थ योगरूपोमां परावर्त्तविवर्जित शब्दथी शब्दांतर इत्यादि क्रमथी रहित एवुं चिंतन श्रुत अनुसारेंज करवामां आवे ते अविचार छे. आ कालमां सद्ध्यानकोविद अर्थात् शुक्लध्यानना जेउ ज्ञाता छे, तेउ पूर्वमुनिप्रणीत शास्त्र आम्नाय विशेषथी छे; परंतु आ कालमां शुक्लध्यानना कोइ अनुभवी नथी. यदाहुः ॥ श्रीहेमचंद्रसूरिपादाः ॥ अनविछित्त्याम्नायः, समागतोऽस्येति कीर्त्यतेऽस्माभिः ॥ दुष्कर मप्याधुनिकैः, शुक्लध्यानं यथाशास्त्रं ॥ १ ॥

हवे सवितर्कनुं स्वरूप कहियेंछियें. सवितर्कगुणसंयुक्त बीजुं शुक्ल-

ध्यान भावश्रुतना आलंबनथी थाय छे, सूक्ष्म अंतर्जल्प भावगत अवलंबनमात्र चिंतवनथी थाय छे.

हवे शुक्लध्यानजनित समरसीभावनुं स्वरूप कहियें छियें. बीजा शुक्लध्यानमां वर्त्तता ध्यानी समरसीभाव धारण करे छे. समरसीभाव एटले तदेकशरणता. कारण के आत्माने अपृथक्त्वरूपें परमात्मामां लीन करीए त्यारेज समरसीभाव धारण थाय छे. समरसीभाव केम करे? आत्माना अनुभवथी करे.

हवे क्षीणमोहगुणस्थानकने अंते शुं करे छे? ते कहियें छियें. पूर्वोक्त ध्यानथी तेमज बीजा शुक्लध्यानना योगथी कर्मइंधनोनुं दहन करीने योगींद्रमुनि अंतना प्रथमसमये अर्थात् बारमा गुणस्थानकना बीजा चरमसमयमां निद्रा अने प्रचला आ बे प्रकृतिनो क्षय करे छे.

हवे अंतसमये जे करे छे ते कहियेंछियें. क्षीणमोह गुणस्थानकें अंतसमयमां १ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवलदर्शन, आ चार दर्शनावरणीय, तथा पांचप्रकारनां ज्ञानावरणीय, अने पांचप्रकारना अंतराय, ए चौद प्रकृतिनो क्षय करीने क्षीणमोहांश थइने केवल स्वरूप थाय छे. तथा क्षीणमोहगुणस्थानस्थ जीव, दर्शनचतुष्क, ज्ञानांतरायदशक, उच्चगोत्र, यशनाम, ए सोल प्रकृतिनो बंधव्यवछेद थवाथी एक शातावेदनीयनो बंध करे छे. तथा १ संज्वलनलोभ, २ ऋषभनाराच संहनन, बे प्रकृतिनो उदयव्यवछेद थवाथी सत्तावन प्रकृति वेदे छे. तथा संज्वलन लोभनी सत्ता दूर थवाथी एकसो एक प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे क्षीणमोहांत प्रकृतियोनी संख्या कहियें छीयें. चोथा गुणस्थानकथी क्षय थती थती त्रेसठ प्रकृति क्षीणमोहमां संपूर्ण थाय छे. एक प्रकृति चोथा गुणस्थानकमां, एक पांचमामां, आठ सातमामां, छत्रीश नवमामां, सत्तर बारमामां, एम सर्व मली त्रेसठ थइ. बाकीनी पंचाशी प्रकृति जीर्ण वस्त्रनी जेवी तेरमा सयोगी केवली गुणस्थानकमां रहे छे,

हवे सयोगीकेवलीने जे भाव तथा सम्यक्त्व, अने चारित्र थाय छे ते कहियेंछियें. ते केवली भगवंत आत्माने आ गुणस्थानकमां क्षायिक शुद्धभाव प्रगट थाय छे, परम उत्कृष्ट क्षायिक सम्यक्त्व थाय छे, अने

यथाख्यातनामा क्षायिक चारित्र थाय छे, मतलब के उपशम अने क्षयोपशम आ वे जाव रहेता नथी.

हवे ते केवली आत्माना केवलनी विज्ञूति कहियेंछियें. ते केवलज्ञान रूप सूर्यना प्रकाशथी चराचर जगत् केवलज्ञानी आत्माने हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष जासन थाय छे. आ स्थले केवलज्ञानने सूर्यनी उपमामात्र व्यवहारथीज़ कही छे. निश्चय स्वरूपें तो केवलज्ञान अने सूर्यमां अपार अंतर छे.

हवे जे आत्माउं तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे तेनुं विशेष स्वरूप कहियेंछियें. अर्हत्जक्तिप्रमुख वीशपुण्यस्थानकोनुं जे आत्माउं विशेष आराधन करे छे, तेउं तीर्थंकरनाम कर्म उपार्जन करे छे. ते वीशस्थानक आ छे. गाथा ॥ अरिहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु ॥ वछलयाइएसु, अजिरकणंणो वउग्गेय ॥ १ ॥ दंसण विणए आवस्सए सीलव्वए निरइयारे ॥ खणलवचियाए, वेयावच्चे समाहीयं ॥ २ ॥ अपुव्व नाणग्गहणं, सुयजत्ती पवयण पजावणया ॥ एएहिं कारणेहिं, तिछयरत्तं लहइ जीवो ॥ ३ ॥ आ गाथाउंनो अर्थ आगल लखशुं. आ गुणस्थानकमां, तीर्थंकर नामकर्मना उदयथी ते केवली त्रिजुवनपति जिनेंड्र थाय छे. जिन अर्थात् सामान्य केवली, तेउंना जे इंड्र ते जिनेंड्र कहेवाय छे.

हवे तीर्थंकरना महिमानुं वर्णन करियें छियें. ते जगवान् तीर्थंकर, प्रथम परिछेदमां वर्णन कर्या मुजव चोत्रीश अतिशययुक्त होय छे. सर्व देवताउं तथा मनुष्यो जेमने नमस्कार करेछे, एवा सर्वोत्तम, सकलशासनमां प्रधान एवुं तीर्थप्रवर्त्तन करे छे, अने उत्कृष्टथी देशोनपूर्वकोटि सुधी विद्यमान रहे छे.

हवे ते तीर्थंकरनामकर्म केवीरीतें वेदवामां आवे छे तेनुं स्वरूप कहियेंछियें. पृथ्वीमंडलमां विहार करतां जव्यजीवोने प्रतिवोधी, तेउंने सर्वविरति तेमज देशविरति करवाथी तीर्थंकरनाम कर्म वेदवामां आवे छे. जो तीर्थंकरनामकर्मनो उदय न होयतो जगवान् कृतकृत्य थवाथी तेमने उपदेश करवानुं शुं प्रयोजन छे ? ते कारणथी जे वादी जगवानने निःशरीरी, नैरुपाधिक, मुखरहित, सर्वव्यापी माने छे, ते जगवान् देहादिना अजावथी धर्मना उपदेशक थइ शकता नथी. जो उपाधिरहित,

सर्वव्यापी परमेश्वर पण उपदेशक थइ शकता होय तो तेवा परमेश्वर आ कालमां अमारा जेवाने केम उपदेश करता नथी ? कारण के ते वादीना कथनमुजब पूर्वकालमां अग्नि आदि ऋषियोने तेमणे प्रेर्या हता, तथा ब्रह्मादिद्वारा चार वेदादिनो उपदेश तेमणे कर्यो हतो, तथा मूसा इसाद्वारा जगत्ना जीवोने उपदेश कर्यो, तो हाल केम उपदेश नथी करता ? परोपकारीने उपदेश करवामां शुं विलंब छे ? जो कहो के आ कालमां सर्वजीव उपदेश देवा योग्य नथी, तेथी उपदेश आपता नथी. तो पूर्वकालमां पण सर्वजीवोए परमेश्वरनो उपदेश मानेलो नथी. जुओ. प्रथम तो कालासुर प्रमुख अनेक जीवोए उपदेश मानेलो नथी. बीजो अजाजीले पण मानेलो नथी, तेमज यहूदाए तेमज केटलाएक इसराइलियोए पण मानेलो नथी; ते कारणथी पूर्वकालमां पण परमेश्वरने उपदेश देवो योग्य न होतो. जो कहो के, परमेश्वरें ते वखते उपदेश केम आप्यो, अने हाल केम आपता नथी, ते बाबतमां तेनी वात ते जाणे, तो पछी तमे एम केम कहोछो के परमेश्वरने मुख नथी ? ते कारणथी तेज सत्य छे के तीर्थंकरनाम कर्मने वेदवा वास्ते भगवान् उपदेश आपे छे, अने जे वखते उपदेश आपेछे ते वखते देहधारी होय छे आटली चर्चा बस.

केवलज्ञानवान् पृथ्वीमंडलमां उत्कृष्ट आठ वर्ष न्यून एक कोटि पूर्व प्रमाण विचरे छे. देवताए रचेला कंचन कमलोपर पग राखी चाले छे आठ प्रातिहार्यसंयुक्त अनेक सुरासुरकोटिसंसेवित विहार करे छे. आ स्थिति सामान्यप्रकारथी केवलज्ञानवान्नी कही छे. जिनेंद्र तो मध्यस्थितिवाला होय छे.

हवे केवली समुद्घातकरण कहियेंछियें. केवलज्ञानवान् ज्यारे वेदनी कर्मनी स्थितिथी आयुकर्मनी स्थिति अल्प जाणे छे, त्यारे बंने स्थितिओने तुल्य करवावास्ते, केवली समुद्घात करे छे. ते समुद्घातनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. प्रथम समुद्घातशब्दनो अर्थ कहियें छियें. यथास्वभावस्थित आत्मप्रदेशोने वेदनादि सात कारणोथी समंतात् उद्घातनं अर्थात् स्वभावथी अन्यभावपणे परिणमन करवुं तेनुं नाम समुद्घात छे. समुद्घातना सात प्रकार छे १ वेदना स०, २ कषाय स०, ३ मरण स०,

४ वैक्रिय स०, ५ तेजः स०, ६ आहारक स०, ७ केवलि स०. आ सात समुद्घातमांहेनी केवलिसमुद्घात अहींआ ग्रहण करवी. केवली जगवान् केवलिसमुद्घात करतां प्रथम समयमां वेदनी आयुकर्मने सम करवावास्ते आत्मप्रदेशोथी ऊर्ध्वलोकांतसुधी दंडाकार आत्मप्रदेश लंबावे छे, बीजा समयमां पूर्व, पश्चिमदिशामां आत्मप्रदेशोथी कपाट आकार करे छे, त्रीजा समयमां उत्तर दक्षिण आत्मप्रदेशोनो मंथनाकार करे छे, चोथासमयमां अंतरो पूर्ण करवाथी सर्वलोकव्यापी थइ जाय छे, एवीरीतें केवली चोथे समये विश्वव्यापी थाय छे.

हवे अहींआथी निवृत्ति करे छे ते कहियें छियें. ए प्रमाणे केवली आत्मप्रदेशोनो विस्तार करवाना प्रयोगथी कर्मलेशने सम करे छे; समकर्या पछी समुद्घातथी पाछा निवर्त्तन करे छे. पांचमा समयमां जगत् पूर्णताना अंतरोथी निवर्त्ते छे, छठे समये मंथानपणुं दूर करे छे, सातमे समये कपाटाकार दूर करे छे, अने आठमे समये दंडत्व उपसंहार करतां थकां स्वजावस्थ थाय छे. ॥ यदाहुर्वाचकमुख्याः। दंडं प्रथमे समये, कपाटमथ चोत्तरे तथा समये ॥ मंथानमथ तृतीये, लोकव्यापी चतुर्थे तु ॥ १ ॥ संहरति पंचमे त्वं, तराणि मंथानमथ पुनः षष्ठे ॥ सप्तमके तु कपाटं, संहरति तथाऽष्टमे दंडं ॥ २ ॥

हवे केवली समुद्घात करतां थकां जेवा योगवान् तथा अनाहारक थाय छे ते कहियेंछियें. प्रथम अने अंतसमयमां औदारिक काययोगवाला थाय छे, बीजा अने छठा समयमां मिश्र औदारिक काययोगी थाय छे. अहींयां मिश्रपणुं कार्मणसाथे औदारिकनुं छे. त्रीजा, चोथा अने पांचमा समयोमां केवल कार्मण काययोगवाला थाय छे. जे समयोमां केवली मात्र कार्मणकाययोगवाला होय छे ते समयोमां अनाहारक होय छे.

हवे जे केवली समुद्घात करे छे, अने जेउ करता नथी, ते कहियें छियें. जेउने छ महिनाथी अधिक आयु विद्यमान छतां केवल ज्ञान थाय तेउ तो निश्चयें समुद्घात करे छे; अने जेउनुं आयुष्य छ महिनानी अंदर होय ते वखते जेउने केवलज्ञान थाय तेउनी बाबतमां जजना छे, अर्थात् तेउ समुद्घात करे अथवा नहिपण करे. यदाह ॥ छम्मासाउ

सेसा, उप्पन्नं जेसिं केवलं नाणं ॥ ते नियमा समुग्घाइय, सेसा समुग्घाय जइयव्वा ॥ १ ॥

हवे समुद्घातथी निवृत्त थइ केवली जे कांइ करे छे ते कहियेंछियें. केवली समुद्घातथी निवृत्त थइ मन, वचन, काययोग निरोधवा वास्ते शुक्लध्यानना त्रीजा पायाने ध्याय छे. शुक्लध्याननो त्रीजो पायो सूक्ष्मक्रिया निवृत्ति नामनो छे. ते पायाथी कंपनरूप क्रियाने सूक्ष्म करे छे.

हवे मन, वचन, कायाना योगने जेवीरीतें सूक्ष्म करे छे ते कहियेंछियें. ते केवली सूक्ष्मक्रिया निवृत्तिनामा त्रीजुं शुक्लध्यान ध्यातां अचिंत्य आत्मवीर्यनी शक्तिथी बादरकाययोगस्वभावमां स्थित थइने, बादर वचनयोग तथा बादर मनोयोगना पुद्गलोने सूक्ष्म करे छे, त्यार बाद बादर काययोगने सूक्ष्म करे छे. पछी सूक्ष्मकाययोगमां क्षण मात्र रहीने तत्काल सूक्ष्मवचन, मनोयोगना पुद्गलोनो अपचय करे छे. त्यारपछी सूक्ष्मकाययोगमां क्षणमात्र रहीने ते केवली प्रगट निज आत्मानुभव सूक्ष्मक्रिया चिद्रूपनो अर्थात् स्वयमेव पोताना स्वरूपनो अनुभव करे छे.

हवे जे सूक्ष्मक्रियावाला शरीरनी स्थिति तेज केवलीउंनुं ध्यान छे ते कहिएछिए. जेप्रकारें छद्मस्थ योगीउंना मननी स्थिरताने ध्यान कहीए छीए, तेजप्रकारें शरीरनी निश्चलतानुं केवलीउंने ध्यान थाय छे. शैलेशीकरण आरंभ करनारा सूक्ष्मकाययोगी ह्रस्वाक्षर पांच उच्चारण करतां जे काल लागे तेटलुं आयुष्य पोतानुं बाकी रहे छे त्यारे शरीरने शैलवत् निश्चल करवावास्ते अपरिपातरूप चोथुं शुक्लध्यान शैलेशीकरणरूप थाय छे. त्यारपछी ते केवली शैलेशीकरणारंभी सूक्ष्मकाययोगमां रहेतां थकां शीघ्र अयोगी गुणस्थानमां जवानी इच्छा करे छे.

हवे ते केवली भगवान् सयोगी गुणस्थानना अंत समयमां औदारिकद्विक, अस्थिरद्विक, विहायोगतिद्विक, प्रत्येकत्रिक, संस्थान षट्क, अगुरु लघुचतुष्क, वर्णादिचतुष्क, निर्माण, तैजस, कार्मण, प्रथम संहनन, स्वरद्विक, एक वेदनीय आ त्रीश प्रकृतिनो उदयविछेद करेछे. अहींआं अंगोपांगनो उदयव्यवछेद थवाथी अंत्यांग संस्थान अवगाहनाथी त्रीजो भागन्यून अवगाहना करे छे. केवीरीतें? पोताना आत्मप्रदेशोने घनरूप करवाथी चरम शरीरनां अंगोपांगमां जे नासिकादि छिद्र छे.

तेउने पूर्ण करे छे. तेथी आत्मप्रदेशो घनरूप थइ जाय छे. अने अव-गाहना त्रीजो भाग न्यून थाय छे. हवे सयोगी गुणस्थानस्थ जीव एक विध वंध, उपांत्य समय सुधी अने ज्ञानांतराय पंच तथा दर्शन चतुष्क उदयव्यवछेद थवाथी वेंतालीश प्रकृति वेदे छे. तथा १ निद्रा, २ प्रचला, १२ ज्ञानांतराय दशक, १६ दर्शनचतुष्क, आ सोलप्रकृतिनी सत्ता व्यव-छेद थवाथी पंचाशी प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे अयोगी गुणस्थानकनी स्थिति कहियें छियें. चौदमा गुणस्थान-कमां रहेतां थकां जिनेंद्रनी लघु पंचाक्षर "अ इ उ ऋ लृ" उच्चारणमात्र अर्थात् आ पांच अक्षर वोलतां जेटलो काल लागे तेटली स्थिति छे. अयोगी गुणस्थानकमां अनिवृत्तिनामें शुक्लध्याननो चोथो पाद छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे. जे ध्यानमां सूक्ष्म काययोग क्रिया पण "समु-छिन्न" सर्वथा निवृत्त थइ जाय छे, ते समुछिन्नक्रिया नामें शुक्लध्याननुं चोथुं ध्य.न छे. ते ध्यान केवुं छे? मुक्ति मेहेलना द्वारसमान छे.

शिष्य पुछे छे के मारा मनमां वे शंका छे. तेनुं समाधान कृपा करी करो! प्रथम शंका- हे प्रभु! देह विद्यमान छतां अयोगी केवी रीतें होइ शके? वीजी शंका. जो सर्वथा काययोगनो अभाव थयो छे तो दे-हनो अभाव छतां ध्यान केवीरीतें घटे?

आचार्य भगवान् उत्तर आपे छे. भो शिष्य! अयोगी गुणस्थानमां सूक्ष्मकाययोग विद्यमान छतां अयोगी कहेवाय छे तेनुं कारण ए छे के ते काययोगथी जे क्रिया थाय छे ते अति सूक्ष्मरूप छे, तथा ते काय-योग शीघ्र क्षय पामनार छे, वली कायानुं कार्य करवामां असमर्थ हो-वाथी काय होवा छतां पण अयोगी छे. वली शरीर आश्रय होवाथी ध्यान पण छे. ते कारणथी वंने वावतमां विरोध नथी ते विरोध कोने नथी? अयोगीगुणस्थानवर्त्ती परमेष्टि भगवंतने. ते परमेष्टि भगवंत केवा छे? निजशुद्धात्मचिद्रूप तन्मय पणे उत्पन्न, निर्जर, परमानंद विराज मान छे.

हवे ध्यानना निश्चय, व्यवहारनुं स्वरूप कहियें छियें. तत्वथी अर्थात् निश्चय नयथी आत्माज ध्याता छे, आत्माज करण रूप छे, आत्माज कर्म

रूपतापन्नने ध्याय छे. तेनाथी अन्य, उपचाररूप अष्टांगयोग प्रवृत्ति लक्षण ते सर्व व्यवहारनयथी ध्यान जाणवुं.

हवे अयोगी गुणस्थान वर्तिना उपांत्य समयनां कृत्य कहियें छियें. केवल चिद्रूपमय आत्मस्वरूपना धारक योगी, अयोगी गुणस्थानवर्ती स्फुट प्रगट उपांत्य समयमां शीघ्र युगपत् समकालें बहोंतेर कर्मप्रकृतिनो क्षय करेछे. ते आ छे. शरीर पांच, बंधन पांच, संघात पांच, अंगोपांग त्रण, संस्थान छ, वर्ण पांच, रस पांच, संहनन छ, अस्थिर छ, स्पर्श आठ, गंध बे, नीचगोत्र, अगुरुलघु चतुष्क, देवगति, देवानुपूर्वी, खगतिद्विक, प्रत्येकत्रिक, सुस्वर, अपर्याप्तिनाम, निर्माणनाम, बेमांथी कोइपण एक वेदनी, आ बहोंतेर कर्मप्रकृति मुक्तिपुरीना द्वारनी अर्गलाभूत छे, ते उपांत्य समय अर्थात् द्विचरम समयमां क्षय करेछे.

हवे अयोगी परमात्मा अंतसमयमां जे जे प्रकृति क्षय करीने जे कांइ करेछे ते कहिये छियें. अंतसमये एकवेदनी, आदेयनाम, पर्याप्तिनाम, त्रसनाम, बादरनाम, मनुष्यायु, यशनाम, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, सौभाग्य उच्चगोत्र, पंचेंद्रियत्व, तीर्थंकरनाम. आ तेर प्रकृति क्षय करीने तेज समयमां सिद्धपर्यायने प्राप्त थायछे. ते सिद्धपरमेष्टी, सनातन भगवान् शाश्वत लोकांत पर्यंत जायछे. तथा अयोगीगुणस्थानस्थ जीव अबंधक छे. तथा एकवेदनी, आदेय यश, सुभग, त्रसत्रिक, पंचेंद्रियत्व, मनुष्यगति, मनुष्यायु, उच्चगोत्र, तीर्थंकरनाम, आ बार प्रकृति वेदेछे. अंतना बे समय पहेलां पंचाशीनी सत्ता रहेछे, उपांत्य समयमां तेर प्रकृतिनी सत्ता रहेछे. अने अंतसमये सत्तारहित थायछे. इति अयोगी चतुर्दशगुणस्थान स्वरूपं ॥

आशंकाः—"निःकर्म" कर्मरहित आत्मा ते समये लोकांतमां केवी रीतें जाय छे?

समाधानः—कर्मरहित सिद्धनी ऊर्द्धगति थायछे. कया हेतुथी थायछे? पूर्वप्रयोगथी अर्थात् अचिंत्य आत्मवीर्यथी उपांत्य बे समयमां पंचाशी कर्मप्रकृति क्षय करवावास्ते जे व्यापार प्रारंभ कर्यो हतो तेनाथी ऊर्ध्वगति थायछे. आ प्रथम हेतु छे. तथा कर्मसंगतिरहित थवाथी ऊर्ध्वगति थायछे, आ बीजो हेतुछे. तथा गाढतर बंधनोथी रहित थवाथी

ऊर्ध्वगति थायछे. आ त्रीजो हेतुछे. तथा कर्मरहित जीवनो ऊर्ध्वगमन स्वनाव छे. आ चोथो हेतु छे. आ चारहेतु चारदृष्टांतथी बतावीए छीए. १ जेम कुंनकारनुं चक्र पूर्वप्रयोगथी फर्याकरे छे, तेम आत्मानी पूर्वप्रयोगथीऊर्ध्वगति थाय छे. २ जेम माटीना लेपथी रहित थतां तुंबडानी जलमां ऊर्ध्वगति थाय छे तेम अष्टकर्मरूप लेपरहित थतां धर्मास्तिकायरूप जलथी आत्मानी ऊर्ध्वगति थाय छे. ३ जेम एरंडफल बीजादिबंधनोथी बुटुं थतां ऊर्ध्वगमन करे छे, तेवीजरीते कर्मबीजादि बंध विछेद थतां सिद्धपण ऊर्ध्वगमन करे छे. ४ जेम अग्निनो ऊर्ध्वज्वलन स्वनाव छे तेम आत्मानो पण ऊर्ध्वगमन स्वनाव छे.

हवे कर्मरहित आत्मानी अधोगति तथा तिर्छी गति केम थती नथी ते कहिए छिए. सिद्ध आत्मा कर्मगौरव अनावथी अधोगमन धरतो नथी, तथा प्रेरककर्म अनावथी तिर्छो पण गति करतो नथी, तेमज धर्मास्तिकायना अनावथी लोकनी उपर पण गमन करी शकतो नथी. लोकमांज धर्मास्तिकाय होवाथी ते जीव पुजलनी गतिनो हेतुरूप छे. मत्स्यादिने जेम जल छे तेम. ते धर्मास्ति अलोकमां नथी, तेथी सिद्ध अलोकमां जइ शकता नथी.

हवे सिद्धशिला उपर लोकांतमां सिद्ध रहेछे तेनुं स्वरूप कहिएछिए. ईषत्प्राग्नारा नामनी सिद्धशिला चौद राजलोकना मस्तक उपर व्यवस्थित छे, तेनाथी सिद्धो पासे होवाथी ते सिद्धशिला कहेवाय छे. परंतु सिद्ध परमात्मा कांइ ते शिला उपर बेठेला नथी. सिद्ध तो ते शिलाथी उंचे लोकांतमां बिराजमान छे. ते शिला केवी छे ? मनोज्ञ, मनोहारिणी छे, वली ते शिला केवी छे ? सुरनि कपुरथी पण अधिक सुगंधवाली छे, कोमल छे, जेना सूक्ष्म अवयवो छे. वली ते शिला केवी छे ? पुण्या, पवित्र, परम नासुरा, प्रकृष्ट तेजवंत छे, मनुष्यक्षेत्र समान लांबी पहोली छे, श्वेत छत्राकार छे, उत्तान छत्राकार छे, अत्यंत शुन्नरूप छे, सर्वार्थसिद्धविमानथी बार योजन उपर छे. वली ते पृथ्वी मध्यनागमां आठ योजन जाडी छे, तथा प्रांतमां घटती घटती मांखीनी पांखथी पण पातली छे. ते शिलानी उपर एक योजन लोकांत छे, ते योजननो जे चोथो कोस छे, ते कोसना छठ्ठानागमां सिद्धोनी अवगाहना छे, अ-

र्थात् बे हजार धनुष्प्रमाण, कोशना छठा जागमां एटले त्रणसे तेत्रीश धनुष् अने बत्रीश आंगलनी सिद्धोना आत्मप्रदेशोनी अवगाहना छे.

हवे सिद्धोना आत्मप्रदेशनी अवगाहनानो आकार केवो छे ते लखीए छिए. जेम मूस (कुलडी) मां मीण जरीने गालीए, ते गलीजवाथी आकाशनो जेवो आकार थाय छे तेवो सिद्धोनो आकार छे.

हवे सिद्ध परमात्माना ज्ञान दर्शननो विषय लखीयें छियें. त्रैलोक्योदरवर्त्ती, चौद रज्ज्वात्मकलोकमां गुणपर्यायसंयुक्त जे जे वस्तुछे, ते ते जीवाजीव सर्व पदार्थोने सिद्ध परमात्मा जाणे छे. सामान्यरूपें देखे छे, विशेषरूपें जाणे छे कारण के वस्तुमात्र सामान्य विशेषात्मक छे.

हवे सिद्धोना आठ गुण कहियेंछियें. १ ज्ञानावरण कर्मना क्षयथी केवलज्ञान प्रगट थयेल छे, २ दर्शनावरण कर्मना क्षयथी केवल दर्शन प्रगट थयेल छे, ३ वेदनीय कर्मना क्षयथी अव्याबाध अनंतसुख थयेल छे, ४ दर्शन मोहनीय तथा चारित्रमोहनीयनो क्षय थवाथी शुद्ध सम्यक्त्व चारित्र क्षायकरूप थयेल छे, ५ आयुकर्मनो क्षय थवाथी अक्षयगति थयेल छे, ६ नामकर्मनो क्षय थवाथी अमूर्त्तपणुं प्रगट थयेल छे, ७ गोत्रकर्मनो क्षय थवाथी अनंत अवगाहना प्रगट थयेल छे, ८ अंतरायकर्मनो क्षय थवाथी अनंतवीर्य प्रगट थयेल छे.

हवे सिद्धोना सुखनुं स्वरूप कहियें छियें. चक्रवर्त्तिनी पदवी तेमज इंद्रनी पदवीना सुख करतां सिद्धनुं सुख अनंतगणुं छे. वली ते सुख केवुं छे ? क्लेशरहित छे. "अविद्यास्मिता" राग, द्वेष, अभिनिवेश इत्यादि क्लेश जेमां नथी. वली ते सुख केवुं छे ? अव्यय छे, स्वस्वजावथी व्यय न थाय तेवुं छे.

हवे सिद्धजगवंतें जे प्राप्त करेल छे तेनो सार कहियें छियें. सिद्धजगवंतें परमपद प्राप्त करेल छे, ते परमपद केवुं छे ? आराधकोने आराध्य छे, साधकोए सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रादिथी साधेल छे, ध्यायकोने ध्येय छे, निरंतर अनेकप्रकारना ध्यानना उपायथी ध्याववा योग्य छे; जे पद अजव्यजीवोने सदा दुर्लज छे, केटलाएक जव्यजीवोने पण दुर्लज छे, दुर्जव्योने कष्टथी प्राप्त थाय छे, एवुं परमपद सिद्धजगवंतें प्राप्त करेल छे. वली ते पद केवुं छे ? चिदानंदमय चिद्रूप परमानंदरूप छे.

हवे मुक्तिनुं स्वरूप कहियेंछियें. कोइ वादी अत्यंताभावरूप मुक्ति माने छे, ते बौद्धोनी मुक्ति छे. कोइ वादी जडमयी, ज्ञान अभावमयी मुक्ति माने छे. ते नैयायिक, वैशेषिकमतवालानी मुक्ति छे. कोइ वादी मुक्ति प्राप्त कर्यापछी फरी ते आत्मा संसारमां अवतार धारण करेछे, फरी मुक्तरूप थाय छे एवी मुक्ति माने छे, ते आजीविका मतवालानी मुक्ति छे. कोइ वादी क्लिष्ट कर्मथी विषयसुखमय मुक्ति माने छे, ते कहे छे के, मोक्षमां भोग भोगववा वास्ते बहु अप्सराउं मले छे, खावा-वास्ते बहु स्वादिष्ट वस्तुउं मले छे, पीवा वास्ते स्वादिष्ट मदिरा मले छे, रहेवा वास्ते सुंदर बाग मले छे, इत्यादि. कोइवादी कहे छे के, आत्मानी मुक्ति कदापि थती नथी, ते जैमिनी मुनिनो मत छे. खरडज्ञानी कहे छे के जे वेदोक्त अनुष्ठान करे छे, ते सर्वथा उपाधिरहित तो थतो नथी; परंतु शुभपुण्यना फलथी सुंदर देह प्राप्त करीने, ईश्वरनी साथे मलीने, केटलाएक कल्पो सुधी सुख भोग भोगवे छे, ज्यां इछा थाय त्यां उडीने चाल्या जाय छे, फरी संसारमां जन्म लहे छे, फरी पूर्ववत् सुख भोग भोगवे छे, ए प्रमाणे अनादि अनंतकाल सुधी कर्या करे छे, परंतु एक स्थलें स्थिति करता नथी, एवी तेमनी मुक्ति छे, सर्वज्ञ अर्हंत परमेश्वरें सत्रूप, ज्ञानदर्शन रूप, असाररूप, जे आ संसार छे तेनाथी विरुद्ध, साररूप, निस्सीम आत्यंतिक सुखरूप, अनंत, अतींद्रिय आनंद अनुभवस्थान, अप्रतिपाति, स्वस्वरूपावस्थानरूप, मुक्ति कही छे. बृहद्गछीय श्रीवज्रसेनसूरिना शिष्य श्रीहेमतिलक सूरि पट्टप्रतिष्ठित श्रीरत्नशेखर सूरिए चौदगुणस्थानकनुं स्वरूप लखेल छे, तेने अनुसारें भाषामय किंचित् गुणस्थानक स्वरूप में लखेल छे.

प्रश्नः– हे जैन! तमे सर्व वादिउंनी कहेली मुक्ति अनुपादेय समज्या, अने अर्हंतनी कहेली मुक्ति उपादेय समज्या, तेनुं शुं कारणछे?

उत्तरः– हे भव्य! सर्व वादिउंनी मुक्ति, षड्दर्शननुं निरूपण चतुर्थ परिछेदमां करेल छे, त्यां बतावेल छे, ते जोतां आ वादिउंनी मुक्ति वास्तविक नथी. जुउ. ज्यारे अत्यंताभावरूप मुक्ति थाय त्यारे आत्मानो ज अभाव थयो, हवे मोक्षफल कोने प्राप्त थयुं? एवो कोण होय के जे आत्माना अत्यंताभाववास्ते यत्न करे? तथा ज्ञानाभावरूप जे मुक्ति

माने छे, ते पण वास्तविक नथी, कारण के ज्यारे ज्ञाननो अभाव मुक्तने थाय त्यारे पाषाण पण मोक्षरूप थइ जाय. हवे एवो कोण प्रेक्षावान् छे जे पोताना आत्माने पाषाणतुल्य बनाववा चाहे ? तथा जे आत्मानी सर्वव्यापिरूप मुक्ति माने छे, अर्थात् ज्यारे आत्मानी मुक्ति थाय छे, त्यारे आत्मा सर्वव्यापी मोक्षरूप थइ जाय छे. आ कहेवुं पण प्रमाण अनभिज्ञ मतवालानुं छे, कारण के आत्मा कोइ प्रमाणथी सर्व लोकव्यापी सिद्ध थइ शकतो नथी. तेनी विशेष चर्चा जोवी होय तो स्याद्वादरत्नाकरावतारिका अवलोकन करवी. तथा आत्मानो मोक्ष थया पछी फरी संसारमां जन्म लेवो, फरी मुक्त थवुं, आ तो मोक्ष शेनो ? आ तो (भांडो) नो वेश थयो, ते कारणथी आ मत पण वास्तविक नथी. तथा जे मतवाला मोक्षमां स्त्रियोनो भोग माने छे, ते विषयना लोलुपी छे. तथा खरडज्ञानीनी मुक्ति पण अप्रमाणिक छे, कोइ प्रमाणथी सिद्ध थती नथी. ते कारणथी अर्हंत भगवंतें जे मुक्ति कही छे, ते निर्दोष छे. ॥ इतिश्रीतपागच्छीयमुनिश्रीदगणिमणिविजयतच्छिष्यमुनिश्रीबुद्धिविजयतच्छिष्यमुन्यात्मारामानंदविजयविरचितजैनतत्त्वादर्शधर्मतत्त्वनिरूपणाधिकारे (तद्गुर्जर भाषांतरे) चतुर्दशगुणस्थानज्ञाननिर्णयनामा षष्ठः परिच्छेदः संपूर्णः ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमपरिच्छेदप्रारंभः ॥

आ परिच्छेदमां सम्यक् दर्शननुं स्वरूप लखियें छियें. सम्यक् दर्शननुं स्वरूप पूर्वे कांइक लखी आव्या छियें, परंतु भव्यजीवोने बोध थवा वास्ते विस्तारथी लखवानी जरुर छे तेथी विशेष लखिये छियें. सम्यक्त्वना बे प्रकार छे १ व्यवहार सम्यक्त्व, २ निश्चय सम्यक्त्व. यथार्थ तत्त्वरूप विज्ञानपूर्वक रुचि, ते सम्यक्त्व. ते सम्यक्त्व, त्रण तत्त्व उपर यथार्थ रुचि थवाथी थाय छे. त्रण तत्त्व आ छे, १ देवतत्त्व, २ गुरुतत्त्व, ३ धर्मतत्त्व. तेनेविषे श्रद्धा (प्रतीति) जे पुरुष करे ते सम्यक्त्ववान् थाय छे. ते श्रद्धाना बे भेद छे. १ व्यवहार, २ निश्चय. तेउ मध्येनी प्रथम व्यवहारश्रद्धानुं स्वरूप लखिये छियें.

व्यवहार श्रद्धामां देव श्री अरिहंत, जेनुं स्वरूप प्रथम परिच्छेदमां वर्णवेलुं छे, ते अहिंआं जाणी लेवुं. अरिहंतना चार निक्षेप अर्थात् स-

रूप छे. १ नामनिक्षेप, २ स्थापनानिक्षेप, ३ द्रव्यनिक्षेप, ४ भावनिक्षेप आ चारे निक्षेपनुं विस्तारपूर्वक स्वरूप जोवुं होय तो विशेषावश्यक अवलोकन करवुं. प्रथम निक्षेप, नाम अर्हंत अर्थात् "नमो अरिहंताणं" एम कहेवुं. आ पदनो जप करवाथी अनेक जीव संसारसमुद्र तरी गयेल छे. बीजो स्थापनानिक्षेप, ते अरिहंतनी प्रतिमा, समस्त दोष चिह्नोथी रहित सहज सुभग, समचतुरस्र संस्थानवाली, पद्मासन, कायोत्सर्ग मुद्रारूप, शांतरसमय जिनबिंब देखीने, तेनी सेवा, पूजा, भक्ति करवाथी अनंत जीवोए मोक्ष प्राप्त करेल छे,

प्रश्नः–अरिहंतनी प्रतिमा पूजवी तथा तेने नमस्कार करवो, एम स्थापना निक्षेपने मानी, प्रतिमाने मुक्तिदायक समजवी, आ निःकेवल मूर्खतानुं चिह्न छे, कारण के प्रतिमा जडरूप होवाथी शुं आपी शके छे?

उत्तरः–हे भव्य? आप कोइ पण शास्त्रने परमेश्वरनां वचनरूप मानोछो के नहि? जो शास्त्रने परमेश्वरनां वचनरूप मानता हो, तेमज ते शास्त्रने सत्यस्वरूपें संसारसमुद्रथी पार उतारनार मानता हो तो, तेवीज रीतें परमेश्वरनी प्रतिमाने मानवामां शा वास्ते लज्जा धारण करोछो? जेवुं शास्त्र जडरूप छे, अर्थात् तेमां श्याही अने कागल शिवाय बाकी कांइ पण नथी, तेवी परमेश्वरनी प्रतिमा पण छे, जो एम कहो के कागलो उपर श्याहीथी अक्षर संस्थान पडेलां वांचवाथी परमेश्वरना कथननो बोध थाय छे, तो तेवीज रीतें परमेश्वरनी मूर्त्ति देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरूपनो बोध थाय छे.

प्रश्नः–प्रतिमा देखवाथी अरिहंत स्वरूप तो स्मरण थाय छे, परंतु प्रतिमानी भक्ति करवाथी शुं लाभ छे?

उत्तरः–शास्त्र श्रवण करवाथी परमेश्वरना वचननो बोध थयो तो पण भक्तजनो जेम शास्त्रने उच्चस्थानमां राखे छे, कोइ शिरपर लइ फरे छे, कोइ गलामां लटकावी राखे छे, केटलाएक सिंहासन उपर, केटलाएक सुंदर बाजोठ उपर शास्त्रोने सुंदर सुंदर रुमालोमां लपेटी राखे छे, अने शास्त्रोनी पूजा, भक्ति, बहुमान, नमस्कार प्रमुख करे छे. जेम शास्त्रनां वचनो विनय, बहुमानपूर्वक श्रवण करवाथी तेथी थता अनेक लाभनो भक्तजनो अनुभव करे छे, तेवीजरीतें जिन प्रतिमानी विनय, बहुमानपू-

र्वक नक्ति करवाथी तेनी शांतमुद्रा सेवकजनने परमशांतरस प्रमुख अनेक लाज उत्पन्न करावे छे.

प्रश्नः–जेम पथ्थरनी गायथी दूधनी गरज सरती नथी, तेम प्रतिमाथी पण कांइ गरज सरती नथी, तो हवे प्रतिमाने शावास्ते मानवी जोइयें?

उत्तरः–जेम कोइ पुरुष मुखथी गाय, गाय, एम सत्यरूपें उच्चारकरतां बतां पण तेनुं उदर दूधथी नरातुं नथी, तेम परमेश्वरनुं नाम लेवाथी, तेमज तेनो जाप करवाथी पण कांइ लाज थतो नथी. ते कारणथी परमेश्वरनुं नाम पण न लेवुं जोइयें?

प्रश्नः–परमेश्वरनुं नाम लेवाथी तो अमारुं अंतःकरण शुद्ध थाय छे.

उत्तरः–तेवीजरीतें परमेश्वरनी प्रतिमा देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरूपनो बोध थाय छे. तेथी अंतःकरणनी शुद्धि अहिंआ पण सरखीज छे.

प्रश्नः–परमेश्वरनुं नाम लेवाथी पुण्य छे तो पछी प्रतिमा शावास्ते पूजवी?

उत्तरः–जेवी स्थापना (प्रतिमा) देखवाथी आत्मानी शुद्ध परिणति थाय छे, तेवी नामथी थती नथी. कारण के जेम कोइ सुंदर यौवनवंती स्त्रीनुं नाम लेवाथी राग तो उत्पन्न थाय छे, परंतु जो ते सुंदर यौवनवती स्त्रीनी मूर्त्ति प्रगट सर्वाकारवाली सन्मुख देखीए तो अधिकतर विषयराग उत्पन्न थाय छे, तेटलाज कारणसर श्री दशवैकालिक सूत्रमां लखेलुं छे के " चित्तज्जित्ती न निज्झाए नारी वासुलंकियं " अर्थात् स्त्रीना चित्रामणवाली नींत देखवाथी पण विकार उत्पन्न थाय छे. आ वात तो प्रगट (प्रसिद्ध) छे के रागीनी मूर्त्ति देखवाथी राग उत्पन्न थाय छे, तथा कोकशास्त्रोक्त स्त्री, पुरुषनां विषय सेवनना चोराशी आसन देखवाथी तत्काल विकार उत्पन्न थाय छे, तेवीज रीतें निर्विकार स्थापना रूप शांतमुद्रा, श्री वीतराग परमात्मानी देखवाथी जेवो निर्विकार शांतिनाव उत्पन्न थाय छे, तेवो नाम लेवाथी थतो नथी.

प्रश्नः–जेम कोइ स्त्रीना नर्त्तारनुं नाम देवदत्त छे, ते देवदत्त मरीगयो, बाद ते स्त्रीए पोताना पति देवदत्तनी मूर्त्ति बनावी; ते मूर्त्तिथी जेम ते स्त्रीनुं सुहाग, संतानोत्पत्ति तथा कामइच्छा पूर्ण थतां नथी, तेवीज रीतें नगवाननी मूर्त्तिथी पण कांइ लाज थतो नथी.

उत्तरः–देवदत्तनी स्त्री देवदत्तना मरण पछी आसन विछावीने देवद-

त्तना नामनी माला फेरवे, तेथी जेम ते स्त्रीनुं सुहाग रहेतुं नथी, तथा पतिनुं नाम लेवाथी जेम संतानोत्पत्ति थती नथी, तथा कामेछा तृप्त थती नथी, तेवीज रीतें जो कहेवामां आवशे तो तो जगवाननुं नाम लेवाथी पण कांइ सिद्धि थशे नहि. आ दृष्टांतथी तो जगवाननुं नाम पण न लेवुं जोइए?

प्रश्नः—प्रतिमा तो कारीगर बनावे छे, ते कारीगरने पण पूजवा जोइये?

उत्तरः—वेदादि शास्त्र लिखारी (लहीआ) लखे छे, तेउने पण पूजवा जोइए. तेमज साधुनां मात पिताने साधुथी अधिक पूजवां जोइए.

प्रश्नः—आ कालमां कोइपण बुद्धिमान् स्थापना मानता नथी.

उत्तरः—बुद्धिमान् तो सर्व माने छे, परंतु मूर्ख मानता नथी.

प्रश्नः—कया बुद्धिमान् स्थापना माने छे? बतावो तेउनां नाम?

उत्तरः—प्रथम तो सांसारिक विद्यावाला सर्व बुद्धिमान्, जूगोल, खगोल, द्वीप, अर्थात् युरोपखंड आदिमां इग्लंड प्रमुखनां चित्र सर्व, स्थापनारूप माने छे, तेमज बनावे छे; तथा ककार आदि जे अक्षरो छे ते सर्व पुरुषना (ईश्वरना) शब्दनी स्थापना करे छे. वली जैनिउना मतमां एकसो आठ मणका, मालामां राखवामां आवे छे, परंतु न्यूनाधिक राखवामां आवता नथी तेनो हेतु ए छे के जैन, बारगुण अरिहंत पदना माने छे, आठगुण सिद्ध पदना माने छे, छत्रीश गुण आचार्यपना माने छे, पचीश गुण उपाध्याय पदना माने छे, अने सत्तावीश गुण साधु पदना माने छे, सर्व मली एकसो आठ गुण थाय छे; ते वास्ते जैनीउना मतमां मालामां जे मणका छे, ते एकेक मणका एकेक गुणनी स्थापना छे, तेथी आ माला पण स्थापना छे; तेवीज रीतें बीजा मतोमां पण माला, तसवीर छे, ते सर्व कोइने कोइ वस्तुनी स्थापना छे, नहि तो एकसो आठ अथवा एकसो एकनो नियम नहि जोइए. वली पादरी लोकोपण पोताना छापेला पुस्तकोमां इसामसीह (जीससक्राइस्ट) नी मूर्त्ति तेज वखतनी छपावे छे, के जे वखते मसीहने शूली उपर देवाने लइ जता हता. ते मूर्त्तिने देखवाथी इसामसीहनी सर्व अवस्था ख्यालमां आवी जाय छे. बस! स्थापनानुं प्रयोजन तो एज छे के ते देखवाथी असल वस्तुनुं स्वरूप याद आवी जाय छे. आश्चर्य तो एज छे

के वर्तमानमां केटलाएक तुच्छबुद्धिवाला पोताना बनावेला पुस्तकमां यज्ञशाला तथा यज्ञोपकरणनी स्थापना पोताना हाथथी करीने पोताना शिष्योने जणावे छे के यज्ञोपकरण आ आकृतिनां जोइए, छतां फरी कहे छे के अमे स्थापनाने मानता नथी. हवे विचार करवो जोइए के ते उंना करतां अधिक मंदमति कोइ जगत्मां छे ? पोते स्थापना करे छे, छतांपि फरी कहे छे के अमे स्थापनाने मानता नथी. ते कारणथी जे पुरुष पोताना शास्त्रना कर्त्ताने देहधारी मानशे, ते अवश्य तेनी मूर्त्तिने पण मानशे, अने जेउं पोताना शास्त्रना उपदेष्टाने देहरहित माने छे, तेउं अल्पबुद्धिमंत होवाथी प्रमाण अनभिज्ञ छे, कारण के जेने देह नथी, ते शास्त्रना उपदेष्टा कदापि होइ शकता नथी, कारण के देह रहित होवुं, अने शास्त्रना उपदेश देवावाला थवुं, ए वातमां कोइ पण प्रमाण नथी. वली निराकार, सर्वव्यापी परमेश्वरनुं ध्यानपण कोइ करी शकतुं नथी, दृष्टांत, जेम आकाशनुं ध्यान. ते कारणथी अढार दूषणोथी रहित जे परमेश्वर छे, तेनी मूर्त्ति अवश्य मानवी तथा पूजवी जोइए, एवा देव तो अर्हंतज छे, ते कारणथी अर्हंतनी प्रतिमा मानवी जोइए, परंतु कोइ डुर्बुद्धिमान्ना कुहेतुउंथी तजवी न जोइए. इति स्थापना.

हवे त्रीजा ड्रव्यनिक्षेपनुं स्वरूप एवुं छे के, जे जीवें तीर्थंकर नाम कर्मनो निकाचित बंध करेलो छे, ते जीवमां नावि गुणोनो आरोप, अर्थात् नविष्यमां तीर्थंकर नगवान् आ प्रमाणे थशे, एवो वर्त्तमानमां तेनामां आरोप करीने वंदन, पूजन करवाथी अनेक नव्यजीवोए मोक्ष प्राप्त करेल छे.

चोथो नावनिक्षेप. वर्त्तमानकालमां सीमंधर प्रमुख तीर्थंकर केवलज्ञानसंयुक्त, समवसरणमां विराजमान, नव्यजीवोना प्रतिबोधक, चतुर्विधसंघना स्थापक, एवा नाव अर्हंत, जेना चरणकमलनी सेवा करीने अनेक जीव मोक्ष प्राप्त करेछे, आ नावनिक्षेप छे. आ चारे निक्षेपें संयुक्त, एवा जे अरिहंत, देवाधिदेव, महागोप, महामाहण, महानिर्यामक, महासार्थवाह, महावैद्य, महापरोपकारी, करुणासमुद्र, इत्यादि अनेक उपमा लायक, नव्यजीवोनो अज्ञान अंधकार दूर करवाने सूर्य समान, जेमनां वचन प्रमाणथी अविरोधि, एवा मुनिमनमोहन, योगी-

श्वर, चिदानंदघनरूप, अरिहंतने हुं देव अर्थात् परमेश्वर मानुंछुं, तेनी सेवा करुं, तेनी आज्ञा शिरपर धारण करुं, एम जे मानवुं ते प्रथम व्यवहार शुद्ध देवतत्व छे.

बीजा निश्चय शुद्ध देवतत्त्वनुं स्वरूप कहीयें छीयें. जे शुद्ध आत्मस्वरूपनो अनुभव करवो, ते शुद्धआत्मस्वरूपज निश्चय देवतत्त्व छे. केवुं छे ते आत्मस्वरूप? पांचवर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, शब्द, क्रिया, तेउथी रहित, तथा योगथी रहित, अतींद्रिय, अविनाशी, अनुपाधि, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्त्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुणोनुं भाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवो मारो आत्मा छे, तेज निश्चय देव छे.

हवे बीजा गुरुतत्त्वनुं स्वरूप कहीयें छीयें. तेना पण बे भेद छे. १ शुद्ध व्यवहार गुरु, २ शुद्धनिश्चय गुरु. तेमां शुद्ध व्यवहारगुरुनुं स्वरूप तो गुरुतत्व निरूपण परिछेदमां लखी आव्या छीए, त्यांथी जाणी लेवुं. एवा साधुने गुरु करी माने. एवा गुरुनी आज्ञा मुजब प्रवर्त्ते. एवा मुनिने पात्र बुद्धिथी शुद्ध अन्नादि आपे. इति व्यवहारशुद्धगुरुतत्त्वस्वरूप.

निश्चय गुरुतत्त्व तो शुद्धात्मविज्ञानपूर्वक छे. हेयोपादेय उपयोगयुक्त जे परिहार प्रवृत्तिज्ञान ते निश्चय गुरुतत्त्व छे.

त्रीजा धर्मतत्वनुं स्वरूप कहीयें छीयें. धर्मतत्त्वना पण बे भेद छे. १ व्यवहारधर्मतत्त्व, निश्चयधर्मतत्त्व. तेमां व्यवहाररूपधर्म दया मुख्य छे. अने सत्यादि व्रत सर्व दयानी रक्षावास्ते छे; ते कारणथी दयानुं स्वरूप लखीए छीए. दयाना आठ भेद छे. १ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूप दया, ६ अनुबंध दया, ७ व्यवहार दया, ८ निश्चय दया.

१ द्रव्यदयानुं स्वरूप एवुं छे के सर्वकाम यत्नापूर्वक करवां. जैनमत वालाउनो आ कुलधर्म छे. सर्व जैनसमुदाय प्राणी गलीने पीए छे, अन्न शोधीने खाय छे, जे कोइ जैनी छल कपट करे छे, असत्य बोले छे, विश्वासघात करे छे, ते पापी जीव छे, अने ते जैनमतने कलंकित करे छे. ते सर्वदोष, ते जीवनाज छे, जैनमतनो तेमां कांइपण दोष नथी. जैनमत तो एवो पवित्र छे के जेमां कांइपण अनुचित उपदेश नथी. आ

वात सर्वसुज्ञ जनोने विदित छे. ते कारणथी जे जे काम करवां ते सर्व यत्नापूर्वक जीवरक्षार्थी करवां ते द्रव्यदया समजवी.

२ बीजी भावदया. बीजा जीवोने गुणप्राप्ति वास्ते, तथा दुर्गतिमां पडतां जीवोना रक्षणवास्ते, अंतःकरणमां अनुकंपा बुद्धिसंयुक्त तेउने हितोपदेश करवो ते भावदया छे.

त्रीजी स्वदया. पोताना आत्मानी. अनादि कालथी मिथ्यात्व अशुद्ध उपयोग, अशुद्धश्रद्धानपूर्वक अशुद्धप्रवृत्ति, तथा कषायादि भाव शस्त्रोथी समये समये, आत्माना ज्ञानादिगुणोरूप भावप्राणोना घातरूप, हिंसा थया करे छे, एवी जिनेश्वर भगवान्नी वाणी श्रवण करवाथी पूर्वोक्त भावशस्त्रोनो त्याग करीने, स्वसत्तामां प्रवृत्ति करीने, शुद्धोपयोग धारण करीने, विषय, कषायथी दूर रहीने, अने शुभ अशुभ कर्मफलना उदयमां अव्यापक रहीने अर्थात् सुखदुःखमां हर्षविषाद न करतां, प्रतिक्षण अशुभ कर्मने निदान दूर करवानी जे चिंता तेनुं नाम स्वदया छे. आ स्वदयानी रुचिवाला जीव पोतानी परिणति शुद्ध करवा वास्ते जिनपूजा, तीर्थयात्रा, रथयात्रा प्रमुख शुभप्रवृत्ति करे, बहुमान पूर्वक जिनगुणामृतनुं पान करे, असत् प्रवृत्तियी चित्तने हठावी तत्त्वावलंबी करे, पुद्गलावलंबीपणुं हठावे, आ शुभ आश्रवमां यद्यपि देखवामां केटलाएक जीवोनी हिंसा मालम पडे छे, तोपण आत्मानी अशुद्ध परिणति दूर थवाथी आत्मा गुणग्राही थाय छे, ज्यारे गुणग्राही थाय छे, त्यारे ज्ञानवान् थाय छे, ते कारणथी सर्वसाधक जीवोने आ स्वदया परम साधन छे. आ स्वदया वास्ते साधुपण नवकल्पी विहार करे छे, उपदेश आपे छे, चर्चा करेछे, तथा पूजन, प्रतिलेखन करे छे. यद्यपि नदी नालां उतरतां तथा अन्य कार्यपरत्वें योगोनी चपलताथी आश्रव थाय छे, तोपण चेतनस्वरूप अनुयायी रहेछे, जिनाज्ञा पाले छे, कषाय स्यानमंद करे छे, स्वछंदता दूर करे छे, अने धर्म प्रवृत्तिनी वृद्धि करे छे. आ स्वदया वास्ते साधुपण शुभाश्रव पोताना कल्पप्रमाणे आचरण करे छे, परंतु आ आश्रव साधक दशामां बाधक नथी.

४ चोथी परदया, अर्थात् छ कायना जीवोनी रक्षा करवी. ज्यां स्वदया छे त्यां परदया निश्चयपूर्वक छे, अने ज्यां परदया छे, त्यां

स्वदयानी ज्ञजना ठे, अर्थात् होय पण खरी अने न होय पण खरी.

५ पांचमी स्वरूपदया. इह लोक, परलोकना विषयसुखवास्ते तथा लोकोनी देखादेखीथी जे जीवनी रक्षा करवी ते स्वरूपदया ठे. आ दयाथी विषयसुख तो प्राप्त थायठे, परंतु देडकाना चूर्णनी जेम संसारनी वृद्धि थाय ठे. स्वरूपदया देखवामां दया ठे, परंतु ज्ञावें हिंसाज ठे.

६ ठठी अनुबंधदया. श्रावक मोटा आडंबरथी मुनिने वांदवा वास्ते जाय, तथा उपकार बुद्धिथी बीजा जीवोने सन्मार्गमां लाववावास्ते ताडना तर्जना करे, कोइने शिक्षा पण आपे. ए प्रमाणे करतां, देखवामां तो हिंसा ठे, परंतु अंते स्वपरने लाज्ञनुं कारण होवाथी दया ठे. वली साधु, आचार्य पोतानां शिष्य शिष्याउने तेउनी जूल याद करावे ठे, योग्य प्रसंगें शिक्षा करे ठे, कोइने अनुचित करतां निवारे ठे, कोइने एकवार कहे ठे, कोइने वारंवार कहे ठे, तथा शिक्षा करे ठे, कोइ उपर क्रोधपण करे ठे, शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिथी दंडपण आपे ठे, इत्यादि कामोमां यद्यपि हिंसा देखाय ठे, तो पण फल दयानां ठे.

७ सातमी व्यवहारदया. जे विधिमार्गे अनुयायी जीवदया पाले, सर्व क्रियाकलाप उपयोगपूर्वक करे ते व्यवहारदया ठे.

८ आठमी निश्चयदया. शुद्ध साध्य उपयोगमां एकत्वज्ञाव, अज्ञेद उपयोग, साध्यज्ञावमां एकताज्ञान, ते निश्चयदया. आ दयाथी उपरना गुणस्थानकोमां जीव आरोह करे ठे, तेथी आ दया उत्कृष्ट ठे; इत्यादि अनेक प्रकारथी दयाना स्वरूपविज्ञानपूर्वक, सूत्र, निर्युक्ति, ज्ञाष्य, चूर्णी, वृत्ति पंचांगी सम्मत, प्रत्यक्षादि प्रमाणपूर्वक, नैगमादि नय, नामादि निक्षेप, सप्तज्ञंगी, ज्ञाननय, क्रियानय, निश्चय व्यवहार नय, तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय, इत्यादि उज्ञय ज्ञावमां यथावसरें अर्पित, अनर्पित नयनिपुणताथी, मुख्य गौण ज्ञावें उज्ञयनयसम्मत, शुद्धस्याद्वादशैलीविज्ञानपूर्वक, श्रीसिद्धांतोक्त दान, शील, तप, ज्ञावनारूप शुज्ञप्रवृत्ति तेनुं नाम शुद्धव्यवहार धर्म कहियें.

बीजो निश्चय धर्म. ते पोताना आत्मस्वरूपने जाणवुं तथा वस्तुना स्वज्ञावने जाणवो, जेम के मारो आत्मा शुद्ध चैतन्य रूप, असंख्यात प्रदेशी, अमूर्त्त, स्वदेहमात्रव्यापी, सर्व पुज्ञलोथी ज्ञिन्न, अखंड, अलिप्त,

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुख, वीर्य, अव्याबाध, सत्चिदानंदादि अनंत गुणमय, अविनाशी, अनुपाधि, अविकारी छे. तेनाथी विलक्षण जे परपुद्गलादि ते मारा नथी. ते पुद्गलना पांच विकार छे, १ शब्द, २ रूप, ३ रस, ४ गंध, ५ स्पर्श. आ पांचना उत्तर भेद अनेक छे. आलोकाकाशमां उद्योत, अंधकार, शब्द, सर्वरूपी वस्तुनी छाया, रत्नी कान्ति शीत, धूप, नानाप्रकारना रंग, रूप, संस्थान, नानाप्रकारना सुगंध, दुर्गंध, नानाप्रकारना रस, सर्वसंसारी जीवोना देह, भाषा, मनना विकल्प, दशप्राण, छ पर्याप्ति, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, खुशी, उदासि, कदाग्रह, हठ, लडाइ, क्रोधादि चार कषाय, शाता, अशाता, उंच, नीच, निद्रा, विकथा, सर्वपुण्य प्रकृति, सर्वपापप्रकृति, रीझ, मोज, खीज, खेद, छ लेश्या, लाभालाभ, यश, अपयश, मूर्खता, त्रणप्रकारना वेद, कामचेष्टा, गति, जाति, कुल, इत्यादि आठे कर्मनां विपाक फल. आ सर्व बावतो जीवने अनुभवसिद्ध छे, अने सूक्ष्मपुद्गल इंद्रिय अगोचर छे, ते परमाणु आदि अनेक तरेहना छे. पूर्वोक्त पुद्गलना संयोगथी जीव चारे गतिमां भटके छे. आ पुद्गल मारी जाति नथी, आ पुद्गलनो मारी साथे कांइ वास्तव संबंध नथी, आ पुद्गल सर्व त्यागवा योग्य छे, जे आ पुद्गलनो संसर्ग छे तेज संसार छे, आ पुद्गलनी संगतथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि गुण वगडी जाय छे, जे आ पुद्गल द्रव्यनी रचना छे ते मारा आत्मानो स्वभाव नथी, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, आ चारे द्रव्य ज्ञेयरूप छे, परंतु हुं ते सर्वथी अन्य छुं, तेउ मारा नहि, हुं तेउनो नहि, हुं तेउनो साथी पण नहि, हुं मारा स्वरूपनोज स्वामी छुं, मारो स्वभाव सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्ररूप छे, वर्णरहित, गंधरहित, रसरहित, स्पर्शरहित, चैतन्यगुण, अनंत, अव्याबाध, अनंत दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्यादि अनंतगुणस्वरूप छे, तेउनी श्रद्धा, भासन, रमणतारूप चिदानंदघन मारो स्वभाव छे. एवो जे मारो पूर्णानंद स्वभाव, ते प्रगट करवावास्ते सर्व शुद्ध व्यवहारनय निमित्तमात्र छे, परंतु मुख्य तो मारा स्वभावमां जे रमणता करवी तेज शुद्ध साधन छे, तेज धर्म छे. इति निश्चयधर्मस्वरूप.

आ प्रणे तत्त्वनी जे निश्चल परिणतिरूप श्रद्धा ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. जे जीवने ए प्रमाणे बोध न होय ते जीव जो कदी पक्षपात रहित, एम मनमां धारे के "तं सव्वं निस्संकं, जं जीणेहिं पवेइयं इत्यादि" जे जिनेश्वर भगवाने अर्थ कह्या छे ते सर्व निःशंकित सत्य छे, तो तेनी एवी तत्त्वार्थश्रद्धा पण सम्यग्दर्शन कहेवाय छे. तेनाथी विपरीत ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. आ मिथ्यात्वनुं स्वरूप नवतत्त्वप्रकरणमां लखी आव्या छीए त्यांथी जाणवुं. मिथ्यात्वनो त्याग तेज सम्यक्त्व कहेवाय छे. इति व्यवहारसम्यक्त्वस्वरूप.

हवे निश्चय सम्यक्त्वनुं स्वरूप लखीए छीए. पूर्वे निश्चय देव, गुरु अने धर्मनुं जे स्वरूप कह्युं छे, तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. जे जीव चार अनंतानुबंधी कषाय, सम्यक्त्व मोह, मिश्रमोह, मिथ्यात्वमोह, आ सात प्रकृतिनो उपशम, क्षयोपशम, तथा क्षय करे तेने निश्चय सम्यक्त्व थाय छे. निश्चय सम्यक्त्व परोक्षज्ञाननो विषय नथी, केवली जाणी शके छे, के आ जीवने निश्चय सम्यक्त्व छे. आ सम्यक्त्व प्रगट थतां जीवने नरक, तिर्यंच, आ बंने गतिना आयुनो बंध थतो नथी.

हवे सम्यक्त्वनी करणी लखीये छीयें. सम्यक्त्वी जीव नित्य योगवाइ मलतां, तथा शरीरमां व्याधिनो अभाव छते. जिनप्रतिमानां दर्शन कर्या पछी भोजन करे, जो जिनप्रतिमानो योग न मले तो पूर्व दिशि सन्मुख बेसी वर्त्तमान तीर्थंकरोनुं चैत्यवंदन करे. जो रोगादि विघ्नथी दर्शन न थाय तो जेउने आगार छे, तेउना नियमनो भंग थतो नथी. जिनेश्वर भगवान्ना मंदिरमां दश मोटी आशातना अवश्य वर्जे. तेउनां नाम. १ तंबोल, फल प्रमुख खावानी वस्तु भगवान्ना मंदिरमां खाय नहि, २ पाणी, दुध, दारु, अर्क प्रमुख पीये नहि, ३ भोजन करे नहि, ४ मंदिरनी अंदर उपानह प्रमुख लावे नहि, ५ स्त्री आदि संग मैथुन सेवे नहि, ६ शयन करे नहि, ७ थुंके नहि, ८ लघुशंका करे नहि, ए जंगल (दिशा) जाय नहि, १० मंदिरमां जुगार, चोपट, चित्तरंज प्रमुख खेले नहि. आ दश आशातना टाले, तथा उत्कृष्टी चोराशी आशातना वर्जे. वली एक मासमां आटला फुलहार चढावुं, एकमासमां आटलुं घी आपुं, एकवर्षमां आ-

टला अंगलूहणां आपुं, वर्षमां आटलुं केशर, चंदन, वरास, कपुरप्रमुख भगवान्नी पूजामां वापरुं, धूप, अगरवत्ति उखेवुं, अक्षत, नैवेद्य, फल पूजा आ प्रमाणे करुं, धनने अनुसारें वर्षमां आटली अष्टप्रकारी, सत्तर प्रकारी पूजा रचावुं, वर्षमां आटला रुपैया साधारणद्रव्यमां खरचुं, वर्षमां आटलुं द्रव्य पूजावास्ते खरचुं, दिनदिन प्रति एक नवकारवाली अर्थात् माला पंचपरमेष्टि मंत्रनी, मोक्षनिमित्त जपुं, दिनप्रति रोगना अभाव छते नमस्कार सहित बे घडी दिन चडे त्यांसुधी चार आहारनुं प्रत्याख्यान करुं, रात्रिमां दुविहार प्रत्याख्यान करुं, रोगादिकारणे न थइ शके तो आगार, वर्षप्रति आटला साधर्मी बंधुउने जमाडुं, ए प्रमाणे सम्यक्त्व पालुं; तथा सम्यक्त्वना पांच अतिचार छे ते टालुं. ते पांच अतिचारनुं स्वरूप कहिये छियें.

१ प्रथम शंका अतिचार. जिनवचनमां शंका न करवी, कारण के जिनवचन बहुज गंभीर छे; ते सर्वना यथार्थ अर्थ समजावनारा आ कालमां कोइ गुरु नथी, वली शास्त्रो जे छे ते अनंतनयात्मक छे. तेउमां गणतरी तथा संज्ञा विचित्र तरेहनी छे. कोइ स्थलें कोडीशब्द क्रोडनो वाचक छे, तो कोई स्थलें रूढी वस्तुवाचक छे, कारण के श्रीजद्रगणि क्षमाश्रमण सर्वसंघना सम्मत आचार्य, संघयणनामा पुस्तकमां तथा विशेषणवती ग्रंथमां लखेछे के, कोइक आचार्य कोडी शब्दने क्रोडनो वाचक मानता नथी, परंतु संज्ञांतर मानेछे, वर्तमान कालमां वीशने पण कोडी कहेछे, तथा सोरठ देशमां पांच आनाने पण कोडी कहेछे. जेवो आ कोडी शब्दमां मतांतर छे, तेवी रीतें शत, सहस्र शब्दोपण कोइ संज्ञाना वाचक होय तो कांइ दोष नथी. वली शत्रुंजय तीर्थमां ज्यां मुनिउ मोक्ष गयेला छे, त्यां पण पांच कोडी आदिशब्दोनी कोइ संज्ञा छे, तेवीजरीतें छप्पन कुलकोडी जादव कहेवायछे, त्यांपण यादवोना छप्पन कुलोनी कोडी कोइ संज्ञाविशेष छे, एजप्रमाणे शास्त्रोमां सर्वस्थलें चक्रवर्त्तिनी सेना, तथा कोणिक चेटक राजाउनी सेनामां जे कोडी तथा शत सहस्र शब्दो छे, ते संज्ञाविशेषवाचक संभव थायछे, ते कारणथी सर्व शब्दोना सर्वस्थलें एकसरखा अर्थ मानवा युक्त नथी. आ कथनमां पूज्यश्री जिनजद्रगणिक्षमाश्रमण पुरा साक्षी आपनारछे

वली केटलाएक नव्यजीवोए सामान्य प्रकारें एम पण सांजलेलुं छे के पांचमा आरामां उत्कृष्ट एकसो वीश वर्षनुं मनुष्यनुं आयु छे; ज्यारे ते जीवो कोइ अंग्रेज प्रमुखना मुखथी एम सांजले छे के दोढसो, बसो तथा अढीसो वर्षनी आयुवाला मनुष्य नोट्टानादि देशमां विद्यमान छे, त्यारे दृढश्रद्धावाला, नोला जीव तो तेउनुं कहेवुं सत्य मानता नथी,कदापि मोटी आयुवालो मनुष्य तेउनी सन्मुख लावी उनो राखिए, तो पण तेउ तो ते वात जूठीज मानशे, कारण के तेउ एम माने छे के अमारा जिनेंद्र देवनुं कथन कदापि असत्य नथी, परंतु जेउने जैनमतनी दृढश्रद्धा नथी, अने सांसारिक विद्यामां कांइक निपुण छे, पछी तेउ कदापि जैनमतवाला होय तो पण, तेउना मनमां अवश्य शंका पडी जाय छे, कारण के तेउए पण जैनमतनां सर्व शास्त्र श्रवण कर्यां नथी. सारांश ए छे के शास्त्रमां जे कथन छे, ते सापेक्षक छे, बाहुल्यताथी कहेल छे, ते कथंचित् अन्यथा होय तो तेमां आश्चर्य मानवुं नहि; कारण के बहु शास्त्रोमां लखेलुं छे के ज्योतिष चक्र अर्थात् तारामंडलना सर्व तारा मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा दीए छे. आ वात सर्व जैनी माने छे, परंतु ध्रुवना तारा कोइ स्थले फरता नथी,अने ध्रुवनी पासेना ताराउ जे सप्तऋषि रुढिमां प्रसिद्ध छे, जेउने बालको मंजी, पहेरेदार, कुत्ता, तेमज चोर कहे छे, तथा बीजा केटलाएक तारा ध्रुवनी नजीक छे, ते सर्व ध्रुवनी प्रदक्षिणा फरे छे, परंतु मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा देता नथी; आ विना अमे जातें अनुनवेली छे, अने बीजाउने बतावी शकीए छीए, तो पछी प्रथम जे शास्त्रकारें कहेलुं छे के सर्वतारा मेरुनी प्रदक्षिणा दीए छे, आ कथन जैनी केम सत्य माने छे?

समाधान एम छे के, प्रथमनुं जे कथन छे, ते बाहुल्यतानी अपेक्षाए छे, कारण के बहु तारामंडल एवुं छे के ते मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा फरेछे, अने केटलुंएक एवुं छे के जेउ ध्रुवनीज आस पास चक्र दीए छे. आ समाधान पूज्यश्री जिननद्रगणि क्षमाश्रमणजीए संघयण तथा विशेषणवती ग्रंथमां लखेलुं छे, एवीरीतें के मेरु पर्वतनी चारे बाजुए चार ध्रुवछे, अने ते चारे ध्रुवोनी पासे एवा एवा ताराउ छे जे निरंतर ते चारे ध्रुवोनीज आसपास चक्र दीए छे. तेथी एम सिद्ध थयुं के शास्त्रनुं

जे कथन छे ते बाहुल्यताए तेमज कोइ अपेक्षाथी संयुक्त छे, अने कोइस्थले स्थूल व्यवहार नयने मते कथन करेलुं छे, परंतु सूक्ष्म तेमज अधिकन्यूनतानी विवक्षा करेली नथी. तेवीजरीतें सो वर्षथी अधिक आयु जे पंचम कालमां कहेलुं छे, ते बाहुल्यतानी अपेक्षा तथा आर्यखंड अर्थात् मध्यखंडनी अपेक्षा छे; जो कोइ मनुष्यनुं दोढसो, बसो, तेमज अढीसो वर्षनुं आयुष्य थइ जाय तो मनमां जिनवचन माटे शंका न करवी, जेमके कोण जाणे जिनवचन सत्य हशे के असत्य हशे ? हेतु ए छे के शास्त्रना आशय अति गंभीर छे, अने वर्तमानमां यथार्थ बतावनारा गीतार्थ गुरु कोइ नथी.

आयुनी बाबतमां समाधान एम छे के भगवान् श्री महावीर स्वामिना निर्वाण पछी (५७५) वर्षे लगभग जैनमतना आचार्य श्री आर्य रक्षितसूरि नवपूर्वना पाठक थया. तेमनी पासे शक्र इंद्र निगोदना जीवनुं स्वरूप श्रवण करवा आव्या. शक्र इंद्रे प्रथम वृद्ध ब्राह्मणनुं रूप धारण करीने श्रीआर्यरक्षित सूरिजीने पुछ्युं, हे भगवन् ! हुं वृद्ध थयो छुं, जो मारुं आयुष्य थोडुं होय तो मने कृपा करी बतावो, जेथी हुं अनशन करुं, ते सांभली सूरिजीए दशमा पूर्वना यवका अध्ययनमां उपयोग दइने जोयुं तो तेनुं आयुष्य सो वर्षथी अधिक मालम पड्युं, फरी उपयोग देतां बसो वर्षथी अधिक जाणवामां आव्युं, फरी उपयोग देतां त्रणसो वर्षथी अधिक जणायुं; ते वखते सूरिजीए विचार कर्यो के आ भारत वर्षनो मनुष्य नथी. आ कथानक आवश्यक सूत्रनी सामायक अध्ययननी उपोद्घात निर्युक्तिमां छे. आ कथानकथी एम साबीत थाय छे के भारतवर्षना मनुष्यनुं आयुष्य त्रणसो वर्ष सुधीनुं होय तो आश्चर्य नहि; कारण के श्री आर्यरक्षित सूरिजीए वृद्ध ब्राह्मणनुं आयु त्रणसो वर्षथी अधिक देख्युं त्यारे कह्युं के आ भारत वर्षनो मनुष्य नथी. आ कथनथी कथंचित् त्रणसो वर्षसुधीनुं आयुष्य भारतवर्षमां मनुष्यनुं होय तो शुं आश्चर्य छे ?

केटलाएक मनुष्यना मनमां एवी पण शंका छे के जैनमतवाला भरतखंड क्यां सुधी माने छे ? आ कालमां जे कांइ लोकोना देखवामां अथवा सांभळवामां आवे छे के अमेरीकादि देश तेमज रूशीआ तथा

चीनादि देश भारतवर्षमां गणाय के नहि? समाधान मात्र एटलुंज छे के अमेरिका तथा विलायतादि सर्वमुलकोनी वचमां जे समुद्र पडेला छे ते ऋषभदेव तेमज भरत चक्रवर्त्तिना समयमां हता नहि, परंतु जगती वहार जे महासमुद्र छे तेज हतो. ते कारणथी अर्थात् समुद्र अंदर आवी जवाथी असल भरतक्षेत्रनुं स्वरूप वगडी गयुं, केटलाएक भाग समुद्र थइगयो, अने केटलाएक द्विपो वनी गया.

आ वावतमां जैनमतना शत्रुंजय माहात्म्यनामा ग्रंथमां लख्युं छे के सगरनामा वीजा चक्रवर्त्ती भारतवर्षमां आ समुद्रने जंबूद्वीपनी दक्षिणदिशाना विजयंतनामा दरवाजाना रस्तेथी लावेल छे, तेम लाववाथी वर्वरादि हजारो देश तो जलमां डुवी समुद्रनी भूमि वनी गया, जे जे उंचा देशो हता ते विलायतादि द्वीपो वनी गया. असल देशोनां नाम नष्ट थवाथी वहु देशोनां नाम कल्पित राखवामां आव्यां, अने भरत खंडनुं स्वरूप तदन फरीगयुं, केटलाएक देशोनी चारे वाजुए समुद्रफरी गयो, केटलाएक देशोना उत्तर भागमां वरफ पडवाथी, तेमज समय वदलाइ जवाथी, सर्वथा पाणी जामी गयुं, तेमज समुद्रसाथे मलीगयुं, तेथी चारे वाजुए समुद्रज देखाय छे. गमनागमन पण तेज कारणथी वंध थइगयां. शास्त्रकारें तो प्रथम आरामां तथा ऋषभदेवजी अने भरत चक्रवर्त्तिना समयमां भारतवर्षनुं जे स्वरूप हतुं तेज प्रमाणे अद्यापि पर्यंत वतावेलुं जणाय छे, परंतु भारतवर्षनुं स्वरूप वगडीने कांइनुं कांइ स्वरूप केवीरीतें थइगयुं तेनुं विस्तारथी वर्णन यथार्थ रीतें करेलुं देखवामां आवतुं नथी. कदापि कोइए लखेलुं हशे तो पण जैनमतनी उपर एवी एवी मोटी विपत्तिउ पडेली छे के तेथी लाखो तो शुं वलके क्रोडो ग्रंथ नाश पामी गया छे, ते कारणथी आ स्थलें सर्ववृत्तांत यथार्थरीतें वतावी शकतो नथी; परंतु जैनमतना जेटला ग्रंथ मारा वांचवामां आव्या छे, तेउमांथी पण मने जे ठीक लाग्युं छे ते आ ग्रंथमां में लखेलुं छे.

सर्वक्षेत्र ते प्रमाणे अदल वदल थइ गयां; गंगा, सिंधु असल स्थान वहेती वहेती रही गइ. आगलनो प्रवाह समुद्रें रोकी लीधो, अने पाछलथी पाणी आववुं वंध थइ गयुं. वाद जे पर्वतथी अधिक नदीनी प्र-

वृत्ति थइ ते नदी ते पर्वतथी निकलती लोकोए मानी लीधी. गंगा अने सिंधुमां क्षुल्लक हेमवंत पर्वतथी जल आववुं बंध थइ गयुं; नाममात्र सिंधु रही गइ. नगरीओमां वनिता नगरीनी कल्पनापर अयोध्या मानी, अने काबुलमां तक्षिला अर्थात् बाहुबलनी नगरीनी कल्पना करी, जेनुं नाम गिजनी प्रसिद्ध छे, ते तक्षिला पण आज रही नथी. कारण ए छे के जैनिओनी श्रद्धा अनुसारें प्रथम आराने तेमज ऋषभदेव अने भरत राजाना समयने व्यतीत थयां असंख्य वर्ष थइ गयां छे, तो ते दरमीआन देश, पर्वत, नदी, नगरादि उलट पालट थइ जाय तेमां शुं आश्चर्य छे!

वली समुद्रनुं देशो उपर फरवुं तो तौरेत ग्रंथथी पण ठीक ठीक सिद्ध थाय छे. पुराणादि ग्रंथोमां पण लखेलुं छे के कोइ एवो समय हतो, जे वखतें समुद्रमां पाणी नहोतुं, पाछलथी आवेलुं छे. ते कारणथी शत्रुंजय माहात्म्यमां जे लखेलुं छे के भरतक्षेत्रमां सगर चक्रवर्ती समुद्रनुं पाणी लाव्या छे, ते कहेवुं वास्तविक लागे छे.

श्रीतपगछना आचार्य विजयसेन सूरिपण पोताना प्रश्नोत्तरमां लखे छे के मागध, वरदाम अने प्रभासनामनां त्रण जे तीर्थ छे, ते जगतीनी बहारना समुद्रमां छे, तेथी पण सिद्ध थाय छे के भरत चक्रवर्ती छ खंड साधवा तेमज मागधादि तीर्थ साधवा गया हता, त्यारे आ समुद्रनुं पाणी रस्तामां नहोतुं, अने शास्त्रकारोए तो सर्व शास्त्रोनी शैली श्री ऋषभदेवजीना समयानुसार राखेली छे, ते कारणथी चक्रवर्ती तमामनां कथन भरत चक्रवर्ती सदृश वर्णन करेल छे.

आ कालमां केटलाएक विद्वानोए भूगोलना हिसाबथी पृथ्वीनुं स्वरूप लखेलुं छे, तथा ते अनुसारें शरद् तथा गरम देशोना विभाग करेला छे, ते जोतां, अगर जो के तेओना देखवा, सांभलवा, तथा अनुमान मुजब वर्त्तमान समयमां ए प्रमाणेज हशे, परंतु सदा काल एमज हतुं, एम कहेवुं वास्तविक नथी. भूगोल हस्तामलक पुस्तकमां लखेलुं छे के रुशीआना उत्तर भागमां ज्यां बरफ शिवाय बीजुं कांइ छे नहि, त्यां गरमीना दिवसोमां बरफ गलवाथी तथा केटलाएक स्थले बरफना ढग ढली पडवाथी तेओनी नीचेथी एक जातना हाथी निकले छे, हाथी पण संकडो निकले छे, जेनुं नाम ते देशवाला मेमाथ कहे छे. मोटुं आ-

अर्थ तो ते मैंमाथोने देखवाथी ए लागे ठे के ते जानवर गरम मुलकना रहेनारां ठे, तेउ आ शरद्मुलकमां क्यांथी आव्या ? तेउने खावावास्ते पण त्यां कांइ नथी. आ कालमां जो एकपण हाथी ते मुलकमां लइ जइ वांधीए तो थोडा वखतमां ते मरी जाय; ठतां लाखो मैंमाथ ते मुलकमां क्यांथी जाता हशे ? तेमज शुं खाता हशे ? ते बावतमां मात्र एज खुलासो आपी शकाशे के कोइ समयमां ते मुलक गरमदेश हशे, बाद पवननी तसीर बदलावाथी शरद् मुलक थइ गयो. आ वृत्तांतथी एम सिद्ध थाय ठे के शरद् मुलक कोइ कालमां गरम थइ जाय ठे,अने गरम मुलक शरद् थइ जाय ठे, ते कारणथी जूगोलने अनुसारें शरदी, गरमीनी अवस्थानी जे कल्पना करवी, ते हमेशांने वास्ते डुरस्त नथी. शुं जाणीये देशोनी केवी केवी व्यवस्था बदलाइ चुकी ठे ? अने हजी शुं बदलावानी ठे ? जूस्तरवेत्ताउ लखे ठे के आफ्रिका खंडना मध्यजागमां आवेलुं शहरानुं रेतीनुं मोटुं रण जे हाल घणुंज उंचाणमां ठे ते एकवखत महासागरनुं तलीयुं हतुं. ते कारणथी जमिननी स्थितिनुं पुरुं स्वरूप तो मात्र सर्वज्ञ जाणी शके ठे.

वली आ पृथ्वीने जूगोल कहेवामां आवेठे, वली एम पण कहेवायठे के सूर्य फरतो नथी, परंतु पृथ्वी सूर्यनी आसपास फरेठे. आ वात अंग्रेजोएज शोधेली नथी परंतु अंग्रेजोनी पहेलां पण आ वातना माननारा जारतवर्षमां हता, कारण के जैनमतना शीलंगाचार्य जे विक्रमना ७००. वर्ष लगजग थया ठे, तेउ श्री आचारांगसूत्रनी वृत्तिमां लखेठे के, केटलाएक एम पण मानेठे के पृथ्वी गोल फरेठे अने सूर्य स्थिर रहेठे, परंतु आ मत जैनिउनो नथी. जैनमतना शास्त्रोमां तो प्रगट लखेल ठे के सूर्य चालेठे, अने पृथ्वी स्थिर रहेठे; वली सूर्यने फरवानां एकसो चोराशी मंरूल आकाशमां ठे, ते मंरूलोमां प्रवेश करवो, तथा दिनमान, रात्रिमाननी वधघट थवी, तथा रुतुउनुं बदलावुं, ग्रहणनुं लागवुं, सूर्यना अस्त उदयमां मतोना विवाद, इत्यादि अनेक वात, सर्व सूर्यप्रज्ञप्ति वा चंद्रप्रज्ञप्ति शास्त्रो अध्ययन करवाथी मालम पडेठे.

वली पृथ्वीने गोल सावीत करवामां समुद्रमां चालतां वहाणना तलीयांने बदले वहाणना शढमात्र दूरजतां मालम पडेठे, इत्यादि जे जे कारणो

बतावेछे, ते ते कहेवावालाउनी समजमां जेम जेम आवतुं हशे तेम तेम बतावता हशे, परंतु अमारी समजणमां एम आवेछे के, नेत्रमां एवीज योग्यता छे, जेथी वस्तुनी गोलाइज मालम पडे, कारण के ज्यारे अमे लांबी तथा सरखा स्थलवाली सीधी सडक उपर उन्ना रहीए छीए, त्यारे अमारा पगनी जगाए सडक पहोली मालम पडेछे, अने ज्यारे दूरनो ते सडकनो नाग देखिये छियें त्यारे सडक सांकडी मालम पडेछे. वली तेज स्थलें आकाशमां मस्तकनी उपर सीधी लींटीए पक्षीने उंचे उडतां देखिये छियें, त्यारे जेटली उंचाइये दूर उडतुं अमने लागेछे, तेज पक्षिने ज्यारे सीधी लीटीमां थोडे दूर जइ उडतां देखिये छियें, त्यारे ते पक्षी पृथ्वीनी बहु नजीक देखाय छे. मात्र आटला अंतरना तफावतमां पृथ्वीनी एवी मोटी गोलाइ केम होय ? वली आकाशने ज्यारे देखिये छिये त्यारे घुमट जेवुं देखायछे, ते बाबतमां जे कोइ एम कहे के धरतीनी गोलाईना सबबथी आकाशपण गोल देखाय छे, आ कहेवुं वास्तविक नथी; कारण के, पृथ्वी थोडाज दूरमां एटली गोल थइ शकती नथी, ते कारणथी नेत्रोमां जे वस्तुने जाणवानी जेवी योग्यता छे तेवीज ते वस्तु देखाय छे. एम कहेवुं वास्तविक लागे छे.

वली आ पृथ्वी, नरतखंडनी बहु स्थले उंची, नीची मालम पडे छे, कारण के श्रीहेमचंद्रसूरि प्रमुख आचार्य पद्मप्रनचारित्रादि ग्रंथोमां लखेछे के लंकाथी अमुक योजन पश्चिम दिशातरफ जइए तो आठ योजन नीचे पाताललंका छे, जो ते योजन प्रमाण योजन होय तोतो शा माटे अमेरिकाज पाताललंका न होय? वली नीची जगा होवाथी बुद्धिमानोने पृथ्वी गोल मालम पडती होय. ते पाताललंकानी जेम बीजी जगाए पण धरती उंची नीची होय तो तेमां शुं आश्चर्य छे? कारण के पश्चिम महाविदेहनी धरती एक हजार योजन उंडी शास्त्रमां लखेली छे, तेवीजरीतें बीजी जगाए पण धरती उंची नीची होवाथी कांइनुं कांइ मालम पडे, ते कारणथी जैनमतिए श्री अरिहंत नगवंतना कथनमां शंका न करवी जोइए.

केटलाएक पुस्तकोमां लखेलुं अमे वांचेलुं तेमज सांनलेलुं पण छे के अमेरिकादि मुलकोमां एवी विद्या फेलायली छे के, जेथी बे हजार वर्ष

अगाउ जे मनुष्यो मरण पाम्या छे तेउने हाल, वोलाववामां आवे छे, वली तेउने ते वखतनो सर्व हेवाल पूछवामां आवेछे, त्यारे तेउ सर्व पोतानी व्यवस्था वतावेछे. परंतु मात्र परोक्ष रीतें शब्द श्रवण तेउ करावेछे, प्रत्यक्ष तेउ देखाडता नथी; तथा अनेक तरेहना वीजा पण तमासा तेउ देखाडेछे, जे देखवाथी अल्पबुद्धिमानोनी बुद्धि अस्तव्यस्त थइ जायछे, अने तेउना मनमां अनेक शंका, कंखा उत्पन्न थइ जायछे, जे कारणथी अर्हंतकथित धर्ममां अनादर थइ जायछे, कारण के जेम ते जीवोए जैनमतना पुरां शास्त्रो वाच्यां नथी, तेम श्रवण पण कर्यां नथी, जेथी तेउना मनमां जलदी अधीरज पण थइ जायछे, परंतु पोताना मतनां सर्व पुस्तको वांच्या तेमज सांजल्या विना मात्र तुछ वस्तुने वास्ते एकवार जैनधर्ममां शंका लाववी ते दीर्घदृष्टिपणुं नथी. पूर्वोक्त सर्व वृत्तांत इंद्रजालनी पूर्णविद्या जेउने आवडती होय तेउ वतावी शकेछे. में असुक ग्रंथमां लखेलुं वाच्युं छे के, कुमारपाल राजाना समयमां वोधिदेव नामनो एक ब्राह्मण हतो, तेणें कुमारपाल राजानी श्रद्धा जैनमतथी हगववा वास्ते, कुमारपालनी अगाउ तेना वंशना मूलराज आदि जे सात राजाउ थइगया हता तेउने नरक कुंडमां पडेला, विलाप करता, ए प्रमाणे कहेता देखाड्या के हे पुत्र! जे दिवसथी तें जैनधर्म अंगीकार करेलो छे, ते दिवसथी अमे तारा सात वडवाउ नरक कुंडमां पडेला छीए, जो तुं अमारुं जलुं चहातो हो तो जैनधर्मने तजी दे. आवी वीना देखीने कुमारपाल राजा पोताना चित्तमां गजराया; तत्काल जइ पोताना गुरु श्री हेमचंद्र आचार्यने सर्व वृत्तांत कही पुछ्युं के हे महाराज! आनो शुं हेतु छे? आचार्यजीए कह्युं के हे राजेंद्र! आ सर्व इंद्रजालनी विद्या छे, आवो हुं पण तमोने कांइक तमासो देखाडुं. त्यार वाद राजाने मकाननी अंदरना जागमां लइ जइ, चोवीश तीर्थंकर समवसरणमां जुदा जुदा वेठा छे, अने कुमारपाल राजाना तेज सात पुरुषो तीर्थंकरोनी सेवा करे छे, तेमज कुमारपालने कहे छे के हे पुत्र! तुं मोटो पुण्यात्मा छे के जेणें जैनधर्म अंगीकार करेल छे. जे दिवसथी तें जैनधर्म अंगीकार करेल छे, तेज दिवसथी अमे नरक कुंडमांथी निकली स्वर्गवासी थया छीए, ते कारणथी हे जाइ! तुं जैनधर्ममां दृढ रहे जे. त्यार वाद श्री हेमचंद्र

सूरि कुमारपाल राजाने वहार लाव्या. राजायें पुछ्युं के महाराज! तमासो वहुज आश्चर्यकारी छे. सूरिजीए कह्युं के हे राजन्! इंद्रजालनी विद्या जेउने आवडती होय, ते एम करी शके छे. इंद्रजाल विद्यानां सत्तावीश पीठ छे, तेमांथी सत्तर पीठ शंसारमां प्रचलित छे, परंतु सत्तावीशे पीठ हुं जाणुं छुं, हाल बीजो कोइपण जारतवर्षमां जाणतो नथी, अने जे गुरुउए अमने ते विद्या आपी हती, तेमणें एवी आज्ञा पण करेली छे के, जविष्यमां आ विद्या तमारे कोइने पण देवी नहि, कारण के आ विद्याथी मोटो अनर्थ उत्पन्न थशे, सारांश के आ कालमां जीव तुब बुद्धिवाला होवाथी तेउने आ विद्या जरशे नहि, वली तेज कारणथी अमारा आचार्योए योनिप्राजृत शास्त्र विछेद करी दीधेलां छे, ते योनि प्राजृतने अनुसारें आ इंद्रजाल रची शकाय छे. आ योनिप्राजृतनुं कथन व्यवहार जाष्यचूर्णीमां करेलुं छे, ज्यां लख्युं छे के आ योनिप्राजृतमां तंत्रविद्या छे, जेनाथी सर्प, घोडा, हाथी विगेरे जीवतां जानवर, वस्तुउना मेलापथी वनी शके छे, तथा सुवर्ण, मणि, रत्न प्रमुखपण वनी शके छे. आ मशालामांज एवी मिलनशक्ति छे के मरजीमां आवे ते वनावी ल्यो? ते कारणथी वर्त्तमानमां नवीन वस्तुने देखीने कोइए जैनधर्मथी चलायमान न थवुं जोइए. तत्त्वार्थना महाजाष्यमां सामंतजद्र आचार्य पण लखे छे के इंद्रजालीआ तीर्थंकरनी समान वाह्यरुद्धि सर्व वनावी शके छे, ते कारणथी कोइ वावतमां चमत्कार देखी जिनवचनमां शंका न करवी.

वली केटलाएक जैनमतवालाउने आ पण आश्चर्य छे के, ज्यारे आर्यावर्त्तमां वे प्रहरदिन होय छे, त्यारे अमेरिकामां अर्धरात्रि होय छे, अने ज्यारे अमेरिकामां वे प्रहर दिवस थाय छे, त्यारे आर्यावर्त्तमां अर्धरात्रि थाय छे, ते वावतना चोकस समाचार तारनी मददथी तेमज घडीआलना साधनथी मेलवी शकाय छे. आ वातनो यथार्थ उत्तर हुं आपी शकुं तेम नथी. मारी श्रद्धा एवी पण नथी के पूर्व आचार्योनी शाहादत शिवाय समाधान करुं, कारण के मात्र मारी कल्पनाथी कांइ जैनमत सत्य थइ शकतो नथी, जैनमत तो पोताना स्वरूपथीज सत्य वनशे, जो मारी कल्पनाज जैनमतनी सत्यतानुं कारण होय तो, कांइ

पूर्वाचार्यनी अपेक्षाज रहेशे नहि, वली जेना मनमां जे अर्थ सारो लागशे ते अर्थ बनावी लेशे. जेम वर्त्तमानमां कोइ पाखंडी मस्कराए ऋग् आदि वेदो उपर स्वकपोल कल्पित टीका बनावेली छे, ते अमे वांची पण छे तेउए वेदमंत्रादि उपर जे भाष्य बनाव्युं छे, ते मंत्रोना अर्थमां एवुं लखेलुं छे के "अग्निवोट" अर्थात् वरालयंत्रथी चालनारां वहाण, तथा रेलगाडी चालवानो विधि, तथा पृथ्वी गोल छे, ते सूर्यनी चारे बाजुए फरे छे, अने सूर्य स्थिर छे, इत्यादि अंग्रेजोए पोतानी बुद्धिना बलथी जे नवीन शोधनी विद्या बहार पाडी छे, ते सर्व विद्याउनुं वेदोमां कथन छे. पोताना शिष्योने वेदनुं महत्त्व बताववा वास्ते स्वकपोलकल्पित अर्थ बनावी लीधा छे; अने पूर्वे महीधरादि पंडितोए वेदो उपर जे दीपिका तथा भाष्यो रचेलां छे तेउनी निंदा तेमज मूर्खता प्रगट करेली छे. जेमके तेउ मूर्ख हता, तेउने वेदना अर्थ आवडता न होता.

प्रश्नः–पूर्वना अर्थ छोडीने नवीन अर्थनी रचना करवानुं शुं कारण छे?

उत्तरः–प्रथम तो वेदो उपरनां प्राचीन भाष्य, तेमज दीपिका मानवाथी वेदोनी सत्यता, ईश्वरोक्तता तेमज प्राचीनता सिद्ध थती न होती. ते कारणथी ईशावास्य उपनिषद् वर्जीने, सर्व उपनिषदो, सर्व ब्राह्मण भाग, सर्व स्मृति, पुराणादि शास्त्र, भाष्य, दीपिकादि मानवां तजी दीधां, तेमणे एवो विचार कर्यो के पूर्वोक्त सर्व ग्रंथो मानवाथी अमारो मत बीजा मतवाला खंडित करी देशे, कारण के पूर्वोक्त सर्व ग्रंथो युक्ति प्रमाणथी विकल छे, वली प्राचीनोए जे अर्थ करेला छे, तेमां केटलाएक अर्थ एवा छे के जे श्रवण करवाथी श्रोताजनोने लज्जा उत्पन्न थाय छे, कारण के महीधरकृत दीपिका जे वेदनी टीका छे, तेमां मंत्रादिना जे अर्थ लखेला छे, तेमां लख्युं छे के यज्ञपत्नी घोडानुं लिंग पकडीने पोतानी योनिमां प्रक्षेप करे, इत्यादि अर्थ छे. तेनुं वर्णन आगल उपर लखीशु. ते अर्थोने छोडवावास्ते, अने वेदोनुं खंडन न थाय ते वास्ते स्वकपोल कल्पित भाष्य बनावी अंग्रेजादि पाश्चिमात्यनी रीतिमुजब तथा इंजिल मतानुसार अर्थ बनाव्या छे, परंतु वेदादिवेत्ता बुद्धिमान् पुरुषो तो कोइ ते मानता नथी, अने जेउ माने छे तेउ कांइ

वेदादि जाणता नथी, कारण के ज्यारे पूर्वना ऋषि मुनि, पंडित अ-सत्यवादी तेमज तेउना बनावेला अर्थ असत्य छे, त्यारे वर्त्तमानना ब-नावेलाउना अर्थ केवीरीतें सत्य करी शकशे ? जे मूलमांज असत्य छे ते नवीन रचनाथी कदापि सत्य थवाना नथी. ते कारणथी पोतानी बु-द्धिनो विचार सत्य मानवो, अने वेदोने माननारा प्राचीन संप्रदाय वालाना अर्थ जूठा मानवा, तेनाथी अधिक अविवेक तथा अन्याय शि-रोमणि पणुं वीजुं कयुं छे ? वली ज्यारे प्राचीनोना बनावेला अर्थ जूठा करशे, त्यारे तेउना बनावेला वेदो पण जूठाइ ठरशे, ते कारणथी जेउ मतधारी छे, तेउए कां तो पोताना प्राचीनोना कथन करेला अर्थ मा-नवा जोइए, अथवा तो ते मतने तेमज तेमतनां शास्त्रने तजी देवां जोइए; अने तेज कारणथी मारी एवी श्रद्धा छे के जैनमतमां जे प्रा-माणिक तेमज पंचांगी कारक आचार्य लखी गया छे तेउने अनुसारज मारे कथन करवुं जोइए, स्वकपोलकल्पित कदापि नहि. जे स्वकपोल कल्पित करशे तेमज मानशे, ते कदापि जैनमतवालो वनी शकशे नहि, अने तेनी कल्पना पण सर्वथा सत्य ठरशे नहि, कारण के पूर्वाचार्य ज्यारे जूठा छे, त्यारे नवीन कल्पनावाला केवीरीतें साचा ठरशे ? ते सर्व कारणथी पूर्वना प्रश्ननो उत्तर पंचांगी प्रमाणथी हुं आपी शकतो नथी, कारण के १ शास्त्रो बहुज विछेद गया छे, तथा २ आर्यरक्षितसू-रिना समयमां चारे अनुयोग तोडीने पृथक् पृथक् अनुयोग रचवामां आव्या छे, तथा ३ स्कंधिल आचार्यना समयमां वार वर्ष सुधी दुकाल पड्यो हतो ते वखतमां शास्त्रो बहुज विस्मृत थवा लाग्यां, जेथी सर्व साधुउए दक्षि-ण मथुरामां समाज करी, जे प्रसंगे जे जे आचार्य तथा साधुउने जे जे शास्त्रनां जे जे स्थल, स्मृतिमां रह्यां हतां ते ते स्थल एकत्र करी लखवामां आव्यां, वाद ४ देवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण प्रभृति आचार्योंए पानाउपर एक क्रोड ग्रंथो लख्या, बाकीना तजी दीधा, ५ प्रभावकचारित्रमां लख्युं छे के, सर्व शास्त्रो उपर टीका लखी हती, जे सर्व विछेद गइ, तथा ६ ब्राह्मणो अने बौद्धोए तो ग्रंथोनो बहुज नाश कर्यो, तथा ७ मुसलमानो ए पोताना समयमां सर्वमतनां शास्त्रो माटीमां मेलवी दीधां, अनेक स-लगावी दीधां, शेष रह्यां ते भंडारोमां गुप्त रहेवाथी गलीगयां, अने व-

र्त्तमानमां जे जंडारोमां पडेलां ठे, ते सर्व अमे वांचेलां नथी, आटला आटला उपद्रवो जैनशास्त्रो उपर वीतवाथी अमे सर्व शंकाउंनुं केवी रीतें समाधान करी शकीए? ते कारणथी जैनमतमां शंका न करवी. अमे सर्व मतनां शास्त्रो अवलोकन करेलां ठे, परंतु जैनमतसमान अति उत्तम मत बीजो कोइपण मारा देखवामां आव्यो नथी, तेथी आ मतमां दृढ रहेवुं जोइए. १ शंका अतिचार ते कहेवाय ठे, जेम के जिनवचनोमां शंका करवी अर्थात् जिनेश्वर जगवानें कथन करेला जाव सत्य हशे के नहि ? आ प्रथम अतिचार ठे.

२ बीजो आकांक्षा अतिचार. अन्यमतवालाउंनां अज्ञानकष्ट देखी, तेमज कोइ पाखंडीना विद्यामंत्रना चमत्कार देखी, तेमज पूर्वजन्मना अज्ञानकष्टथी फल पामेला अन्यमतवालाउंने सुखी तेमज धनवान् देखी मनमां विचारे के अन्यमतवालाउंना धर्म तथा ज्ञान सारां ठे, जेना प्रजावथी, तेउं धनवान्, सुखी, तथा पुत्रादि परिवारवाला थाय ठे, ते कारणथी हुं पण तेउंनोज धर्म अंगीकार करुं, जेथी हुं पण धनवान् तेमज पुत्र परिवारवालो थाउं. आकांक्षा अतिचार तेज जीवोने लागेठे, जे जीवोने जैनधर्मनो बहुज सारी रीतें बोध होतो नथी. कारण के जैनधर्मवाला पण सर्व दरिद्री तथा पुत्रादि परिवारथी रहित नथी, तेमज अन्यमतवाला पण सर्वे धनवान् तेमज परिवारवाला नथी, सारांश के सर्व पोतपोतानां पूर्वनां तथा जन्मांतरनां करेलां पुण्य पापनां फल जोगवे ठे. जुउं के केटलांएक, मनुष्यजन्ममां साते कुव्यसननो सेवनारां ठतां धनवान्, अने केटलांएक कसाइ, खाटकी इत्यादि नीचधंधानां करनारां पण धनवान् तेमज पुत्रादि परिवारवालां तेमज सुखी ठे, अने केटलाएक आ अवस्थाथी विपरीत ठे, ते कारणथी मात्र तेज सत्य ठे के दरेकजीव पोताना पूर्वना तेमज जन्मांतरना सुकृत दुष्कृतनुं फल जोगवे ठे, मात्र आ जन्मनां कृत्योतुंज फल जोगवता नथी. सर्व मतोमां राजाउ थइ गया ठे, तेमज रंक पण बहुज ठे, ते कारणथी बीजा मतनी आकांक्षा न करवी. जो करीए तो बीजो अतिचार.

३ त्रीजो वितिगिठा नामे अतिचार ठे. जे जीव पोतानां पूर्वजन्मनां करेलां पापोना उदयथी दुःख जोगवे ठे, त्यारे एवो विचार करे

के हुं जे धर्म करुं छुं, तेनुं फल मने शुं मलशे ? अर्थात् धर्मनुं फल मने मलशे के नहि ? वली जेओ धर्म करता नथी, तेओ सुखी छे, अने हुं धर्म करुं छुं, छतांपि दुःखी छुं, ते कारणथी कोण जाणे धर्मनुं फल हशे के नहि ? तथा साधुनां मलिन शरीर तथा मलिन वस्त्र देखीने मनमां दुगंछा करे के आ साधु सारा नथी, कारण के तेमनुं शरीर गंदुं छे तथा तेमनां वस्त्र पण गंदां छे. तेओ संसारथी केवी रीतें तरी शकशे, जो तेओ उष्णजलथी स्नान करे तो तेथी कयुं महाव्रत तेओनुं भंग थाय छे?

उत्तरः—जो धर्मनुं फल न होय तो, संसारनी विचित्रता कदापि न होय, ते कारणथी धर्मनुं फल अवश्यमेव छे. वली साधु जे मलिन वस्त्र राखे छे, तेनुं कारण ए छे के सुंदरवस्त्र राखवाथी मन श्रृंगार रसने च-हाय छे. वली स्त्रियो पण सुंदर वस्त्रवालाओने देखीने तेओनी साथे भोग भोगववानी इच्छा करे छे. ते कारणथी शियल पालवानी इच्छा राखनारा साधुए श्रृंगार करवो वास्तविक नथी. वली स्नान, कामनुं प्रथम अंग छे, तेथी साधुओने उचित नथी, अने कोइ कारण प्रसंगें साधु हाथ, प-गादि धोवे तो ते कांइ दूषण नथी, वली साधुओने पोतानां शरीर उपर ममत्व पण नथी, अने शुचिमात्र स्नान तो साधु करे छे. परंतु शरी-रना सुखवास्ते. तथा शरीरने चमकाववा वास्ते स्नान करता नथी, का-रण के जैनिओनी एवी श्रद्धाज नथी के स्नान करवाथी पाप दूर थइ जाय छे. जलस्नानथी शरीरनो मेल दूर थाय छे, शरीरनो ताप मटी जाय छे, अने आलस दूर थाय छे, परंतु पाप तो दूर थतुं नथी, जो जल स्नानथी पाप दूर थतुं होय तो, अनायासें सर्व जीवनी मुक्ति थइ जाय, कारण के एवुं कोइ नथी जे जल स्नान करतुं नथी. वली साधुने मेला समजवा, ते पण मोटी मूर्खता छे, कारण के शरीरें मेल होवाथी आत्मा मलिन थतो नथी आत्मातो मात्र पापकरवाथीज मलिन थाय छे. वली जगत् व्यवहारमां मेलापणुं स्त्री साथे संभोग करवाथी, तेमज कोइ मलिन वस्तुनो स्पर्श करवाथी मानवामां आवे छे, अने साधु तो ते सर्व वस्तुना त्यागी छे, तेथी मेला कहेवाय नहि, बलके साधुओने धन्यवाद देवो जोइए, केमके ताप पडे छे, लू वाय छे, पसीनो वहे छे, छतांपि साधु उघाडा पगे तेमज खुल्ले मस्तके विहार करे छे, रात्रियें मात्र छाजेला मकानमां सुवे छे,

पंखा करता नथी, कोमल शय्या तेमज पलंग पर सुता नथी, रात्रिए जलपण पीता नथी, दिवसेंपण उष्ण जल पीये छे, आ प्रमाणे तेउनुं ज्ञारे तप छे. तेउंथी उलटा जेउ साधु वनी वेगा छे, अने गरमी लागे त्यारे पाडानी पेठे सरोवरमां जइ पडे छे, एवा सुखशीलिआ शुं तरी जशे? जेउने कोइ वातनो नियम नथी. वली हाथी, घोडा, रेल प्रमुखनी स्वारि करवी, सर्व प्रकारनां फलन्नक्षण करवां, धन राखवां, मकान बांधवां, खेती करवी, कराववी, गाय, ज्ञेंस, हाथी, घोडा प्रमुख जानवर तथा रथादि अने शस्त्रादि सरंजाम राखवा, उल, वलथी लोको पासेथी धन लेवां, स्त्रीउ साथे विषयसेवन करवां, सुंदर खानपान करवां, मांसन्नक्षण करवां, मदिरापान करवां, न्नांगना रगडा, चरसनी चलमो उडाववी, हाथपग तथा शरीरने वेश्यानी जेम चमकाववां, चित्तमां मोटा अन्निमान राखवां, दंड पीलवा, कुस्ती करवी, इत्यादि अनेक साधुउने अनुचित कामो करवां, उतां श्री श्री स्वामिजी महाराज वनीठणी वेसवुं, अमे महंत ठइए, अमे गादिपति ठइए, अमे न्नट्टारक ठइए, अमे श्रीपूज्य ठइए, अमे जगत्नो उद्धार करीए ठइए, अमे महान् अद्वैतब्रह्मवेत्ता ठइए, अमे शुद्ध ईश्वरनी उपासना वतावीए ठइए, अमे मूर्त्तिपूजन पाखंडनो नाश करीए ठइए.

हवे न्नव्य जीवोए विचार करवो जोइए के, पूर्वोक्त कुगुरुउ शुं जल स्नान करवाथी संसार समुद्रथी तरी जशे? अने जेउ, जीवहिंसा, असत्य, चोरी, मिथुन तेमज परिग्रह, आ पांचेना त्यागी, शरीरना ममत्वरहित, प्रतिवंधरहित, कामक्रोधना त्यागी, महातपस्वी, मधुकर वृत्तिथी न्निक्षा लेनारा, इत्यादि अनेक गुणोथी सुशोन्नित, शुं जल स्नान नहि करवाथी पातकी थइजशे? कदापि थशे नहि. ते कारणथी साधुउने देखी जुगुप्सा न करवी, जो करे तो त्रीजो अतिचार.

चोथो मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसारूप अतिचार छे. जिनप्रणीत आज्ञाथी जे वहार छे ते मिथ्यादृष्टि छे, कारण के सर्वज्ञनां कथन करेलां वचनो ते मानता नथी, अने असर्वज्ञनां कथन करेलां वचनो सत्य माने छे, वली असर्वज्ञप्रणीत शास्त्रोमां जे अयोग्य वातो कहेली छे, तेउने ढुपाववा वास्ते स्वकपोलकल्पित न्नाष्य, टीका, अर्थ वनावी मूर्ख लोकोने वहेकावी

गप्पां मारता फरे छे, वली जेउने धर्मनियम कांइ पण नथी, अने अनाथ पशुउने मारि जाणे छे, तथा धूर्त्तपणाथी साचो डोल धारण करी मूर्खोने मिथ्यात्व जालमां फसावे छे,एवा मिथ्यादृष्टि छे; तेउनी प्रशंसा करवी, तथा जिनाज्ञा वहार एवा अज्ञान कष्ट करनाराउने कहेवुं के, अहो! केवा महान् तपस्वी छे! महापुरुष छे! महापंडित छे! तेउनी बराबरी करी शके तेवा कोण छे? तेउए धर्मनी वृद्धि वास्तेज अवतार धारण करेल छे. वली मिथ्यादृष्टि कोइ व्रत यज्ञादि करे तो तेनी बहुज प्रशंसा करे, तमे बहुज सारां काम करो छो, तमारो अवतार सफल छे, इत्यादि प्रशंसा करे, ते चोथो अतिचार छे.

५ पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते अतिचार छे. मिथ्यादृष्टिनी साथे बहुज मेलाप राखे,खान पान करे, वास करे, इत्यादि अनेक प्रकारथी सहवास करवाथी मिथ्यादृष्टिनी वासना लागीजवाथी धर्मथी भ्रष्ट थवाय छे, ते कारणथी मिथ्यादृष्टिनो बहुपरिचय करवो ते वास्तविक नथी. जो करे तो पांचमो अतिचार.

ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आपवामां आवे छे, त्यारे तेने गुरु छ आगार बतावे छे. जो छ कारणोमां तमने कांइ अनुचित काम करवुं पडे तो आ छ आगार राखी शकाय जेथी तमारुं सम्यक्त्व कलंकित थशे नहि, ते छ आगार नीचे मुजब छे.

१ प्रथम "रायाभिउगेणं" नगरना स्वामि जे राजा, ते कोइ अनुचित काम जोरावरीथी करावे तो सम्यक्त्वमां दूपण लागे नहि.

२ बीजा "गणाभिउगेणं" गण अर्थात् ज्ञाति तथा पंचायत, ते कहे के आ काम तमे अवश्य करो, नहि तो तमने ज्ञाति तथा पंचायत मोहोटो दंड करशे. तेवे प्रसंगे जो ते काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमां दूपण नहि.

३ त्रीजो "बलाभिउगेणं" बलवंत चोर, म्लेछादि तेउने वश पडतां, जोरावरीथी तेउ अनुचित काम करावे तो सम्यक्त्वमां अतिचाररूप दूपण नहि.

४ चोथो देवाभिउगेणं" कोइ दुष्ट देवता क्षेत्रपालादि,व्यंतर शरीरमां प्रवेश करी अनुचित काम करावे तो भंग नहि, तथा कोइ देवता

मरणांत दुःख आपे, जेथी मनमां धैर्य न रहे, अने मरणांत कष्ट जाणी कांइ विरुद्ध काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमां अतिचार नंग नहि.

५ "गुरुनिग्गहेणं" गुरु ते मातपितादि तेमना आग्रहथी कांइ अनुचित काम करवुं पडे; तथा गुरु ते धर्माचार्यादि तथा जिनमंदिर, ते उने अर्थात् गुरुने कोइ दुष्ट संकट देतो होय, तथा जिनमंदिर तोडतो होय. जिनप्रतिमानुं खंडन करतो होय, तो गुरुनिग्रह छे, तेउंनी रक्षा वास्ते कांइ अनुचित काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमां दूषण नहि.

६ छठो "वित्तिकंतारेणं" वृत्ति जे डुकालादि आपत्ति आवी पडे,त्यारे आजीविकावास्ते कोइ मिथ्यादृष्टिने अनुसारें चालवुं पडे, तथा आजीविकावास्ते कोइ विरुद्ध आचरण करवुं पडेतो दूषण नहि. आ छ वस्तुना आगारोने छ छिंडी कहेछे.तथा चार आगार बीजा छे तेपण कहियें छियें.

१ अन्नत्थणाजोगेणं" कोइ कार्य अजाणपणे, उपयोग आप्या विना, कांइनुं कांइ थइ जाय, ज्यारे याद आवे, त्यारे फरी ते कार्य न करवुं ते प्रथम आगार.

२ "सहस्सागारेणं" कोइ काम अकस्मात् थइ जाय; पोताना मनमां जाणेछे के आ काम मारे करवानुं नथी, योगोनी चपलताथी तथा निरंतरना बहु अन्यासथी जाणतां छतां पण विरुद्ध कार्य थइ जाय तो सम्यक्त्वमां नंग नहि, आ बीजो आगार.

३ "महत्तरागारेणं" कोइ मोटो लान थाय छे, परंतु सम्यक्त्वमां दूषण लागेछे, तथा कोइ मोटा ज्ञानीनी आज्ञाथी कमवेशी करवुं पडे तो, आ त्रीजो आगार छे.

४ "सव्वसमाहि वत्तिआ गारेणं" सर्व समाधि व्यत्ययथी अर्थात् मोटा सन्निपातादि रोगोने प्रसंगें बावरा थइ जवाथी, तथा अतिवृद्धावस्थामां स्मृतिनंग थवाथी, तथा रोगादि संकट समये मनमां आर्त्तध्यान थइ जवाने प्रसंगें, तथा सर्पादि डंख मारवाथी असमाधि थवाना समयमां, आ आगार छे. तेथी सम्यक्त्व तथा व्रतनंग थतां नथी. तेवे प्रसंगें, कोइ मूर्खना कहेवाथी आर्त्तध्यानमां प्राण त्यागवा ते योग्य नथी. केटलाएक जैनमतना अनन्निज्ञोनुं एम पण कहेवुं छे के, गमे तेम थइ जाय तोपण, जे नियम लीधेलुं छे, ते कदापि तोडवुं नहि, आ कहेवुं स-

वैथा वास्तविक नथी, कारण के जो पहेलेथी आगार राख्या छे, तो पछी व्रतभंग केवीरीतें थायछे ? अने जेउ आर्त्तध्यानमां मरी जायछे, तथा आगार राखता नथी, तेउ जैनमार्गनी शैलीना अजाण छे. ते कारणथी छ छिंडी अने चार आगार सर्व वारे व्रतमां जाणवा. वली साधुना सर्व प्रत्याख्यानमां अनशन पर्यंत आज चार आगार जाणवा. इतिश्री तपगच्छियगणिश्रीमणिविजय, तच्छिष्य मुनिश्रीबुद्धिविजयतच्छिष्य मुन्यात्मा रामानंदविजयविरचिते जैनतत्वादर्शे (गुर्जर भाषांतरे) सम्यग्दर्शननिर्णयनामा सप्तमपरिछेदः संपूर्णः ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमपरिछेद प्रारंभः ॥

आ परिछेदमां चारित्रनुं स्वरूप लखियें छियें, चारित्र धर्मना वे भेद छे. एक सर्वचारित्र. बीजुं देशचारित्र. तेमां सर्व चारित्र तो साधुमां होयछे. तेनुं स्वरूप आ परिछेदमां लखिये छियें. देशचारित्रना वार भेद छे. देशचारित्र गृहस्थधर्म छे. वार व्रतरूप छे. तेनुं किंचित् स्वरूप लखतां प्रथम स्थूलप्राणातिपातविरमण व्रतनुं स्वरूप लखियें छियें.

१ स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रतना वे भेद छे. एक द्रव्य प्राणातिपात व्रत, बीजुं भाव प्राणातिपात व्रत. द्रव्यप्राणातिपात विरमणव्रतनुं स्वरूप एवुं छे के, परजीवने पोताना आत्मासमान जाणीने तेउना दश द्रव्यप्राणनी रक्षा करवी. आ व्यवहार दयारूप छे. बीजुं भाव प्राणातिपातव्रत. ते पोतानो आत्मा कर्मवश पड्यो थको दुःख पामेछे; वली भावप्राण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि, तेउना, मिथ्यात्व, कषायादि अशुद्ध प्रवर्त्तनथी प्रतिक्षण घात थया करेछे, ते कर्मशत्रुउथी भावप्राणनो घात थतो अटकाववा वास्ते, तथा आत्माने कर्मशत्रुथी छोडाववावास्ते उपाय करवा ते उपाय आ प्रमाणे. आत्मरमणता करे. परभाव रमणता त्यागे. शुद्धउपयोगमां प्रवर्त्ते. कर्मना उदयमां अव्यापक रहे. एक स्वभाव मग्नता करे. आ उपभोग समस्त कर्मशत्रुउनो उच्छेद करवाने अमोघ शस्त्रो छे. अर्थात् सकल परभाव इच्छता दूर करी, स्वरूप सन्मुखरूप उपयोगमां प्रवर्त्ताववुं, तेनुं नाम भावप्राणातिपात विरमणव्रत कहियें. तेनुंजनाम भाव.

हवे स्थूल नाम मोटा दृष्टिगोचर, हाले, चाले तेवा जे त्रसजीव, तेउने संकल्पथी न हणुं. अहींआं हिंसाना चार प्रकार बतावीए छीए.

आकुट्टी. ते निषेध वस्तुने उत्साहथी करवी. जेमके संपूर्णफलना चडयां करवां, ते श्रावकने निषेध छे, तेथी जेणे जेटली जातनां फल खावामां राख्यां होय, तेउमांथी कोइपण फलनुं चडयुं न करवुं, छतां मनमां उत्साहपूर्वक चडयां करे तो आकुट्टी हिंसा लागे. २ दर्प्पहिंसा. ते चित्तना उछरंगथी, उन्मत्तपणाथी, गर्वधारण करीने, दोडे. तेमज गाडी, घोडा प्रमुख दोडावे तो दर्प्पहिंसा लागे. ३ कल्पहिंसा. ते शरीरना कामजोगवास्ते तीव्र अजिलाषापूर्वक, कामनो जोस चडाववावास्ते त्रस जीवनी हिंसा करी, गोली, माजम प्रमुख बनावी खाय तो कल्पहिंसा लागे. ४ प्रमादहिंसा. ते घरनां कामकाज, जेम के रांधवुं, दलवुं, जरडवुं प्रमुख अनेक काम करतां त्रसजीवनी हिंसा थइ जाय तो प्रमाद हिंसा लागे. आ चारे हिंसामांहेनी प्रथमनी हिंसा, तथा बीजी हिंसा तो बिलकुल न करवी जोइए. ते कारणथी संकल्पथी आकुट्टी तथा दर्प्पथी त्रसजीव हणवानो त्याग करे. वली जेम आ कीडी जाय छे, तेने हुं मारुं? एवा संकल्पथी हणवुं, हणाववुं, ते आकुट्टी संकल्प कहेवाय छे, एवा संकल्पथी निरपराधी जीवोने, कारण विना हणुं नहि. हणावुं नहि, एवो नियम करे, अने सांसारिक आरंज, रांधवा प्रमुखनां काम करतां, तथा पुत्रादिना शरीरमां कीडा प्रमुख पडतां, व्याधिने प्रसंगे औषधोपचार करतां यत्नापूर्वक प्रवर्त्ते. वली घोडा, बलद प्रमुखने चाबक प्रमुख मारवा पडे तेनो आगार राखे. तथा पेटमां कृमि, गंडोला, पगमां नारां अर्थात् वाला, हरस, जू प्रमुख अनेक जीव शरीरमां उपजे, तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां उपजे, तेना उपचार करवानी जयणा राखे. कारण के साधुने तो त्रस तथा स्थावर, सूक्ष्म तथा बादर, सर्वजीवोनी हिंसा नवकोटी विशुद्ध अप्रमत्त योगोथी सर्व हिंसानो त्याग छे, तेथी साधुने वीश विश्वा दया छे, अने गृहस्थथी तो सवा विश्वा दया पली शके छे. तेनुं स्वरूप लखीए छीए.

॥ गाथा ॥ जीवासुहुमा थूला, संकप्पा आरंजा जवे डुविहा ॥ सवराह निरवराहा, साविक्खा एव निरविक्खा ॥ १ ॥ अर्थः—जगत्मां जीव बे प्रकारना छे. १ स्थावर, २ त्रस. तेमां स्थावरना बे जेद छे, १ सूक्ष्म, २ बादर. तेमां सूक्ष्मजीवोनी हिंसा तो यतीज नथी, कारण के अति-

सूक्ष्म जीवोना शरीरने बाह्य शस्त्रना घा लागता नथी; परंतु अहींआ तो सूक्ष्मशब्द, स्थावर जीवो जे पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पतिरूप पांच बादर स्थावर, तेज सूक्ष्म वाचक छे, अने स्थूल जीव ते द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय जाणवा. आ बंने भेदमां सर्वजीव आवी गया. ते सर्व जीवोनी त्रिकरण शुद्धिथी साधु रक्षा करे छे, ते कारणथी साधुने वीश विश्वा (वसा) दया छे. श्रावकथी तो पांच स्थावरनी दया पलती नथी, सचित्त आहारादि करवाथी अवश्य हिंसा थाय छे, ते कारणथी दश विश्वा दया दूर थइ. बाकी दश विश्वा रही. सारांश के त्रसजीवनी दया रही. त्रसजीवनी हिंसाना पण वे भेद छे. एक संकल्पथी हणवा, वीजा आरंभथी हणवा. तेमां संकल्पथी हणवानो त्याग छे, परंतु आरंभनी हिंसानो श्रावकने त्याग नथी, आरंभ हिंसामां यत्ना राखवानी छे, कारण के आरंभ हिंसा श्रावकने थाय छे, ते कारणथी दश विश्वामांथी पांच विश्वा बाद थइ, अर्थात् संकल्पथी त्रसजीवनी हिंसानो त्याग छे. वली तेना पण वे भेद छे. एक सापराधी, वीजा निरपराधी. तेमां निरपराधी जीवोने न हणवा, अने सापराधी जीवोने हणवानी जयणा छे. कारण के सापराधी जीवनी दया श्रावकथी सदा सर्वथा पलती नथी. जेम के घरमां चोर आवी चोरी करी धन, माल लइ जता होय, तेउने मार्या, कुट्या विना तेउ धन, माल छोडता न होय, तथा पोतानी स्त्रीनी साथे कोइ अन्यपुरुष दुराचार सेवतो देखवामां आवे, तेवे प्रसंगे मारवो पडे, तथा कोइ श्रावक राजा होय, अथवा तो राजाना हुकमथी युद्ध करवा जवुं पडे, तेवे प्रसंगे श्रावक, प्रथम शस्त्र चलावे नहि, परंतु ज्यारे शत्रु शस्त्र चलावी मारवा आवे ते समये शत्रुने मारवा पडे. तथा सिंहादि जानवर खावा आवे, ते वखते तेउने मारवां पडे. त्यारे संकल्पथी पण हिंसानो त्याग नथी. ते कारणथी पांच विश्वामांथी अरधी बाद थइ, बाकी अढी विश्वा दया रही. अर्थात् मात्र निरपराधी त्रसजीव दृष्टिगोचर आवे तेउने न मारुं. एवो नियम रह्यो. तेनापण वे भेद छे, एक सापेक्ष, वीजो निरपेक्ष. तेमां पण सापेक्ष निरपराधी त्रसजीवनी दया श्रावकथी पलती नथी, कारण के श्रावक ज्यारे घोडा गाडी, बलद गाडी, घोडा, घोडी प्रमुखनी

स्वारि करे छे, त्यारे घोडाप्रमुखने हांकता चावकादि मारे छे; अहींआं घोडा तथा बलदोए कांइ तेउंनो अपराध कर्यो नथी, तेउंनी पीठ उपर तो चडी रह्या छे, अने जाणता नथी के ते बिचाराउंने चालवानी शक्ति छे के नहि ? ज्यारे ते जीवो हलवे हलवे चाले छे, तेमज चालता नथी, त्यारे अज्ञानना उदयथी तेउंने गालो देछे, तथा मारे छे, एम निरपराधी जीवोने दुःख आपे छे. वली पोताना शरीरमां तेमज पोताना कुटुंबीउं तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां अर्थात् मस्तकमां, मुखमां, कानमां इत्यादि अवयवोमां कीडा पडे, तेउंने दूर करवावास्ते दवा लगाववी पडेछे, जेथी ते जीवोनो नाश थाय छे, आ जीवोए श्रावकोनो कांइ अपराध करेलो नथी, कारण के तेउं तो पोताना कर्मना वशथी एवी योनिमां उत्पन्न थाय छे. कांइ श्रावकनुं बुरुं करवुं, तेमने दुख देवुं, एवा संकल्पथी उत्पन्न थता नथी. परंतु तेउंनी हिंसा श्रावकथी त्यागी शकाती नथी. ते कारणथी वली अरधी बाद थइ. बाकी सवा विश्वा दया रही. आ सवा विश्वा दया शुद्ध श्रावक होय ते पाली शके छे. अर्थात् संकल्पथी निरपराधी त्रस जीवोने कारण विना हणुं नहि. आ प्रतिज्ञा ज्यांसुधी पोतानी शक्ति रहे त्यां सुधी पाले. निर्ध्वंसपणुं न करे. सदा मनमां एवी भावना राखे के रखे माराथी कोइ पण जीव हणाय ? वली घरमां आरंभ करतां पण यत्नाथी प्रवर्त्ते. लाकडां सलगाववा वास्ते लावे ते सडेलां लावे नहि. आगल उपर जेमां जीव न पडे एवा सुकां, पाकां लाकडां लावे; वली रसोइने वखते लांकडांने खंखेरी जीवरहित करी सलगावे. तथा घी तेल प्रमुख रस भरेली वस्तुउंनां वासणोनां मुख बांधी यत्नाथी ते चीजो राखे. उघाडां ते वासणो न राखे. तथा चुलानी उपर अने पाणीआरा उपर चंदरवा बांधे. खावाने जे अन्न अर्थात् अनाज लावे ते भींजेलुं लावे नहि. शुद्ध नवुं अनाज लावे, कदापि एक वर्ष उपरांतनुं अनाज लावे तो जेमां जीव न पड्या होय तेवुं लावे. तथा पाणी गलवा वास्ते बहुज जाडुं वस्त्र राखे. दरेक पहोरे पाणी गले. पाणीनो संखारो, जे कुवानुं ते पाणी होय, ते कुवामां नाखे. तथा वर्षाऋतुमां अनेक प्रकारना असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथनी स्वारि न करे, कारण के ज्यां

चक्र फरेछे त्यां असंख्य जीवोनो विध्वंस थइ जायछे. हरिकाय, वहुवीजवालां फल, त्रससंयुक्त फल खाय नहि. पलंग प्रमुखमां मांकड प्रमुख जीव पडे, ते पलंगादि तडकामां राखे नहि, वीजो पलंग वदले. वली सडेलां अनाज तडकामां राखे नहि. अन्नना संसर्गवालुं एवुं पाणी मोरीमां नाखे नहि, कारण के मोरीमां वहुज जीव उत्पन्न थायछे, वली मोरीमां सडो थाय तो घरमां विमारी थइ जायछे. तथा फागण शुद १५ पछी आठ मास सुधी अर्थात् कारतक शुदी १५ सुधी पांदडावालां शाक भाजी खाय नहि, कारण के पत्रशाकमां वहुज त्रसजीव उत्पन्न थायछे, एक तो त्रसजीवनी हिंसा थायछे, अने वीजुं ते खावाथी अनेक रोग शरीरमां उत्पन्न थायछे. तथा शीतकालमां एक मास, उनालामां वीश दिवस अने चोमासामां पंदर दिवस उपरांतनी वनावेली मिठाइ (पकान्न) खाय नहि, कारण के तेमां त्रस, स्थावर जीव उत्पन्न थायछे, तथा खानारने रोगोत्पत्ति थायछे. वली वासी अन्न, रोटली, अथाणां प्रमुख वासी खाय नहि, अन्न वासी खावाथी रोगोत्पत्ति थायछे, तेमज बुद्धि मंद थायछे, अने जीवोनो नाश थाय छे. आर्द्रा नक्षत्र वेठा पछी केरी खाय नहि, कारण के त्यारथी केरीना रसमां वहुज जीवनी उत्पत्ति थायछे. कठोल छाशमां खाय नहि. घरमां सावरणी राखे ते कोमल शण प्रमुखनी राखे, जेथी जीव मरे नहि. तथा स्नान करती वखते वहु जल ढोले नहि, रेतीवाली जमीनमां स्नान करे, मोटा वासणमां वेसी स्नान करे, अने स्नाननुं पाणी मेदानमां थोडुं थोडुं छांटी दे. मोरी (खाल) उपर वेसी स्नान करे नहि. ज्यांसुधी थोडा पापवाला व्यापार, तथा नोकरी मले त्यांसुधी महापापवाला व्यापार, नोकरी करे नहि. कोइनो हक ओडे नहि. घरमां जूठा अन्ननुं पाणी वे घडी उपरांत राखे नहि, कारण के तेमां जीव उत्पन्न थइ जायछे. तथा जे वस्तु उपाडे तथा मुके ते वखते प्रथम ते जगाने देखीने तथा पुंजीने ते वस्तु लहे तथा मुके. मोटी मोरीमां पाणी ढोले नहि. दिवाबत्ती सलगावे ते फानस प्रमुखमां जीवरक्षा वास्ते राखे. जे वासणथी पाणी लहे, ते वासण जुठुं फरी पाणीमां वोले नहि कारण के मुखनी लाल लागवाथी जीव उत्पन्न थायछे. वली वहु साथे वेसी जुठुं खावा, पिवाथी बुद्धि संकोच

पामे छे. वली केटलाएक रोग एवा होय छे के, जे रोगवालानुं जुठुं खावा, पिवामां आवे तो, ते रोगवालानो रोग, खानारा पिनाराने लागी जायछे. जेमके कोढ, क्षय, खस, शीतला प्रमुख ते कारणथी वस्तु एठी करवी नहि, अने वहुनी साथे एकठां वेसी खावुं नहि. वली पाणीना माटलामांथी पाणी काढवावास्ते दांडीवालो लोटो राखे. इत्यादि शुद्ध व्यवहारथी प्रवर्त्ते तो श्रावकने सवा विश्वा दया रहे. आ प्रमाणे श्रावकनुं प्रथम व्रत शुद्ध छे. आ व्रतना पांच अतिचार अर्थात् पांच कलंक छे, तेउने वर्जवा. तेनुं स्वरूप लखिये छियें.

१ प्रथम वध अतिचार. ते क्रोधना उदयथी तेमज वलना अभिमानथी, निर्दय थइने, घोडा, वलद, गाय प्रमुखने मारे कुटे तथा चलावे ते प्रथम अतिचार.

२ वंध अतिचार. ते गाय, वलद, वाछडा प्रमुख जीवने, कठण जवरा वंधनथी वांधे. ते जीवो कठण वंधनथी वहुज दुःख पामे छे, वली कदापि अग्निनो उपद्रव थयो होय तो जलदीथी छुटी शकतो नथी, अने मरी जायछे, ते कारणथी कठण वंधन पण अतिचारछे. तेथी जनावरने वांधवा ते ढीला वंधनथी वांधवा जोइए. वली कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण गाढ वंधनथी वांधवो नहि. जो वांधे तो वीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो छ विछेद अतिचार. ते वलद प्रमुखना नाक, कान छेदावे, नाथ नांखे, खांसी करे तो त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो अतिचार आरोपण अतिचार. ते वलद प्रमुख जेटलो भार सहन करी शके तेना करतां विशेष भार नाखे. श्रावकें निरंतर जे वलद, घोडा, खच्चर गाडीप्रमुखमां जेटलो भार वहन करी शकता होय, तेनाथी मण, वे मण भार उछो नाखवो जोइए; तोज पोतानुं व्रत शुद्ध रहे छे. तेमां पण जो कोइ जानवरनी शक्ति मंद थइ होय तो, विवेक राखी, भार घणोज उछो करी नाखे. वली जानवर दुर्वल थाय तो तेनां घास, दाणा, पाणीनी पण वारंवार खवर राखे; परंतु एवो विचार न करे के वीजाउ जेटलो भार लादता होय, तेटलो हुं पण लाद्या करुं. शक्तिप्रमाणे जानवर पासे भार वहन करावे तो व्यवहार शुद्ध रहे. पोतानी पासे अधिक भार होय तो वीजां भाडां करे, परंतु तुछ

विचार करी अतिचार चरे नहि. श्रावक एवा व्यवहारथी प्रवर्ते नहि तो चोथो अतिचार लागे.

५ पांचमो चात, पाणीनो व्यवच्छेद करवो ते अतिचार. बलद, घोडा-प्रमुखने जे खावायोग्य होय, ते बंध करी दे; अथवा थोडुं थोडुं काढी लहे. खावानो वखत वितावे. इत्यादि करतां अतिचार लागे.

वली कोइनी आजीविका, नोकरी बंध करवी, तेपण आज अतिचारमां छे. श्रावक तो दास, दासी, कुटुंबना नाना, मोटा सर्वेनी तथा गाय, बलद प्रमुखनी खावा, पीवानी खबर लइ, पछी पोते चोजन करे. आ पांच अतिचार छे. उपलक्षणथी हिंसाकारी मंत्र तंत्रादि कोइने करे तो श्रावकने अतिचार लागे. आ पांचे अतिचार श्रावक जाणे, परंतु करे नहि. आ बारे व्रतना सर्व अतिचार चंग होवाना संचव असंचवनी विशेप चर्चा जोवी होय तो धर्मरत्नप्रकरणग्रंथनी श्रीदेवेंद्रसूरिकृत टीका जोवी. अहींआं तो मात्र हुं अतिचारज लखुंछुं. इति श्रावक प्रथम व्रत.

बीजा स्थूल मृषावादविरमणव्रतनुं स्वरूप लखीए छीए. स्थूल अर्थात् मोटुं. मोटा जूठानो (विरमण) त्याग करवो ते. मोटां जूठां बोलवाथी जगत्मां बोलनारनी अप्रतीति थइ जाय छे, अपयश फेलाय छे, धर्मनी निंदा थाय छे, अने पोतानी मतलब वास्ते जे कमवेश करवुं, तेनो जे त्याग, ते मृषावादविरमण व्रत कहेवाय छे. मृषावादना बे चेद छे. १ द्रव्यमृषावाद, २ चावमृषावाद. तेमां सांसारिक तेमज धार्मिक व्यवहारमां जाणपणे तेमज अजाणपणे जे असत्य बोलवुं ते द्रव्य मृषावाद छे; अने सर्व परचाव वस्तुने अर्थात् पुद्गलादि जडवस्तुने आत्मत्व बुद्धिथी पोतानी कहेवी, तथा राग, द्वेप, कृष्णादि लेश्याथी आगम विरुद्ध बोलवुं, शास्त्रना साचा अर्थ कुयुक्तिथी नष्ट करवा, उत्सूत्र बोलवुं, ते चावमृषावाद कहेवाय छे.

आ व्रत सर्वव्रतोमां मोटुं छे. ते पालवामां बहुज शुद्धउपयोग तेमज होंशियारी जोइए, कारण के प्रथम व्रतमां तो मात्र जीवस्वरूपजाणवाथी दया पली शके छे. बीजानी वस्तु तेनी परवानगी विना न लीधाथी अदत्त विरमण व्रत पली शके छे. स्त्री मात्रनो संग त्यागवाथी मैथुन

विरमणव्रत पली शके छे, अने नवविध परिग्रहनो त्याग करवाथी परिग्रह विरमणव्रत पली शके छे. एवीरीतें एकेक द्रव्यने जाणवाथी आ चारे व्रत पाली शकाय छे, अने मृषावाद विरमण व्रत तो ज्यां सुधी षट् द्रव्यनी गुणपर्यायथी तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी सारीरीतें पिछान न थइ होय, त्यां सुधी बरावर पालवुं कठिन छे, कारण के एक पर्यायमात्रपण विरुद्ध भाषण करवाथी आ व्रतभंग थइ जाय छे. तेजकारणथी शास्त्रमां साधुउने बहु बोलवानो निषेध करेलो छे. वली पूर्वोक्त चारे महाव्रतोमांथी एक महाव्रत जो भंग थाय, तो चारित्रनो भंग थाय, अथवा नहि पण थाय, कारण के जो एकज कुशील सेवन करे, तो सर्वथा चारित्रभंग थाय, बीजाव्रतोना खंडनथी चारित्रदेशभंगथाय, परंतु तेनुं ज्ञान, दर्शनभंग न थाय. आ व्यवहारभाष्यनुं कथन छे, अने जो मृषावाद विरमणव्रतभंग थाय तो तो ज्ञान, दर्शन तेमज चारित्र, आ त्रणे जडमूलथी जतां रहे छे. अने बोलनार मरीने दुर्गतिमां जाय छे, अनंत संसारी, दुर्लभबोधी थइ जायछे, ते कारणथी जो आ व्रत पालवुं होय तो षट् द्रव्यना गुणपर्यायनुं स्वरूप जाणवा वास्ते अति उद्यम करे. कदापि बुद्धिनी मंदता होय तो गीतार्थना वचन प्रमाणे श्रद्धा प्ररूपणा करे. तात्पर्य ए छे के द्रव्य मृषावादना त्यागी जीव तो छए दर्शनोमां प्राप्त थइ शके छे, परंतु भाव मृषावादना त्यागी तो मात्र श्रीजिनेंद्र देवना मतमांज मली शकशे. जे जीव श्रद्धा रुचि शुद्ध धारण करशे, तेज तेवो थइ शकशे. आ मृषावादना पांच मोटा भेद छे, ते श्रावकें अवश्य वर्जवा जोइए, तेथी तेनुं स्वरूप कहियें छियें.

१ कन्यालीक जूठ. पोताना मेलापीनी कन्या होय अने तेनुं वेशवाल करवानो प्रसंग होय, ते वखते कन्यानी मागणी करनारा पुछे के आ कन्या केवी छे ? ते प्रसंगे संबंधीनी प्रीतिना कारणथी, ते कन्यामां जे दूषण होय ते छुपावे, वली गुण न होय छतांपि अधिक गुणवाली कहे, तेमज कहे के आ कन्या निर्दोष छे, आवी कुलवती, सुलक्षणवती, साक्षात् देवांगना समान, तमने मलवी मुश्केल छे. वली जो कन्यानां मातपिता साथे द्वेष होय तो, कन्या निर्दोष, होय, छतांपि कहेके आ कन्यामां सारां लक्षण नथी, मांजरी आंखवाली छे, सापणवाली छे, तेनी

साथे संबंध करशो तो जरूर पश्चात्ताप करशो, ए प्रमाणे अछतां दूषणो कहेवां आ कन्यालीक जूठ छे. प्रथम तो व्रतधारी श्रावक कोइना सगाइ संबंधना झगडामां पडे नही, कदापि पोतानां सगां, मित्रादि होय, अने तेउ पुछे तो यथार्थ कहे, वली कहे के नाइ! तमे पोतानी मेले निश्चय करी ल्यो. कारण के जन्मपर्यंतनुं काम छे. ए प्रमाणे कहे, परंतु असत्य न बोले, आ कन्यालीकमां उपलक्षणथी सर्व बे पगवालांनुं असत्य न बोले.

२ गवालीक जूठ. सर्व चौपद, ते हाथी, घोडा, बलद, गाय, भेंस प्रमुख, संबंधी असत्य न बोले.

३ नूम्यालीक जूठ. ते बीजानी जमीनने पोतानी कहेवी, तेमज बीजानी जमीनने त्रीजानी कहेवी इत्यादि, तेमज घर, हवेली, वाडी, बाग, वृक्षादि संबंधी, तथा सर्व परिग्रहसंबंधी पण जूठ न बोले.

४ थापणमोसानुं जूठ. कोइपुरुष श्रावकने प्रतीतवालो जाणीने तेने पोतानी कांइ वस्तु साक्षी राख्याविना, तेमज लखत कराव्याविना सोंपी गयो होय, पाछो सोंपनार मागवा आवे, त्यारे राखनार इनकार करे, अने कहे के तमे कोने सोंपी गया छो? हुं तो तमोने जाणतो पण नथी के तमे कोण छो? एम असत्य बोली तेनी वस्तु उलवे. आ महापाप श्रावकें कदापि नहि करवुं जोइए.

५ जूठी साक्षी पुरवी. बे सख्स आपसमां टंटो करे छे, तेवामां एकनी पासेथी धन लइ, अथवा तो तेनी शरम खातर, जूठी साक्षी पुरवी. आ कामपण श्रावकें नहीं करवुं जोइए. आ व्रतना पांच अतिचार छे, ते वर्जवा.

१ सहसाभ्याख्यान अतिचार. विचार कर्याविना कोइने कलंक देवां, जेम के तुं व्यभिचारि छो, चोर छो, जूठो छो, इत्यादि. श्रावक कदापि कोइनो प्रगट अवगुण देखे, तोपण पोताना मुखथी तेने जरापण दुःख थाय तेम न बोले, तो पछी जेमां महापाप छे एवुं कलंक तो केमज आपे?

२ रहसाभ्याख्यान अतिचार. बे अथवा वधारे सख्सो एकांतमां बेसी कांइमत बांधे छे. तेउने देखी कहे के तमे राज्य विरुद्ध प्रपंच करो छो, एम कही तेउनी चुगली खाइ, तेउने राज्यदंड अपाववो ते महापाप छे.

३ स्वदारा मंत्रभेद अतिचार. पोतानी स्त्रीए कांइ छानी वात कहेली होय, ते वात पति लोकोमां प्रकट करे. उपलक्षणथी भाइ प्रमुखनी कहेली वात प्रगट करवी. तात्पर्य ए छे के मर्मवाली वात प्रगटथवाथी स्त्री आदि कुवामां पडी डुवी मरे छे.

४ मृषा उपदेश अतिचार. बीजाउने असत्य कामो करवानो उपदेश आपवो. वली विषयसेववानां चोराशी आसन शिखववां, तथा बीजाउ जेथी दुःखमां आवी पडे तेवो उपदेश करवो. वली वीर्यपुष्टिनां ओषधादि बतावववां, जेथी विषय, कषाय अत्यंत वृद्धि पामे, अने जेथी बहुज विषयसेवन करवामां आवे तेवो उपदेश करवो ते.

५ कूट लेखकरण अतिचार. जूठा दस्तावेज बनाववा, जूठी सही करवी, जूठी महोर छाप करवी, अक्षरो भुंसी नाखी, नवा अक्षरो दाखल करवा, इत्यादि बीजाने नुकशान थाय तथा दुःख थाय एवा हेतुथी कूटलेख करवा ते आ पांच अतिचार. तथा पूर्वोक्त पांचप्रकारनां असत्य नरकादि गतिनां कारण जाणी, श्रावक अवश्य वर्जे. इति मृषावादविरमणव्रत.

३ त्रीजा स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. मोटी चोरी करवी, जेमके धाड चोरी करवी, रस्तानी लुट करवी. गवेशीउ मारी भीत फोडी खातर पाडवुं, जबरदस्तिथी बीजानी वस्तु लेवी, छल कपटथी छगीने बीजानी वस्तु लेवी, विश्वासघात करी बीजानी वस्तु उलवी जवी, अपराधसहित मिलकतनो खोटो उपयोग करवो, मिलकतनी अदलाबदली करवी, इत्यादि अदत्तादान अर्थात् चोरीनुं स्वरूप छे. चोरी करवाथी परलोकमां नरकादि माठी गति प्राप्त थाय छे, अने आ लोकमां पण प्रगट थवाथी राज्यदंड, अपयश, तथा अप्रतीति थाय छे. ते कारणथी श्रावक अदत्तादाननो त्याग करे. अदत्तादान व्रतना बे भेदछे, ते कहियें छियें.

द्रव्य अदत्तादान विरमण व्रत. पूर्वोक्त प्रकारें बीजाउनी पडेली के विसरेली वस्तु लेवी नहि ते द्रव्य अदत्तादान विरमणव्रत छे.

२ भाव अदत्तादान विरमणव्रत. पर जे पुजल द्रव्य, तेनी रचना, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिरूप, त्रेवीश विषय, तथा आठकर्मनी वर्गणा,

आ सर्व पराइ वस्तु छे, ते वस्तु तत्वज्ञानमां जीवने अग्राह्य छे, छतां तेमनी जे उदय जावथी वांछा करवी ते जाव चोरी समजवी. जिनागम श्रवण करी तेमनो त्याग करवो, तथा पुज्रलानंदि पणानो अजाव करवो, तेज जाव अदत्तादान विरमण व्रत छे. जे जे कर्मप्रकृतिनो बंध नाश पामेल होय, ते जाव अदत्त विरमण व्रत कहेवाय. सामान्य प्रकारें अदत्तना चार जेद छे.

१ कोइनी वस्तु तेनी परवानगी विना लेवी ते स्वामि अदत्त. २ सचित्त वस्तु अर्थात् जीववाली वस्तु, फूल, फल, बीज, गुच्छा, पत्र, कंद मूलादि, बकरा, गाय, सुअरादि, तेउनो नाश करवो, छेदवां, जेदवां, कापवां इत्यादि ते जीव अदत्त, हेतु ए छे के फुलादि जीवोए पोताना शरीरने छेदवा, जेदवानी आज्ञा आपी नथी, के अमारुं छेदन, जेदन करो, ते कारणथी ते जीव अदत्त छे. ३ जे वस्तु तीर्थंकर, अर्हंत जगवंतें निषेध करेली छे, तेउनुं जे ग्रहण करवुं, जेमके साधुने अशुद्ध आहार करवानो निषेध छे, अने श्रावकने अजक्ष्य वस्तुग्रहण करवानो निषेध छे, छतां तेउ आज्ञाविरुद्ध ग्रहण करे तो ते तीर्थंकर अदत्त. ४ कोइ साधु शास्त्रोक्त रीति मुजब निर्दोष आहार शुद्ध ग्रहण करी लावे, पछी ते आहारादिने गुरुनी आज्ञा विना उपजोगमां लहे तो ते गुरु अदत्त.

पूर्वोक्त चारे अदत्त संपूर्ण तो जैनना यतिज त्यागी शके, गृहस्थथी तो मात्र स्वामि अदत्तज त्यागी शकाय छे, ते कारणथी तेनीज आ स्थले मुख्यता छे. सारांश के पराइ वस्तु पूर्वोक्त रीतें लेवी नहि, जो लहे तो चोर कहेवाय, राज्यदंड पामे, अपयश, अपकीर्त्ति, अप्रतीति थाय, ते कारणथी पारकी वस्तु ग्रहण करवी नहि. जे वस्तु यत् किंचित् मूल वाली छे, अर्थात् जे लेवाथी तेना मालेकने एवुं नुकसान थतुं नथी के कोइ समजु माणसना विचारमां ते जारे पडतुं थाय, सारांश के जे लेवाथी चोर नाम पडतुं नथी, तेवी वस्तु लेवानी जयणा राखे. वली कोइनी पडीगयेली वस्तु हाथमां आवे, पछी जाणवामां आवे के ते वस्तु अमुक सख्सनी छे, तो ते वस्तु तेने आपे, जो ते वस्तुना मालेकनो पत्तो न मले, अने पोतानुं मन दृढ रहे तो ते वस्तु पोते राखे नहि; कदाचित् बहु मूल्यवान् वस्तु होय, अने मन दृढ रहे तो ते वस्तु

दत्त विरमण व्रत कहेवाय छे. आ व्रतना पांच अतिचार छे. ते वर्जे, तेनुं स्वरूप कहियें छियें.

१ स्तेनाहृत अतिचार. चोरनी चोरेली वस्तु स्तेनाहृत कहेवाय छे. ते वस्तु लहे नहि, अर्थात चोरनी वस्तु जाणीने लहे नहि, कारण के जे चोरीनी वस्तु जाणीने लहे छे, ते लेनार पण चोर छे, जैन मतना शास्त्रोमां चोरना सात प्रकार छे. यथा ॥ चौरश्चौरापकोमंत्री, भेदज्ञः काणकक्रयी ॥ अन्नदः स्थानदश्चैव, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥ आ प्रथम अतिचार.

२ प्रयोग अतिचार. ते चोरी करनाराउने प्रेरणा करवी. जेमके अरे! तमे धंधाविनाना छानामाना आजकाल केम वेसी रह्या छो? जो तमारी पासे खरची न होय तो हुं मदद करुं. तमे लइ आवशो ते वस्तु हुं वेची आपीश. तमे चोरी करवा जाउ. इत्यादि वचनोथी चोरोने प्रेरणा करवी. आ वीजो अतिचार.

३ तत् प्रतिरूपक व्यवहार अतिचार. ते सारी वस्तुमां खराव वस्तु मेलवी वेचवी. जेमके केशरमां कसुंबादि मेलववां, घीमां छासादि, हिंगमां गुंदरादि मेलववां खोटी कस्तूरी खरी दाखल वेचवी, अफीणमां भेल संभेल करी वेचवुं, जूनावस्त्रने रंगावी नवाना भावथी वेचवां, रूमां पाणी नाखी वेचवुं, दुधमां पाणी भेलवी वेचवुं. इत्यादि काम करवां. आ त्रीजो अतिचार.

४ राज्य विरुद्ध गमन अतिचार. ते पोताना शेहेरना अथवा देशना राजाए फरमान कर्युं होय के अमुक गाम जवुं आववुं नहि, तेमज ते गामना लोको साथे व्यापार करवो नहि, छतां राजानी आज्ञानुं उल्लंघन करीने वैरी राजाना देश गाममां जवुं आववुं तथा व्यापार करवो. आ चोथो अतिचार.

५ खोटां तोलां मापां राखवां ते अतिचार. उछां तोलां, मापथी देवुं, अने अधिक तोलां,मापथी लेवुं. आ पांचमो अतिचार. इतितृतीयव्रतस्वरूप.

चोथुं व्रत. मैथुनसेवननो त्याग, ते मैथुन त्यागव्रत कहेवाय छे. मैथुनना वे भेद छे. १ द्रव्य मैथुन त्याग, २ भाव मैथुन त्याग. द्रव्य मैथुन तो परस्त्री तथा परपुरुष साथे संगम करवो ते तेमां पुरुष स्त्रीनो

त्याग करे, अने स्त्री पुरुषनो त्याग करे, अर्थात् अरस परस रतिक्रीडा काम सेवननो त्याग करे, ते द्रव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहेवाय छे.

भाव मैथुननुं स्वरूप एवुं छे के चेतनरूप पुरुषें, परपरिणतिरूप विषय विलास, अने तृष्णा, ममतारूप कुवासना, एवी निश्चय परस्त्रीने मली तेनी साथे लालन, पालन, कामविलास करवो ते. तेनुं जिनवाणीना उपदेशथी, तथा गुरुनी हितशिक्षाथी ज्ञान थयुं, त्यारे जातिहीन जाणीने, तेमज भविष्यमां तेनुं सेवन महादुःखदायक परिणामवालुं थवानुं छे एम जाणीने, तथा पूर्वकालमां तेना सेवनथी अनंत जन्म मरणनां दुःख अनुभव्यां छे एम विचारीने ते विजातीय स्त्रीनो त्याग करवो ते ठीक छे, अने मारी परमभक्त, स्वजातीय, उत्तम, सुकुलवती स्त्री, समतारूप सुंदरी, तेनो संग करवो वास्तविक छे. वली विभाव परिणतिरूप परस्त्रीए मारी सर्वविभूति हरण करी छे, तेथी सद्गुरुनी सहायताथी हवे ते दुष्ट परिणतिरूप स्त्रीना संगनो थोडो निग्रह करुं, त्यागवानो भाव आदरुं, जेथी शुद्धस्वभाव घटरूप घरमां प्रवेश करुं, तथा मारा स्वरूपना तेजनी वृद्धि थाय एम प्रवर्तुं; एवी समजण लावीने परपरिणति ममतानो त्याग करे, तेमज कर्मना उदयमां व्यापक न थाय, अने शुद्ध चेतनाना संगी थाय, ते भाव मैथुनत्यागी कहेवाय छे.

द्रव्य मैथुनना त्यागी तो छए दर्शनमां मली शके छे, परंतु भावमैथुनना त्यागी तो श्रीजिनवाणी श्रवण करवाथी, ज्यारे भेदज्ञान घटमां प्रगट थाय छे, त्यारे भवपरिणतिथी सहज उदासीनरूप भाव थाय छे; तेवा मैथुनना त्यागी जैनमतमांज होय छे.

स्थूल परस्त्रीगमनविरमणव्रत. ते परस्त्रीनो त्याग करवो, परपुरुषनी विवाहिता स्त्री, तथा परनी राखेली स्त्री, तेनी साथे अनाचार न सेववो, एवुं जे प्रत्याख्यान, ते परदारगमन विरमण व्रत छे; अने पोतानी स्त्रीमां संतोष करवो एवुं जे व्रत, ते स्वदारासंतोष व्रत छे.

देवांगना तथा तिर्यंचणी, तेओनी साथे कायाथी मैथुन सेवन करवानो निषेध आ व्रतमां छे. वली वर्त्तमान स्त्रीनो त्याग करीने, बीजी स्त्री साथे विवाह न करे; तथा दिवसें पोतानी स्त्री साथे पण मैथुन सेवन न करे, कारण के दिनसंजोगथी जे संतान उत्पत्ति थाय छे, ते

निर्बल थाय छे. जो काम अभिलाषा अधिक होय तो दिवसनी पण मर्यादा करे. तेवीजरीतें स्त्रीपण पर पुरुषनो त्याग करे. ए प्रमाणे चोथुं व्रत पाले. आ व्रतना पांच अतिचार छे. ते वर्जे, ते लखियें छियें.

१ अपरिगृहीतागमन अतिचार. परण्या विनानी (कुंमारी) तथा विधवा स्त्री अपरिगृहीता कहेवाय छे, कारण के तेउनो कोइ भर्त्तार नथी. कोइ अल्पमति, विषयाभिलाषी मनमां एम विचारे के में तो परस्त्रीनो त्याग करेलो छे, अने अपरिगृहीता तो कोइनी स्त्री नथी, तेथी तेनी साथे विषयसेवन करवाथी मारुं व्रतभंग नहि थाय, एवो विचार करीने कुमारी तथा विधवा स्त्रीनी साथे भोग विलास करे, तथा स्त्री पण व्रतधारण करीने कुंवारा तथा रांडेला पुरुषनी साथे व्यभिचार सेवन करे तो आ अतिचार लागे. आ प्रथम अतिचार.

२ इत्वर परिगृहीतागमन अतिचार. इत्वर अर्थात् अल्पकाल कोइपुरुषें थोडी मुदत माटे कोइ वेश्याने पोतानी करी राखेली होय तेवे प्रसंगें ते पुरुष अज्ञानना उदयथी एवो विचार करे के मारे तो परस्त्रीनो त्याग छे, अने वेश्यानो संबंध तो मारे अल्पकाल माटे छे, तेथी वेश्यानी साथे सेवन करवाथी मारा व्रतनो भंग थशे नहि, एवा अज्ञानतायुक्त विचारथी विषयसेवन करे तो बीजो अतिचार लागे. वली स्त्री पण पोतानी शोक्यना वाराने दिवसे पोताना भर्त्तारनी साथे विषय सेवन करे ते एवा वीचारथी के मेंतो मारापति साथे विषय सेवन करेल छे, तेथी मारा व्रतनो भंग थशे नहि, तेवे प्रसंगे स्त्रीने पण अतिचार लागे. पूर्वोक्त बंने रीतिमां श्रावक यथार्थ रीतें जाण्या पछी फरीथी ते प्रमाणे करे तो व्रतभंग थाय, परंतु अतिचार नहि.

३ अनंगक्रीडा अतिचार. अनंगनाम काम. ते काम कंदर्प जाग्रत करवो. आलिंगन चुंबन प्रमुख करवां. नेत्रोना हाव भाव कटाक्ष, ठठ्ठा मस्करी प्रमुख, परस्त्री साथे करवां. मनमां एवो विचार करवो के में तो परस्त्री साथे परस्पर एक शय्या उपर विषयसेवननो त्याग करेलो छे, परंतु अनंगक्रीडानो त्याग करेलो नथी. एवो विचार करनार मूढमति जाणतो नथी के पूर्वोक्त कामक्रीडाथी व्रत कदापि रहीशके नहि, कारण के तेथी मनोवृत्तिथी महापाप तो तेजीवें उपार्जन करी लीधुं. निश्चय नयना

मतथी तेनो व्रतभंग पण थइ गयो. वली पोतानी स्त्रीसाथे चोराशी आसनोथी विषयसेवन करे, तथा पंदर तिथिना विचारे स्त्रीनी साथे अंगमर्दनादि पूर्वक काम प्रदीप्त करे, अत्यंत कामाभिलाषी तथा पोतानी स्त्रीनो योग न प्राप्त थाय तो हस्तकर्म करे. स्त्रीपण अत्यंत कामव्याप्त थइ गुह्यस्थानमां वस्तु संचारादि हस्तकर्म करे. तेवा प्रसंगे आ आतिचार लागे. ते कारणथी श्रावकें अनेक उपायथी काम इछा मंद करवी जोइयें, कारण के विषयवृत्ति मंद थवाथी, अने वीर्यनुं रक्षण करवाथी, बुद्धि, आरोग्यता, आयु, बल प्रमुख वृद्धि पामेछे, अने कामसेवन अधिक करवाथी तेउनी मंदता थतां मन मलिन थायछे, पापवृद्धि पामेछे, क्षय, भ्रम, मूर्छा, क्लम, स्वेदादि अनेक रोग उत्पन्न थायछे. ते कारणथी मात्र जेथी वेदविकार शांत थाय, तेटलुंज मैथुन सेवन करवुं, एवी अभिलाषा जोइए. वली ज्यारे काम उत्पन्न थाय, त्यारे स्त्रीनी कामसेवननी जगाने जाजरु समान गणे. एवो विचार मनमां लावे के स्त्रीनुं शरीर मलमूत्रथी भरेलुं छे, विषयसेवननुं स्थान अत्यंत मलिन, दुर्गंधमय छे, मुखमां पण दुर्गंधमय लाल छे, नाकपण दुर्गंधयुक्त श्लेष्मवालुं छे, कानमां मेल छे. पेटमां विष्टा मूत्र भरेल छे, नसोमां खानपाननो दुर्गंधमय रस रुधिर, हाड, चाम, चरबी, वात पित्त, कफ भरेल छे, स्त्रीनुं शरीर अत्यंत अशुचिनुं पुतलुं छे, ज्यांथी वास निकलशे त्यां महादुर्गंधमय वास निकलशे, वली ते शरीर अनित्य, अशाश्वत, सडन, पडन, विध्वंसन भाववालुं छे, ए प्रमाणे स्त्रीना शरीरनो स्वभाव छतां दिलगिरि छे के चतुर पुरुषो पण कामाधीन थइ विषयसेवनमां मग्न रहेछे, तेथी पूर्वोक्त सत्य समजथी विचार करी कामने शांत करे. आ त्रीजो अतिचार.

४ परविवाहकरण अतिचार. पोताना पुत्र, पुत्री विना, यशवास्ते तथा पुण्यवास्ते, बीजाउना विवाह करे, करावे. आ चोथो अतिचार.

५ तीव्रानुराग अतिचार. पुरुष; स्त्रीउपर, तेमज स्त्री, पुरुष उपर काम सेवन अभिलाषाथी अत्यंत राग, स्नेह राखे. परस्त्रीने देखी मनमां तेनीसाथे मैथुन सेवननी बहुज चाहना राखे. रात दिन कामकाज करतां, सुतां, बेसतां, उठतां, जतां, आवतां, स्त्रीमांज चित्तवृत्ति राखे; तेमज कामवृद्धिमाटे, अफीण, माजम, भांग, हरताल, पारा, भांबु प्रमुख

खाय, अने तेप्रमाणे खाइ कामवृद्धि करी, स्त्रीसाथे अत्यंत प्रीति करे. स्त्रीपण कामवृद्धिमाटे अनेक औषधोपचार करे, हावभाव, विषय, लालसा करे. आ पांचमो अतिचार. पांचे अतिचारनुं स्वरूप श्रावक जाणी तेने तजवानी अभिलाषा करे. पांचे अतिचारनुं विशेष स्वरूप धर्मरत्न प्रकरणनी टीकाथी जाणवुं. इति चतुर्थव्रतं.

५ पांचमा स्थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतनुं स्वरूप लखियें छियें. परिग्रहना बे भेदछे. एक बाह्यपरिग्रह अधिकरणरूप, ते द्रव्य परिग्रह, नवप्रकारनो छे. बीजो भाव परिग्रह, ते चौद अभ्यंतर ग्रंथिरूप, परभाव ग्रहणरूप, समस्त प्रदेश सहित, सकषायीपणे बंध, ते भाव परिग्रह छे. वली शास्त्रमां मुख्य वृत्तिथी, मूर्छाने भाव परिग्रह, कहेली छे. तेमां चौद प्रकारना अभ्यंतर परिग्रह आप्रमाणे छे. १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोभ, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुंसकवेद, १४ मिथ्यात्व. आ चौद अभ्यंतर ग्रंथि छे. आ संसारमां जीवने केवल अविरतिना बलथी इच्छा, आकाशसमान अनंती छे. कदापि तेनुं माप थइ शकतुं नथी. अविरतिना उदयथी इच्छा, अने इच्छाबलथी कर्मबंधनमां पडतां थकां चारे गतिमां आ जीव भ्रमण करेछे. भवितव्यताना योगें पुण्यना उदयथी मनुष्यभवादि सकल सामग्रीनो योग प्राप्त करीने सद्गुरुना सत्संगथी श्रीजिनेश्वर भगवाननी वाणी श्रवण करवामां आवी; अनुक्रमें चेतना, जाग्रतदशानो अनुभव करवा लागी; मनमां विचार थयो के अहो! हुं समस्त परभावथी अन्य छुं! अबंधी, अछेद्य, अभेद्य, अदाह्य धर्मी छुं! परंतु इच्छाने अधीन बनवाथी समस्त छेदन, भेदन, परिभ्रमणादि दुःखोने भोगवनार परधर्मी बनी रह्यो छुं! ते वास्ते समस्त परभावनुं मूल जे इच्छा छे, ते दूर करुं. बाद समस्त परभाव त्यागरूप चारित्र आदरे. साधुवृत्ति अंगीकार करे; अने जे जीव इच्छानुं प्रबल होवाथी एकदम सर्व परिग्रह त्यागवाने समर्थ न होय, अने दोषथी करतो होय, तो गृहस्थधर्म, इच्छा परिमाणरूप व्रत आदरे. ते इच्छा परिमाण व्रत नवप्रकारे छे. तेनुं स्वरूप.

१ प्रथम धनइच्छा परिमाणव्रत. धनना चार प्रकार छे. १ गणिम धन नालीएर प्रमुख, जे गणत्रीथी वेचवामां आवे ते. २ धरिम धन, गोल-

प्रमुख, जे तोलीने वेचवामां आवे ते. ३ परिछेद्य धन, सोनुं, रूपुं, जवाहिरप्रमुख, जे परीक्षाथी वेचवामां आवे ते. ४ मेय धन, दुधप्रमुख, जे मापीने वेचवामां आवे ते. आ चारे प्रकारना धननुं परिमाण करे, ते धन परिमाण व्रत.

२ धान्य परिमाण व्रत. धान्यना चोवीश प्रकार छे. १ कमोद, २ घउं, ३ जुवार, ४ बाजरी, ५ जव, ६ मग, ७ मठ, ८ अडद, ९ घुंट, १० बोडा, ११ मटर, १२ तुअर, १३ किसारी, १४ कोद्रवा, १५ कंगणी, १६ चणा, १७ वाल, १८ मेथी, १९ कलथी, २० मसूर, २१ तल, २२ मंडवा, २३ कुरी, २४ वंटी. आ धान्य खावा वास्ते तेमज व्यवहार वास्ते उपयोगी छे; अने १ धाणा (धनीया), २ सौंडी, ३ सोवा. ४ अजवायन, ५ जीरुं, आ पांच धान्यनी जाति छे, परंतु औषधादिमां काममां आवे छे. तथा १ शामक, २ मणकी, ३ ज्जुरट, ४ चेकरीआ, आ चार मारवाड देशमां प्रसिद्ध छे. बीजां पण केटलांएक धान्य वाव्याविना उगे छे, जे लोको दुकालना वखतमां खाय छे. आ सर्व जातिनां धान्यनुं परिमाण करे.

३ क्षेत्रपरिग्रह व्रत. वाववाना खेतर, तथा बाग, बगीचादि जाणवां क्षेत्रना त्रण भेद छे १ वर्षादना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र, २ कुवाना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र, ३ बंने प्रकारना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र. ए प्रमाणे क्षेत्र परिमाण करे.

४ वास्तुक परिमाण व्रत. घर, हाट, हवेली प्रमुख. तेना पण त्रण भेद छे १ जमीन तल माल विनाना. २ एकमाल, बे माल, त्रणमाल, यावत् सातमाल सुधी, ३ भोयरां. तेनुं परिमाण करे.

५ रूप्य परिग्रह परिमाणव्रत. सिक्का विनानुं काचुं रुपुं, तेना तोलनुं परिमाण करे.

६ सुवर्णपरिग्रहपरिमाण व्रत. सिक्का विनानुं सोनुं, तेना तोलनुं परिमाण करे.

७ कुपदपरिग्रहपरिमाण व्रत. त्रांबुं, पीतल, जसत, कांसुं, सीसुं, लोढुं प्रमुख धातुनां वासणोना तोलनुं परिमाण करे.

८ द्विपदपरिग्रहपरिमाण व्रत. दास, दासी, पगारदार मुनीम प्रमुख राखवां, तेनी संख्यानुं परिमाण करे.

ए. चौपदपरिग्रहपरिमाण व्रत. गाय, भेंस, घोडा, हाथी, बलद, बकरी प्रमुख जानवरो राखवानी संख्यानुं परिमाण करे.

हवे पोतानी इच्छा परिमाणथी परिग्रह केवीरीतें राखे, ते कहीए छीए. रुपुं तथा सोनुं, घडेलुं तेमज नहि घडेलुं आटला वजन राखुं, तथा रुपैया, सोनामहोर, जवाहीर, आटलां राखुं, ते प्रमाणे परिमाण करे, ते उपरांत पुण्योदयथी धनवृद्धि थाय तो, वधेलुं धन, धर्मकार्योमां वापरे. वली वर्षप्रति आटली जातनां वस्त्र पहेरुं, तथा एकवरसमां आटलुं अन्न घर खरच वास्ते राखुं, तथा आटलुं व्यापार वास्ते राखुं, इत्यादि बाबतोनुं स्वरूप विस्तारथी, सातमा व्रतना स्वरूपमां कथन करवामां आवशे. क्षेत्र परिमाणमां, खेतरो, वाडी, बगीचा, सर्व मली आटलां सांती वा विघा जमीन राखुं, तथा घर, चोकबंध, खडकीबंध, दुकान, तबेला, वखारो, तथा परदेश संबंधी दुकानोनी जयणा तथा भाडे राखवाना मकानोनी जयणा, तथा भाडे राखेलां मकानो समरावबानी जयणा राखे; तथा कुटुंब संबंधी घर बनावबाना उपदेशनी जयणा; वली पोताना संबंधी तेमज गुमास्ता परदेश गया होय, अने पाछल तेउनां घर प्रमुखसमराववां पडे तो जयणा, आजीविकावास्ते कोइनी चाकरी करवी पडे, तेवे प्रसंगे शेठना घरप्रमुख समराववानी जयणा. कुपद परिमाणमां त्रांबा, पितल, कांसा विगेरे धातुनां वासणो तथा धातु तुटी अमुक मण राखवानी जयणा; द्विपद परिमाणमां दास, दासी वेचाता लेवानो प्रतिबंध, परंतु पगारवाला नोकरो गणत्रीथी राखवा जोइए, वली अमुक गुमास्ता राखवानी जयणा, चौपद परिमाण, गाय, भेंस, बकरी प्रमुख राखवानुं परिमाण संख्याथी करे. आ व्रतना पांच अतिचार छे तेनुं स्वरूप लखीए छीए.

१ धन परिमाण अतिक्रम अतिचार. ज्यारे इच्छा परिमाणथी अधिक धन थइ जाय, त्यारे तीव्र लोभना उदयथी मनमां एवो संकल्प करे के, मारो पुत्र मोटो थयो छे, तेने धननी जरुर छे, वलि ते कमाइ शके तेवो थयो छे, तेथी मारे तेने धन आपवुं जोइए, एवो कुविकल्प करी पुत्रना नामथी अमुक रूपीआनी रकम जुदी राखे, ए प्रमाणे जुदी जुदी रीते धननां खातां राखे. धान्य पोताना परिमाणथी अधिक राखवानी

इछा थाय त्यारे बीजाउना घरमां रखावे, अने मनमां एवो विचार अज्ञानताथी करे के में तो अमुक परिमाणधान्यनी बाबतमां जे राखेल छे, तेटलुंज मारा घरमां छे, तेथी जास्ती बीजांउना घरमां राखवाथी मारा व्रतमां दूषण लागतुं नथी. वली काचा मणनो हिसाब व्रत लेती वखते राख्यो होय, अने पाछलथी लोजना कारणथी पाकामणनो हिसाब गणी धान्य राखे, ए प्रमाणे करनारने प्रथम अतिचार लागे.

क्षेत्रपरिमाण अतिक्रम अतिचार ज्यारे इछा परिमाणथी अधिक घर, दुकान, खेतर प्रमुख थइ जाय, त्यारे वचली जीत अथवा वाड होय तो ते त्रोडी नाखी एक बनावे,मनमां विचारे के में तो गणत्रीथी परिमाण करेल छे, अने गणत्रीथी उपरांत में राखेलुं नथी,तेथी मारुं व्रत निर्दूषण छे. घर, डुकान प्रमुख मोटां करवाथी शुं दूषण छे? ए प्रमाणे करे तो बीजो अतिचार लागे.

३ रुप्यसुवर्ण परिमाण अतिक्रम अतिचार. ज्यारे सोनुं,रुपुं इछापरिमाणथी अधिक थाय त्यारे, पोताना, तेमज स्त्री, पुत्रादिकना आजरण प्रमुख जारे तोल वालां बनावे. आ त्रीजो अतिचार.

४ कुपद परिमाण अतिक्रम अतिचार. त्रांबा, पितल प्रमुखनां वासणो जे गणत्रीथी राखेलां होय ते, ज्यारे लोज विशेष थाय अने संपत्ति वधे त्यारे गणत्रीमां तेटलांज राखे, परंतु तेओनो वजनमां बहुज फेरफार करे, बमणां बनावे; मनमां विचारे के मारी गणत्री उपरांत में राखेलां नथी, तेथी मारुं व्रत अखंडित छे. वली धातुनो काचो तोल परिमाणमां राख्यो होय तो, पाछलथी पाका तोलथी धातु राखे. आ चोथो अतिचार.

५ द्विपद चतुष्पद परिमाण अतिक्रम अतिचार. दास, दासी, घोडा, गाय, प्रमुख परिमाणथी अधिक थाय त्यारे वेचे, अथवा जाइ, पुत्रना नामथी राखे, तो पांचमो अतिचार लागे इति. हवे छठां, सातमां तथा आठमां व्रतो जे गुणव्रत कहेवाय छे, तेमां छठुं व्रत दिक्परिमाण व्रत छे तेमां दिशाना विचार छे, तेनुं स्वरूप लखीए छीए.

पूर्वना पांच अणुव्रतने आ त्रणव्रतथी गुणवृद्धि थाय छे तेथी तेनुं नाम गुणव्रत छे. कारण के ज्यारे दिशिपरिमाण व्रत लीधुं, त्यारे तेक्षेत्रथी बहारना सर्व जीवोने अजयदान आप्युं, आ प्रथम प्राणातिपात वि-

रमणव्रतनी पुष्टि थइ; तेमज बहारना जीवो साथे असत्य बोलवानो प्रतिबंध थयो, तेथी सत्य व्रतने पुष्टि थइ. वली क्षेत्रबहारनी वस्तु चोरवानो त्याग थयो, तेथी अस्तेय व्रतनी पुष्टि थइ. तथा क्षेत्र बहारनी स्त्री साथे मैथुननो त्याग थयो तेथी ब्रह्मचर्य व्रतनी पुष्टि थइ. तथा बहार क्रय, विक्रयनो निषेध थयो तेथी पांचमा व्रतनी पुष्टि थइ. ए प्रमाणे पांचे व्रतने आ व्रतो गुणकारी छे.

हवे दिशि परिमाण व्रतमां, चारे दिशि, तथा चारे विदिशि, ऊर्ध्व अने अधोदिशि, आ दशे दिशाओनुं परिमाण करे. तेना बे भेद छे. १ व्यवहारथी, २ निश्चयथी. तेमां पोतानी कायाथी दशे दिशिमां जवा आववाना, तथा मनुष्य मोकलवाना, अने व्यापार करवानां परिमाण करे, तेने व्यवहार दिशि परिमाण व्रत कहीए.

निश्चयथी दिशि परिमाणनुं स्वरूप ए एवुं छे के, नरकादि गतिमां जे गमन छे, ते सर्व कर्मनो धर्म छे. जेने वश पडवाथी आ जीव चारे गतिमां भटके छे. चेतन परानुयायी थइ रहेल छे, तेज कारणथी परभवानुसारी गति भ्रमण करे छे; परंतु जीव तो शुद्ध चैतन्य, अगतिस्वभाव, तथा निश्चलस्वभाव छे, एवुं जिनप्रणीत सिद्धांतना उपदेशथी समजीने, चेतन शुद्धस्वरूप अनुयायी थाय, त्यारे पोतानो अगतिस्वभाव जाणीने सर्वभथी उदास रहे; समस्त क्षेत्रथी अप्रतिबंधक भावथी वर्त्ते; तेने निश्चयथी दिक्परिमाणव्रत कहीए. आ दशे दिशिनुं प्रमाण करे. तेना बे भेद छे.

प्रथम जलमार्ग. वहाणथी अमुकदिशामां अमुक योजनसुधी अमुक द्वीप, बंदरोसुधी गमन करुं. जो पवन तथा वरसादना जोरथी अधिक जवाय तो आगार, अर्थात् व्रतभंग न थाय, तेमज अजाणपणे अथवा दिशाशून्य थवाथी अन्यस्थले जवाय तो तेनो पण आगार छे.

बीजो स्थलमार्ग. जे जे दिशामां, जेटला जेटला योजन सुधि जवानुं परिमाण करेलुं, छे, त्यां सुधी जइ शकाय, परंतु चोर, म्लेछादि पकडीने क्षेत्र नियमथी बहार लइ जाय तो तेनो आगार छे. ऊर्ध्व दिशिमां बार कोशसुधी जवानी जयणा राखे, तथा अधोदिशिमां आठ कोश सुधी जवानी जयणा राखे तेमां ऊंचा चडीने नीचे उतरे ते अधोदि-

शिमां गणाय नहि. वली जेटला क्षेत्रनुं परिमाण राख्युं होय, तेटलाथी वहारना क्षेत्रना कोइ ओलखाणवाला पुरुषनो पत्र आवे तो, तेनो उत्तर लखवानी जयणा राखे, परंतु पोतानी तरफथी सारा काम विना पत्र लखे नहिं. वली परदेशनी विकथा श्रवण करवानो आगार राखे. आ व्रतना पांच अतिचार छे. ते नीचे मुजब.

१ ऊर्ध्वदिशा परिमाण अतिक्रम अतिचार. अनाभोगथी अथवा वे सुरतिथी अधिक चाल्यां जवाय तो आ अतिचार लागे.

२ अधोदिशि परिमाण अतिक्रम अतिचार उपरमुजब.

३ तिर्छी दिशि परिमाण अतिक्रम अतिचार. उपरमुजब. जो नियम भंगना भयथी गुमास्तो मोकले तो पण अतिचार लागे.

४ एकदिशिमां सो योजन राखेला होय, अने वीजी दिशिमां पचास योजन राख्या होय; पाछलथी ज्यारे एकदिशिमां दोडसो योजन जवानुं वन्युं होय त्यारे वीजी दिशाना पचास योजन ते दिशिमां जोडी दइ मनमां अज्ञानताथी एवो विचार करे के मारा नियम उपरांत हुं गयो नथी, एवो विचार करी जाय तो आ अतिचार लागे.

५ स्मृति अंतर्धान अतिचार. पोताना नियम करेला योजननी संख्या भूली जाय, जेमके कोण जाणे, पूर्वदिशिमां केटला योजन राखेल छे? सो राखेल छे के पचास राखेल छे? इत्यादि, एवी शंका थतां नियम उपरांत योजन जाय तो आ अतिचार लागे. इति षष्ठव्रतं.

हवे सातमा भोगोपभोग व्रतनुं स्वरूप लखीये छीयें. आ वीजुं गुणव्रत छे. आ व्रत अंगीकार करी सचित्त वस्तु खावानो त्याग करे, अथवा परिमाण करे. वली जेमां वहु हिंसा होय एवो व्यापार न करे, तथा जे काममां अवश्य हिंसा वहुज करवी पडे, तेनो त्याग करे,अभक्ष्यनो त्याग करे. चौद नियमपण आ व्रतमां गणाय छे. ते कारणथी आ व्रत पूर्वोक्त पांचे अणुव्रतोने गुणकारी छे. आ व्रतना वे भेद छे, ते कहीयें छियें.

प्रथम व्यवहार. भक्ष्य अभक्ष्य पदार्थोनुं ज्ञान करी तेउनो त्यागकरे तथा आदर करे. वली आश्रव, संवरनुं ज्ञान करी, खानपानादि जे इंद्रियसुखनां कारण छे, तेमां पोतानी शक्तिने अनुसारें वहु आरंभनो त्याग करी अल्पारंभी थाय, तेनुं नाम व्यवहार भोगोपभोग विरमणव्रत.

बीजो निश्चय. श्रीजिनवाणी श्रवण करी, वस्तुस्वरूपनुं तत्वज्ञान मेलवी, अंतःकरणमां विचार करे के जगत्मां जे परवस्तु छे, ते सर्व हेय छे; ते कारणथी तत्ववेत्ता पुरुष परवस्तु खाय नहि, पीये नहि, तेमज पोतानी पासेपण राखे नहि; अने शुद्ध चैतन्यभाव धारण करीने, परम शांतरूप थइ, जे वस्तु, सडे, पडे, नाश पामे, जाती रहे, इत्यादि परवस्तु स्वरूप जाणीने, एवो विचार करे के आ सर्व पुद्गलपर्याय छे, जगत्नी सर्व जूठ छे; तेवी वस्तुनो भोगोपभोग करवो ते तत्ववेत्ताने उचित नथी. एवा ज्ञानथी परभावनो त्याग करे, स्वगुणनी वृद्धि करे. एवुं ज्ञान पामीने आत्माने स्वस्वरूपानंदी करे. चिद्विलासनो अनुभवी करे. तेने निश्चय भोगोपभोग विरमणव्रत कहीयें.

भोगोपभोग शब्दनो अर्थ कहियें छियें. आहार, पुष्प, विलेपनादि, जे एकवार भोगववामां आवे, ते भोग कहेवाय; अने भुवन, वस्त्र, स्त्री-आदि, जे वारंवार भोगववामां आवे, ते उपभोग कहेवाय. कर्माश्रयी, आ व्रतना अनेक भेद छे, ते आगल उपर लखवामां आवशे.

श्रावकें उत्सर्गमार्गमां तो निरवद्य आहार लेवो एवो लेख छे, परंतु शक्ति न होयतो, सचित्तनो त्याग करे; जो तेपण त्यागी न शके तो बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकायनो तो अवश्य त्याग करवो जोइए. प्रथम बावीश अभक्ष्यनुं विस्तारथी कथन करियें छियें.

१ वडनां फल, २ पीपरनां फल, ३ पिलखणनां फल, ४ कठंबरनां फल, ५ गुलरनां फल. आ पांच फल अभक्ष्य छे; कारण के आ पांचे फलमां बहुज सूक्ष्म कीडा, त्रसजीव भरेला होयछे, जेउनी गणत्री थइ शकती नथी; ते कारणथी धर्मात्मा जीव, आ पांचे फलनो त्याग करे. कदापि दुकालमां अन्न न मले तोपण विवेकी जीव आ पांच फलनुं भक्षण न करे.

६ मदिरा, ७ मांस, ८ मधु, ९ माखण. आ चारेमां तेज वर्णना असंख्यजीव उत्पन्न थायछे. आ चारे विगय, महाविगय छे, तेमज अत्यंत विकार उत्पन्न करनारीछे. तेमां प्रथम मदिरा छे, ते अनेक दूषणयुक्त होवाथी अवश्य त्यागवा योग्य छे. ते दूषणो श्रीमद् हेमचंद्रसूरिकृत योग शास्त्रमां दशश्लोकथी वर्णवेलां छे तेनो अर्थ अहींआं लखियें छियें.

१ मदिरा पीवाथी चतुर पुरुपनी बुद्धि नाश पामेछे, जेम दुर्जागी पुरुपने सुंदर स्त्री तजी देछे, तेम चतुर पुरुपने, बुद्धि तजी देछे. २ मदिरापानथी, पुरुप, पोतानी, माता, बेहेन, दीकरीने पण पोतानी जार्या समान समजी, जोराजोरीथी तेनी साथे विपयसेवनादि बलात्कार करेछे, पोतानी जार्याने, पोतानी मातासमान समजेछे; मदिरापानी एवा निर्लज्ज थइ महापाप करनारा थायछे. ३ मदिरापानी, पोताने तेमज परने पण जाणता नथी. ४ मदिरापानी, पोताना स्वामिने, किंकर समजेछे, अने पोताने स्वामि मानेछे, एवी निर्लज्ज बुद्धिवाला थायछे. ५ मदिरापानी, चोकमां केफ करी पडेलो होय, तेवे प्रसंगें कुतरो तेना म्होंं उपर मुतरेछे. ६ मदिरापानी, चोकमां नग्न थइ निर्लज्ज थइ आलोटे छे. ७ मदिरापानी गम्य, अगम्य, चोरी, यारी, खुन प्रमुख, जे जे कुकर्मो तेणें करेलां होय, ते सर्व, लोको सन्मुख प्रकाश करेछे. ८ मदिरा पीवाथी, शरीरनुं तेज, यश कीर्त्ति सर्व नाश पामेछे तेमज तात्कालिकी स्वाजाविकी बुद्धिपण क्षय पामे छे. ९ मदिरापानी जूत वलग्यानी पेठे नाचे छे. १० मदिरापानी, कचरा, कादव तेमज गंदीमां लोटे छे. ११ मदिरा पीवाथी अंग शिथिल थइ जायछे. १२ मदिरा पीवाथी इंद्रियनुं तेज घटी जाय छे. १३ मदिरा पीनार मोटी मूर्छाने प्राप्त थाय छे. १४ विवेक जृष्ट थाय छे. १५ संयम नष्ट थायछे, १६ ज्ञान नष्ट थायछे, १७ सत्य नष्ट थायछे. १८ शौच नष्ट थायछे, १९ दया नष्ट थायछे, २० क्षमा नष्ट थायछे, जेम अग्निथी तृण जस्म थइ जायछे, तेम उपरना गुणो नाश पामेछे, २१ मदिरा, चोरी, तेमज परस्त्री गमनादि दुराचरणोनुं कारण छे, कारण के मदिरापानी कयां कुकर्म करता नथी. २२ मदिरा, आपत्ति तेमज वध, बंधननुं कारण छे, २३ मदिराना रसमां बहुज जीव उत्पन्न थायछे, ते कारणथी दयाधर्मीने मदिरा हेयछे. २४ मदिरापानी, लीधानुं, न लीधुं कहेछे. २५ आप्यानुं नहि आप्युं कहेछे. २६ कर्यानुं न कर्युं कहेछे. २७ मदिरापानी, घरमां तेमज बहार परधननुं हरण करेछे. २८ मदिरापानी, बाला, युवति, वृद्धा, ब्राह्मणी, चांडाली प्रमुख स्त्रीयोने जोगवी लेछे, २९ मदिरापानी अरराट करेछे, ३० गीत गायछे, ३१ आलोटे छे, ३२ दोडेछे, ३३ क्रोध करेछे, ३४ रोवेछे, ३५ हसेछे, ३६ स्यंत्तनत् थइ जायछे, ३७

मांसनी अनुमोदना करनार, ७ देवता, पितरो तेमज अतिथिउने मांस आपनार आ सात. साक्षात् तेमज परंपराये जीवना वधकरनारा छे. मनुस्वमी, मनुस्मृतिमां पण कहे छे के श्लोक ॥ अनुमंता विशसिता, निहंता क्रयविक्रयी ॥ संस्कर्त्ता चोपहर्ता च, खादकश्चेति घातकाः ॥ १ ॥ अर्थ. १ मांसनुं अनुमोदन करनार, २ मारेला जीवनां अंगना विभाग करनार, ३ जीवनो वध करनार, ४ मांस वेचनार, ५ मांस रांधनार, ६ मांस पीरसनार, ७ मांसखानार, आ साते घातकी छे, अर्थात् जीवना वधकरनार छे. वली मनुस्मृतिमां कहेलुं छे के ॥ यथा॥ अकृत्वा प्राणिनां हिंसां, मांसं नोत्पद्यते क्वचित् ॥ न च प्राणिवधात् स्वर्ग, स्तस्मान् मांसं विवर्जयेत् ॥ २ ॥ अर्थः—जीवनो वध न करवामां आवे त्यांसुधी मांस थतुं नथी, तेमज जीववधथी स्वर्ग प्राप्त थतुं नथी, परंतु नरकगति थायछे, तेथी मांसनो त्याग करवो.

मांस खानारने वधक कहेवानो हेतु ए के मांस खानारा न होय तो कसाई प्रमुख शावास्ते वीजा जीवोनो वध करे ? जे प्राणीउ पोताना मांसनी, वीजा प्राणीउना मांसथी पुष्टि करेछे, अर्थात् वीजा प्राणीउना प्राणथी पोताने सप्राण करेछे, ते जीवो, थोडी जींदगीवास्ते पोतानो नाश करे छे. मात्र पोताना जीवनवास्ते करोडो जीवोने दुःख आपे छे. उनुं शरीर शुं निरंतर रहेवानुं छे ? जे शरीरमां सुंदर मिष्टान्न, विष्टा थइ जायछे, दूध जेवी अमृतवस्तुउ मूत्र थइ जाय छे, तेवा शरीरने वास्ते कोण बुद्धिमान् जीव वध, तेमज मांसभक्षण करे. ?

जेउ मांसभक्षण करवामां कांइपण दूषण नथी, एवुं लखी गया छे, तेउ महामूढ, अविवेकी, तेमज म्लेछ हता एम लागे छे; कारण के तेउ लखे छे के ॥ यथा ॥ न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ॥ प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला ॥ १ ॥ आ श्लोकना लखनार, वाघ गीध, वरु, सिंह, गीध प्रमुख मांसाहारी प्राणीना गुरु लागे छे; तेउ जो गुरु न होयतो उपदेश रूपें आ कथन करे नहि ? वली तेउ जो न उपदेश आपत तो आ प्राणीउने मांस खावानुं, कोण शीखवत मदिरा पीवामां अने मैथुनसेवनमां कांइपण पाप नथी, परंतु तेउनी निवृत्तिथी

महाफल छे. हवे जुओ तेओनी अज्ञानता ? केवो स्ववचनविरोध छे? जे करवामां पाप नथी, ते त्यागवामां धर्मफल कदापि होइ शके ?

हवे निरुक्तिवलथी पण मांस त्यागवा योग्य छे, ते वावतमां मनुजी कहे छे के ॥ श्लोक ॥ मांसभक्षयिताऽमुत्र, यस्य मांसमिहाद्म्यहं ॥ एतन्मामांसस्य मांसत्वे, निरुक्तं मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ अर्थः—जेनुं मांस हुं खाउं, ते जीव, परभवमां मने भक्षण करशे, आ निरुक्तिथी मनुजी कहेछे के, मांसभक्षण करनारने महापाप लागे छे. जे प्राणीओ मांस खावामां लंपट छे, तेओ जे जे जलचर मत्स्यादिजीवो, स्थलचरमृगादि जीवो, अने खेचर, तेतरादि जीवोने देखतांज, तेओने मारीने खावानी तेओनी मति थाय छे. साक्षात् डाकणनी जेवी खावानी वृत्ति थाय छे. मांस खानारा उत्तम पदार्थोनो परिहार करी नीच पदार्थोने ग्रहण करवामां उद्यत थायछे. साक्षात् कागडानी जेम अमृत छोडी विष्टामां चांच देछे. तेनुंज नाम निर्विवेकता छे.॥ श्लोक ॥ ये भक्षयन्ति पिशितं, दिव्यभोज्येषु सत्स्वपि॥ सुधारसं परित्यज्य, भुंजते ते हलाहलं ॥ १ ॥ अर्थः—सर्व धातुओने पुष्टि आपनार, तथा इंद्रिओने आल्हादकारक, दिव्य भोजन समान, दुध, खीर, दही प्रमुख, तथा मोदक, सुतरफेणी, घारी, खाजां, मोहनथाल, मेसुब, सक्करपारा, घेवर प्रमुख मिष्टान्न, तथा इक्षुरस, द्राक्ष, नारंगी, सफरजन, संतरा प्रमुख उत्तमफल तथा वदाम, पस्ता, एलची, जायफल, जावंत्री प्रमुख मुखवासी उत्तम वस्तु तजीने मूढमति, विस्त्रगंधि, सूगवाला, तथा वमन थाय तेवा वीभत्स मांसनुं भक्षण करे छे. तेओ जीवितव्यनी वृद्धिवास्ते अमृतरसने तजीने जीवितव्यनो नाश करनार हलाहल, विषनुं भक्षण करे छे. वालक पण पथ्थरने छोडी, सुवर्णने ग्रहण करे छे, परंतु मांसाहारी पुरुष तो मांसथी अधिक पुष्टि आपनार दिव्य भोजननो त्याग करी मांसने ग्रहण करे छे, तेथी तेओ वालक करतां पण अज्ञानीछे.

मांस खावाथी मनुष्यनी निर्दयी प्रकृति थइ जाय छे तेथी तेओ धर्मने योग्य रही शकता नथी. धर्मनुं मूल दया छे, आ सिद्धांत सर्व उत्तम पुरुषो तथा संतजनो अंगीकार करे छे, तेथी मांसाहारी, मांस खावाथी दयायुक्त रहीशकताज नथी, अने तेज कारणथी तेओने कसाइ समान कह्या छे, तेथी मांसाहारीने धर्म नथी.

प्रश्नः—मांसाहारी पोते पोताने अधर्मी केम बनावे छे ?

उत्तरः—मांसना स्वादमां लुब्ध थवाथी, तेओ दया के धर्म कांइ पण जाणता नथी. कदाचित् जाणवामां आवे तो पण मांसलुब्ध थइ जवाथी मांसने तजवाने समर्थ रहेता नथी. ते कारणथी मनमां विचारे छे के आपणी समान बीजाओ थइ जाय तो कोइ निंदा करे नहि, तेथी पोते बीजाने मांसभक्षण नहि करवानो उपदेश करी शकता नथी.

केटलाएक मूढमति पोते तो मांस खाता नथी, परंतु देवता, अतिथि अने पितरोने माटे मांसनो उपयोग करे छे. तेओना शास्त्रकार कहेछे के ॥ यथा ॥ क्रीत्वा स्वयं वा उत्पाद्य, परोपहृतमेव वा ॥ देवान् पित्रृन् समभ्यर्च्य, खादन् मांसं न दूष्यति ॥ १ ॥ अर्थः—आ श्लोक मृगपदिओना विषयमां छे. कसाइनी दुकान विना, पारधी तेमज शिकारी, अने जानवरोने मारनाराओ पासेथी मूल आपीने मांस लेवुं अने ते देवता, अतिथि तेमज पितरोने आपवुं जोइए; कारण के कसाइनी दुकानना मांसथी देवता, पितरोनी पूजा थइ शकती नथी, तेथी पोते मांस उत्पन्न करीने पितृआदिने आपे तो तेओ प्रसन्न थायछे. पोते मांस आ प्रमाणे उत्पन्न करे. ब्राह्मण, मागीने मांस लावे, क्षत्रिय शिकार करीने मांस लावे अथवा कोइए मांसनी भेट करी होय, तो ते मांसथी देवता पितरोनी पूजा करीने, पछी पोते मांस खाय तो दोष नथी. आ कथन, महामूढ तथा मिथ्यादृष्टिओनुंज छे; कारण के दयाधर्मी, आस्तिकमतवालाओने तो मांस दृष्टिथीपण जोवुं योग्य नथी, तो पछी देवता, अतिथिनुं पूजन मांसथी करवुं, आ विचार स्वप्नमांपण तेओने केम आवे ? वली देवताओने मांस चढाववुं, ते बुद्धिमाननुं काम नथी, कारण के देवताओ तो महापुण्यवान् छे, केवल आहार करता नथी, तो आवो दुगंछा उत्पन्न करे तेवो आहार देवता केम ग्रहण करे ? तेथी जेओ देवताओने मांसाहारी कहे छे, तेओ महाअज्ञानी छे. वली पितरो, पोतपोताना पुण्य पापने अनुसारें, सारी अथवा माठी गतिने प्राप्त थयेला छे, तेओ ते गतिमां पोताना कर्मनां फल भोगवे छे, अने पुत्रना करेला कर्मनां फल तेओने कांइपण लागतां नथी, तो हवे मांस आपवाना पापनुं तो शुंज कहेवुं ? पुत्रादिना सुकृतनां फलपण तेओने पहोंचतां नथी; कारण के आंबाने सेचन करवा-

थी केल फलीभूत थती नथी. तथा अतिथिनी भक्ति वास्ते मांसनुं अर्पण नरकपातनो हेतु होवाथी, महा अधर्मनुं कारण छे. आ बाबतमां कोइ एवो सवाल करे के, जे वात श्रुति, स्मृतिमां छे, ते मानवी जोइए.

उत्तरः– आ कथन वास्तविक नथी. जे वात श्रुति, स्मृतिमां अप्रामाणिक होय, ते बुद्धिमान् कदापि मानेज नहि, कारण के श्रुतिमां अमे एम सांभलीए छीए के "वचांसि भूयांसि यथा पापघ्नोगोस्पर्शः द्रुमाणां च पूजागादीनां च पूजागादीनां च वधः स्वर्ग्यः ब्राह्मण भोजनं पितृप्रीणनं मायावीन्यधिदैवतानि वह्नौ हुतं देवप्रीतिप्रदं " आवुं कथन जे श्रुतियोमां छे, तेने युक्तिकुशल पुरुष कदापि मानशे नहि; तेथी मांसथी देवतानी पूजा करवी ते महा अज्ञानता छे. वली केटलाएक कहे छे के, जेम मंत्रथी संस्कृत, अग्नि दाह करतो नथी, तेमज मंत्रथी संस्कार पामेलुं मांस दोषकारक रहेतुं नथी. आ कथन मनुजीनुं छे ॥ यथा ॥ असंस्कृतान् पशून् मंत्रै, नाद्याद्विप्रः कथंचन ॥ मंत्रैश्च संस्कृतानद्या, छाश्वतं विधिमास्थितः ॥ १ ॥ अर्थः– मंत्रथी असंस्कृत पशुओनुं मांस ब्राह्मण न खाय, अने मंत्रथी संस्कृत पशुनुं मांस खाय तो, शाश्वता नित्य वैदिक विधिमां रहेलोछे एम जाणवो.

आ बाबतमां समाधान ए छे के, मंत्रथी जे मांस पवित्र करवामां आव्युं होय, ते पण धर्मी पुरुष कदापि भक्षण न करे. कारण के मंत्र जेम अग्निनी दाहकशक्तिने रोके, तेम नरकादिप्रापण शक्ति जे मांसनी छे, तेने दूर करवाने मंत्रमां शक्ति नथी. जो तेवी शक्ति मंत्रमां होय तो, दरेक पाप करीने, पछी ते पापना नाशकरनार मंत्रनुं स्मरण करवा मात्रथीज ते पाप नाश थई जाय, जो ए प्रमाणे होय तो वेदोमां पापनो निषेध करेलो छे, ते कथन सर्व निरर्थक समजवुं; कारण के सर्वपाप मंत्रस्मरणथीज नाश थाय छे, पछी निषेध करवानी शी जरुर हती ? ते कारणथी आ पण अज्ञानीओनुंज कथन छे.

वली केटलाएक कहे छे के जेम अल्प मद्यपानथी निस्सो चडतो नथी, तेम थोडुं मांस खावाथी पाप लागतुं नथी.

उत्तरः– थोडुं पण मांस बुद्धिमान् खाय नहि. जेम थोडुं पण विष दुःखदायक थाय छे, तेम थोडुं पण मांस दोषरूप थाय छे.

हवे मांस खावामां जे अनुत्तर दूषण छे ते कहीए छीए. तत्काल मांसमां समूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे, तेमज अनंत निगोदरूप जीव, तेनुं संतान वारंवार उत्पन्न थया करे छे, ते कारणथी महादूषण छे. ॥ यदाहुः ॥ आमासु अपक्वासु, अविपच्चमाणासु मंसपेसीसु ॥ सयय चिय उववाऊ, जणिउं निगोय जीवाणं ॥ १ ॥ अर्थः– काची, तेमज अपक्व जे मांसनी पेशी रांधवामां आवे छे, ते रंधाया छतां पण तेमां निरंतर निगोदना जीव उत्पन्न थाय छे. ते कारणथी मांसजक्षण, नरक गमन करनार जीवोने पुरी खरची छे, तेथी उत्तम जीवे कदापि मांस जक्षण करवुं नहि.

हवे मांसजक्षण करवानो उपदेश जेउंए करेलो छे, तेउंनां नाम लखीए छीए. १ मांस खावाना लालचुउं. २ मर्यादारहितो, ३ नास्तिको, ४ अल्पबुद्धिमानो, ५ असत्य शास्त्र बनावनाराउं, ६ पशुना वैरीउं. मांसाहारी समान कोइपण निर्दय नथी. मांस आहारथी अधिक, नरक अग्निमाटे इंधन नथी. गंदकी खाइने सूअरो जे पोतानां शरीर पुष्ट करे छे ते सारां छे, परंतु जीवने मारीने मांस खानारा सारा नथी.

प्रश्नः– सर्वजीवोनुं मांस खावुं, एम सर्व कुशास्त्रोमां लखेलुं छे,परंतु मनुष्यनुं मांस खावुं,एम कोइपण शास्त्रमां लख्युं नथी, तेनुं शुं कारणछे ?

उत्तरः–पोताना शरीरना मांसनी रक्षावास्ते कोइपण कुशास्त्रिए मनुष्यनुं मांस खावुं लख्युं नथी; कारण के तेउं जाणता हता के, मनुष्यनुं मांस खावुं, एम शास्त्रमां लखशुं तो, मनुष्य कदी अमने पण मारीने खाइ जशे. तेथी लखेलुं नथी.

जेउं पुरुषना मांसमां तेमज पशुना मांसमां तफावत मानता नथी, तेउं समान कोइ धर्मी नथी; अने ते बाबतमां जेउं तफावत माने छे, अने मांस खाय छे, तेउं समान कोइ पापी नथी. वली मांसनी उत्पत्ति रुधिरथी थाय छे, तथा विष्टाना रसथी तेनी वृद्धि थाय छे, वली लोही जेमां जरेलुं रहे छे, अने कृमि जेमां उत्पन्न थाय छे, एवा मांसने बुद्धिमान् केम खाइ शके ? आश्चर्य तो एज छे के ब्राह्मण लोको धर्म तो शुचिमूल कहे छे. अने सात धातुथी जे मांस हाड बने छे, ते मांस हाडने मुखमां दांतथी चावे छे. हवे तेवाउंने कुतरा समान गणवा के शु-

चिधर्मवाला गणवा ? तेथी जे दुष्टोनी एवी समज छे के, अन्न तथा मांस, आ बंने एक सरखां छे, तेउनी बुद्धिमां, जीवित तथा मृत्यु आपनारां अमृत तेमज विष सरखांज छे.

वली जे जडबुद्धिमानोनुं एवुं मानवुं छे के, उदननी जेम, मांस प्राणीनुं अंग होवाथी खावा योग्य छे. आ तेउनी मान्यता वास्तविक नथी, कारण के जो तेम होय तो गायनुं मूत्र, तथा माता, पिता, स्त्री, पुत्री, ए सर्वेनुं मूत्र तेमज विष्टा, केम खाता पीता नथी, कारण के ते पण प्राणीना अंगथी उत्पन्न थयेल छे. वली पोतानी स्त्रीनी जेम, पोतानी माता, बेहेन दीकरीनी साथे केम गमन करता नथी ? स्त्रीत्व तेमज प्राणी अंगत्व सर्व स्थलें बराबर छे. वली जेम गायनुं दुध पीउ छो, अने मातानुं पय पान करो छो, तेम गायनुं रुधिर तेमज मातानुं रुधिर केम पिता नथी ? कारण के प्राणी अंग हेतु सर्वस्थलें तुल्य छे. ते हेतुथी जेउ अन्न तथा मांसने एक सरखां माने छे, तेउ महापापीउना सरदार छे.

वली शंखने पवित्र माने छे; परंतु पशुना हाडने कोइ पवित्र मानता नथी, ते कारणथी अन्न तेमज मांस, प्राणी अंग छे, तो पण अन्न भक्ष्य छे, अने मांस अभक्ष्य छे. एक पंचेंद्रिय जीवनो वध करीने मांस खावाथी जेम खानारने नरकगति प्राप्त थाय छे, तेम तेवी माठी गति अन्नखानारनी थती नथी; कारण के अन्न, मांस थइ शकतुं नथी. मांसनी तसीरोथी अन्ननी तसीरो ओर तरेहनी छे. मांस महाविकार करे छे, अन्न तेम करतुं नथी. इत्यादि विलक्षण स्वभाव छे, तेथी मांस खानारनी नरकगति जाणीने संत पुरुषो अन्नना भोजनथी तृप्ति माने छे, अने उत्तम पद प्राप्त करे छे. आ सर्व मांसनां दूषणो श्रीमद् हेमचंद्रसूरिकृत योगशास्त्रने अनुसारें लखेलां छे. वली वर्त्तमानमां बुद्धिमान् पाश्चिमात्य लोकोए मांस खावाथी चोवीश दुर्गुण प्रगट थाय छे, एम बतावेलुं छे, अने मदिराथी तो एटली खराबी थाय छे के जेनी गणत्री पण थइ शकती नथी. ते कारणथी मदिरा तेमज मांस आ बंने अभक्ष्यनो श्रावक त्याग करे. आ सातमुं अभक्ष्य कह्युं.

८ आठमुं अभक्ष्य माखण छे. जैनमतना शास्त्रानुसार छाशथी बहार काढेला माखणने ज्यारे अंतर्मुहूर्त्त अर्थात् बे घडी काल व्यतीत

थाय छे, त्यारे ते माखणमां सूक्ष्म जीवो तेज वर्णना उत्पन्न थइ जाय छे, ते कारणथी माखण त्यागवा योग्य छे. जैनलोकोए छाशथी माखण बहार काढीने, तत्काल अग्निसंयोगथी, बनावीने, गलीने, पछी खावुं जोइए; कारण के ए रीतिथी शास्त्रोक्त जीव तेमां उत्पन्न थता नथी तेनी हिंसा थती नथी, वली माखी, कंसारी, मछरादि जीवोना अवयव प्रमुख पण, घी गलवाथी निकली जाय छे; वली माखण कामनी पण वृद्धि करे छे, तेथी मनमां खोटा विकल्प उत्पन्न थाय छे; तेथी श्रावकें माखण न खावुं जोईए. वली एक जीवनो नाश करवाथी ज्यारे पाप थाय छे, त्यारे पूर्वोक्त रीतिथी माखण तो जीवोनुंज पिंड थई जाय छे. तेथी माखण खावाथी पापनी गणतरी केम थइ शके ?

प्रश्नः– माखणमां बे घडी पछी कोईपण जीव उत्पन्न थयेल अमे देखता नथी, तो केवीरीतें तमारुं कहेवुं सत्य मानी शकीए ?

उत्तरः– जेउ जैनमतना शास्त्रोने सत्य मानशे, तेउ तो शास्त्रकारना कथनने सत्यज मानशे, अने जेउ जैनना शास्त्रोने सत्य मानता नथी तेउ कदापि आ कथन सत्यमानो अथवा न मानो, परंतु अमे तो आ वातमां आगम प्रमाण विना बीजुं प्रमाण दई शकता नथी. तात्पर्य ए छे के वस्तु बे प्रकारें सिद्ध थाय छे; एक हेतुगम्य, बीजी आगमगम्य माखणद्विदलादिमां जे जीव उत्पन्न थाय छे, ते हेतुगम्य नथी, परंतु आगमगम्य छे. ते कारणथी जे आगम सर्वज्ञ जिन अर्हंत वीतरागें कथन करेल छे, ते सत्य होवाथी मानवुं जोईए. जो कोइ पुरुष, कोइपण शास्त्रने सत्य नहि मानतां, आंखथी देखेली वस्तुनेज मानशे, तो तेनाथी स्वर्ग नरकादि, जे अदृष्ट छे, ते पण मानी शकाशे नहि. वली परमेश्वर सातमा अथवा चौदमा असमान उपर छे, तथा जीव, पुण्य, पाप करवाथी स्वर्ग, नरकमां जाय छे, आ पण नहिज मानी शकाशे. इत्यादि अनेक वातो तेनाथी मानी शकाशे नहि. जो बीजी वातो, इंद्रियोने अगम्य, मानशे तो, आगम प्रमाण पण मानवुं पडशे, कारण के सर्व वस्तु अमारी दृष्टिमां आवि शकती नथी.

ए नवमुं अभक्ष्य मधु अर्थात् मध अनेक जीवोनो घात थवाथी उत्पन्न थाय छे. आ परलोकविरूद्ध दोष छे; अने मुखनी लालना जे-

वुं डुगंछा उत्पादक ठे, आ इहलोकविरुद्ध दोष ठे. ते कारणथी धर्मी श्रावकें मध न खावुं जोइए.

हवे मधखानारनुं पापीपणुं बतावीए ठीए. ॥ श्लोक ॥ जक्षयन् माक्षिकं क्षुद्रं, जंतुलक्षक्षयोद्भवं ॥ स्तोकजंतुनिहंतृभ्यः, सौनिकेभ्योऽतिरिच्यते ॥ १ ॥ अर्थः—अर्थात् नाना, हाडरहित लाखो जीवोनो ज्यारे नाश थायठे, त्यारे मध उत्पन्न थाय ठे, ज्यारे मध जक्षण करवामां आवे ठे, त्यारे थोडा पशु मारनारा कसाइथी पण अधिक पाप खानारने लागेठे, कारण के जक्षण करनारा पण घातक ठे, आ वात उपर सारी रीतें बतावेली ठे. वली लोक व्यवहारमां पण एवुं जोजन निंदनीय ठे, अने मध तो महा जूठ एवुं ठे. कारण के एकेक फुलनो मकरंद (रस) पीइने मांखीउं ते रसने वमन करे ठे. तेज मध ठे. ते कारणथी धर्मीपुरुषें जूठ न खावुं जोइए. आ वात लोकव्यवहारमां प्रसिद्ध ठे.

वली कोइ कहे के मध तो त्रिदोषने दूर करनार ठे, ते कारणथी औषधमां जक्षण करवाथी शुं दोष ठे ?

उत्तरः—अप्यौषधकृते जग्धं, मधु श्वभ्रनिबंधनं ॥ जक्षितः प्राणनाशाय कालकूटकणोपिहि ॥१॥ अर्थः—रसनी लंपटताथी मध खाय तेनी वात तो दूर रही, परंतु औषधवास्ते पण जे मध खाय, अने तेथी कदापि रोगनो नाशपण थाय तोपण, तेथी नरकगतिनुं कारण प्रगट थाय ठे, कारण के प्रमादना उदयथी, जीववानो अर्थी ठतां पण जे कोइ कालकूट विषनो एक कण पण खाशे तो, अवश्य तेना प्राण नाश पामशे.

प्रश्नः—मध तो खजूर, डाक्षादि रसनी जेम मीठुं ठे, सर्व इंद्रियोने सुखकारि ठे, तो तेने त्यागवाने शा वास्ते उपदेश करोठो ?

उत्तरः—मधमां मीठाश ठे, ए वात सत्य ठे, पण ते व्यवहारथी ठे. परमार्थथी तो नरकनी वेदनानो हेतु होवाथी मध अत्यंत कडवुं ठे.

हवे मधने पवित्र मानी जे मंदबुद्धिमानो देवस्नानमां उपयोगी माने ठे, तेउनुं उपहास्य शास्त्रकार करे ठे ॥ श्लोक ॥ मक्षिकामुखनिष्ठ्यूतं, जंतुघातोद्भवं मधु ॥ अहो पवित्रं मन्वाना, देवस्नाने प्रयुंजते ॥ १ ॥ अर्थः—मांखीउंना मुखनी जूठ तथा जीव घातमां हजारो बच्चां तेमज इंडां मारवाथी जे उत्पन्न थायठे, ते बच्चां तेमज इंडां व्याय ठे, त्यारे तेना

शरीरनुं पाणी (लोही) पण मधमां मली जाय छे, हवे जुउ के मध केवुं अपवित्र छे? अहो शब्द श्लोकमां उपहास्य माटे छे. कारण के जेवा ते देवता छे, तेवी पवित्र वस्तु पण तेमने चडाववामां आवे छे. आ उपहास्य छे. ॥ यथा ॥ करजाणां विवाहे तु, रासजास्तत्रगायकाः ॥ परस्परं प्रशंसन्ति, अहोरूपमहोध्वनिः ॥ आश्लोकमां अहो शब्द उपहास्य माटे छे. इति नवमुं अजक्ष्य.

१० पाणीनो बनावेलो बरफ अजक्ष्य छे. बरफ असंख्य अप्काय जीवोनुं पिंड छे. ते खावाथी चेतना मंद थायछे, तत्काल शरदी थायछे. कांइपण बलवृद्धि थती नथी. वीतराग अर्हतजगवन्तें निषेध करेल छे, ते कारणथी अजक्ष्य छे.

११ अफीणप्रमुख विषवस्तुउ अजक्ष्य छे. कारण के जेरी वस्तुउ खावाथी उदरमां कृमि, गंडोलादि जे जीव होय छे, ते मरीजायछे. विष खावाथी चेतना मुंजाय छे. वली जो खावानी टेव पडी जायछे तो, पछी छोडवुं मुश्केल थायछे. वखतसर न मले तो क्रोध उत्पन्न थाय छे. शरीर शिथिल थइ जायछे. वली जे व्यसनी थायछे, तेनाथी व्रत, नियम प्रायः अंगीकार थइ शकतां नथी. व्यसनिनो स्वजाव वारंवार अदलबदल थायछे. ज्यारे अमल खायछे, त्यारे एकरंग थायछे; ज्यारे अमल उतरी जायछे, त्यारे बीजो रंग थायछे. वली स्वतंत्रता तजी, पराधीन पणु अंगीकार करवुं पडेछे. अमलनो स्वाद पण बुरो छे. वली विषखानारा ज्यां लघुनीत, वडीनीत करेछे, त्यां त्रस, स्थावर जीवोनी हिंसा थायछे. सोमल, वछनाग, हरताल प्रमुख सर्व विषमां दाखल थायछे. तेउनो त्याग करवो श्रावकने उचित छे.

१२ करा, जे आकाशमांथी वरसादमां पडेछे. आ पण अजक्ष्य छे.

१३ सर्वजातनी काची माटी अजक्ष्य छे. काची, सचित्त माटी, नाना प्रकारनी असंख्य जीवात्मक छे. माटी खावाथी पेटमां बहु जीव उत्पन्न थायछे. पांडु रोग, आमरोग, वात, पित्त, पथरीप्रमुखरोग उत्पन्न थाय छे. माटी बहु खावाथी शरीरनो पीलो रंग थायछे. वली केटलीएक जातनी माटीमां देडकाप्रमुखजीवोनी योनि छे. ते कारणोथी अजक्ष्य छे.

१४ रात्रिजोजन अजक्ष्य छे. रात्रिजोजनमां प्रत्यक्षथी आलोकमां दूषणो छे, अने परलोकमां ते दुःखनुं हेतु छे; रात्रिए चारे आहार अज-

क्य छे. रात्रिमां जे जे रंगना पदार्थोनो आहार करवामां आवे छे, ते ते रंगना जीवो, जेनुं नाम तमस्काय छे, ते ते पदार्थोमां उत्पन्न थायछे. वली आश्रितजीवपण वहुज होयछे. तथा रात्रिमां उचित अनुचित वस्तुओनो भेल, संभेल थइ जायछे. वली रात्रिभोजनमां प्रसंग दोष वहुज लागेछे. जेम के, ज्यारे रात्रिए खावानुं बनशे, त्यारे रात्रिभोजन वास्ते, निरंतर रसोइपण करवी पडशे; रसोइ करतां, त्रस, स्थावर जीवोनो संहार थइ जशे; तेथी श्रावकना कुलाचारनो नाश थशे. वली सूक्ष्मत्रस जीव नजरमां पण आवता नथी, कदापि देखाय तो निध्वंस परिणाम थवाथी यत्ना पण रही शकती नथी. ज्यारे अग्नि वलेछे, त्यारे पासेनी भीतपर जे आश्रित जीवो रहेला होय, ते तापथी आकुल व्याकुल थइने, अग्निमां पडे छे. वली सर्पादि झेरी जानवर कदापि होय, तो तेना मुखथी जो भोजनमां लाल पडेतो, पोतानो तेमज खानारा सर्वेनो विनाश थायछे. वली पतंगिआ, गरोली, छपकली, मकडी, मछर, करोलीआ प्रमुख जीवो जे रात्रिए आसपास होयछे, ते अग्निना प्रकाशथी भोजनमां आवी पडे तो, भारे रोगोत्पत्ति थायछे. यदुक्तं योगशास्त्रे ॥ मेधां पिपीलिका हंति, यूका कुर्याज्जलोदरं ॥ कुरुते मक्षिका वान्तिं, कुष्टरोगं च कोलिका ॥ १ ॥ कंटकोदारुखंडं च, वितनोति गलव्यथां ॥ व्यंजनांतर्निपतित, स्तालु विध्यति वृश्चिकः ॥ विलग्नश्च गले वालः, स्वरभंगाय जायते ॥ इत्यादयोदृष्टदोषाः, सर्वेषां निशि भोजने ॥३॥ अर्थः—अन्नादिमांकीडी खावामां आवे तो बुद्धिनाश या मंद थायछे, जु खावामां आवी जाय तो जलोदर थायछे, माखी वमन करावे छे, अने मकडी कुष्टरोग उत्पन्न करेछे. कांटा अथवा लाकडानाकटका खावामां आवी जाय तो, गलामां व्याधि उत्पन्न करेछे, अने रांधवानुं भाजन उघाडतां जो विंछी पडी जायतो तालवुं विंधी नाखेछे, इत्यादि दृष्टदोप रात्रिभोजन करवामां सर्वे लोकोने देखवामां आवेछे. वली जेम रसोइ करतां षट्काय जीवोनी हिंसा रात्रिए करवी पडेछे, तेवीज रीतें रांधेलां भाजनो धोवाथी जलगत जीवोनो पण विनाश थायछे. वली जल पडवाथी भूमिपर कुंथु, कीडी प्रमुखनो पण नाश थायछे. ते कारणथी जीवरक्षाने इच्छनार प्राणी रात्रिभोजन करे नहि.

प्रश्नः—ज्यां अन्नपण रांधवुं न पडे, तेमज भाजन पण धोवां न पडे एम

वनावी राखेला लाडवा प्रमुख तथा तैयार खजुर, द्राक्षादि जे जक्ष्य छे. ते खावामां शुं दोषछे ?

उत्तरः—यथा ॥ नाप्रेक्ष्य सूक्ष्मजंतूनि, निश्यद्यात् प्राशुकान्यपि ॥ अप्युक्तं केवलज्ञानै, र्नादृत्तं यन्निशाशनं ॥ १ ॥ अर्थः—मोदक तथा फलादि अगर जो प्राशुक अर्थात् अचेतन पण छे, तो पण रात्रिए न खावा जोइए, कारण के कुंथवादि सूक्ष्मजंतुउ रात्रिए नजरे पडता नथी;वली केवलज्ञानी, जेने निरंतर सर्वकांइ देखाय छे, तेउ पण रात्रिए जोजन करता नथी. सूक्ष्मजंतुउनी रक्षा वास्ते, तेमज अशुद्ध व्यवहार दूर करवावास्ते, केवलज्ञानी रात्रिए आहार करता नथी. अगर जो दीवा प्रमुखना प्रकाशथी कीडीप्रमुख दृष्टिए पडेछे, तो पण मूलगुणनी विराधना टालवा वास्ते रात्रि जोजन अनाचरणीय छे.

हवे लौकिक मतवादीउनी सम्मतिपूर्वक रात्रिजोजननो निषेध करीए छीए. यथा ॥ धर्मविन्नैव जुंजीत, कदाचन दिनात्यये ॥ वाह्या अपि निशाजोज्यं, यदजोज्यं प्रचक्षते ॥ १ ॥ श्रुतधर्मनो ज्ञाता कदापि रात्रिजोजन करे नहि, कारण के जिनशासनथी बहारना मतवालाउ पण रात्रिजोजनने अजक्ष्य कहेछे. तेउना शास्त्रोमां कहेलुं छे के ॥ यथा ॥ त्रयीतेजोमयोजानु, रिति वेदविदोविडुः ॥ तत्करैः पूतमखिलं, शुजं कर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ अर्थः—ऋग्, यजुः, साम लक्षण त्रणे वेद, तेउनुं जे तेज ते सूर्य छे. "आदित्यः त्रयीतनुः" एवुं सूर्यनुं नाम छे. ए प्रमाणे वेदोने जाणनारा जाणे छे; ते सूर्यना विद्यमान अर्थात् किरणोथी पवित्र थतां सर्व शुजकामो अंगीकार करे; ज्यारे सूर्य न होय त्यारे शुज कर्मो करे नहि. ते शुजकर्मोनां नाम तेउए आ प्रमाणे लखेलां छे. ॥ यथा ॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धं देवतार्चनं ॥ दानं वा विहितं रात्रो, जोजनं च विशेषतः ॥१॥ अर्थः—आहुति अर्थात् अग्निमां घीप्रक्षेप करवुं,स्नान अर्थात् शरीरना अंगोने धोवां,श्राद्ध पितृकर्म, देवपूजा, दानदेवुं, अने जोजन तो विशेषें करी नज करवुं; आटला कामो रात्रिए नज करवां.

वली परमतमां बीजा बे श्लोक छे ॥ यथा ॥ देवैस्तु जुक्तं पूर्वाह्णे, मध्याह्ने ऋषिजिस्तथा ॥ अपराह्णे तु पितृजिः, सायाह्ने दैत्यदानवैः ॥ १ ॥ संध्यायां यक्षरक्षोजिः, सदा जुक्तं कुलोद्वह ॥ सर्ववेलां व्यतिक्रम्य,

रात्रौ भुक्तमभोजनं ॥ २ ॥ अर्थः—सवारमां देवताउं नोजन करे छे. मध्याह्ने रुषि नोजन करे छे. दिवसना पाछला जागमां पितरो जोजन करे छे, सायाह्ने अर्थात् विकाल वेलाए दैत्य दानवो नोजन करे छे. संध्यावेलाए यक्ष गुह्यक, राक्षसो नोजन करे छे.

सर्व देवताउंनो वखत उल्लंघन करीने रात्रिए जे खावुं ते अनक्ष्य छे. आ प्रमाणे पुराणोना श्लोकथी रात्रिनोजननो निषेध कर्यो.

हवे वैद्यक शास्त्र मुजब रात्रिनोजनना निषेधनो संवाद कहियें छियें. ॥ यथा ॥ आयुर्वेदेषु ॥ हन्नाभि पद्मसंकोच, श्चंडरोचिरपायतः ॥ अतो नक्तं न नोक्तव्यं, सूक्ष्मजीवादनादपि ॥ १ ॥ आ शरीरमां वे कमल छे. एक हृदय पद्म, ते अधोमुख छे, वीजुंनाभिपद्म, ऊर्ध्वमुख छे, आ वंन्ने कमलो सूर्य अस्त थवाथी रात्रिए संकोचाइ जाय छे, ते कारणथी रात्रिए न खावुं जोइयें. वली रात्रियें सूक्ष्म जीवो खावामां आववाथी अनेक तरेहना रोग उत्पन्न थाय छे. आ परपक्षनो संवाद कह्यो.

हवे विशेषरीतें स्वमतथी रात्रिनोजननो निषेध करियें छियें. ॥ यथा ॥ संसक्तजीवसंघातं, भुंजानानिशिनोजनं ॥ राक्षसेन्यो विशिष्यंते, मूढात्मानः कथं नु ते ॥ १ ॥ ज्यारे रात्रिए खावामां आवे छे, त्यारे जीवोनो समूह नोजनमां पडीजाय छे, एवा अंध समान रात्रिए खानाराउंने राक्षसोथी पण अधिक शा वास्ते न कहेवा जोइए? जिनधर्मथी रहित थइ, मनुष्य विरतिपणानो त्याग करे छे, या तो तेने अंगीकार करतो नथी, त्यारे तेने पुछ, शिंग विनानो पशुज समजवो. ॥ यडुक्तं ॥ वासरे च रजन्यांच, यः खादन्नेव तिष्ठति ॥ शृंगपुछपरिभ्रष्टः, स्पष्टं पशुरेव हि ॥ १ ॥

हवे रात्रिनोजननिवृत्ति वास्ते पुण्यवंत आत्माउंने विशेष वोधस्वरूप कहियें छियें. ॥यथा॥ अह्नोमुखेऽवसाने च, योद्वे द्वे घटिके त्यजेत्॥ निशानोजनदोषज्ञो,ऽश्नात्यसौ पुण्यनोजनं ॥ १ ॥ अर्थः—दिवसना उदय तेमज अस्त समयनी वे वे घडी वर्जवी जोइए, कारण के रात्रि निकट होय छे; तेज कारणथी सिद्धांतमां सर्व जघन्य प्रत्याख्यान मुहूर्त प्रमाण, नमस्कारसहित कथन करेल छे. रात्रिनोजनना दूषणोने जाणनार श्रावक वे घडी ज्यारे दिवस वाकी रहे, त्यारे नोजन करे, जो वे

घडीथी न्यून दिवस रहेतां जोजन करे तो रात्रिजोजनना प्रत्याख्याननो लाज तेने मलतो नथी; कदापि कोइ सख्स रात्रिए खातो न होय, परंतु जो तेणें रात्रिजोजननुं प्रत्याख्यान न कर्युं होय तो, तेने पण कांइ फल मलतुं नथी, कारण के तेणे प्रतिज्ञा करेली नथी. जेम शराफने त्यां रुपैआ जमे करावीयें, परंतु व्याजनो करार न करीए तो व्याज मलतुं नथी तेम ते कारणथी नियम अवश्य करवुं जोइए.

हवे रात्रिजोजन करनाराउने परलोकमां शुं फल मले छे ते कहीए छीये ॥ यथा ॥ उलूककाकमार्जर, गृध्रशंबरशूकराः ॥ अहिवृश्चिकगोधाश्च, जायन्ते रात्रिजोजनात् ॥ १ ॥ अर्थः–घुवड, काग, बिलाडी, गीध, हरणीया, सूअर, सर्प, विंछी, घो इत्यादि तिर्यंचयोनिमां रात्रिजोजन करनाराउ मरीने जायछे; अने जेउ रात्रिजोजन करता नथी, तेउने एक वर्षमां छ महीनाना तपनुं फल मलेछे. इति रात्रिजोजन अजक्ष्य संपूर्ण.

१५ बहु बीजवालां फलपण अजक्ष्य छे. जेमां गर्ज थोडो होय अने बीज बहु होय, एवां जे रींगणां, पटोल, खसखस, पंपोटा प्रमुख अजक्ष्य छे. तेमां जेटलां बीजछे, ते सर्व पर्याप्ता जीवछे. खावामां थोडां आवे, अने जीवघात बहुज थायछे. वली बहु बीजवालां फल खावाथीपित्त प्रमुख रोग थायछे; तथा जिनाज्ञा विरुद्धछे.

संधान अर्थात् अथाणां (आचार) त्रण दिवस उपरांतनां अजक्ष्यछे. अथाणां केरीनां, लींबुनां, पाननां, करमदानां, हलदरनां, गरमर प्रमुखनां बनाववामां आवेछे; कदापि घी, तेल के पाणीनां होय तोपण त्रण दिवस उपरांतनां अजक्ष्य छे. परंतु तफावत एटलो छे के जे फल पोतेज खाटां छे अथवा तो जेमने खाटाश साथे मेलवेलां होय, अर्थात् खाटी केरी साथे मेलव्यां होय तो ते अथाणां त्रण दिवस उपरांत अजक्ष्य छे, अने जेउमां खटाश नथी ते अथाणां एक रात्रि उपरांत अजक्ष्य छे. अथाणामां त्रस जीव उत्पन्न थायछे, अने बीजां प्रमुखतो मूलें अजक्ष्य छे, तो पछी तेना अथाणानुं तो शुंज कहेवु? अथाणामां चोथे दिवसे निश्चये बे इंड्रिय जीव उत्पन्न थायछे, अने जूठो हाथ लागी जायतो पंचेंड्रिय जीव उत्पन्न थायछे. बीजा मतवालाउनां शास्त्रोमां पण अथाणा नरकनां हेतु लखेलांछे. इतिअथाणा अजक्ष्य.

१६ द्विदल, जेनी बे दाल थइ जाय, तेमज घाणीमां पीलवाथी जेमांथी तेल निकले नहि, एवां सर्व धान्य द्विदल कहेवाय छे. द्विदलनी साथे जे गोरस अग्नि उपर चडेलुं नथी, एवुं काचुं दही, दुध के छाश मेलवी जमवुं नहि. गरम करेलां दही, दुध के छाश, ठंडां थइ गया पछी पण तेउनी साथे द्विदल मेलवी खावामां आवे तो दोष नथी.

१७ सर्व जातिनां रींगणां अभक्ष्यछे. एक तो तेमां बहुज बीजछे, तेना बीटमां सूक्ष्म त्रस जीव होयछे, वली ते कामनी वृद्धि करेछे, निद्रा अधिक लावेछे, कांइक बुद्धिनेपण जाडी करेछे, तेनुं नामपण सुंदर नथी, आकारपण अमनोज्ञ छे, कफ रोगने उत्तेजक छे, अधिक खावाथी चोथीयाताव, क्षयादि रोग थइ जायछे. वली सर्व जातिनां फल सुकांपण खावामां आवेछे, परंतु आ सुकववाथी पण खावायोग्य रहेतुं नथी. सुकव्यापछी तो एवुं थइ जायछे के जाणे मुंएला उंदरनी खाल. तेथी आ द्रव्य अशुद्ध छे, अने अभक्ष्य छे.

१९ तुछफल, जांबु, पीलु इत्यादि, तथा अत्यंत कोमल फल पण अभक्ष्यछे, कारण के एवी वस्तुउ बहु खावामां आवे तोपण तृप्ति थती नथी. खावामां थोडुं आवे छे, अने वधारे फेंकी देवुं पडे छे. फल खाधा पछी तेनी गोठली जे मुखमां चुसीने फेंकी देवामां आवेछे, तेमां असंख्य पंचेंद्रिय संमूर्छिम जीव उत्पन्न थायछे. वली जे मनुष्य बहुज तुछ फल खायछे; तेने तत्काल रोग उत्पन्न थायछे.

२० अजाण्युं फल, अर्थात् जे फलनुं नाम कोइना जाणवामां न होय, तथा जे कोइना खावामां न आव्युं होय, ते फल पण अभक्ष्य छे; कारण के तेवुं फल खावाथी कदाच झेरी होयतो मरण थइ जाय, अथवा तो दिवानापणुं थइ जाय.

२१ चलितरस, जे वस्तुनो काल पुरो थइ गयो होय, तेमज स्वाद बदलाइ गयो होय, (कारण के स्वाद बदलाइ जाय छे, त्यारे काल पण पुरो थइ जाय छे) तथा जेमांथी दुर्गंध निकलवी शरु थइ होय, तथा जेमां लाल उत्पन्न थइ होय, ते वस्तु चलितरस समजवी. आ पण अभक्ष्य छे. रोटली, शाक, खीचडी, वडां, नरमपुरी, शीरो, हलवो, इत्यादि रांधेली अनेक वस्तुउ जेमां पाणी आवेछे, तेउ एक रात उपरांत अभ-

क्ष्य छे; तथा दाल, ज्ञजीआं, वडां जेमां पाणी होय छे, ते चार पहोर उ-
परांत अजक्ष्य छे. द्विदल विनानी थेंस तथा चोखा जे गशमां रांध्या होय
ते आठ पहोर उपरांत अजक्ष्य छे. वली वर्षाकालमां सारी रीतें जे मी-
गाइ बनाववामां आवी होय, ते पंदर दिवस उपरांत अजक्ष्य छे, जो पं-
दर दिवस अगाउ बगडी जाय तो बगडतांज अजक्ष्य छे; एवी रीतें सर्वत्र
जाणी लेवुं. उनालामां मीगाइनी स्थिति विश दिवसनी छे. शियालामां
मीगाइनी स्थिति एक मासनी छे. उपरांत अजक्ष्य छे. दहीं सोल पहोर
उपरांत अजक्ष्य छे; गशनीपण तेटलीज स्थिति छे. चलितरसमां बे इं-
ड्रिय जीव उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी ते अजक्ष्य छे.

२२ बत्रीश अनंतकाय सर्व अजक्ष्य छे, कारण के सोइना अग्रजाग
उपर जेटलो अनंतकायनो कटको रहे, तेटला कटकामां अनंत जीव
छे, ते कारणथी अजक्ष्य छे. बत्रीश अनंतकायनां नाम. १ जूमिनी अं-
दर जेटला कंद उत्पन्न थाय छे, ते सर्व अनंत काय छे, २ सूरणकंद, ३
वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ५ आडु, ६ लीलो कचुरो, ७ वरीआलीकंद, ८
शतावरी वेल ओषधी छे, ९ कुंआर, १० थोहरकंद, ११ गलो, १२ लसण,
१३ वांसनां कारेलां, १४ गाजर, १५ लुणी, १६ लोढाकंद, १७ गरमर,
१८ कोमल पत्र अर्थात् नवा अंकुरा उगेछे ते, सर्व वनस्पति उगति व-
खतना अंकुर, सर्व प्रथम अनंतकाय होय छे, पछी ज्यारे वधे छे त्यारे,
प्रत्येक पण थइ जाय छे, अने अनंतकाय पण रहेछे, १९ खरसुआकंद,
२० थेगकंद, तथा थेगनामनीज्ञाजी, २१ लीली मोथ, २२ लवण वृक्षनी
गल, २३ खिलोडी, २४ अमृतवेल, २५ मूली, २६ जूमिरुहा ते जूमि-
फोडा छत्राकार थाय छे, २७ वथुलानी उगती ज्ञाजी, २८ वरुहार, २९
सुअरवल्ली, मोटीवेल जंगलमां थाय छे, ३० पलंकानी ज्ञाजी, ३१ कोमल
आंबली, ज्यां सुधी तेमां बी थतां नथी, त्यां सुधी अनंतकाय छे, ३२
आलुख, रतालुं, पिंडालुं, आ बत्रीश अनंतकायनां नाम सामान्य प्र-
कारे कह्यां छे, विशेष नाम तो अनेक छे; कारण के कोइ वनस्पति तो
पंचांग अनंतकाय छे, कोइनुं मूल अनंत काय छे, कोइनां पान, कोइनां
फूल, कोइनी गल, कोइनुं काष्ट, एम कोइनुं एक अंग, कोइनां बे अंग,

कोइनां त्रण अंग, कोइनां चार अंग, कोइनां पांच अंग, अनंतकाय छे. इति बत्रीश अनंतकाय अभक्ष्य.

हवे अनंतकाय जाणवावास्ते तेनां लक्षणो लखीए छीए. जेनां पांदडां, फूल, फल प्रमुखनी नसो गूढ होय, देखाती न होय, तथा जेनी संधि गुप्त होय, जे त्रोडवाथी बराबर त्रुटता होय तथा जेनुं मूल कापतां छतां पण जे उगे, जेनां पांदडां मोटां, दलदार, चीकणां होय, जेनां पांदडां तेमज फल बहुज कोमल होय, ते सर्व अनंतकाय जाणवां.

अभक्ष्योमां अफीण, भांग प्रमुख जेनुं बंधाण प्रथमथी थइ गयुं होय, ते राखवानी जयणा करे. रात्रिभोजनमां चोविहार, तिविहार, डुविहार, एक महिनामां आटला करुं एवो नियम करे; वली रोगादि प्रसंगें कोइ औषधीमां कोइ अभक्ष्य खावुं पडे तो, तेनी जयणा राखे. वली बत्रीश अनंतकाय तो सर्वथा अभक्ष्य छे, छतांपि रोगादि कारणे औषधिमां खावी पडे तो, तेनी जयणा राखे, तथा अजाणपणे कोइ वस्तुमां मेलवेली खावामां आवे तो, तेनी जयणा राखे, इति बावीश अभक्ष्य स्वरूप.

हवे चौद नियमनुं विस्तारथी स्वरूप लखीए छीए. ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणेह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ॥ वाहणसयण विलेवण, बंभदिसिन्हाणभत्तेसु ॥१॥ अर्थः—श्रावकें जावजीव पांच अणुव्रतमां इछा परिमाणमां, प्रथमनी अनेक तरेहनी कर्मपरिणतिना संभवथी, पोताना निर्वाह सामर्थ्यनो उदय अति डुस्तर विचारीने बहुज वस्तुउं खुल्ली राखी छे, तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारवावास्ते, संक्षेप करवावास्ते, चौद नियमनुं धारण निरंतर राखवुं जोइए, तेनुं स्वरूप लखीए छीए.

१ प्रथम सचित्त परिमाण. मुख्यवृत्तिएतो श्रावके सचित्तनो त्याग करवो जोइए, कारण के अचित्त वस्तु खावामां चार गुण छे. प्रथमतो अप्राशुक जलादिनुं पीवुं वर्जवाथी, सर्व सचित्त वस्तुउंनो त्याग थायछे. ज्यांसुधी वस्तु अचित्त न थाय, त्यांसुधी मुखमां प्रक्षेप करे नहि, बीजुं रसनेंद्रिय पर जय मेलवाय छे, कारण के केटलीएक वस्तुउं रांध्या विनानी स्वादवाली होयछे, तेउंनो त्याग थाय छे, त्रीजुं, अचित्त पीवाथी कामचेष्टा मंद थइ जाय छे, वली चित्तमां निरंतर एवो खटको रहेछे के रखे माराथी सचित्त वस्तु खावामां आवी जाय १ चोथुं, जलादिद्रव्य अचेतन

करवामां जीव हिंसा थइ, ते तो कर्मबंधनुं कारण बनी चूकी, परंतु क्षणे क्षणे जे असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थति हती, ते मटी गइ, ते हिंसा बंध पडी; छतां कोइ मूढमति पोतानी मनःकल्पनाथी एवो विचार करे के वस्तु अचित्त करवामां षट्कायना जीवोनी हिंसा थाय छे, अने सचित्त जलादि पीवामां तो एक जलादिनीज हिंसा थाय छे, ते कारणथी सचित्त त्यागवानी जरूर.नथी. एवा विचार करनारा मूर्खोए जिनमतनुं रहस्य जाणेलुंज नथी; कारण के सचित्तनो त्याग करवाथी, आत्मदमनता, औत्सुक्यनिवारणता, विषय, कषायनी मंदता थाय छे. वली जेमां स्वदया गुण बहुज छे, तेपण ते जाणता नथी. सचित्तनो त्याग करवामां अनेक लाभ छे ते अनुभवसिद्ध छे.

. २ बीजुं द्रव्यनियम. धातु, शिला, काष्ठ, माटीनुं पात्र प्रमुख तथा पोतानी आंगली प्रमुख विना, जे मुखमां खावामां आवे ते द्रव्य कहेवाय छे. " परिणामांतरापन्नं द्रव्यमुच्यते " तेमां खीचडी, मोदक, पापड, वडां प्रमुख बहु वस्तुओनां बने छे, तो पण परिणामांतरथी एकज; द्रव्य छे; तथा एकज घउंनी बनेली रोटली, पोली, पुरी, घुघरी, बाटी प्रमुख छे, तो पण दरेक भिन्न द्रव्य छे, कारण के नामांतर, स्वादांतर, रूपांतर, परिणामांतरथी द्रव्यांतर थइ जाय छे. वली कोइक आचार्य द्रव्यनुं स्वरूप बीजी रीतथी कहे छे. परंतु उपर बतावेलुं स्वरूप, बहु वृद्ध आचार्योने संमत छे. द्रव्यनुं परिमाण ए प्रमाणे करे के आजे हुं आटलां द्रव्य खाइश.

३ त्रीजुं विगय नियम–विगय दस प्रकारना छे. तेमां १ मध, २ माखण, ३ मांस, ४ मदिरा, आ चार तो महाविगय छे. तेओनो त्याग बावीश अभक्ष्यना स्वरूपमां बतावी आव्या छीए. बाकीनां छ विगयनां नाम. १ दुध, २ दही, ३ घी, ४ तेल, ५ गोल, ६ सर्व जातनां पक्वान्न. आठ विगयमांथी नित्य एक, बे, त्रण आदि विगयोनो त्याग करे, तेमज एकेक विगयना पांच पांच निवियाता पण त्याग करवा जोइए, परंतु निवियाता त्याग करवानो विचार मनमां न होय तो,.प्रत्याख्यान करवाने अवसरे मनमां धारे के मारे विगयनो त्याग छे. परंतु निवियातानो त्याग नथी.

४ चोथुं उपानह. जोडा, पगरखा, खडावा, मोजां, बूट प्रमुख पहेरवानो नियम करे; कारण के आ सर्वे जीवहिंसानां अधिकरण छे. तेमां श्रावकें जिनपूजादि कारणविना खडावा (पाटली) तो कदापि पेहेरवी नहि; कारण के तेनी नीचे जे जीव आवी जाय छे, ते जीवता रहेता नथी. वली गृहस्थ लोकोने पगरखां विना चालतुं नथी, ते कारणथी पगरखांनी मर्यादा करे; पछी बीजाना पगरखामां पग न मुके. कदापि भूल चूक थई जायतो आगार.

५ पांचमुं तंबोल. तंबोल ते चोथो स्वादिम आहार छे. तेनुं नियम करे.. तेमां पान, सोपारी, लवींग, एलायची, तज, जावंत्री, पीपर प्रमुख करियाणानी चीजो जेथी मुखशुद्धि थाय छे, परंतु उदर भरातुं नथी, तेनो समावेश थाय छे. तेनुं परिमाण वजनथी करे.

६ छठुं वस्त्र नियम छे. मनुष्यें पोताना पांचे अंगोपर पहेरवानां वस्त्रोनी संख्यानुं नियम करवुं के, आजना दिवसमां मारे आटलां वस्त्र पहेरवानां, तथा आटलां ओढवानां राखवां. रात्रिए पहेरवानां वस्त्र, तथा स्नान समयनां वस्त्र, तेमज समुच्चय वस्त्रनी संख्या करी ले. अजाणतां भेल, संभेल थाय तो आगार.

७ सातमुं फूलना भोगनुं नियम. मस्तकमां राखवानां, गलामां पहेरवानां, शय्यापर बिछाववानां, फूलनो तोल, तथा फूलोना तकीआ, फूलोना पंखा, फूलोना चंद्रवा, फूलोनी जाली प्रमुख जे जे वस्तुओ भोगववामां आवे तेनी, तथा फूलनी छडी, शहरा, कलगी, हार, गोटा तेमज जे फूल सुंघवामां आवे, तेना तोलनुं परिमाण करे.

८ आठमुं वाहननियम. रथ, गाडी, घोडा, पालखी, उंट, बलद, नाव, प्रमुख जेनी उपर बेसी ज्यां जवुं होय त्यां जइ शकाय, ते वाहन, सर्वेना त्रण प्रकार छे. १ तरतुं, २ फरतुं, ३ उडतुं. तेओनी संख्यानुं नियम करे.

९ नवमुं शयन नियम. शय्यानुं नियम करे, तेमां खाट, पाट, , बीजुं खुरशी, पालखी, सुखासनप्रमुख जेटलां राखवां होय. ते सर्वे मनमयां विना-

१० दशमुं विलेपननियम. भोगने अर्थे केशर, चंदन, चुआ, कामतेलादि जे पदार्थो अंगमर्दनादिकारणे उपयोगमां लेवा होय,ते के रखेम तथा तोल सहित मनमां धारी ले; अंगलूहणां पण एवंच अचेतन

खी ले; परंतु एटलो अपवाद के, देवपूजा, देवदर्शनादि प्रसंगें, तेमज धर्म करणी करतां हस्तमां धूपादि लेवां पडे, तथा मस्तके तिलक करवुं पडे, तथा नगवानने अर्चन करवा वखते चंदनादि विलेपन करवुं पडे, तेनुं श्रावकने नियम नथी.

११ अगीआरमुं ब्रह्मचर्यनियम. दिवसे तेमज रात्रिए आटली वखत स्वस्त्री साथे मैथुनसेवन करुं ते उपरांत मैथुनसेवननो त्याग छे. वली हास्य, विनोद, आलिंगन, चुंबनादि करवाना नांगा राखे.

१२ बारमुं दिशिनुं नियम. अमुक दिशिमां आज मारे अमुक कोस उपरांत जवुं नहि; तेमां आदेश, उपदेश, माणस मोकलवुं तथा पत्र व्यवहार, विगेरे सर्वनो समावेश थाय छें; जेवी रीतें पाली शके तेवुं नियम करे.

१३ तेरमुं स्नाननियम. आजे तेलादिमर्दनपूर्वक अथवा मर्दन विना आटली वखत स्नान करुं, तेनुं प्रमाण करे, तेमां देवपूजा वास्ते नियमथी अधिक स्नान करवुं पडे तो, व्रतनंग नहि.

१४ चौदमुं नात पाणीनुं नियम. चार आहारमांथी स्वादिमनुं नियम तो श्रावकें तंबोल नियममां करी लीधुं छे, तेथी बाकीना त्रण आहारनुं नियम करवानुं छे; तेमां प्रथम अशन, ते रोटली, नात, कचोरी, शीरा प्रमुखना वजननुं परिमाण करे, ते उपरांत त्यागे. पोताना घरमां बहु परिवार होय, तेउने वास्ते अशनादि कराववां पडे तेनी जयणा राखे. वली बीजाने घेर न्याति आदि जमतां होय तेवे प्रसंगे जमवा जवुं पडे, त्यां अधिक रसोइ बनावेली होय, तेनुं दूषण नियमधारीने नथी; कारण के नियमधारियें तो पोताना नोजनार्थे वापरवानुं परिमाण करेलुं छे, परंतु ज्ञाति वास्ते मर्यादा करेली नथी. नियममां अशनना तोलनुं परिमाण करे बीजुं पाणी पीवाना तोलनुं परिमाण करे. त्रीजुं स्वादिम, ते मिष्टान्न पदार्थ खावाना तोलनुं परिमाण करे. आ चौद नियम छे.

नाम. क नाववाला श्रावक सचित्तादि परिमाणमां ऽव्यनुं परिमाण जुआठ वि प नामथी राखे, तो बहुज निर्जरा थाय. इति चौदनियमस्वरूप.

मज एकेक ंदर कर्मादाननुं स्वरूप लखीए छीये. नीचेना पंदर व्यापार श्रावकें रंतु निविया ;रण के ते करवामां बहुज पापछे, कदापि पोतानी आजीविका न करवाने अवृ ोय तो करवाना व्यापारनुं परिमाणकरें. ते पंदर कर्मादाननां नाम. यातानो त्या

१ प्रथम इंगालकर्म. कोयला बनाववा, इंट बनाववी, जठीमां अनेक प्रकारनां ठाम बनाववां, ते सर्वे वेचवां; लुहारनां काम, सोनारनांकाम, बंगडीकारनां काम, कलालनां काम, जठीआरानां काम, हलवाइनांकाम, धातुगालक प्रमुख जे जे कामो अग्निथी थाय, तेसर्वे इंगाल कर्म छे; आ कामोमां पाप बहुज लागे छे, अने लाज बहु मलतो नथी; तेथी श्रावक आवां काम करे नहि.

२ बीजुं वनकर्म. छेयां, अणछेयां वन वेचवां, वाडी, बगीचानां फूल, फल, कंदमूल, घास, काष्ठ, वांसादि, तेमज तमाम लीली वनस्पति करवी, तथा वेचवी, आ सर्व वनकर्म छे.

३ त्रीजुं साडी कर्म. गाडी, रथ, दमणीओ, शीगराम, वहाण, आगबोट, हल, दंताल, चरखा, घाणी, चक्की,धुंसरा प्रमुख बनाववां तथा वेचवां आ सर्व शकटकर्म छे.

४ चोथुं जाडी कर्म. गाडां प्रमुख बलद ऊंट खच्चर गधेडा घोडा पाडा जंस प्रमुखथी वहेवरावी,बीजानां जाडां करी,आजीविका चलाववी ते जाडी कर्म.

५ पांचमुं फोडी कर्म. आजीविकावास्ते, कुवा, वाव, तलाव प्रमुख खोदवा, खोदाववां, हल चलाववां,पछर फोडवा, खाण खोदाववी इत्यादि स्फोटिक कर्म छे. आ पांचे कर्ममां बहुज जीवोनी हिंसा थायछे, तेथी पांचे कुकर्म कहेवाय छे. हवे पांच कुवाणिज्यनुं स्वरूप लखीये छीये.

१ प्रथम दंतकुवाणिज्य. हाथीना दांत, घुवडना नख, जीज, कलेजां, पक्षीउनां रोम, गायनां चमर, हरणनां सींग, गेंडांना सींग, रेशमना,कृमि इत्यादि जे त्रस जीवोनां अंगोपांग वेचवां, ते सर्वे दंतकुवाणिज्य छे. ज्यारे ते वस्तुउ लेवा वास्ते आगरमां जवुं पडे, त्यारे जिल्लादि लोक तत्काल हाथी गेंडा प्रमुख जीवोनी हिंसामां प्रवृत्त थाय छे. महाअनर्थरूप पापनां काम आचरे छे. त्यां जवाथी आपणा परिणाम पण मलिन थइ जायछे. कदाचित् तीव्रलोजग्रस्त थवाथी, जिल्लादि व्याधोने कहेवुं पडे के, अमारे मोटा जारे दांत प्रमुख जोइये छीये, त्यारे ते लोको तत्काल हाथी प्रमुखने मारी आपणने जोइती वस्तु लावी आपशे. तेथी श्रावकने वस्तुनी जरूर होय तेवे प्रसंगे आगरमां नहि जतां, ते बाबतना व्यापारी पा-

सेथी ते वस्तु ले. एक चमर लेवा जतां एक गाय मरे. ते कारणथी वि-
चारीने व्यापार करे.

२ बीजुं लाख कुवाणिज्य. लाख, धावडी, गली, साजीखार, मणसील,
हरताल प्रमुख सर्व लाख कुवाणिज्य छे. लाख, त्रस जीवोना समूहथीज
बने छे, पछी ज्यारे रंग काढे छे, अने तेने अन्नथी सडावे छे, त्यारे तेमां
त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय छे. महाडुर्गंधि रुधिर सरखो वर्ण देखाय छे.
धावडीमां त्रसजीव उपजें छे, कुंथवा पण बहुज थायछे, मदिरानुं अंगछे.
वली गली ज्यारे सडावे छे, त्यारे तेमां त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय छे. ग-
लीना कुंडमांपण त्रसजीव बहुज उत्पन्न थाय छे; गलीवालां वस्त्रो पहेरवा-
मां जू लीखादि त्रसजीव उत्पन्न थाय छे. हरताल, मणसीलने पीसती व-
खत यत्न न रखायतो मांखी प्रमुख अनेक जीव मरी जाय छे.

३ त्रीजुं रसकुवाणिज्य. मदिरा, मांस इत्यादि वस्तुउना व्यापार महापा-
परूप छे. वली डुध, दहीं, घी, तेल, गोल, खांड प्रमुख जे नरम वस्तुउछे,
तेउनो जे व्यापार ते रसकुवाणिज्य छे. आ व्यापारमां अनेक जीवो-
नो घात थाय छे.

४ चोथुं केशवाणिज्य. द्विपद जे मनुष्य दास, दासी प्रमुख, खरीद करी
वेचवां, तथा चौपद ते गाय, घोडा, बलद भेंस प्रमुख खरीद करी वेच-
वां; तथा पक्षीउमां तित्तर, मोर, पोपट, मेंना, प्रमुख, वेचवां. आ वाणि-
ज्यमां बहुज पाप छे.

५ पांचमुं विषवाणिज्य. सोमल, वछनाग, अफीण, मणसील, हरताल,
चरस, गांजो प्रमुख; तथा शस्त्र, ते धनुष्, तलवार, कटारी, छरी, बरछी,
फरसी, कुहाडी, कोदाली, बंडुक, बख्तर, ढाल, गोली, तोप प्रमुख जे सं-
ग्राममां उपयोगमां आवेछे, तथा हल, मुशल, उखल, दंताली, कर्वत, दा-
तरडी, हवाइ पटाका, शतघ्नी प्रमुख, आ सर्व हिंसानां अधिकरण छे; तेउनो
जे व्यापार ते विषवाणिज्य छे. हवे पांच सामान्य कर्म बतावीये छिये.

१ प्रथम यंत्रपीलन कर्म. तल, एरंडी, इक्षु आदि पीली, पीलावी, वे-
चवां, आ सर्व जीवहिंसाना निमित्तरूप कर्म छे.

२ बीजुं निर्लांछन कर्म. बलद, घोडानी खांसी करवी; घोडा, बलद, उं-
ट प्रमुखने दाग देवां; कोटवालपणुं, जेलखानाना जेलरनुं काम, मेहेसु-

व इजारानां काम, चोरीना माल लेवानां काम, इत्यादि निर्दयपणानां सर्वकाम निर्लांछन कर्ममां समाय छे.

३ त्रीजुं दावाग्निदान कर्म. केटलाएक मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जीव धर्म मानीने वनमां आग लगावी देछे; तेओ मनमां एम धारे छे के, नवुं घास उत्पन्न थशे, त्यारे गाय प्रमुख चरशे, जिल्लादि लोक सुखेथी रहेशे, अन्न निपजशे, इत्यादि विचार लावी वनदवनुं काम करे, परंतु आग लगाडवाथी लाखो जीवोनो नाश थइ जायछे, तेनो विचार तेओने आवे नहि. ते कारणथी आग न लगाववी जोइए.

४ चोथुं शोपणकर्म. वाव, तलाव, सरोवर, कुवा प्रमुखनुं पाणी पोताना खेतरादिमां एवी रीतें लाववुं के, तमाम पाणी वहार निकलतां लाखो जीव पाछल, जलरहित थइ तरफडी मरी जाय, आ शोपण कर्म छे. ते कारणथी सर्व पाणीशोपण न करवुं.

५ पांचमुं असतीपोपण. कर्म कुतूहलने वास्ते कुतरा, बिलाडा प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोपण करवुं. वली दुष्ट भार्या तथा दुराचारी पुत्रादिनुं मोहथी पोपण करवुं, तेओने सारां, नरसां नहि जाणतां, मनमां आवे तेवी रीतें, तेओने राजी राखवानो यत्न करवो, तथा वेचवावास्ते दुराचारी दास, दासीनुं पोपण करवुं, इत्यादि असतीपोपणकर्म कहेवाय छे. वली माछी, कसाइ, वाघरी, चमार, प्रमुख बहु हिंसक जीवोनी साथे व्यापार करवो, तेओने द्रव्यादिनी मदद आपवी, आ पण दुष्टजीवोनुं पोपण छे. कदापि अनुकंपायुक्त बुद्धिथी अनादि पशुओ पोपण करवामां आवे तो ते बाबतमां निपेध नथी. वली पोताना मोहोल्लामां कदाचित् तेवा जीवोनी खबर लेवी पडे, तेमज पोताना कुटुंबीओनुं पोपण करवुं पडे तेमां पूर्वोक्त दोप नथी; कारण के ते लोकनीति, राज्यनीतिनुं फरमान छे. आ पांच सामान्य कर्म. इति पंदर कर्मादान स्वरूप.

हवे आ भोगोपभोग व्रतना पांच अतिचारनुं स्वरूप लखीए छीए.

१ प्रथम सचित्त आहार अतिचार. मूल भांगे तो श्रावक सर्व सचित्तनो त्याग करे, जो तेम न थइ शके तो, तेनुं परिमाण करे. तेमां सर्व सचित्तना त्यागी, तथा सचित्तना परिमाणवाला, जो अनाभोगादिकथी सचित्त आहार करे, जेम के जल, उष्ण करतां त्रण उकाला (उनरा)

आवी जाय त्यारे शुद्ध प्राशुक थायछे, परंतु एक उकाला अथवा बे उकालानुं पाणी तो मिश्र उदक कहेवाय छे, ते पाणीने अचित्त जाणी पीये, तथा सचित्त वस्तुने अचित्त थवामां विलंब होय, छतांपि तेने अचित्त जाणी खाय तो प्रथम अतिचार लागे.

२ बीजुं सचित्त प्रतिबद्धाहार अतिचार. जेने सचित्त वस्तुनो नियम छे, ते तत्काल खेरनी गांठथी गुंदर उखेडीने खाय, तेमां गुंदर तो अचित्त छे, परंतु सचित्तनी साथे मलेलो हतो, तेथी दोष लागे छे. वली पाकी केरी चूसे, तथा बोर, रायणना समूहने खाय, अने मनमां एम जाणे के हुं तो अचित्त खाउछुं, सचित्त गोठली, ठलीआने फेंकी दइश, तेमां शुं दोष छे? एवा विचारथी खाय तो, बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अपक्वाहार अतिचार. चाल्या वगरनो लोट, तथा जेने अग्नि संस्कार न करवामां आव्यो होय, एवो काचो लोट फाके; कारण के श्री सिद्धांतमां कह्युं छे के, आटो दल्या पछी, चाल्या विना केटलाएक दिवस मिश्र रहेछे. श्रावण, भादरवा मासमां अणचाल्यो आटो पीस्यापछी, पांच दिवस मिश्र रहेछे, आसो, कारतक मासमां चार दिवस मिश्र रहे छे, मागशर, पोष मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे छे, माघ, फागण मासमां पांच पहोर मिश्र रहेछे, चैत्र, वैशाख मासमां चार पहोर मिश्र रहेछे, अने जेठ असाड मासमां त्रण पहोर मिश्र रहेछे, पछी अचित्त थइ जायछे, तेथी मिश्र खायतो, त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो डुपक्वाहार अतिचार, कांइक काचा तथा कांइक पाका, एवा सर्व जातिना ऊंला, ऊंबी, पोंक, जुवार, बाजरा, घउं प्रमुखना लीला पोंक बीजथी भरेला, ते अग्निसंस्कार करतां जेना केटलाएक दाणा अचित्त थाय, तथा केटलाएक दाणा सचित्त रहे, तेने अचित्त जाणी खाय तो, चोथो अतिचार लागे.

५ पांचमो तुच्छौपधि भक्षण अतिचार. तुछ अर्थात् असार जे खावाथी तृप्ति न थाय, परंतु खावामां पाप बहुज लागतुं होय, जेमके चणानां फूलखाय, बोरना ठलियामांथी गरभ काढी खाय, वाल, चणा, मग, चोलानी फली खाय, आ वस्तुउं खावामां प्रसंगदूषणो बहुज लागेछे; कारण

के केटलीएक वनस्पति अति कोमल अवस्थामां अनंतकायपण होयछे, ते खावाथी अनंतकायनो व्रतभंग थायछे. आ पांचमो अतिचार.

हवे आठमा अनर्थदंड विरमणव्रतनुं स्वरूप कहियें छियें. पोताना प्रयोजनवास्ते करवुं ते अर्थदंड कहेवाय छे. धन, धान्य क्षेत्रादि नवविध परिग्रहमां हानि वृद्धि थाय, त्यारे करे, कारण के धनवृद्धिने निमित्ते संसारी जीवने बहुपापनां कारणो सेववां पडेछे, तेवे प्रसंगे साचुं, जुतुं बोल्याविना रही शकातुं नथी. पापनां उपकरणां पण मेलववां पडेछे, ज्यारे कांइ मनसुबो करवो पडे, त्यारे विकल्परूप आर्त्तध्यान करवुं पडेछे, कारण के धनादि परिग्रह अजीविका अर्थे जरूरना छे, तेवास्ते धननी वृद्धि निमित्ते जे जे पाप करवामां आवेछे ते ते सर्व अर्थदंडछे. वली ज्यारे धननी हानि थायछे, त्यारे धननी हानि दूर करवा वास्ते अनेक विकल्प रूप पाप करवां पडेछे, तेपण अर्थदंडछे; कारण के धन, व्यवहार संसार सुखनुं मुख्य कारण छे, ते व्यवहार वास्ते जे जे पाप करवां पडे ते सर्व अर्थदंड छे. वली पोताना स्वजन कुटुंब परिवारादि वास्ते अवश्य जे जे पाप सेववां पडे, ते ते सर्व अर्थदंड छे; अने चोथुं, पांच प्रकारनी इंद्रियोना भोगवास्ते जे पाप करवां पडे ते पण अर्थदंड छे. पूर्वोक्त चार प्रयोजनविना जे पाप करवामां आवे ते अनर्थदंड जाणवां. तेना चार भेद छे. १ अपध्यान अनर्थदंड, २ पापोपदेश अनर्थदंड, ३ हिंसाप्रदान अनर्थदंड, ४ प्रमादाचरित अनर्थदंड. तेमां प्रथम जे अपध्यान अनर्थदंड छे, तेना वली बे भेदछे. १ आर्त्तध्यान; २ रौद्रध्यान; तेमां आर्त्तध्यानना चार भेद छे, ते पृथक् पृथक् कहियें छियें.

१ प्रथम इष्टवियोग आर्त्तध्यान. पोताने प्राप्त थयेला नवविध परिग्रहनो रखे वियोग थाय, एवुं चिंतवन निरंतर मनमां लाव्या करे, अने कदाचित् तेनो वियोग थाय तो मनमां घणोज खेद धारण निरंतर तेने वास्ते विलोपात कर्या करे, तेमज पोताना [illegible] छीए. पिता, पुत्र, पुत्री, भार्या भाइ, बेहेन, मित्रादि परदेश [illegible] सर्व सचितो मृत्यु पाम्यां होय ते प्रसंगे अत्यंत चिंता करे, [illegible] करे. तेमां सर्पयोगना दुःखथी आतमघात करवानो विचार करे, [illegible] अनाभोगादिकथी इत्यादि प्रसंगे, जे चिंतवन थाय ते आर्त्तध्यान [illegible] (उजरा)

वीजुं अनिष्ट संयोगार्त्तध्यान, इंद्रियसुखने विघ्नकारक अनिष्ट शब्दादिनो संयोग रखे मने थाय एवी मनमां चिंता करे, वली घरमां स्त्री खराब मली होय, पुत्र कपूत थयो होय, जाइ विश्वासघाती, वे दीलवालो होय, पिता क्रोधी होय, माता दुराचरणी होय, मित्र कृतघ्न मल्यो होय, एवा प्रसंगोमां निरंतर तेउनो उपाय करवानी चिंता थाय. वली स्त्री मनमां एवो विचार करे के, मारी शोक्य बहुज खराब छे, मारा पतिने रोज फुलावो खवरावे छे, रखे मने कोइ दिन पतिवियोग करावे? तेथी ते रांडनो कांइ उपाय करवो जोइए. वली सेवक मनमां एवो विचार करे के, मारा शेठनी पासे मारो अमुक दुश्मन अवश्य चाडीखाशे, अने मारादरज्जाने नरम करी नाखशे, अथवा तो शेठने जूठुं, साचुं कही मने नोकरीथी रद बातल करावशे, तो पछी हुं शुं करीश, तेथी ते दुश्मननो कांइक उपाय करवो जोइए. तेवे प्रसंगे, तेउना निग्रह वास्ते, यंत्र, मंत्र, कारण, वशीकरण प्रमुख करे. तेउ उपर जूठां कलंक मूके, बलिदान देवावास्ते त्रसजीवने मारे. आ सर्व पोताना शत्रुना निग्रह वास्ते करे. वली मूठ मारी तथा वीर नाखी मारवा चाहे, परंतु मूर्ख मनमां विचारे नहि, के जो तुं दीलमां साचो छो, तो तने शुं फिकर छे? वली ज्यां सुधी सामानुं पुण्य बलवान् छे, त्यांसुधी तुं मंत्र, यंत्रथी तेनुं कांइ पण बुरुं करवाने शक्तिमान् नथी. वली पोताना मनमां एवो कुविकल्प करे के मारा दुश्मनना कुलमां अमुक सख्स जबरदस्त उत्पन्न थयेल छे, रखे मने भविष्यमां हेरान करे? कोइ रीतें तेनी राज्य दरवारमां आवरु जाय, अथवा दंड थाय तो ठीक छे. वली जो तेनुं छिद्र मली जाय तो सरकारने अरज करी तेने देश निकाल करावुं. आ प्रमाणे मूर्ख, मूढ जीव संकल्प कर्या करे छे. वली गाममां चोरनो उपद्रव थ-
थाय, तथे, छे, तेथी ते दुष्टोने पकडी सख्तशिक्षा थाय, अथवा तो फां-
चोथो अतिचारो सारुं. वली अमुक सख्स बहुज फाटी गयो छे, मारी
५ पांचमो तुः छे, तेथी ते हरामजादानो कांइक बंदोवस्त करवो जो-
तृप्ति न थाय, परं ईर्ष्या निंदा न करे. आ प्रमाणे निरंतर असत्य वि-
लखाय, बोरना छलि नर्थदंड लागे छे. कारण के आपणा बुरा चिंतवनथी
लानी फली खाय, आ व नथी. जे कांइ सारुं नरसुं थाय छे, ते पुण्य, पापने

आधीन छे; तेम छतां मूढात्मा बिल्ली जेम फोकट मनोरथ करे छे. आ सर्व विना प्रयोजननां पाप छे, तेथी अनर्थदंम लागे छे.

३ त्रीजुं रोगनिदानार्त्तध्यान. मारा शरीरमां कोइ कोइ वखत रोग थाय छे, ते न थाय तो सारुं. एवो विचार लावी, लोकोने पुछे के अमुक रोगनो शुं उपाय हशे? कोइ कहे के अमुक अमुक जो खावामां आवे तो रोग थतो नथी. ते सांजली ते वस्तुउ अजक्ष्य होय तो पण खाइ जाय. वली ज्यारे शरीरमां रोग होय, त्यारे बहुज हाय हाय करे, आरंज करे, जोशीने पूछे के मारो आ रोग क्यारे जशे? वैद्यने वारंवार पूछे के गमे तेवी दवानो उपयोग करो, अने मारो रोग टालो. वली मनमां विचारे के रखे मारा उपर कोइए जाडु कर्युं होय! छेवटे रोग दूर करवा वास्ते, कुलविरुद्ध, धर्मविरुद्ध आचरण करे. रोग दूर करवा वास्ते औषध, जडी, बूटी, मंत्र, तंत्र शीखे; मनमां विचारे के कोइ वखत काम आवशे. आ त्रीजो जेद छे.

४ चोथुं अग्रशौच आर्त्तध्यान. जविष्य कालनी चिंता करे. जेम के आवता वर्षमां मोटां लग्न करीश, डुकान मांडीश, घर बंधावीश, जे देखी बीजाउ बहुज आश्चर्य पामशे. वली फलाणा खेतरनो, वाडी अथवा बगीचो करवो छे, जेथी बीजाउना बाग नकामा थई जशे, डुश्मनोनी छाति ते देखीने बलशे; वली अमुक वस्तुउनो में वेपार कर्यो छे, ते वस्तुउनो जाव चडी जाय तो मने बहुज सारो लाज मले, इत्यादि अनेक तरेहनी जविष्य कालनी चिंता करे. आ कुविकल्पो शेखचल्ली सरखा छे. इति आर्त्तध्यान स्वरूपसंक्षेप.

हवे रौद्रध्याननुं स्वरूप कहियें छियें. प्रथम हिंसानंद रौद्रध्यान. त्रस, स्थावर जीवोनी हिंसा करीने मनमां बहुज आनंद माने. बहु पाप युक्त कामो करी घर, डुकान, बाग, वाडी प्रमुख बनावे. जे देखी लोक प्रशंसा करे त्यारे मनमां बहुज हर्ष पामे. वली मनमां विचारे मारा जेवो अकलबाज कोण छे? आवी हिकमत कोण लडावि शके, अथवा बनाववा प्रसंगे जक्ष्याजक्ष्यनो लेश मात्र विचार नहि करे नहि, विरसवृद्धि वास्ते, माल मसाला बहुज नाखी बहुज ठेर क्रोधातुर रहे, वली जमणवार प्रसंगे तीव्र मानना उदयथी पोता

राववा वास्ते अनेक आरंजनां काम करे जेथी असंख्य जीवोनी हिंसा थइ जाय, छतांपि मनमां आनंद माने. पोताना, सगाना, मित्रना के कुटुंबीउंना दुश्मनोनुं भुंडुं करवा, तेउंने नुकशान करवा मनमां संकल्प कर्या करे. वली मनमां विचार करे के अमुक रीतें दुश्मनो पायमाल थाय तेउंनुं सत्यानाश जाय, तेउंनां घर बार नाश पामे तो सारुं, जेथी मारा अंतःकरणमां शांति थाय. वली राजाउंनी लडाइनी वातो सांजली तथा दुश्मन राजाउंना योद्धाउं नाश पामता जाणी मनमां बहुज प्रमोद माने. वली कोइ शिकारीए व्याघ्रादि पशुउंनो शिकार कर्यो होय ते सांजली मनमां खुशी थाय. वली एवा शिकारी तथा योद्धाउंनी बहुज प्रशंसा करे, जेथी तेउं विशेष हिंसानां काम करवा सारु उश्केराय. पोते दुश्मनने मारी अत्यंत राजी थाय, मूछ मरडे, अनेक तरेहथी पोतानी जयपताका फरके एवां हिंसानां काम करी आनंद माने. सारांश के बीजा जीवोनुं जेमां मातुं थाय तेवां तमाम कामोमां पोते आनंद माने, आ रौद्रध्याननो प्रथम पायो नरकगतिनो हेतु छे. प्राणीमात्रनुं सारुं नरसुं थवुं ते दरेकना कर्माधीन छे, छतांपि मूढ आत्मा अनंताकाल सुधी संसारमां परिभ्रमण करवासारु महाअनर्थकारक दुर्ध्यान ध्यातां लेशमात्र विचार करतो नथी.

२ बीजुं मृषानंद रौद्रध्यान. जुठुं बोली, छल कपट करी, मनमां बहुज खुशी थाय; वली मनमां विचारे के में एवी युक्तिसर वात बनावीने करी छे के कोइनी ताकात नथी के मारा प्रपंचने समजी शके. मतकबाजीपणुं एक जुदी शक्ति छे; आज काल मारी साथे प्रपंच बाजीमां कोइ फावी शके एम समजवुं नहि. वली बोलवुं, ते पण करामात छे. एवा घुंचना प्रसंगें, जो हुं न होत तो, शुं परिणाम आवत, तेनी अत्यारे शी वात? वली अनेक तरेहनां दगाबाजी, विश्वासघातनां कामो करी मनमां पोतानी चतु[illegible] माटे बहुज खुशी थाय; वली बीजाउं पोताने बहुज युक्तिसर बोल[illegible] तथा पोते नहि फसतां, बीजाउंने जालमां नाखवाने शक्तिमान् छे [illegible]ने छे, तथा एवां कामो करतां मारी वाहवाह बोलाय छे एम मा[illegible] आनंद पामे. वली राज्यदरबारमां तथा बीजाउं पासे दुश्मनो[illegible] निंदा प्रमुख करी मनमां हर्ष पामे. इत्यादि मृषानंद रौद्र छे.

३ त्रीजुं चौर्यानंद रौद्रध्यान. अनेक तरेहनां छल कपट, दगावाजी, विश्वास घात करी, जद्रक जीवोनी वहु मूल्यवाली वस्तु थोडी किंमत आपी लइ ले अने मनमां खुशी थाय. वली चोरी, धाडचोरी, रस्तानी लुट, जवराइथी कढाववुं इत्यादि कामो करी परधन मेलवी वहुज खुशी थाय;तेवा चोर लूटाराउने पासेथी मिलकत लेवामां, तेउने मदद करवामां वहुज हिंमतथी प्रवर्त्ते अने लाज मेलवी आनंद माने पोते वेपारी होय अने माल खरीद करवा घराक आव्यो होय, तेवे प्रसंगे विश्वास वेसाडी, नमुनो कांइक वतावी, माल कांइक तरेहनो आपे, अने पोते सोदो करवामां करामातवालो पोताने माने. जरवामां, तोलवामां ठेतुं आपवानी धानत राखे. चोपडामां, ठरावती वखते जाव जे वोल्या होय तेनाथी जास्ति लखे. रू प्रमुख माल वेचवामां मालमां जेल संजेल करी लेनारने ठेतरी, मनमां खुशी थाय. नोकरीनो धंधो करतो उपराणीलावी खाइ जाय, अने खुशी थाय; वली शेठने छल कपट करी ठेतरे, अने राजी करे, पठी मनमां विचारे के में केवी युक्ति लडावी, पैसा खाइ गयो,अने शेठने खुशी कर्या वली दगावाजीथी पैसा मेलवी मनमां एवुं अजिमान लावे के, मारा जेवी कमावानी शक्ति कोनामां ठे ? चोरी करी मनमां एवो खुशी थाय के, मारी चतुराइ तथा शक्तिने कोण समजी शके तेवुं ठे. जूठा दस्तावेज वनावी, लोको उपर न्यायनी अदालतोमां खोटा दावा करी, फतेह मेलवी, धन अन्यायथी उपार्जन करी,पोताने ऋद्धि, सिद्धि वालो देखी मनमां वहुज आनंद पामे. न्यायना अधिकारीउने में ठेतर्या, तेथी मारा जेवो कोण चालाक ठे, इत्यादि चौर्यानंद रौद्रध्यान अनेक तरेहथी मूढात्मा ध्यावे.

४ चोथुं संरक्षणानंद रौद्रध्यान. नवविध परिग्रह, धन,धान्यादि वहुज वधारी मनमां खुशी थाय, लोजनो थोज नथी एवो विचार निरंतर आलसुउ करे ठे, शक्तिहीन करे ठे, परंतु पोते मनमां विचारे के, परिग्रह एज जगत्मां सार ठे, पैसा विनाना मनुष्य पशु समान ठे, तेथी परिग्रहनी इछाने लेशमात्र नहि ठेठी करतां द्रव्य एकठुं करवानीज चिंताल्या करे. वली मनमां विचारे के द्रव्य मेलववुं तेमां तो ताकात ठे,परंतु मेलवेलुं साचवी राखवुं, तेमां तो वहुज ताकात जोइए ठीये. में करामात अजमावी न होत तो आ पैसा जलवावा मुश्केल हता. वली म-

नमां विचारे के धर्म, दान, पुण्य इत्यादिकामोमां पैसा खरचवा तेनुं फल मलेलुं कोणें प्रत्यक्ष दीठुं छे. धर्मधुताराउये अखाडा मांकी लोकोने लुटवाना रस्ता बांध्या छे जेउ तेउनी जालमां फसाइ जाय, तेउ अक्कलहीन, पैसा केम पेदा थाय छे, तेनी जेउने लेशमात्र खबर नथी, एवा लोकोज होय छे. पोते "चमडी त्रुटे पण दमडी न त्रुटे" एवीज मनोवृत्ति निरंतर राखी खुशी माने छे. लोकविरुद्ध, राज्यविरुद्ध, कुल तथा धर्मविरुद्ध कामो करी पैसा मेलवी, अने जालवी राखी, मनमां पोतानी वडाइ माने. वली मनमां विचारे के में एकलायेंज आ धन मेलव्युं छे. अने बीजाउतो मात्र खानारा छे, बोजारूप छे, हुं पैसा नहि साचवीश तो, आ सर्वेना भूंडा हाल थशे, वली पोताना नशीबनेज सारुं मानी अभिमान कर्या करे, कदाच कर्मना उदयें कोइ रकम घलाइ जाय तो मनमां बहुज पश्चात्ताप करे, तमाम लोकोना नलीआं गणे, रात दिवस धन नष्ट थवाथी धास्ती राखी सुखे सुवे नहि. घर, डुकान, पेटी, तेजुरीनां तालां, वारंवार टंटोल्या करे, सगा पुत्रनो पण लेशमात्र विश्वास करे नहि. बीजाउनेपण एवीज कुबुद्धि आपे. इत्यादि अनेक तरेहथी संरक्षणानुबंधी रौद्रध्यान ध्यावे. आर्त्त अने रौद्र बंने अपध्यान डुर्गतिनां हेतु छे, तेथी ते तजवा योग्यछे.

२ बीजुं पापकर्मोपदेश अनर्थदंड. बीजाउने कहे के तमारा पैसा शुं कामना छे, सारां घर बार बंधावो, गाडी करो, घोडा फेरवो, अनेक तरेहनां कारखानां करो, पैसा साथे आववाना नथी माटे वाडी, बगीचा करी मोज शोख माणो. वली तमारा घोडानी खांसी करावो, बलदने नाथ घलावो, घोडो अनाडी थइ गयो छे तेथी चाबक स्वारने सोंपो; वली तमारा खेतरमां सूड थइ गयेल छे, घांस पण उगतुं नथी, तेथी सूड कापी नखावो, एक वखत दव आपो. वली तमे गंदा छो माटे न्हावो, धुवो; तमारा घर सगवड वगरनां छे, माटे खाल कुवा, पायखानां करावो, इत्यादि अनेक तरेहना उपदेश जेथी पापस्थानको सेववां पडे तेवा करे.

३ त्रीजुं हिंस्रप्रदान अनर्थदंड. हिंसाकारी वस्तुउ जेम के गाडी, हल, मुशल, घंटी, अग्नि, तलवार, बंधुक, जालां, छरी, दातरडां, अफीण, वछनाग प्रमुख बीजाउने दाक्षिणता विना, माग्या विना आपवां ते हिंस्रप्रदान अनर्थदंड छे.

४ चोथुं प्रमादाचरण अनर्थदंड. कुतूहलथी गीत, नाटक तमासा, मेला प्रमुख जोवा, सांजलवा जाय. अहिंआं कुतूहलथी एम लखवानो हेतु ए ठे के, इंडियोना विषयो अतिशयपणे सेववानी इछामां प्रमाद आचरण ठे, परंतु जिनयात्रा, स्वामिजक्ति, अठाइमहोत्सव, रथयात्रा, तीर्थयात्रा प्रमुख जोवामां प्रमाद आचरण नथी; कारण के ते तो सम्यक्त्वनी पुष्टिनां साधनो ठे. वली कामशास्त्र तथा चोराशी आसनथी कामवृद्धि करवामां वारंवार मच्या रहेवुं, जूगार खेलवा, मदिरापान करवां, शिकार करवा, जलक्रीडा, स्नानादि करवां, जल उठालवां, वृक्षोने दोरडां बांधी हिंचकवां, हाथी घोडा, गेंडां, कुकडा प्रमुख जानवरोने अंदर अंदर लडाववां, पोताना शत्रूउना वंशजो उपर द्वेषजाव राखवा. वली जक्तकथा करवी, जेमके मांस फलाणा प्राणीनुं वहुज सारुं पुष्टिवालुं ठे, मदिरापानथी शरीरमां ताकत आवेठे, अमुक जातना लाडवा खाउ तो शरीर मजबुत थशे, डुध खुव पीउ जेथी वीर्यवृद्धि थशे, अने कामसेवन मनोज्ञ थशे. अमुकशाक, जाजी मसालादार अमुकरीतेंज स्वाद आपेठे, तेना जेवी लीजत बीजामां नथी. अमे पण एज रीतें खान पान करिए ठीए. वली स्त्रीकथा करे, जेम के फलाणा देशनी स्त्रीउ वहुज खुव सुरत ठे, अमुक शेहेरनी स्त्रीउ चतुर ठे, हाव, जाव, कटाक्ष, चुंबनादि प्रसंगे अमुक स्त्रीउ वहुज आनंद आपे ठे. वली स्त्रीउनी प्रशंसारूप श्लोक बोले जेम के "कर्णाटी सुरतोपचारकुशला, लाटी विदग्धे प्रिये" इत्यादि. वली स्त्रीउनां रूपवृद्धिकारक, स्तनकठिनत्वकारक, योनिसंकोचक उपाय बतावे तथा एवी अनेक तरेहनी मैथुनजावी कथा करे. वली देशकथा करे. जेम के पूर्वदेशमां अनेक तरेहनी वस्तुउ उत्पन्न थाय ठे, खांड, गोल, शाल, मद्यादि वहुज सारां थाय ठे, उत्तर देशना लोको वहुज शूरवीर होय ठे, लढाइ करवामां वहाडुर होय ठे, काठीयावाडना घोडा वहुज सारा होय ठे, चाकरी वहु वखत आपे ठे; वली जालना घंउ घणाज सारा, इत्यादि देश संबंधी अनेक तरेहनी चित्र, विचित्र कथा करवी. तथा राज्यकथा करवी. जेम के अमारा राज्यमां वहुज दोलत ठे, शूरवीर योद्धाउ ठे, अमुक राज्यमां लोको उपर वहुज जुलम थाय ठे, कर लेवाय ठे. अंग्रेजनुं राज्य वहुज सारुं ठे. रुशिया व-

हुज जुलमगार राजा ठे. फलाणां राज्यो वच्चे लडाइ उठशे, फलाणां ब-लवामां अमुक राजाए बहुज बहाडुरीनुं काम कर्युं, इत्यादि. वली रोग, अथवा थाक लाग्या शिवाय आखी रात सुइ रहेवुं ते पण प्रमाद आ-चरण ठे. पूर्वोक्त प्रमाद आचरण श्रावक वर्जे. तथा जिनमंदिरमां काम चेष्टा, हांसी, लडाइ, थुंकवुं, निद्रा लेवी, खोटी कथा करवी तथा आ-हार करवा, इत्यादि अनर्थदंड ठे. आ व्रतना पांच अतिचार ठे ते कहीए ठीए.

१ प्रथम कंदर्पचेष्टा. मुखविकार, भ्रूविकार, नेत्रविकार करवा, हा-थनी चेष्टा बतावबी, पगनी चेष्टा बतावबी, पगनी चेष्टा करी बीजाउंने हसाववा, कोइने क्रोध, थाय तेम करवुं, पोतानी लघुता थाय, तथा ध-र्मनी निंदा थाय तेवी कुचेष्टा करवी, आ प्रथम अतिचार.

२ बीजो मुखरिवचन अतिचार. भांड, कुतूहली लोकोनी जेम मुखरी पणुं करे, असंबद्ध वचन बोले, बीजाउंनां मर्म प्रगट करे, बीजाउं क-ष्टमां पडे तेवां वचन बोले; लघुता थाय, वेर वधे, लवाडीपणुं कहेवा-य, तथा चुगलखोर कहेवाय, एवां वचन बोले, वली लोकोमां लाज जाय एवुं वाचालपणुंकरे तो बीजो अतिचार.

३ त्रीजो भोगोपभोग अतिरिक्त अतिचार. स्नान, पान, भोजन, चं-दन, कुसुम, कस्तूरी, वस्त्र, आभरणादि पोताना शरीरना भोग उपरांत अधिक मेलववां; ते पण अनर्थदंड ठे. आ प्रसंगे वृद्ध आचार्योनो सं-प्रदाय बतावीए ठीए. तेल, आमलां, दहीं प्रमुख स्नानने वास्ते अधिक लइ जाय तो, तेनी लालचथी बीजा बहु लोको तेनी पाठल तलाव उपर स्नान वास्ते जशे, त्यां स्नान करवाथी पाणीना पूरा प्रमुख बहुज अप् कायना जीवोनी विराधना थशे, तेथी श्रावकें एवी रीतें स्नान करवा न जवुं जोइए. श्रावकनो स्नान करवानो विधि आ बाबतमां आ प्रमाणे ठे. प्रथम तो श्रावके घरमांज स्नान करवुं जोइए, कदापि पोताने घेर तेवी सगवड न होय तो, तेल, आमलां प्रमुख पोताने घेर वावरी, मेल काढी, तलावना कांठा उपर बेसी पाणी वासणमां गली स्नान करवुं, इत्यादि जीवरक्षा माटे कालजी राखे. वली फूलादिमां जीवनो संचार लागे तो तेने परिहरे, एम सर्व स्थलें उपयोगपूर्वक प्रवर्त्ते. न प्रवर्त्ते तो त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कौकुच्य अतिचार. जे बोलवाथी पोतानो तेमज बीजाउंना आत्मा काम, क्रोधरूप थइ जाय वली विरहनी वार्ताउं, शृंगार रसनी साखी, छंद, कवित्त, श्लोक विगेरे, तेमज परजराग काफी राग प्रमुख रागमां काममर्म कथन करे तो आ अतिचार लागे.

५ पांचमो संयुक्त अधिकरण अतिचार. जेमके उखलनी साथे मुशल, हलनी साथे फाला, गाडीनी साथे धोंसरुं, धनुष्नी साथे तीर, इत्यादि श्रावक राखे नहि, कारण के एवां पापनां अधिकरण साथे राखवाथी कोइ तरत लइ जाय, वली लेवा आवे त्यारे ना कही शकाय नहि, तेथी जो अलग अलग होयतो लेवा आवनारने सुखेथी जवाब आपी शकाय. आ पांचमो अतिचार. हवे नवमा सामायिक व्रतनुं स्वरूप लखीए छिये. पूर्वोक्त आठे व्रतोने पुष्टिकारक, तथा आत्मगुणोने वृद्धि कारक अने अविरतिकषायमां तादात्म्यभावथी मलेली अनादि अशुद्धता रूप विभाव परिणति, तेना अभ्यासने छोडाववावास्ते तथा आत्म अनुभव करवा वास्ते अने सहज आनंद स्वरूपरस प्रगट करवा वास्ते आ शिक्षाव्रत छे; अर्थात् शुरू अभ्यास रूप नवमुं सामायिक व्रत छे. बे घडी काल प्रमाण समतामां रहेवुं रागद्वेषरूप हेतुउंमां मध्यस्थ रहेवुं तेने पंडित पुरुषो सामायिक व्रत कहेछे. वली सम अर्थात् रागद्वेषरहित परिणाम, जे थवाथी ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप मोक्ष मार्ग तेनो "आय" अर्थात् लाभ, प्रशमसुखरूपतेनो इक कहेतां भाव ते सामायिक छे. श्रावक मन वचन कायानी खोटी चेष्टा तेमज आर्त्तध्यान रौद्रध्याननो त्याग करीने सामायिक करे. आवश्यकसूत्रमां लख्युं छे के, ज्यारे श्रावक सामायिक करेछे, त्यारे ते साधु समान थाय छे, ते कारणथी श्रावक सामायिकमां देवस्नात्र, पूजादि न करे, कारण के भाव पूजा वास्ते द्रव्य पूजा छे, अने भावस्तव सामायिकमां प्राप्त थइ जाय छे ते कारणथी द्रव्य स्तव जिनपूजा सामायिकमां श्रावक उचित नथी. सामायिक करनार श्रावक बत्रीश दूषणो तजीने सामायिक करे, ते बत्रीश दूषणोमां प्रथम कायानां बार दूषणो छे तेनुं स्वरूप लखीये छीये.

१ प्रथम आसनदोष. सामायिकमां पग उपर पग चढावीने बेसे तो दोष लागे, कारण के गुरुविनयमां लाघवता थाय छे, वली ते अभिमाननुं

आसन छे, तेथी एवी रीतें वेसे के विनयगुण रहे, उद्धताइ मालम न पडे तथा अयत्ना न थाय.

२ चलासन दोष. आसन स्थिर राखे, वारंवार उंचा नीचा थाय, चपलतायुक्त प्रवर्त्ते. मुख्य रीति तो ए छे के श्रावक एकज आसन उपर सामायिक पुरुं करे, अडिंगपण रहे कदाचित् रोग, निर्वलताना कारणथी एक आसन पर टकी न शकाय तो, अने फरवुं पडे तो उपयोग संयुक्त, यत्नापूर्वक चरवलाथी पूंजन प्रमार्जन करीने आसन फेरवे, पूर्वोक्त विधि न करे तो, आ दोष लागे.

३ चलदृष्टि दोष. सामायिक लीधा पछी, नासिका उपर दृष्टि राखे, मनमां शुद्ध उपयोग राखे, मौन पणें ध्यान करे. वली सामायिकमां जो शास्त्राभ्यास करवो होय तो, यत्नापूर्वक, मुख आगल मुहपति राखीने, दृष्टि पुस्तक उपर राखीने भणे अथवा श्रवण करे. वली जो कायोत्सर्ग करे तो, चार आंगल पाछलथी पग पहोला राखे, योगमुद्राथी उभा थइ, वंने वाहु प्रलंवित करे, दृष्टि नासिका उपर राखे, अथवा जमणा पगना अंगुठा उपर राखे; आ शुद्ध सामायिक करवानो विधि छे, ते विधिने तजीने चपलपणाथी चकित मृगनी जेम चारे दिशिए आंख फेरवे तो आ दोष छे.

४ सावद्य क्रिया दोष. क्रिया तो करे, परंतु तेमां कांइक सावद्य क्रिया करे, अथवा सावद्य क्रियानी संज्ञा करे तो आ दोष लागे.

५ आलंवन दोष. सामायिकमां भींत प्रमुखनुं आलंवन अर्थात् पुंठ लगावी वेसवुं. पूंज्या, प्रमार्ज्या विनानी भींतपर पुंठ लगाववाथी जीव वेठा होय तो तेनो घात थाय छे, तेमज निद्रापण आवे छे.

६ आकुंचन प्रसारण दोष. सामायिक लीधा पछी प्रयोजन विना हाथ, पग, संकोचे, लांवा करे. मोटा कारण विना सामायिकमां हलवुं नहि. जरूरी क़ाममां चरवलाथी पुंजी, प्रमार्जी हलवुं.

७ आलस दोष. अंगमां आलस मरडे, कमर वांकी करे, प्रमाद सेवे, प्रमाद सेवनथी वहुज अनादर व्रतमां थाय छे, कायामां अरति उत्पन्न थाय छे, ज्यारे उठे, त्यारे आलस मरडी, अशोभनीय रीतें उठे तो आ दोष लागे.

८ मोटन दोष. सामायिकमां आंगलीना टाचका फोडे, आ पण प्रमादनी प्रबलताथी थाय छे.

९ मलदोष. सामायिकमां खजवाले, वलूरे. मुख्यवृत्तिए तो सामायिकमां खरजने सहन करे, परंतु लाचार थइ जाय तो चरवला प्रमुखथी प्रमार्जी धीमे धीमे खजवाले एवी शैली छे.

१० विमासण दोष. सामायिकमां गलामां हाथ लगावी वेसे तो आ दोष लागे.

११ निद्रा दोष. सामायिकमां निद्रा लीधा करे.

१२ आछादन दोष. शीत प्रमुखनी प्रबलताथी पोतानां समस्त अंगोपांग वस्त्रथी ढांके. आ बार दोष कायासंबंधी छे.

हवे वचनना दश दोष लखीए छीए.

१ कुबोल दोष. सामायिकमां कुवचन, कर्कश वचन बोले.

२ सहसाकार दोष. सामायिकमां विचार कर्या विना बोले.

३ असत् आरोपण दोष. सामायिकमां कोइना उपर खोटुं तोमत आवे एवां वचन बोले. न कर्याने कर्युं कहे.

४ निरपेक्षवाक्य दोष. सामायिकमां शास्त्रनी अपेक्षा विना बोले पोताना छंदे बोले.

५ संक्षेपदोष. सामायिकमां सूत्र, पाठ संक्षेपथी करे, अक्षर पाठादि यथार्थ कहे नहि, तो पांचमो दोष लागे.

६ कलहदोष. साधर्मीओ साथे क्लेश करे; सामायिकमां कोइ मिथ्यात्वी गालो दे उपसर्ग करे, कुवचन बोले, तो पण तेनी साथे कलह नहि करवो जोइए, तो पछी पोताना साधर्मी भाइ साथे क्लेश तो केमज थइ शके? जो करे तो आ दोष लागे.

७ विकथा दोष. सामायिकमां राज्यकथा प्रमुख चारे विकथा करे तो आ दोष लागे.

८ हास्य दोष. सामायिकमां बीजानी हांसी, मश्करी करे.

९ अशुद्ध पाठ दोष. सामायिकना सूत्रपाठ शुद्ध बोले नहि, उतावलथी सामायिक लहे तथा पारे, त्यारे हीनाधिक उच्चारे यद्वा तद्वा सूत्रो पढे.

१० मुणमुण दोष. सामायिकमां प्रगट स्पष्ट अक्षरोच्चार न करे. बी-

जाउने एवुं लागे के जाणे मछर गणगणाट करे छे. पद, गाथाना ठेकाणा विना गडबड करी पाठ बोली जाय. आ वचनना दश दोष कह्या.

हवे मनना दश दोष लखीए छीए.

१ अविवेक दोष. सामायिकमां सर्व क्रिया करे, परंतु मनमां विवेक रहित पणें करे. उऋताइथी करे. मनमां विचारे के सामायिक करवाथी कोण तरी गयुं छे ? सामायिकमां शुं फल छे ? इत्यादि विकल्प करे.

२ यशोवांछा दोष. सामायिक करीने यशःकीर्त्तिनी इछा करे.

३ धनवांछा दोष. सामायिक करी तेनाथी धन मेलववानी वांछा राखे.

४ गर्व दोष. सामायिक करी मनमां अभिमान करे के हुंज खरो धर्मी छुं, मनेज सारीरीतें सामायिक करतां आवडे छे. बीजा मूर्ख लोकोने शुं गम पडे.

५ भय दोष. लोकोनी निंदाथी डरीने सामायिक करे. लोको कहेके जूओ भाइ ! श्रावकना कुलमां उत्पन्न थया छे, मोटा मानवंता गणाय छे, परंतु धर्म कर्मनुं तो नाम पण जाणता नथी, धर्म तो दूर रह्यो, परंतु निरंतर एक सामायिक पण करता नथी. एवी लोकोनी निंदाथी डरीने सामायिक करे.

६ निदान दोष. सामायिक करी निदान करे के आ सामायिकना फलथी मने धन, स्त्री, पुत्र, राज्य, इंद्र, चक्रवर्त्तिनी पदवी मले तो सारुं.

७ संशय दोष. कोण जाणे सामायिकनुं फल मलतुं हशे के नहि ? जेने तत्त्व प्रतीत न होय तेज एवो कुविकल्प करे.

८ कषाय दोष. सामायिकमां कषाय करे, क्रोधादिसंयुक्त मन छतां सामायिक करवा बेसी जाय. सामायिकमां कषायनो तो संपूर्ण अभाव जोइये.

९ अविनय दोष. विनयरहितपणे सामायिक करे.

१० अबहुमान दोष. सामायिक बहुमान. भक्तिभाव, उत्साहपूर्वक न करे. आ दश मनना दोष छे. उपर बताव्या प्रमाणे बत्रीश दूषण रहित सामायिक करे. सामायिक व्रतना पांच अतिचार टाले, तेनुं स्वरूप कहिये छिये.

१ काय दुःप्रणिधान अतिचार. शरीरना अवयव, हाथ, पग प्रमुख, पुंज्या, प्रमार्ज्याविना हलावे, भींते पीठ लगावी बेसे.

२ मनोदुःप्रणिधान अतिचार. मनमां कुव्यापार चिंतवन, क्रोध, लो-

न, ड्रोह, अभिमान, ईर्ष्या, व्यासंग, संभ्रमचित्त सहित सामायिक करे.

३ वचन दुःप्रणिधान अतिचार. सामायिकमां सावद्य वचन बोले, सूत्राक्षर हीनाधिक पढे. स्पष्ट उच्चार न करे.

४ अनवस्था दोष रूप अतिचार. सामायिक वखतसर न करे, जो करे तो पण वे मर्यादाथी, आदरविना, उतावलथी करे.

५ स्मृतिविहीन अतिचार. सामायिक करी ठे के नहि ? सामायिक पारी ठे के नहि ? लीधी ठे तो क्यारे लीधी ठे ? इत्यादि नूल करे इति नवम सामायिक व्रतस्वरूप.

हवे दशमा दिशावकाशिक व्रतनुं स्वरूप लखीए ठीए. ठठा व्रतमां जे दिशाउनुं परिमाण करेलुं होय, ते जावजीव सुधीनुं होय ठे, तेमां बहु क्षेत्र मर्यादा ठुटी राखी होय ठे, तेटलानी हररोज जरूर पडती नथी, ते कारणथी दिन दिन प्रत्ये न्यूनन्यून करे, जेमके आजरोज पांच कोश, वा दशकोश, वा पचीश कोश, वा बे माइल, वा नगरना दरवाजासुधि, वा अमुक बाग बगीचा सुधि मारे गमन करवानी ठुट ठे, उपरांत प्रतिबंध ठे, एवुं जे नियम ते दिशावकाशिक व्रत कहेवाय ठे. अर्थात् आ व्रत ठठाव्रतनुं संक्षेपव्रत ठे. उपलक्षणथी पांच अणुव्रतादिनो संक्षेप थोडा कालनो तेपण आ व्रतमां समाय ठे. आ व्रत चार मास, एक मास, वीश दिवस, पांच दिवस, अहोरात्र, एक दिवस, एक रात्रि, वा एक मुहूर्त्तमात्र कालसुधी पण लइ शकाय ठे. नियम एवी रीतें करे के अमुक नगरादिमां शरीरथी जाइश, ते उपरांत शरीरें जवानो निषेध ठे. आ व्रतवाला श्रावकने देश, परदेशना व्यापार होय तो करेला क्षेत्रपरिमाण उपरांत कायाथी ते जइ शके नहि, परंतु दूरदेशना कागल प्रमुख आवे ते वांचवानो, तेमज माणस मोकलवानो आगार ठे. एवुं नियम ते राखी शके. परदेशनी वात सांजलवानो आगार राखे, परंतु जेउने परदेशनो व्यापार न होय, ते कागल, चीठी प्रमुखपण वांचे नहि, तेमज आदमी पण मोकले नाहि. वली चित्तवृत्ति स्थिर होय, अने संकल्प विकल्प न थता होय तो परदेशनी वात पण श्रवण करे नहि. जो तेम रही शकातुं न होय तो आगार राखे, परंतु जाणीने पोताना व्रतने दोष लगावे नहि. आ दिशावकाशिक व्रत निरंतर सवारमां चौद नियमनी यादगिरीमां उ-

पयोगपूर्वक राखे, अने रात्रिए जुदुं राखे, आ व्रत जेवी रीतें गुरुमुखथी धारे तेवी रीतें पाले. आ व्रतना पांच अतिचार वर्जवा, ते कहीए छीए.

१ आणवण प्रयोग अतिचार. नियम करेला क्षेत्रथी बहारना क्षेत्रमां कोइ वस्तु होय, अने तेनी जरूर पडे, त्यारे विचारे के मारे तो नियम करेला क्षेत्रथी वहार जवानो निषेध छे, तेथी कोइ त्यां जतुं होय तेने कहे के अमुक वस्तु मारे वास्ते लेता आवजो. पछी विचारे के मारुं व्रत भंग थयुं नहि. अने वस्तु आवी गइ. आ प्रथम अतिचार.

२ पेसवण प्रयोग अतिचार. वीजा आदमीनी साथे पोताना नियम उपरांतना क्षेत्र बहार कोइ वस्तु मोकलवी ते.

३ सद्दाणुवाय अतिचार. नियमनी भूमिकाबहार कोइ आदमी जतो होय, तेनी पासे कांइ काम कराववुं होय, त्यारे तेने खोंखारो प्रमुख करी वोलावे, पछी कहे के अमुक वस्तु लेता आवजो. आ त्रीजो अतिचार छे.

४ रूपानुपाती अतिचार. पोताना नियम उपरांतना क्षेत्रें कोइ आदमी जतो होय, तेनी साथे कांइ काम होय, त्यारे हवेली अथवा दुकानना उपरना मजला उपर चडी, पोते तेनी दृष्टिए पडे तेम करे, पछी जनार आदमी पोतानी पासे आवे, एटले पोताना मतलबनी सर्व वात तेनी साथे करे तो आ अतिचार लागे.

५ पुद्गलाक्षेप अतिचार. पोताना नियम उपरांतनी भूमिकाए कोइ आदमी जतो होय, अने तेनी साथे कांइ काम होय, त्यारे तेना उपर कांकरो फेंके, जेथी ते पोतानी पासे आवे त्यारे, तेनी साथे सर्व मतलबनी वातचित करे तो आ अतिचार लागे. इतिदशमं.

हवे अगीआरमा पोषधोपवास व्रतनुं स्वरूप लखीए छीए. पोषध व्रतना चार भेद छे, तेमां प्रथम आहार पोषध छे, तेना पण वे भेद छे, एक देशथी, वीजो सर्वथी. देशथी तो त्रिविहार उपवास करीने वा आचाम्ल (आयंविल) करीने, वा त्रिविहार एकासणुं करीने पोषध करे, तेनो विधि लखीए छीए.

पोषध लीधा पहेलां पोताने घेर कही राखे के, हुं आजे पोषध उचरवानो छुं, तेमां आचाम्ल अथवा एकासणुं करवानो छुं, तेथी भोजनने अवसरे आहार करवा आवीश, अथवा तमे ते अवसरे पोषध शालामां

आहार लइ आवजो, एम यथायोग्य कथन करी पोषध करवा आवे, पोषध व्रत उचरे; वाद देववंदन कर्या पछी कटासणुं, चरवलो तथा मुहपत्ति, आ त्रण उपकरण साथे लइ पोताने घेर जवुं होय तो, चादर ओढी, साधुनी जेम उपयोगसंयुक्त मार्गमां यत्नापूर्वक चाली, जोजन स्थानकें जइ, प्रथम इरिया वहिया पडिक्कमे, गमनागमननी आलोचना करे, पछी कटासणा उपर वेसी, आहार करवानुं जाजन पडिलेही (प्रतिलेखी) वाद पोताने लेवा योग्य आहार लहे, साधुनी जेम रस गृद्धिरहित आहार करे, आहारने सारो अथवा बुरो कहे नहि, मुखथी बोल्या विना आहार करे, आहारनुं जूठ पडे नहि, आहार कर्या पछी उष्ण जलथी आहारनुं वासण धोइने पी जाय, वासण शुद्ध करी, सुकवी, उपयोगसंयुक्त पोषधशालामां आवे, मार्गमां जतां आवतां कोइनी साथे वात करे नहि, पोषधशालामां पूर्वेना स्थानपर आवी वेसे, इरिया वही पडिक्कमि, चैत्यवंदन करी, धर्मक्रियामां प्रवर्त्ते. जो पोतानो संबंधी अथवा सेवक पोषधशालामां आहार लइ आव्यो होय तो, पूर्वोक्त रीतिए आहार करी वासण पाछां आपी दे, पछी धर्म क्रियामां प्रवर्त्ते. आ देशथी पोषध कहेवाय छे; अने जो चारे आहारनां पच्चखाण करी पोषध करे तो सर्वथी कहेवाय छे. आ प्रथम जेद छे.

२ शरीरसत्कार पोषध. तेमां सर्वथा शरीरसत्कार पोषध ते शरीरनो सर्वथा सत्कार. स्नान, धोवन, धावन, तैलमर्दन, वस्त्राजरणादि शृंगार प्रमुख कांइ पण शुश्रूषा करे नहि, साधुनी जेम अपरिकर्मित शरीर राखे; अने जो पोषधमां हाथ, पग प्रमुखनी शुश्रुषा करवी एवो आगार राखे तो, ते देश शरीर सत्कार पोषध कहेवाय छे.

३ अब्रह्मचर्य पोषध. त्रिकरण शुद्धिए ब्रह्मचर्य व्रत पालवुं ते सर्वथा ब्रह्मचर्य पोषध छे; अने मन, वचन, दृष्टि प्रमुखनो आगार राखवो, अथवा परिमाण राखवुं, ते देशथी ब्रह्मचर्य पोषध कहेवाय छे.

४ सर्वथा सावद्यव्यापारनो त्याग, ते सर्वथी अव्यापार पोषध छे, अने एकादि व्यापारनो आगार राखवो ते देशथी अव्यापार पोषध छे,

ए प्रमाणे चारे प्रकारना पोषधना वे वे जेद छे. पूर्वकालमां ज्यारे आगम व्यवहारी गुरु विचरता हता, अने श्रावक पण शुद्ध उपयोग

वाला हता, त्यारे जे जे प्रतिज्ञाउं लेता हता, ते ते सर्व अखंडित, तेवीज रीतें पालता हता, भूलता नहि, तेम न्यूनाधिक पण करता नहि; अने गुरु पण अतिशय ज्ञानना प्रभावथी योग्यता जाणीने देश वा सर्व पोपधनो आदेश आपता हता; तथा श्रावक पण कदाचित् स्मृतिभंग थता हता, तो पण तत्काल प्रायश्चित्त लइ लेता हता. आ कालमां तो एवा उपयोगवाला जीवज नथी. डुषम कालना प्रभावथी जड बुद्धि जीव बहुज छे. ते कारणथी पूर्वाचार्योए उपकारने अर्थे आहार पोपध तो बंने करवाने राख्यां, अने बाकीना त्रणे पोपध जितव्यवहार ग्रंथने अनुसारें निषेध करी दीधा छे. आ प्रवृत्ति वर्त्तमान संघमां प्रचलित छे. पोपध तो श्रावकें अवश्य करवा जोइए; कारण के कर्मरूप भावरोग वास्ते ते परम औषधि छे. तेथी ज्यारे पर्वनो दिवस आवे, त्यारे अवश्य पोपध करवो जोइए. तेना पांच अतिचार वर्जवा, ते कहीए छीए.

१ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिद्या संथारक अतिचार. जे स्थानमां पोपध संस्थारक (संथारो) कर्यो होय, ते भूमिका तथा संथारानी पडिलेहणा न करे, अर्थात् संथारांनी जगा सारी रीतें निघा करीने नेत्रथी जोवे नहि, कदापि जोवे तो पण प्रमादने वश थइ कांइक देखी, कांइक न देखी एम करे.

२ अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिद्या संथारक अतिचार. संथाराने रजोहरणादिथी पूंजे नहि, कदापि पूंजे तो पण यथार्थ न पूंजे, गडबड करी दे, जीवरक्षा साचवे नहि.

३ अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि अतिचार. लघुशंका, वडीशंका परठववानी भूमिका नेत्रथी अवलोकन न करे; अवलोकन करे तोपण जेम तेम करी काम चलावे, जीवयत्ना विना करे, परिठवे.

४ अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय उच्चार पासवण भूमि अतिचार. ज्यां मूत्र, विष्ठा करे, त्यां भूमिकाने प्रथम पूंज्याविना मल, मूत्र करे; कदाच पूंजे तोपण यद्वा तद्वा करे, परंतु यत्नापूर्वक न पूंजे.

५ पोसह विहि विवरीए अतिचार. पोपधमां क्षुधा लागे, त्यारे पारणानी चिंता करे, जेम के प्रभातें अमुक वस्तुउं करावीने आहार करीश वली अमुक काम करवा सारु अमुक स्थानकें जवुं पडशे. अमुकनी पासे

उघराणी छे, ते तगादो कर्या विना आपशे नहि; वली शरीर थाकी गयुं छे तेथी प्रजातमां तेल मर्दन करावीश, गरम पाणीथी स्नान करीश, अमुक पोशाक पहेरीश, स्त्रीनी साथे जोगविलास करीश, इत्यादि सावद्य चिंतवन करे. संध्याए पोषध मंडल शोधन करे नहि, आखी रात सुइ रहे, वा विकथा करे. पोपधनां अढार दूषणो वर्जे नहि.

ते अढार दूषणो आ प्रमाणे. पोसहमां व्रती विनाना श्रावकनुं लावेलुं पाणी पीये, २ पोषध वास्ते सरस आहार करे, ३ पोपधने आगले दिवसे अनेक तरेहनी रसवती मेलवी आहार करे, ४ पोषध निमित्तें, अथवा पोपधने आगले दिवसे विजूषा करे, ५ पोषधवास्ते वस्त्र धोवरावे, ६ पोषधवास्ते आजरण घडावी पहेरे, स्त्रीपण नथ, कंकणादि सोहागनां चिन्ह शिवाय नवां घरेणां घडावी पहेरे, ७ पोषध वास्ते वस्त्र रंगावी पहेरे, ८ पोषधमां शरीरनो मेल उतारे, ९ पोषधमां काल विना निद्रा लहे, १० पोषधमां स्त्री कथा करे, स्त्रीने सारी, बुरी कहे, ११ पोषधमां जक्तकथा करे, आहारने सारो, नरसो कहे, १२ पोषधमां राज्यकथा करे, युद्धनी वार्त्ता करे, १३ पोषधमां देशकथा करे, देशने सारो, नरसो कहे, १४ लघु शंका जूमि पूंज्या विना करे. १५ वीजानी निंदा करे, १६ स्त्री, माता, पिता, पुत्र, जाइ, वहेन साथे वार्त्तालाप करे, १७ चोरनी कथा करे, १८ स्त्रीनां अंगोपांग स्तन, जंघादि निहाले. आ अढार दूषणो वर्जे तो शुद्ध पोषध जाणवो. इति एकादश व्रतस्वरूपं.

हवे वारमा अतिथि संविजाग व्रतनुं स्वरूप लखीए छियें. जेणें लौकिक वर्षोत्सवादि तिथियोनो त्याग करेलो होय ते अतिथि कहेवाय छे, जेम परोणो (मेमान) तिथि विना आवे छे, अर्थात् अमुक तिथियेंज आवे एवो जेम नियम नथी, तेम जे साधु होय छे ते अणचिंतव्याज आवे छे, तेथी ते अतिथि जाणवा. एवा मधुकर वृत्तिवालाथी जो विजाग करे. अर्थात् शुद्ध व्यवहारन्यायोपार्जित धनथी, वस्तुउं लावी, पोताना उदर पूरणार्थे जे रसोइ करी छे, तेमांथी उत्तम कुलाचारपूर्वक पूर्व कर्म पश्चात्कर्मादिदोषरहित, शुद्ध निर्दोष आहार, जक्तिपूर्वक साधुने वहोरावे (आपे) ते अतिथि संविजाग व्रत कहेवाय छे. प्रथम दान देनारमां जो पांच गुण होय तो ते दातार शुद्ध होय छे, ते पांच गुण लखिये छिये.

१ जैनमार्गी दातारने, शुद्ध पात्रनो योग प्राप्त थवाथी, अर्थात् पोताना घरमां मुनिराजनां दर्शन मात्र थवाथी अंतरंगमां बहुज आनंद पामे, जेम पोतानो अत्यंत प्यारो, हितकारी मित्र बहु वखतथी दूर देशांतर गयो होय, जेनी कोइ वखत विस्मृति थइ न होय, अने जेने मलवाने निरंतर अंतःकरणमां आतुरता रहेती होय; एवा परम वल्लभ मित्रने अकस्मात् मलवाथी जेम आनंदनां आंसु आवी जाय, तेवीज रीतें मुनिराजने पोताने घेर पधारेला जोइ आनंदनां आंसु लावे, मनमां विचारे के आज मारुं परम भाग्य छे, आवा मुनिराज मारे घेर पधार्या. वली हुं केवो छुं? अनादिकालथी भूल भ्रमित, द्रव्य संबल रहित, दारिद्र अंधभावपीडित, ज्ञानलोचनरहित, अपार संसार चक्रमां भटकनार एवा मने, अत्यंत अकथनीय दुःखसंयुक्त देखीने, मारा उपर परम दयादृष्टिपूर्वक, प्रथम ज्ञानांजन शलाकाथी मारां ज्ञानरूपनेत्र उघाडी दीधां, वली त्रण तत्व सेवारूप व्यापार मने शिखव्यो, तथा रत्नत्रयीरूप पुंजी (राशि) मने आपी मारुं अनादि कालनुं दारिद्र्य दूर कर्युं, मने उत्तमपुरुषोनी गणतरीमां लावी मुक्यो, एवा गुरु मुनिराज निःस्वार्थे परोपकारी मारा घर आंगणामां पधार्या एवा प्रशस्त राग भावना उल्लासथी आनंदनां आंसु लावे, एवी पुष्ट भावना भावे आ दातारनो प्रथम गुण छे.

२ जेम संसारमां जीवने अत्यंत इष्ट वस्तुना संयोगथी रोमावलि विकस्वर थाय छे, तेम मुनिराजने देखी, अति भक्तिना प्रभावथी रोमावलि विकस्वर थाय, अने अंतःकरणमां हर्ष समाय नहि. आ बीजो गुण छे.

३ मुनिराजने देखी बहुमान एवी रीतें करे, जेम कोइ गृहस्थने घेर, राजा पधार्या होय, अने ते राजानुं बहुमान, जेम ते गृहस्थ करे, एवा विचारथी के आजे मारा भाग्यनो उदय थयो के राज्यना स्वामि, राजाधिराज मारे घेर पधार्या, माटे उत्तम प्रकारनां नजराणां आ वखते करवां ते मने उचित छे, कारण के राजानुं पधारवुं वारंवार थतुं नथी, एम निश्चय करी जेम उत्तम वस्तुओ भेट करे, तेवी रीतें श्रावक पण मुनिराजनुं बहुमान करे; मनमां विचारे के आवा निःस्पृहीयोमां शिरोमणी, जगद्‌बंधु, जगत् हितकारी, जगत् वत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, करुणासा-

गर, संसारजलधि उद्धरण, परोपकार करणीमां चतुर, क्रोधादि कषाय निवारक, तरण तारण, एवा मुनिराज मारे घेर पधार्या, तेथी आजे मारुं अहो जाग्य ठे! एवुं जाणी संभ्रमसंयुक्त सन्मुख जाय, त्रिकरणशुद्ध परिणामथी विनति करे के हे स्वामि! दीन दयाल पधारो! मारुं गृहांगण पवित्र करो! एम अति सन्मानपूर्वक घरमां पधरावे; मनमां विचारे के आजे मारो पुण्योदय थयो, जे साधु आहार पाणीनो अनुग्रह करे ठे. कारण के साधुने आहार लेवामां बहुज विधि ठे, साधु शुद्ध जात पाणी जाणे तोज लहे, ते कारणथी रखे माराथी कांइ दोष लागी जाय, एवो विचार करी, त्रिकरण शुद्ध, बहुमानपूर्वक, उपयोगसंयुक्त, विधिपूर्वक आहार लावे, लावीने मधुरस्वरथी विनति करे के हे स्वामि! आ शुद्ध आहार ठे, तेथी सेवक उपर परम कृपादृष्टि करी पात्र पसारी मारो निस्तार करो; एम विनति करतां थकां आहार वहोरावे. मुनिपण ते आहारने योग्य जाणीने लइ ले. श्रावकपण दान देवा योग्य जे जे वस्तुउं होय, ते सर्वनी निमंत्रणा करे, ए प्रमाणे विधिपूर्वक दान दइ हाथ जोडी, पृथ्वी उपर मस्तक लगावी, नमस्कार करे; पठी मिष्टवचनोथी विनति करे के हे कृपानिधान! सेवक उपर मोटी कृपा करी, आजे मारुं घर पवित्र थयुं. पूरा पुण्योदयविना मुनिराजनो योग क्यांथी मले? वली हे स्वामि! कृपा करी अशन, पान, खादिम, स्वादिम, औषध, वस्त्र, पात्र, शय्या, संस्तारकादिनुं प्रयोजन होय तो अवश्य सेवक उपर अनुग्रह करी पधारशो, आप तो मुनिराज गुणवान् बेपरवाह ठो, आपने कोइ वस्तुनी कमी नथी, कोइनी साथे प्रतिबंध नथी, आप पवननी जेम अप्रतिबद्ध ठो, तोपण मारा उपर जरुर फरी उपकार करशो, एम कहेतां कहेतां पोताना आंगणानी सीमा सुधी पहोंचाडे. आ त्रीजो गुण ठे.

४ मुनिराजने वलावी, वंदना करी, घेर आवी, जोजन करवा बेसे, परंतु मनमां आनंदना उजरा आव्या करे, विचारे के आजे मारुं अहो जाग्य थयुं! आज कोइ उत्तम वात थशे; कारण के आजे निःस्पृही, सहज उदासी, स्वसुखविलासी मुनिराजने विनति करी आहार प्रतिलाभ्यो, अने आहार वहोरावता वचमां कांइ विघ्न आव्युं नहि. आजे इ-

तकृत्य थयो; वली आवा मुनिराजनो योग क्यारे मले ? एवी अनुमोदना वारंवार करे, आ चोथो गुण छे.

५ जेम कोइ मंद भाग्यवान् व्यापार करतां थोडुं थोडुं कमाय, तेने कोइ दिवस कोइ सोदामां लाख रुपैयानी प्राप्ति थइ जाय, त्यारे जेवो ते आनंदित थाय, अने फरी तेज व्यापारनी जेवी चाहना राखे, तेनाथी पण अधिक, श्रावक साधुने दान देवानी चाहना राखे. आ पांचमो गुण छे. आ पांच गुण युक्त दान आपे तो अतिथिसंविभाग व्रत होय. आ व्रतना पांच अतिचार वर्जवा, ते लखीए छीए.

१ सचित्त निक्षेप अतिचार. सचित्त पृथ्वी, जल, कुंभ, चूला, इंधनादि उपर साधुने न देवानी बुद्धिथी आहार राखे; मनमां एवो विचार करे के साधु तो आहार लेशे नहि, परंतु निमंत्रणा करवाथी मारुं अतिथिसंविभाग व्रत वन्युं रहेशे. आ प्रथम अतिचार.

२ सचित्त पीहण अतिचार. आहारने सचित्त वस्तुथी ढांके, सूरण, कंद, पत्र, पुष्पादिथी न देवानी बुद्धिथी ढांकी राखे तो बीजो अतिचार.

३ कालातिक्रम अतिचार. साधुने भिक्षानो काल वित्या पछी, अथवा भिक्षा काल पहेलां, अथवा साधु आहार करी रह्या होय ते पछी, आहारनी निमंत्रणा करवा जाय तो त्रीजो अतिचार.

४ परव्यपदेश अतिचार. साधु ज्यारे याचना करे, त्यारे क्रोध करे; पोतानी पासे वस्तु होय छतां, मागतां आपे नहि; वली आपे तो पण एवा विचारथी के आवा गरीब लोको साधुने आपे छे तो, तेउनाथी शुं हुं गरीब हुं ते न आपुं ? आवी भावनाथी आपे तो चोथो अतिचार.

५ गोल, खांड प्रमुख पोतानी वस्तु होय, ते न आपवानी बुद्धिए पारकी कहे, अने पारकी वस्तु होय ते आपवानी बुद्धिए पोतानी कहे तो आ पांचमो अतिचार: इति श्री अतिथिसंविभागव्रतं संपूर्णं.

सम्यक्त्वपूर्वक बारव्रतरूप, गृहस्थ धर्मनुं स्वरूप धर्मरत्न प्रकरण, तथा योगशास्त्रादि ग्रंथानुसार संक्षेपमात्र लखेल छे; विशेष जाणवानी अभिलाषावालाए धर्मरत्नशास्त्र वृत्ति, तथा योगशास्त्र जोवां.

इति श्रीतपोगछीयगणिश्रीमणिविजयतच्छिष्यश्रीमुनिबुद्धिविजयतच्छिष्य

मुन्यात्मारामानंदविजयविरचित जैनतत्त्वादर्श (नाषांतरे) श्रावकनिरूपण नामा अष्टमपरिछेदः संपूर्णः ॥

॥ अथ नवमपरिछेदप्रारंजः ॥

श्रावकोनां ठ कृत्यो ठे. १ दिनकृत्य, २ रात्रिकृत्य, ३ पर्वकृत्य, ४ चातुर्मासिक कृत्य, ५ संवत्सरकृत्य, ६ जन्मकृत्य, तेमांथी प्रथम दिनकृत्यविधि, आ परिछेदमां श्राद्धविधिग्रंथ तथा श्रावककौमुदी शास्त्रानुसार लखियें ठियें.

प्रथम तो श्रावकें निद्रा अल्प लेवी जोइए. ज्यारे एक प्रहर रात्रि शेष रहे, त्यारे निद्रा तजी उठवुं जोइए. कोइने बहु निद्रा आवती होय तो पण जघन्यथी चौदमा ब्राह्ममुहूर्त्तमां अवश्य उठवुं जोइए. सवारमां वहेलां उठवाथी इहलोक परलोकनां अनेक कार्य सिद्ध थाय ठे, ते अवसरें बुद्धिपण निर्मल, सुंदर होय ठे. पूर्वापर विचार बहुज सारी रीतें थइ शके ठे. ग्रंथकार एम पण लखे ठे के निरंतर जेने सूतां सूतां सूर्योदय थइ जाय; तेनुं आयुष्य अल्प थाय ठे; तेथी ब्राह्ममुहूर्त्तमां अवश्य उठवुं जोइए. ज्यारे निद्रानो त्याग करी उठे, त्यारे मनमां विचारे के हुं श्रावककुं, पोताना घरमां सुतो हतो के बीजाना घरमां सुतो हतो ? नीचे सुतो हतो के उपरमाले सुतो हतो ? दिवसना सुतो हतो के रात्रिना सुतो हतो ? इत्यादि विचार करतां निद्रानो वेग न मटे तो नासिका तेमज मुखनो श्वासोछ्वास रोके, तेम करवाथी निद्रा तत्काल दूर थइ जाय ठे, पठी द्वार सारी रीतें तपासी जरुर होय तो लघुशंकादि करे. रात्रिमां जागतां कोइने कांइ कहेवुं पडे तो, मंदस्वरथी कहे, उंचे स्वरें शब्दोच्चार करे नहि. उंचा स्वरथी बोलवाथी रात्रिमां ठपकली प्रमुख हिंसक जीव जागी जाय तो माखी प्रमुख अनेक जीवोनी ते हिंसा करे ठे. कसाइ जागी जाय तो, गाय, बकरी, घेटा प्रमुखने मारवाने चाल्यो जाय ठे, माठी जाल लइ पोतानुं काम शरु करवा जाय ठे, वाघरी, आहेडी, मदिरापानी, खुनी, परस्त्रीलंपट, तस्कर, लूटारा, धोबी, घांची, कुंजार प्रमुख अनेक हिंसा करनारा जीवो जागवाथी अनेक तरेहनां पापकर्ममां प्रवृत्त थइ जाय ठे. आ सर्व

पापनुं निमित्त कारण रात्रिए उंचा स्वरथी वात करनारने थाय, तेथी उं-
चा स्वरथी रात्रिमां नहि बोलवुं जोइये.

सवारमां निद्रानो छेद थाय त्यारे तत्त्वज्ञाता श्रावकें तत्त्वविचार क-
रवो जोइये. तत्त्व पांच छे. १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ आ-
काश, निद्राना छेद समये जो पृथ्वीतत्त्व तथा जलतत्त्व वहेतां होय तो
शुभ छे अने जो अग्नि, वायु के आकाशतत्त्व वहेतां होय तो दुःख-
दायक छे. शुक्लपक्ष प्रतिपद् दिने जो वामनासिकानो स्वर चालतो
होय तो पंदर दिवस सुधी आनंद आरोग्य रहे; अने कृष्णपक्षनी ए-
कमने दिवसे जो दक्षिण नासिकानो स्वर वहेतो होय तो पंदर दि-
वस सुधी सुख आनंद रहे; तेनाथी विपर्यय होयतो विपर्यय फल थाय.

शुक्ल पक्षना प्रथमना त्रण दिवस वामनासिकानो स्वर उगतां वहे-
तो होय तो शुभ छे. ते पछीना त्रण दिवस दक्षिणस्वर चालतो होय तो
शुभ छे, वली ते पछीना त्रण दिवस वाम स्वर चालतो होय तो शुभ छे,
एम अनुक्रमें पंदर दिवस सुधी समजवुं. तथा कृष्णपक्षनी एकमना दि-
वसथी त्रण दिवस सुधी दक्षिणस्वर वहेतो होय तो शुभ छे, ते पछीना
त्रण दिवस वामस्वर वहेतो होय तो शुभ छे. वली ते पछीना त्रण दि-
वस दक्षिण स्वर वहेतो होय तो शुभ छे, एम पंदर दिवस सुधी जा-
णवुं. तथा चंद्रस्वरमां सूर्य उगतो होय, अने सूर्यस्वरमां सूर्य अस्त थतो
होय तो शुभ छे. तथा सूर्यनाडीमां सूर्य उदय होय, अने चंद्रनाडीमां
अस्त थाय तो पण शुभ छे. कोइ शास्त्रना मत प्रमाणे रवि, मंगल, गुरु,
शनि, आ चार वारमां दक्षिणस्वरमां सूर्यनाडी दिवस उगतां चाले
तो शुभ छे, अने सोम, बुध तथा शुक्र आ त्रण वारमां सूतां, उठतां चंद्र-
स्वर वामस्वर चाले तो शुभ छे, तेनाथी विपर्यय चाले तो अशुभ छे.

वली कोइक शास्त्रकारना मत प्रमाणे संक्रांतिना क्रमथी सूर्य चंद्र-
नाडी वहे तो शुभ छे, जेम के मेप संक्रांतिने दिवस सूर्यस्वर चाले,
तथा वृपसंक्रांतिने दिने चंद्रनाडी चाले तो शुभ जाणवी इत्यादि. तथा
कोइक मतमां चंद्रमां राशि पलटे ते अनुक्रमें अढी घडी सुधी एक
नाडी वहे छे इत्यादि; परंतु जैनमतना आचार्य श्रीहेमचंद्रादिनो तो
प्रथम लख्या प्रमाणे मत छे. छत्रीश गुरु अक्षरो उच्चार करतां जेटलो

काल लागे छे, तेटलो काल वायुनो एक नाडीमांथी बीजी नाडीमां सं-चार करतां लागे छे.

हवे पांचतत्त्व संबंधी बोधस्वरूप कहियें छियें. नासिकानो पवन जो उंचो जाय तो अग्नितत्त्व, जो नीचो जाय तो जलतत्त्व, जो तिर्छो जाय तो वायुतत्त्व, जो नासिकाथी निकली सिधो तिर्छो जाय तो पृथ्वी तत्त्व; जो नासिकाना बंने पुटनी अंदर वहे, बहार निकले नहि तो आ-काश तत्त्व; ए प्रमाणे जाणवुं.

प्रथम पवनतत्त्व वहेछे; पछी अग्नितत्त्व वहे छे, पछी जलतत्त्व वहेछे, पछी पृथ्वीतत्त्व वहेछे, पछी आकाश तत्त्व वहेछे. निरंतर आ प्रमाणे अनुक्रम छे. बंने नाडीओमां पांचे तत्त्व वहे छे; तेमां पृथ्वीतत्त्व पंचाश पल प्रमाण वहे छे, जलतत्त्व चालीश पल प्रमाण वहे छे, अ-ग्नितत्त्व त्रीश पल प्रमाण वहेछे. वायुतत्त्व वीश पल प्रमाण वहेछे, आ-काशतत्त्व दश पल प्रमाण वहेछे.

पृथ्वी अने जलतत्त्वमां शांतिकार्य करवां; अग्नि, वायु तथा आका-शतत्त्वमां दीप्तिमान् अने स्थिर कार्य करवां; ए प्रमाणे करे तो शुभ फ-लोन्नति थाय छे, जीववानो प्रश्न, जयप्रश्न, लाभप्रश्न, धनार्जन प्रश्न, मेघवर्षण प्रश्न, पुत्र होवानो प्रश्न, जवा आववना प्रश्न, आ प्रश्नो जो पृथ्वी अने जलतत्त्वमां करे तो शुभ थाय; अने अग्नि, वायु वहेतां क-रे तो शुभ थाय नहि; वली जो पृथ्वीतत्त्वमां प्रश्न करे तो कार्यनी सि-द्धि स्थिरपणे थाय, अने जलतत्वमां कार्य शीघ्रताथी थाय.

प्रथमनी जिनपूजा करतां, धन कमावा जतां, पाणिग्रहण करतां किल्लो लेतां, नदी उतरतां, गयेलानुं आगमन पुछतां, जीवननो प्रश्न करतां, घर क्षेत्रादि खरीदतां, करीआणां लेतां, वेचतां, वर्षनुं प्रश्न करतां, नोकरी करतां, खेती करतां, शत्रुने जीततां, विद्यारंभ करतां, राज्याभिषेक कर-तां, इत्यादि शुभ कार्यो करतां चंद्रनाडी वहे तो कल्याणकारी छे.

प्रश्नसमये कार्यना आरंभमां पूर्ण वामनाडी प्रवेश करती होय, त्या-रे निश्चयपूर्वक कार्यसिद्धि जाणवी, तेमां संदेह नथी. वली अमुक सख्त केदमांथी क्यारे छुटशे ? अमुक रोगी साजो क्यारे थशे ! अमुक स्थान-भ्रष्ट थयेलो क्यारे पद प्राप्त करशे ? आ प्रश्नोमां, तथा युद्ध करवाना प्र-

श्रमां वैरीने मलतां, अकस्मात् जय पामतां, स्नान करतां, जोजन करतां, पाणी पीतां, सुतां, गइ वस्तुनी खोज करतां, मैथुन करतां, विवाद करतां, कष्टमां पडतां, आटला कार्योमां सूर्यनाडी वहेती होय तो शुज ठे, कोइक आचार्य एम पण कहे ठे के, विद्यारंजमां, दीक्षामां, शास्त्राज्यासमां, विवादमां, राजाना देखवामां, मंत्र यंत्रना साधनमां, सूर्यनाडी शुज ठे; अथवा जो चंद्रादि स्वर चालतो होय तो निरंतर ते वाजुनो पग उगावीने प्रथम चाले तो कार्यसिद्धि थाय.

पापी जीवोनी तथा शत्रुउना दूत प्रमुख जे क्लेश कराववा वाला ठे, तेउनी सन्मुख, जे नासिकानी वाजु वंध होय ते पासुं राखे तो सुख, लाज अने जय थाय. शय्याथी उठतां शुक्ल पक्षमां डावो पग, अने कृष्ण पक्षमां जमणो पग धरती उपर मुके. आ विधिए श्रावक निद्रा त्यागे.

श्रावक अत्यंत वहुमानपूर्वक मंगलकार्यवास्ते पंच परमेष्टि नमस्कारमंत्रस्मरण करे. शय्यामां वेठां थकां मनमां पंच परमेष्टिमंत्रस्मरण करे. वचनथी उच्चार न करे. जो मुखथी उच्चार करे तो शय्यानो त्याग करी धरती उपर वेसी नमस्कारमंत्र पढे. ए प्रमाणे नमस्कार मंत्र अंतःकरणमां स्मरण करतां करतां शय्याथी उठे; पवित्र जमीन उपर वेसे. पठी पूर्व अथवा उत्तर दिशि सन्मुख मुख करी उजा थइ चित्तनी एकाग्रता वास्ते कमलवंध करी जापथी नमस्कार मंत्र पढे. तेमां आठ पांखडीनुं कमल चिंतवे, तेनी कर्णिकामां अरिहंत पदनुं स्थापन करे, पूर्व पांखडीमां सिद्ध पदनुं, दक्षिण पांखडीमां आचार्यपदनुं, पश्चिम पांखडीमां उपाध्यायपदनुं, उत्तरपांखडीमां साधुपदनुं स्थापन करे; वाकीनां चूलिकानां चारे पद अग्न्यादि चारे खुणामां अनुक्रमें स्थापन करे. "उक्तं चाष्टमप्रकाशे योगशास्त्रे श्रीहेमचंद्रसूरिजिः" अष्टपत्रे सितांजोजे, कर्णिकायां करस्थितिः ॥ आद्यं सप्ताक्षरं मंत्रं, पवित्रं चिंतयेत्ततः ॥ १ ॥ सिद्धादिकचतुष्कं च, दिक्पत्रेपु यथाक्रमं ॥ चूलापादचतुष्कं च, विदिक्पत्रेपु चिंतयेत् ॥ २ ॥ त्रिशुद्धं चिंतयन्नस्य, शतमष्टोत्तरं मुनिः ॥ जुंजानोपि लजत्येव, चतुर्थतपसः फलं ॥ ३ ॥

हाथना आवर्त्तथी पंच मंगल मंत्र, नित्य स्मरण जे करता होय, तेउने पिशाचादि ढलता नथी. वंधनादि कष्टमां, विपरीत शंखावर्त्तकादि

अक्षरोथी, अथवा विपरीतपदोथी पंच मंगल मंत्र लक्षादि जाप करे तो शीघ्र क्लेशादि नाश पामे. जो हाथ उपर जाप न करी शके तो सूत्रनी रत्ननी वा रुद्राक्षादिनी माला उपर जप करे. मालावालो हाथ हृदय सन्मुख राखे, शरीरें, शरीरना वस्त्रोने तथा भूमिकाने माला लागवा देवी नहि. अंगुठानी उपर माला राखी, तर्जनी आंगलीथी, नख लगाव्या विना, मणका फेरवे, मेरु उल्लंघन न करे. शास्त्रकार लखेछे के, जो आंगलीना अग्रथी जाप करे, जाप करतां मेरु उल्लंघन करे, अने खडता चित्तथी जाप करे तो बहुज अल्प फल मले छे. जाप करनार बीजाउथी एकिला रही शब्दोथी जाप नहि करतां मौनपणे जाप करे तो श्रेष्ट छे. जाप करतां थाकी जाय तो ध्यान करे, ध्यान करतां थाके तो जाप करे, बंनेथी थाके तो स्तोत्र बोले.

श्रीपादलिप्तआचार्यकृत प्रतिष्ठाकल्पपद्धतिमां लख्युं छे के, जाप त्रण तरेहथी थाय छे. १ मानस, २ उपांशु, ३ भाष्य. तेमां मानस जाप मनमां विचारणाथी थाय, स्वसंवेद्य होय; उपांशु जाप बीजा तो सांभले नहिं, परंतु अंतर्जल्प थाय; अने भाष्य जाप बीजाना सांभलवामां आवे तेम थाय. आ त्रणे अनुक्रमें उत्तम, मध्यम अने अधम जाणवा. मानस जापथी शांति थाय छे, अर्थात् शांतिने वास्ते मानस जाप करवो, पुष्टिने वास्ते उपांशु जाप करवो, अने आकर्षणादिमां भाष्य जाप करवो.

नमस्कार मंत्रनां पांचपद, नवपद, अनानुपूर्वी चित्तनी एकाग्रता वास्ते गणे. जो नवकार मंत्रनो एक अक्षर, वा एकपद पण जपे तो पण जाप थइ शके छे. यदुक्तं योगशास्त्रे अष्टमप्रकाशे ॥ पंच परमेष्टि मंत्रना "अरिहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू" आ सोल अक्षरनो जाप, तथा "अरिहंत सिद्ध" आ छ अक्षरनो जाप, तथा "अरिहंत" आ चार अक्षरनो जाप, तथा आकार जे वर्ण छे, ते पण मंत्र छे. आ सर्व जापनुं फल स्वर्ग वा मोक्ष छे. वली व्यवहारफल आ प्रमाणे जाणवुं, षड्वर्णनो (छ अक्षरनो) जाप त्रणसो वार करे, चारवर्णनो जाप चारसो वार करे, अने सोल अक्षरनो जाप बसो वार करे तो एक उपवासनुं फल मले छे. वली "अ" वर्ण नाभि कमलमां स्थित ध्यावे, "सि" वर्ण मस्तक कमलमां स्थित ध्यावे, "आ" कार मुख कम-

लमां स्थित ध्यावे, "उ" कार हृदयकमलमां स्थित ध्यावे, तथा "सा" कार कंठपिंजरमां स्थित ध्यावे. आ सर्व जाप कल्याणकारी छे. "असि आ उसा" आ पांच बीज छे. आ पांचे बीजोनो ॐकार बने छे.

वली बीजा बीजमंत्रना पण जाप करे, जेम के "नमःसिद्धेभ्यः" आवो मंत्र, जो इहलोकना फलनी इच्छा होय तो आकार सहित पढवो जोइयें; अने जो मोक्षवास्ते जाप करवो होय तो आकार रहित पढवो जोइये. आ जापादि करवाथी बहुज फल थाय छे ॥ यतः ॥ पूजाकोटि समंस्तोत्रं पूजाकोटिसमोजपः॥ जपकोटिसमं ध्यानं, ध्यानकोटिसमोलयः ॥१॥ ध्याननी सिद्धि वास्ते श्रीजिनजन्म,दीक्षादि कल्याण भूमिरूप तीर्थमां जाप; अथवा कोइ बीजा विविक्त स्थानमां जइ ध्यान करे. ध्याननुं स्वरूप जोवुं होय तो आवश्यकसूत्रांतर्गत ध्यानशतक अवलोकन करवुं. नमस्कारमंत्रनो जाप इहलोकमां पण बहुज लाभकारक छे, ॥ उक्तंच महानिशीथे ॥ नासेइ चोर सावय, विसहरजल जलण बंधण भयाइं ॥ चिंतिज्जंतो रक्खस, रणरायभयाइं भावेण ॥ १ ॥ अर्थः–चोर, सिंह, सर्प, पाणी, अग्नि, बंधन, संग्राम, राजभय, आ सर्व भय पंच परमेष्ठि मंत्रना स्मरणथी नाश पामे छे. एकाग्र भावथी जपे तो आ फल थाय छे. पंच परमेष्ठि मंत्र सर्व स्थले भणवो जोइए. नमस्कार मंत्रना एक अक्षरना जापथी सात सागरोपमनुं करेलुं पाप नाश पामे छे, जो संपूर्ण पंच परमेष्ठि मंत्र जपे तो पांचसो सागरोपमनुं करेलुं पाप नाश थाय छे. तथा जे पुरुष एक लाखवार पंच परमेष्ठि मंत्रनो जाप करे, अने नमस्कारमंत्रनी विधिपूर्वक पूजा करे तो तीर्थंकर गोत्र, नाम कर्मनो बंध करे. आ कथनमां संदेह नथी; अने आठ क्रोड, आठ लाख, आठ हजार, आठसो, आठ वार जो पंच परमेष्ठि मंत्रनो जाप, जे जीव करे ते त्रीजा भवमां सिद्ध थाय छे. ते कारणथी सूतां, उठतां प्रथम नमस्कारस्मरण करवो, त्यारबाद धर्म जागरणा करवी, ते आ प्रमाणे.

हुं कोण छुं? कइ मारी जाति छे? शुं मारुं कुल छे? कोण मारा इष्ट देव छे? कोण मारा गुरु छे? शुं मारो धर्म छे? शुं मारो अभिग्रह छे? शुं मारी अवस्था छे? शुं मे सुकृतादि करेल छे? शुं मे दुष्कृत करेलां नथी? शुं हुं करवाने समर्थ छुं? शुं हुं करी शकतो नथी? मने कोइ दे-

खे छे के नहि? पोतानी भूल आत्मा जाणे छे, छतां केम तजतो नथी? आज कइ तिथि? क्या अरिहंतनो कल्याणक दिवस छे? आज मारुं शुं कृत्य छे? क्या देशमां छुं? कया कालमां छुं? सवारमां उठी ए प्रमाणे स्मरण करवाथी जीव सावधान थइ जाय छे. जे विरुद्ध कृत्य होय तेनो परिहार करे छे. पोताना नियमनो निर्वाह, तथा नवीन गुणोनी प्राप्ति थाय छे. आज धर्म जागरणा आणंद कामदेवादि श्रावकोए करीने प्रतिमादि विशेष धर्म करणी करेली छे.

हवे जे श्रावक प्रतिक्रमण करनार होयते प्रतिक्रमण करे, अने जे प्रतिक्रमण न करे, तेपण रागादिमय कुस्वप्न, प्रद्वेषादिमय अनिष्ट फलना सूचक, तेउने दूर करवा वास्ते, तथा स्वप्नमां स्त्रीसंग प्रसंगादिक करवानां खोटां स्वप्न आव्यां होय तो, एकसो आठ उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे. आ कथन व्यवहारभाष्यमां छे. वली विवेक विलासादि ग्रंथोमां एवुं लख्युं छे के, स्वप्न देख्या पछी, फरी सुवुं नहि; तथा देखेलुं स्वप्न दिवसें सद्गुरुनीपासे कहेवुं. जो माठुं स्वप्न आव्युं होय तो फरी सुवुं ठीक छे. माठुं स्वप्न कोइने कहेवुं नहि. वली समधातुवाला, प्रशांतचित्तवाला, धर्मी, नीरोगी, जितेंद्रिय, आटलाउने जे शुभाशुभ स्वप्न आवे ते सत्यज थाय छे. स्वप्न नवकारणथी आवे छे. तेनां नाम कहिये छिये.

१ अनुभव करेली वस्तुनुं, २ सांभलेली वातनुं, ३ देखेली चिनानुं, ४ वात, पित्त अने कफना विकारथी, ५ चिंतित वस्तुनुं, ६ सहज स्वभावथी, ७ देवताना उपदेशथी, ८ पुण्यना प्रभावथी, ९ पापना प्रभावथी, स्वप्न आवे छे. तेमां प्रथमनां छ कारणोथी जो स्वप्न आवे तो ते निरर्थक छे, अने पाछलनां त्रण कारणोथी जो स्वप्न आवे तो ते सत्य थाय छे.

रात्रिना पहेला पहोरमां स्वप्न आवे तो एक वर्षमां फल आपे, वीजा प्रहरमां स्वप्न आवे तो छ महिनामां फल आपे, त्रीजा प्रहरमां स्वप्न आवे तो त्रण महिनामां फल आपे, चोथा प्रहरमां स्वप्न आवे तो, एक मासमां फल आपे, सवारमां बे घडी रात्रिछतां स्वप्न आवे तो दश दिवसमां फल आपे, सूर्योदयमां स्वप्न आवे तो तत्काल फल आपे.

जे स्वप्नमां बहुज आल जंजाल देखवामां आवे, तथा जे रोगोदयथी स्वप्न आवे अने जे मलमूत्रनी बाधा छतां स्वप्न आवे, ते त्रणे स्वप्न निर-

र्थक छे. जो पहेलां अशुभ स्वप्न आवे, अने पछी शुभ स्वप्न आवे, तो शुभ फल आपे, तथा जो पहेलां शुभ स्वप्न आवे, अने पछी अशुभ स्वप्न आवे तो, अशुभ फल आपे; जो मातुं स्वप्न आवे तो शांति अर्थात् देवपूजा, दानादि करवां. स्वप्न चिंतामणि ग्रंथमां पण लख्युं छे के, अनिष्ट स्वप्न देखीने सुइ जवुं, कोइने कहेवुं नहि, तेम करे तो पछी ते स्वप्न फल आपतुं नथी. सूता उठीने जिनेश्वर देवनी प्रतिमाने नमस्कार करीने, जिनेश्वरनुं ध्यान करे, स्तुति करे, स्मरण करे, पंचपरमेष्ठि मंत्र उचरे, तो खोटुं स्वप्न क्षयथइ जाय छे. वली जे पुरुष देवगुरुनी पूजा करे छे, निज शक्ति अनुसार तप करे छे, अने निरंतर धर्मना रागी छे, तेउने मातुं स्वप्न पण सारुं फल आपे छे; तथा जे पुरुष देवगुरुनुं स्मरण करीने, तथा शत्रुंजय, समेतशिखरप्रमुख शुभ तीर्थोनां नाम, अने गौतमस्वामि, सुधर्मस्वामि, प्रमुख आचार्योनां नाम स्मरण करीने सूवे, तेने कदापि मातुं स्वप्न आवतुं नथी.

थुंकवुं होय तो राखमां थुंकवुं जोइए. शरीरने दृढ करवा वास्ते हस्तथी वज्रीकरण करे; अग्नितत्त्व, तथा वायुतत्त्व ज्यारे वहेतां होय, त्यारे कसरत करी कंठसुधी दूध पीये; कोइ आचार्य कहे छे के आठ पसली पाणीनी पीवी, तेनुं नाम वज्रीकरण छे. उठतांज माता पिता, पितामह, वडीलभाइ प्रमुखने नमस्कार करे, तो तीर्थयात्रा समान फल छे. तेथी दररोज नमस्कार करवा जोइए. जेउए वृद्धोनी सेवा करी नथी, तेउने धर्मनी प्राप्ति थती नथी. जेउ शीलमां, संतोषमां, तथा ज्ञान ध्यानादिमां मोटा होय तेउ वृद्ध कहेवाय छे. तेउनी सेवा अवश्य करवी जोइये. वली जेणें राजानी सेवा करी नथी, तथा जेणें पोताना शत्रुउने मात कर्या नथी, तेने धर्म, अर्थ अने सुख दूर छे.

श्रावकें सवारमां उठी चौद नियम धारवा जोइए. तेनुं स्वरूप आगल बतावेलुं छे. विवेकवान् पुरुष सम्यक्त्वपूर्वक बार व्रत विधिसहित गुरुमुखथी धारण करे, कारण के विरतिपणुं अभ्यासथीज पली शके छे, ते कारणथी धर्मनो अभ्यासपण करवो जोइए; अभ्यासविना क्रियापण सारी रीतें बनी शकती नथी. ध्यान मौनादि सर्वे, अभ्यास करतां दुःसाध्य नथी. जे जीव आ जन्ममां सारो अथवा बुरो जेवो अभ्यास करे

छे, तेज प्रायःजविष्यना जन्ममां पामे छे. वली पांचम, आठम, चौदश प्रमुख दिवसें तपादि नियम धर्मी पुरुषें जे जे अंगीकार करेलो होय, तेमां तिथ्यंतरनी ज्रान्तिथी सचित्त जलादि, पान, तंबोल, प्रमुख खावायोग्य, खाइ लीधुं होय, पठी एम जाणवामां आवे के आजे अमुक तप करवानो दिवस छे, ठतां मारी जूल थइ गइ, एम याद आवतांज जो कांइ मुखमां होय तो, तेने राखादिमां फेंकी दे, प्राशुक पाणीथी मुखशुद्धि करीने तप कर्युं होय तेवी रीतें रहे तो नियमजंग थतो नथी; अने जो संपूर्ण जोजन कर्या पठी जाणवामां आवे के, आजे तपनो दिवस छे, तो आगले दिवसे दंडनिमित्तें ते तप करे. समाप्त थया पठी तेना उपर पोरिसी एकाशनादि तप अधिक करे; अने जो तपनो दिवस जाणतां ठतां एक दाणोपण खाय तो व्रतजंग थइ जाय छे; अने व्रतजंग जाणीने करवुं ते नरकादिनो हेतु छे. वली जो तप कर्या पठी अत्यंत मांदगी थइ जाय, अथवा जूतादि दोषथी परवश थइ जाय, वा सर्पादि करडे, इत्यादि असमाधिमां तप करवाने समर्थ न होय तोपण चार आगार उच्चारण करवाथी व्रतजंग थतुं नथी; एम सर्व नियमोमां जाणीलेवुं. उक्तंच ॥ वयजंगे गुरु दोसो, थोवस्सवि पालणा गुणकारि ॥ गुरुलाघवं च नेयं, धम्म मिअ उ आगारा ॥ १ ॥ अर्थः–व्रतजंग थवाथी महादूषण थाय छे, जो पालवामां आवे तो थोडुं व्रत पण गुणकारी छे, ते कारणथी गुरुलघु जाणीने जगवानें धर्ममां आगार कहेला छे.

वली नियम आ प्रमाणे ग्रहण करवां जोइए. प्रथम तो मिथ्यात्व त्यागवा योग्य छे. निरंतर यथाशक्ति एक, बे, त्रण वार जिनदर्शन, संपूर्ण देववंदन, चैत्यवंदन करवां जोइए; तेवीज रीतें गुरुनो योग मले तो दीर्घ, लघुवंदना करवी. जो गुरु हाजर न होय तो धर्माचार्यनुं नाम लइ वंदना करवी. वली श्रावक वर्षाऋतुमां निरंतर पांच पर्वना दिवसे अष्टप्रकारी पूजा करे; ज्यांसुधी जीवे त्यांसुधी नवुं अन्न, नवुं फल, पक्वान्नादि देवने चडाव्याविना खाय नहि. निरंतर नैवेद्य, सोपारी, बदामादि देवनी आगल चढावे. त्रण चोमासामां तथा संवत्सरी दिवाली प्रमुखमां चोखानां अष्टमंगल जरी ढोवे. नित्य, वा पर्वना दिवसोए, वा वर्षमां खादिम सर्ववस्तु देव, गुरुने अर्पण करी जोजन करे. प्रतिमास, प्रतिवर्ष महाध्वजा प्रमुख

उत्सव करीने चडावे. स्नात्रमहोत्सव, अष्टोत्तरी पूजा, रात्रि जागरण करे. निरंतर चोमासा आदिमां केटलीएक वार जिनमंदिर, धर्मशाला प्रमार्जन करे, करावे, देरासर समरावे, पौषधशाला लिंपे, लींपावे. प्रतिवर्ष जिनमंदिरमां अंगलुहणां आपे, दीवानेवास्ते रु आपे, तेल आपे, घी आपे, केशर, सुखड आपे, पौषधशालामां कटासणा, मुहपत्ति, चरवला, धोतीआं, कांबल, दोरा, उन प्रमुख आपे. वर्षमां श्रावकोने बेसवावास्ते केटलीएक पाट, बाजोठ प्रमुख आपे. जो निर्धन होय तो पण वर्षमां एक दिवस सुतरनो दोरा, वा आंटी प्रमुख आपी संघपूजा करे. केटलाएक साधर्मी बंधुउने शक्ति अनुसार जोजन करावी साधर्मिवात्सल्य प्रमुख करे. निरंतर केटलोएक काउसग्ग करे. स्वाध्याय करे. निरंतर जघन्यथी नवकारसीनुं प्रत्याख्यान करे. रात्रिए चरित्र प्रत्याख्यान करे. बंने वखत प्रतिक्रमण करे. आ करणी प्रथम करवा पठी चार व्रत अंगीकार करे. तेमां पण सातमा व्रतमां सचित्त, अचित्त अने मिश्रवस्तुनुं स्वरूप सारी रीतें जाणवुं जोइए.

जेम प्रायः सर्वधान्य, अनाज, तेमज धाणा, जीरुं, अजमो, वरीआली, सुआ, राइ, खसखस प्रमुख सर्वकण, सर्वपत्र, सर्वे लीलांफल, तथा मीठुं खारो, लालरंगनुं सिंधालूण, संचल, माटी, खडी, हिरमची, लीलां दातण प्रमुख, सर्वव्यवहारथी सचित्त (सजीव) ठे; तथा पाणीमां पलालेला चणा, घउं प्रमुख अनाज, तथा चणा, मग, अडद, तूअर प्रमुखनी दाल जेमां आखा दाणा रहीगया होय, ते सर्वे मिश्र ठे; तथा प्रथम मीठुं लगाडीने अग्निनी बाष्प प्रमुख आप्या विना, तथा तपावेली रेतीमां नाख्याविना चणा, घउं, जुआर प्रमुख जूंजे ते, तथा खारो प्रमुख आप्याविना मसलेला तल, ठला, ठंबी, पोंक, थोडी शेकेली फली तथा चिजडा प्रमुखफल, मरचां, राइ हींग प्रमुखथी वघारे; तथा जेनी अंदर बीज सचित्त होय एवां पाकेलां सर्वफल, मिश्रठे. तथा तलवट, तिलकूट जे दिन करवामां आवे ते दिन मिश्रठे. जो तलमां अनाज प्रमुख नाखी कूटे तो एक मुहूर्त्त पठी अचित्त थायठे. वली दक्षिण मालवादि देशोमां बहु गोल प्रमुख नाखवाथी तेज रोज अचित्त थइ जायठे. वृक्षनो तत्काल उखडेलो गुंदर, लाख, ठाल, तरतनुं फोडेलुं नालीयेर, लींबु, दाडम,

संतरां, केरी, निंब तथा शेरडीनो तत्कालनो काढेलो रस, तथा तत्काल काढेलुं तलनुं तेल, तत्काल नांगेलां बीज, नालीयेर, सोपारी, सिंगोडां-प्रमुख, तथा बीजरहित करेलां पाकां फल खडबूजादि, तथा अत्यंत मर्दन करीने कणकाढेला जीरादि, आ सर्व अंतर्मुहूर्त सुधी मिश्र छे, पछी प्राशुकनो व्यवहार छे. तथा बीजांपण प्रबल अग्निना योगविना प्राशुक करेला अंतर्मुहूर्त सुधी मिश्रछे, पछी प्राशुकनो व्यवहार छे. वली अप्राशुक पाणी, काचां फल, काचां अनाज अगर जो बहुज मर्दन कर्यां होय तोपण लवण अग्नि प्रमुख प्रबल शस्त्र विना, प्राशुक थतां नथी; कारण के श्री पंचमांग नगवतीसूत्रना उंगणीशमा शतकना त्रीजा उद्देशमां लख्युं छे के. वज्रमय शिला, वज्रमय लोटो, अने आमला प्रमाण पृथ्वीकाय लइने एकवीश वार वाटवामां आवे तोपण केटलाएक पृथ्वीकायना जीवोनो लोटाने स्पर्श पण थतो नथी, एवी ते जीवोनी सूक्ष्म कायाछे.

वली सो योजन उपरांतथी आवेलां हरडां, खारेक, डाक्ष, लालडाक्ष, खजुरादि मेवा, तीखां, पीपर, जायफल, बदाम, अखोड, नेउजा, जरगोजा, पस्तां, चारोली, चीनी, उज्वल सिंधालूण, साजी, नठीमां पकावेलुं लूण, बनावटी खार, कुंनारें करेली माटी एलायची, लवींग, जावंत्री, सूकी मोथ, कोकणदेश प्रमुखनां केलां उनां करेलां सिंगोडां, सोपारी, आ सर्वनो प्राशुक व्यवहार छे. साधु पण कारण प्रसंगें ग्रहण करे छे. आ वात कल्पनाष्यमां पण लखेली छे. "जोयण सयं तु गंतु अणाहारे नंड संकंति" इत्यादि. तेमां हरडे, पीपर प्रमुख आचरणीय छे ते कारणथी लेवाय छे, अने खजूर, डाक्ष प्रमुख अनाचरणीय छे. वली उत्पल कमल, पद्मकमल, तडकामां राखवाथी एक पहोरनी अंदरज अचित्त थइ जाय छे; अने मोगरानां फुल, जुइनां फुल तडकामां बहुवखत पड्यां रहे तो पण अचित्त थतां नथी, परंतु मोगरानां फुल पाणीमां नाखेलां एक पहोरनी अंदरज अचित्त थइ जाय छे, अने उत्पल कमल तथा पद्मकमल बंने पाणीमां राखवाथी बहु वखत सुधी अचित्त थतां नथी. "शीतयोनिकत्वात्." तथा पांदडाना, फूलोना, तेमज जे फलोमां गोठली बंधाइ न होय तेना, तथा बथुआ प्रमुख लीली वनस्प-

तिना, आ सर्वना डीटीआं (वृंत) करमाइ जाय त्यारे ते जीवरहित थयां जाणवां. आ कथन श्रीकल्पजाप्यवृत्तिमां छे.

श्री पंचमांगना छठा शतकना पांचमा उद्देशामां सचित्त अचित्त वस्तुनुं स्वरूप आ प्रमाणे लखेलुं छे, शाल, व्रीहि, घउं, जव, जवजव, आ पांच धान्यनी जाति कोठारमां, मोटा पालामां वा माला याने कोठार विशेषमां मुख ढांकीने राखे तथा लींपे, चारे बाजुथी लींपे, अने उपर मजबुत ढांकणुं राखी सील मारवाजेवुं बंध करे तो केटलाककाल सुधी तेमां जीव योनि रहे ? आ प्रमाणे प्रश्नपुछवाथी जगवान् कहेछे के हे गोतम ! जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त रहे, अने उत्कृष्ट तो त्रण वर्ष रहे, पछी अचित्त थइ जाय. तथा वटाणा, मसूर, तल, मग, अडद, वाल, कलथी, चोला, तुअर, चणा इत्यादि धान्य सर्व उपर प्रमाणे जाणवुं, परंतु एटलुं विशेषके, ते उत्कृष्टथी पांच वर्ष उपरांत अचित्त थइ जाय छे. तथा अलसी, कसुंबानी करड, कोडुं, कंगणी, बंटी, राल, कोडुसक, सण, सरसव, मूलीनां बीज इत्यादि धान्यपण उपर प्रमाणे जाणवां, परंतु उत्कृष्टथी सात वर्ष उपरांत अचित्त थइ जाय छे. तथा कपासनां डोडवां उत्कृष्टथी त्रण वर्ष उपरांत अचित्त थइ जाय छे. आपण कल्पजाप्यनी वृत्तिमां छे. तथा चाल्या विनानो आटो (लोट) श्रावण, जादरवा महिनामां पांच दिवस सुधी मिश्र रहेछे. पछी अचित्त थाय छे; आसो, कारतक मासमां चारदिनसुधी मिश्र रहेछे, पछी अचित थाय छे; मागसर पोस मासमां त्रणदिन सुधी मिश्र रहे छे, पछी अचित्त थाय छे; माह्य, फागणमासमां पांच पहोर मिश्र रहे छे, तथा चैत्र, वैशाख मासमां चार पहोर मिश्र रहे छे, तथा ज्येष्ठ, आषाढ मासमां त्रणपहोर मिश्र रहे छे, उपरांत अचित्त थइ जाय छे. जो तत्काल चाली ले तो अंतर्मुहूर्तसुधी मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय छे.

प्रश्नः– पीसेलो आटो केटला दिवसनो अचित्त जोगीने तथा श्रावकने खावो योग्य छे ?

उत्तरः– सिद्धांतमां आटानी मर्यादानो नियम अमारा वाचवामां आव्यो नथी, परंतु बुद्धिमान् नवुं जुनुं अनाज, सरस नीरस क्षेत्र, वर्षा, शीत, उष्णादि रुतु, तेमां पण ते आटानो पंदर दिवस के मासादि का-

लमां, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादि बगडेल देखे, तेमज तेमां सुरसली प्रमुख जीव पडेला देखे तो ते न खाय; जो खायतो जीवहिंसा थाय अने रोगोत्पत्तिनुं कारण थाय.

मिठाइनी मर्यादा अने वीदलनो निषेध, उपर सातमा व्रतमां लखी आव्या छीए, त्यांथी जाणवुं. दहींमां सोल पहोर उपरांत जीव उत्पन्न थाय छे, वली विवेकी जीवोयें रींगणां, टींबरु, जांबु, बिलां, पीलु, करमदां, पाकां गुंदां, पंचु, महुडां, मोर, वालोल, मोटां बोर, चणीआंबोर काचां कोठ फल, खस खस, तल इत्यादि न खावां जोइए. तेमां त्रसजीव थाय छे. तथा जे फल लालरंग देखवामां बूरां लागे, पाकीगयेलां तथा गोल, एवा कंकोडां, फणस प्रमुखपण बूरी ज्ञावनाना हेतु होवाथी न खावां जोइए. वली जे फल जे देशमां खावां विरुद्ध लागे, जेमके कडवुं तुंबडुं, कूष्मांड अर्थात् कोहोलुं हलवुं (कडु) ते पण न खावां जोइए. वली अजक्ष्य, अनंतकाय, कंदमूल, पछी ते परघरनां अचित्त करेलां, रांधेलां होय तोपण न खावां जोइए; कारण के एक तो निःशूकता अने बीजा रसलंपटता तथा वृद्ध्यादि दोषनो प्रसंग थाय छे. ते कारणथी न खावां जोइए. तथा उकालेलां सेलरां, रांधेलां आर्द्रादिकंद, सूरण, रींगणाप्रमुख अगर जो के अचित्त छे तोपण श्रावक प्रसंगदूषण त्यागवा वास्ते न खाय. वली मूला तो पंचाग खावा योग्य नथी. निषिद्धत्वात्. तथा शूंठ अने हलदर, नाम तेमज स्वाद भेद थवाथी अजक्ष्य नथी. तथा उकालेलुं पाणी त्रण उजरा आवे त्यारे अचित्त थइ जाय छे. आ कथन पिंडनिर्युक्तिमां छे. चोखाना धोणनुं पाणी ज्यारे नितरीने निर्मल थइजाय, त्यारे अचित्त थाय छे. वली उष्ण जलनी मर्यादा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथोमां आ प्रमाणे लखी छे. त्रण वखत उज्जरा आवेलुं उष्णजल उनालाना चारे मासमां पांच पहोर अचित्त रहेछे. आ चूलेथी उतार्या पछीनी मर्यादा छे. तथा वर्षाऋतुना चारे मासमां त्रण पहोर अचित्त, अने शियालाना चारे मासमां चार पहोर अचित्त रहे छे, पछी सचित्त थइ जाय छे. जो ग्लान, बाल, वृद्धादि साधु वास्ते मर्यादा उपरांत राखवुं होय तो क्षारादि वस्तुनो प्रक्षेप करीने राखवुं, तेम करवाथी सचित्त थतुं नथी. आ कथन प्रवचन सारोद्धारना

१३६ मा द्धारमां छे. तथा कांगडु मग, मठ अने हरडादिनां मीज (गोठली) अगरजो के अचित्त छे, तोपण योनि राखवा वास्ते, तथा निःशूकतादि परिहार वास्ते दांतथी तोडवा न जोइए. इत्यादि सचित्त वस्तुनुं स्वरूप जाणीने सातमुं व्रत अंगीकर करवुं जोइए.

श्रावकें प्रथम तो निरवद्य (दोष रहित) आहार करवो जोइए, तेम न करी शके तो सर्व सचित्त वस्तु खावानो त्याग करवो जोइए; तेम पण न करी शके तो बावीश अत्नक्ष्य अने बत्रीश अनंतकाय तो अवश्य त्यागवा जोइए. वली चौद नियम धारवा जोइए. सूइ उठीने यथाशक्ति नियम ग्रहण करवुं, पठी यथाशक्ति प्रत्याख्यान करवुं. नमस्कार सहित पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान, जो सूर्य उदय पहेलां उचरवामां आवे तो शुरू छे, अन्यथा शुरू नथी. शेष प्रत्याख्यान सूर्योदय पठी पण थइ शके छे. नवकारशी जो सूर्योदय पहेलां उचरवामां आवी होय तो तेनी पठीना पोरसी तेमज साढ पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यानो थइ शके छे. जे नमस्कारसहित सूर्योदयनी पहेलां उच्चारण न करीए तो कोइपण काल प्रत्याख्यान करवुं शुरू नथी; अने जो प्रथम नमस्कारादि प्रत्याख्यान मुष्टि सहितादि करे तो सर्वकाल प्रत्याख्यान करवामां अवे ते शुरूज थाय छे.

रात्रिए चौविहार करे अने दिवसें एकासणुं करे, पठी ग्रंथिसहित प्रत्याख्यान करे तो तेने दरेकमासमां उंगणत्रीश उपवासनुं फल मले छे. दररोज बे वखत त्नोजन, उपर कहेली रीति प्रमाणे करे तो तेने अठ्ठावीश उपवासनुं फल मले छे; कारण के त्नोजन करतां बे घडी काल लागे छे, बाकीनो काल तपमां व्यतीत थाय छे. आ कथन पद्मचरित्रमां छे. प्रत्याख्यान उपयोगपूर्वक पुरुं थइजाय तो पारे.

हवे चारप्रकारना आहारना वित्नाग कहीयें ठीयें. अनाज, पक्वान्न, रोटला प्रमुख, जेनाथी क्षुधानो नाशथइ शके, ते प्रथम अशन नामनो आहार छे. ठाशनुं पाणी तथा उष्णजल प्रमुख आ बीजो पाननामा आहार छे. फल, फूल, शेलडीरस, सुखडीप्रमुख, आ त्रीजो खादिमनामा आहार छे; अने सूंठ, हरडे, पिपलीमूल, तीखां, जीरुं, अजमो, जायफल, जावंत्री, अशेलीउं, खेरवडी, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलायची, कोठ,

विडंग, विडलवण, अजमोद, कुलिंजण, पीपर, चीणकबाव, कचूर, मुस्ता, कंटासेलीउं, कपूर, संचल, हरडां, वहेडां, कुंठजउं, बबुल, धव, खदिर, पान, सोपारी, हिंग, हिंगुलाष्टक, त्रेवीसउं, पंचकुल, पुष्करमूल, जवासा मूल, वावची, तुलसी, आ सर्वे स्वादिम नामा चोथा आहारमां छे. प्रवचन सारोद्धारादि ग्रंथो तेमज भाष्यमां आ विचार बतावेल छे. कल्पवृत्तिमां तेने खादिम कहे छे. कोइ अजमाने पण खादिम कहे छे. आ मतांतर छे. आ सर्वस्वादिमनामा आहार छे. वली एलायची तथा कपुरप्रमुखथी वासित करेलुं जल डुविहार प्रत्याख्यानमां पीवुं कल्पे छे. तथा वेशण, वरीआली, सोय, कोठवडी, आमलागांठ, आंवानी गोठली, लींबुनां पान प्रमुख खादिम होवाथी डुविहार प्रत्याख्यानमां लेवां कल्पतां नथी. त्रिविहार प्रत्याख्यानमां मात्र जल पीवुं कल्पे छे. तेमां पण फुकारेलुं पाणी, तथा साकर, कपुर, एलची, कछा, खेर, चूर्णक, सेलक, पाडलादिवासित जल, जो नितारीने तेमज गलीने वापरे तो कल्पे, अन्यथा नहीं.

शास्त्रोमां मद्य, गोल, साकर, खांडप्रमुख स्वादिममां गणेला छे, अने द्राक्ष, शर्करादि जल, तक्र प्रमुखने पानमां गणेलां छे, तो पण ते डुविहार प्रत्याख्यानमां कल्पता नथी. उक्तं च ॥ नागपुरीयगछना करेला प्रत्याख्यानभाष्यमां कह्युं छे के ॥ दक्खा पाणाईयं, पाणं तह साइमं गुडाईयं ॥ पढियं सुयंमि तहविहु, तित्तीजणगंति नायरिअं ॥ १ ॥ स्त्रीनी साथे नोग करवाथी चोविहारनो नंग थतो नथी; परंतु बालकना तथा स्त्रीना होठ मुखमां लइ चुंबन करवामां आवे तो नंग थाय. वली डुविहार प्रत्याख्यानमां तेम पण करे तो नंग थतो नथी. प्रत्याख्यान मात्र आहारनुंज कराय छे, परंतु रोम आहारनुं करवामां आवतुं नथी, तेथी लेपादि करवाथी प्रत्याख्यानमां नंग थतो नथी.

वली नीचेनी वस्तुउ कोइपण प्रकारना आहारमां गणाती नथी तेनां नाम. पंचांग लींवडो, गोमूत्र, गली, कडुं, करीआतुं, अतिविष, कडानी छाल, चीड, चंदन, द्राख, हरिद्रा, रोहणी, उपलोट, वज, त्रिफला, बावलनी छाल, धमासो, नहि, आसंध, रींगणी, एलियो, गुगल, हरडां दल, कपासनी जड, जाल, वेरी, कंथेर, करीर, तेनी जड, पुंआड, बाह-

थोरी, आठी मजीठ, बोल, बीउकाष्ट, कुंआर, चित्रक, कुंदरु प्रमुख जे जे वस्तुउ खावामां अनिष्ट लागे ते सर्व अणाहारिक छे. आ अणाहारी वस्तु रोगादि कष्टमां चोविहार प्रत्याख्यानमां पण खावामां आवे तो नंग थतो नथी. आ प्रमाणे आहारना नेद जाणीने प्रत्याख्यान करे.

पठी दिशाए जवुं, दांतण करवुं, उल उतारवी, कोगला करवा, आ सर्व देशस्नान करी पवित्र थवुं जोइए. आ कथन अनुवादरूप छे; कारण के पूर्वोक्त सर्वकामो सवारमां उठी प्रायः सर्व गृहस्थ करे छे; तेमां शास्त्रोपदेशनी अपेक्षा नथी, कारण के व्यवहारथी स्वतः सिद्ध छे, परंतु तेनो विधि शास्त्रमां कहेलो छे. प्रथम मलोत्सर्ग (दिशाए जवा) नो विधि आ प्रमाणे छे. ॥ यदुक्तं विवेकविलासग्रंथे ॥ मूत्रोत्सर्गं, मलोत्सर्गं मैथुनं स्नानजोजनं ॥ संध्यादिकर्म पूजा च, कुर्याज्जपं च मौनवान् ॥ १ ॥ अर्थः—मुतरवुं, दिशाए जवुं, मैथुन करवुं, स्नान, जोजन, संध्यादि कर्म, पूजा, जाप, आ सर्व मौनपणें करवां; तथा वंने संध्या वस्त्र पेहेरीने करे दिवसे उत्तर सन्मुख मुख राखी लघुशंका करे. वली सर्व नक्षत्रोनुं तेज सूर्यथी अवराइ जाय, अने सूर्यनुं मंडल अर्धवहार आवे त्यांसुधी सवारनी संध्या करे; तथा सूर्य अर्ध अस्त थाय, पठी वे त्रण नक्षत्रो ज्यां सूधी नजरे न पडे, त्यांसुधी सायंकाल कहेवाय छे. वली राखना ढगला उपर, ठाणना ढगला उपर, गायोने वेसवाना स्थानमां, सर्पनी वंबी उपर, ज्यां वहुलोक पुरीषोत्सर्ग करता होय त्यां, उत्तम वृक्षनी नीचे, रस्ता उपरना वृक्षनी हेठल, रस्तामां सूर्य सन्मुख, पाणीनी जगामां, स्मशानमां, नदीना कांठा उपर, जे जगाने स्त्रीउ पूजती होय ते जगाउपर, इत्यादि स्थानोमां मलोत्सर्ग न करे. परंतु ज्यां वेसवाथी कोइ गाल दीए नहि, मारे कुटे नही, पकडी लइ जाय नहि तेवा स्थानमां तेमज ज्यां वेसवाथी पडी जवाय नही, ज्यां जमीनमां पोलाण होय नही, मछर डांसादि त्रसजीव तथा वीजप्रमुख होय नही, एवा उचित स्थानमां मलोत्सर्ग करे. वली गामनी तथा कोइना घरनी समीप मलोत्सर्ग न करे. जे तरफथी पवन आवतो होय, तथा गामनी पूर्व दिशि तरफ पूंठ करीने मलोत्सर्ग न करे. तथा मूत्रनो वेग रोकवो नही. मूत्रनो वेग रोकवाथी नेत्रमां हानि थाय छे, अने दिशानो

वेग रोकवाथी मृत्यु थइ जाय छे. वली वमन रोकवाथी कुष्ट रोग थइ जाय छे. कदापि आ त्रणे वात नही. थाय तो रोग तो अवश्य थशे. श्लेष्म करवामां आवे त्यारे तेना उपर धूड नाखी देवी; कारण के श्री प्रज्ञापना उपांगना प्रथम पदमां लख्युं छे के चौदस्थानमां संमूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे. ते चौदस्थाननां नाम १ पुरीष (विष्टा) मां, २ मूत्रमां, ३ मुखना थुंकमां, ४ नाकना मेलमां, ५ वमनमां, ६ पित्तमां, ७ वीर्यमां, ८ वीर्य रुधिरना संगममां, ९ राध (परु) मां, १० वीर्यना पुद्गल अलग निकली पडे तेमां, ११ जीवरहित कलेवरमां, १२ स्त्री पुरुषना संयोगमां, १३ नगरनी मोरीमां, १४ सर्व अशुचिस्थानमां, जेमके कानना मेलमां, आंखना चीपडामां, बगलना मेलमां; इत्यादि. आ सर्वे चौद बोल मनुष्यना संसर्गवाला ग्रहण करवा अने ज्यारे शरीरथी अलग मेल थाय छे, त्यारे जीव उत्पन्न थाय छे.

वली दांतण पण निरवद्य स्थानमां करे. दातण अचित्त जाणेला वृक्षनुं कोमल करे; दांतोने दृढ करवा वास्ते तर्जनी आंगलीथी दांतोनी वीड घसे; जे दांतनो मेल पडे, तेना उपर धूड नाखी दे. दातण पण केवीरीतें करे ? दातण सीधुं, गांठ विनानुं, जेनो कुचो सारो थाय तेवुं, आगल जतां पातलुं, नानी आंगली समान जाडुं, सारीभूमिमां उत्पन्न थयेलुं, एवुं लइ तेने कनिष्ठा अने अनामिका आंगली वच्चे पकडी, प्रथम जमणी दाढा घसे, पछी डावी दाढा घसे; स्वस्थ थइ उपयोगथी दांतने अने पेढाने पीडा न थाय तेम घसे. उत्तर तथा पूर्वसन्मुख निश्चलासनथी वेसी मौनयुक्त दातण करे. दुर्गंधी, सुकी, पोली, खाटी, खारी वस्तु दांतने न घसे वली व्यतीपात, रविवार, संक्रातिदिन, ग्रहण लागवाने दिन, नवमी, अष्टमी, पडवो, चौदश, पूर्णमासी, अमावास्या, आ दिनोमां दातण न करे. जो दातण न मले तो मुख शुद्धिने वास्ते वार कोगला करे, अने उलतो हमेशां उतारे. दातणनी फाडथी जीभनो मेल हलवे हलवे सघलो उतारीने शुद्ध स्थानमां दातण धोइने पोताना मुखसन्मुख नाखे. वली खांसीवालां, श्वासवालां, तपवालां, अजीर्णवालां, शोकवालां, तृषावालां, मुख पाकेलां, मस्तक, कान, नेत्र, हृदयना रोगवाला, दातण न करे.

मस्तकना केशने निरंतर समारे, जेथी मायामां जू न पडे. पठी तिलक करे. तिलक करती वखते आरीसामां पोतानुं मुख न देखे तेमज मस्तक न देखे तो पांच दिवसनी अंदर पोतानुं मरण जाणवुं. जेणें उपवास पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान कर्युं होय ते दांत धोया विना शुद्ध छे, कारण के तपनुं फल बहुज उत्तम छे. लौकिक शास्त्रोमां पण उपवासादि करे तो दातण विनाज देवपूजा करे एवो पाठ छे, ते कारणथी उपवासादिमां दातण करवानो लौकिकशास्त्रोमां निषेध छे. यदुक्तं विष्णुभक्तिचंद्रोदय ग्रंथे ॥ प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु, मध्यांते नवमीतिथौ ॥ संक्रांतिदिवसे प्राप्ते, न कुर्यात् दंतधावनं ॥१॥ उपवासे तथा श्राद्धे, न कुर्यात् दंतधावनं ॥ दंतानां काष्ठसंयोगो, हंति सप्त कुलानि वै ॥ २ ॥ इत्यादि.

ज्यारे स्नान करे त्यारे पनक कुंथुआदि जीवोथी रहित भूमिमां स्नान करे. भूमि उंची, नीची तथा पोली न होय त्यां स्नान करे. उष्ण प्राशुक जलथी स्नान करे, जो उष्ण जल न मले, तो वस्त्रथी गली प्रमाण संयुक्त शीतल जलथी स्नान करे. व्यवहारशास्त्रोमां लख्युं छे के, नग्न थइने, रोगछतां, परदेशथी आवीने, भोजन कर्या पठी, आभूषण पेहेरीने, कोइने विदाय करीने, मांगलिक कार्य कर्या पठी स्नान न करे; तथा अजाण्या पाणीमां, दुष्प्रवेशजलमां, मेलाजलमां, वृक्षोथी आछादित थयेला, शेवालथी आछादित जलमां स्नान न करे. वली शीतजलथी स्नान करी उष्णभोजन न करवुं जोइए. अने उष्ण जलथी स्नान करी शीत भोजन न करवुं जोइयें. तेलमर्दन निरंतर करवुं जोइए. स्नान कर्या पठी जेनी कांति फीकी देखाय, तथा जेना दांत परस्पर घसाय, अने जेना शरीरमां मडदा जेवी गंध आवे, तेनुं मरण त्रणदिवस अंदर समजवुं; तथा स्नान कर्यापठी, जेना हृदयमां तथा बंने पगोमां तत्काल पाणी शोषाइ जाय, तो तेनुं छ दिवसमां मरण समजवुं. मैथुनसेवीने तथा वमनकर्या पठी थोडीवार पठी स्नान करवुं. मृतकनी चितानो धुमाडो लाग्यो होय तथा मस्तक मुंडाव्युं होय तो गलेला शुद्ध जलथी स्नान करवुं. तेलमर्दनकरी स्नान कर्या पठी उज्वल वस्त्र, आभरण, पहेरवां. प्रयाणकरवाना दिवसे, संग्राममां जतां, विद्यामंत्र साधतां, रातना, सांजे, पर्वदिवसे, नवमेदिवसे, स्नान न करे तथा मस्तक पण न मुंडावे, तथा

पक्षमां एकवार दाढीमस्तकना केश तथा नख दूर करावे, पोताने हाथे तथा दांते नख न उतारे. स्नान करवाथी शरीर पवित्र चैतन्य सुखकर, जावशुद्धिनो हेतु थाय ठे ॥ उक्तं च द्वितीये अष्टकप्रकरणे ॥ जलेन देहदेशस्य, क्षणं यत् शुद्धिकारणं ॥ प्रायोन्यानुपरोधेन, द्रव्यस्नानं तदुच्यते ॥ १ ॥ अर्थः– जलथी शरीरनी त्वचामात्रनीज क्षणमात्र शुद्धि ठे परंतु दीर्घकाल नही. शुद्धि जे थाय ठे ते पण प्रायः ठे. एकांत नथी, कारण के अतिसारादि रोगवालाने क्षण मात्र पण शुद्धि थती नथी. धोवा योग्य मेलथी बीजा नासिकादि अंतर्गत मेल जे ठे ते स्नानथी दूर थता नथी, अथवा पाणीविना बीजा जीवोनी हिंसा न करवाथी जे स्नान ठे ते बाह्य स्नान ठे. जे पुरुष स्नान करी जगवाननी तेमज साधुनी पूजा करे, तेनुं स्नान पण सारुं ठे, कारण के ते स्नान जावशुद्धिनुं निमित्त ठे. स्नान करवामां अप्कायना जीवोनी विराधना ठे, तो पण सम्यक् दर्शननी शुद्धि रूप गुण ठे. ॥ यडुक्तं ॥ पूजाए कायवहो, पडिकुगो सोउ किंतु जिण पूआ ॥ सम्मत्त शुद्धि हेउ, त्ति जावणीयाउ निरवज्जा ॥१॥ अर्थः–कोइ कहे ठे के पूजा करवाथी जीववध थायठे अने जीववध तो शास्त्रमां निषेध करेल ठे, ते कारणथी पूजा न करवी जोइए, तेनो उत्तर एवो ठे के, जिनराजनी पूजा, सम्यक्त्वनी निर्मलता करनारी ठे, ते कारणथी जिनपूजा निरवद्य ठे. ए प्रमाणे देवपूजा वास्ते गृहस्थने स्नान करवा कह्युं ठे, तथा शरीरना चैतन्य सुखवास्ते पण स्नान ठे, परंतु स्नान करवाथी पुण्य थाय ठे एम मानवुं ते मिथ्या ठे, कारण के जे कोइ तीर्थमां जइ जाणीने स्नान करे ठे तेने पण शरीर शुद्धि शिवाय बीजुं कांइ पण फल थतुं नथी. आ वात अन्यदर्शनना शास्त्रोमां पण कथन करेली ठे. उक्तं च ॥ स्कंदपुराणे काशीखंडे षष्ठाध्याये ॥ श्लोक ॥ मृदो जारसहस्रेण, जलकुंजशतेन च ॥ न शुध्यंते दुराचारा; स्नानतीर्थशतैरपि ॥१॥ जायन्ते च म्रियंते च, जलेष्वेव जलौकसः ॥ न च गच्छन्ति ते स्वर्ग, मविशुद्धमनोमलाः ॥ २ ॥ चित्तं समाधिजिः शुद्धं, वदनं सत्य जाषणैः ॥ ब्रह्मचर्यादिजिः कायः, शुद्धोगंगां विनाप्यसौ ॥ ३ ॥ चित्तं रागादिजिः क्लिष्ट, मलीकवचनैर्मुखं ॥ जीवहिंसादिजिः कायो, गंगा तस्य पराङ्मुखी ॥ ३ ॥ परदारा परद्रव्य, परद्रोहपराङ्मुखः ॥ गंगाप्या-

ह कदागत्य, मामयं पावयिष्यति ॥ ५ ॥ जलथी स्नान करवाथी असंख्यजीवोनी विराधना थाय छे, ते कारणथी पुण्य नथी. जलमां जीवना अस्तित्वपणा माटे मीमांसाशास्त्रमां पण सिद्धि छे ॥ यदुक्तं ॥ उत्तरमीमांसायां ॥ लूतास्यतंतुगलिते, ये क्षुद्राः सन्ति जंतवः ॥ सूक्ष्मा भ्रममाणास्ते, नैवयान्ति त्रिविष्टपं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥

स्नान कर्यापछी गुंमडां होय अने राधादि स्रवे तो स्नानकरनारें अंगपूजा करवी नहि, बीजापासे कराववी, अने अग्रपूजा तथा भावपूजा पोते पण करे तो कांइ दोष नथी. थोडीपण अपवित्रता होय तो देव स्पर्श न करे. स्नान कर्यापछी पवित्र, मृदु, गंध, काषायिकादिवस्त्र पोतीआं छोडीने पहेरे. पाणीथी भींजेला पगोथी धरतीने नही स्पर्श करतां, पवित्र स्थानमां जइ उत्तर सन्मुख मुखकरी, सारां, मनोहर, नवां वस्त्र, फाट्याविनानां, शिवायाविनानां, वर्णमां धोलां, एवां वस्त्र पहेरे. जे वस्त्र केडमां पहेरेलुं होय, तथा जे वस्त्र पहेरी दिशायें गया होय, तथा जे वस्त्र पहेरी मैथुनसेवन करेल होय, ते वस्त्र पहेरी पूजादि न करे; वली एक वस्त्र पहेरी भोजन तथा देवपूजादि न करे. स्त्री कांचली पहेर्याविना देवपूजा न करे. ए प्रमाणे पुरुषने बे वस्त्र तथा स्त्रीने त्रण वस्त्र पहेर्या विना पूजा करवी कल्पती नथी. देवपूजामां धोतीयुं अत्यंत निर्मल धोलुं करवुं जोइए, निशीथचूर्णी तथा श्राद्धदिनकृत्य प्रमुख ग्रंथोमां ए प्रमाणेज लख्युं छे. तथा पूजा षोडशमां लख्युं छे के, रेशमि आदि जे सुंदर वस्त्र, लाल, पीलां होय ते पण पूजामां पहेरे तो ठीक छे. तथा " एक साडियं उत्तरासंगं करेइ " इत्यादि आगम प्रमाणथी उत्तरासंग अखंडवस्त्रनुं करे. बे कटके शीवेलुं वस्त्र पूजामां न कल्पे. वली रेशमी वस्त्र पहेरी भोजन करे, पछी मनमां विचारे के आ तो सदा पवित्र छे, एवा रेशमि वस्त्रथी जिनपूजा न करे. तथा जे वस्त्र पहेरी पूजा करे, ते वस्त्रने पण पहेरवाने अनुसारे वारंवार धोवरावे. धूपदइ पवित्र करे. धोतीयुं थोडावखतज पहेरवुं जोइए, ते धोतीयाथी परसेवो के श्लेष्म दूर न करवां जोइये. कारण के तेम करवाथी अपवित्रता थाय छे. वली पहेरेलावस्त्रोनी साथे पूजानां वस्त्रो अडाडवां न जोइए. बीजानां पेहेरेलां धोतीयां पहेरवां न जोइयें. वली बाल, वृद्ध, स्त्रीना पहेरवामां

आव्यां होय ते वस्त्र तो विशेषें करी न पहेरवां जोइए. वली सारा स्थानथी उत्तम तथा कुशलमाणस पासे, पवित्र वासणथी आछादनसंयुक्त, रस्तामां लाववाना विधिसहित, पाणी तथा पुष्प पूजा वास्ते मगाववां जोइए. पुष्प लावनारने सारी रीतें किंमत आपी प्रसन्न करवो जोइये. पछी मुखकोश बांधी, पवित्रस्थानमां, जेमां कोइ जीव न पड्या होय एवा शोधेला केशर, कर्पूरादिथी मिश्रचंदन घसे, शोधेलो सुंदर धूप, दीप, अखंड चोखा, अस्पर्श्यां प्रशंसा करवा योग्य नैवेद्य, फलादि सामग्री मेलवे. आ प्रमाणे द्रव्यथी पवित्र थई, तथा भावथी पवित्रता, राग द्वेष, कषाय, ईर्ष्या रहित थइ, तथा इहलोक, परलोकना सुखोनी इछा रहित थई, अने कुतूहल, चपलतादि त्यागकरी, एकाग्र चित्ततारूप भाव शुद्धि करे ॥ उक्तंच ॥ मनोवाक्कायवस्त्रोर्वी, पूजोपकरणस्थितेः ॥ शुद्धिः सप्तविधा कार्या, श्रीअर्हत् पूजनक्षणे ॥ १ ॥

ए प्रमाणे द्रव्यभावथी शुद्ध थई जिनमंदिरमां दक्षिणदिशाए पुरुष अने वामदिशाए स्त्री, यत्नपूर्वक प्रवेश करे. प्रवेशना अवसरमां दक्षिण पग प्रथम धरे, पछी सुगंधवाला, मीठां सरसद्रव्योथी, पराङ्मुख वामस्वर चालतां, मौनपणे देवपूजा करे. वली त्रण नैषेधिकी करण त्रण प्रदक्षिणा विधिथी पवित्र पाटउपर पद्मासनादि सुखासनपर बेसी, चंदनना ठाममांथी चंदन बीजी कटोरीमां तथा हथेलीमां लई मस्तकमां तिलक करे. तथा हस्तकंकण श्री चंदनचर्चित, धूपित हस्तथी जिन अर्हतने पूजी, १ अंग पूजा, २ अग्रपूजा, ३ भावपूजा, जेनुं स्वरूप आगल कथन करवामां आवशे, ते प्रमाणे पूजी, प्रत्याख्यान जे पूर्वे कर्युं हतुं, ते यथाशक्ति देवनी साक्षीए उच्चारे, त्यार पछी विधिथी मोटा पंचायती देरासरमां जई पूजा करे, ते आ प्रमाणे विधि सहित करे.

जो राजा प्रमुख महाऋद्धिवाला पूजा करवा जाय तो सर्वऋद्धि, सर्व शोभा, सर्वयुक्ति, सर्वसेना प्रमुख मेलवी अतिशयसहित जिनमतनी प्रभावना वास्ते महाआडंबरपूर्वक जिनमंदिरमां पूजा करवा वास्ते जाय. जेम दशार्णभद्र राजा श्री महावीर भगवंतने वांदवावास्ते सर्व सामग्री मेलवी गया हता तेम जाय.

वली जे सामान्यऋद्धिवाला होय ते अभिमानरहित लोकापहास्य-

तजीने यथायोग्य आडंबर सहित मित्र, नाइ, पुत्रादि सहित परिवार मेलवी जाय. जिनमंदिरमां प्रवेश करतां पहेलां १ पुष्प तंबोल प्रमुख सरसडुर्वादि त्यागे, २ ठरी, पावडी, मुगट, हाथी प्रमुख सचित्त अचित्त वस्तु शरीरना नोगने त्यागे, ३ मुगट शिवाय बाकीनां आनरण प्रमुख अचित्त वस्तु न त्यागे, एकवडा वस्त्रनुं उत्तरासंग करे, ४ जिनेश्वर नगवाननी मूर्त्ति देखी अंजली बद्ध थइ मस्तक उपर लगावी ॥ नमो जिणाणं ॥ एवो पाठ कहे, ५ मन एकाग्र करे, ए प्रमाणे पांच अनिगम साचवी नैपेधिकीपूर्वक प्रवेश करे.

जो राजा जिनमंदिरमां प्रवेश करे तो तत्काल राज्यचिह्न दूर करे. १ तलवार, २ ठत्र, ३ खारी, ४ मुगट, ५ चामर. आ पांचे राज्यचिह्न त्यागे. अग्रद्वारमां प्रवेश करतां घरव्यापारनो निपेध करवावास्ते त्रण नैपेधिकी करे, परंतु त्रणे निस्सीहिनी एक निस्सीहि गणवामां आवे, कारण के प्रथमनी निस्सीहिथी मात्र घर व्यापारनो निपेध करवामां आवे ठे; त्यारपठी मूलबिंबने नमस्कार करीने कल्याणनी इछावाला पुरुपें सर्व कृत्य दक्षिण बाजुयें करवां. ते कारणथी मूलबिंबनी दक्षिण बाजुएथी चालतां, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, आ त्रणेनी आराधना निमित्तें त्रण प्रदक्षिणा आपे. प्रदक्षिणा देतां थकां समवसरणस्थ चाररूपसंयुक्त जिनेश्वर नगवानने ध्यावे, गनारामां पेसतां वाम दक्षिणदिशायें जे बिंब होय तेने नमस्कार करे. ते कारणथी सर्वमंदिरमां चार तरफना समवसरणने आकारें त्रण तरफ त्रणबिंब स्थापन करवामां आवे ठे, एम करवाथी अरिहंतनी पाठल बेसवानो जे दोप होय ते दूर थइ जाय ठे; पीठ कोइ पण पासे रहेती नथी. त्यारपठी चैत्यप्रमार्जन प्रमुख जे आगल लखवामां आवशे ते करे, पठी सर्व प्रकारनी पूजा सामग्री वास्ते, तथा देहरा समारवाना कामने निपेध करवावास्ते बीजी निस्सीहि मुख्यमंडपादिमां करे, पठी मूलबिंबने त्रण प्रणाम करी पूजा करे. नाष्यकारें पण कह्युं ठे के त्रणनिस्सीहि करी, प्रवेश करी, मंडपमां जिनेश्वर नगवानने नूमितपर सिंहासनमां स्थापन करी, हस्तजोडी, विधिथी त्रण वार प्रणाम करे, त्यारपठी हर्पथी उल्लसित थइ मुखकोश बांधी जिनप्रतिमा उपरनां निर्माल्य फुल प्रमुख मोरपीठीथी दूर करे. जिनमंदिरनुं प्रमार्जनपण पोते

करे वा, बीजा पासे करावे. पछी जिनबिंबनी पूजा विधिपूर्वक करे. मुख कोश आठ पडनुं करे, जेथी मुख तथा नासिकानो श्वास रुंधाय. वर्षाऋतुमां निर्माल्यमां कुंथुआदि जीवपण उत्पन्न थाय छे, तेथी निर्माल्य अने स्नात्रजल जुदांजुदां पवित्र स्थानमां नाखे. तेथी आशातनापण दूर थाय छे. कलशधारण करी जल पूजा करती वखते आ प्रमाणे भावना भावे.

हे स्वामिन्! बालपणामां मेरुशिखरपर सुवर्णकलशें करी इंद्रप्रमुख देवताउयें आपने स्नान कराव्युं हतुं, तेउने धन्य छे, जेउये आपनां दर्शन कर्यां हतां. इत्यादि भावना भावी यत्नपूर्वक बालाकुंचिथी जिनबिंब उपरथी चंदनादि उतारे, पछी जलथी प्रक्षालन करीने बे अंगलूहणाथी जिनप्रतिमाने निर्जल करे. पछी पग, जानु, कर, मस्तकें पूजा अनुक्रमें नवअंगमां चंदनादिथी करे. कोइ आचार्य कहे छे के प्रथम मस्तकमां तिलक करी पछी नवअंगें पूजा करे. श्रीजिनप्रभसूरिकृतपूजाविधि ग्रंथमां लख्युं छे के, सरस, सुरभि चंदनथी देवनी, दक्षिणजानु, दक्षिण स्कंध, ललाट, वामस्कंध, वामजानु, आ क्रमें पूजा करे, हृदयप्रमुखमां पण पूजा करे तो नवअंगनी पूजा थाय छे. नवअंगमां पूजा करी, पांचे वर्णनां सुगंधमय अखंड पुष्पो, चंदनसुगंधथी वासित करी, प्रभुपर चढावे. प्रथम कोइयें मोटा मंडाणथी पूजा करी होय अने पोतानी पासे पूजानी तेवी सामग्री न होय तो प्रथमनी पूजा उतारे नही; कारण के विशिष्ट पूजा देखवाथी भव्य जीवोने जे पुण्यानुबंधि पुण्य थतुं, तेनो अंतराय थइ जाय छे; ते कारणथी प्रथमनी पूजाने विशेष शोभनीय करे. आ कथन बृहद्भाष्यमां छे.

वली पूजा उपर पूजा करवी ते निर्माल्य लक्षण नहि होवाथी, निर्माल्य नथी. जे द्रव्यो भोगविनष्ट छे, तेज गीतार्थोयें निर्माल्य कथन करेल छे, आभूषणो वारंवार पहेरावबामां आवे जे, निर्माल्य थतां नथी. नहीं तो गंध, वस्त्रथी एकसो आठ जिनप्रतिमानां अंग केवी रीतें लुहाय? ते कारणथी जिनबिंब आरोपित जे जे वस्तु शोभारहित, सुगंधरहित देखाय, अने जे भव्य जीवोने प्रमोदनो हेतु न होय, तेनेज बहुश्रुतो निर्माल्य कहे छे. आ कथन संघाचार वृत्तिमां लखेल छे. चढावेला चोखा

कोइ आचार्य निर्माल्य कहे छे, अने कोइ तेम कहेता नथी; तत्त्व शुं छे ? ते केवली जाणे.

चंदन, पुष्पादि पूजा एवी रीतें करवी के जेथी भगवाननां मुख नेत्रादि ढंकाइ जाय नही. वली बहु शोभनीय लागे तेवी करवी. कारण के देखनारने प्रमोद तथा पुण्यादिनी वृद्धि थाय.

पूजा त्रण प्रकारनी छे. १ अंगपूजा, २ अग्रपूजा, ३ भावपूजा. तेमां निर्माल्य दूर करवां, प्रमार्जन करवां, अंगप्रक्षालन करवुं, वालाकुंची करवी, कुसुमांजलि करवी, पंचामृत स्नात्रथी शुद्धोदकधारा देवी, धूपित स्वछ, मृदुगंध कषायकादि वस्त्रथी अंगलूहणां करवां, बरास कुंकुममिश्र गोशीर्ष चंदन प्रमुखथी विलेपन करवुं, गोरोचन कस्तूरिथी तिलक करवां, सुगंधमयपुष्पोथी आंगी रचवी, बहु मूल्यवान सुवर्ण, रत्न, माणेक मोती प्रमुखना अलंकार, आभरण पहेरावबां. जेम श्रीवस्तुपालें पोते भरावेला सवालाख बिंबो वास्ते, तथा श्रीशत्रुंजयनी उपर सर्वबिंबोनां रत्न, सुवर्णनां आभरण कराव्यां हतां, तथा दमयंतीए पाछला भवमां अष्टापद पर्वत उपर चोवीश तीर्थंकरोने तिलक कराव्यां हतां, तेवी रीतें करावे. कारण के प्रतिमाजीनी जेटली उत्कृष्ट सामग्री मेलववामां आवे, तेटलीज अधिक शुभ भावनी वृद्धि भव्यजीवोने थाय छे; तथा १ ग्रंथिम २ वेष्टिम, ३पूरिम, ४ संघातिमरूप चतुर्विध प्रधान अम्लान विधिथी लावेलां शतपत्र, सहस्रपत्र, मोगरा, जाइ, जुइ, चंपक, गुलाबादि पुष्पविशेषनी माला, मुगट, शेहरा आदिथी आंगी रचना करे. फूलना चंदरवा, जाली, जरूखा करे, जेथी अत्यंतप्रमोद थाय. वली जिनेश्वर भगवानना हाथमां बिजोरां, नालियर, सोपारी, नागरवेल, मोहोर, रूपीआ, लाडु प्रमुख राखे. वली वासप्रदेप करे; तथा सुगंधमय दशांग धूप उखेवे. आ सर्व अंगपूजामां आवे छे. महाभाष्यमां कह्युं छे के ॥ गाथा ॥ न्हवण विलेवण आहरण, वत्थ फल गंध धूप पुप्फेहिं ॥ कीरइ जिणंगपूया, तत्थ विही एस नायव्वो ॥ १ ॥ वत्थेण बंधिऊणना, संअहवा जहासमाहीए ॥ वज्जेयव्वंतुतया, देहमवि कंडुअणमाइ ॥ २ ॥ अन्यत्रापि गाथा ॥ कायकंडुअणं वज्जे, तह खेल विगिंचणं ॥ थुइथुत्त भणणं चेव, डुअंतो जगबंधुणो ॥२॥ देव पूजनना अवसरमां मुख्यवृत्तिए तो मौनज रहेवुं जोइ-

ये. जो तेम न रही शके तो पापकारी वचन तो सर्वथा त्यागे. पापनी संज्ञापण वर्जे, कारण के प्रथम निस्सीहि करी गृहव्यापारादिनो निषेध करेल छे. मूलबिंबनी विस्तार सहित पूजा करे. पछी अनुक्रमें सर्व बीजां बिंबोनी पूजा करे, द्वारबिंब तथा समवसरणबिंबोनी पूजा, मूलबिंबनी पूजा कर्यापछी गभारार्थी निकलती वखत करवी जोइये एवो संभव छे, परंतु प्रवेश करतां तो मूलबिंबनीज पूजा करवी उचित लागे छे. संघाचारवृत्तिमां एवो लेख छे तेथी मूलनायकनी पूजा सर्वबिंबोथी पहेलां तथा सविशेष करवी जोइये. ॥ उक्तं ॥ उचिअत्तं पूआये, विसेस करणं तु मूलबिंबस्स ॥ जंपडइ तत्थ पढमं, जणस्सदिठी सहमणेणं ॥ १ ॥

शिष्य प्रश्नः— चंदनादिथी प्रथम एक मूलनायकने पूजवा अने बीजा बिंबोनी पछी पूजा करवी, आ तो स्वामि, सेवक भाव कर्यो. तेवो भाव लोकनाथ तीर्थंकरमां नथी; वली एक बिंबनी बहुज आदर सत्कारथी पूजा करवी, अने बीजां बिंबोनी अल्पपूजा करवी, आ तो अमने भारे आशातना थती मालम पडे छे.

गुरुउत्तरः— ज्ञानवंत पुरुषोने अर्हत प्रतिमाउमां नायक, सेवकनी बुद्धि होती नथी, कारण केसर्व प्रतिमाजीना एक सरिखाज परिवार, प्रातिहार्य प्रमुख देखाय छे, आ व्यवहारमात्र छे, जे बिंब प्रथम स्थापन करवामां आवेल होय, ते मूलनायक छे, आ व्यवहारथी शेष प्रतिमाउनो नायकभाव दूर थतो नथी, अथवा तो तेमने लघुता भाव प्राप्त थतो नथी.

एक प्रतिमाजिने वंदन, पूजा, नैवेद्य चढाववां, आ उचित प्रवृत्तिवाला पुरुषने आशातना नथी. जेम मृत्तिकानी बनावेली प्रतिमानी पूजा फूलादि रहित उचित छे, अने सुवर्ण प्रमुखनी प्रतिमाने स्नान विलेपनादि उचित छे. वली एकज प्रतिमाना कल्याणक प्रमुखना महोत्सव आडंबरथी करवामां आवे ते बीजी प्रतिमाउने आशातनाना कारण थता नथी, जेम धर्मीपुरुषने वंदन, पूजन करतां बीजा उत्तम जीवोनी आशातना गणाती नथी तेम; आ प्रमाणे उचित प्रवृत्ति करतां जेम आशातना थती नथी. जिनमंदिरमां जिनबिंबनी जे पूजा करवामां आवे छे, ते तीर्थंकरोने वास्ते पूजा करवामां आवती नथी, परंतु पोताना आत्माने, पूजा शुभभावोनुं निमित्तकारण होवाथी करवामां आवे छे; जे बलवान्

निमित्त कारणथी आत्मानां उपादान कारणो स्मरणमां आवे छे, तेमज बीजाउने बोधि (सम्यक्त्व) नी प्राप्ति थाय छे. कोइ जीवतो श्री जिनमंदिरने देखीने प्रतिबोध पामे छे, कोइ जीव जिनप्रतिमानुं प्रशांतरूप देखी बोधिबीज पामे छे, कोइ पूजानो महिमा देखी, अने कोइगुरुना उपदेशथी प्रतिबोधि पामी जाय छे. ते कारणथी चैत्यजिनबिंबनी रचना बहुजसुंदर, उत्तम प्रकारनी करवी जोइए, अने पोतानी शक्ति अनुसारें मुख्यबिंबनी विशेष, अद्भुत शोभा करवी जोइए.

गृह देरासर तो हालपण, पीतल, ताम्र, रुपामय करावबाने समर्थ छे. ज्यारे पीतलप्रमुखना बनाववानी शक्ति न होय तो दांतादिमय पीतल तरेह रंगावे, कोरणीविशिष्ट काष्टादिमय करावे. घर चैत्य तथा चैत्यसमुच्चयमां निरंतर सर्वस्थलें प्रमार्जन करावे, तेल प्रमुखथी काष्ट रंगावे, जेथी घुण न लागे. वली सामान्यथी खडी प्रमुखथी धोलावे. श्री तीर्थंकरादिना पंचकल्याणक प्रमुखनां चित्रो करावे. समग्रपूजानां उपकरणो करावे, पडदा, कनात, चंदरवादि आपे, एवां एवां कामो करे के जेथी जिनमंदिरादिनी अधिक अधिक शोभा थाय. घरदेरासरमां तेमज तेनी उपर धोतीआं प्रमुख न नाखे, घरदेरासरनी पण चोराशी आशातना टाले. पीतल वा पाषाणनी जे प्रतिमा होय ते सर्वबिंबोनुं एक अंगलूहणाथी पाणी लूहे. पछी निरंतर बीजां सुकोमल अंगलूहणाथी सर्व बिंबोनुं पाणी लूहे, वारंवार सर्व अंगोउपर अंगलूहणां फेरवी पाणीनी असर बिलकुल रहेवा न दे. ते प्रमाणे करवाथी प्रतिमा उज्वल थती जाय छे. ज्यां ज्यां प्रतिमानां अंगोपांग पर जल रहि जाय, त्यां त्यां प्रतिमाने श्यामता थइ जाय छे.

नव, पंचतीर्थी, चोवीशी पट्टादिमां स्नानजलनो प्रतिमाजीने परस्पर स्पर्श थवाथी आशातना थाय छे, एवी आशंका न करवी जोइए. अशक्य परिहार होवाथी. १ एक अर्हंतनी प्रतिमा होय, तेनुं नाम व्यक्त छे. २ एकज पाषाणादिमां भरत ऐरवतक्षेत्रनी चोवीशी बनावे, तेनुं नाम क्षेत्र प्रतिमा छे. ३ तेवीजरीतें एकसो सित्तेर प्रतिमाने महाख्य कहे छे. ४ फूलनी वृष्टि करतां जे माला घर देवता छे, तेनुं रूप पंचतीर्थी उपर बनावे छे, वली जिनप्रतिमाने न्हवण करतां पेहेलां मा-

लाधरने पाणीनो स्पर्श थयापठी जिनबिंब उपर ते पाणी पडे ठे. तेमां दोष नथी. आ वृद्धोनी आचरणा ठे. तेवीजरीतें चोवीशी गट्टा आदिमां पण जाणी लेवुं. ग्रंथोमां पण एवीज रीति देखवामां आवे ठे ॥ जाष्यकारनुं वचन अहींयां लखीयें ठीयें. जिनराजनी ऋद्धि देखावावास्ते कोइ जक्तजन एक प्रतिमा बनावे ठे, साथे प्रगटपणे अष्टमहाप्रातिहार्य देवागम सुशोजित रचावे ठे. २ दर्शन, ज्ञान, चारित्रनी आराधनावास्ते कोइ त्रण तीर्थी प्रतिमा वनावे ठे. ३ कोइ जक्तजन पंच परमेष्टिना आराधन निमित्तें उद्यापन (उजमणा) मां पंचतीर्थी प्रतिमा जरावे ठे. ४ चोवीश तीर्थंकरोनां कल्याणक, तप उजमणां वास्ते जरतक्षेत्रमां जे ऋषजादि चोवीशे तीर्थंकरो थया ठे, तेउना वहुमान वास्ते कोइ चोवीशी वनावे ठे. कोइ जक्तिथी मनुष्यलोकमां उत्कृष्टा एककालमां एकसो सित्तेर तीर्थंकर विहरमाननी एकसो सित्तेर प्रतिमा वनावे ठे; ते कारणथी त्रण तीर्थी, पांचतीर्थी, चोवीशी आदिनुं बनाववुं युक्तियुक्त ठे. आ पूर्वोक्त सर्व अंगपूजा ठे.

हवे अग्र पूजानुं वर्णन करीये ठीये. रूपाना अथवा सोनाना वा धोला अक्षत, सरसव प्रमुखथी अष्टमंगलादि आलेखन करे, जेम श्रेणिकराजा दररोज एकसो आठ सोनाना जवथी त्रिकाल जगवाननी प्रतिमा सन्मुख साथीउं करता हता तेम करे; अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी आराधनावास्ते अनुक्रमें पाटला उपर अक्षतना त्रण पुंज करे तथा साथीआ करे. तथा अशन ते एक रोटली जातप्रमुख, २ शेलडी रसप्रमुख ते पान, ३ पक्वान्नादि ते खादिम, ४ तंबोलादि ते स्वादिम. आ चारे प्रकारनां नैवेद्य जगवान् सन्मुख ढोवे. तथा उत्तम प्रकारना लीलां फल तथा सुकां फल. दाडिम, सफरजन, संतरां, नालीअर, वदाम प्रमुख प्रजु आगल ढोवे. वली गोशीर्ष चंदनादिथी तथा पुष्पप्रकरथी विलेपन पूजनकरी आरति प्रमुख दीपक पूजा करे. आ सर्व अग्रपूजा ठे. ॥ यद्जाष्यं ॥ गाथा ॥ गंधव नट्ट वाइय, लवण जलारत्तिआइ दीवाइ ॥ जं किच्चं सव्वंपिउं, अरई अग्गपूआए ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजातो दररोज करवी ते सुखदायक ठे, तेनुं फलपण मोटुं ठे. कोरुं अनाज तथा रांधेलुं अनाज पण चढावे. लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं ठे के ॥ धूपोदहति पापानि,

दीपोमृत्युविनाशकः ॥ नैवेद्यं विपुलं राज्यं, सिद्धिदात्री प्रदक्षिणा ॥ १ ॥ नैवेद्य चढाववुं, आरति करवी इत्यादि आगममां पण लखेल छे. "कीरइ वलि" एवो पाठ आवश्यकनिर्युक्तिमां छे. तथा निशीथचूर्णीमां पण वलि चढाववी एम लखेल छे. वली कल्पभाष्यमां पण लखेलुं छे के, जे नैवेद्य जिनप्रतिमा आगल चढाववावास्ते कर्युं होय, ते साधुने न कल्पे. तथा प्रतिष्ठाप्राभृतथी रचेली, श्रीपादलिप्त आचार्यकृत प्रतिष्ठापद्धतिमां लख्युं छे के, आरति उतारवी, मंगल दीवो कर्यापछी चार स्त्री मली नैवेद्य, गीतगानविधिथी करे. ॥ तथा च महानिशीथे तृतीये अध्ययने ॥ अरिहंताणं भगवंताणं गंधमल्लपईव समज्जणोवलेवण विचित्त वलिवत्थ धूवइएहिं पूआ सक्कारेहिं पइदिण मच्चणंपि कुवाणा तित्थुपणं करेमोत्ति ॥ इति अग्रपूजा.

हवे भावपूजानुं स्वरूप लखीये छीये. द्रव्यपूजानो व्यापार निषेधवा वास्ते त्रीजी निस्सीहि त्रणवार करे. श्रीजिनेश्वर भगवाननी दक्षिण बाजुयें पुरुष, अने डावी बाजुयें स्त्री रहे. आशातना टालवावास्ते मंदिरमां जघन्यथी भूमिनो संभव होतां नव हाथ प्रमाण, अने घरदेरासरमां जघन्यथी एक हाथ प्रमाण, अने उत्कृष्टथी साठ हाथ प्रमाण अवग्रह छे. तेनी वहार वेसीने चैत्यवंदन विशिष्ट काव्योथी करे. श्रीनिशीथमां, वसुदेवहिंडमां, तथा अन्यशास्त्रोमां, श्रावकोयें पण कायोत्सर्ग, स्तुति आदि करी चैत्यवंदन करेल छे, एवा पाठ छे. भाष्यमां चैत्यवंदन त्रण तरेहथी करवुं कहेलछे. एक जघन्य चैत्यवंदन, ते वे हाथ जोडी, मस्तकनमावी, प्रणाम करवा, यथा "नमो अरिहंताणं" इति, अथवा श्लोकादि वोली नमस्कार करवो, अथवा एक शक्रस्तव वोले तो जघन्य चैत्यवंदन थाय. वीजुं मध्यम चैत्यवंदन, ते चैत्यस्तव दंडकयुगल 'अरिहंत चेइआण' इत्यादि कायोत्सर्ग कर्या पछी एकस्तुति कहेवी ते. त्रीजुं उत्कृष्ट चैत्यवंदन, ते पंचदंड, १ शक्रस्तव, २ चैत्यस्तव, ३ नामस्तव, ४ श्रुतस्तव, ५ सिद्धस्तव, प्रणिधान, जयवीयराय इत्यादि. वली कोइ आचार्यनो एवो मत छे के एकशक्रस्तव करवाथी जघन्य चैत्यवंदन थायछे, वे त्रणशक्रस्तव करवाथी मध्यम चैत्यवंदन थायछे, अने चार अथवा पांच शक्रस्तव करवाथी उत्कृष्ट चैत्यवंदन थायछे. तेनोविधि चैत्यवंदन भाष्यथीजाणवो.

चैत्यवंदन निरंतर सातवखत करवुं, एम महानिशीथमां साधु वास्ते कहेलछे. श्रावकनेपण उत्कृष्टथी सातवखत चैत्यवंदन करवा कह्युंछे. १प्रतिक्रमणमां, २ मंदिरमां, ३ आहार करतां पेहेलां, ४ दिवस चरित्र करतां, ५ देवसी प्रतिक्रमणमां, ६ सूती वखत, ७ सूइ उठतां वखत. आ प्रमाणे सातवखत चैत्यवंदन साधुवास्ते कहेल छे. श्रावक जो आठ पहोरमां प्रतिक्रमण करतो होय तो ते निश्चयें सातवार चैत्यवंदन करे; वे प्रतिक्रमणमां वे चैत्यवंदन करे, त्रीजुं सुतीवखत, चोथुं उठतीवखत, अने त्रणकाल पूजाकर्या पछी त्रणवार. एम सात वार श्रावक चैत्यवंदन करे. जे श्रावक एकवार प्रतिक्रमण करे, ते छवार चैत्यवंदन करे, जे प्रतिक्रमण न करे ते पांचवार चैत्यवंदन करे; जे सूतां उठतां पण चैत्यवंदन न करे ते त्रण वाार करे. जो नगरमां वहु जिनमंदिरो होय तो सातथी अधिक पण चैत्यवंदन करे. वली जो त्रणकाल जिनपूजा न करी शके तो त्रिकाल देववंदन करे. कारण के श्रीमहानिशीथमां लख्युं छे के जेने गुरु प्रथम जैनमतनी श्रद्धा करावे, तेने प्रथम आ प्रमाणे नियम आपे. सवारमां जिनप्रतिमाना दर्शन कर्या विना पाणीपण पीवुं नही. मध्याह्ने ज्यांसुधी जिनप्रतिमा अने साधुनी वंदना न करे, त्यांसुधी भोजन करवुं नही. संध्या समय चैत्यवंदन कर्याविना शय्या उपर पग मुकवो नहि.

वली गीत नृत्य जे अग्रपूजामां वर्णवेलां छे, ते भाव पूजामां पण आवी शकेछे. गीत, नृत्य मुख्यवृत्तियें तो श्रावक पोतेज करे, जेम निशीथ चूर्णीमां उदायिन राजानी राणी प्रभावतीनुं व्याख्यान छे तेम. वली पूजा करवाना अवसरमां श्रीअरिहंतनी त्रण अवस्थानी कल्पना करे, तेमां स्नान करती वखत छद्मस्थ अवस्थानी कल्पना करे; आठ प्रातिहार्यनी शोभा करतां के केवली अवस्थानी कल्पना करे; पर्यंकासन, कायोत्सर्गासन देखी सिद्ध अवस्थानी कल्पना करे. छद्मस्थ अवस्था पण त्रण तरेहथी कल्पे, एकजन्म अवस्था, वीजी राज्य अवस्था, त्रीजी साधुपणानी अवस्था. स्नाननी वखत जन्म अवस्था कल्पे; माला, आभरण पहेरावती वखत राज्य अवस्था कल्पे, दाढी, मुछ, मस्तकना वालो न होवाथी साधु अवस्था विचारे. तेमां साधु, केवली तथा मोक्ष अवस्थाने वंदना करे.

वली पूजा पंचप्रकार, अष्टप्रकार, अने धनवान् होय तो सर्वप्रकारथी

पूजा करे. तेमां पुष्प, अक्षत, गंध, दीप, धूप, आ पंचप्रकारें पूजा जाणवी, अने जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आ अष्टप्रकारें पूजा जाणवी. ते अष्टविध कर्मने मथनारी छे. वली स्नात्र, विलेपन, वस्त्र, आभूषणादि, फल, दीप, गीत, नाटक, आरति आदि करे, ते सर्वोपचार पूजा छे ॥ इति बृहद्भाष्ये ॥

वली पूजाना त्रण भेद छे. १ पोते कायाथी पूजानी सामग्री लावे, २ वचनोथी बीजा पासे मगावे, ३ मनथी सुंदर पुष्प, फल, प्रमुखथी पूजा करे. एम काया, वचन अने मन, त्रणे योगथी, करे, करावे, अनुमोदे. आ त्रण प्रकारें पूजा समजवी.

वली एक फल, बीजी नैवेद्य, त्रीजी थुइ, चोथी प्रतिपत्ति ते वीतरागनी आज्ञापालन रूप, आ चार प्रकारें पूजा, यथाशक्तियें करे. ललितविस्तरादिग्रंथोमां "पुषामिषस्तोत्र प्रतिपत्ति" अर्थात् फूल, नैवेद्य, स्तोत्र अने आज्ञा आराधनीय, आं उत्तरोत्तर प्रधान छे ॥ इत्यागमोक्तं पूजाभेदचतुष्टयं ॥

वली पूजाना बे प्रकार छे, १ द्रव्यपूजा, २ भावपूजा. पुष्पादिथी जिनराजनी पूजा करवी, ते द्रव्यपूजा छे, अने जिनेश्वरनी आज्ञा पालवी ते भावपूजाछे. वली पुष्पारोहणं, गंधारोहणं इत्यादि सत्तर भेदथी, तथा स्नात्र विलेपनादि एकवीश भेदथी पूजा छे; परंतु अंगपूजा, अग्रपूजा,अने भावपूजा, आ त्रणे पूजा, सर्वपूजाउनी अंतर्भावीछे. तेमां पूजाना सत्तर भेद लखीये छीये.

१ स्नात्र करवुं २ विलेपन करवुं, ३ चक्षुजोडा वा वस्त्रयुगल, ४ वास सुगंध, ५ पुष्पारोहण, ६ पुष्पनी माला, ७ पंचरंगी फूल चढाववां, ८ भीमसेनी बरासनुं चूर्ण छांटवुं, ९ आभरण पहेराववां, १० पुष्पना गृह बनाववां, ११ फूलना पगर, वरसाद करवो, १२ पुष्पनी आंगी रचन, १३ अष्टमंगल, अक्षत, १४ धूप पूजन, १५ गीत, १६ नृत्य, १७ वाजित्र, इति.

हवे पूजाना एकवीश भेद लखीये छीये. तेनुं वर्णन करतां पहेलां पूजा करनारें शुं शुं नियमो जालववा जोइये तेनुं स्वरूप लखीये छीये. १ पूजा करनार पूर्वदिशि तरफ मुख करी स्नान करे २ पश्चिम दिशातरफ

मुख करी दातण करे, ३ उत्तर दिशासन्मुख उभा रही श्वेत वस्त्र पहेरे, ४ पूर्वोत्तर मुख राखी पूजा करे, ५ घरमां प्रवेश करतां डावीबाजुये शल्य रहित भूमिमां देरासर करावे, ६ भूमिथी उंचुं दोढ हाथ राखी देरासर करावे. जो देरासर नीची भूमिकामां करावे तो तेनो वंश दिवसें दिवसें नीची स्थितिमां उतरतो जशे. ७ दक्षिण दिशि तथा विदिशि सन्मुख मुख न करे. ८ घरदेरासरमां पश्चिम सन्मुख मुख करी पूजा करे तो, चोथी पेढीमां संताननो उच्छेद थाय. ९ दक्षिण दिशितरफ मुख करी पूजा करे तो संतानहीन थाय. १० अग्निकोणें करे तो धनहानि थाय. ११ वायुखुणे करे तो संतान न थाय. १२ नैरुत्य खुणे कुलक्षय थाय. १३ ईशान खुणे करे तो, एकस्थलें रेहेवानुं न बने. १४ बंने पग, बंने जानु, बंने हाथ, बंने स्कंध, मस्तक आ नव अंगमां अनुक्रमें पूजा करे, १५ चंदन शिवाय पूजा करे नहीं. १६ कंठमां, हृदयमां, नाभिमां तिलक करे. १७ नवे अंगमां नवतिलकथी निरंतर पूजा करे. १८ सवारमां प्रथम वासपूजा करे. १९ मध्याह्ने पुष्पथी पूजा करे. २० संध्याये दीपथी पूजा करे. २१ जे फूल हाथमांथी धरती उपर पडे, जे पगने लागी जाय, जे मस्तकथी उपर चाल्युं जाय, जे मेलां वस्त्रमां राखवामां आवेल होय, जे नाभिथी नीचे राखवामां आवेल होय, जेने दुष्ट जननो स्पर्श थयो होय, जे बहुस्थलें भांगी गयुं होय, जे जीवोथी खवायुं होय, एवां फल भक्तजनोयें जिनपूजामां उपयोगमां लेवां नहि. २२ एक फूलना बे कटका करी पूजन करवुं नही. २३ कलीने छेदवी नहीं, चंपक उत्पलादि फुलोने भांगवामां बहु दोषछे. २४ गंध, धूप, अक्षत, पुष्पमाला, दीपक, नैवेद्य, जल, उत्तम फल, इत्यादिथी जिनराजनी पूजा निरंतर करे. २५ शांतिकार्यमां श्वेत वस्त्र पेहेरी पूजा करे २६ द्रव्यलाभने वास्ते पीलांवस्त्र पेहेरी पूजा करे. २७ शत्रु जीतवा वास्ते कालां वस्त्र पेहेरी पूजा करे. मांगलिक कार्यवास्ते लालवस्त्र पेहेरी पूजाकरे. २८ मुक्तिवास्ते पांच वर्णनां वस्त्र पेहेरी पूजा करे. ३० शांतिकार्यवास्ते पंचामृतनो होम, दीवा, घी, गोल, लवणनो अग्निमां प्रक्षेप करवो ते पुष्टि हेतु जाणवो. ३१ फाटेलां, दांडीआं करेलां, छिद्रवालां, कापेलां, जेनो रातो वर्ण भयानक होय, एवां वस्त्र पेहेरी, दान, पूजा, तप, होम अने सामायिक प्रमुख करे तो ते निष्फल थाय.

३२ पद्मासन वेसी, नासाग्रलोचन स्थापन करी मौनता धारण करी वस्त्रथी मुखकोश वांधी, जिनराजनी पूजा करे.

हवे पूर्वोक्त एकवीश प्रकारी पूजानां नाम लखीये ठीये. १ स्नात्र पूजा, २ विलेपनपूजा, ३ आजरण पूजा, ४ पुष्पपूजा, ५ वासपूजा. ६ धूप, ७ दीप, ८ फल, ए अक्षत, १० नागरवेलनां पान, ११ सोपारी, १२ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ चामर, १६ छत्र, १७ वाजित्र, १८ गीत, १ए नाटक, २० स्तुति, २१ जंडारवृद्धि. जे वस्तुउ वहुज सुंदर होय, ते जिनराजनी पूजामां वापरवी जोइये. आ पूजाना प्रकार श्री उमास्वातिवाचककृत पूजाप्रकरणमां प्रसिद्ध ठे.

विवेकविलासमां लख्युंठे के श्रावक ईशानखुणामां पण देवघर वनावे. वली पगउपर पगधारणकरी, विपमासने वेसी. उयडकआसने वेसि, वामपग उंचा राखी, वामहस्तथी जिनराजनी पूजा न करे. शुष्क पुष्पोथी पूजा न करे. जे पुष्प धरतीपर पडीगयुं होय, जेनी पांखडी सडीगइ होय, नीच लोकोनो जेने स्पर्श थयो होय, जे देखवामां अशुज होय, जे विकस्वर न थयां होय, जे कीडाथी खवायेलां होय. जे रातनां वासी होय, जे मकडीनां जालांवालां होय, जे अमनोज्ञ होय, जे दुर्गंधवालां होय, सुगंधरहित होय. खाटी गंधवालां होय, मलमूत्रनी जगामां उत्पन्न थयेलां होय, अपवित्र थयेलां होय, एवां पुष्पोथी जिनराजनी पूजा न करवी. विस्तारसहित पूजा करवाना अवसरमां, तथा निरंतर अने विशेपें करी पर्वदिवसोमां सात अथवा पांच कुसुमांजलि चढावे. पठी जगवाननी पूजा करे. कुसुमांजलि करतां आ विधि करे.

प्रजातसमये प्रथम निर्माल्य उतारे, पठी प्रक्षालकरे, संक्षेपथी पूजा करे, आरति मंगल दीवो करे. पठी स्नात्रादि पूजासहित वीजी वार पूजानो आरंज करे. देवनी पासे पंचामृतसंयुक्त कलश स्थापन करे. पठी "मुक्तालंकार विका,र सारसौम्यत्वकांतिकमनीयं ॥ सहजनिजरूपनिर्जित, जगत्त्रयं पातु जिनविंवं" ॥ १ ॥ आ गाथा कही अलंकार उतारे, पठी "अवणिय कुसुमाहरणं, पयइ पइठिय मनोहरछायं ॥ जाणरूव मज्जणपीढं, संठियं वो सिवं दिसउ ॥ २ ॥ आ गाथा कही जमणे अंगें कलशथी प्रक्षालन करी, चंदन करी, चंदन चर्ची, धूप उखेवे. पठी कं-

लश श्रेणिवंध स्थापन करे, उपर सुंदर वस्त्र ढांके, पठी सुंदर केशर, चंदन, धूपथी हाथ पवित्र करे, मस्तकमां श्रावक तिलक करे, हस्तउपर चंदननुं कंकण करे, हाथ धूपवासित करे. पठी स्नात्र करनारा श्रावक श्रेणिवंध उन्ना रही आ प्रमाणे कुसुमांजलिनो पाठ उचरे. "सयवंत कुंद मालइ, वहुविह कुसुमाइ पंचवन्नाइं ॥ जिणनाह ह्वण काले, दिंतिसुरा कुसुमांजलि हुन्ना ॥ १ ॥ एम उचरी जिनराजना अंग उपर पुष्प चढावे. वली " गंधायठिय महुयर, मणहर जंकार सद्द संगीअ ॥ जिणचलणो वरिमुक्का, हरउ तुह्म कुसुमांजलि डुरियं ॥ आ गाथा कही जिनराजना चरणकमल उपर एक श्रावक कुसुमांजलि चढावे सर्वकुसुमांजलिना पाठमां तिलक करवां, चंदन, पुष्पपत्रादि धूपवासित करी एकत्र चढाववां. ए प्रमाणे सर्वकुसुमांजलि करी रह्या पठी, जे जिनेश्वर नगवाननी स्थापना करी होय, तेमना जन्मानिषेक कलशनो अत्यंत मधुरस्वरथी पाठ कहे. पठी घी, शेलडीरस, डुध, दहीं, सुगंधजल इत्यादिथी करी राखेला पंचामृतथी जिनराजने स्नात्र करे. स्नात्र करतां धूप उखेवे, जिनराजनुं शरीर पुष्परहित न करे. यदाहुर्वादिवेताल श्रीशांतिसूरयआचार्याः ॥ ज्यांसुधी स्नात्रसमाप्ति न थाय, त्यां सुधी नगवाननुं मस्तक शून्य न राखवुं. निरंतर जलधारा अने उत्तमपुष्पोनी वृष्टि जिनराज पर करे; अने स्नात्र करती वखते चामर, संगीत, तूर्यादि आडंवर स्वशक्ति अनुसार करे.

स्नात्र कर्यापठी सर्वश्रावकें निर्मल जलधारा देवी. धारा देती वखत आ प्रमाणे पाठ उच्चारे. ॥ अन्निषेक तोयधारा, धारेव ध्यानमंडलाग्रस्य ॥ नवन्नवनचित्तिन्नागान्, नूयोऽपि निनत्तु नागवती ॥ १ ॥ पठी जिनराजनुं अंग लूही, विलेपन चंदनथी करे, पुष्पादि चढावे, धूप उखेवे, उत्तम नैवेद्य तथा फल चडावे. पठी ज्ञानादि त्रणे सहित त्रण लोकना स्वामि पासे त्रण पुंज स्नात्रकार करे. प्रथम वडिल श्रावक त्रण पुंज करे, पठी नानो श्रावक तथा श्राविका अनुक्रमें करे. श्री जिनजन्ममहोत्सवमां पण स्नात्र करती वखते प्रथम अच्युत इंद्र, पोताना देवतासंयुक्त स्नात्र करे ठे, पठी अनुक्रमें वीजा इंद्र स्नात्र करे ठे. स्नात्रजल पोताना मस्तक उपर श्रावक प्रक्षेप करे तो दोष नथी. ॥ यडुक्तं

श्रीहेमचंद्राचार्यैः श्रीवीरचरित्रे ॥ अभिषेकजलं तत्तु, सुरासुरनरोरगाः ॥ ववंदिरे मुहुर्मुहुः, सर्वांगं परिचिक्षिपुः ॥ १ ॥ श्रीपद्मचरित्रना उगणत्रीशमा उद्देशमां कह्युं के, राजा दशरथें पोतानी राणीउने स्नात्रजल मोकल्युं छे. वली बृहत्शांतिस्तोत्रमां " शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमित्युक्तं " वली सांजलीये छीये के, जरासंधें ज्यारे जरा विद्या छोडी, त्यारें तेनाथी पीडा पामती सेनाने देखी श्रीनेमिनाथ जगवानना कहेवाथी श्रीकृष्णें धरणेंद्रदेवनुं आराधन कर्युं. धरणेंद्रें पातालमां रहेली श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमाने शंखेश्वरपुरमां लावीने, तेनुं स्नात्रजल छांटी सेना सचेत करी. वली श्रीजिनदेशना अनंतर राजाप्रमुख जे चावलोनी बली उछाले छे, तेमांथी अरधा चोखा तो धरती उपर नही पडतां देवताउ लइ लहे छे. अरधा उछालनारा लइ लहे छे, बाकीना सर्व लोक लूटी लहे छे. ते चोखानो एक पण दाणो जो मस्तकमां राखे तो, सर्वरोग उपशांत थइ जाय छे. वली छ महिना सुधी नवा रोग थता नथी. आ कथन आवश्यकसूत्रमां छे. पछी सद्गुरुनी प्रतिष्ठित, अतिसुंदर हीरागल प्रमुख वस्त्रनी मोटी ध्वजा, अतिउत्साहपूर्वक त्रण प्रदक्षणा दइ विधिथी चढावे. सर्वसंघ यथाशक्ति नैवेद्य प्रमुख चढावे.

हवे आरति मंगलदीवो श्री अरिहंतनी सन्मुख करवो तेनो विचार लखीये छीये. मंगलदीवानी पासे अग्निनुं पात्र स्थापन करवुं, तेमां लवणजल अनुक्रमें नाखवुं. प्रथम " उवणेउमंगलं वो, जिणाण मुह लालि जाल संचलिआ ॥ तित्थपवत्तण समए, तियसविव मुक्का कुसुमवुठी ॥ आ गाथा कही कुसुमवृष्टि करे. वली " उअह पडिजग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवई करेऊणं ॥ पडईस लोणणल, जिअं च लोणं हुं अवहंमि॥ इत्यादि पाठथी विधिपूर्वक जिनराजने त्रणवार पुष्पसहित लवण जल उतारे. पछी अनुक्रमें पूजा करी आरति धूप प्रक्षेपसहित बंने बाजुए अत्यंत, कलशथी पाणीनी धारा देतां श्रावक पुष्पोने विखेरे. पछी " मरगय मणि घडिय विसा, ल थालमाणिक्क मंडिअ पईवं ॥ नवणयर करुखित्तं, नमउ जाणारत्तिअं तुह्म " इत्यादि पाठपूर्वक प्रधानथालमां आरति राखी उत्सवसहित त्रणवार उतारे. आ कथन, त्रेशठ शलाका पुरुष चरित्रादिमां छे. मंगलदीपक पण आरतिनी जेम पूजे- पूजती वखत आ

पाठ कहे ॥ गाथा ॥ जामिज्जंतो सुरा, सुरिहिंतुहनाह मंगल पईवो ॥ कणयाय लस्स नजइ, जाणुव पयाहिणं दिंतो ॥ १ ॥ ए प्रमाणे मंगलदीवो उतारी देदीप्यमान जिनराजना चरण कमलपासे राखे. आरति बुजावी देवामां दोष नथी. आरति अने मंगलदीवो मुख्य वृत्तिए, घी; साकर, कर्पूरादिथी करे. तेम करवाथी विशेष फल छे. "मुक्तालंकार" इत्यादि जे गाथाउ कही ते श्रीहरिजद्र सूरिजीनी करेली मालम पडे छे; कारण के श्रीहरिजद्रसूरिकृत समरादित्य चरित्रनामा ग्रंथनी आदिमां "जवणेज मंगलेवो" एवो पाठ छे ॥ इति नमस्कारस्य दर्शनात् ॥ वली आ गाथा तपगछमां प्रसिद्ध छे. ते कारणथी सर्व गाथा अहीं लखी नथी.

स्नात्रादिमां समाचारी विशेषथी विविधप्रकारनो विधि देखवाथी व्यामोह न करवो; कारण के सर्व आचार्योनी अर्हद्जक्तिरूप फलनी सिद्धिवास्ते प्रवृत्ति होवाथी ते दोषरूप नथी. गणधरादि समाचारीउमां पण बहुज जेद होयछे. तेथी जे जे, धर्मथी विरुद्ध न होय, अने अर्हंत जक्तिने पोषक होय, ते ते सर्वकार्य कोइने पण असम्मत नथी. एवी रीतें सर्व धर्मकार्यमां जाणी लेवुं. वली लवण आरति प्रमुखनुं उतारवुं, संप्रदायथी सर्वगछोमां तेमज परदर्शनोमां पण करतां देखीयें छीयें. तथा श्रीजिनप्रजसूरिकृत पूजाविधिशास्त्रमां तो लख्युं छे के ॥ गाथा ॥ लवणाई उत्तारण, पालित्तय सूरिमाइ पुव्वपुरिसेहिं ॥ संहारेण अणुन्नयंपि, संपयं सिठी एकारि जाइ ॥ १ ॥ अर्थः—लवणादि उतारवा श्रीपादलिप्त सूरिप्रमुख पूर्वपुरुषोयें एकवार करवानी आज्ञा आपीछे. वर्त्तमानमां अमे ते अनुसार करावीये छीये. स्नात्रमां सर्वप्रकारें विस्तारसहित पूजा प्रजावनादि करवाथी परलोकमां उत्कृष्ट मोक्षप्राप्तिरूप फल थायछे. जेम चोसठ इंद्रोयें जिनजन्मस्नात्रमहोत्सव कर्या छे, ते प्रमाणे श्रावक अतिउत्साहथी करे. तेम करवाथी आ लोकमां पुण्य अने निर्जरा अने परलोकमां मोक्षफल प्राप्त थायछे. आ कथन राजप्रश्नीय उपांगमां करेलछे.

हवे प्रतिमा पण अनेक प्रकारनी छे. तेनी पूजानो विधि सम्यक्त्व प्रकरणमां आ प्रमाणे लख्यो छे. ॥ गाथा ॥ गुरु कारिआइ केइ, अन्नेसय कारिआइ तं बिंति ॥ विहि कारिआइ अन्ने, पडिमाये पूअण विहाणं ॥१॥

व्याख्याः– गुरु अर्थात् माता, पिता, दादा, पर दादा, प्रमुख तेउंनी करावेली प्रतिमा पूजवी जोइये, एम कोइ कहेछे. वली कोइ कहेछे के, पोतानी करावेली, प्रतिष्ठित करेली प्रतिमा पूजवी जोइये, तथा कोइ कहेछे के विधिथी करावेली, प्रतिष्ठा थयेली प्रतिमा पूजवी जोइये. आ सर्वमां यथार्थ पक्ष तो आ छे– ममत्वरहित सर्वप्रतिमाने विशेपरहित पूजवी जोइये, कारण के सर्वस्थलें तीर्थंकरनो आकार देखवाथी तीर्थंकर बुद्धि उत्पन्न थायछे, जो एम न मानीयें तो जिनबिंबनी अवज्ञाथी, ते जीवने निश्चयें डुरंतसंसारमां भ्रमणरूप दंड प्राप्त थशे.

वली एवो पण कुविकल्प न करवो के जे अविधिथि जिनमंदिर, जिनप्रतिमा बनेलां होय, तेने पूजवाथी, अने तेवा अविधिमार्गनी अनुमोदनाथी जगवंतनी आज्ञाजंगरूप दूषण लागेछे. तथाहि कल्पनाष्ये ॥ गाथा ॥ निस्सकड मनिस्सकडे, चेईये सव्वहिं थुईतिन्नि ॥ वेलंच चेइआणिय, नाउंइ क्किकिया वावि ॥ १ ॥ व्याख्याः-निश्राकृत तेने कहीये, जे गछना प्रतिबंधथी बनेल होय, जेम के आ अमारा गछनुं मंदिर छे, बीजुं अनिश्राकृत, जेना उपर कोइ गछनो प्रतिबंध नथी; आ सर्व जिनमंदिरोमां त्रण थुइ कहेवी. जो सर्वजिनमंमिरोमां त्रण त्रण थुइ (स्तुति) कहेतां बहु काल लागी जाय, अने जिनमंदिर बहु होय, तो एकेक जिनमंदिरमां एकेक थुइ कहेवी; परंतु सर्वजिनमंदिरमां विशेपरहित जक्ति करवी.

वली जिनमंदिरमां करोलीआनां जालां लागीगयां होय, तेने दूर करवावास्ते, जेने जिनमंदिरनी सुप्रत करी होय, तेने साधु जोरथी उपदेश करे, एवी रीतें के, तमे जिनमंदिरनी नोकरी खाउंछो, छतां सार संजाल केम करता नथी? वली जेनी कोइ सारसंजाल न करे, तेने असंविग्न देवकुलिका कहेछे. ते मंदिरोमां जे करोलीआनां जालां होय ते दूर करवावास्ते, सेवकोने प्रेरणा करे, के तमे जिनमंदिरने मांखीनी पांखनी जेम चमक दमकवालां राखो, जो सेवक लोक न माने तो निर्भ्रंछना करे, पछी साधु पोते जयणाथी ते जालां दूर करे; कारण के जिनमंदिर, ज्ञानजंडारप्रमुखनी साधु उपेक्षा न करे एवो पाठ छे. पूर्वोक्त चैत्यगमन पूजा तथा स्नात्रादिविधि जे वर्णन कर्यो, ते सर्व धनवान् श्रावकनी अपेक्षा-

यें कह्यो छे. जो श्रावक धनवान् न होय तो पोताना घरमां सामायिक करीने कोइनी साथे लेण देणनो तकरार न होय, ते उपयोग सहित, साधुनी जेम इर्या समिति शोधतां नैषेधिकी त्रण करी जाव पूजानुयायि विधिथी जिनमंदिर आवे. पूजादिसामग्रीना अजावथी द्रव्यपूजा करवाने असमर्थ छे, ते कारणथी सामायिक पारी कायाथी जे कांइ पुष्पगुंथनादि कृत्य थाय ते करे.

प्रश्नः—सामायिकनो त्याग करी द्रव्यपूजा करवी उचित छे ?

उत्तरः— सामायिक तो तेने स्वाधीन छे. मरजीमां आवे ते वखते करी ले, परंतु पूजानो योग मलवो तेने बहुज दुर्लज छे, कारण के पूजानुं मंडाण तो संघसमुदायने आधीन छे, कोइकज वखत होयछे. तेकारणथी पूजामां विशेषपुण्य छे. यदागमः ॥ " जीवाण बोहि लाजो, सम्मद्दिठीण होइ पिअकरणं ॥ आणाजिणिंद जत्ति, तित्थस्स पजावणा चेव ॥ १ ॥ ते कारणथी अनेक गुण छे, तेथी चैत्यकार्य करे. आ कथन दिनकृत्य सूत्रमां छे. दशत्रिक, पांच अजिगम; इत्यादि विधि प्रधानपणें सर्वदेवपूजा, वंदनादि धर्मानुष्ठाननुं महाफल थाय छे, अन्यथा अल्पफल छे. वली अविधिथी करतां उपद्रव पण थइ जाय छे. ॥ उक्तं च ॥ धर्मानुष्ठान वैतथ्यात्, प्रत्यवायो महान् जवेत् ॥ रौद्रदुःखौघजननो, दुष्प्रयुक्तादि चौषधात् ॥ १ ॥ चैत्यवंदनादि अविधिथी करतां आगममां प्रायश्चित्त कहेल छे. महानिशीथना सातमा अध्ययनमां अविधिथी चैत्यवंदन करतां प्रायश्चित्त वर्णवेल छे. देवता अने विद्या, मंत्रादिविधिथीज सिद्ध थाय छे.

जो कोइ एम कहे के विधिपूर्वक न थतुं होय तो न करवुं ते श्रेष्ट छे ? आ कथन अयुक्त छे. ॥ यदुक्तं ॥ अविहिकया वरमकयं, असूआ वयणं जणंति समयन्नु ॥ पायछित्तं अकए, गुरुअं वितहं कए लहुयं ॥१॥ अर्थः— अविधिथी करतां न करवुं ते सारुं छे, एवुं जे कहेवुं, ते असूया वचन छे. तेम बोलनार सिद्धांतनो जाणकार नथी जैनशास्त्रनुं एवुं कथन छे के जे न करे, तेने गुरु प्रायश्चित्त लागे छे, अने जे अविधिथी करे तेने लघु प्रायश्चित्त आवे छे; ते कारणथी धर्म जरुर करवो जोइए, अने विधिमार्गनी अन्वेषणा करवी तेज तत्त्व छे. तेज श्रद्धावंतनुं लक्षण छे.

सर्वकृत्य करी अविधि आशातना निमित्त मिथ्या दुष्कृत देवुं.

अंग, अग्र अने जाव, त्रणे पूजानुं फल शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे. विघ्न उपशांत करनार अंगपूजा छे, मोटा अज्युदय पुण्यने साधनार अग्रपूजा छे, मोक्षप्रदात्री जावपूजा छे. पूजा करनार, संसारना प्रधान जोग जोगवी, पछी सिद्धपद प्राप्त करे छे; पूजा करवाथी मन शांत थायछे, मननी शांतिथी उत्तम, शुज ध्यान थाय छे, अने शुजध्यानथी मोक्ष थये अव्यावाध सुख छे.

वली जिनराजनी जक्तिना पांच प्रकार छे. यथा ॥ पुष्पाद्यर्चा तदासा च, तद्द्रव्यपरिरक्षणं ॥ उत्सवास्तीर्थयात्रा च, जक्तिः पंचविधा जिने ॥ १ ॥ अर्थः– पुष्पादिथी पूजन, जिनेश्वर जगवाननी आज्ञा पालवी ते, देवद्रव्यनुं रक्षण करवुं, महोत्सव करवो ते, अने तीर्थयात्रा. आ पांचप्रकारनी जक्ति छे. द्रव्यपूजा, आ जोग अने अनाजोग वे प्रकारें छे. तेमां श्री वीतरागदेवना गुण जाणी, वीतराग जावनाथी, आदर संयुक्त, जिनप्रतिमानी जे पूजा ते आजोग द्रव्यपूजा छे. आ पूजाथी चारित्रनो लाज थाय छे, कर्मनो नाश थाय छे, ते कारणथी बुद्धिमान् एवी पूजा अवश्य करे; अने जेउ पूजानो विधि जाणता नथी, तथा श्रीजिनराजना गुणपण जाणता नथी, तेउनी जे पूजा ते अनाजोगपूजा छे. आ पूजा शुजपरिणाम पुण्यनुं कारण छे, वोधिलाजनो हेतु छे, अने पापक्षय करवानुं कारण छे; वली ते पुरुपना जन्मने धन्यछे, अने जविष्य काले तेनुं कल्याण थायछे, कारण के जो के ते वीतरागना गुणोने जाणतो नथी, तोपण जक्ति प्रीतिनो उल्लास तेना अंतःकरणमां उछलेछे; अने जे पुरुपने अरिहंतविंव उपर द्वेप छे, ते पुरुप जारे कर्मी तथा जवाजिनंदी छे; जेम रोगीने अपथ्यपर रुचि थाय अने पथ्य पर द्वेप थाय, त्यारे मरणकाल पासे समजायछे, तेम जिनविंव उपर जेने द्वेपछे; तेने पण दीर्घसंसार परिज्रमण जाणवुं.

अहींआं सर्व जे जावपूजा कही, ते श्रीजिनाज्ञानुं पालवुं समजवुं. वीजुं त्यागवुं. सुकृतनो अंगीकार अने दुष्कृतनो त्याग. तेमां स्वीकारपक्षथी परिहारपक्ष वहुज श्रेष्ठछे, कारण के जे निपिद्ध आचरण करे छे, तेनुं सुकृतपण वहु गुणदायक थतुं नथी. जो वंने वावतो वने तो पूर्ण-

फल थायछे. द्रव्यपूजानुं फल अच्युतदेवलोकछे, अने भावपूजानुं फल अंतर्मुहूर्त्तमां मोक्ष छे.

द्रव्यपूजामां यद्यपि षट्कायना जीवोनी किंचित् विराधना थायछे, तो पण कुवाना दृष्टांतनी जेम गृहस्थने करवा योग्य छे; कारण के करनार अने देखनारने गणतरी रहित पुण्यबंधनुं कारण होवाथी करवा योग्य छे, जेम नवा गाममां स्नान पानादि वास्ते लोक कुवा खोदेछे, तेउने प्यास, श्रम, कीचडादिथी मलिनता थायछे, परंतु कुवानुं जल निकलतांज तेउनी तथा बीजाउनी तृषादि सर्व दूर थइ जायछे, अने तमाम प्रकारनुं सुख थायछे; तेवीज रीतें द्रव्यपूजामां जाणी लेवुं. आ कथन आवश्यक निर्युक्तिमां छे, तथा बीजे स्थले पण लखेल छे. ॥ गाथा ॥ आरंभ पसत्ताणं, गिहीणथ्थ जीववह अविरयाणं ॥ भवअडवि निवडियाणं, दवछउ चेव आलंबो ॥ १ ॥ श्लोक ॥ वृत्तं शार्दूलविक्रीडितं ॥ स्थेयोवायुबलेन निर्वृतिकरं निर्वाणनिर्घातिना, स्वायत्तं बहुनायकेन सुबहु स्वल्पेन सारं परं॥ निःसारेण धनेन पुण्यममलं कृत्वा जिनाभ्यर्चनं, योगृह्णाति वणिक् सएव निपुणो वाणिज्यकर्मण्यलम् ॥ १ ॥ यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते, ध्यायंश्चतुर्थं फलं, षष्ठं चोत्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतुं प्रवृत्तोऽध्वनि ॥ श्रद्धालुर्दशमं बहिर्जिनगृहात् प्राप्तस्ततो द्वादशं, मध्ये पाक्षिकमीक्षते जिनपतौ, मासोपवासं फलम् ॥२॥ पद्मचरित्रमां लख्युंछे के, १ ज्यारे जिनमंदिरमां जवानो विचार करे, त्यारे एक उपवासनुं फल थायछे, २ जो उठे तो बे उपवासनुं फल थाय छे, ३ चालवानी शरुआत करतां त्रण उपवासनुं फल थायछे, ४ चाली निकले चार उपवावसनुं फल थाय छे, ५ कांइक जतां पांच उपवासनुं फल थाय छे, ६ अर्ध मार्गे पहोंचतां एकपक्षउपवासनुं फल थायछे, ७ जिनराजने देखतां एकमास उपवासनुं फल थायछे, ८ जिनभुवनमां संप्राप्त थतां छमासी उपवासनुं फल थायछे, ९ जिनमंदिरना दरवाजा पर स्थित थतां एकवर्षना तपनुं फल थायछे, १० जिनराजनी प्रदक्षिणा देतां सो वर्षना तपनुं फल थायछे, ११ पूजा करतां हजार वर्षना तपनुं फल थायछे, १२ स्तुति करतां अनंतगणुं फल थायछे, १३ जिनमंदिर प्रमार्जन करतां सोगणुं पुण्य थायछे, १४ धोडतां हजारगणुं पुण्य थायछे, १५ पुष्पमाला च-

ढावतां लाखगणुं पुण्य थायछे, १६ गीत, वाजित्रथी स्तुतिकरतां अनंतगणुं पुण्य थायछे.

पूजा निरंतर त्रणसंध्याये करवी जोइये ॥ यतः॥ जिनस्य पूजनं हंति, प्रातःपापं निशाभवं ॥ आजन्मविहितं मध्ये, सप्तजन्मकृतं निशि ॥ १ ॥ जलाहारौषधस्वाप, विद्योत्सर्गकृषिक्रियाः ॥ सत्फलाः स्वस्वकाले स्यु, रेवं पूजा जिनेश्वरे ॥ २ ॥ गाथा ॥ जीणपुआण तिसंजं, कुणमाणो सोहएय सम्मत्तं ॥ तिछयर नामगोत्तं, पावइ सेणीअ नरिंदुव्व ॥१॥ जो पुएइ तिसंजं, जिणंदरायं सयाविगयदोसं ॥ सोतइय भवे सिज्झइ, अहवा सत्तठमे जम्मे ॥ २ ॥ सवायरेण भयवं, पूइज्जंतो वि देवनाहेहिं ॥ नोहोइपूइउ खलु, जम्हाणं तगुणो भयवं ॥ ३ ॥

वळी देवपूजादि समये हृदयमां बहुमान राखे तथा शुद्ध विधि सहित भक्ति करे. जिनमतमां चार प्रकारनां अनुष्ठान कह्यां छे. १ प्रीति सहित, २ भक्ति सहित, ३ वचन प्रधान, ४ असंग अनुष्ठान. जेमां प्रीतिनो रसवधे, अने क्रिया करनार भद्रक स्वभाववालो होय, तेने, जेम बालकने रत्नादि देखी प्रीति थाय, तेम क्रियामां प्रीति थाय, ते प्रीति अनुष्ठान. २ ज्यां क्रिया करनार विवेकवान् होय अने बहुमानसंयुक्त क्रिया करे, अने बाकी सर्व प्रथम अनुष्ठाननी जेम करे, ते भक्ति अनुष्ठान छे; अगर जो के स्त्री अने माता पालन, पोषण करवामां सरखां थाय छे, तोपण स्त्रीउपर प्रीति राग छे, अने माता उपर भक्तिराग छे ३ जिनगुणनो जाणनार, सूत्रोक्तविधिपूर्वक जिनप्रतिमानी वंदनादि क्रिया करे, ते वचनानुष्ठान चारित्रवंतने निश्चयें होयछे. ४ जे अभ्यासना रसथी सूत्रआलोचना विनाज फलमां निःस्पृही थइने क्रिया करवी, ते असंग अनुष्ठान छे, जेम कुंभार प्रथम चक्रने दंडथी फेरवे छे, पछी दंड तजी दे तो पण चक्र फरेछे; आ दृष्टांत वचन अनुष्ठान अने असंग अनुष्ठाननुं छे.

चारेमां प्रथम तो भावनाना लेशथी प्रायः बालक प्रमुखने प्राप्त थाय छे, अने उत्तरोत्तर अधिक गुण प्राप्त थतां बीजां अनुष्ठान थाय छे. आ चारे प्रकारनां अनुष्ठान बहुमानसहित अने विधिपूर्वक करे, तो रूपैउपण खरो अने सिक्को पण खरो, आ प्रथम भेद. जे पुरुष भक्तिराग तथा बहुमानसंयुक्त होय, परंतु विधि जाणतो न होय, तेनी क्रिया

एकांत खराब नथी, अशठ (चतुर) पुरुषनां अनुष्ठान अतिचार सहित पण शुद्धिनां कारण छे; कारण के जे रत्न अंदरथी निर्मल छे, तेनो बाह्य मेल सुखें दूर करी शकाय छे, आ रूपैउं खरो अने सिक्को खोटो, एवो बीजो भेद. जे पुरुष, कपट तथा असत्यादि दोषसंयुक्त छे, अने पोतानुं बहुमान तथा कीर्त्ति वधारवा वास्ते, वा लोकोने ठगवावास्ते विधिपूर्वक सर्व अनुष्ठान करे छे, तेने महा अनर्थरूप फल थाय छे, आ रूपैउं खोटो अने सिक्को खरो, एवो त्रीजो भेद. जे अज्ञानी तथा मिथ्यादृष्टि जीवोनां कृत्यो, ते रूपैउं पण खोटो अने सिक्को पण खोटो, एवो चोथो भेद. तेकारणथी जे देवपूजादि क्रिया बहुमान अने विधिपूर्वक करे तेने संपूर्ण फल थाय छे.

हवे उचित चिंतानुं स्वरूप कहीए छीए. मंदिरने प्रमार्जन करवुं, करावबुं, जे स्थले मंदिरनो भाग तुटी पड्यो होय ते समरावबो, प्रतिमाजी तथा परिवारने निर्मल राखवां, विशिष्टपूजा, दीपोत्सव, पुष्प प्रमुखनी शोभा करवी, आशातनाउं सर्व टालवी, अक्षत, नैवेद्य, फल प्रमुखनी चिंता राखवी, चंदन, केशर, धूप, दीप, तेलनो संग्रह करवो, विनाश न थाय तेवी रीतिए देवद्रव्यनी रक्षा करवी, बे चार श्रावकोने साथे राखी देवद्रव्यनी उघराणी करवी, देवद्रव्यने बहुज यत्नथी निर्भय स्थानमां राखवुं, देवद्रव्यनुं उपज, खरचनुं नामुं प्रगटपणे लखवुं तथा राखवुं, पोते देवद्रव्य आपवुं, बीजाउं पासेथी अपाववुं, देवद्रव्य कोइनी पासे लेणुं होय, त्यां देवना नोकरोने मोकली, जे रीतिए देवद्रव्य जाय नही, ते रीतिए उघराणी कराववी, एवी अनेक रीतें देवद्रव्यनी चिंता तथा सार संभाल करवी.

वली देरा प्रमुखनी चिंता अनेक तरेहनी छे, तेमां धनवान् धनथी तेमज स्वजनना बलथी चिंता राखे, ते चिंता तेमने सुकर छे, अने धन विनाना पोताना शरीरबलथी तथा स्वजनबलथी सहाय आपे, ते तेमने साध्य छे. जेनुं जेटलुं बल होय, ते विशेष रीतें तेटलो यत्न करे. जे चिंता अल्पकालमां दूर थइ जाय, ते बीजी निस्सीहि पेहेलां करे. बाकीनी बीजी यथायोग्यरीतें पछी करे. तेवीजरीतें धर्मशाला तथा गुरु अने ज्ञान प्रमुखनी पण यथोचित सर्वशक्तिथी चिंता करे; कारण के देवगुरु

आदिनी सार संजाल श्रावक विना बीजा कोइ करनार नथी, ते कारणथी श्रावकें ते वाबतमां शिथिल न रेहेवुं जोइए. देवगुरु प्रमुखनी जक्ति, सेवा, सार संजाल, जो श्रावक न करे तो तेना सम्यक्त्वमां कलंक लागे ठे. वली जे श्रावक देवगुरुनो जक्त ठे, तेनाथी कदाचित् कोइ आशातना पण थइ जाय, तो पण तेनुं फल अतिदुःखदायक नथी. ते कारणथी चैत्यादि कृत्यमां निरंतर प्रवृत्त थवुं. यथा ॥ देहे ड्रव्ये कुटुंबे च, सर्वसंसारिणां रतिः ॥ जिने जिनमते संघे, पुनर्मोक्षाजिलाषिणां ॥

देव गुरु प्रमुखथी आशातना, जघन्यादि जेदें त्रण प्रकारें ठे. तेमां प्रथम ज्ञाननी आशातनानुं स्वरूप कहीए ठीए. ज्ञाननां पुस्तक, पाटी, जपमाला प्रमुखने मुखनुं थुंक लेश मात्र लागी जाय, हीन अधिक अक्षरोच्चार थाय, ज्ञाननां उपकरण, पाटी, पुस्तक, नवकारवाली प्रमुख पासे होय ते वखतें अधोवातनिःसर्गादि थाय, ते जघन्य आशातना ठे. अकाले पठन प्रमुख करवुं, उपधान वहन कर्या विना सूत्र जणवां, ज्रांतिपूर्वक, अर्थनी अन्यथा कल्पना करवी, पुस्तक प्रमुखने प्रमादथी पगादिनो स्पर्श करवो, जूमिपर नाखवां, ज्ञाननां उपकरणो पासे ठतां, आहार मूत्रादि करवां, ते मध्यम आशातना ठे. थुंकथी अक्षर मांजवा, पाटी, पोथी प्रमुख ज्ञाननां उपकरण उपर वेसवुं तथा सुवा प्रमुख करवुं, ज्ञानोपकरणो पासे ठतां वडीनीत करवी, ज्ञान तथा ज्ञानीनी निंदा, द्वेष तथा उपघातादि करवां, उत्सूत्र जाषण प्रमुख करवां, ते उत्कृष्ठ आशातना ठे.

हवे देवनी आशातना कहीए ठीए. तेमां वास, वरास, केशर प्रमुखना डावलाने वजाववा, श्वास लागी जाय तथा वस्त्रना ठेडाथी देवने स्पर्श थइ जाय ते जघन्य आशातना ठे. धोतीआं प्रमुख पवित्र वस्त्र कर्या विना पूजा करवी, पूजानां वस्त्र जूमिपर नाखवां, इत्यादि मध्यम आशातना ठे. प्रतिमाजीने पगथी संघट्टो करवो, श्लेष्म अने थुंक लगावबुं, प्रतिमानो जंग करवो, जिनेश्वर जगवाननी हेलणा करवी ते उत्कृष्ठ आशातना ठे.

हवे देवनी जघन्यथी दश आशातना, मध्यम चालीश आशातना अने उत्कृष्ठ चोराशी आशातना ठे, तेमां जघन्य दश आशातना न क-

रवी ते लखीए ठीए. जिनमंदिरमां १ पान सोपारी खावां नहि, २ पाणी पीवुं नहि, ३ जोजन करवुं नहि; ४ पगरखां मुकवां नहि, ५ स्त्री संजोग करवो नहि, ६ सुवुं नहि, ७ थुंकवुं नहि, ८ मूतरवुं नहि, ९ दिशाए जवुं नहि, १० जुगार खेलवो नहि.

हवे मध्यम चालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहीए ठीए १ मूतरवुं नहि, २ दिशा जवुं नहि, ३ पगरखां पेहेरवां नहि, ४ पाणी पीवुं नहि, ५ जमवुं नहि, ६ सुवुं नहि, ७ मैथुनसेवन करवुं नहि, ८ तंबोल खावां नहि, ९ थुंकवुं नहि, १० जुगार खेलवो नहि, ११ माथुं जोवुं नहि, जुंओ काडवी नहि, १२ विकथा करवी नहि, १३ पलोंठी करी वेसवुं नहि, १४ पग लांबा पसारवा नहि, १५ झघडो करवो नहि, १६ हांसी करवी नहि. १७ ईर्ष्या करवी नहि, १८ उंचे आसने वेसवुं नहि, १९ केश उलवा नहि, २० ठत्री उढवी नहि, २१ खड्ग राखवुं नहि, २२ मुगट धारण करवो नहि, २३ चामर वींजाववां नहि, २४ स्त्रीना कामविलास हांसि करवी नहि, २५ धरणुं लगाववुं नहि, २६ क्रीडा, खेल करवा नहि, २७ मुखकोश विना पूजा करवी नहि, २८ मेला शरीरथी तेमज मेला वस्त्रथी पूजा करवी नहि, २९ पूजा करतां मन चपल करवुं नहि, ३० शरीरना जोगना सचित्त ड्रव्यने वहार मुक्याविना मंदिरमां जवुं नहि. ३१ अचित्त ड्रव्य, आजूपण प्रमुख उतारीने जवुं नहि. ३२ एक साडी उत्तरासंग करवुं, ३३ जगवानने देखतांज हाथ जोडवा, ३४ शक्ति ठतां पूजा करवी, ३५ अनिष्ट पुष्पोथी पूजा न करवी, ३५ पूजा प्रमुख आदर सहित करवां, ३७ जिन प्रतिमाना निंदकने वहार काढवा, ३८ मंदिरना ड्रव्यथी सार संजाल करवी, ३९ शक्ति ठतां असवारीपर चडी मंदिरमां जवुं नहि, ४० देरासरमां वडिलथी पेहेलां चैत्यवंदन करवुं नहि. जिनेंड्र जुवनमां तथा ज्यां प्रतिमाजी होय त्यां चालीश आशातना उपरमुजव वर्जवी.

हवे उत्कृष्ट चोराशी आशातनानां नाम लखीये ठीये. १ जिनमंदिरमां श्लेष्म, वडखो नाखवो, २ जूआ आदिनी क्रीडा करवी, ३ कलह करवो, ४ धनुषादि कला शिखवी, ५ कोगला करवा, ६ तंबोल खावां, ७ तंबोलनो उगाल नाखवो, ८ गाल देवी, ९ दिशामात्रा करवी, १० हाथप्रमु-

खधोवा, ११ केशसमारवा, १२ नख समारवा, १३ लोही नाखवुं, १४ सुखडी प्रमुख खावुं, १५ गुंमडा प्रमुखनी त्वचा नाखवी, १६ औषधखातां पित्त नाखवुं. १७ वमन करवुं, १८ दांत उखडेलो नाखवो, १९ हाथ पग मसलाववा, २० घोडाप्रमुख बांधवा, २१ दांतनो मेल नाखवो, २२ आंखनो मेल नाखवो, २३ नखनो मेल नाखवो, २४ गालनो मेल नाखवो, २५ नाकनो मेल नाखवो, २६ माथानो मेल नाखवो, २७ शरीरनो मेल नाखवो, २८ काननो मेल नाखवो, २९ भूतादि खिली लेवावास्ते मंत्रसाधवा, वा राजाप्रमुखनुं काम होय, तेनो विचार करवो, ३० मंदिरमां विवाह प्रमुखनी पंचात करवी, ३१ व्यापारनां लेखां करवां, ३२ राज्यनुं काम वेहेंची आपवुं, अथवा भाइप्रमुखने धननो हिस्सो वेहेंची आपवो, ३३ घरनो भंडार मंदिरमां राखवो, ३४ पगउपर पगराखी खराब आसन करी बेसवुं, ३५ मंदिरनी भीतउपर छाणां थापवां, छाणनो ढगलो करवो, ३६ वस्त्र सुकववां, ३७ दाल दलवी, ३८ पापड वडी सुकववी, ३९ वडां बनाववां, उपलक्षणथी केर, चीभडां, शाकप्रमुख सुकववा नाखवां; ४० राजा प्रमुखना लेणदारना भयथी नासी मूलगभारामां संताइ जवुं, ४१ पुत्रकलत्रादिना मरणथी मंदिरमां रोवुं, ४२ राज्यकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा आ चार विकथा करवी, ४३ धनुषादि शस्त्र घडवां, ४४ गाय, बलदप्रमुख राखवा, ४५ टाढ उडाडवा अग्नि तापवो, ४६ धान्यादि रांधवां, ४७ रूपैआ परखवा, ४८ विधिथी निस्सीहि न करवी, ४९ छत्र, ५० पगरखां, ५१ शस्त्र, ५२ चामर, मंदिर बहार न मुकवां, ५३ मन एकाग्र न करवुं, ५४ तेलादिनुं मर्द्दन करवुं, ५५ शरीरना भोगनां सचित्त पुष्पादिनो त्याग न करवो, ५६ हार, मुद्रा, कुंडलादि बहार मुकी, आववुं. तेम करवाथी आशातना लागे, कारण के लोकोमां एम कहेवाय के अर्हंतना भक्त सर्व कंगाल, भिखारी छे, जेथी जिन मतनी लघुता थाय. ५७ भगवानने देखतांज हाथ न जोडवा, ५८ एकसाडी उत्तरासंग न करे, ५९ मुगट मस्तकपर राखे, ६० माथाउपर मोलीयुं लपेटे, ६१ फूलना शहरा राखे, ६२ नालीअरनां छोतरां नाखे, ६३ गेडी खेले, ६४ पिताप्रमुखने जुहार करे, ६५ भांड चेष्टा करे, ६६ तिरस्कार वास्ते हुंकारा, टुंकारा करे, ६७ लेणावास्ते घरेणुं घाले, ६८ लडाइ करे, ६९ माथाना वाल सुकवे, ७० पलोंठी मारी बेसे, ७१ लाकडीनी पावडी

पगमां राखे, ७२ पग लांबा करे, ७३ सुखनेवास्ते हाथताली (पुडपुडी) आपे, ७४ शरीरना अवयवो धोइ कीचड करावे, ७५ पगने लागेली धूल उडाडे ७६ जुं नाखे, ७७ भोजन जमे, ७८ मैथुनक्रीडा करे, ७९ गुह्य चिह्न उघाडुं राखी वेसे, ८० वैद्यकनुं काम करे, ८१ क्रयविक्रयरूप वाणिज्य करे, ८२ शय्या बनावी सुवे, ८३ पाणी पीवाने वास्ते माटलुं राखे, मंदिरनी परनालनुं पाणीले, ८४ स्नान करवानी जगा बनावे. आ उत्कृष्ट चोराशी आशातना जिनमंदिरमां वर्जे.

हवे गुरुनी तेत्रीश आशातना लखीये छीये. १ गुरुनी आगल चालवुं ते आशातना छे, परंतु रस्तो वतावया वास्ते चाले तो आशातना नथी. २ गुरुनी बराबर चालवुं, गुरुथी पाछल अडकीने चालवुं, आ चालवानी जेम त्रण आशातना कही, तेम वेसवानी त्रण आशातना, तेमज उभा रहेवानी त्रण आशातना जाणवी, एम नव आशातना थइ, १० भोजन करतां गुरुनी पेहेलां शिष्यें चलु करवुं, ११ गमनागमन गुरुना पेहेलां आलोववुं, १२ रात्रिमां गुरु पुछे के कोण जागे छे? एम सवाल सांभलतां छतां, अने जागतां छतां उत्तर न आपवो, १३ जो कोइने कांइ कहेवुं होयतो गुरुनी पहेलां शिष्यें कही देवुं, १४ बीजा साधुउनी पासे अशनादि आलोवे, पछी गुरुपासे आलोवे १५ तेवीज रीतें अशनादि प्रथम बीजा साधुने वतावे, पछी गुरुने वतावे, १६ अन्नादिवास्ते प्रथम बीजा साधुउने निमंत्रणा करे, पछी गुरुने निमंत्रणा करे, १७ गुरुने पुछ्याविना बीजाउने स्निग्ध, मधुरादि आहार आपी दे, १८ स्वेछाथी, गुरुने यत्किंचित् आहार आपी, पोते स्निग्धादि आहार खाय, १९ गुरु बोलावे तो बोले नहि, गुरुने बहुज कठोर वचन कहे, २१ ज्यारे गुरु बोलावे, त्यारे आसन उपर वेठांज उत्तर आपे, २२ गुरु बोलावे त्यारे बोले के शुं कहो छो? २३ गुरुने टुंकारा करे, २४ गुरु प्रेरणा करे, त्यारे गुरुनी प्रेरणाने उत्तर आपी हणे, जेम के गुरु कहे के हे शिष्य! तमे अमुक ग्लाननी वैय्यावच्च केम न करी, त्यारे शिष्य कहे तमे केम करता नथी? २५ गुरु कथा करे त्यारे मनमां प्रसन्न न थाय, परंतु विमन राखे २६ सूत्रादि कहेतां गुरुने कहे के, तमने अर्थ याद नथी? तेनो अर्थ आ प्रमाणे थतो नथी? २७ गुरु कथा करे, ते कथानी वचमां भंगपाडे, अने

कहे के हुं कथा करीश. २७ परखदाने विखेरे, कहे के हवे भिक्षानो अवसर थयो छे, इत्यादि, २७ परखदा उठ्याविना गुरुनी कहेली कथाने, पोतानी चतुराइ देखाडवा वास्ते विशेष करी कहे, ३० गुरुनी शय्या संथाराने पगथी संघट्टो करे, ३१ गुरुनी शय्याउपर वेसवाप्रमुख करे, ३२ गुरुथी उंचे आसने वेसे, ३३ गुरुनी वरावर आसन करे. आ तेत्रीश गुरुनी आशातना शिष्य वर्जे.

आ गुरुनी आशातना त्रण प्रकारनी छे. पगादिथी संघट्टो करे ते जघन्य आशातना. श्लेष्म, थुंकादि गुरुने लवमात्र लगावे, ते मध्यम आशातना. गुरुनो आदेश न करे, जो करे तो पण उलटो करे, कठोरवचन बोले, गुरुनुं कह्युं न सांभले, ते उत्कृष्ट आशातना छे.

स्थापनाचार्यनी आशातना पण त्रण प्रकारनी छे, अहीं तहीं हलावे चलावे, पगनो स्पर्श करे ते जघन्य आशातना; भूमि उपर नाखे, वा अवज्ञाथी धारण करे ते मध्यम आशातना; स्थापनाचार्यने खोवे तथा भोडे ते उत्कृष्ट आशातना छे; तेवीजरीतें ज्ञानोपकरण, दर्शनोपकरण, तथा चारित्रोपकरण, रजोहरणादि, मुखवस्त्रिका, दंडक, दंडिका प्रमुखनी पण आशातना टाले.

श्रावकें सर्वधर्मोपकरण चरवला, मुहपत्ति प्रमुख विधिपूर्वक स्वस्थानमां स्थापना प्रमुख करवी जोइए, अन्यथा धर्मनी अवज्ञा प्रमुख दूषणो लागे. शास्त्रमां लख्युं छे के जे उत्सूत्र भाखे, तथा अर्हंत अने गुरुनी अवज्ञा प्रमुख महाआशातना करे ते सावद्याचार्य, मरीचि, जमालि, कुलवालुकादिनी पेठे अनंत जन्म मरणनी वृद्धि करे. यतः ॥ उस्सुत्त भासगाणं, बोही नासो अणंत संसारो ॥ पाणच्च एवि धीरा, उस्सुत्तं ता न भासंति ॥ १ ॥ तिछयर पवयण सुयं, आयरियं गणहरं महिड्ढियं ॥ आसायं तो वहुसो, अणंत संसारिउ होई ॥ २ ॥

तेवीजरीतें देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य तथा गुरु द्रव्य, वस्त्र, पात्रादि, तेनो विनाश थतो देखी, वचाव नहि करतां उपेक्षा करवी, ते पण महा आशातना छे. यदूचे ॥ गाथा ॥ चेइअ दव्व विणासे, इसिघाए पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउत्थ भंगे, मूलग्गी बोहि लाभस्स ॥ १ ॥ तथा श्रावक दिनकृत्य, दर्शनशुद्धि आदि शास्त्रोमां लख्युं

छे के ॥ गाथा ॥ चेइअ दवं साहा, रणं च जो डुहइ मोहि अमईउ ॥ धम्मंच सोनयाणाइ, अहवा बद्धाउउ न रए ॥ १ ॥ अर्थः—चैत्यद्रव्य तथा साधारणद्रव्यनो जे मोहितमति नाश करे, ते कां तो धर्म जाणतो नथी, अथ वा तो तेणें नरकनुं आयुष्य बांधेलुं छे, तेज कारणथी एवुं अयोग्य काम करे छे; वली चैत्यद्रव्यनो नाश, नक्षण तथा उपेक्षण कोइ करतो होय, तेने जो साधु न हठावे, तो ते साधु पण अनंत संसारी थइ जाय.

प्रश्नः— मन, वचन, कायाथी जेणें सावद्यनो त्याग करेल छे, एवा यतिने चैत्यद्रव्यनी रक्षा करवानो शुं अधिकार छे ?

उत्तरः— जो राजा, वजीर के शेठ प्रमुखनी याचना करी तेउनी पासेथी घर, डुकान, गामादि लइ विधिथी नवी पेदाश उत्पन्न करे तो तारुं विवक्षित दूपण लागशे; परंतु यथा नद्रकादिथी जे कोइए प्रथम आपेल होय, तेनो नाश थतो देखी रक्षण करे तो कांइ दूपण लागतुं नथी, बलके जिनाज्ञानी आराधना होवाथी धर्मनी पुष्टि थाय छे.

नवां जिनमंदिर बनाववाथी, जे पूर्वे बनेलां छे, तेना प्रतिपंथि अर्थात् शत्रुने जो साधु हठावे, तो ते साधुने प्रायश्चित्त नथी, तथा ते साधुनी प्रतिज्ञा पण नंग थती नथी. आगम पण एमज कथन करे छे. ते कारणथी जिनद्रव्य जे खाय तथा उपेक्षा करे, ते श्रावक आगलना जन्ममां बुद्धिहीन थाय, अने पापकर्मथी लेपायमान थाय छे. यथा ॥ आयणं जो नंजइ, पडिवन्नं धणं न देइ देवस्स ॥ नस्संतं समुविखइ, सोविहु परिनमइ संसारे ॥ १ ॥ अर्थः— जे पुरुष मंदिरनी आमदानी नांगे, अने जे मोढेथी बोल्याछतां, जिनद्रव्य न आपे, ते पण संसारमां परिनमण करे. तथा ॥ जिणवयण वुड्किरं, पनावगं नाण दंसण गुणाणं ॥ नखंतो जीणदवं, अणंत संसारीउ होई ॥ १ ॥ अर्थः— जे जिनमतनी वृद्धि करे, चैत्यपूजा, चैत्य समारवां, महापूजा, सत्कारादि करी, ज्ञान दर्शननी प्रनावना करे, परंतु जिनद्रव्यनो नाश करे, तो ते अनंतसंसारी थाय, अने जो जिनद्रव्यनी रक्षा करे तो अल्पसंसारी थाय, देवद्रव्यनी वृद्धि करे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे; परंतु पंदर कर्मादान, असत्य व्यापार दूर करी सद्व्यवहारथी जिनद्रव्यनी वृद्धि करे. ॥

यतः ॥ जिणवर आणा रहियं, वद्धारंतावि केवि जिणदव्वं ॥ बुड्डंति भवसमुद्दे, मूढा मोहेण अन्नाणी ॥ १ ॥

कोइ कहे छे के श्रावक विना वीजाउने तेउना अधिक किंमतना दागीना राखीने कालांतरे व्याजनी वृद्धि करे, ते उचित छे. एम कहेवुं पण ठीक छे; कारण के सम्यक्त्वपचीशी आदि ग्रंथोमां संकाशनी कथामां तेमज लखेल छे. चैत्यद्रव्य भक्षण करवाथी वहुज कष्ट पामवुं पडे छे. सागर श्रेष्टिवत् ॥ आ कथा श्राद्धविधि ग्रंथथी जाणवी. ज्ञानद्रव्य पण देवद्रव्यनी जेम अकल्पनीय छे, अर्थात् तेनो पण नाश न करवो, भक्षण न करवुं, अने वगडतां तेनी सार संभाल करवी; तेवीज रीतें साधारण द्रव्य पण संघनी अनुज्ञाथीज कल्पे छे. अनुज्ञाविना काममां लेवुं न कल्पे. संघें पण साते क्षेत्रमांज साधारण द्रव्य वापरवुं जोइए. वीजा मागनाराउने पण तेमांथी आपवुं न जोइए. तेवीज रीतें ज्ञान संवंधी कागल, पत्रादि, साधुनुं आपेलुं श्रावकें पोताना कार्यमां नहि वापरवुं जोइये. पोतानी पोथीमां पण नही राखवुं जोइए. स्थापनाचार्य अने जपमालादि लइ लेवानो व्यवहार तो देखाय छे; तथा गुरुनी आज्ञा विना साधु साध्वीए लिखिया पासे लखाववुं. तेमज वस्त्र सूत्रादिनुं लेवुं पण कल्पतुं नथी. इत्यादि विचारी लेवुं. ते कारणथी थोडा पण ज्ञान तेमज साधारण द्रव्यनो भोग न करवो जोइए.

देवने नामें वोले, ते द्रव्य तत्काल आपवुं जोइए, कारण के देवद्रव्य जेटलुं शीघ्र आपे, तेटलुं उत्तम छे. कदापि विलंव करे तो पछी कोण जाणे धनहानि, वा मरण थाय? तेवे प्रसंगे देवद्रव्यनुं ऋण रही जाय. वली संसारी गृहस्थोनुं देवुं पण श्रावकें शीघ्र आपवुं जोइए, तो पछी देवद्रव्य वास्ते शुंज कहेवुं? जे वखत माला पेहेरावी, वा जो कांइ देवद्रव्यना भंडारमां आपवानुं कर्युं, तेज वखतथी ते देवद्रव्य थइ चुक्युं. ते द्रव्यथी जे लाभ मेलवाय ते पण देवद्रव्य समजवुं. ते द्रव्य श्रावकें भोगववुं न जोइए, तेज कारणथी शीघ्र आपी देवुं जोइए. जो मास आदि पछी आपवानो करार करे तो करार उपर माग्या विना जरुर आपी देवुं. जो करार वित्यावाद आपे तो देवद्रव्य खावानो दोष लागे. देवद्रव्यनी उघराणी पण श्रावक पोतानी उघराणीनी पेठे यत्नथी

करे. जो देवद्रव्य लेवामां ढील करे, अने कदाचित् देवादारनी दुर्भिक्ष आदि कारणथी दरिद्रादि अवस्था आवी जाय तो फरी मलवुं मुश्केल थइ जाय, वली देनार पण उत्साहपूर्वक कपटरहित थइ शीघ्र आपी दे; नही तो देवद्रव्य भक्षण करवानो दोष छे.

वली देव, ज्ञान तथा साधारण संबंधी दुकान, खेतर, वाडी, घर, पथ्थर, ईंट, चुनो, काष्ठ, वांस, माटी, खडी, चंदन, केशर, बरास, फूल, चंगेरी, धूपपात्र, कलश, वासकुंपी, छत्र, सिंहासन, चामर, चंदरवा, झालर, भेरी, चंदनी, तंबु, कनात, पडदा, कांबल, बाजोठ, तखता, पाटला, पाटी, घडा, चेवा, ओरसीआ, काजल, जल, दीवा, चैत्यशाला, परनालनुं पाणी इत्यादि सर्व देव विगेरेनुं पोताना कामनां न वापरवुं जोइये. तुटी जाय, फाटीजाय, वा मलिन थायतो महादोष लागेछे. देवनी पासे बलता दीवाना प्रकाशमां कोइ सांसारिक काम करे तो ते मरीने तिर्यंच थाय; ते कारणथी देवना दिवामां खतपत्रादि वांचवां न जोइये. रुपीआपण न परखवा. घरनां काम तो करवांज नहि. वली देवना केशर चंदननुं तिलकपण न करवुं. देवना जलथी हाथ पण न धोवा. स्नात्रजलपण थोडुंज वापरवुं जोइये. देवना झालर, मृदंग, भेरीप्रमुख जे जे सामान, गुरु तथा संघना कार्यमां वापरे, तो ते बाबतनो नकराणो आपी वापरे. कदाचित् कोइ उपकरण तुटी जायतो पोताना पैसा खरची नवुं बनावी आपे. देवना दीप फानस प्रमुखमां जुदाज राखे; अने जो साधारण द्रव्यनी झालर प्रमुख वस्तुओ बनावे तो सर्व धर्मकार्यमां वापरी शकाय. तेमां दोष नथी. जेवा भावथी करे, तेवुं प्रमाण छे.

देवनां तथा ज्ञान खातानां घर प्रमुख पण श्रावकें निःशुकतादि दोष होवाथी भाडे राखवां न जोइये. साधारण द्रव्यना घरप्रमुख संघनी अनुमतिथी लोकव्यवहारें भाडुं आपी वापरे तो दोष नथी; परंतु भाडुं करारने दिवसे पोतानीमेले आपी देवुं जोइये. भाडे राखेलुं मकान समरावबामां पोतानुं धन वापरे तो हिसाबमां मजरे ले. तेमां दोष नथी; कोइ साधर्मी दुःखी होय, निर्धन थइ गयो होय, अने ते संघनी आज्ञाथी भाडुं आप्याविना रहे तोपण दोष नथी. वली तीर्थादिमां अथवा देरासरमां बहु वखत रेहेवुं पडे, तेमां सुवे, तो त्यांपण व्यवहार मुजब अधिक भाडुं

आपे, ठेतुं नाडुं आपे तो दोष लागे. नाडुं आप्याविना देव ज्ञान तथा साधारण संबंधी कलश, पाटला प्रमुख उपकरणो उजमणामां, पुस्तक पूजामां, नंदी प्रमुखमां मांडवासारु न लेवां जोइये; कारण के उजमणां पोताना नामथी करवामां आवेछे, अने तेमां देव, ज्ञान, वा साधारण खातानी वस्तुउं नकरा शिवाय वपराय तो दोष लागेछे.

घर देरासरमां चडाववामां आवेला अक्षत, सोपारी, बदाम, प्रमुख वेचवाथी जे धन उपजे, तेनां पुष्प प्रमुख लइ घरदेरासरमां न चडावे, मोटामंदिरमां पण न चडावे. जे पूजारी होय तेने सर्व हकीकत कहे; अने मंदिरनुं द्रव्य छे, पण मारुं नथी एम स्पष्ट कहे. पूजारी न होय तो संघसमक्ष कही दे. एम न कहे तो महादोष छे. घरदेरासरनुं नैवेद्यादि मालीने आपे, परंतु तेथी मालीनी नोकरी हिसाबमां न ले. प्रथमथीज जोइती पुष्पादि वस्तु आपवी एवा करारथी काम ले तो दोष नथी. मुख्यवृत्तियें तो नोकरीवास्ते चडेलुं आपवाथी जुदुं आपवुं जोइये.

घरदेरासरमां चडेला अक्षत प्रमुख मोटा मंदिरमां मोकलावी आपे, अन्यथा घरदेरासरना द्रव्यथी घरदेरासरनी पूजा गणाशे, परंतु पोताना द्रव्यनी थशे नहि. तेम करवाथी अनादर, अवज्ञादि दोष छे, तेथी तेम करवुं युक्त नथी. स्वद्रव्यथीज पूजा करवी उचित छे. देरानां नैवेद्य, अक्षतादि पोताना द्रव्यनी जेम साचववां जोइये, बराबर किंमते वेची, देव द्रव्य वधारवुं जोइये. परंतु जेम तेम वेची आपी देवां न जोइये. जो तेम करे तो देवद्रव्य नाश करवानो दोष लागेछे.

सर्व रीतें रक्षण करतां छतां चोर, अग्नि आदिना उपद्रवथी देवद्रव्यनाश पामे तो चिंताकारकने दोष नथी.

देव, गुरु, यात्रा, तीर्थपूजा, संघपूजा, साधर्मिवात्सल्य, स्नात्रप्रभावना, ज्ञान लखाववा प्रमुख कारणोवास्ते बीजाउं पासेथी धन ले, त्यारे चार पांच पुरुषोने साक्षी राखी ले; पछी खरचवाना प्रसंगमां पण गुरुसंघ प्रमुख प्रगट कही दे, के आ धन में अमुक सख्सनुं आपेलुं खरचेलुं छे. मारुं नथी.

तीर्थादिमां, तेमज पूजा स्नात्रमां, ध्वजा चडाववा प्रमुख आवश्यक कर्त्तव्यमां खरच बीजाने शिर नहि नाखतां, पोतेज यथाशक्ति करे. जो कोइयें धन खरचवाने आप्युं होय तो तेनुं नाम प्रगट बोली काम करे.

जो घणाये मली साधर्मिवात्सल्य, संघपूजादि कार्यमां धन वापरवा आप्युं होय तो जेनो जेनो जेटलो जेटलो हिस्सो होय ते ते सर्व प्रगटपणे कही दे, नहिं तो पुण्यफलनी चोरी लागे.

वली मरणांत समये माता, पिता प्रमुखें जे धर्ममां खरचवा कह्युं होय, तथा पुत्रादि जे खरच करवुं कबुल करे. ते बहु श्रावकोपासे कही देवुं जोइए. जेम के हुं तमारा नामथी अमुक दिवसनी अंदर अमुक धन खरचीश, तमे तेनी अनुमोदना करो. पछी ते धन सर्व समक्ष, पोताना नामथी नही, परंतु माता पिता प्रमुखना नामथी ते मुदतनी अंदर खरची देवुं जोइए. धर्मनां खरच मुख्यवृत्तिए तो साधारण द्रव्यथीज करवां जोइए; कारण के ज्यां ज्यां काम पडे, त्यां त्यां उपयोगमां आवे. सात क्षेत्रोमां जे क्षेत्र सीदातुं होय, तेमां धन खरची, तेने टेको आपे. कोइ श्रावक निर्धन थइ गयो होय तो, तेने तेज धनथी सहाय आपे॥लोकेप्युक्तं॥ दरिद्रं भर राजेंद्र, मा समृद्धं कदाचन॥ व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरोगस्य किमौषधं॥ १॥ तेज कारणथी, परभावना, संघ पेहेरामणी तथा लाणीप्रमुखमां, जे निर्धन साधर्मी होय, तेने विशेष वस्तु आपवी जोइये; अन्यथा धर्म अवज्ञादि दोष लागे. वली धनवान्थी निर्धनने अधिक देवुं ते पण युक्तछे. जो शक्ति न होय तो बंनेने बराबर आपे.

पोतानो खरच धर्मद्रव्यथी न करवो जोइये. यात्रादि निमित्त जे धन काढवामां आवे, ते सर्व देवादि निमित्त थयुं. जो ते द्रव्य पोताना भोजनमां अथवा गाडी प्रमुख भाडामां वापरे तो अवश्य तेने देवद्रव्य खावानो दोष लागे. कदाचित् अज्ञानताथी, चूकथी, वे समजथी, इत्यादि कारणथी कोइ श्रावक देवादि द्रव्यनो उपभोग करी ले, तेना प्रायश्चित्तमां, जेटलुं द्रव्य तेणें उपभोगमां लीधुं होय तेटलुं द्रव्य देव, साधारण संबंधी जुदुं काढे मरणसमये शक्तिना अभावथी धर्मस्थानमां थोडुं खरचे, परंतु देवुं कोइनुं राखे नहि. देवप्रमुखनुं द्रव्य तो विशेषें करी राखे नहि. ए प्रमाणे श्रीजिनराजनी पूजा, भक्ति, द्रव्य रक्षणादि दृढ भावथी करवां जोइये. इति.

हवे गुरुवंदनविधि लखीये छीये. ज्ञानादि पांच आचार संयुक्त होय,

तथा जे शुद्ध प्ररूपक होय, ते गुरु छे. पांच आचारनुं स्वरूप जोवुं होय तो, श्रीरत्नशेखरसूरिकृत आचारप्रदीप ग्रंथ जोइ लेवो.

पूर्वोक्त गुरु, आचार्य प्रमुख सन्मुख, जे प्रत्याख्यान पूर्वे पोते पोतानी मेळे कर्युं हतुं, ते विशेष रीतें विधिपूर्वक गुरुमुखथी उच्चरावे; कारण के प्रत्याख्यान त्रणतरेहथी करवामां आवेछे. १ आत्मसाक्षिक, २ देवसाक्षिक, ३ गुरुसाक्षिक, तेनो विधि आ छे–

गुरु, मंदिरमां देववंदनार्थे, स्नात्रादि देखवावास्ते, धर्मोपदेश देवावास्ते, जिनमंदिरमां आव्या होय, तथा वस्तिमां होय, त्यां मंदिरनी जेम त्रण निस्सिहि, पांच अभिगमनादि, यथायोग्य विधिपूर्वक जइ गुरु धर्मोपदेश आपे ते पहेलां अथवा पछी यथाविधियें पचवीश आवश्यक, शुद्ध द्वादशावर्त्त वंदन करे; गुरुवंदननुं फल बहुज मोटुं छे. कृष्णवासुदेववत्. भाष्यमां वंदनाना त्रण प्रकारछे. एक तो मस्तक नमाववुं ते फेटावंदना, बीजी संपूर्ण बे खमासणां प्रमुख कहेवां ते स्तोभवंदना, त्रीजी द्वादशावर्त्त करवाथी, द्वादशावर्त्तवंदना थाय छे. प्रथमनी वंदना सर्व संघने करवी; बीजी वंदना सर्व स्वदर्शनी साधुउंने करवी; अने त्रीजी वंदना पदवीधर आचार्य प्रमुखने करवी.

जेणें सवारनुं पडिकमणुं न कर्युं होय, तेणें विधिपूर्वक वंदना करवी; कारण के भाष्यमां लख्युं छे के, सवारनो वंदनाविधि आ प्रमाणे करे. प्रथम १ भाष्योक्तविधियें इर्यापथ प्रतिक्रमे, पछी २ कुस्वाननो कायोत्सर्ग करे, सो उश्वास प्रमाण करे, जो स्वप्नमां स्त्रीसाथे संगम कर्यो होय तो अशुचिनी सर्व जगा धोइ, पछी एक सो आठ श्वासोश्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे. पछी ३ चैत्यवंदन करे. पछी ४ क्षमाश्रमणपूर्वक मुहपत्ति प्रतिलेखे, पछी ५ बे वंदणां दे, पछी ६ देवसि आदिक आलोवे, पछी ७ वांदणां दे, पछी; ८ अप्भुठिउंमि कहे, पछी ९ बे वांदणां दे, पछी १० प्रत्याख्यान करे, पछी ११ भगवान अहं इत्यादि चार क्षमाश्रमण दे, पछी १२ स्वाध्याय संदिसाहु कहे, पछी क्षमाश्रमणपूर्वक सधाय करुं एम कहे, पछी स्वाध्याय करे.

हवे संध्यावंदनविधि लखीयें छीयें. १ इर्यापथ पडिकमे, पछी २ चैत्यवंदन करे, पछी ३ क्षमाश्रमणपूर्वक मुखवस्त्रिकानुं प्रतिलेखन करे, प-

ठी ४ बे वांदणां दे, पठी ५ दिवसचरिमनुं प्रत्याख्यान करे, पठी ६ बेवांदणां दे, पठी ७ देवसि आलोउं कहे, पठी ८ बे वांदणां दे, पठी ए अप्रुठिउं कहे, पठी १० नगवान् आदि चार स्तोनवंदना करे, पठी ११ देवसि प्रायश्चित्तनो काउसग्ग करे, पठी १२ पूर्ववत् बे खमासमण दइ स्वाध्याय करे.

जो गुरुनुं चित्त बीजां कार्य करवातरफ होय, तो संक्षेपमात्र वंदना करे. एम वंदनापूर्वक गुरुपासे प्रत्याख्यान करावे; कारण के श्रावक प्रज्ञप्तिसूत्रमां लख्युं ठे के, प्रत्याख्यान करवाना परिणाम दृढ होय तो पण, गुरुपासे प्रत्याख्यान करे; गुरुपासे प्रत्याख्यान करवामां चार गुण ठे. १ दृढता थायठे, २ आज्ञापालन थायठे, ३ कर्मनो क्षय थाय ठे, ४ उपशमनी वृद्धि थाय ठे.

एविज रीतें दैवसिक, चातुर्मासिक नियमादि पण गुरु विद्यमान ठतां, गुरुनी साक्षियेंज करवा जोइये. योगशास्त्रमां गुरुनी नक्ति आ प्रमाणे कहीठे. तथा ॥ अन्युत्थानं तदालोके,ऽनियानं च तदागमे ॥ शिरस्यंजलिसंश्लेषः, स्वयमासनढौकनं ॥ १ ॥ आसनाभिग्रहोनक्त्या, वंदना पर्युपासनं ॥ तद्यानेऽनुगमश्चेति, प्रतिपत्तिरियं गुरौ ॥ २ ॥ अर्थः–१ गुरुने आवता देखी उनां थवुं, २ सन्मुख लेवा जवुं, ३ मस्तक उपर अंजलि बांधी प्रणाम करवा, ४ आसन देवुं, ५ ज्यारे गुरु आसन उपर बेसे, त्यारेमारे बेसवुं एवो अनिग्रह करवो, ६ नक्तिथी वंदना, पर्युपासना करवी, ७ ज्यारे गुरुजाय त्यारे पहोंचाडवा जवुं; वली १ गुरुने अडी बराबर न बेसे, २ गुरुथी आगल न बेसे, ३ गुरुनी तरफ पीठ दइ न बेसे, ४ गुरुनी पासे पग उपर पग चडावी न बेसे, ५ पलोंठी मारी न बेसे, ६ हाथथी जंघा लपेटी न बेसे, ७ पग पसारी न बेसे, ८ विकथा न करे, ए बहु हसे नहि १० निद्रा ले नहि, ११ मन, वचन, काया गोपवी, बे हाथ जोडी, नक्ति बहुमानपूर्वक, उपयोगसहित सांनले. सारांश के गुरुपासे धर्म सांनलवाथी आ लोक तथा परलोक संबंधी बहु गुणो प्राप्त थायठे.

वली गुरुने पुठे, साहेब ! कोइ साधु रागग्रस्त ठे, तो वैद्यने बोलावुं ? औषधादि उपचारवास्ते फरमावो ? गुरुना फरमान मुजब करे. गुरु गठनी सर्व तरेहथी सार संनाल ले. नोजनने अवसरे उपाश्रये जइ साधुने निमंत्रणा करे, वली औषध प्रमुख जे जेने पथ्य होय ते तेने आपे. ज्यारे

साधु, श्रावकने घेर आवे, त्यारे जे जे वस्तु साधुने योग्य होय, ते ते सर्व वस्तु देवावास्ते निमंत्रणा करे. सर्व वस्तुउनां नाम साधुपासे ले, जो के साधु न लहे तोपण दाताने जीर्णशेठवत् पुण्य फल ठे. रोगी साधुनी वैयावच्च करवाथी जीवानंद वैद्यवत् महापुण्य फल थायठे. साधुउने रहेवा वास्ते स्थान आपे; जिनशासनना प्रत्यनीकने सर्वशक्ति वापरी निवारण करे. साधवीउनी डुष्ट, नास्तिक, डुःशील पुरुषोथी रक्षा करे. पोताना घरनी पासे बंदोवस्तवाला, सुंदर उपाश्रय रहेवा आपे, ते साधवीउनी, पोतानी स्त्री, वहु, वेहेन, दीकरी प्रमुख पासे सेवाजक्ति करावे. पोतानी दीकरीउने साधवीउ पासे विद्या शिखवा मोकले. जो कोइ दीकरीने विद्याज्यास करतां वैराग्य थाय, तो साधवीने आपे. जो कोइ साधवी धर्मकृत्य जूली जाय, तो स्मरण करावे. जो कोइ साधवी अन्यायमां प्रवृत्ति करे तो तेने निवारे. वली पोते दररोज गुरुपासे नवीन नवीन शास्त्र अज्यास करे. जो अल्पबुद्धि होय तोपण जणवानो विचार न ठोडे. इत्यादि धर्मकृत्य कर्या पठी, श्रावक जो राजा होय तो राजसजामां जाय, प्रधान होय तो, न्यायसजामां जाय, वाणीउ होय तो वजारमां डुकाने जाय, इत्यादि उचित स्थानमां जइ, धर्मथी विरुद्ध न होय ते रीतें धन उपार्जन करवानी चिंता करे.

हवे राजा केवी रीतें प्रवर्त्ते ते लखीये ठीये. राजा, दरिद्री मान्य, अमान्य, उत्तम, अधमादि सर्वलोकोनो पक्षपातरहित मध्यस्थरीतें न्याय करे. प्रधाननुं कर्त्तव्य ए ठे के तेणें राजा तथा प्रजा, उजयने नुकशान न थाय तेवी रीतें प्रवर्त्तवुं जोइये. कारण के नीतिशास्त्रनो श्लोक ठे के जे मंत्री राजानुं हित वांठेठे, तेना उपर प्रजा द्वेष करे ठे, अने जे प्रजानुं हित करे ठे, तेने राजा तजी देठे, तेथी एवी विषमस्थितिविचारपूर्वक राजा प्रजा बंनेना हितनो प्रधानें विचार करी काम करवां जोइये.

वणिक् व्यापारीउनी फरज ए ठे के तेमणे व्यापारनी शुद्धि करवी जोइये. यदाह ॥ ववहारसुद्धि देसाइ, विरुद्धचाय उचिय चरणेहिं ॥ तो कुणइ अत्थचिंतं, निवाहितो नियंधम्मं ॥१॥ व्यापारनी शुद्धि, देशादि विरुद्धनो त्याग, उचित आचरण, आ त्रण साचवी धन उपार्जनकरवानी चिंता करे. वली पोताना धर्मनोपण निर्वाह करे. संसारमां एवुं कोइ कार्य नथी,

जे धनथी सिद्ध न थाय? ते कारणथी बुद्धिमान् धन उपार्जन करवानो यत्न करे ॥ यदाह ॥ नहि तद्विद्यते किंचि, द्यदर्थेन न सिद्ध्यति ॥ यत्नेन-मतिमांस्तस्मा, दर्थमेकं प्रसाधयेत् ॥ १ ॥ आश्लोकमां जे अर्थचिंता बतावी, ते अनुवादरूप समजवी, कारण के धन उपार्जन करवानी चिंता लोकमां स्वतः सिद्धछे, कांइ शास्त्रकारना उपदेशथी नथी; अने "धर्म निर्वाहयन्" आ जे कथनछे, ते कहेवायोग्य छे, कारण के तेनी आगल प्राप्ति नथी. शास्त्रनो उपदेश अप्राप्त अर्थनी प्राप्ति वास्तेज होय छे, शेष सर्व अनुवादादिरूप छे.

हवे आजीविका चलाववाना प्रकार कहीये छीये. आजीविका चलाववानां सात साधन छे. १ व्यापार करवो, २ विद्याभ्यास करवो, ३ खेती करवी, ४ पशुउनुं पालन करवुं, ५ कारीगरी करवी, ६ नोकरी, ७ भीख मागवी. १ तेमां व्यापार करवाथी वणिक लोकोनी आजीविका चालेछे, २ विद्याथी वैद्यप्रमुखनी आजीविका चाले छे, ३ खेती करवाथी कणबी प्रमुखनी आजीविका चाले छे, ४ पशुपालनथी गोवाल प्रमुखनी आजीविका चाले छे, ५ शिल्पथी चितारादिनी आजीविका चाले छे. ६ नोकरी करवाथी सिपाइ लोकोनी आजीविका चाले छे, ७ भिक्षामां मागीखानाराउनी आजीविका छे. १ व्यापार धान्य, घी, तेल, कपास, सूतर, वस्त्र, धातु, मणी, माणेक, मोती, रुपैआ, सोनैया प्रमुख, तथा जे जे जातनां करीआणां छे, ते सर्वनो व्यापार चाले छे; वली जे व्याज वटाव करवो तेपण व्यापार छे.

२ विद्यापण, औषधि, रस, रसायन, चूर्ण अंजनादि, वलीवास्तुक शास्त्र, शकुनशास्त्र, भूत भविष्यादि निमित्त, सामुद्रिक, चूडामणी, जवाहिर परीक्षानां शास्त्र, तार्किक शास्त्र, न्यायशास्त्र, धर्म, अर्थ, कामना अनेक भेदथी अनेक प्रकारें छे. आ वैद्यविद्यामां लोभ, वा कपट करवुं ते ठीक नहीं; कारण के तेम करवाथी प्रायः दुर्ध्यान थवाथी गुणनी प्राप्ति थती नथी. वली जेने जेनाथी लाभ थाय छे, ते तेज वातने चाहेछे. तदुक्तं ॥ आर्या ॥ विग्रहमिछंतिभटा, वैद्याश्च व्याधिपीडितं लोकं ॥ मृतकं बहुलं विप्राः, क्षेमसुभिक्षं च निर्ग्रंथाः ॥१॥ अर्थः– सुभट संग्राम चाहे छे, वैद्य रोगपीडित लोकोने चाहे छे, ब्राह्मण, लोकोनां बहु मरण चाहे छे, अने नि-

ग्रंथ साधु निरुपद्रव अने सुकालने चाहे छे. वली जे वैद्य अत्यंत लोन्नी होय; धनवास्ते नुकशानकारक औषध जाणीने आपतो होय, जेना मनमां दया न होय, जे त्यागी, वैरागीने औषध न आपतो होय, जे गरीब अनाथ लोकोपासेथी तेउने मरता जाणतां पण धन खुंची लेतो होय, जे मांस मद्यादि अन्नक्ष्य वस्तु न्नक्षण करवानुं बतावतो होय, जे खोटां औषध बनावी लोकोने ठगतो होय, एवा वैद्य नरक गतिमां गमन करनारा छे; अने जे वैद्य सात्विक प्रकृतिवाला होय, निर्लोन्नी होय, अने परोपकारी होय, पूर्वोक्त दूषणो रहित होय, एवा वैद्यने तेनी विद्या श्रीऋषन्नदेवजीना जीव जीवानंद वैद्यनी जेम बंने न्नवोमां गुण देवावालीछे. एवा वैद्य विद्यार्थी आजीविका चलावे तो उत्तम छे.

३-४ खेती तथा पशुपालन. खेती त्रण प्रकारें थाय छे. १ वरसादथी, २ कुवा, नेहेरथी, ३ बंनेथी. पशुपालन अर्थात् गाय, न्नेंस, बकरी, उंट, बलद, घोडा, हाथी, तेउने वेची आजीविका करवी. आ बंने काम आत्मस्वरूपना अन्निलाषी विवेकिपुरुषोने करवां उचित नथी. जो निर्वाह न चालतो होय, अने ते काम करवुं पडतुं होय तो, बीज वाववानो समय जाणे, न्नूमि, सरस, नीरस जाणे, इत्यादि खेती संबंधी सारी माहिती मेलवी काम करे तो धनवृद्धि थाय; वली पशुपालन धंधामां पशुउ उपर निर्दयपणुं न करे, पशुना कोइ अवयव छेदे नहि, सारी रीतें सारसंन्नाल करे, तो लान्न मेलवे.

शिल्प आजीविका छे. शिल्प सो तरेहना छे, मूल तो शिल्प पांच छे. १ कुंन्नार, २ लुहार, ३ चितारो, ४ वणकर, ५ नाइ; आ पांचेना वीश वीश न्नेद छे. यद्यपि आ कालमां न्यून अधिक हशे, परंतु श्रीऋषन्न देवजीए प्रथम सो तरेहना शिल्प पर्यायो शिखव्या हता. ते कारणथी ते प्रमाणे अत्रे लखेल छे. जे सांसारिक विद्या ते सर्व शिल्पमां छे, बाकी कोइकज कर्ममां छे. शिल्पविद्या गुरुना उपदेशथी प्राप्त थाय छे, अने कर्म, स्वयमेव प्राप्त थाय छे. आ कर्म पण सामान्यथी चार प्रकारें छे. १ बुद्धिथी धन कमाववुं ते उत्तम. २ हाथथी धन मेलववुं ते मध्यम. ३ पगथी धन मेलववुं ते अधम. ४ मस्तके बोजो उगावी कमाववुं ते अधमाधम, समजवुं.

६ सेवा करी आजीविका करवी ते, सेवा, राजानी, शेठनी तथा सामान्य लोकोनी नोकरी करवी ते. प्रथम तो नोकरी कोइनी पण न करवी जोइए; कारण के नोकरी ते परतंत्रता छे. जो निर्वाह न थतो होय तो नोकरी पण करवी, जेनामां नीचेना गुणो होय, तेवा सख्सनी नोकरी करवी. १ जे कानना काचो न होय, २ शरमवालो होय, ३ कृतज्ञ होय, ४ सात्विक, गंभीर, धीर, उदार,शीलवान् गुणोनो रागी होय, तेवा पुरुषनी नोकरी करवी. जे क्रूरप्रकृतिवालो होय, कुव्यसनी होय,लोभी होय,मूर्ख होय, निरंतरनो रोगी होय, चतुर न होय, अन्यायी होय, एवा पुरुषनी नोकरी न करवी. वली कामंदकीय नामना नीतिशास्त्रमां लख्युं छे के, जे राजानी वृद्ध पुरुषोए सेवा करी छे, ते राजा उत्तम छे. वली स्वामिए पण जेवो सेवक होय, तेवुं सन्मान करवुं, ते तेनी फरज छे. सेवक पण जो शेठ थाक्यो होय, भूख्यो होय, क्रोधमां होय, व्याकुल होय, तृषावंत होय, शयन करतो होय, बीजाउ तेनी पासे अरज करता होय, तेवे प्रसंगे, विनति न करे. वली राजानी माता, राजानी राणी, राजकुमार, मुख्य प्रधान, न्यायाधीश, राजाना दरवान, तेउनी साथे सेवकें राजानी तरेह वर्तना राखवी जोइए. ए प्रमाणे वर्त्ते तो धननी प्राप्ति दुर्लभ न समजवी. यथा ॥ इक्षुक्षेत्रं; समुद्रश्च, योनिपोषणमेवच ॥ प्रसादोभूभुजां चैव, सद्यो घ्नंति दरिद्रतां ॥ १ ॥ निंदंतु मानिनां सेवा, राजादीनां सुखैषिणः ॥ स्वजनाः स्वजनोद्धार, संहारोन विना तथा ॥ २ ॥ मंत्री, न्यायाधीश, सेनानी, सर्वनोकरी, नृपसेवानी अंतर्भावी छे; परंतु जेल खानाना दरोगानी नोकरी, नगरना फोजदारनी नोकरी. तथा सीमापालनी नोकरी, इत्यादि कनिष्ठ नोकरी न करवी जोइए; कारण के आ नोकरी लोकोपर निर्दयता करावनारी छे, तेथी श्रावकें तो बिलकुल न करवी जोइए. जो कोइ श्रावक राज्याधिकारी थइ जाय, तो वस्तुपाल प्रमुखनी जेम महाधर्म, कीर्त्तिनां कामो करनारो थाय, श्रावक मुख्यवृत्तिए तो सम्यक् दृष्टिनीज नोकरी करे.

७ भीख मागी आजीविका करवी ते, भीख मागवाना अनेक प्रकार छे. तेमां धर्म उपष्टंभ मात्र आहार, वस्त्र, पात्रादिनी भिक्षा लेवी, ते पण जे साधुए सर्व संसार तथा परिग्रहना संगनो त्याग कर्यो छे, तेणे

मागवी उचित छे; कारण के तेने जीख मागवाशिवाय बीजी गति नथी. पूज्यपादश्री हरिजद्र सूरिजीए पोताना पांचमा अष्टकमां जिक्षा त्रण प्रकारें लखी छे. प्रथम सर्वसंपत्करी जिक्षा, बीजी पौरुपघ्नी जिक्षा, त्रीजी वृत्तिजिक्षा छे, जे साधु परिग्रहना त्यागी, धर्मध्यानसंयुक्त, जिनाज्ञापूर्वक पट्कायना आरंजथी रहित, तेनी जे जिक्षा, ते सर्व संपत्करी जिक्षा छे; अने जे साधु तो वन्या छे, परंतु साधुना गुण जेनामां नथी, वली जे गृहस्थावासमां हृष्ट पुष्ट पट्कायना आरंजी, पडिमा वहन नहि करता एवा श्रावक, तथा बीजा गृहस्थ जे मागीने खाय तेनी जे जिक्षा, ते पौरुपघ्नी जिक्षा छे; ते पुरुपो धर्मनी लाघवता करनारा छे, पूर्वजन्ममां जिनाज्ञा खंडन करनारा छे, वली आगल अनंत जन्मसुधी डुःख पामशे. जेउ निर्धन, लुला, लंगडा, आंधला, पांगला, असमर्थ, काम करवानी शक्ति विनाना, तेउनी जे जिक्षा, ते वृत्तिजिक्षा छे. आ जिक्षा डुष्ट नथी. आ जिक्षा करनाराउथी धर्मनी लाघवता आदि थतां नथी; कारण के जे तेउने आपे छे, ते अनुकंपा (दया) थी आपे छे. देनारा पुण्य उपार्जन करे छे; ते कारणथी गृहस्थें जीख न मागवी जोइए. जीख मागवाथी धर्मनी निंदा थाय छे, अने धर्मनी निंदाथी डुर्लजवोधी थाय छे. जीख मागवाथी उदर पूर्ण तो थाय छे, परंतु लक्ष्मी थती नथी. यतः ॥ लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये, किंचिदस्ति च कर्पणे ॥ अस्ति नास्ति च सेवायां, जिक्षायां न कदाचन ॥ १ ॥ मनुस्मृतिना चोथा अध्यायमां लख्युं छे के, ज्यारे व्यापार करे, त्यारे कष्टमां मदद आपनार पुंजीनुं बल, स्वजाग्योदय, देश, काल देखीने करे; व्यापार शरुआतमां थोडो करे, पछी लाज जाणे तो विशेप करे, कदाचित् निर्वाह न थतां खर कर्म पण करे, तो पण पोते पोतानी निंदा करतां करे. देख्या विना, तेमज परीक्षा कर्या विना सोदो न ले, जे सोदो संदेहवालो होय ते, वहुनी साथे मलीने ले, ज्यां स्वचक्र, परचक्र प्रमुखनो उपद्रव न होय, अने धर्म सामग्री होय, ते स्थलमां व्यापार करे.

कालथी, त्रण अष्ठाइ तथा पर्वतिथिने दिन व्यापार न करे. जे वस्तु वर्षाकाल साथे विराधी होय, तेनो त्याग करे; जावथी, जे क्षत्रिय जातिना व्यापारी राजा प्रमुख होय, तेउनी साथे व्यापार न करे, पोताना

विरोधीने उधारे न आपे, तेमज नट, विट, वेश्या, जुगारी प्रमुखने तो विशेषें करी उधारे न आपे, हथीआर बांधनारानी साथे, तेमज ब्राह्मण व्यापारी साथे लेण देण न करे, लेण देण करवामां व्याजें धीरधार करे त्यारे अधिक किंमतना दागीन राखी ते उपर रूपीआ धीरे, कारण के तेथी मागवाथी थतो क्लेश, विरोध, धर्महानि, धरणादि कष्ट थतां नथी. जो एम निर्वाह न थाय तो, सत्यवादीने व्याजु उधार धीरे, व्याज पण अधिक न खाय, सेंकडे पांच छ टका सुधीनुं खाय, जेथी निंदा न थाय तेम करे,

जो देवुं होय तो, करारनी मुदत उपर माग्या विनाज करज आपी दे, कदाचित् निर्धनपणाथी एकज वारे न आपी शके तो किस्तो प्रमाणे जरुर आपी दे, कारण के देवुं कोइनुं राखवुं न जोइए. यदुक्तं ॥ धर्मारंभे ऋणछेदे, कन्यादाने धनागमे ॥ शत्रुघातेऽग्निरोगे च, कालक्षेपं न कारयेत् ॥ १ ॥ जो देवुं न आपी शकाय, तो लेणदारना नोकर थइ देवुं वाले, नही तो भवांतरोमां तेना चाकर, पाडा, बलद, उंट, गधेडा, खच्चर, घोडा प्रमुख बनी देवुं आपवुं पडशे. लेणदार पण ज्यारे जाणे के, आ देणदार आपवाने समर्थ नथी, त्यारे बिलकुल मागवुं छोडी दे, एम कहे के ज्यारे तुं आपवाने शक्तिमान् था, त्यारे आपजे, नहि तो आ धन में धर्ममां वापर्युं छे एम समजवुं, पोताना चोपडामां पण हुं लखुंछुं के तारी पासे मारे कांइ पण हवे लेणुं नथी.

श्रावकें मुख्यवृत्तियें तो धर्मिजनोनी साथेज व्यवहार करवो जोइये, कारण के बंने पासे धन रहेशे तो धर्ममां वापरशे, अने जो कोइ म्लेच्छादि नीचमाणस पासे धन रही जाय तो व्युत्सर्जन करी दे, अने व्युत्सर्जन कर्या पछी जो ते म्लेच्छादि धन पाछुं आपी दे, तो धन धर्ममां खरचवावास्ते संघने सुप्रत करे, अने व्युत्सर्जन करेल छे एम पण कही दे, तेवीज रीतें जे कांइ वस्तु खोवाइ होय अने शोधतां छतां हाथ न लागे तो ते वस्तु पण व्युत्सर्जन करी दे, पछी कदाचित् पोताने धनहानि थइ जाय, वा धननी अप्राप्ति थइ जाय, तो पण खेद न करे, कारण के खेद न करवो, तेज लक्ष्मी मलवानुं मूल कारण छे.

बहु धन जतुं रहे, तोपण धर्म करवामां आलस न करे, कारण के सं-

पत्ति अने विपत्ति मोटा पुरुषोनेज आवे छे. निरंतर एक सरखा दिवसो कोइना जता नथी, पूर्वजन्म जन्मांतरना पुण्य पापना उदयथी संपत्ति, विपत्ति आवी मळे छे; ते कारणथी धैर्यनुं अवलंबन करवुं तेज श्रेष्ट छे. कदी अनेक उपायो करतां छतां पण दरिद्रता दूर न थाय तो कोइ जाग्यवाननो आधार ले, कारण के काष्टनी साथे लोढुं पण तरे छे.

जो वहु धन थइ जाय तो, अभिमान न करे, कारण के लक्ष्मीनी साथे पांचवस्तुओ आवेछे. १ निर्दयपणुं, २ अहंकार, ३ तृष्णा, ४ कठणवचननो व्यापार, ५ वेश्या, नट, विट, नीचपात्र वल्लजता. तेथी कदाच वहु धन थइ जाय तो ,आ पांचनेआववानो अवकाश न आपे, कोइनी साथे लडाइ न करे, पोताथी वलवान् साथे तो कदापि लडाइ न करे. वळी १ धनवंत, २ राजा, ३ पक्षवाला, ४ वलवान्, ५दीर्घरोषी, ६ गुरु, ७ नीच, ८ तपस्वी, आ आठेनी साथे वाद न करे;ज्यांसुधी नरमाशथी काम थाय त्यांसुधि कडकपणुं न अंगीकार करे. लेवा देवामां भ्रांति, भूलादिथी अन्यथा थइ जाय तो, विवाद न करे, परंतु न्यायपूर्वक चोखवट करे. न्याय करनाराओये पण निर्लोभी, पक्षपातरहित, रहेवुं जोइये. वळी जे वस्तु मोंघी थवाथी समुदायने पीडा थाय, तेवी वस्तु मोंघी थवानो विचार न करे. कदाचित् कर्मयोगथी डुकाल प्रमुख थइ जाय, तोपण सोदामां वमणो, त्रमणो लाज थइ जाय, त्यारेपण अनाजमां वहु लाज लेवानी धानत न राखे. व्याजपण सेंकडे ठ टका अर्थात् आठ आना उपरांत न ले. कोइनुं पडीगयेलुं, विसरी गयेलुं, धन न ले. कालांतरे क्रयविक्रयादिमां देशकालादि अपेक्षा, उचित तथा शिष्टजन अनिंदित लाज ले. आ कथन पंचाशकसूत्रमां छे. वळी खोटा तोल, खोटा माप, न्यूनादिक व्यापार, रसमां नेल, संनेल प्रमुख न करे, वस्तुनुं अनुचित,मूल तथा व्याज न ले. लांच न ले, घालमेल न करे; घसायेलो, तेमज खोटो रुपीओ खरामां न आपे; वीजाना व्यापारमां जांग फोड न करे, घराक न ललचावे, वानकी कांइ देखाडी माल वीजो न आपे, अंधारामां राखी वस्तु न आपे, खोटां खत पत्रादि न वनावे, इत्यादि परवंचनपणुं त्यागे. सर्वथा व्यवहारशुद्धि करे, कारण के व्यवहार शुद्धिज गृहस्थधर्मनुं मूलछे.

वळी स्वामिद्रोह, मित्रद्रोह, विश्वासघात, वालद्रोह, वृद्धद्रोह, देव-

गुरुद्रोह न करे, थापणमोसो न करे, आ सर्व महापापनां काम छे. वली कुडी साक्षी, रोष, विश्वासघात, कृतघ्नता, आ चार कर्म चंडालपणां छे, तेथी ते त्यागे. असत्य बोलवुं ते सर्व पापथी मोटुं पाप छे, तेथी असत्य सर्वथा न बोले. न्यायथी धन उपार्जन करे, अने अन्यायी लोको जे सुखी देखाय छे. ते अन्यायथी सुखी नथी, परंतु तेउना पूर्वजन्मना पुण्यना फलथी सुखीछे; कारण के कर्मफल चार प्रकारनां छे. यदाहुर्धर्मघोष सूरिपादाः ॥ एक पुण्यानुबंधिपुण्यछे, बीजुं पापानुबंधि पुण्यछे, त्रीजुं पुण्यानुबंधि पापछे, चोथुं पापानुबंधि पाप छे. आ चारे प्रकारने कांइक विस्तारथी बतावीए छीये.

१ जेणे जिनधर्मनी बिलकुल विराधना करी नथी, परंतु संपूर्ण आराधना करी, जेउ संसारमां भवांतरमां महासुखी, धनाढ्य उत्पन्न थाय, तेउ पुण्यानुबंधि पुण्यवाला समजवा. भरत, बाहुबलिवत्

२ जे पुरुषो नीरोगादि गुणयुक्त होय, अने धनाढ्यपण होय, परंतु कोणिक राजानी पेठे पाप आचरणमां तत्पर होय, ते पापानुबंधि पुण्यवाला समजवा. आ पुण्य पूर्वभवमां अज्ञान कष्ट करवाथी थाय छे.

३ जे पुरुषो पापना उदयथी दरिद्री तथा दुःखी होय, परंतु श्रीजिनधर्ममां बहुज अनुरक्त होय, धर्म करवामां तत्पर होय, तेउ पुण्यानुबंधी पापवाला समजवा, द्रुमक महर्षिवत्. पूर्वभवमां लेशमात्र दयादि सुकृत करवाथी थाय छे.

४ जेउ पापी, चंडाल कर्मना करनारा, अधर्मी निर्दय, पाप करी पश्चात्ताप नही करनारा एवा पुरुषो दुःखी छे, तो पण पाप करवामां निरंतर तत्पर छे. तेउ पापानुबंधी पापवाला छे, कालिकसुरीआ कसाइवत्.

बाह्य जे नव प्रकारनी परिग्रहरूप ऋद्धि छे, अने अंतरंग जे आत्मानी अनंतगुणरूप ऋद्धि छे, ते पुण्यानुबंधी पुण्यथीज मलेछे; तेथी कदापि कोइ जीव पापानुबंधी पुण्यना प्रभावथी आ लोकमां सुखी देखाय तो पण भविष्यना जन्मोमां महादुःख तथा आपदा पामवाना.

वली जे मेहेसूलनी चोरी छे, ते स्वामिद्रोह छे, आ चोरी आ लोक तेमज परलोकमां अनर्थनी दायक छे; वली जेमां बीजाने पीडा थाय, एवो व्यवहार न करे॥ यतः ॥ शाठ्येन मित्रं कपटेन धर्मं, परोपतापेन

समृद्धिजावं ॥ सुखेन विद्यां परुपेण नारीं, वांछंति ये व्यक्तमपंडितास्ते ॥ १ ॥ तथा जेवी रीतें लोकोने रागजाव थाय, तेवो यत्न करे. यतः ॥ वंशस्थवृत्तं ॥ जितेंद्रियत्वं विनयस्य कारणं, गुणप्रकर्षोविनयादवाप्यते ॥ गुणप्रकर्षेण जनोनुरज्यते, जनानुरागप्रजवाहि संपदः ॥ १ ॥ वली धननी हानि तथा लाज, संग्रहादि गुह्य राखे, बीजा पासे प्रकाश न करे. यतः ॥ स्वकीयं दारमाहारं, सुकृतं डविणं गुणं ॥ डुष्कर्म मर्म मंत्रं च, परेषां न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥ वली असत्यपण न बोले, जो राजा, गुरु आदि पुछे तो सत्य कही दे. सत्य बोलवुं तेज पुरुषनो उत्तम धर्म छे.

वली यथार्थ कही मित्रनुं मन हरण करे, बांधव जनोने सन्मान आपी वश करे, स्त्रीने प्रेमथी वश करे, चाकरोने दान आपी वश करे, अने दाक्षिण्यताथी बीजा लोकोनां मन हरण करे. वली कोइ जगाये पोताना कार्यनी सिद्धिवास्ते बलवान् पुरुषोने पण आगल करे. वली ज्यां प्रीति होय, त्यां लेणदेणनो व्यापार न करे. आ कथन सोमनीतिमां पण छे.

साक्षीविना मित्रना घरमांपण धनादि राखवां न जोइये, कारण के लोज महाबुरो छे. वली जो सोंपनार सख्स गुजरी जाय तो ते धन तेना पुत्रादिने पाछुं आपी देवुं जोइये. जो धन सोंपनारनो कोइ संबंधी न होय तो ते धन सर्व लोकोनी समक्ष धर्मस्थानमां लगावे. वली श्रावक, देवगुरु, चैत्य, जिनमंदिरना साचा अथवा जूठा पण सोगंद न खाय. वली बीजाउंना साक्षीपण न थाय. यतः ॥ कर्पासिक ऋषि कहे छे ॥ अनीश्वरस्य द्वे जार्ये, पथि क्षेत्रं द्विधा कृषिः ॥ प्रातिजाव्यं च साक्ष्यं च, पंचानर्थाः स्वयंकृताः॥ १ ॥

वली श्रावक मुख्य वृत्तियें तो जे गाममां रहे, त्यांज व्यापार करे, कारण के तेम करवाथी कुटुंबनो अवियोग, घरनां कार्य, तथा धर्मकार्यादि सर्व बनी रहे छे. कदापि पोताना गाममां निर्वाह न थाय तो, पासेना देशांतरमां व्यापार करे, ज्यांथी जरूरी काम प्रसंगे पोताने घेर जलदीथी आवी शकाय. एवा कोण पामर छे के, पोताना देशमां निर्वाह थतो होय छतां परदेशमां जाय ॥ यतः॥ जीवंतोपि मृताः पंच, श्रूयंते किल जारते ॥ दरिड्रोव्याधितो मूर्खः, प्रवासी नित्यसेवकः ॥ १ ॥ जो निर्वाह न थतो होय तो, पोते न जाय, तेमज पुत्रादिने परदेश न मोकले, परंतु सुपरी-

क्वित गुमास्ताने परदेश मोकले, जो पोतानेज परदेश जवुं पडे तो, शुज्ञ मुहूर्त्त, सारां शुकन, निमित्त देखीने तथा देव गुरुने वंदना करीने, मंगलपूर्वक, ज्ञाग्यवान् पुरुषोना सथवारामां, निद्रादि प्रमाद तजी, केटलाएक पोताना ज्ञातिबंधुउने साथे लइ जाय, कारण के ज्ञाग्यवान्ना सथवाराथी विघ्न नाश पामे ठे. वली लेणदेण, गुप्त धन, सर्व, पिता ज्ञाइ, के पुत्रादिने बतावी जाय, पोताना संबंधीउने सारी शिखामण आपी जाय, बहुमानपूर्वक सेवकोने बोलावी जाय. जीववानी इच्छा होय तो, देवगुरुनुं अपमान करी, कोइनी निर्ज्ञंठना करी, स्त्री आदिने ताडना, तर्जना करी, अने बालकने रोवरावी न जाय. कदापि कोइ पर्वमहोत्सवादिना दिवसो निकट होय तो उत्सव करीने जाय. यतः ॥ उत्सवमशनं सर्वं, प्रगुणं चोपेक्ष्य मंगलमशेषं ॥ असमापिते च सूतक, युगेंगनर्त्तौ च नो यायात् ॥ १ ॥ वली दूध पीइने, मैथुनसेवन करीने, स्नानकरीने पोतानी स्त्रीने मारीने, वमन करीने, थुंकीने, रुदन करीने, कठण शब्द सुणीने, गालो सुणीने, परदेश न जाय; वली शिर मुंडावीने, आंसु पाडीने, अने मागां शुकन थतां पण ग्रामांतर न जाय.

वली कार्यने वास्ते जो चाले तो जे स्वर वेहेतो होय, ते बाजुनो पग प्रथम उपाडी मुके, जेथी कार्यसिद्धि थाय. वली रोगी, वृद्ध, ब्राह्मण, आंधलो माणस, गाय, पूजनीय, राजा, गर्ज्ञवती स्त्री, ज्ञार उपाडनार, तेउने कांइ आपीने ग्रामांतर जाय. वली धान्य पाकुं अथवा काचुं तथा पूजा योग्य मंत्रमंडल तेने तजे नहि. वली स्नाननुं जल, रुधिर, मडदुं, थुंक, श्लेष्म, विष्टा, मूत्र, बलतो अग्नि, साप, मनुष्य, शस्त्र, आ वस्तुने उलंघे नहि. वली नदीने कांठे, गायना गोकुलमां, वडना जाडनी नीचे, जलाशयमां, अने कुवाना कांठा उपर विष्टा न करे. वली रात्रियें वृक्षनीचे न रहे. उत्सव तथा सूतक पुरां थये परदेश जाय, साथ विना परदेश न जाय, दासनी साथे न जाय, मध्याह्ने तथा अर्धरात्रियें मुसाफरी न करे. वली क्रूर प्रकृतिवाला मनुष्य, कोटवाल, चाडीआ, दरजी, धोबीप्रमुख, अने नीचमित्रनी साथे गोष्टि न करे. तेउनी साथे अकाले चाले नहि. वली पाडा, गधेडा अने गायनी असवारी करे नहि. वली हाथीथी हजार हाथ, गाडाथी पांच हाथ, अने घोडा तथा शिंगडावाला जनावरोथी द-

श हाथ दूर रहे. वली खरची विना मुसाफरी करे नहि. बहु निद्रा लहे नहि. रस्तामां कोइनो विश्वास राखे नहि. एकलो कोइना घरमां जाय नहि. जुनां वहाण उपर चडे नहि. एकलो नदीमां प्रवेश करे नहि. मुश्केलीवाली जगामां साधनो विना जाय नहि. अगाध पाणीमां प्रवेश करे नहि. जेओ बहु क्रोधी होय, बहु सुखशीलिया होय, तथा बहु कंजुस होय, तेवाओनी साथे मुसाफरी करे नहि. तथा बांधवाना, मारवाना, जूगार खेलवाना, पीडाना, खजानाना, अने अंतेउरना स्थानमां गमन करे नहि. तथा बूरा स्थानमां, स्मशानमां, शून्यस्थानमां, चोकमां सूकाघासमां, कूडाकचवरमां; उंचीनींची जगामां, उकरडामां, वृक्षाग्रमां पर्वताग्रमां, नदीना कांठामां, कूवाना कांठापर, आ स्थानोमां दीर्घकाल बेसे नहि. वली जे जे कामो जे जे वखते करवां होय ते ते वखते करे, परंतु गफलत करे नहि, तेम तजे नहि.

पुरुषें सुशोभित वस्त्र पहेरवानो आडंबर तजवो न जोइए. परदेशमां गमन करतां तो विशेषें करी न तजवो जोइए; कारण के आडंबरथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय छे. वली जे कार्यो करवां ते पंचपरमेष्टि स्मरण पूर्वक, तथा गोतमादि गणधरोनां नामग्रहणपूर्वक करे; तेमज देव गुरुनी भक्तिवास्ते धननी कल्पना करे. कारण के ज्यारे धन कमावानो प्रारंभ थाय, त्यारे नफामांथी अमुक हिस्सो सातक्षेत्रोमां अवश्य लगावीश, एवी भावना अवश्य करवी जोइए.

ज्यारे लाभ प्राप्तथाय, त्यारे भावना अनुसारे मनोरथ सफल करे, कारण के व्यापारनुं फल धनप्राप्ति छे अने धनप्राप्तिनुं फल, धर्म कार्योमां धननो व्यय छे. तेम न थाय तो व्यापार करवो ते नरक तिर्यंच गति पामवानुं कारण थाय छे. जो धर्मकार्यमां धन खरचाय तो ते धर्मधन कहेवाय छे, अने जो पापकार्यमां खरचाय तो पापधन कहेवाय छे. ऋद्धिना त्रण प्रकार छे. १ धर्मऋद्धि, २ भोगऋद्धि, ३ पापऋद्धि. जो धर्मकार्यमां धन वपराय तो धर्म ऋद्धि, शरीरना भोगमां वपराय तो भोगऋद्धि; अने धर्म, भोगथी रहित ते पापऋद्धि जाणवी. ते कारणथी निरंतर स्वधननो दानादि धर्मकार्यमां व्यय थवो जोइए. जो थोडुं धन होय तो थोडुं धन धर्मकार्यमां वापरवुं; कारण के इच्छानुसारिणी

शक्ति कोइकनेज होय ठे. धनउपार्जन करवानो उपाय निरंतर करवो जोइए, परंतु अत्यंत लोज न करवो जोइये. धर्म अर्थ अने काम यथावसरे सेवन करवा जोइये, परंतु अत्यंत कामासक्त न थवुं जोइए. धन पण न्यायपूर्वक उपार्जन करवुं जोइए. न्यायोपार्जित धन सत्पात्रादिमां वापरवाना चार जंग ठे, ते लखीए ठीए.

न्यायोपार्जित धन सत्पात्रादिमां वापरवाना चार जंग ठे ते लखियें ठियें. १न्यायोपार्जित सत्पात्र विनियोगरूप प्रथम जंग. पुण्यानुबंधिपुण्यबंधनो हेतु होवाथी, वैमानिकदेवतापणुं, जोगजूमियुक्त मनुष्यपणुं, सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति, निकटमोक्ष फल, इत्यादि, ठे. धन सार्थवाह, तथा शालिजद्रादिवत्.

२ न्यायोपार्जित असत्पात्रविनियोगरूप वीजो जंग. पापानुबंधी पुण्यनो हेतु होवाथी जोगमात्र फल पण ठे. तो पण परिणामें विरस फल ठे. जेम लक्षजोज्य करनार ब्राह्मण अनेकजवोमां किंचित् सुख जोगवीने सेचनक नामें सर्वांग सुलक्षणो जद्रहस्ती थयो.

३ अन्यायोपार्जित सत्पात्रपरिपोषरूप त्रीजो जंग. तेनुं सारा क्षेत्रमां सामो वावी देवावत् फल ठे. ए सुखानुबंधीहोवाथी राज्यना कारजारीउना अत्यंत आरंज उपार्जित धन समान ठे. एवुं धन पण धर्मकार्यमां वापरवामां आवे तो सारुं ठे. आवु पर्वत उपर जिनमंदिर बंधावनार विमलचंद्र तथा वस्तुपाल, तेजपाल मंत्रीनी जेम लाजकारक ठे. जो तेवुं धन पण धर्मकार्यमां न वापरवामां आवे तो डुर्गति तेमज अपकीर्त्ति, तेनुं फल ठे. मम्मण शेठनी जेम.

४ अन्यायोपार्जितकुपात्रपोषरूप चोथो जंग. आ जंग सर्व प्रकारें त्यागवा योग्य ठे. कारण के अन्यायोपार्जित धन अने तेनो कुपात्रमां उपयोग करवो, ते एवुं ठे के, गायने मारी तेना मांसथी कागडानुं पोषण करवुं. ते कारणथी गृहस्थें न्यायथी धन उपार्जन करवुं जोइए.

श्राद्धदिनकृत्यसूत्रमां लख्युं ठे के व्यवहारशुद्धि, तेज धर्मनुं मूल ठे. जेनो व्यापार शुद्ध ठे, तेनुं धन पण शुद्ध ठे; जेनुं धन शुद्ध ठे, तेनो आहार शुद्ध ठे; जेनो आहार शुद्ध ठे, तेनो देह शुद्ध ठे; जेनो देह शुद्ध ठे, ते धर्मने योग्य ठे. एवो पुरुष जे जे कृत्य करे, ते सर्व सफल थाय. जे

व्यवहार शुद्ध न करे, ते धर्मनी निंदा करावावाथी स्वपरने दुर्लभबोधी करे; ते कारणथी व्यवहारशुद्धि अवश्य करवी जोइए.

वली देशादि विरुद्धनो त्याग करे. देश, काल, राजविरुद्धादि परिहरे. आ कथन हितोपदेश मालानुसार करेल छे. जे पुरुष देश, काल, राज्य तेमज धर्मविरुद्ध तजे, ते सम्यग् धर्मनी प्राप्ति करे छे.

देशविरुद्ध आ प्रमाणे. मारवाड देशमां खेती करवी अने सोरठ देशमां मदिरा बनाववी, इत्यादि देशविरुद्ध समजवुं. वली जे जे देशमां जे जे कार्य शिष्टजनो अनाचरणीय माने ते ते कार्य ते देशमां करवां ते देशविरुद्ध छे. जाति कुलादि अपेक्षाए जे अनुचित होय ते पण देश विरुद्ध छे. ब्राह्मण जातियें सुरापान करवुं ते जातिकुलविरुद्ध छे, अने एक देशवालानी सन्मुख बीजा देशवालानी निंदा करवी ते देशविरुद्ध छे.

कालविरुद्ध आ प्रमाणे. शीतकालमां हिमालय समीप गमन करवुं, उष्णकालमां आफ्रिका देशमां मुसाफरी करवी. वर्षाऋतुमां मरुदेशमां गमन करवुं, दुकालमां अनाजसहित जंगलमां मुसाफरी करवी, राजाओना परस्पर विरोधना वखतमां तथा धाड पाडुओ रस्तो रोकी बेठा होय ते वखते मुसाफरी करवी, सांजनी वखते धनसहित प्रयाण करवुं, इत्यादि स्थानकोमां, अति सामर्थ्य, सहाय तथा दृढबल विना गमन करे तो प्राणनाश तथा धननाशनो संभव छे. फागण मास पछी तलादिनो व्यापार, तल पीलाववा, तलादि भक्षण करवा, तथा वर्षाऋतुमां शाक पत्रादि भाजी प्रमुख खावां तथा बहु जीवाकुल भूमिमां हल फेरववां, इत्यादि महादोषनां कारण छे.

राजविरुद्ध आ प्रमाणे. राजाना अवर्णवाद बोलवा, जेने राजा मान्य करता होय, तेओने न मानवा, राजाना वैरीओनी साथे मेलाप करवो, राजाना शत्रुओना स्थानमां लोभथी जवुं, राजाना शत्रुओनी साथे व्यापार करवो, राजाना काममां पोतानी इच्छापूर्वक विधिनिषेध करवा.

लोकविरुद्ध आ प्रमाणे. नगर निवासीओनी साथे प्रतिकूलपणे वर्तवुं, स्वामिद्रोह करवो, लोकोनी निंदा करवी, गुणवान् तेमज धनवाननी निंदा करवी, पोतानी बडाइ गावी, सरलनी हांसि करवी, गुणवान उपर मत्सर करवो, कृतघ्नपणुं करवुं, बहुलोकोना विरोधी साथे सं-

गत करवी, लोको जेने मान्य करे तेनी अवज्ञा करवी, उत्तम आचार वालाउं कष्टमां पडे त्यारे राजी थवुं, पोतानी शक्ति ठतां साधर्मिनां कष्टनिवारण न करवां, देशादि उचित आचरणनुं उल्लंघन करवुं, थोडुं धन ठतां महाधनवाननो वेष धारण करवो, धनवान ठतां मेलां वस्त्र पहेरवां, इत्यादि लोकविरुद्ध ठे. आ सर्व इह लोकना अपयशनां कारण ठे. यडुवाच वाचकमुख्यः ॥ लोकः खल्वाधारः, सर्वेषां धर्मचारिणां यस्मात् ॥ तस्माल्लोकविरुद्धं, धर्मविरुद्धं च संत्याज्यं ॥ १ ॥ अर्थः– श्री उमास्वातिवाचक पूर्वधर आचार्य कहे ठे के, सर्वे धर्म करनाराउंने लोक (जनसमुदाय) आधार जूत ठे, ते कारणथी लोकविरुद्ध तथा धर्मविरुद्ध बंने निरंतर त्यागवा योग्य ठे. तेम करवाथी धर्मनो सुखें निर्वाह थाय ठे. लोकविरुद्ध त्याग करवाथी सर्वलोकोने ते वल्लज थाय ठे, अने लोकप्रिय थवुं तेज सम्यक्त्व तरुनुं बीज ठे.

हवे धर्मविरुद्ध लखीए ठीए; मिथ्यात्वनी करणी करवी, गाय प्रमुख सर्व प्राणीउंने निर्दयताथी ताडना करवी तेमज ते जीवोनी हिंसा करवी, तेउंने दृढ बंधनथी बांधवां, मांकड, जू प्रमुख क्षुद्रजंतुउंने निराधार फेंकवां तथा मारवां, तडकामां नांखवां, अप्कायना जीवोनी अत्यंत विराधना करवी, पाणी गलवा माटे मजबुत गलणां न राखवां, पाणी गल्या पठी संखारो फेंकी देवो, अनाज, इंधन, शाक, पत्र, तांबूल, फलादि शोध्याविना खावां. सोपारी, खारेक, उली, फली, प्रमुख संपूर्ण, जांग्या विना मुखमां नाखवां, जीवाकुल जूमिउपर स्नान करवुं, मलमूत्र करवां, उपयोग विना गमनागमन करवुं, जीवयुक्त धान्यादि दलवां, जरडवां, रांधवां, इत्यादि हिंसायुक्त काम करवां; धर्मनां कार्यो अनादरथी करवां, देव, गुरु अने साधर्मिउंनी निंदा करवी तथा द्वेष करवो. जिनमंदिरनुं द्रव्य खावुं, देवगुरु, धर्मना निंदकनी संगत करवी, धर्मिजीवोनी मश्करी करवी, अत्यंत कषाययुक्त काम करवां, पंदर कर्मादाननां आचरण तथा व्यापार तीव्र मलिन अध्यवसायपूर्वक करवा, पापयुक्त नोकरी करवी, इत्यादि अनेक धर्मविरुद्ध कार्यो ठे. आ पांचे प्रकारनां विरुद्ध श्रावकें त्यागवां जोइए.

हवे उचित आचरण कहीये ठीये. पिता प्रमुख नव जनोनी साथे उ-

चित आचरण अर्थात् स्नेहवृद्धि, कीर्त्यादिहेतु कार्य करवां, ते हितोपदेशमाला ग्रंथानुसार लखीये ठीये. नवजनोनी साथे उचित आचरण करवां तेउनां नाम. १ पिता, २ माता, ३ बंधु, ४ स्त्री, ५ पुत्र, ६ स्वजन, ७ गुरु, ८ नगरवासी लोक, ए परतीर्थिको अर्थात् बीजा मतवालाउ.

१ पितानी साथे उचित आचरण आ प्रमाणे. ते मन, वचन, कायाथी त्रण प्रकारें थायछे. तेमां कायाथी पिताना शरीरनी शुश्रूषा करवी, किंकरनी जेम विनय, वेयावच्च करवी, पिताना मुखमांथी निकलतां पेहेलां तेना अंतःकरणनो व्यापार समजी तेनी अभिलाषा पूर्ण करवी, पितानुं वचन उपाडी लेवुं, प्रसंगें पितानां चरणप्रक्षालन करवां, पितानी चंपी करवी, वृद्धपिताने उठतां, बेसतां आश्वासना करवी, देशकाल उचित, स्वशक्ति अनुसार भोजन, शय्या, वस्त्रादि विनयपूर्वक पितानी आज्ञानुसार आपवां, पितानी चाकरी पोते करवी, नोकरो पासे प्रसंग शिवाय कराववी नहीं; पितानुं वचन पालवा वास्ते श्रीरामचंद्रजी राज्याभिषेकनो त्याग करी वनवास गया, ए दृष्टांत ध्यानमां राखवुं. वली पितानुं वचन सुण्युं असुण्युं न करवुं, मस्तक धूणाववुं नहि, कालक्षेप करवो नहि, पितानी आज्ञानुसार वर्त्तवुं, सर्व कार्यो यत्नपूर्वक पोताना मनमां करवानो उत्साह थयो होय ते पितानी पासे प्रगट करवो. पिताने जे कार्य करवुं वास्तविक लागे ते करवुं, पिता, माता, गुरु अने बहुश्रुत आराध्यां थकां, सर्वकार्यनुं रहस्य प्रकाश करे ठे. पिता कदाचित् कठिन वचन बोले तो पण क्रोध न करवो, पितानां जे जे धर्मकार्य करवाना मनोरथ थाय ते ते पुरा करवा.

२ हवे मातानी साथे उचित आचरणनुं स्वरूप कहीये ठीये. पितानी जेम मातानी सर्वप्रकारें भक्ति करे, परंतु माताना मनोरथ पिताथी अधिक पूरा करे. देवपूजा, गुरुसेवा, धर्मश्रवण करवुं, देशविरति अंगीकार करवी, आवश्यक करवां, सात क्षेत्रमां धन वावरवुं, तीर्थयात्रा करवी, अनाथदीननो उद्धार करवो इत्यादि सर्व माताना मनोरथ विशेपरीतें पूर्ण करवा. ए प्रमाणे पूर्ण करे तोज उचित आचरण कर्यां समजवां. उत्तम सुपुत्रने ते प्रमाणे करवानी फरज ठे, कारण के मातापितानो उपकार अतुल्य ठे, ते उपकारनो बदलो नथी. कदाच मातापिताने सुपुत्र श्री अ-

रिहंतना धर्ममां जोडे तोज मातपिताना उपकारनो वदलो वली शके छे, तेम करवाथीज मातापिताना उपकारनुं ऋण वली शके छे, ते शिवाय वीजा कोइ उपायथी मातापिताना उपकारनुं ऋण वली शकतुं नथी. आ कथन श्रीस्थानांग सूत्रमां छे.

हवे माता संवंधी उचित आचरणमां जे विशेष छे ते लखीये छीये. माताना चित्तने अनुसरवुं ते उत्तम पुत्रनी फरज छे. स्त्री जातिनो स्वजावज प्रायः एवो होय छे, पोतानी धारणा मुजव न थाय तो जलदीथी चित्त खेदयुक्त थइ जाय, ते कारणथी जे काममां खेद या पीडा थाय ते काम न करवुं. पिताथी माता विशेष पूज्य छे. मनुस्वामी कहे छे के॥ उपाध्यायाद्दशाचार्यः, आचार्येभ्यः शतंपिता ॥ सहस्रं तु पितुर्माता, गौरवेणातिरिच्यते ॥ १ ॥ वली वीजाउंपण कहे छे के, ज्यां सुधि दुध पीये त्यां सुधी आ, मारी माता एम पशुपण जाणे छे, जोजन न खाइ शके त्यांसुधि आ मारी माता एम अधम पुरुष जाणे छे, ज्यांसुधी घरनुं काम करे त्यांसुधी आ मारी माता एम मध्यम पुरुष माने छे अने ज्यां सुधी जीवे त्यांसुधी तीर्थरूप उत्तम पुरुष पोतानी माने माने छे.

३ सहोदर अर्थात् वंधु साथे उचित आचरण आ प्रमाणे. मोटाजाइने पिता समान गणे, अने मोटो जाइ नानाजाइने सर्वकार्यमां साथे जोडे, जो उरमान मातानो दीकरो (जाइ) होय तो जेम श्रीरामचंद्र अने लक्ष्मणनो परस्पर प्रेम हतो तेवो परस्पर प्रेम राखवो जोइये. वली वडील वंधुनी स्त्रीउंनी साथे तथा तेमना पुत्र, पुत्रीउंनी साथे पण उचित आचरण यथायोग्य करे, परंतु पृथग्जाव न करे. जाइनी व्यापारमां सलाह लहे. छानी वात न राखे. धननो व्यवहारपण जाइथी गुप्त न राखे. वंधुने निरंतर शिखामण आपे, जेथी धूर्त्त, प्रपंचीना छल कपटमां ते न फसाय. वंधुने माठी सोवत लागी होय, वा ते अविनीत थयो होय तो सज्जन पुरुषोनी सोवतमां लालच आपी उतारे, पोते नम्रताथी शिखामण आपे, पोताना मित्रोद्वारा शिखामण अपावे, काका, मामा, इत्यादि सगासंवंधी द्वारा तेने शिक्षा अपावे, अन्योक्तिथी वचन कहे, परंतु पोते तर्जना करे, कारण के ताडना तर्जनाथी वंधुमां अविनीतपणुं तथा अमर्यादा वधती जाय छे. सामुं वोलनारो थइ जाय छे; तेथी हृदयमां प्रेम

सहित वहारथी ज्यारे भाइने देखे त्यारे तेना अंतःकरणमां पण ते वहु राजी थाय एवो देखाव वतावे. ज्यारे भाइ विनयमार्गमां आवी जाय त्यारे निष्कपटपणे मीठां वचनोथी तेनी साथे निरंतर वर्त्ते. कदाचित् भाइ अविनीतपणुं न तजे तो, चित्तमां विचारे के, तेनी प्रकृतिज एवी छे, एम मनमां समाधान करी उदासीनपणे वर्ते. वली भाइनी स्त्री तथा तेना पुत्रोनी साथे समदृष्टि सर्व कार्यमां राखे. ओरमान भाइनी साथे विशेषरीतें प्रेमपूर्वक प्रवर्त्ते; कारण के तेनी साथे लेशमात्र अंतर राखवाथी अप्रतीति थइ जाय छे, अने लोकमां पण निंदा थाय छे. तेवीजरीतें माता, पिता अने वंधुसमान वीजा जे जे पुरुषो छे, तेओनी साथे उचित आचरणो विचारी लेवां. यतः ॥ जनकश्चोपकर्त्ताच, यस्तु विद्यां प्रयछति ॥ अन्नदः प्राणदश्चैव, पंचैते पितरः स्मृताः ॥ १ ॥ राजपत्नी गुरोः पत्नी, पत्नीमाता तथैव च ॥ स्वमाता चोपमाता च, पंचेतामातरःस्मृताः ॥ २ ॥ सहोदरः सहाध्यायी, मित्रं वा रोगपालकः ॥ मार्गे वाक्य सखायश्च, पंचैते भ्रातरः स्मृताः ॥ ३ ॥ वली पोताना भाइओने धर्मकार्यमां पण प्रवर्तावे; तेवीज रीतें मित्रनी साथे पण उचित आचरण करे.

४ हवे स्त्रीनी साथे उचित आचरण कहीए छीए. विवाहित स्त्रीनी साथे स्नेहसंयुक्त वचन व्यापार राखे, स्त्रीने सर्वकार्यमां अभिमुख करे, वल्लभ अने स्नेहयुक्त वाणीविलास निश्चयपूर्वक प्रेमनुं जीवन छे. स्नानप्रसंगें वा परिश्रमने प्रसंगें पगचंपी प्रमुख कार्यमां स्त्रीने प्रवर्तावे. उत्तरोत्तर कार्यमां पतिनो स्नेह पत्नीना अंतरंगमां प्रवर्त्ते छे, त्यारे पत्नी कदापि दुराचरण करवानी अभिलाषा करती नथी. देश, काल, समृद्धिपूर्वक स्त्रीने उचित वस्त्राभरणथी अलंकृत करे; कारण के अलंकारसंयुक्त स्त्री, लक्ष्मीनी वृद्धि करे छे. रात्रिए स्त्रीने वहारगमन करवा अनुज्ञा आपे नहि. वली कुशील, पाखंडी, भगत योगी इत्यादि नीचपुरुषोनी संगतमां प्रवर्तवा दे नहि. गृहकार्यमां स्त्रीने निरंतर जोडी राखे. राजमार्गे उभां रहेतां तथा वेश्याना पाडामां जतां निवारे. प्रतिक्रमण, सामायिक, देवदर्शनादि धर्मकृत्यो करवावास्ते, जिनमंदिर वा उपाश्रये जवामां, माता, वेहेन प्रमुख सुशील स्त्रीओनी संगतिमां जवानी अनुज्ञा आपे, घरनां काम, दान, सगासंवंधीनां सन्मान, रसोइनां

काम प्रमुखमां अधिष्ठाता करे. स्त्री प्रभातसमये शय्या उठावे, घर प्रमार्जन करे, दूधनां वासण धोवे, चूलानी चोकाप्रमुख क्रिया करे, ठाम वासण मांजे, अनाज पीसें, गाय, भेंस दोवे, वलोणुं करे, रसोइ करे, जमनारने पीरसे, जूठां वासणो मांजे, सासु, नणंद, जेठ, देवर इत्यादिनो विनय करे. पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने निरंतर जोडे, जो पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने न जोडे तो, स्त्री नवराश पामी चपलताथी विकारने पामे जाय छे. काममां लागी रेहेवाथी स्त्रीनी रक्षा थाय छे, अने मनोवृत्ति शांत रहे छे. वली भरतार स्त्रीनी सन्मुख जोवे, बोलावे, गुणकीर्त्तन करे, धन वस्त्र आभूषण आपे, स्त्री जेम कहे तेम करे, स्त्रीने दूर न राखे, तोज स्त्रीनो भरतार उपर अत्यंत प्रेम थाय छे; तथा स्त्रीने नही जोवाथी, विशेष देखवाथी, देखीने नही बोलाववाथी, अपमान आपवाथी, अहंकार करवाथी. इत्यादि बाबतोथी प्रेम त्रुटी जाय छे. वली भरतार परदेश बहु वखत रहे तो विरहथी स्त्री अनुचित काम पण करी ले, ते कारणथी भरतारें बहु वखत परदेशमां पण न रेहेवुं जोइए. स्त्री भूल करे त्यारे शिक्षा करे, अने रीसाय तो मनावे. घरनां गुह्य तथा धननी हानि वृद्धि स्त्रीनी आगल प्रगट न करे. क्रोधनो आवेश आववाथी बीजी स्त्रीसाथे परणे नहि. बे स्त्रीवाला भरतारने अत्यंत दुःख छे. कदाचित् संतानोत्पत्तिवास्ते बे स्त्री परणे, तो बंने उपर समभाव राखी प्रवर्त्ते. स्त्री ज्यारे कोइ काममां मोटी भूल करे, त्यारे एवी शिक्षा करे के फरी कदापि तेवी भूल करे नहि. रीसायेली स्त्रीने पण जो न मनावे तो सोमभट्ट विप्रनी भार्या अंबानी जेम कुवामां जइ पडे, इत्यादि अनर्थ अनेक करे. ते कारणथी स्त्रीनी साथे सर्वकाम, स्नेहयुक्त वचनोथी करावे. कठिनशब्दोथी करावे नहि.

जो निर्गुणस्त्री मले तो विशेषरीतें तेनी साथे नरमाशथी प्रवर्त्ते, परंतु तेवी स्त्रीने घरमां प्रधान न करे. जे घरमां पुरुषनी जेम स्त्रीसामर्थ्य, प्रधानपणुं करे ते घर प्रायः नाश पामे छे, आ कथन बाहुल्यताथी छे, कारण के केटलीएक स्त्रियो एवी बुद्धिवाली होय छे के तेने पुछीने जो काम करवामां आवे तो बहुज लाभ थाय छे. जेम तेजपालनी पत्नी अनुपदेवीने पुछीने, वस्तुपाल तथा तेजपाल काम करता ह-

ता. वली स्त्री ज्यारे धर्मकार्यो करे, तप करे, चारित्र ले, उद्यापन करे, दान दे, देवपूजा करे, तीर्थयात्रादि करे, इत्यादि जे जे उत्तम कार्यो करे, ते सर्वमां उत्साह धरे, शक्ति प्रमाणे धन आपे, सुशीलपणे सहाय आपी तेना मनोरथ पूर्ण करे, अंतराय न करे; कारण के स्त्री जे जे धर्मकृत्यो करे तेमां पति ते ते कृत्यो करवामां राजी थाय तो ते पतिने पण पुण्य थाय छे.

५ हवे पुत्रनी साथे उचित आचरण लखीए छीए. पिता पोताना पुत्रनुं बाल्यावस्थामां अत्यंत मनोज्ञ आहारथी पोषण करे. स्वेछापूर्वक नाना प्रकारनी क्रीडा करावे. मनोज्ञ पुष्ट आहारथी बालकनी बुद्धि बल तथा कान्तिनी वृद्धि थाय छे, अने स्वेछायुक्त क्रीडाथी शरीर पुष्ट थाय छे; अंगोपांग संकुचित थतां नथी. यतः॥ लालयेत् पंचवर्षाणि, दश वर्षाण ताडयेत्॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥ १॥ वली देव, गुरु, धर्म अने सुखी स्वजनादिनी संगत करावे. उत्तम जातिवान्, कुलाचारी, शीलवान् एवा पुरुषनी साथे मित्राचारी करावे; गुरु आदिनो परिचय थवाथी बाल्यावस्थामां पुत्र उत्तम वासनावालो थाय छे, वल्कलचीरीयवत्. जाति, कुल, आचारसंयुक्तनी मित्रताथी, दैवयोगथी कदापि अनर्थपण आवी पडे तो पण, जला मित्रनी सहायताथी कष्ट दूर थई जाय छे. जेम अजयकुमारनी साथे मित्रता करवाथी आर्द्रकुमारने जली वासना थईगई तेम. ज्यारे पुत्र अढारवर्षनो थाय, त्यारे तेनो विवाह करे, कारण के बाल्यावस्थामां वीर्यक्षय थइजवाथी, बुद्धि, पराक्रम, तथा आयुष्यवृद्धि पामतां नथी. सर्वजैनमतना शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे. ज्यारे पुत्रने जोगसमर्थ जाणे त्यारे, तेनो विवाह करे. जे कन्यानी साथे विवाह करावे, ते कन्यानुं रूप, कुल, गुण समान होय तेनी साथे विवाह करावे. जे कन्यामां गुण, रूप सरखां न होय तथा जे कन्या वर्षमां अधिक होय, तेनी साथे विवाह करवामां अनेक विडंबना छे. विवाहनुं प्रकरण हवे पछी लखशुं. पुत्रना उपर घरनो जार मूके, पुत्रने घरनो स्वामी करे. ज्यारे पुत्रनी उपर घरनो जार आवे छे, त्यारे चिंतायुक्त रेहेवाथी ते कांइपण स्वछंद उन्मादादि करतो नथी; कारण के तेना जाणवामां आवे छे के, धन बहुज मेहेनतथी प्राप्त थाय छे, ते का-

रणथी अनुचित व्यय न करवो जोइये; परंतु पुत्रनी परीक्षा कर्या पछी तेना उपर घरनो नार मुकवो जोइये. जेम प्रसेनजित् राजाए श्रेणिक पुत्र वास्ते कर्युं तेम. पुत्रनी जेम पुत्री तथा नत्रीजानी साथे पण उचित आचरण करवां, तेवीज रीतें पुत्रनी वहुसाथे पण उचित आचरण करवां धनश्रेष्ठिवत्, पुत्रनी प्रशंसा प्रत्यक्ष न करे. ज्यारे कष्ट पडे त्यारे सुख दुःखनी वातो कहे, उपज निपज अने खर्चनुं स्वरूप कहे. वली पुत्रने राजसन्नानो अनुनव करावे, कारण के अणचिंतव्युं कष्ट आवी पडे त्यारे शुं करवुं तेनी गम पडे; वली दुष्ट जन उपद्रव करे त्यारे राजकचेरी विना इलाज नथी. यतः ॥ गंतव्यं राजकुले, ड्रष्टव्याराजपूजितालोकाः ॥ यद्यपि न नवंत्यर्था, स्तथाप्यनर्था विलीयंते ॥ १ ॥ वली पुत्रने परदेशना आचार, व्यवहारादिथी जाणकार करे. प्रसंगवशात् परदेशगमन करवुं पडे तो कोइ कष्टप्राप्त थतां उपाय सुजे. वली उरमान माना पुत्रनी साथे विशेष उचित करे.

६ हवे सगाउं साथे उचित आचरण लखीए ठीए. पिता, माता, स्त्रीना पक्षना जे लोक होय ठे ते सगां कहेवाय ठे. ते सगांउंनो निरंतर तेमज मोटा प्रसंगमां आदर सत्कार करवो जोईए. पोते पण सगांउंना काममां आगेवान तरीके प्रवर्त्ते तथा काम करे. जे स्वजन धनहीन होय, रोगग्रस्त होय तेनी सारवार करे; कारण के सगांउंनो जे उद्धार करवो ते पोतानोज उद्धार करवो ठे. सगाउंनी पाठल तेउंनी निंदा न करे. सगांउंना वैरीउं साथे मित्राचारी न करे. सगांउंनी साथे प्रीति करवामां शुष्क कलह, हास्यादि वचनोनी लडाइ विगेरे निवारे. स्वजन घरमां न होय तो तेना घरमां एकलां गमन करे नहि. देव, गुरु अने धर्मनां कार्यमां स्वजनोनी साथे सामेल रहे. जे स्त्रीनो पति परदेश गयो होय एवा स्वजनना घरमां एकलां गमन करे नहि. स्वजनोनी साथे लेणदेणनो व्यापार करे नहि. तथाहि ॥ यदीछेत् विपुलां प्रीतिं, त्रीणि तत्र न कारयेत् ॥ वाग्वादमर्थसंबंधं, परोक्षे दारदर्शनम् ॥ १ ॥ आ लोकना व्यावहारिक कार्यमां स्वजनोनी साथे एकचित्त रहे; अने जिन मंदिरादिधर्मकार्योमां तो अवश्य विशेष रीतें मेलाप पूर्वक प्रवर्त्ते. एवां कार्यो बहुजन संमतिथीज करवामां आवे तो शोना ठे.

७ हवे गुरु उचित कहीए छीए. धर्माचार्यनी साथे उचित भक्ति, अंतरंगपूर्वक, बहुमान संयुक्त, प्रवर्तवुं. वचन कायानां आवश्यक प्रमुख कृत्य करवां. गुरुपासे शुद्ध श्रद्धापूर्वक धर्मोपदेश श्रवण करवो. गुरुनी आज्ञा अंगीकार करवी. मनथी पण गुरुनुं अपमान न करवुं. गुरुना अवर्णवाद कोइनी पासे बोलवा नहि. गुरुनी प्रशंसा सर्वत्र प्रगट करवी, गुरुनी प्रत्यक्ष तेमज परोक्ष स्तुति करवी, कारण के गुरुनी स्तुति अगणित पुण्यबंधनुं कारण छे. गुरुनां छिद्र कदापि जोवां नहि. गुरुनी साथे मित्रनी जेम अनुवर्त्तन करे. गुरुना प्रत्यनीक, निंदकने सर्वशक्तियी निवारे. कदाचित् गुरु प्रमादना वशथी कांइ चूक करे तो एकांतमां हितशिक्षा आपे, वली एम कहे के हे भगवन्! आप सरखाने आ काम करवुं उचित नथी. गुरुनो विनय करे, गुरुनी सन्मुख जाय, गुरुपासें आवतां, आसन छोडी उभा थइजाय. गुरुने आसन आपे. गुरुनी पगचंपी करे. गुरुने शुद्ध, निर्दोष आहार, वस्त्रपात्रादि आपे. आ प्रमाणे गुरुनो द्रव्योपचार करे. भावोपचार, ते गुरुनुं परदेशमां निरंतर स्मरण करे इत्यादि.

८ हवे नगरवासी जनो प्रत्ये उचित आचरण कहीये छीये. जे नगरमां निवास होय, ते नगरवासीओ, जेओनी पोताना सरखी व्यापारवृत्ति होय तेओनी साथे व्यापार विषयमां एकचित्तथी सुख दुःखादि प्रसंगें तथा कष्ट प्राप्त थये अने राज्यउपद्रवादिमां अरस परस सामेल रहे तथा सहाय आपे. तेओना अभ्युदयमां उत्साहवान् रहे. राजदरबारमां कोइनी चाडी चुगली न खाय. नगरनिवासिओमां फाटे नहि. सर्वनी साथे मली राजानी आज्ञा पाले. ज्यारे घणां नबलां माणसोपण एकत्र थइ कार्य करे छे, त्यारे तृणरज्जुवत् बलवान् थइ जाय छे. ज्यारे वादविवाद थइ जाय त्यारे पक्षपात तजी कार्य करे. कोइनी पासेथी लांच लइ असत्य कार्य न करे. कोइनी साथे सहज लडाइ थइ जाय तो न्यायनी अदालतमां फरीयाद करे नहि. राजाना कारभारीओ साथे लेणदेणनो व्यवहार न करे, कारण के ते लोकोने नाणां पाछां आपवामां क्रोध आवी जाय छे. तेवे प्रसंगें तेओ अनर्थ करे छे, समान नगरवालाओनी जेम असमानवृत्तिवाला नगरनिवासीओनी साथे पण यथायोग्य उचित आचरणकरे.

९ हवे परतीर्थी परमतवालाओनी साथे उचित आचरण लखीए छीये.

जे परमतवाला भिक्षाने वास्ते पोताना घरमां आवे ते सर्वप्रत्ये उचित करे. राजाना माननीयनुं विशेष उचित करे. उचित कृत्यं ते यथा योग्यदान देवा चाहे. अगर जो ते साधुउपर मनमां प्रीति न होय तो पण घेर मागवा आवलां तेउनी उचित भक्ति करे; कारण के दान देवुं ते गृहस्थनो धर्मज छे. वली कोइ महंत घेर आवी जाय तो सन्मुख गमन, आसन दान, उभां थवुं तथा दान आपवुं प्रमुख करे. परमतवाला कोइ कष्टमां पडे तो तेनो उद्धार करे. दुःखी जीवोनी दया करे. पुरुष अपेक्षा मधुर आलाप संलापादि करे. अन्य मतवालांने कामनुं पुछवा प्रमुख करे, जेम के आपनुं पधारवुं शा प्रयोजनवास्ते थयुं छे? पछी जे कार्य ते बतावे ते उचित होय तो करी आपे. वली दुःखी, अनाथ, आंधलां, बेहेरां, रोगग्रस्त प्रमुख दीन लोकोनी दीनता दूर करवावास्ते यथाशक्ति सहाय करे. जे श्रावकादि पूर्वोक्त लौकिक उचित आचरणमां कुशल होता नथी, तेउ जिनमतमां केवी रीतें कुशल होय शके? ते कारणथी धर्मार्थिउए अवश्य उचित आचरणोमां निपुण थवुं जोइए. इति नवविध उचित आचरण समाप्त ॥

हवे अवसरें उचित बोलवुं ते बहुज गुणकारी छे, तथा बीजुं जे कांइ कुशोभाकारी होय ते त्यागे,, इत्यादि विवेकविलास अनुसारें लखीए छीए. बगासुं, छींक, उडकार तथा हसवुं, मुख ढांकी मर्यादाथी करे. सभानी वचमां नाकमां आंगली घाली मेल न काढे, हाथना टाचका फोडे नहि, पर्यस्तिका करे नहि, पग पसारे नहि, निद्रा विकथा करे नहि, सभामां बुरी चेष्टा करे नहि, मात्र अवसर जोइनेज हसे, मात्र होठ फरकाववारूप हसे, मुख फाडी खडखड हसे नहि, पोतानुं अंग वगाडे नहि, घास त्रोडे नहि, भूमिउपर लखे नहि, भूमिपर चित्रामण काढे नहि, नखथी दांत घसे नहि, दांतथी नख त्रोडे नहि, अभिमानयुक्त वातो करे नहि, भाट चारणप्रमुखनी करेली प्रशंसाथी गर्व करे नहि पोतामां गुण होय तेनो निश्चय करे, पोताने समजीने बोले, नीच मनुष्य हलकां वचन पोताउपर उच्चारे तो सामां हलकां वचन पोते उच्चारे नहि, जे वात निश्चयपूर्वक न होय ते वात प्रगट करे नहि; कोइ पुरुषे काम आरंभवा विचार कर्यो होय, अने ते काम करवामां ते समर्थ न

होय तो प्रथमथीज तेने कहे के आ काम तमाराथी थइ शकशे नहि, कोइपण मनुष्यनुं बुरुं बोले नहि, पोताना वैरीनुं पण बुरुं बोले तो अन्योक्तिपूर्वक बोले; माता, पिता, रोगी, आचार्य, परोणा, अभ्यागत, बंधु, तपस्वी, वृद्ध, बाल, स्त्री, वैद्य, पुत्र, गोत्री, पामर, बेहेन, बनेवी, मित्र आ सर्वनी साथे वचननी लडाइ न करे; सूर्यनी सन्मुख निरंतर जोवे नहि, चंद्रसूर्यना ग्रहणने जोवे नहि, ऊंडा कुवामां वांका वली जोवे नहि, संध्यासमये आकाश सन्मुख जोवे नहि; वली मैथुनक्रिया करनार, शिकार करनार, नग्नस्त्री, यौवनवंती स्त्री, पशुक्रीडा, कन्यानी योनि, तेओनी तरफ दृष्टि करे नहि; तेलमां, जलमां, शस्त्रमां, मूत्रमां, रुधिरमां, पोतानुं मुख जोवे नहि, ते प्रमाणे करवाथी आयु अल्प थाय छे. जेणे आश्रय कर्यो होय तेनो त्याग करे नहि, नाश पामेली वस्तुमाटे शोक करे नहि, कोइनी निद्रानो भंग करे नहि, घणांनी साथे वेर करे नहि, बहुजनसंमत होय तेवुंज वचन बोले, जे काममां रस न लागे, ते काम करे नहि, कदापि करवुं पडे तो पण घणांने मलीने करे. धर्म, पुण्य, दया, दानादि शुभकाममां बुद्धिमान् मुख्य थाय, अग्रेसर थाय, कोइनुं बुरुं करवामां अग्रेसर न थाय, सुपात्र साधुओमां कदापि मत्सर ईर्ष्या करावे नहि, पोते तेओना उपर करे नहि, पोतानी ज्ञातिवाला कष्टमां पड्या होय तेनी उपेक्षा करे नहि, पांच माणसने मेलवी आदरसहित ते कष्ट दूर करे. माननीय पुरुषनुं मानभंग करे नहि. दरिद्र, पीडित, मित्र, साधर्मी, ज्ञातिमां बुद्धिमंत, गुणमां गरिष्ट, संतानहीन, इत्यादिनुं कष्टमां पालन करे. पोताना कुलने जे काम करवुं उचित न होय ते काम करे नहि. नीतिशास्त्र तेमज बीजां शास्त्रो मुजब जे उचित आचरण होय तेज करे. अनुचित निरंतर वर्जे. वैद्यक ग्रंथमां लख्यामुजब एकप्रहरमां बेवार भोजन न करे, तथा बे प्रहर उलंघे नहि, कारण के एक पहोरमां बेवार खावाथी रोगोत्पत्ति थाय छे, अने बे पहोर पछी न खाय तो बलक्षय थाय छे.

हवे सुपात्रदानादि आपवानी युक्ति लखीए छीए. भोजन अवसरें भक्तिसहित साधुओने निमंत्रणा करीने साधुनी साथे घरमां आवे, जो साधु स्वयमेव आवता होय तो सन्मुख जइ आदर सत्कार करे, विन-

यसहित संविज्ञ जावित अजावित क्षेत्र देखे, सुनिक्ष दुर्जिक्षादि काल देखे, सुलज्ज दुर्लजादि देवायोग्य वस्तु देखे; तथा आचार्य, उपाध्याय, गीतार्थ, तपस्वी, बाल, वृद्ध, ग्लान, सह असहादि अपेक्षापूर्वक महत्त्व, स्पर्द्धा, मत्सर, स्नेह, लज्जा, जय, दाक्षिण्य, परानुयायिपणुं, प्रत्युपकार, इच्छा, माया, विलंब, अनादर, बुरुं बोलवुं, पश्चात्तापादि, सर्व दाननां दूषणो वर्जी आत्माने संसारथी तारवा वास्ते एवी बुद्धिथी बेंतालीश दूषणरहित, घरमां जे कांइ अन्न, पक्वान्न, पाणी, वस्त्रादि होय, तेनी अनुक्रमें सर्वरीतें निमंत्रणा करे; पोताना हाथमां पात्र लइ पासे रहेल जार्या प्रमुखथी दान वहोरावे; वंदना करी पोताना घरना द्वारसुधी साथे वोलावा जाय, पछी पाछा आवी जोजन करवा बेसे; साधुनो योग कदापि प्राप्त न थाय तो वरसादनी जेम साधुनी राह देखे, विचारे के साधु आवी जाय तो मारो जन्म सफल थइ जाय, ते कारणसर दिशावलोकन करे. जे जोजन साधुए न वहोर्युं होय ते श्रावक न खाय. जे श्रावक हृष्टपुष्ट साधुने विनाकारण अशुद्ध आहार आपे तो, लेनार देनार बंनेने रोगीना दृष्टांतनी जेम हितकारी नथी. जे साधुनो निर्वाह थतो न होय, दुर्जिक्ष होय, साधु रोगी होय, अथवा वीजुं कांइ कारण होय, तेवे प्रसंगें साधुने अशुद्ध अप्राशुक आहार आपे तो लेनार देनार बंनेने हितकारी छे. रस्ताना थाकेला, रोगी, शास्त्र पढनार, लोच करेल, अने व्रतधारीने पारणाने दिन, दान आपवामां आवे तो बहुज फल थाय छे. आ सुपात्रदाननुं नाम अतिथिसंविजाग कहेवाय छे. यदागमः ॥ अतिहि संविजागोनाम नायगयाणं ॥ इत्यादि पाठनो अर्थ कहीए छीए. अतिथिसंविजाग अर्थात् न्यायथी उपार्जन थयेल कल्पनीय अन्न, पाणी प्रमुख, देश, काल, श्रद्धा, सत्कार, क्रमयुक्त उत्कृष्ट जक्तिथी, आत्मानी अनुग्रहबुद्धिथी, संयतसाधुने दान आपवुं ते. सुपात्रदानथी देवतासंबंधी तथा औदारिकादि संबंधी अद्भुत जोग, सर्व इष्ट सुखसमृद्धि, राज्यप्रमुख मनगमता संयोगनी प्राप्ति, अने निर्विलंब, निर्विघ्न, मोक्षफल प्राप्ति छे. अजयदान अने सुपात्रदान मोक्षफल प्रदाता छे, अनुकंपादान परंपराए मोक्षदाता छे, अने अनुकंपादान, उचितदान तथा कीर्तिदान सांसारिक सुख जोगनां आपनारां छे.

पात्र त्रण तरेहनां कथन करेलछे. १ उत्तम पात्र साधु, २ मध्यम पात्र श्रावक, ३ अविरति सम्यग्दृष्टि जघन्यपात्र, १ अनादर, २ कालविलंब, ३ विमुख, ४ असत्यबोलवुं, ५ दान दइ पश्चात्ताप, आ पांच सत् दाननां कलंक छे. १ आनंदनां आंसु आववां, २ रोमांचित थवुं, ३ बहुमान देवुं, ४ मिष्टजाषण, ५ दानदीधा पछी अनुमोदना, आ पांच सुपात्र दाननां जूषण छे. सुपात्रदाननुं परिग्रहपरिमाण करवानुं फल रत्नसार कुमारनी जेम थाय छे. आ कथा श्राद्धविधिग्रंथथी जाणवी. ते कारणथी एवा साधुनो संयोग मलवाथी सुपात्रदान दिन प्रतिदिन विवेकवान् अवश्य करे.

जोजन अवसरें साधर्मी बंधु कोइ आव्या होय तो पोतानी साथे यथा शक्ति जोजन करावे; कारण के तेउपण पात्र छे. आंधला लुला प्रमुख मागनाराउने पण यथायोग्य आपे, कोइ मागनारने निराश जवा दे नहि. धर्मनी निंदा न करावे, कठण अंतःकरण न करे. जोजनने अवसरें दयावंतें बारणाबंध न करवां जोइये, तेमांपण धनवानें तो अवश्य द्वार खुल्लां राखवां जोइये. ॥ आगमेऽप्युक्तं॥ नेव दारं पिहावेइ, जुंजमाणो सुसावउ ॥ अणुकंपा जिणंदेहिं, सढ्ढाणं न निवारिया ॥ १ ॥ दिठूण पाणिनिवहं, जीमे जवसायरंमि डुखत्तं ॥ अविसेस अणुकंपं, डुहावि सामछउ कुणइ ॥२॥ अर्थः— जोजनावसरें दरवाजा बंध करे नहिं. जिनेश्वर जगवानें श्रावकने अनुकंपादान करवानी मना करी नथी. जीवोना समूहने जयानक संसारमां डुःखपीडित देखीने तेउना उपर विशेषरहित ड्रव्य तेमज जावथी अनुकंपा करे. ड्रव्यथी यथायोग्य अन्नादि आपे, जावथी तेउने सन्मार्गमां प्रवर्त्तावे. श्री पंचमांग प्रमुखमां ज्यां श्रावकोनुं वर्णन करेल छे, त्यां आ प्रमाणे पाठ छे "अवगुंगि अडुवारा" आ विशेषण ध्यानमां राखी जिक्षुकादिने आपवावास्ते निरंतर द्वार उघाडां राखे. संवत्सरीदान आपी तीर्थंकर महाराजाउयें पण दीन प्राणीउनो उद्धार करेल छे. कदापि डुकाल पडे तो श्रावकोयें तो विशेषरीतें दीननो उद्धार करवो. पूर्वे विक्रमसंवत् १३१५ मां जडेसर गामनिवासी श्रीमाल ज्ञातिशाह जगडु श्रावकें ११२ एकसो बार दानशाला बंधावी दान आपेल

छे. वली संवत् १४२९ मां सोनी सिंहा श्रावकें २४००० हजार मण अन्न दीन जीवोने डुकालमां आपेल छे.

माता, पिता, नाइ, वेहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्लान, बांधेलां गाय प्रमुख जानवरो, आ सर्वनी नोजन अवसरें सार संनाल लेवी जोइये. मातपिताने नोजन करावि, पंच परमेष्टि स्मरण करी, प्रत्याख्यान पारी, सर्वनियम स्मरण करी, साम्यताथी नोजन करे. साम्यता अर्थात् जे अन्नपाणी परस्पर विरुद्ध न होय, उलटा परिणमे तेवा न होय, पोताना स्वनावने माफक होय तेवुं नोजन साम्य कहेवाय छे. जे पुरुष जीवित पर्यंत साम्यताथी नोजन करे, ते कदी विष खाइ जाय तो, विष पण तेने अमृत थइ जाय. असाम्य नोजन करनारने अमृत पण विष थइ जाय छे, परंतु अपवाद ए छे के साम्यताथी पण पथ्यज खावुं जोइये, अपथ्य नही. खावामां अत्यंत गृद्धिपणुं न जोइये. कंठनाडिथी ज्यारे नोजन नीचे उतरी जाय छे, त्यारे सर्व नोजन बरावर थइ जायछे; ते कारणथी एक क्षणमात्रना स्वादने वास्ते अतिलोलता न करवी जोइये. वली अनक्ष्य, अनंतकाय, बहु सावद्यवस्तु अर्थात् बहु पापवाली वस्तु खाय नहि. जे मिताहार करे छे ते बलवान् थाय छे, अने जे बहु खाय छे ते अनुक्रमें बलहीन थाय छे. अधिक खावाथी अजीर्ण, वमन, विरेचनादि मरणांत कष्टपण थइ जाय छे. यथा ॥ हितमितविपक्वनोजी, वामशयी नित्यचंक्रमणशीलः॥ उज्झित मूत्रपुरीषः, स्त्रीषु जितात्मा जयति रोगान् ॥ अर्थः—नुख लागे त्यारे हितकारी एवुं थोडुं अन्न जमे, डावी बाजु नीचे राखी सुवे, निरंतर चालवानो अन्यास राखे, ज्यारे बाधा थाय त्यारे तरत दिशामात्रा करे, अने स्त्री साथे नोग न करे ते पुरुष रोगो उपर जय मेलवे छे.

हवे नोजनविधि, व्यवहार शास्त्रानुसार लखिये छीये, अति प्रनातमां, अति संध्यामां तथा रात्रियें नोजन न करवुं जोइये. सडेलुं अने वासी अन्न न खावुं जोइये. चालतां खावुं नहि, जमणा पग उपर हाथ राखी खावुं नहि, हाथ उपर राखी खावुं नहि, खुल्ला आकाशमां खावुं नहि, तडकामां बेसी खावुं नहि, अंधारामां बेसी खावुं नहि, वृक्षनी नीचे बेसी खावुं नहि, तर्जनी आंगली उंची राखी कदापि खावुं नहि, मुख,

हाथ, पग तेमज वस्त्र धोयाविना खावुं नहि, नम्न थइ मेलां वस्त्र पेहेरी, थाल पकड्याविना खावुं नहि, मात्र एक धोतियुं पेहेरी खावा बेसवुं नहि, जीनुं वस्त्र पेहेरी खावा बेसवुं नहि, जीनुं वस्त्र माथे लपेटी खावुं नहि, ज्यारे अपवित्र होइयें त्यारे खावुं नहि, अतिगृद्ध, रसलंपट थइ खावुं नहि, उपानसहित, व्यग्रचित्तें, निःकेवल भूमिपर बेसी, पाटउपर बेसी खावुं नहि, विदिशि तथा दक्षिणदिशि तरफ मुख राखी खावा बेसवुं नहि, पातला आसनपर बेसी खावुं नहि, आसन उपर पग राखी भोजन करवुं नहि, चंडालना देखतां, धर्मथी पतित होय तेना देखतां, फूटेलां, तथा मलिन पात्रमां खावुं नहि; जे शाक प्रमुख वस्तु विष्टाथी उत्पन्न थयेल होय ते खावी नहि, बालहत्याप्रमुख जेणे करेल होय तथा रजस्वला होय तेवी स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहि. जे वस्तु गाय, श्वान, पंखीये सुंघी होय, जे वस्तु अजाणी होय, जे वस्तु फरीथी उष्ण करी होय, ते वस्तु खावी नहि, बचबचाट शब्द करतां खावुं नहि. मुख फाटतां बुरुं लागे एम मुख करी खावुं नहि. भोजन अवसरें बीजाउने बोलावी प्रीति उत्पन्न थाय तेम भोजन करवुं. देवगुरुनुं नाम स्मरण करी, समासन उपर बेसी पोतानी माता, बेहेन, भाइ, भाणेज वा स्त्री प्रमुखें जे भोजन तैयार करेल होय ते पवित्रपणे पीरसातां मौनपणे दक्षिण स्वर चालतां जमवुं. जे जे वस्तु खावी ते नासिकायें सुंघीने खावी, तेम करतां दृष्टिदोष नाश पामे छे. अति खारुं, अतिखाटुं, अति उष्ण, अतिशीतल, अतिमीठुं तथा अतिशाक खावुं नहि. मुखमां स्वाद लागवा मात्र खावुं. अतिउष्ण खावाथी रसनाश पामे छे, अति खाटुं खावाथी इंद्रियोनी शक्ति कम थइ जाय छे, अतिखारुं खावाथी नेत्र बगडी जायछे, अतिस्निग्ध खावाथी घ्राणशक्ति मंद थइ जाय छे, अति तीखुं तथा कडवुं खावाथी कफ दूर थइ जाय छे, कषायलुं अने मीठुं खावाथी पित्त नाश पामे छे, स्निग्ध घृतादि खावाथी वायु दूर थइ जाय छे, बाकी शेष रोग ते न खावाथी दूर थइ जाय छे.

जे पुरुष शाक बहु खाय, घीथी रोटली खाय, दुधने चोखा खाय, बहु पाणी न पीये, अजीर्ण होय त्यारे खाय नहि, ते पुरुष रोगपर जीत मेलवे छे. भोजन करती वखत प्रथम मीठुं अने स्निग्ध भोजन करे, ब-

चमां तीक्ष्ण जोजन करे, अने पाछल कडवुं जोजन करे. उक्तं च ॥ सुस्निग्धमधुरैः पूर्वं, मश्नीयादन्वितं रसैः ॥ द्रव्याम्ललवणैर्मध्ये, पर्यंते कटुतिक्तकैः ॥

जो प्रथम नरम वस्तु खाय, मध्यमां कटु वस्तु खाय अंतमां फरी नरम वस्तु खाय तो वलवंत तथा नीरोगी थाय छे. जोजननी पेहेलां पाणी पीये तो अग्निमंद थइ जाय छे, जोजननी वचमां पीये तो रसायन समान गुणकारी थाय छे, अने जोजननी अंते विषसमान थाय छे. जोजननी अनंतर सर्व रसथी लिंपेला हाथथी एक अंजली रोज पीये, पशुनी जेम पाणी पीये नहि, पाणी पीधा पछी वाकी रहेलुं फेंकी दे, अंजलीथी पाणी पीये नहि, पाणी थोडुं पीवुं पथ्य छे. पाणीथी जीजेला हाथ गला उपर, कपोलउपर तथा नेत्र उपर लगाडे नहि. जोजन कर्या पछी अंगमर्दन, दिशागमन, वोज उठाववानुं काम, वेसी रेहेवुं तथा स्नान, एटलां काम करे नहि; जोजन कर्या पछी केटलो एक वखत वेसी रेहेवामां आवे तो पेट मोटुं थइ जाय छे. मुख खुल्लुं राखी चता सुवे तो वल वधे छे, डावे पडखे सुवे तो आयु वधे छे, जोजन करी दोडे तो मरण थवानो संजव छे; जोजन कर्या पछी डावे पडखे वे घडीसुधी सुवे, परंतु निद्रा लहे नहि, अथवा सुवे नहि तो सो डगलां चाले. वीजे स्थलेपण कह्युं छे के देवने, साधुने, नगरना स्वामि राजाने अने स्वजनोने ज्यारे कष्ट आवे त्यारे तथा चंद्र, सूर्यना ग्रहण वखते विवेकवान् पुरुष, शक्ति होय तो जोजन न करे; तेवीज रीतें "अजीर्णप्रजवारोगाः" तेथी अजीर्णमां पण जोजन करे नहि.

ज्वरनी आदिमां लांघण श्रेष्ट छे, परंतु वायुज्वर, श्रमज्वर, क्रोधज्वर, शोकज्वर, कामज्वर, घावज्वर, एटला ज्वरने वर्जिने वाकीना ज्वरमां तथा नेत्ररोगमां लांघण करे.

देवगुरु वंदनना अयोगमां, तथा तीर्थ अने गुरुने नमस्कार करवा जती वखत, विशेषधर्मनुं तथा पुण्यनुं काम आरंजतां अने अष्टमी, चतुर्दशी आदि विशेष पर्वने दिवसे जोजन न करवुं जोइये. तपश्चर्या आ लोक अने परलोकमां वहुज हितकारी छे, तथा गुणकारी छे. जोजन कर्या पछी नवकार मंत्र गणी उठे. चैत्यवंदन करी, देवगुरुने यथायोग्यवं-

दन करे. जोजन कर्या पठी गंठीसहित दिवस चरिम प्रत्याख्यान विधिथी करे; पठी गीतार्थ साधु, गीतार्थ श्रावक तथा सिद्धपुत्रादि समीप स्वाध्याय (पठन पाठन) यथायोग्य करे. योगशास्त्रमां लख्युं ठे के जे गुरुमुखथी जाणेल होय, ते बीजाउने जणावे, स्वाध्याय कर्या पठी संध्यासमये जिनपूजा करे, पठी प्रतिक्रमण करे, पठी स्वाध्याय करे, पठी वैयावच्च अर्थात् मुनिनी पगचंपी करे, पठी घेर आवी सर्व परिवारने मेलवी धर्मनुं स्वरूपकथन करे. उत्सर्गमार्गे तो श्रावकें एक वखतज जोजन करवुं जोइये ॥ यदजाणि ॥ उस्सग्गेणं तु सढ्ढोय, सचित्ताहारं वज्जाउ ॥ इक्कासणगजोइश्र, वंजयारितहेवय ॥ १ ॥ जो एक वखत जोजन करवाने समर्थ न होय, तो दिवसनो आठमो जाग अर्थात् चार घडी दिवस वाकी रहे त्यारे जोजन करी ले, वे घडी दिवस वाकी रहेतां पहेलां तो जोजन करी लेवुं जोइये. पठी यथाशक्ति चार आहार, त्रण आहार, वे आहार त्यागरूप दिवस चरिम, सूर्यउगतां सुधी करे. मुख्यवृत्तियें तो दिवस ठतां प्रत्याख्यान करवुं जोइये, परंतु अपवादें रात्रियें पणकरे.

इति श्रीतपगछीयगणिश्रीमणिविजयतछिष्यमुनिश्रीबुद्धिविजयतछिष्यमुन्यात्मारामानंदविजयविरचितेजैनतत्वादर्शगुर्जरजाषांतरे श्राद्धशास्त्रानुसारेण श्रावकदिनकृत्यप्रकाशकनामा नवमपरिछेदः संपूर्णः ॥

॥ अथ दशमपरिछेदप्रारंजः ॥

आ परिछेदमां श्रावकोनां १ रात्रिकृत्य, २ पर्वकृत्य, ३ चातुर्मासिककृत्य, ४ संवत्सरीकृत्य, ५ जन्मकृत्य, आ पांच कृत्यनुं स्वरूप अनुक्रमें लखवामां आवशे; प्रथम रात्रिकृत्य लखीये ठीये.

साधुनी पासे तथा पौषधशाला प्रमुखमां यत्नापूर्वक प्रमार्जना करीने सामायक लही श्रावक प्रतिक्रमण करे; पठी साधुउनी वैयावच्च (पगचंपी) करे. उत्सर्ग मार्गनी अपेक्षायें साधुने श्रावकपासे विश्रामण आदि न करावकुं जोइयें, परंतु श्रावक तेम करवानो जाव करे तो महाफल थाय ठे; पठी श्राद्धविधि, श्राद्धदिनकृत्य, उपदेशमाला अने कर्मग्रंथ प्रमुख शास्त्रोनो स्वाध्याय करे, पठी सामायक पारी घेर जाय.

घेर आवी सम्यक्त्वमूल वार व्रतमां सर्व शक्तिथी यत्न करणादिरूप

तथा अर्हत्‌चैत्य अने साधर्मी वर्जित वासस्थानमां निरंतर अनिवासरूप, तथा पूजा प्रत्याख्यानादि अभिग्रहरूप, साते क्षेत्रमां यथाशक्ति व्यय करवारूप, सर्व परिवारने यथायोग्य धर्मोपदेश कथन करे. श्रावक जो पोताना परिवारने धर्मनुं स्वरूप यथायोग्य न कहे तो ते परिवार धर्मथी विमुख रहे, अने तेउने धर्मनी प्राप्ति न थाय, तेथी इह लोक परलोकनां अनेक तरेहनां ते पापकर्म करे, ते सर्व पाप मुख्य श्रावकने लागे. लौकिक व्यवहारशास्त्रमां पण कह्युं ठे के चोरने चोरी करतां जाणतां बतां तेने न निवारे अने खानपानादि आपे तो ते सहायक पण मददगार चोर गणाय ठे. धर्ममांपण तेमज जाणवुं. ते कारणथी श्रावकें द्रव्य तथा जावथी पोताना कुटुंबने निरंतर लाज आपवो जोइये. तेमां द्रव्यथी पुत्र, स्त्री प्रमुखने यथायोग्य अन्न वस्त्रादि आपवां जोइये, अने जावथी तेउने धर्मनो उपदेश करवो जोइये; तेमज बीजां जे दुःखी कुटुंबी होय तेउनां दुःख निवारवानी चिंता करवी जोइये. पाप लागवानी बाबतमां अन्यशास्त्रमां पण कह्युं ठे. यतः ॥ राज्ञि राष्ट्रकृतं पापं, राज्ञः पापं पुरोहिते ॥ जर्त्तरि स्त्रीकृतं पापं, शिष्यपापं गुरावपि ॥ १ ॥ धर्मदेशना आप्या पठी, रात्रिनो प्रथम पहोर व्यतीत थया बाद, शरीरने सुखजनक शय्यामां विधिपूर्वक अल्प निद्रा करे. बाहुल्यतायें गृहस्थ, मैथुन अजिलाषा वर्जे. जावजीवसुधी ब्रह्मचर्य व्रत पालवा समर्थ न होय तो, पर्वतिथियें तो अवश्य ब्रह्मचर्य व्रत पालवुं जोइयें.

जे शय्यामां मांकड प्रमुख पड्या होय, जे पलंग टुंको होय, जांगेलो होय, मेली शय्या होय, जे पलंग बलेला लाकडानो बनावेलो होय, तेनो त्याग करे. पलंगमां चार जातसुधीनुं काष्ठ वपराय तो शुज, अने वधारेनुं वपराय तो अशुज, एम नीतिशास्त्रमां कह्युं ठे. पूजनीय वस्तु उपर सुवे नहि, पाणीथी जीजायेला पग ठतां सुवे नहि, उत्तरदिशि तथा पश्चिम दिशि तरफ मस्तक राखी सुवे नहि, वांसनी जेम सुवे नहि, पगराखवानी तरफ सुवे नहि, हाथीना दांतनी जेम सुवे नहि, देवमंदिरना मूल गजारामां, सर्पनी बंबी उपर, वृक्षनी नीचे, तथा स्मशानमां सुवे नहि. कोइनी साथे लडाइ थइ होय तो शांति करी सुवे. सुवानी वखत पाणी पासे राखे. द्वार बंध करी, इष्टदेवने नमस्कार करी सर्व आहारनो त्याग

करी,उंढवानां वस्त्र समारी शरीर साफ करी,डाबी बाजु नीचे राखी शयन करे.

दिवसे सुवे नहि, परंतु क्रोध, शोक तथा मद्य शमाववावास्ते, तथा स्त्रीकर्म अने बीजी मेहेनतनो थाक लाग्यो होय तो ते मटाडवावास्ते, तेमज रस्तानो परिश्रम दूर करवावास्ते सुवे; वली अतिसार, श्वास, हेडकी प्रमुख रोग दूर करवावास्ते सुवे; तथा बालक, वृद्ध अने बलक्षीण होय तेपण सुवे. वली अजीर्णना व्याधिवाला, वायाना व्याधिवाला, खांसीवाला. अने जेउने रात्रियें निद्रा न आवती होय वा अल्प आवती होय तेउंपण सुवे. तृषा, शूल अने गड गुमडानी वेदनाथी विह्वल होय तेपण दिवसे सुवे. जेठ अने असाड मासमां दिवसेंपण सुवुं ते सारुं छे. बीजा महिनामां जो सुवे तो कफ अने पित्तकर्ता थाय छे. बहु वखत निद्रा लेवी तेपण सारुं नथी. रात्रें ज्यारे सुवे त्यारे दिशावकाशिक व्रत उच्चरी सुवे, चार शरण ग्रहे, जीवराशि साथे खमावे, अढार पापस्थानक वोसिरावे, दुष्कृतनी निंदा गर्हणा करे, सुकृतनुं अनुमोदन करे, अने नवकार सहित आ गाथा त्रण वार उच्चरे. ॥ *जइ मेहुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्स इमाइ रयणीये* ॥ आहारमुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसरियं ॥ १ ॥ अर्थ सुगम छे. सागारी अनशन करे. सुती वखते पांच नवकार स्मरण करे. स्त्रीनी शय्याथी अलग शय्यामां सुवे, शय्यामां साथे सुवाथी विकार अधिक जागे छे तथा जे वासना सुती वखते होय, ते जागतां सुधी दूर थती नथी. वली अधिक विकारथी दिवानापणुं थइ जाय छे; तथा मरण अवसरें गफलत थइ जाय तो पण सेचतन अवस्थामां जे वासना विद्यमान हती तेज वासना रहे छे ॥ इत्याप्तोपदेशः ॥ ते कारणथी सर्वथा उपशांतमोह थइने, तथा धर्म वैराग्यादि भावनाथी वासित थइने निद्राकरे तो माठां स्वप्न न आवे. जे रीतियें सुंदर धर्ममयस्वप्न आवे ते रीतियें सुवे, जेथी कदाच निद्रामां आयुनी समाप्ति थइ जाय तो पण ते उत्तम गतिमां जाय.

सुता पछी रात्रिमां जो जागी जवाय, अने तेवे प्रसंगे अनादि कालना अभ्यासना रसथी कदाचित् काम पीडा करे, तो स्त्रीना शरीरना अशुचिपणानो विचार करे; अने श्रीजंबुस्वामि तथा श्रीस्थूलभद्रादि महर्षियोना तथा सुदर्शनप्रमुख महाश्रावकोनां दुष्कर शीयल पालवानी

दृढतानो विचार करे, वली स्त्रीना शरीरनी अपवित्रता जुगुप्सनीयादि सर्व श्रीहेमचंद्रसूरिकृतयोगशास्त्रमां तथा श्रीमुनिसुंदरसूरिकृत अध्यात्मकल्पद्रुममां जेम बतावेल छे, तेम विचारे, तेनुं लेशमात्र स्वरूप लखीये छीये.

चामडी, हाड, मज्जा, आंतरडां, चरबी, नस, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, खेल, खंखारादि अशुचि पुद्गलनुं पिंड स्त्रीनुं शरीरछे, आ पिंडमां तुं शुं रमणीय वस्तु देखे छे? जे लोक विष्ठाने दूरथी देखी थूथूकार करे छे, तेज मूढलोक विष्टा अने मूत्रथी भरेला एवा स्त्रीना शरीरनी अभिलाषा करे छे! बहु छिद्रोवाली विष्टानी कोथली जेना छिद्रोमांथी कृमीजाल निकले छे, तथा कृमीजालथी भरेली, एवी स्त्री छे. चपलता, माया, असत्यता, ठगाइ इत्यादिथी संस्कारित थयेल छे, तेथी जे पुरुष मोहथी तेनो संग करे, भोगविलास करे, तेने नरकगति छे. विष्टानी कोथलीरूप स्त्रीनां अगीआरे द्वारथी अशुचि वहे छे. जे द्वारने सुंघो, ते द्वारमांथी सडेला कुतराना कलेवर समान दुर्गंध आवे छे. हवे विचारमात्र एज आवेछे के कामी पुरुषो आवा स्त्रीना शरीरमां रागांध केम थाय छे? इत्यादि स्त्रीना शरीरनी अशुचिता विचारे. धन्य छे मुनि जंबुकुमारने!! जेणे नवपरिणीत आठ पद्मिनी स्त्री तथा नव्वाणुक्रोड सोनैया एक क्षणमात्रमां तजी दीधां! तेनुं माहात्म्य विचारे; अने श्री थूलिभद्र तथा सुदर्शन शेठना शियलनुं माहात्म्य विचारे. वली कषाय जीतवाना उपाय चिंतवे, तथा भवस्थितिनो विचार करे, अने धर्ममनोरथ भावनानी चिंतवना करे.

कषाय जीतवानो उपाय आ प्रमाणे. क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने नम्रताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोभने संतोषथी जीते, रागने वैराग्यथी जीते, द्वेषने मित्रताथी जीते, मोहने विवेकथी जीते, कामने, स्त्रीना शरीरनी अशुचित्व भावनाथी जीते, मत्सरने मननी मोटाइथी जीते, विषयने संयमथी जीते, योगने गुप्तिथी जीते, आलसने उद्यमथी जीते, अविरतिपणाने विरतिपणाथी जीते; आ प्रमाणे सर्व सुखेथी जीती शकाय छे. पूर्वे महान् पुरुषोयें आ रीतियेंज कषायने जीतेल छे.

भवस्थिति महादुःखरूप छे. चारे गतिमां जीव नाना प्रकारें दुःख पामी रह्या छे. नरकगतिना साते नरकोमां अत्यंत क्षेत्र वेदना छे. चार न-

रकमां परस्पर शस्त्रोथी उदीरेली वेदना छे, अने त्रण नरकमां परमाधामी कृत वेदना छे. आंख बंध करी उघाडीयें तेटलो काल पण नरकवासी जीवोने सुख नथी. मात्र दुःखज पूर्वे जन्मना करेला पापथी उदय पामेल छे. रात अने दिवस एक सरखां दुःखमां जाय छे. नरकगतिमां जीव जेटलुं दुःख भोगवे छे, तेनाथी अनंतगणुं दुःख निगोदमां ते भोगवे छे. तिर्यंच गतिमां अंकुश, परोणा, लाकडीना प्रहार, शृंगमोडन, गलमोडन, तोडन, छेदन, भेदन, दहन, अंकन, परवशत्वादि अनेक दुःख, जीव पामे छे. मनुष्यगतिमां गर्भमां रेहेवानुं दुःख, जन्म जरा मरणनुं दुःख, रोग व्याधि दरिद्रता प्रमुखनुं नाना प्रकारनुं दुःख, माता, पिता, स्त्री, पुत्रना मरणादिथी थतुं दुःख इत्यादि अनेक तरेहनुं दुःख जीव पामे छे. देवगतिमां च्यवननुं दुःख, दासपणानुं दुःख, पराभव, ईर्ष्यादि अनेक दुःख छे, इत्यादि भवस्थिति विचारे.

धर्ममनोरथभावना आ प्रमाणे करे. श्रावकना घरमां ज्ञान, दर्शन, व्रतसहित दास थइ जाउं तो पण सारुं छे, परंतु मिथ्यादृष्टिमां चक्रवर्ती राजा पण थवानी वांछा न करे. वली क्यारे हुं संवेगी वैराग्यवंत गीतार्थ गुरुना चरणारविंदमां स्वजनादि संगरहित प्रव्रज्या ग्रहण करीश? तथा क्यारे हुं तिर्यंचना तथा पिशाचना भयथी निःप्रकंप थइ स्मशानादि भूमिमां विधिपूर्वक कायोत्सर्ग करीश? वली क्यारे हुं तपथी कृश शरीर वालो थइ उत्तम पुरुषोनो मार्ग वहन करीश? इत्यादि भावनाथी कामकटकने जीते ॥ इति श्राद्धविधिग्रंथानुसाररात्रिकृत्यं ॥

हवे श्रावकनां पर्वकृत्य लखीए छीए. अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वना दिवसोए धर्मनी पुष्टि जे करे तेनुं नाम पौषध छे. भला व्रतवाला श्रावकें पर्वने दिवसें अवश्य पौषध करवो जोइए. जो पर्वने दिवसे शरीरमां शाता न होय, अने पौषध न करी शके तो बे वार प्रतिक्रमण करे; तेमज बहुवार सामायिक तथा दिशावकाशिक व्रत अंगीकार करे. पर्वदिवसोमां ब्रह्मचर्य व्रत पाले. आरंभ वर्जे. विशेष तप करे. चैत्यपरिपाटी करे. सर्व साधुउने नमस्कार करे. सुपात्रदान, देवपूजा, गुरुभक्ति, इत्यादि सर्व, बीजा दिवसो करतां विशेष रीतें करे. धर्म करणी निरंतर करवी ते सारुं छे, जो निरंतर न करी शकाय तो पर्वने दिवसें तो अव-

श्य करवी जोइये. पर्वना दिवसो आ छे—अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णमासी, अमावास्या, आ एक मासमां छ पर्व, अने पखवाडीआमां त्रण पर्व, तथा वीज, पांचम, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी आ पांच तिथि, तीर्थंकरोये वर्णवेली छे. वीजने दिवसे वे प्रकारना धर्मनुं आराधन करे, पंचमीने दिवसे ज्ञाननुं आराधन करे, अष्टमीने दिवसे आठ कर्मनो नाश करवा तपश्चर्या प्रमुख करे, एकादशीने दिवसे अगीआर अंगनुं आराधन करे चतुर्दशीने दिवसे चौद पूर्वनुं आराधन करे, आ पांच तथा पूर्वोक्त पूर्णमासी अने अमावास्या, एम छ पर्व थयां. वर्षमां छ अठाइ पर्व छे. चातुर्मासिक पर्वोमां सर्वथा आरंजनो त्याग जो न करी शके, तो स्वल्पतर आरंज करे. पर्वने दिवसे सर्व सचित्त आहार वर्जे, श्रावकें निरंतर सचित्त आहार वर्जवो जोइयें, जो तेम न करी शके तो पर्वने दिवसें तो अवश्य वर्जवो जोइयें. पर्वना दिवसोमां स्नान, शिरमुंडन, केशगुंथन, वस्त्रधोवन, वस्त्र रंगवां, गाडां हलादि चलाववां, धान्यना ठोड बांधवा, कोश, अरहट्ट (रेंट) चलाववा, दलवुं, जरडवुं, पत्र, पुष्प, फल, तोडवां, सचित्त खडी, लीली वनस्पति विगेरे मर्दन करवी, लींपवुं, माटी खोदवी, घर वंधाववां इत्यादि सर्व आरंजनां काम यथाशक्ति त्यागवां जोइयें; तथा सर्व सचित्त आहारनो जो त्याग न करी शके, तो केटलीएक वस्तुउं नाम लइ खावानी छुट राखे, विशेषनो त्याग करे. छये अठाइमां जिनराजनी पूजा करवी, तप करवुं, ब्रह्मचर्य पालवुं. छये अठाइमां चैत्र तथा आसो महिनानी एम वे अठाइ शाश्वती छे. आ दिवसोमां वैमानिक देवता उपण नंदीश्वरादिमां यात्रा उत्सव करे छे. वाकीनी त्रण अठाइ त्रण चोमासानी तथा चोथी पर्यूषण पर्वनी, सर्व मली छ अठाइ छे.

प्रजात समये प्रत्याख्याननी वेलायें जे तिथि होय, ते जैनमतमां मानवी प्रमाण छे. सूर्योदयनां अनुसारें लोकमां पण दिवसनो व्यवहार होवाथी तेम मानवुं प्रमाण छे. तथा च निशीथजाष्ये ॥ चउमासीअ वरीसे, पखिय पंचठमीसु नायवा ॥ ताउ तिहिउ जासिं, उदेइ सूरो न अन्नाउ ॥ १ ॥ पूआ पच्चखाणं, पडिक्कमणं तहय नियमगहणं च ॥ जीये उदेइ सूरो, तीये तिहिये उकायवं ॥ २ ॥ उदयम्मि जातिहिसा, पमाणमिअरीकीरमाणीये ॥ आणा जंगण वत्था, मिच्छत्त विराहणं पावे ॥ ३ ॥ अर्थः—

चौमासी, संवत्सरी, पक्खी, पंचमी, अष्टमी, आ तिथिउं सूर्योदयमां होय ते प्रमाण छे. अन्यथा नहि. पूजा, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, नियमग्रहण, जे तिथि सूर्योदयमां होय, ते दिवसेंज करवां जोइये, जे तिथि सूर्योदयमां होय तेज प्रमाण छे, उदयतिथि विना जे कोइ बीजी तिथि करे, माने, ते आज्ञाविराधक, अनवस्थाकारक, मिथ्यादृष्टि छे. पाराशरस्मृति आदिमां पण लख्युं छे ॥ आदित्योदयवेलायां, या स्तोकापि तिथिर्भवेत् ॥ सा संपूर्णेति मंतव्या, प्रभुता नोदयं विना ॥ १ ॥ उमास्वातिवाचकप्रघोषश्चैवं श्रूयते ॥ क्षये पूर्वा तिथिः कार्या, वृद्धौ कार्यातथोत्तरा ॥ श्रीवीरज्ञाननिर्वाणं, कार्यं लोकानुगैरिह ॥ १ ॥

वली श्री अर्हंतोना जन्मादि पंचकल्याणकना दिवसो पण पर्वमां छे. जे बे, त्रण कल्याणकनो दिवस होय ते विशेषें करी पर्वनो मानवो जोइयें. शास्त्रोमां श्रवण करीयें छीयें के श्रीकृष्ण वासुदेव सर्व पर्वनुं आराधन करवामां पोताने असमर्थ जाणीने, श्रीनेमिनाथ भगवानने पूछता हवा. हे भगवन्! उत्कृष्ट पर्व कयुं छे? भगवंतें कह्युं के हे श्रीकृष्ण! मागशिर शुद एकादशीनो दिवस सर्वोत्तम पर्व छे; कारण के ते दिवसें श्रीजिनेंद्रोनां पांच कल्याणक थयेलां छे, सर्वे क्षेत्रोनां मली दोढसो कल्याणक थयेलां छे. पछी श्रीकृष्ण वासुदेवें मौन पौषधोपवास करी ते दिवस मान्यो, त्यारथी "यथा राजा तथा प्रजा" ए न्यायें सर्व लोक एकादशी मानवा लाग्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे.

बीज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी आ तिथियोमां प्रायः जीवो परभवना आयुष्यनो बंध करे छे, ते कारणथी आ तिथियोमां धर्मकरणी विशेष करवी जोइयें. वली पर्वना महिमाना प्रभावथी अधर्मी, तथा निर्दय पण धर्मी अने दयावान् थइ जाय छे,कृपण पण धन खरचे छे,कुशील पण सुशील थइ जाय छे, ते जयवंत रहो, जेणें संवत्सरी, चातुर्मासी आदि उत्तम पर्वोनुं कथन करेल छे. जे अन्योयें चलावेलां पर्व छे तेमां आग लगाववी, जीवमारवा, रोवां, कुटवां, धूल उडाडवी, वृक्षो तोडवां इत्यादि नाना प्रकारनां पाप थाय छे, अने जे पर्व अरिहंत परमेश्वरें कथन करेल छे, तेमां तो निःकेवल धर्म कृत्योज करवां कहेल छे. ते का-

रणथी पर्व दिवसें पौषधादि करे. पौषधना भेद तथा विधि, सर्व श्राद्धविधि आदि ग्रंथोथी जाणी लेवी.

हवे चौमासिक कृत्य लखीए ठीए. चोमासामां विशेष नियम ग्रहण तथा परिग्रहनुं परिणाम करवुं जोइए. आ ऋतुमां बहु जीवोनी उत्पत्ति थाय ठे, ते कारणथी गाडां, हल प्रमुख न चलाववां जोइए. आंबानी केरीमां कीडा पडी जाय ठे, तेथी ते न खावी जोइए. देशविचार आंबानी बाबतमां विविध ठे. नियम बे प्रकारना ठे १ सुनिर्वाह, २ डुर्निर्वाह. धनवंतोने व्यापारनो त्याग, अने अविरतियोने सचित्तनो त्याग, रसनो त्याग, शाकपत्रनो त्याग तथा सामायिकादिनो अंगीकार डुर्निर्वाह्य ठे. अने देवपूजा, दान, महोत्सवादि सुनिर्वाह्य ठे; निर्धनोने तेउनाथी विपरीत रीतें ठे; अने चित्तनी एकाग्रता करवी, ते तो सर्वने डुष्कर ठे; तेथी डुर्निर्वाह्य नियमो न लइ शकाय तो, सुनिर्वाह्य नियमो अंगीकार करे. चोमासामां परगाम न जाय, जो निर्वाह न थइ शके तेम होय तो, जे गाम अवश्य जवुं पडे ते बाद करीने बीजा गामोनी मुसाफरी न करे. सर्व सचित्तनो त्याग करे. निर्वाह न थइ शके तेम होय तो सचित्तनुं परिमाण करे. निरंतर बे त्रणवार जिनराजनी अष्टप्रकारी पूजा करे. देववंदन करे, जिनमंदिरोमां सर्व जिनबिंबोनी पूजा वंदना करे, स्नात्रपूजा, महामहोत्सव, प्रभावना प्रमुख करे. गुरुने बृहत् वंदना अने बीजा सर्व साधुउने प्रत्येक वंदना करे, चतुर्विंशति स्तवनो कायोत्सर्ग करे, अपूर्व ज्ञाननो पाठ करे, गुरुनी वैय्यावच्च करे, ब्रह्मचर्य पाले, अचित्त पाणी पीये, सचित्तनो त्याग करे. वासी वस्तु, विदल, रोटली, पुरी प्रमुख, पापड, वडी, शाकनी सुकवणी, पत्रनां शाक, खारेक, खजूर, डाक्षा, खांड, सुंठ, प्रमुख, आ सर्वें नीलफूल लागी जवाथी अने कंथवा तथा लट अने कीडा पडी जवाथी खावा योग्य रहेतां नथी, ते कारणथी तेमनो त्याग करे. कदाचित् औषधादि विशेष कार्यमां लेवुं पडे तो सम्यक् रीतिए शोधीने वापरे. वली पलंग, स्नान, पगरखां, दातण इत्यादिनो त्याग करे. आभरण धोवां, वस्त्र रंगवां प्रमुखनो निषेध करे. घर, हाट, भींत, खाट, पाट, ठींकां, घी तेलनां वासणो, इंधन प्रमुखमां नीलफूल लागी जाय ठे, तेथी तेनी रक्षा वास्ते प्रथमथीज चुना

प्रमुख लगावे. मेल दूर करे. धूपमां न नाखे, शीतल स्थानमां राखे. दिवसें बे त्रण वखत पाणी गले. तेल, गोल, छाश प्रमुखनां वासणोनां मुखो यत्नाथी ढांकी राखे. उंसामणनुं पाणी तथा स्नाननुं पाणी ज्यां जीवाकुल भूमिका न होय, त्यां थोडुं थोडुं छुटुं छुटुं नाखी दे. चूला अने दीवा उघाडा न राखे. खांडवुं, दलवुं, भरडवुं, वासणो धोवां, वस्त्र धोवां, इत्यादि कामो यत्नापूर्वक करे. जिनमंदिर अने धर्मशाला समरावी राखे, यथाशक्ति उपधान, तप, प्रतिमा आदि वहन करे. इंद्रिय, कषायने जीते. योगशुद्धि तप, वीश स्थानक तप, अमृत अष्टमी तप; एकादशांग तप, चौद पूर्व तप, नमस्कार तप, चोवीश तीर्थंकरनां कल्याणिक तप, अक्षयनिधि तप, दमयंती तप, भद्रमहाभद्रादि तप, संसारतारण अठाइ तप, पक्षमासादि विशेप अनेक प्रकारथी तप करे. रात्रिए चतुर्विध आहार, त्रिविध आहार त्याग करे. पर्व दिवसें विकृति त्यागे, पर्व दिवसें पौषध उपवासादि करे. निरंतर पारणाने दिवसें अतिथि संविभाग करे. चातुर्मासिक अभिग्रह पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे बतावेला छे– ज्ञानाचारमां, दर्शनाचारमां, चारित्राचारमां, तपआचारमां तथा वीर्याचारमां इत्यादि अनेक प्रकारना अभिग्रह करे, ते रीति आ प्रमाणे. ज्ञानाचारमां शक्ति अनुसारें सूत्र वांचे, श्रवण करे, चिंतवे, शुक्ल पंचमीना रोज ज्ञाननी पूजा करे. दर्शनाचारमां देरासरमां काजो काढे, प्रमार्जन करे, लींपे, गुंहली करे, मंडल पूरे, चैत्य जिन प्रतिमानी पूजा करे, देववंदन करे, जिनबिंबोने निर्मल करे; चारित्राचारमां जीवनी यत्ना करे. वनस्पतिमां कीडा पड्या होय तो खार न लगावे, इंधनमां, जलमां, धान्यमां, अग्निमां जीव पड्या होय तेनी रक्षा करे. कोइना उपर कलंक मूके नहि, कोइने कठण वचन बोले नहि, तोछडाइथी कोइने बोलावे नहि, देव गुरुना सोगंद खाय नहि, कोइनी चाडी खाय नहि, कोइनी निंदा करे नहि, माता पिताने दुःख लागे तेवां प्रछन्न काम करे नहि. निधान तथा पडेलुं धन देखी, जेम शरीर अने धर्म न बगडे तेम प्रवर्ते. दिवसें ब्रह्मचर्य पाले. रात्रिए स्वदारासंतोष मात्र करे. धनधान्यादि नवप्रकारना परिग्रहनुं इछापरिमाण व्रत करे. दिशावकाशिक व्रत करे. स्नान, विलेपन, आभरण,

पुष्प, तंबोल, अगर, घरास, केशर, कस्तूरि विगेरे जोगववानी वस्तुउंनुं परिमाण करे. मजीठ, लाख, कसुंबो, गली विगेरेथी रंगेलां वस्त्रोनुं परिमाण करे. जांबु, नारंगी, संतरां, सफरजन, द्राक्ष, दाडिम, बीजोरां, नालियर प्रमुख वस्तुउं तथा लीलां शाक पत्रादि खावा योग्य होय तेनुं परिमाण करे; अनंतकायादि पदार्थनो त्याग करे. हीरा, माणेक, मोती, सोनुं, रुपुं इत्यादि वस्तुउंनुं, परिमाण करे. विगय तथा विगयगतनुं परिमाण करे. वस्त्र धोवां, नींत लींपवी, गार करवी, दलवा, खांडवानो नियम करे. पाणीमां धूबका मारे नहि. रांधवानुं परिमाण करे. व्यापारनुं परिमाण करे. व्यापार संबंधें वा हरेक कार्यपरत्वें जूठी साक्षी न पूरे, चोरीनो त्याग करे. परस्त्री साथे नापण तथा तेनुं देखवुं पण वर्जे, अनदंडथीर्थे न दंडावानो उपयोग राखे, सामायिक, पौषध करे, अतिथिसंविन्नाग करे, आ सर्वनुं निरंतर नियम करे. जिनमंदिरमां निरंतर सारसंनाल राखे, पर्वना रोज तप करे, उजमणुं यथाशक्ति करे. धर्मना रक्षणवास्ते पाणीनुं गलणुं तथा मुहपत्ति प्रमुख आपे, औषध आपे, यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करे. गुरुनो विनय करे. मासेंमासें अमुक सामायिक करे, वर्षमां अमुक पौषध करे. इतिश्राद्धश्राविकाचातुर्मासिकनियमस्वरूप ॥

हवे श्रावकोनां वर्षकृत्य बार द्वारथी लखीए छिए.

१ प्रथम संघपूजा करे. स्वद्रव्य अनुसार अत्यंत आदरसत्कारथी साधु साध्वी योग्य, निर्दोष वस्त्र, कांबल, उंघा, सूत्र, उन, पात्र, तुंबी, दंड, दंडिका, सोइ, कागल, दोतीआं, लेखण, पुस्तकादि श्रीगुरुनी सेवामां राखे, बीजां पण संयमनां उपकारी उपकरण होय ते पण आपे, जेम के प्रातिहारक, पीठ, फलक, पाटप्रमुख सर्व साधुउंने आपे; तथा श्रावक, श्राविकारूप संघनी नक्ति यथाशक्ति पेहेरामणी प्रमुख करी सत्कार करे. देवगुरुना गुणोनुं गायन करनारा गंधर्वादि याचकोने पण यथोचित दान आपे. संघनी पूजाना त्रण प्रकार छे. १ उत्कृष्ट, २ मध्यम, ३ जघन्य. सर्वदर्शनपूर्वक सर्वसत्कारथी संघनी पूजा करवी ते उत्कृष्ट पूजा. सूतरमात्रथी पूजा करवी ते जघन्यपूजा. शेष सर्वमध्यम पूजा छे. अधिक खर्च करवानी शक्ति न होय तो, गुरुने मात्र मुखवस्त्रिका

आपी पूजा करे; वे चार श्रावक, श्राविकाउने सोपारी प्रमुख वर्षे प्रत्ये आपे, ए प्रमाणे बहुमानथी संघपूजा करे तो निर्धनने पण महाफल छे. यतः ॥ संपत्तौ नियमाशक्तौ, सहनं यौवने व्रतं ॥ दारिद्र्ये दानमप्यल्पं, महालाभाय जायते ॥ १ ॥

२ साधर्मी वात्सल्य करे. सर्व साधर्मीउं वा केटलाएकोनी यथाशक्ति यथायोग्य भक्ति करे. पुत्रना जन्मोत्सवमां, विवाहमां तथा बीजां अनेक कार्योमां साधर्मिउने निमंत्रणा करीने विशिष्ट भोजन, तांबूल, वस्त्राभरणादि आपे. कोइ साधर्मिने कांइ कष्ट आवी पडे तो पोतानुं धन खरची कष्ट दूर करे. जो कोइ साधर्मी निर्धन थइ गयो होय तो धननो सहाय आपे. परदेशमां खरची त्रुट थयो होय तो खरची आपी पोताने देश पहोचाडे. धर्ममां अस्थिर थनारने स्थिर करे. सिदाताने सहाय करे. साधर्मी प्रमादि थइ गयो होय तो प्रेरणा करी उद्योगी करे. साधर्मीउने विद्याभ्यास करावे. साधर्मिउने वांचना, पृछना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा तथा धर्मकथानो सहाय करे. धर्मकरणीनी सहायतावास्ते पौषधशाला प्रमुख बंधावे, श्रावक, श्राविका निराश्रितोना उद्धार वास्ते भंडोल करे. श्रावकोनी जेम श्राविकाउनुं पण दरेक कार्यमां वात्सल्य करे. श्राविकापण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, शील, संतोषवाली होयछे. सधवानी जेम विधवाउ पण जे धर्ममां अनुरक्त होय तेमनुं वात्सल्य करे. विधवाउने अनेकरीतें धर्मकार्योमां योजे. तेउनुं माता तरेह तथा बेन, दीकरी तरेह हित चिंतवे. राजाउ जे श्रावक होय, तेउने तो अतिथिसंविभागव्रत, साधर्मिउनुं वात्सल्य करवाथी थइ शके छे. मुनिउने राजपिंड कल्पतुं नथी, तेथी श्रीभरतचक्री तथा दंडवीर्य राजा प्रमुखें ते प्रमाणेज करेल छे. श्रीसंभवनाथ भगवंतना जीवें त्रीजा भवमां धातकीखंडना ऐरवत क्षेत्रनी क्षेमपुरी नगरीमां विमलवाहन राजाने भवें महाफुकालमां सर्वसाधर्मिउने भोजन प्रमुखनी सहायता आपवाथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करेल छे; तेमज देवगिरि मांडवगढमां शाह जगत्सिंहें तथा थिरापद्र नगरमां श्रीमाल आभूयें त्रणसो साठ साधर्मिउने धन आपी पोतानी तुल्य करेल छे; तथा शाह सारंगादि अनेक पुरुषोयें साधर्मिउनुं अनेक तरेहथी वात्सल्य करेल छे.

३ यात्राविधि लखीये छीये. दरेक वर्षे जघन्यथी एक यात्रा तो अव-

श्य करवी जोइये. यात्राना त्रण प्रकार छे. १ अठाइयात्रा, २ रथयात्रा, ३ तीर्थयात्रा, अठाइमां विस्तार सहित सर्व चैत्य परिपाटी करे, तेनुं नाम चैत्ययात्रा पण कहेवायछे. रथयात्रा श्रीहेमचंद्रसूरिकृत परिशिष्टपर्वमां जेम संप्रति राजायें करेल छे, तेम करे; तथा महापद्मराजा चक्रवर्तियें जेम माताना मनोरथ पूर्ण करवावास्ते करेल छे, तेम करे; अने जेम श्रीकुमारपाल राजायें रथयात्रा करी छे तेवीरीतें करे.

तीर्थयात्रा आ प्रमाणे करे. श्रीशत्रुंजय, रैवताचलादि तीर्थ, तथा तीर्थंकरोनां जन्म, दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण अने विहारभूमि, आ सर्व स्थल, भव्यजीवोने प्रभूत शुभभावना संपादक छे; ते कारणथी संसारथी तरवानां कारणो होवाथी ते तीर्थ कहेवायछे. ते तीर्थभूमिमां जवाथी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे. जिनशासननी उन्नति वास्ते जे रीतियें यात्रा करवी जोइये, ते रीति आ प्रमाणे छे. प्रयाणना स्थानथी यात्राना स्थान सुधी १ निरंतर एकवार भोजन करे, २ सचित्तनो परिहार करे, ३ भूमिशयन करे, ४ ब्रह्मचर्य पाले, ५ सर्व सामग्री विद्यमान छतां पगें चाले, ६ सम्यक्त्वनी निर्मलतापूर्वक वंने वखत प्रतिक्रमण क्रिया करे. वली राजानी आज्ञा लइ यात्रागमन करे. विशिष्ट मंदिरोने सजावे. विनय, बहुमानसहित स्वजन तथा साधर्मिउने बोलावे, गुरुने साथे पधारवानी निमंत्रणा करे, अमारी पडह फेरावे, जिनमंदिरमां महापूजा, महोत्सव करावे, खरचीविनानाने खरची आपे, वाहनरहितने वाहन आपे, निराधारने यथायोग्य आधार आपे, सार्थवाहनी जेम उद्घोषणा करावी लोकोने उत्साहवंत करे, आडंवर सहित तंबु, डेरा, चरु, थाल, वासणो, प्रमुख साथे ले, गाडां, रथ, पालखी प्रमुख वाहनो तथा घोडा उंट प्रमुख जानवरो साथे सज्ज करावे, श्रीसंघनी रक्षावास्ते शूरवीर योद्धाउने साथे ले, योद्धाउने तलवार, वंदुक इत्यादि हथीआरो आपे, गीत, नाटक, वाजित्र प्रमुख सामग्री यथायोग्य मेलवे. पछी शुभमुहूर्तें, शुभ शुकनें प्रस्थान (प्रयाण) करे, भोजनादिथी श्रीसंघनो सत्कार करे, संघपतिनुं तिलक करावे; संघनुं प्रयाण थया पछी उत्तरोत्तर मुकाम करवानो वंदोवस्त करे, रक्षपालोने रस्तामां आगल, पाछल, साथे राखे, संघ मुकाम पहोंचतां तेमने उतरवानी गोठवण करावे, रस्तामां कोइनी गाडी प्रमुख

जांगी त्रुटी जाय तो समरावी आपे, सर्वप्रकारें यथायोग्य संघने सहाय आपे, ग्राम, वा नगरें ज्यां जिनमंदिर आवे त्यां महाध्वजा आपे, चैत्यपरिवाडी आदि महोत्सव करे, जीर्ण चैत्योनो उद्धार करावया सहाय आपे, ज्यारे तीर्थोने देखे त्यारे हीरा, मोती, सुवर्ण आदिथी वधावे, लाडवा प्रमुखना ल्हाणा करे, साधर्मीवात्सल्य तथा यथोचित दान आपे; ज्यारे तीर्थमां प्रवेश करे त्यारे मोटा उत्सवथी प्रथम द्रव्यपूजामां धन चढावे, प्रदक्षिणा करे, अष्टप्रकारी, सत्तरभेदी, स्नात्रपूजा विगेरे अनेक प्रकारनी पूजा करे, घीनी धारा दे, पुष्पघर, कदलीघर प्रमुख बनावे, महाध्वजा चढावे, पूजाराप्रमुखने पेहेरामणी आपे, कोइ पण मांगनारने ना कहे नहि, रात्रि जागरण करे, अनेक प्रकारे गीत नृत्यादि उत्सव करे, तीर्थोपवास छठ प्रमुख तपश्चर्या करे, अक्षतना अनेक प्रकारथी मंडल पूरे, अनेक प्रकारना फल तथा नैवेद्य, एकसो आठ, चोवीश, बासी, बावन, बहोंतेर आदि ढोवे, सर्व भक्ष्य भोजननो थाल ढोवे; चंदरवा, अंगलूहणा सुंदर अनेक प्रकारे आपे, तीर्थस्थानमां दीपक वास्ते घी, तेल आपे; पूजानी सामग्री वास्ते, चंदन, केशर, बरास, कस्तूरि, अगर, दशांग, कलश, धूपधाणा, आरति, झालर, चामर, थाल, रकेबी, आभरण प्रमुख अनेक उत्तम वस्तुउ आपे, देरी करावे, कारीगरोने सत्कार आपे, तीर्थना बगडेला कामने समरावे, सार संजाल वास्ते बंदोबस्त करे, तीर्थरक्षकोनुं बहु सन्मान करे, पेहेरामणी आपे, साधर्मीवात्सल्य तथा गुरुभक्ति करे. आ प्रमाणे यात्रा करी तेवीज रीते पाछा स्वस्थानके आवे, समतायुक्त सर्व क्रिया करे अने वर्षसुधी तीर्थ व्रतकरे, इति यात्राविधि ॥

हवे स्नात्र विधि लखीये छीये. जिनमंदिरमां स्नात्र महोत्सवमां घीनो मेरु करे, अष्टमंगल प्रमुखनी रचना करे, फल नैवेद्यादि ढोवे, उत्तम प्रकारना केशर, चंदन, पुष्प, अंबर प्रमुख लावे, सकल श्रावक समुदायने मेलवी गीत नृत्यादि आडंबरथी महापूजा रचावे, दुकूलादि महाध्वजा आपे, प्रौढ आडंबरथी प्रभावना निरंतर वा पर्व दिवसे करे, पर्व दिवसे पण न करी शके तो वर्षमां एकवार अवश्य करे. स्नात्र महोत्सवमां स्वधननो व्यय योग्य रीते करे. जीनमतनो उद्योत थाय तेम करे.

देवद्रव्यनी वृद्धिवास्ते अनेक प्रकारे लोकोने उत्साह वधे तेवा कार्यो

करे, पूजामां, माला चडाववा प्रमुख कार्योमां देवद्रव्यनी वृद्धि थाय तेवी योजना करे. केशर, चंदन, बरास प्रमुख अनेक वस्तु यथाशक्ति मुजब प्रति वर्षे आपे.

सुंदर आंगी, पत्रभंगी, सर्वांग आभरण, पुष्पगृह, कदलीगृह, प्रमुखनी रचना करे, विविध यंत्रादिकनी रचना करे, गीत, नृत्यादि महोत्सव करे, महापूजा रात्रि जागरण करे.

श्रुतज्ञान पुस्तक प्रमुखनी पूजा कर्पुरादिथी निरंतर सुगम छे, अने प्रशस्त वस्त्रादिथी विशेष पूजा तो प्रतिमास शुक्ल पंचमीनारोज श्रावके करवी योग्यछे. जो शक्ति न होय तो पण वर्षमां एकवार तो अवश्य पूजा करे. तेनुं विस्तारथी स्वरूप ज्ञानभक्ति द्वारमां लखवामां आवशे.

पंचपरमेष्टि नमस्कार, आवश्यक सूत्र, उपदेशमाला, उत्तराध्ययनादि ज्ञान दर्शननो तप करी जघन्यथी एकवार उद्यापन (उजमणु) करे; जेथी लक्ष्मीनी सफलता थाय; ज्यारे जप तपनुं उद्यापन करे, त्यारे चैत्यउपर कलशारोहण करे, फल चढावे, अक्षत पात्रना मस्तक उपर अक्षत चडावे. जेम भोजन उपर तांबुल अपाय छे तेम, आ बाबतमां पण जाणवुं. उजमणानी विधि शास्त्रांतरथी जाणी लेवी.

तीर्थोनी प्रभावनावास्ते वाजते गाजते प्रौढ आडंबरथी गुरुनो प्रवेशमहोत्सव करावे. आ कथन व्यवहार भाष्यमां छे. तेम करवाथी जिनमतनी प्रभावना थायछे. श्रीसंघनुं पण यथाशक्ति बहुमान, पूजा, भक्ति करे. नालियेर प्रमुखनी प्रभावना करे, तांबुल प्रदानरूप भक्ति करे, तेम करवाथी शासननी उन्नति थायछे, अने शासननी उन्नतिथी तीर्थंकरगोत्र उपार्जन थायछे. आ कथन ज्ञातासूत्रमां छे.

गुरुनो योग प्राप्त थये छते, जघन्यथी वर्षमां एकवार आलोचना ले, पोताना करेला सर्व पाप गुरुनी सन्मुख प्रगट करे, गुरु जे प्रायश्चित्त आपे ते अंगीकार करे, फरी तेवुं पाप न करे, तेनुं नाम आलोचना ग्रहण करवीछे, एम श्राद्ध जीतकल्पादिमां विधि लखीछे. पक्ष पछी, चार मास पछी, एक वर्ष पछी, उत्कृष्ट बार वर्ष पछी, निश्चयें आलोचना करे. पोताना शल्य काढवावास्ते, क्षेत्रथी सातसो योजन अने कालथी बारवर्ष सुधी गीतार्थ गुरुनी अन्वेषणा करे, ते गीतार्थ गुरु केवा होय? मन,

वचन, काया जेनां स्थिर होय, चारित्रवंत होय, आलोचना ग्रहणमां कुशल होय, प्रायश्चित्तना जाणकार होय, विषाद रहित होय, एवा गीतार्थ गुरु होय, ते आलोचना प्रायश्चित्त आपवा योग्य छे.

गीतार्थ कोने कहीये? १ जे निशीथादि छेद शास्त्रोना मूलपाठ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी आदिना जाणकार होय, ज्ञानादि पंचाचार युक्त होय, २ आधारवंत, आलोचित पापना धारणावाला होय, ३ आगमादि पांच व्यवहारना जाणवावाला होय, तेमां पण आ कालमां तो जीतव्यवहार मुख्य छे, तेना जाणकार होय, ४ प्रायश्चित्त आलोचकनी लज्जा दूर करावनारा होय, ५ आलोचकनी शुद्धि करनारा होय, ६ आलोचकना पापकर्म बीजाउंनी पासे न कहे, ७ आलोचक जेम निर्वाह करी शके, तेम प्रायश्चित्त आपे, ८ जे प्रायश्चित्त न करे तेने इहलोक परलोकना भय बतावे. आ आठ गुण युक्त गीतार्थ गुरु होय छे.

साधु तथा श्रावके १ प्रथम तो पोताना गच्छमां गच्छना आचार्य पासे, २ तेना अभावे, उपाध्यायनी पासे, ३ तेना अभावे, प्रवर्त्तकनी पासे, ४ तेना अभावे स्थिविरनी पासे, ५ तेना अभावे गणावच्छेदकनी पासे, स्वगच्छमां आ पांचेना अभावे संभोगी एक समाचारीवाला गच्छांतरमां पूर्वोक्त आचार्य प्रमुख पांचेनी पासे अनुक्रमे आलोचे, तेउंनो पण अभाव छते, असंभोगी संवेगी गच्छमां पूर्वोक्तक्रमे आलोचे, तेउंनो पण अभाव छते गीतार्थ पार्श्वस्थ (पासछ) नी पासे आलोचे, तेने अभावे गीतार्थ सारुपीनी पासे आलोचे, तेने अभावे पश्चात्कृतनी पासे आलोचे; जे शुक्ल वस्त्रधारी, शिरमुंडित, अबद्धकछ, रजोहरण रहित, ब्रह्मचारी, स्त्री रहित भिक्षावृत्ति होय ते सारूपी कहेवाय छे; जे शिखासहित अर्थात् चोटली सहित तथा स्त्री सहित होय ते सिरूपुत्र कहेवाय छे. जे चारित्र छोडी गृहस्थवेष धारण करे छे, ते पश्चात्कृत कहेवाय छे. आलोचनाने अवसरे पासछादिने पण गुरुनी जेम वंदना करे; कारण के विनय मूल धर्म छे, ते कारणथी वंदना करे. जो ते पासछादि पोते पोताने गुणहीन जाणी वंदना न करावे, तो तेने आसन उपर बेसाडी प्रणाम मात्र करी आलोचना ले; तथा पश्चात्कृतने इत्वरसामायिक आरोपण लिंग आपी, पछी तेनी पासे यथाविधि पूर्वक आलोचना ले. पार्श्वस्थादिने अभावे रा-

ज गृहादि गुणशील चैत्यादिमां ज्यां श्री अरिहंत, गणधरादिए वहुवार लोकोने प्रायश्चित्त आपेलां होय, ते क्षेत्रमां रहेनारा देवताउंये ते देखेल होय, तेथी ते देवताउंनुं अठम प्रमुख तपथी आराधन करी, तेनी पासे आलोचे, कदाचित ते देवता चवी गया होय, अने तेने स्थानके बीजा देवता उत्पन्न थया होय, तो ते देवता महाविदेहना अरिहंतने पुछीने प्रायश्चित्त आपे, तेने पण अजावे, पूर्वोत्तर दिशि सन्मुख मुख करी अर्हंत सिद्धोनी समक्ष आलोवे, परंतु शल्य न राखे. आलोचना करनारा पुरुष, मायारहित वालकनी जेम सरल थइ आलोवे. जे कोइ, कोइपण कारणथी आलोचना न करे, ते आराधक नथी.

आलोचना करनार दस दोष वर्जी आलोचना करे. दस दोषना नाम. १ गुरुने वैयावच्च प्रमुखथी प्रथम खुशी करी पछी आलोचना ले, जेथी गुरु अल्प पायश्चित्त आपे, २ आ गुरु अल्प दंड आपे छे, तेथी तेवा गुरुपासे तेवा अनुमानथी आलोवे, ३ जे अपराध बीजाये दीठा होय तेज मात्र आलोवे, परंतु बीजाये न देखेला होय ते न आलोववा ते, ४ वादर दोषने आलोववा, अने सूक्ष्म दोषने न आलोववा ते, ५ सूक्ष्म दोषने आलोववा, परंतु वादर दोषने न आलोववा ते, ६ अव्यक्त स्वरथी आलोववुं, ७ गुरु समजे नहि तेवी रीते रोलो करीने आलोववुं ते, ८ आलोचना कर्या पछी वहुजनोने सुणाववुं ते, ९ अव्यक्त अगीतार्थनी पासे आलोववुं १० जे अपराध गुरुने कह्यो होय, तेज पोताना अपराधने आलोचवो. आ दश दोष छे.

आलोचना करवाथी, जेम बोजो उपाडनार भार दूर करवाथी हलको थाय छे, तेम पापथी आलोचन करनार हलवो थाय छे. पापरूप शल्य दूर थायछे, प्रमोद उत्पन्न थायछे. पोताना दोषोनी निवृत्ति आत्मसाक्षीये देखी बीजां पण आलोचना करे. सरलता प्राप्त थवाथी शुद्धता थाय छे. दुष्कर काम करनार कहेवाय छे. दोषनुं सेवन करवुं ते दुष्कर नथी, परंतु दोषनो प्रकाश करवो ते दुष्कर छे. श्री तीर्थंकर जगवंतनी आज्ञाना आराधक थायछे. आलोचना करवाथी वालहत्या, स्त्री हत्या, यतिहत्यादि पाप, देवादि द्रव्य जक्षण पाप, राजपत्नी गमनादि महापाप पण सम्यक् रीतिये गुरुदत्त प्रायश्चित्त करवाथी दूर थइ जायछे. जो एम न होय तो

दृढप्रहारी प्रमुख तेज भवमां मोक्ष केम प्राप्त करत ? ते कारणथी दर वर्षे चोमासामां तो अवश्य आलोयणा ले.

हवे जन्मकृत्य अढार द्वारोथी लखीये छीये. १ प्रथम उचित द्वार. उचित अर्थात् योग्य वास करवानुं प्रथम स्थान करे; ज्यां रहेवाथी धर्म, अर्थ, काम ए त्रणेनी सिद्धि थाय.बीजे स्थले वसवाथी बंने भव वगडी जायछे. भिल्लपल्लीमां, चोरोना गाममां, पर्वतनी तलेटीमां, हिंसक लोकोमां दुष्ट लोकोमां, धर्मीलोकोनी निंदा करनाराउमां, इत्यादि स्थानमां वास न करे. ज्यां जिनचैत्य होय,मुनिनुं आवागमन होय, श्रावक वसता होय, बुद्धिमान् लोको स्वभावेज शीलवान् होय, प्रजा धर्मशील होय, अने ज्यां वहु जल, इंधन, धान्यादि होय त्यां वास करे. जेम अजमेरनीपासे हर्षपुर नगर हतुं, एवा नगरमां रहेवाथी, धनवंत, गुणवंत अने धर्मवंतनी संगतिथी विनय, विचार, आचार, उदारता, गंभीरता, धैर्यता, प्रतिष्ठा आदि गुणोनी प्राप्ति थायछे. धर्मकृत्यमां कुशलता थायछे; ते कारणथी कनिष्ठ गामोमां धनप्राप्ति होय तोपण वास न करे. यतः ॥ यदिवांछसि मूर्खत्वं, ग्रामे वस दिनत्रयं ॥ अपूर्वस्यागमो नास्ति, पूर्वाधीतं च नश्यति ॥ १ ॥

उचितस्थान पण स्वचक्र, परचक्र, परस्पर विरोध, दुर्भिक्ष, मारी, प्रजाविरोध, अन्नादि वस्तुक्षय, इत्यादि कारणो प्रसंगे तत्काल तजी देवुं जोइये; नहि तो त्रिवर्गनी हानि थइ जायछे. जेम पूर्वे मुसलमानना भयथी लोको दिल्लीनो त्याग करी गुजरात प्रमुख देशोमां जवाथी सुखी अने धनवान थया; तथा जेम क्षितिप्रतिष्ठित शेहेर उज्जड थवाथी चंपा नगरी वसी, अने चंपा उज्जड थवाथी पाटलीपुत्र अर्थात् पटना वस्युं, तेम श्रावक पण पूर्वोक्त हानि जाणे तो नगर छोडीने बीजी जगाये जइ वास करे.

रहेवानुं घर पण सारा लोकोनी पडोशमां करे, परंतु वेश्या तिर्यंच, भिक्षाचर, श्रमण, बौद्ध, तापस, ब्राह्मण, कोटवाल, माछी, जुगारी, चोर, नट, भाट, कुकर्मी प्रमुखना पडोसमां घर वा दुकान न करे. जो देरानी पासे रहे तो हानि थाय. चोकमां, धूताराना वासमां अने प्रधानना पडोसमां रहे तो धन अने पुत्रनी हानि थाय. मूर्ख, अधर्मी, पाखंडी, पतित,

चोर, रोगी, क्रोधी, चंडाल, मदोन्मत्त, गुरुतल्पग, वैरी, स्वामिवंचन, लोंजी, रुषि–स्त्री अने बालहत्याना करनारा एटला लोको आपणुं हित करनारा होय, तोपण तेना पडोसमां वास न करवो; कारण के तेउंनी संगतथी गुणहानि प्रमुख अनेक उपद्रव थायछे.

ज्यां हाडनुं शल्य न होय, राख न होय, ज्यां डाज उगतो होय, सुंदर वर्ण, गंधवाली माटी होय, मीठुं जल होय, खोदतां धन निकळे, ते जगा शुज समजवी. वळी जे जूमि शीतकालमां उष्ण स्पर्शवाली अने उष्णकालमां शीत स्पर्शवाली होय, ते जगा बहुज शुज जाणवी. एक हाथमात्र जूमि प्रथम खोदी, पछी तेज माटीथी तेज खाडो पुरवो, जो माटी वधे तो श्रेष्ट जूमि जाणवी, जो माटी उंछी थाय तो कनिष्ठ जूमि जाणवी; तथा सो पगलां जरतां जेटलो काल लागे तेटला कालमां जे जूमिमां पाणी न सूकाय, ते उत्तम जूमि जाणवी. जो तेटला वखतमां एक आंगल जर पाणी शोषाइ जाय तो ते मध्यम जूमि जाणवी, जो एक आंगल उपरांत पाणी शोषाय तो अधम जूमि जाणवी; तथा पक्षांतरमां जे जूमिना खातरमां फूल नाखतां जो फूल सुकाय नहि तो ते उत्तम जूमि जाणवी, जो अर्ध सूकाय तो मध्यम जूमि जाणवी. जो सर्व सूकाइ जाय तो अधम जूमि जाणवी. जे जूमिमां शाल वावतां त्रण दिवसे उगे ते उत्तम, पांच दिवस पछी उगे ते मध्यम, अने सात दिवस पछी उगे ते हीन जूमि जाणवी.

सर्पनी वंबी उपर घर बनाववामां आवे तो रोग थाय, पोली जूमिउपर घर बनाववामां आवे तो निर्धन थाय, शल्य युक्त जूमिउपर बनाववामां आवे तो मरण थाय. मनुष्यनुं हाड तथा केशनुं शल्य होय तो मनुष्योनी हानि थाय, खरनुं शल्य होय तो राजाप्रमुखनो जय थाय, श्वाननुं हाड होय तो बालकनुं मरण थाय, बालकनुं हाड होय तो गृहस्वामि परदेशमां नाश पामे, गायनुं शल्य होय तो गौरुप धननी हानि थाय, मनुष्यना केश, कपाल अने जस्म होय तो मरण थाय.

प्रथम प्रहर अने छेला प्रहर शिवायना बाकीना प्रहरमां वृक्षनी अने ध्वजानी छाया घर उपर पडे तो दुःखदायक समजवी. अरिहंतना मंदिरनी पाछलना जागमां न रेहेवुं; ब्रह्मा अने कृष्णना मंदिरनी साथे न

रहेवुं, चंडिका अने सूर्यना मंदिरनी सन्मुख न रहेवुं, महादेवनी तो कोइ पण बाजुये रहेवुं नहि. कृष्णनी डावी बाजुये अने ब्रह्मानी जमणी बाजुये न रहेवुं. स्नाननुं पाणी, ध्वजानी छाया अने विलेपन वर्जे. जिनमंदिरना शिखरनी छाया अने अरिहंतनी दृष्टि पडे त्यां वास न करवो. नगर तथा गामनी इशान खुणमां घर न बनावे; बनावे तो उंची जातिवालो दुःख पामे.

घर बनावे तो वेचनारने पूरी किंमत आपे. पाडोशीने दुःख न आपे, घर लेती वखत कोइने दुःख न आपे, काष्ठ, पाषाण, इंट प्रमुख वस्तु निर्दोष, दृढ, मजबुत अने नवीन होय ते वाजबी मूल आपीने ले, वेचाती वस्तुउनुं योग्य मूल आपे, परंतु पोते इंट, चुनो पकाववानुं न करे. जिनप्रासादनी इंट प्रमुख न ग्रहण करे. शास्त्रमां कह्युं छे के, देरासर, कुवा, वाव, स्मशान, मठ अने राजाना मंदिर, तेउना काष्ट, पत्थर, इंट प्रमुख सर्व गृहस्थना घरमां वपराय तो विरोधकारी छे, अने धर्मना स्थानमां वपराय तो सुखदायक छे.

पाषाणमय घरमां काष्ठनो स्थंन अने काष्टमय घरमां पाषाणनो स्थंन न बनावे, मंदिरमां पण न बनावे. हलका काष्ट, कोल्हानाकाष्ट, अर्हटनाकाष्ठ, चरखानाकाष्ठ, कांटावाला वृक्षनाकाष्ठ, पंच उंबरनाकाष्ट, आ सर्व काष्ट घरमां न वापरे. बीजोरा, केला, दाडम, जंबीर, आंबली अने धत्तुराना काष्ठ पण वर्जे. आ वृक्षोनां मूल पडो कोशमांथी घरमां प्रवेश करे, वा तेउनी छाया घरमां पडे तो कुलनो नाश करे. पूर्व दिशितरफ घर उंचुं होय तो धननो नाश थाय, दक्षिणदिशिये उंचुं होयतो धननी वृद्धि थाय, पश्चिमदिशिये उचुं होय तो धनादिनी वृद्धि थाय, अने उत्तरदिशि तरफ उंचुं होय तो उज्जड थाय. जे घर गोल होय, बहु खुणावालुं होय, अथवा एक, बे वा त्रण खुणावालुं होय, अने दक्षिण वामी तरफ लांबु होय, एवा घरमां वास न करवो. जे घरनां द्वार स्वयमेव उघडे वा बंध थाय ते घर सुखकारी नहि.

घरना द्वार उपर कलशादि चित्र होय तो शुभ छे, अने नाटारंभ, महाभारत तथा रामायणना युद्ध, राजाउना युद्ध, ऋषिउना चरित्र, देवचरित्र, आ चित्रो घरमां शुभ नथी; तथा फल वृक्ष, पुष्प वेल, सरस्व-

ती, नव निधान, यज्ञस्तंभ, लक्ष्मी देवि, कलश, वर्द्धमान, चौद स्वप्नावलि, आ चित्रो शुभ छे.

खजूर, दाडम, केलां, कोहलां, बीजोरां, जे घरमां उगे ते घरनो नाश थाय छे. वडवृक्ष उगे तो लक्ष्मीनो नाश करे, कांटा वाला वृक्ष उगे तो शत्रुनो भय करे, मोटा फलवाला वृक्ष उगे तो संताननो नाश करे, आ वृक्षना काष्ठ पण वर्जे. कोइ शास्त्र एम पण कहे छे के, घरनी पूर्वे वडवृक्ष होय तो सारुं छे, दक्षिण बाजुये उंबर वृक्ष शुभ छे, पश्चिम पासे पीपल वृक्ष अने उत्तर पासे प्लीक्षण वृक्ष सारा छे.

घरमां पूर्वदिशिये लक्ष्मीनुं घर करे, अग्नि खुणमां रसोइ करे, दक्षिण दिशिये शयननी जगा करे, नैरुत खुणमां शस्त्रशाला करे, पश्चिमदिशिये भोजन क्रिया करे, वायु खुणमां अन्न संग्रह करे, उत्तर बाजुये पाणीआरुं करे, इशान खुणमां देव गृह करे, दक्षिण पासे अग्नि, पाणी, गाय, वायु, अने दीवानी भूमिका बनावे, वामी बाजुये भोजन धान्य द्रव्य, वाहन, अने देवतानी भूमि बनावे; आ पूर्वादि दिशा घरना दरवाजानी अपेक्षाये जाणवी, ठींकवत्, सूर्य अपेक्षाये नहि.

घर बनावनार सुथार, कडीआ, मजूरने करारथी अधिक मजूरी आपे, तेमां शोभा समजवी. गृहस्थने योग्य घर बनावे, परंतु व्यर्थ मोटुं घर न बनावे, कारण के तेम करवाथी व्यर्थ धन खरचाय छे. घरना द्वारो मर्यादा पूर्वक राखे. बहु द्वार बनावे नहि. अधिक द्वारथी, दुष्ट जनोना प्रवेशनो भय तथा स्त्री अने धननो तेथी नाश थायछे. दरवाजाना बारणां मजबुत बनावे, सांकल, आगलीआथी सुरक्षित करे. कमाड पण सुखे खुले तेवा बनावे. भींतमां भुंगल राखवाथी पंचेंद्रिय जीवनी विराधना थायछे. कमाड वासे त्यारे यत्नाथी वासे; तेवीज रीते यत्नाथी उघाडे. परनाल, खाल विगेरे उचित बनावे. आ प्रमाणे देश, काल, स्ववैभव उचित, स्वजाति उचित, घर बनावी, विधि सहित, स्नात्रपूजा, साधर्मीवात्सल्य, संघपूजा करी, शुभ मुहूर्ते, शुभ शुकने, प्रवेश करे तो सुखी थाय, त्रिवर्गनी सिद्धिना हेतु थाय. इति प्रथम द्वार. २ बीजुं विद्याद्वार कहीये छीये. विद्या ते लखवुं, भणवुं, वाणिज्यादि कलानुं ग्रहण करवुं, अर्थात् अध्ययन करवुं. जे विद्याभ्यास करता नथी, ते मूर्ख रहेछे, अने पगले

पगले पराजव पामे ले. विद्यावान् परदेशमां पण माननीय थाय ले, ते कारणथी सर्व प्रकारनी कला शिखवी जोइये. कोण जाणे देत्र, कालना विशेषथी कइ कलाथी आजीविका करवी पडशे? जेउं सर्व कला शिख्या होय, तेउंये पण पूर्वोक्त सात प्रकारनी आजीविकामांथी जे कलाथी सुखे निर्वाह थाय, ते कलाथी आजीविका करवी. जो सर्व कला शिखवाने समर्थ न होइये, तो जे कलाथी, पोतानो निर्वाह सुखे थाय, अने परलोकमां सारी गति थाय ते कला शिखवी. पुरुषे वे वात निरंतर ध्यानमां राखवी, एक, जेथी सुखे निर्वाह थाय ते, तथा वीजी जेथी मरण पठी सद्गति थाय ते, आ वंने अवश्य शिखवी. ३ हवे विवाहद्वार लखीये ठीये. विवाह पण त्रिवर्ग शुद्धिनो हेतु होवाथी उचित करवो जोइये. अन्य गोत्रवाला साथे विवाह करवो जोइये. समान कूल, सदाचार, शील, रूप, वय, विद्या, धन, वेष, जाषा, प्रतिष्ठादि गुणोमां जे पोतानी समान होय, तेनी साथे विवाह करे, अन्यथा कुटुंवक्लेश, अवहेलना प्रमुख अनेक विटंवना उत्पन्न थाय ठे. श्रीमतीवत्. सामुद्रिक शास्त्रोक्त शरीरना लक्षण अने जन्मपत्रिका देखी, वरकन्यानी परीक्षा करी विवाह करे. ॥ यडुक्तं ॥ कुलंच शीलंच सनाथताच, विद्याचवित्तंच वपुर्वयश्च ॥ वरेगुणाः सप्तविलोकनीया, स्ततः परंजाग्यवशाहि कन्या ॥१॥ जो वर मूर्ख होय, निर्धन होय, दूर रेहेनार होय, सूरमो होय, वैराग्यवंत मोक्षाजिलाषी होय, वयमां कन्याथी त्रण गणो अधिक होय, तेवाने कन्या न देवी; वली अति धनवान्, अति नरम, अति क्रोधी, विकलांगी अने रोगी, तेवाने पण कन्या न देवी; तेमज कुल, जातिमां अतिहीन होय, मातपिताविनानो होय, स्त्री, पुत्र सहित जेने होय, तेने पण कन्या न देवी. वली जेने बहु जनोनी साथे वेर होय, दररोज कमाय तोज खावानुं साधन थाय तेम होय, आलसु होय, तेवाने पण कन्या न देवी. तथा जे एक गोत्री होय, व्यसनी होय, दरिद्र होय तेने पण कन्या न देवी. जे स्त्री, कपट रहितपणे जर्तारनी साथे वर्ते, देवरनी साथे पण कपट रहितपणे वर्ते, सासुनी जक्ति करे, सगा संवंधीनुं वात्सल्य करे, जाइउंमां स्नेहवाली होय, कमलनी जेम विकसित वदनवाली होय, ते कुलवधू सुलक्षणी जाणवी.

अग्नि देवनी साक्षीये पाणी ग्रहण करवुं ते विवाह कहेवाय छे. जगतमां विवाहना आर्यलोकमां आठ प्रकार छे. १ ब्राह्म, २ दैव, ३ आर्ष, ४ प्राजापत्य, ५ गांधर्व, ६ आसुर, ७ राक्षस, अने ८ पिशाच. जे वीवाहमां कन्यानो पिता पानेतर ओढाडी तथा अलंकार आपी पोतानी कन्या परणावे, ते ब्राह्मविवाह छे; जे विवाहमां यज्ञ करनार ब्राह्मणने कन्यानो पिता धर्मनी क्रिया करतां पोतानी कन्या आपे ते देवविवाह छे. जे विवाहमां कन्यानो पिता वरनी पासेथी गायनुं जोडुं लइ वरने कन्या परणावे ते आर्ष विवाह छे. आ छेला वे विवाह लौकिक वेदसम्मत छे. जैन वेदमां आ विवाह नथी, कारण के आ वे विवाहना मंत्रो जैनवेदमां नथी; तेम प्रचलित व्यवहारमां पण नथी. जे विवाहमां कन्यानो पिता सन्मान पूर्वक पोतानी कन्याने योग्य वरने आपे, ते प्राजापत्य विवाह छे. आ चारे प्रकारना विवाह लौकिक नीतिमुजब उत्तम प्रकारना छे. जे स्त्री-पुरुष मातापितानी आज्ञाविना परस्पर रागथी पोतानी मेले विवाह करे, ते गांधर्व विवाह छे. जे विवाहमां कन्यानो पिता वरनी पासेथी अवेज लइ कन्याने परणावे, ते आसुर विवाह छे. जे पुरुष कन्याने जोरावरीथी ग्रहण करे, ते राक्षस विवाह छे. जे पुरुष सुतेली, मदोन्मत्त, बावरी कन्याने ग्रहण करी लइ जाय ते पिशाच विवाह छे. पाछलना चारे विवाह अधम विवाह छे. जे विवाहमां वरवहुनी परस्पर बहुज प्रीति थाय, ते विवाह उत्तम प्रकारना विवाहमां गणाय छे. सारी स्त्रीनो लाभ तेज वीवाहनुं फल छे. सारो पुत्र उत्पन्न थाय तेज स्त्री मलवानुं फल छे. जेम थवाथी चित्तवृत्ति अनुपहत रहे, शुद्धाचार रहे, देवगुरु, अतिथी, बांधव प्रमुखनो सत्कार थाय.

विवाहमां धननो व्यय, पोताना कुल वैभवनी मर्यादा मुजब तथा शक्ति मुजब अने लोकमां वास्तविक लागे तेम करे, विशेष खर्च करवानी चाल करे नहि. अधिक खर्च तो धर्मना कार्योमां करवो वास्तविक छे. विवाहमां पण स्नात्र महोत्सव, महापूजा आदर सहित करे, नैवेद्यादि ढोवे, चतुर्विध संघनो सत्कार करे. विवाहना कार्यो संसार फलना आपनारां छे, तेथी तेवा प्रसंगे धर्मकार्योमां व्यय थाय ते सफल छे.

४ हवे मित्रद्वार कहीये छीये. उत्तम प्रकृतिवाला, साधर्मी, गुणवान् धै-

र्यवान्, गंजीर, चतुर, विश्वासपात्र इत्यादि शुज गुणवाला तथा प्रायः समान वय तथा स्थितिवाला साथे मित्रता करे. तेवा मित्र कदाचित् धनहीन थइ जाय तोपण तेनी गरीब अवस्थामां तेने सहाय करे. ५ जिनमंदिरद्वार. जिनेश्वर जगवान्नुं मंदीर अति सुंदर, शिखर बंध, मंडपयुक्त जरतचक्रवर्ती प्रमुख महान् पुरुषोये बनावेलाना चरित्रो ध्यानमां लइ निरजिमान वृत्तिथी, जन्मने सफल मानतां बनावे. विशिष्ट पाषाण तथा काष्ठथी ते सुवर्ण, मणी, रत्नमय यथा शक्ति मुजब बनावे. जो शक्ति न होय तो घासनी कुंपडी पण न्यायोपार्जीत द्रव्यथी बनावी, तेमां माटीनी प्रतिमा जरावी पूजे. जिनमंदिर न्यायोपार्जीत धनथीज बनाववुं जोइये. जेणे जिनमंदिर बनाव्युं नथी, वा जिनप्रतिमां जरावी नथी, अने साधुपणुं प्राप्त कर्युं नथी, ते पोतानो मनुष्य जन्म हारी गयो छे. जे पुरुष शक्तिने अजावे मात्र पुष्पथी पण पूजा करे, ते परम पुन्य उपार्जन करे छे, तो जेणे अत्यंत सुंदर जिनमंदिर मानरहित थइ बनाव्युं, तेना पुन्यनी शुं सिमा? तेनो तो जन्मज कृतकृत्य छे.

जिनमंदिर बनाववानी विधि लखीये छीये. शुद्ध जूमिपर पूर्वे घर बनाववानी विधि कही, ते विशेष अनुसारे, मंदिर बंधावे, पाषाण उत्तम जातिना वापरे, काष्ठपण शुद्ध, देवाधिष्ठित वनथी सूकां लावे. इंट, चुनो पोते पकावे ते सारुं नहि. यत्नापूर्वक जिनमंदिर कारीगरो पासे बंधावे. बंधाव्या पछी कारीगरोने पेहेरामणी, सन्मान आपे, तेउंनी साथे छल कपट न करे, तेउंने पगार पण करार करतां अधिक आपे, जेथी तेउं जिनमंदिरनुं काम बहुज शुद्ध यानतथी दीर्घकाल सुरक्षित रहे तेवुं करे. जिनमंदिर बंधावतां शुजपरिणाम वास्ते श्रीसंघ तथा गुरु समक्ष कहे के, अविधिथी परधन जे मारी पासे प्राप्त थयुं होय, तेनुं फल ते धनना मालिकने छे. ए प्रमाणे जिनमंदिर बंधावे. जिनमंदिर बंधावतां, जूमि खोदवी पडे, पथ्थर लाववा पडे, इंट चुनानी जठीउं पण उपयोगमां लेवी पडे, सुरंग फोडवा पडे, इत्यादि अनेक महा आरंजना काम करवां पडे, तेथी जिनमंदिर न बंधावबुं जोइये, एम लेश मात्र आशंका न करे. जिनमंदिर यत्नापूर्वक बंधावतां कूपदृष्टांत मुजब महालाज छे. तेमां अनेक प्रतिमानुं स्थापन, पूजन, संघसमागम, धर्मदेशना, दर्शन व्रतादि-

नी प्रतिपत्ति, शासनप्रभावना, इत्यादि अगणित पुण्य बंधना हेतु प्राप्त थाय ठे, तेथी जिनमंदिर बंधाववुं, ते श्रावकनुं मुख्य कर्त्तव्य ठे.

जीर्णोद्धारनुं स्वरूप लखीये ठीये ॥ यतः ॥ नवीन जिनगेहस्य, विधाने यत्फलं भवेत् ॥ तस्मादष्टगुणं पुण्यं, जीर्णोद्धारेण जायते ॥ १ ॥ जीर्णे समुद्धृते याव, त्तावत् पुण्यं न नूतने ॥ उपमर्दो महांस्तत्र, स्वचैत्य ख्यातिधीरपि ॥ २ ॥ वली कह्युं ठे के ॥ राय अमच्च सेठी, कोडंबीये वि देसेणं काउं ॥ जीणे पुव्वायणे, जीणकप्पीवावि कारवइ ॥ १ ॥ अर्थ. राजा, मंत्री, शेठ, कोटंबी विगेरेने उपदेश दइ, जीर्ण जिनमंदिरनो उद्धार जिनकल्पी साधु पण करावे. जेणे जिन भवननो उद्धार कर्यो, तेणे भयंकर संसारथी पोताना आत्मानो उद्धार कर्यो, एम जाणवुं. जीर्ण चैत्य उद्धार करण पूर्वकज नवीन चैत्य कराववुं योग्य ठे, ते कारणथी श्री संप्रति राजाये नेवासी हजार जीर्णोद्धार कराव्या ठे, अने नवीन जिनमंदिर तो ठत्रीश हजारज बंधाव्यां ठे. तेवीज रीतें श्रीकुमारपाल राजा तथा वस्तुपाल प्रमुखे पण नवीन जिनमंदिरो करतां जीर्णोद्धार विशेष करावेल ठे.

ज्यारे जिनमंदिर तैयार थइ जाय, त्यारे तेमां प्रतिमाजी शीघ्र विराजमान करवा जोइये. यदाह श्रीहरिभद्र सूरिः ॥ जिनभवने जिनबिंबं, कारयितव्यं द्रुतंतु बुद्धिमता ॥ साधिष्ठानं ह्येवं, तद्भवनं वृद्धिमद्भवति ॥ १ ॥ जिनप्रतिमा स्थापन कर्या पठी देरासरमां भंडार, कलश, त्रांबाकुंडी विगेरे उपकरणो आपवां, तथा बाग, वाडी, गाम, नगर प्रमुख तेना रक्षणवास्ते राजाये आपवा जोइये. जेम श्री सिद्धराजे श्रीरैवताचल पर्वत उपर श्रीनेमिनाथ भगवंतना चैत्यवास्ते बारगाम भेटमां आप्यां तथा जेम कुमारपाल राजाये वीतभय पाटन खोदावतां त्रांबाना पत्र उपर श्री उदायन राजाना अर्पण करेला गामोनो लेख निकळ्यो, ते कबुल करी ते गामो आप्यां, ते प्रमाणे आपे. श्रीजिनमंदिर बंधाववानुं फल आ ठे. यथाशक्ति स्वधनने अनुसारे श्री जिनभवन करावे ते पुरुष महर्द्धिवंत विमानवासी देवताउ पण जेनी स्तुति करे, तथा जे चिरकाल सुख आनंद भोगवे, तेवा विमानवासी देवनी गति तथा उंची गति प्राप्त करे.

५ प्रतिमाद्वार. श्री अरिहंतनुं बिंब मणि, सुवर्ण, धातु, पाषाण, चंद-

नादि उत्तम काष्ठ, वा माटीनुं अंगुष्ट प्रमाणथी यावत् पांचसो धनुष्य प्रमाण यथाशक्ति सुंदराकार शांतरसमय बनावे. श्री जिनप्रतिमा जरावनारने शुं फल प्राप्त थाय छे ? ते लखीये छीये ॥ यतः ॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ सन्मृत्तिका मल शिला तल दंत रौप्य, सौवर्ण रत्नमणि चंदन चारु विंवम् ॥ कुर्वंति जैनमिह ये स्वधनानुरूपं, ते प्राप्नुवन्ति नृसुरेपु महासुखानि ॥ १ ॥ तेप्रमाणे प्रतिमा जरावनारा, मनुष्य तथा देवगतिमां महासुख प्राप्त करे छे. तथा, आर्या ॥ दारिद्दं दोहग्गं, कुजाइ कुसरीरकुगइ कुमइर्ज ॥ अवसाण रोगसोगा, न हुंति जिणविंव कारिणं॥ १ ॥ अर्थ. जिनविंवना करावनार दारिद्र, दौर्जाग्य, कडुपुं शरीर, नरक तिर्यंचनी माठी गति, बुरीबुद्धि, पराधीनपणुं,रोग, तथा शोक प्राप्त करता नथी.

प्रतिमा पण वास्तुशास्त्रमां कहेली विधिपूर्वक बनावे, सुलक्षणयुक्त बनावे, जेथी संततिनी वृद्धि थाय. जे प्रतिमा अन्यायोपार्जित द्रव्यथी बनावेली होय, तथा जे दोरंगादि रंगवाला पाषाणनी बनेली होय, तेमज जेना अंग हीन अधिक होय, ते प्रतिमा स्वपरनी उन्नतिनो नाश करे छे. जे प्रतिमानुं मुख, नाक, नेत्र, कटी, एटलां अंग खंडित होय, ते प्रतिमाने मूलनायक न करवी जोइये. जे प्रतिमाने सो वर्षथी अधिक वर्ष थइ गयां होय, अने जे प्रजाविक पुरुषनी प्रतिष्ठित करेली होय, ते प्रतिमा जो खंडित थइ गइ होय तोपण पूजवा योग्य छे. पाषाणमय विंबना परिवारमां जो बीजो रंग होय तो ते विंब सुखकारक नथी. जे विंब सम अंगुल प्रमाण होय ते शुज नथी. एक आंगलथी अगीआर आंगलसुधीना प्रमाणवाला विंब गृहदेरासरमां पूजवा योग्य छे, ते उपरांतना प्रमाणवाला विंब होय तो साधारण मंदिरमां पूजवा जोइये. आ कथन पूर्वाचार्योनुं छे. निरयावलि सूत्रमां कह्युं छे के लेपनी, पाषाणनी, काष्ठनी, दांतनी, लोहनी प्रतिमा परिवार तेमज प्रमाणरहित होय, तो गृहमां न पूजवी. गृहदेरासरमां प्रतिमाजी पासे नैवेद्यनो विस्तार अतिशय न करवो. त्रण काल प्रतिमानी पूजा करे, प्रतिमाजीने अनिषेक करी, प्रातः कालमां प्रथम प्रहर व्यतीत थये, अष्टप्रकारी पूजा करी, जावपूजा करे. प्रतिमाजी मुख्य वृत्तिये परिकर सहित, तिलक सहित, आजरण सहित करावे. मूलनायकजी तो विशेष रीतें शोजनिक बनाववा जो-

इये, कारण के जिनप्रतिमानी अधिक शोजा देखावाथी परिणाम अत्यंत सुंदर तथा उल्लासमान थाय छे, अने तेथी अधिक निर्जरा थाय छे. जिनमंदिर अने जिनप्रतिमा वनावनारने अतुल्य पुण्यफल थाय छे. ज्यांसुधी मंदिर अने प्रतिमा रहे त्यांसुधी वनावनारने पुण्य प्राप्त थया करे छे. जेम अष्टापद पर्वत उपर जरतचक्रवर्तीयें करावेला मंदीर तथा रेवतगिरि उपर ब्रह्मेंद्रना वनावेला कांचनमय मंदिर तथा प्रतिमा, तथा जरत चक्रवर्तीनी अंगुठीमां रहेली माणकेनी प्रतिमा, जे कुल्पाक तीर्थमां माणिक्य स्वामिनी प्रतिमा कहेवाय छे ते, तथा श्रीस्तंजनक पार्श्वनाथनी प्रतिमा जे आज पर्यंत पूजाय छे, तेम पुण्यफल प्राप्त थाय छे. तेज कारणथी आ चोवीसीमां जरतचक्रवर्तीये श्रीशत्रुंजयतीर्थ उपर रत्नमय चौमुख चोरासी मंडप संयुक्त श्रीरीषजदेव जगवाननुं मंदिर वंधाव्युं, ज्यां पांच क्रोड मुनिना परिवार सहित पुंडरीक गणधर मोक्ष पाम्या. ज्ञान, निर्वाणना स्थानक पण वनाव्यां. तेवीज रीतें वाहुवली, मरुदेवी शृंगमां, रेवतगिरि, अर्वुदगिरि, वैजारगिरि, अने समेतशिखर उपर जिनमंदिरो वनाव्यां. प्रतिमाउ पण सुवर्णनी वनावी. जरत राजानी आठमी पाटें दंडवीर्य राजाये तथा वीजा सगर चक्रवर्तीये तेउनो उद्धार कराव्यो; तथा हरिषेण नामा दशमा चक्रवर्तीये श्रीजिनमंदिर मंडित पृथ्वी करी. संप्रति राजाये सवालाख जिनमंदिर तथा सवाक्रोड जिनप्रतीमा जरावी. गवालियरना राजा आम राजा श्रावके श्रीमहावीर अरिहंतनुं एकसो एक हाथ उंचुं जिनमंदिर वंधाव्युं, तेमां साडात्रण क्रोड सोनामोहोरो खरची सात हाथ प्रमाण उंची श्रीमहावीर स्वामिनी प्रतिमा वीराजमान करी, मूल मंडपमां एकवीश लाख सोनैया खरच्या. श्रीकुमारपाल राजाये चौदसो चमालीश नवा जिनमंदिर वंधाव्यां, तथा सोलसो मंदिर जिर्णोद्धार करी समराव्यां. छन्नुं क्रोड रुपैया खरची त्रिजुवनविहार नामा जिनमंदिर वंधाव्युं, तेमां एकसो पचवीस आंगल प्रमाण अरिष्ट रत्नमयी प्रतिमा वोतेर देरी संयुक्त चोवीस प्रतिमा रत्ननी, चोवीस रूपानी स्थापन करी, तथा चौदजार प्रमाण एकेक चोवीसी वनावी. मंत्री वस्तुपाले तेरसो तेर नवा जिनमंदिर वंधाव्यां, अने वावीससो जीर्णोद्धार कराव्या, सवालाख प्रतिमा जरावी, अने सवालाख सुवर्ण रत्नमय प्रतिमाजीनां

आनूषणो कराव्यां. शाह पेथके चोरासी जिनमंदिर बंधाव्यां; ते सर्वे वीरमदे राजाना राज्यमां मांधाता तथा ऑंकार नगरमां अने देवगिरि उपर क्रोडो रूपीआ खरची बंधाव्यां, त्रण लाख रूपीआ दानमां आप्या; तथा श्रीशत्रुंजय तीर्थ उपर श्रीरीषजदेवजीनुं मंदिर सुवर्णपत्रथी मढावी मेरुशृंग समान कर्युं हतुं. पूर्वोक्त सर्वे मंदिर, मुसलमान राजाउंये तथा अजेपाल राजाये जमीनदोस्त करी दीधां. शेष जे बचेलां छे, ते आज पण आबु, तारंगादि पर्वत उपर विद्यमान छे.

७ प्रतिमानी प्रतिष्ठाद्वार. प्रतिमानी प्रतिष्ठा शीघ्र करवी जोइये, षोडशक ग्रंथमां लख्युं छे के, मंदिर तैयार थया पछी दस दिवसनी अंदरज प्रतिष्ठा करवी जोइये. प्रतिष्ठाविधि प्रतिष्ठाकल्पथी जाणवी.

८ दीक्षाद्वार. श्रावके पोताना पुत्र, पुत्री, नाइ, नत्रीजा, स्वजन, मित्र, परिजन प्रमुख जे कोइ दीक्षा लेवाना अजिलाषी होय, तेने मोटा आडंबरथी महोत्सव करी दीक्षा अपाववी, उपस्थापना कराववी; बीजाउ पण जे दीक्षा लेवावाला होय तेउने वास्ते महोत्सव करे, अने दीक्षा अपावे तो महापुण्यनुं कारण छे. जेना कुलमां चारित्र धारण करनार पुरुष होय, ते महापुण्यवान् कुल छे. लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के ॥ यतः ॥ तावद् च्रमन्ति संसारे, पितरः पिंडकांक्षिणः ॥ यावत् कुले विशुद्धात्मा, यतिपुत्रोन जायते ॥ १ ॥

ए तत्पद स्थापनाद्वार. गणि, वाचनाचार्य, वाचक, आचार्यादि पदप्रतिष्ठा शासननी उन्नति वास्ते मोटा महोत्सवथी करे; जेम पूर्वे गणधरो वास्ते शक्र इंद्र करेल छे, तथा मंत्री वस्तुपाले एकवीश आचार्योनी पद स्थापना करी, तेम करे.

१० पुस्तक लखाववानुं द्वार. आचारांगादि सिद्धांतना ग्रंथो तथा जिनचरित्रादि अनेक ग्रंथो न्यायोपार्जीत धनथी लखावे. सुंदर कागलो उपर सुंदर अक्षरोथी लखावे. पोते वांचे, संवेगी गीतार्थ पासे वंचावे. प्रौढ महोत्सवथी शुन दिवसे पुस्तकनी पूजा करी बहुमान करावे. ग्रंथ नणनाराउने वस्त्र, अन्नादिनी सहाय करे. पूर्वकालमां जे शास्त्रो हतां, ते दुःषमकालना प्रनावथी बार वर्षना दुकालमां बहु विछेद गयां, बाकी जे रह्यां ते नगवान् नागार्जुन स्कंदिलाचार्य प्रमुख महापुरुषोये पुस्तकोमां

लख्यां, त्यारथी लखेलां शास्त्रोनुं बहुमान थवा लाग्युं; ते कारणथी पुस्तक जरूर लखाववां जोइये; आ पुस्तको विछेद जशे तो आ क्षेत्रनां अनाथ जीवोनी शुं दशा थशे? तेउने ज्ञान शीरीते प्राप्त थशे? ते कारणथी पुस्तको अति आदरथी लखावी, पुस्तको सुंदर वस्त्रोथी बांधी, बहु यत्नाथी राखी, पूजवा जोइये. शाह पेथडे सातक्रोड अने मंत्री वस्तुपाले अढार क्रोड रुपैआ खरची ज्ञानना भंडार कराव्या. थिरापद्रीय संघपति आनूये पोतानी माताना रुपैआ त्रण क्रोड खरची सर्व आगमोनी प्रतो सोनेरी अक्षरोथी लखावी, शेष ग्रंथो शाहीना अक्षरोथी लखाव्या, माटे पुस्तकोनो उद्धार करवो.

११ पौषधशाला बनाववानुं द्वार. श्रावके पौषध करवावास्ते पोताने वास्ते तेमज बीजा साधर्मीउवास्ते साधारण स्थानमां पूर्वोक्त घर बनाववानी विधि अनुसारे पौषधशाला बंधाववी जोइये. पौषधशाला समराववा अवसरे सुसाधुने रहेवाने ते स्थान आपवुं तेमां महाफल छे. श्रीवस्तुपाले (ए७४) नवसे चोरासी पौषधशाला बंधावी. श्रीसिद्धराज जयसिंह राजाये प्रधान सांतुने रहेवावास्ते बहु सुंदर आवास (मेहेल) बंधाव्यो, पछी श्री वादि देवसूरिजीने ते बताववासारुं आमंत्रण कर्युं. मंत्रीजीये पुछ्युं "गुरुराज आवास केवो छे? त्यारे शिष्य माणिक्ये कह्युं के ते पौषधशाला होय तो वर्णन करीये. मंत्रीये कह्युं के "आ पौषधशाला हवे छे"

१२-१३. बारमा अने तेरमां द्वारमां जन्मथी जावजीवसुधी सम्यक दर्शन यथाशक्ति पाले, १३ तथा यथाशक्ति व्रतादि पाले.

१४ दीक्षा ग्रहणद्वार. श्रावक अवसर जाणी दीक्षा ग्रहण करे. बाल्यावस्थामां जो दीक्षा न लहे तो पोताना मनमां ठगायो माने. जगतमां अतिवल्लभ वस्तुवास्ते जेम लोक निरंतर चिंता राखे छे, तेम श्रावक पण नित्य सर्वविरति थवानी चिंता राखे. जो गृहस्थावास पाले, तोपण उदासीनताथी अलिप्तपणे, पोताने परोणा समान समजे, कारण के भावश्रावकनां लक्षण सत्तर प्रकारना वर्णवेलां छे. तेना नाम.

१ स्त्रीथी वैराग्य, २ इंद्रियथी वैराग्य, ३ धनथी वैराग्य, ४ संसारथी वैराग्य, ५ विषयथी वैराग्य, ६ आरंभस्वरूप ज्ञान, ७ घरनो दुःखरूप अनुभव, ८ सम्यक् दर्शन धारणा, ए गाडरीआ प्रवाहनो त्याग, १० धर्म-

मां अग्रेसरपणुं, आगमानुसार धर्ममां प्रवर्त्तना, ११ दानादिमां यथाशक्ति प्रवर्त्तना, १२ विधिमार्गमां प्रवर्त्तना, १३ मध्यस्थ वृत्ति, १४ अरक्तद्विष्ट, १५ असंबद्ध, १६ परहितार्थे अर्थ, कामनो त्याग, १७ वेश्या वृत्तिये घरवास.

स्त्री अनर्थनुं स्थानछे, चपल चित्तवाली छे, नरकनी सडक सरखी छे, एम जाणी तेने वशवर्ती नहि थतां तेनाथी उदास रहे. २ इंद्रियो, चंचल घोडा समान छे, माठी गतितरफ निरंतर दोडेछे, तेथी तेनुं यथार्थ स्वरूप जाणी सद्ज्ञानरूप रज्जुथी तेने दुष्ट प्रवृत्तिथी रोके. ३ धन सर्व अनर्थ तथा क्लेशनुं कारण छे, तेथी धन प्राप्त थये, तथा प्राप्त करवामां अतिलोनी थाय नहि. ४ संसार, चतुर्गति रूप दुःखमय, अनेक विटंवनाथी जरपुर छे, तेथी तेमां आसक्ति न करे. ५ विषयसुख क्षणमात्रछे. तेनुं दुःख श्रेणि परंपरा छे, तेथी विषय विषफल समान छे, एम जाणी कदापि विषयमां गृद्धित्व न करे. ६ तीव्र आरंज निरंतर वर्जे, निर्वाह न थाय तोपण अल्पारंजी रहे, अने आरंज रहितनी स्तुति करे, सर्व जीवो उपर दयावंत रहे. ७ गृहवासने दुःख रूप, वंदीखाना समान मानी गृहवासमां उदासवृत्तिये रहे, अने चारित्र मोहनीय कर्मने जीतवानो उद्यम करे. ८ आस्तिक्य नाव संयुक्त जिनशासननी प्रनावना तथा गुरुनक्ति करे, तेवी रीतें सम्यग्दर्शन निर्मल धारण करे. ए जेवी रीतें मूर्ख लोको गाडरीआ प्रवाह प्रमाणे वर्त्ते, तेम नहि वर्त्ततां जिन आगम अनुसारे प्रवर्त्ते. ११ पोतानी शक्ति नहि गोपवतां चारे प्रकारनो दानादि धर्म करे. १२ हितकारी, अनवद्य, धर्मक्रियाने चिंतामणी रत्ननी जेम दुर्लन जाणी तेप्रमाणे करतां कोइ मूर्खना हसवाथी लज्जा न धरे. १३ शरीर राखवावास्ते धन, स्वजन, आहार, घर प्रमुखमां प्रवर्त्ते, परंतु रागद्वेष कोइ वस्तुमां न करे. १४ उपशांत वृत्ति सार छे, एम विचारी रागद्वेषमां लेपायमान न रहे, खोटो आग्रह न करे, हितनो अजिलाषी थइ मध्यस्थ रहे. १५ सर्व वस्तुने क्षणजंगुर मानी निरंतर धनादि साथे अप्रतिबद्ध पणे रहे. १६ संसारथी विरक्त मन राखे, एम जाणे के नोग नोगववाथी आज पर्यंत कोइ तृप्त थयेल नथी, छतां स्त्री आदिना आग्रहथी नोगविलासमां प्रवर्ते तोपण विरक्तपणे रहे. १७ वेश्यानी जेम अजिलाषा रहित वर्ते; एम विचारे के आ अनित्य सुख आज काल मारे छोडवा-

नां ठे, तेथी घरवासमां स्थिर नाव न करे. ॥ इति धर्म रत्नशास्त्रे कथितं नाव श्रावक गुणवर्णनं ॥

एम शुन नावना वासित प्रथम कहेल दिनकृत्यादिमां रक्त ॥ "इण-मेव निग्गंथे पवयणे श्रठे परमठे सेसे श्रणठे" एवी सिद्धांतोक्त रीतिये वर्तमान सर्व व्यापारोमां सर्व प्रयत्नथी वर्तता थकां, सर्वत्र अप्रतिबद्ध चित्त राखे, अनुक्रमें मोहने जीतवाने समर्थ थइ, पुत्र, नाइ, नत्रीजादिने गृहनार सोंपी स्वशक्ति अनुसारे अर्हतचैत्यमां अठाइ महोत्सव करी, संघनी पूजा करी, दीन अनाथोने यथाशक्ति दान दइ, परिचित्त जनो साथे खमतखामणा करी सुदर्शन शेठना जेम विधि सहित सर्वविरति अंगीकार करे.

१५ पंदरमाद्वारमां–जो दीक्षा लेवानी शक्ति न होय तो आरंननो त्याग करे, जो निर्वाह न थाय, तोपण अल्पारंनी रही सर्व सचित्त आहारादि केटलाएक आरंनो तो त्यागे.

१६ ब्रह्मचर्यद्वारः जावोजीवसुधी ब्रह्मचर्य पाले, जो तेम न थाय तोपण अमुक वखते तो अवश्य अंगीकार करे. जेम शाह पेथके बत्रीस वर्षनी अवस्थामां ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार कर्युं.

१७ प्रतिमाद्वार. प्रतिमादि तपविशेष करे, आदिशब्दथी संसार तारणादि तप करे. अगीआर प्रतिमा श्रावकनी ठे, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे ठे. रायानिर्उगेणादि ठ आगार रहित तथा समग् दर्शनना श्रद्धादि सडसठ बोल सहित, नय लज्जादि अतिचार रहित, त्रिकाल देवपूजामां तत्परता पूर्वक एक मास सुधी सम्यक्त्व पाले, ते प्रथम प्रतिमा. बीजी प्रतिमामां प्रथमनी प्रतिमानी विधिसहित, बे मास सुधी अखंडित पांच अणुव्रत पाले. त्रीजी प्रतिमा. त्रण मास सुधी उनयकाल अप्रमत्त, पूर्वोक्त बंने प्रतिमासहित सामायिक करे. चोथी प्रतिमा. चार माससुधी चारपर्व पूर्वेनी त्रण प्रतिमा सहित अखंडित पोषध करे. पांचमी प्रतिमा. पांच माससुधी स्नान न करे, रात्रिये चारे आहार वर्जे, दिवसे ब्रह्मचर्य पाले, कछ बांधे नहि, चार पर्वे घरमां तथा चोकमां निःप्रकंप थइ सर्व रात्रि कायोत्सर्ग करे, सर्वे पूर्वनी चार प्रतिमा सहित करे. आ वात आगल पण सर्व प्रतिमामां जाणवी. ठठी प्रतिमा. ठ माससुधी ब्रह्मचारी थाय. सातमी प्रतिमा. सा-

त माससुधी सचित्त आहार वर्जे. आठमी प्रतिमा. आठ माससुधी पोते आरंभ न करे. नवमीप्रतिमा. नवमाससुधी बीजा पासे पण आरंभ करावे नहि. दसमी प्रतिमा. दस मास सुधी क्षुरमुंडित रहे, अथवा अल्प चोटली राखे. घरमां कांइ धन होय, अने घर मांहेना कोइ पुछे त्यारे कहे के हुं जाणुं छुं, अने जो न होय तो कहे जाणतो नथी, बाकी घरनुं सर्व काम वर्जे, पोताने निमित्ते घरमां जे आहार कर्यो होय ते पण न खाय. अगीआरमी प्रतिमा. अगीआर माससुधी घरनो संग त्यागे, लोच करे, अथवा क्षुरमुंडित रहे, रजोहरण, पात्राप्रमुख लइ, मुनिनो वेष धारण करी स्वकुलमां भिक्षा लहे. मुखथी एम कहे. "प्रतिमा प्रतिपन्नाय श्रमणोपासकाय भिक्षां देहि" आ प्रमाणे वचन बोले, परंतु धर्मलाभ शब्द न कहे. सर्व रीतिये साधुनी जेम प्रवर्ते.

१७ आराधना द्वार. अंतकाल समये श्रावक दश प्रकारनी आराधना के जेनुं स्वरूप आगल कथन करवामां आवे छे ते, तथा संलेषणादि विधिपूर्वक करे. श्रावक ज्यारे सर्व धर्मकृत्यो करवाने अशक्त थाय, अने पोतानुं मरण पासे जाणे, त्यारे द्रव अने भावथी संलेषणा करे. द्रव्य संलेषणा ते अनुक्रमें आहारनो त्याग करे, अने भाव संलेषणा ते, क्रोधादि चारे कषायनो त्याग करे. पोतानुं मरण निकट छे एम आ लक्षणोथी जाणे. १ बुरा स्वप्न आवता होय, २ प्रकृति, स्वभावमां फेरफार थयो होय, दुर्निमित्त मलतां होय, ४ मोठा ग्रहनो योग थयो होय ५ आत्म आचरण विकृति पाम्या होय, वा कोइ देवतानी सहायथी जाणवामां आवे. जे द्रव्यथी तथा भावथी संलेषणा न करे, अने अनशन करी दे, तो तेवा जीवने प्रायः दुर्ध्यान थवाथी कुगति थाय छे, ते कारणथी संलेषणा अवश्य करे. पछी धर्मना उद्योत वास्ते संयम अंगीकार करे. एक दिवस पण दिक्षा ग्रहण करी संयम पालवामां आवे तो स्वर्ग प्राप्त थाय छे. जेम नल राजाना भाइ कुबेरना पुत्र सिंहकेशरीए मात्र पांच दिवसनी दिक्षाथी केवलज्ञान प्राप्त कर्युं अने मोक्ष गया; तथा हरिवाहन राजाए पोतानुं आयुष्य मात्र नव प्रहर बाकी जाणी दिक्षा लीधी अने सर्वार्थसिद्ध विमाने गया. श्रावक दिक्षा अवसरे तेमज संथारा समये प्रभावना वास्ते यथाशक्ति धन खरचे. जेम थिरापद्रीय संघपति आ-

जूए ते अवसरे साते क्षेत्रमां सातक्रोड धन वापर्युं. वली संयमनो योग न थाय तो शत्रुंजयादि तीर्थोंए सुस्थानमां जइ, संलेषणा करी, निर्दोष स्थंडिलमां विधि पूर्वक चार आहार त्यागरूप आणंद, कामदेव श्रावकोनी जेम अनशन करे. पछी सर्व अतिचारना परिहार चार शरणादिरूप आराधना करे.

आराधना दश प्रकारे थाय छे. १ सर्व अतिचार आलेवे, २ व्रत उच्चरे, ३ सर्व जीवो साथे खमावे, ४ पोताना आत्माने अढार पापस्थानकोथी व्युत्सर्जन करे, ५ चार शरण ग्रहण करे, ६ गमना गमन दुष्कृतोनी गर्हणा करे, ७ जे कोइए जीनमंदिरादि सुकृतो कर्यां होय, तेउनी अनुमोदना करे, ८ शुभ भावना भावे, ए अनशन करे, अर्थात् चार आहार वा त्रण आहारनो त्याग करे, १० पंच नमस्कारनुं स्मरण करे. आ प्रमाणे आराधना करवाथी जो ते भवमां मुक्ति प्राप्त न थाय, तो पण सुदेव अथवा सुमनुष्यना आठ भव करी अवश्य ते आत्मा मोक्षरूप थांय.

आ प्रमाणे गृहस्थधर्म करवाथी निरंतर गृहस्थ लोको आ लोक परलोकमां सुख प्राप्त करे छे, अने परंपराए मोक्ष प्राप्त करे छे. इति श्री श्राद्धविधि अनुसार श्रावकस्य जन्म कृत्यादि स्वरूपं संपूर्णम् ॥

इति श्री तपगछीय मुनि श्री मणिविजयगणि तच्छिष्यमुनि श्री बुद्धिविजय तच्छिष्य मुनि श्री मुक्तिविजयगणि तस्य लघु गुरुभ्रातृ मुनि आत्माराम आनंदविजय विरचिते जैनतत्त्वादर्शे गृहस्थधर्मनिरुपण नामा दशमः परिछेदः ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश परिछेद प्रारंभः ॥

आ परिछेदमां श्री रिषभदेव भगवानथी, श्री महावीर स्वामि पर्यंत जैनमतादि शास्त्रानुसार इतिहासरूप पूर्व वृत्तांत लखीए छीए, जेथी आ ग्रंथना वांचनाराउने जैननो सेहेज इतिहास जाणवामां आवशे. वर्त्तमान समयमां केटलाएक भव्य जीवोनी एवी जीज्ञासा छे के जैनमत क्यारथी प्रचलित थयेल छे? वली केटलाएकने एवी भ्रांति छे के, जैनमत बौद्धमतनी शाखा छे, केटलाएक कहे छे के बौद्धमत जैनमतनी शाखा छे, कारण के तेउनुं मानवुं एवुं छे के आ बंने मतो कोइ का-

लमां एक हता, परंतु आचार्योमां मतभेद थवाथी एक मतना बे विभाग, जैन अने बौद्ध थया छे. वली केटलाएक कहे छे के संवत् ५०० नी लगभग जैनमत उत्पन्न थयेल छे, अने कोइक कहे छे के विष्णु भगवाने दैत्योने धर्मभ्रष्ट करवावास्ते अर्हतनो अवतार धारण करेलो छे, वली कोइक कहे छे के मछंदरनाथना शिष्योए जैनमत चलाव्यो छे; इत्यादि अनेक दंतकथाउ चाले छे, ते सर्व जैनमत न जाणवानुं कारण छे. जेम चमार लोको कहे छे के बानु अने चामु बे बेहेनो हती, तेमां बानुनी उलाद सर्व अग्रवालादि वाणीआ थया, अने चामुनी उलाद अमे चमार छीए, ते कारणथी वाणीआ अने चमार एक वंशना छे, हवे विचारवुं जोइए के चमारोनुं आ बोलवुं शुं वास्तविक छे ? अने बुद्धिवान लोको शुं ते बोलवुं सत्य मानशे ? तेवीज रीते जे कोइ स्वमतिकल्पनाथी वा दंतकथा श्रवण करवाथी जैनमतनी उत्पत्ति मानशे, ते पण जैनीउने हसवा लायक थशे. सारांश ए छे के प्रथम तो कोइ पण मतवाला जैनमतना मूलतत्त्वोने जाणता नथी. जुउ के शंकरदिग्विजय ग्रंथमां श्रीशंकरस्वामिए जैनमतनुं जे खंडन लखेल छे ते वांचतां अमने हसवुं आवे छे. ज्यारे शंकरस्वामिए जैनमतनुं स्वरूपज जाण्युं नथी, त्यारे तेनुं करेलुं जैनमतनुं खंडन, ते पुरुषनी छायाने पुरुष जाणीने लाकडीथी मारवा सरखुं छे. ज्यारे शंकरस्वामिनेज जैनमतनी माहिती नंहोती, तों वर्त्तमान कालना सामान्य विद्धानोनी माहिती माटे शुं केहेवुं ? ते कारणथी सर्वे जीज्ञासुउने बहुज नम्रता पूर्वक विनंति करीए छीए के जैनमतनो सारी रीते अभ्यास करी, जैनमतनुं खंडन मंडन करवुं, नहीं तो शंकरस्वामि अने रामानुज आचार्योनी जेम तमे पण हसवा योग्य थइ पडशो.

सज्जनोने जाणवा वास्ते प्रथम आ जगतनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए. आ जगतने जैनी द्रव्यार्थिक नयना मतथी शाश्वत अर्थात् प्रवाह रूपे निरंतर एवुंज माने छे. आ जगतमां छ प्रकारे काल वर्ते छे, तेनेज जैनीउ छ आरा कहे छे. एक अवसर्पिणी काल, अर्थात् सर्व सारी वस्तुउनो अनुक्रमे नाश करतो करतो जे काल व्यतीत थाय, तेना छ विभागो छे, अने बीजो उत्सर्पिणी काल अर्थात् सर्व सारी वस्तुउने

अनुक्रमे वृद्धिमान् करतो करतो जे काल व्यतीत थाय, तेना पण ठ विभाग ठे. दश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण एक अवसर्प्पिणी काल, अने तेटलाज सागरोपम प्रमाण एक उत्सर्प्पिणी काल ठे. एक सागरोपम असंख्याता वर्षोनो थाय ठे. तेनुं स्वरूप जैन शास्त्रथी जाणवुं. एक अवसर्प्पिणी अने एक उत्सर्प्पिणी मली एक कालचक्र थाय ठे, अर्थात् वीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण एक कालचक्र ठे. एवा कालचक्र अनंता नूत कालमां व्यतीत थया, अने नविष्यमां पण व्यतीत थशे. अवसर्प्पिणी काल पुरो थतां उत्सर्प्पिणी काल प्रारंन थाय ठे, अने उत्सर्प्पिणी काल पुरो थतां अवसर्प्पिणी कालनो प्रारंन थाय ठे. एवीज रीते अनादि अनंत काल सुधी आ प्रमाणेज व्यवस्था रहेशे. हवे ठ आरानुं स्वरूप लखीए ठीए.

अवसर्पिणीनो प्रथम आरो सुषमसुषम चार कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण ठे. ते कालमां नरत क्षेत्रनी नूमि बहुज सुंदर, रमणीय, मर्दलना तल समान सम हती. ते कालना मनुष्य नद्रक, सरल स्वनावी, अल्प रागद्वेषी तथा अल्प मोह, काम, क्रोधादि युक्त हता, सुंदर रूपवान्, निरोगी हता. दश जातिना कल्पवृक्षोथी पोतानां खावा, पीवा, पेहेरवा, सुवा विगेरे सर्व व्यवहारना कार्यो करी लेता हता. एक पुत्र अने एक पुत्री; बेनुं युगल जन्मतुं हतुं. ज्यारे बंने यौवनवंत थता हता, त्यारे बंने नाइ बेहेन, स्त्रीनरतारनो संबंध करता हता. तेउने वली उवीज रीतें युगल प्रसवता हता. तेउ पण पूर्वोक्त व्यवहार करता हता. जैनमतना माप मुजब त्रण गाउ (कोस) प्रमाण तेउना शरीरनी उंचाइ हती. त्रण पल्योपम प्रमाण आयुष्य हतां. बसो ठपन पृष्ठकरंडना हाड हतां. धर्मनो अनाव हतो. जीवहिंसा, असत्यता, चोरी प्रमुख पाप पण विशेष नहोतां. वृक्षोमांज रहेता हता. युगल समुहो पण गणतरीमां थोडा हता. बाकी चतुष्पद पंचेंद्रिय, पक्षी प्रमुख सर्व जातिना जीव हता. तेउ पण सर्वे नद्रक हता. क्षुद्रक नहोता. शालि प्रमुख सर्व अनाज अने इक्षु प्रमुख सर्व वस्तुउ सर्व जंगलोमां स्वयमेव उत्पन्न थती हती. तेउ कांइ मनुष्योना खानपानादिमां उपयोगमां आवती नहोती. मनुष्यो तो मात्र कल्पवृक्षोना फलफूलोनोज आहार करता हता. वस्त्रने

वदले वृक्षोनी छाल तथा पांदडां पेहेरता, ओढता हता. इत्यादि सर्व घा-वतनुं प्रथम आरानुं स्वरूप जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति प्रमुख शास्त्रोथी जाणवुं.

बीजो आरो सुषम त्रण कोटाकोटी सागरोपम, तेमां वे गाउ (कोश) नुं देहमान, बे पल्योपमनुं आयुष्य, एकसो अठावीश पृष्ठकरंडकनां हाड हतां. शेष व्यवहार प्रथम आरा जेम हतो.

त्रीजो आरो सुषमदुषम; बे कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण, एक गाउ देहमान, एक पल्योपम आयुष्य, चोसठ पृष्ठकरंडक हाड हतां. शेष व्यवहार प्रथम आरा प्रमाणे हतो. आ सर्व आरामां सर्व वस्तुओ अनुक्रमे घटती छेवटे आगलना आरा तुल्य रहे छे, परंतु एक साथे सर्व वस्तु एकदम घटती नथी.

ए प्रमाणे त्रीजा आराने छेडे एक वंशमां सात कुलकर उत्पन्न थया. जेओए ते कालना मनुष्यो वास्ते कांइक मर्यादा बांधी होय तेओ कुलकर कहेवाय छे. तेज सात कुलकरोने लौकिकमां सप्त मनु कहे छे. बीजा वंशोना कुलकर गणीयें तो श्री ऋषभदेवजी शिवाय चौद कुलकर थाय छे, अने श्रीऋषभदेवजी पंदरमा कुलकर गणाय छे.

पूर्वोक्त सात कुलकरोना नाम. १ विमल वाहन, २ चक्षुष्मान्, ३ यशस्वान्, ४ अभिचंद्र, ५ प्रश्रेणि, ६ मरुदेव, ७ नाभि. आ सातेनी भार्याना नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे. १ चंद्रयशा, २ चंद्रकान्ता, ३ सुरुपा, ४ प्रतिरूपा, ५ चक्षुःकान्ता, ६ श्रीकान्ता, ७ मरुदेवी. आ सर्व कुलकर गंगा अने सिंधु नदीना मध्य खंडमां थया छे.

आ कुलकर थवानुं कारण एवुं छे के, त्रीजो आरो उत्तरतां, दश जातिना कल्प वृक्षो कालना दोषथी अल्प थइ गया, तेथी युगलीयाओए पोतपोताना वृक्षोपर ममत्व कर्यो.

ज्यारे बीजा युगलीआओए राखेला वृक्षोथी फल लेवा लाग्या, त्यारे ममत्ववाला युगलो तेओनी साथे क्लेश करवा लाग्या, युगलीआ पुरुषोने एवो विचार थयो के अमारा क्लेशनो निवेडो लावे तेवो कोइ पुरुष थाय तो सारुं; तेवामां ते युगलीआओ मध्येथी एक युगलने वनना एक श्वेत-हाथीए प्रेमथी पोताना स्कंध उपर चडाव्यो, त्यारे ते युगल पुरुष एकलो हाथी उपर चढी फरवा लाग्यो, त्यारे बीजा युगलो विचार करवा

लाग्या के, आ युगल अमारामां मोटोछे; कारण के ते हाथी उपर चडी फरे छे, अने अमे तो पगे चालीये छीये, तेथी तेने न्यायाधीश बनाववामां आवे तो सारुं, अर्थात् ते जे कहे ते अमारे मानवुं. पछी तेउए तेने न्यायाधीश बनाव्यो. जे कारणथी हाथीए युगलने पोतानी उपर चडाव्यो ते कारण, तथा तेउना पूर्व नवोनी कथा आवश्यकसूत्र तथा प्रथम अनुयोगथी जाणवी.

न्यायाधीश युगल विमलवाहने सर्व युगलियाने कल्पवृक्षो वेहेंची आप्यां. जे युगल पोताना वृक्षथी संतोष नही पामतां, बीजाना वृक्षथी फल लेवा लाग्या, तेउनी साथे क्लेष थतां, ते असंतोषी युगलोने विमलवाहन पासे लाववामां आवता हता. विमलवाहन तेउने कहेतो के "हा" तमे आ शुं कर्युं? त्यारथी विमलवाहने हाकारनी दंडनीति प्रवर्त्तावी. ते हाकार दंडनीतिथी फरी तेउ तेवा काम करता नहोता. पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया; ते पण पोताना पितानी जेम राजा अर्थात् कुलकर थया. तेना वखतमां पण हाकारज दंड रह्यो. तेने यशस्वान् नामा पुत्र थया, यशस्वान्ने अभिचंद्र नामा पुत्र थया. आ बंनेना समयमां थोडा अपराधवालाने हाकार दंड अने विशेष अपराधवालाने मकार दंड, अर्थात् आ काम न करवुं, आ बे दंडनीति प्रवर्ती. अभिचंद्रना पुत्र प्रश्रेणि थया. प्रश्रेणिना पुत्र मरुदेव थया, अने मरुदेवना पुत्र नाभि थया. आ त्रण कुलकरोना समयमां हाकार, मकार, अने धिक्कार, आ त्रण दंडनीति प्रवर्ती. तेमां थोडा अपराधीने हाकार, मध्यम अपराधीने मकार, अने उत्कृष्ट अपराधीने धिक्कार दंड करता हता. नाभि कुलकरने मरुदेवी नामा भार्या हती. आ नाभिकुलकर इक्ष्वाकु भूमि अर्थात् विनिता नगरीनी भूमिमां विशेष काल निवास करता हता. आ भूमि काश्मीर देशनी उपर हती, कारण के वि- निता नगरीनी चारे बाजुए चार पर्वत हता. पूर्व दिशिमां अष्टापद अ- र्थात् कैलास गिरि, दक्षिण दिशिमां महाशैल्य, पश्चिम दिशिमां सु- शैल्य, अने उत्तर दिशिमां उदयाचल पर्वत, हता.

ते नाभिकुलकरनी मरुदेवी नामनी भार्यानी कुक्षिमां आषाढ व- चोथनी रात्रिए सर्वार्थसिद्ध देवलोकथी चवीने श्रीरीषभदेवनो जीव

गर्भमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. मरुदेवीये चौद स्वप्नो दीठां. इंद्र महाराजे स्वप्न फल कह्यां. चैत्र वद आठमने दिवसे श्रीरीषभदेवजीनो जन्म थयो. छप्पन दिशाकुमारी तथा चोसठ इंद्रोये मली जन्म महोत्सव कर्यो. मरुदेवीये चौद स्वप्नमां प्रथम वृषभनुं स्वप्न दीठुं, तथा पुत्रना बंने साथलोमां वृषभनुं चिन्ह हतुं, ते कारणथी पुत्रनुं नाम रीषभ पाड्युं.

बाल्यावस्थामां श्रीरीषभदेवजीने ज्यारे भूख लागती हती, त्यारे पोताना हाथनो अंगुठो मुखमां लइ चूसता हता. ते अंगुठामां इंद्रे अमृतनो संचार कर्यो हतो. ज्यारे रीषभदेवजी मोटा थया त्यारे देवता तेमने कल्पवृक्षना फल लावी आपता हता. ज्यारे रीषभदेवजी कांइक न्यून वर्षना थया, त्यारे इंद्र तेमनी पासे आव्या, हाथमां इक्षुदंड लाव्या, रिक्त हाथे स्वामि समीप जवुं उचित नथी ते कारणथी इक्षुदंड लाव्या. श्रीरीषभदेवजी ते वखते नाभिकुलकरना खोलामां बेठा हता. श्रीरीषभदेवजीनी दृष्टि इक्षुदंड उपर पडी; इंद्रे कह्युं भगवन्! आप इक्षु भक्षण करशो? रीषभदेवजीये हाथ पसार्यो. इंद्रे इक्षुदंड आप्यो; त्यारथी इंद्रे रीषभदेवजीनो इक्ष्वाकु वंश स्थापन कर्यो; अने श्रीरीषभदेवजीना वंशवालाउये काशकार पीधो, तेथी गोत्रनुं नाम काश्यप थयुं. श्रीरीषभदेवजीना जेजे वयमां जेजे कामो उचित हतां, तेते सर्व शक्र इंद्रे कर्यां. जेजे शक्रइंद्रो थाय छे तेउनो अनादि कालथी आ जीतकल्प छे, के प्रथम भगवानना वयोचित सर्व काम करवां.

ते अवसरे एक छोकरो अने एक छोकरी, बेहेनभाइ बाल्यावस्थामां ताडवृक्षनी नीचे रमता हता. ते समये ताडनुं फल पडवाथी छोकरो मरी गयो. नाभिकुलकरे ते समये विचार कर्यो के आ छोकरी रीषभदेवनी भार्या थशे एम निश्चय करी पोतानी पासे राखी. तेनुं नाम सुनंदा हतुं. बीजी जे रीषभदेवजीनी साथे जन्मी हती, तेनुं नाम सुमंगला हतुं. ते बंनेनी साथे रीषभदेव बाल्यावस्थामां रमता हता, अनुक्रमे योवन प्राप्त थये इंद्रे विवाहनो प्रारंभ कर्यो. पूर्वे युगल समयमां विवाहविधि नहोतो, ते कारणथी आ विवाहमां पुरुषनां कृत्यो तो सर्व इंद्रे कर्यां, अने स्त्रीना कृत्य सर्व इंद्राणीउये कर्यां, त्यारथी विवाहविधि जगतमां प्रचलित थइ. श्रीरीषभदेवजीने बंने भार्याउनी साथे सांसारिक विषयसु-

ख भोगवतां ज्यारे ६ लाख पूर्व व्यतीत थया, त्यारे सुमंगला राणीने भरत अने ब्राह्मी युगल जन्म्या, अने सुनंदाने बाहुवली अने सुंदरीयुगल जन्म्या. पछी सुनंदाने तो बीजा पुत्र पुत्री जन्म्या नहि, परंतु सुमंगलाने उंगणपचास पुत्रोना जोडलां जन्म्या. सर्व मली सो पुत्र अने बे पुत्रीउ श्रीरीषभदेवजीना थया. तेउना नाम लखीये छीये.

१ भरत, २ बाहुवली, ३ श्रीमस्तक, ४ श्रीपुत्रांगारक, ५ श्रीमल्लिदेव, ६ अंगज्योति, ७ मलयदेव, ८ भार्गवतार्थ, ९ वंगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनाथ, १२ मानवर्त्तिक, १३ मानयुक्ति, १४ वैदर्भदेव, १५ वनवासनाथ, १६ महीपक, १७ धर्मराष्ट्र, १८ मायकदेव, १९ आस्मक, २० दंडक, २१ कलिंग, २२ इषकदेव, २३ पुरुषदेव, २४ अकल, २५ भोगदेव, २६ वीर्यभोग, २७ गणनाथ, २८ तीर्णनाथ, २९ अंबुदपति, ३० आयुवीर्य, ३१ नायक, ३२ काक्षिक, ३३ आनर्त्तक, ३४ सारिक, ३५ ग्रहपति ३६ करदेव ३७ कच्छनाथ, ३८ सुराष्ट्र, ३९ नर्मद, ४० सारस्वत, ४१ तापसदेव, ४२ कुरु, ४३ जंगल, ४४ पंचाल, ४५ शूरसेन, ४६ पुट, ४७ कालंगदेव, ४८ काशीकुमार, ४९ कौशल्य, ५० भद्रकाश, ५१ विकाशक, ५२ त्रिगर्त्त, ५३ आवर्ष, ५४ सालु, ५५ मत्स्यदेव, ५६ कुलियक, ५७ मुषकदेव, ५८ वाल्हीक, ५९ कांबोज, ६० मधुनाथ, ६१ सांद्रक, ६२ आत्रेय, ६३ यवन, ६४ आभीर, ६५ वानदेव, ६६ वानस, ६७ कैकये, ६८ सिंधु, ६९ सौवीर, ७० गंधार, ७१ काष्ठदेव, ७२ तोषक, ७३ शौरक, ७४ भारद्वाज, ७५ शूरदेव, ७६ प्रस्थान, ७७ कर्णक, ७८ त्रिपुर नाथ, ७९ अवंतिनाथ, ८० चेदिपति, ८१ विष्कंभ, ८२ नैषध, ८३ दशार्णनाथ, ८४ कुसुमवर्ण, ८५ भूपालदेव, ८६ पाल प्रभु, ८७ कुशल, ८८ पद्म, ८९ महापद्म ९० विनिद्र, ९१ विकेश, ९२ वैदेह, ९३ कच्छपति, ९४ भद्रदेव, ९५ वज्रदेव, ९६ सांद्रभद्र, ९७ सेतज, ९८ वत्स ९९ अंगदेव, १०० नरोत्तम. श्रीरीषभदेवजीना सो पुत्रोनां नाम कह्यां.

ते अवसरे जीवोना कषाय प्रबल थइ जवाथी पूर्वोक्त हकारादि त्रणे दंडनो भय मनुष्यो नही करवा लाग्या. ते वखते श्रीरीषभदेवजीने ज्ञानादि गुणोमां सर्वथी अधिक लोकोये देखवाथी, ते युगल लोकोये तेमने विनंति करी के हालमां सर्व लोक दंडनो भय करता नथी. श्रीरीषभदे-

वजी गर्नमां पण मति, श्रुत, अवधि, ए त्रणज्ञान संयुक्त हता. श्रीरीषनदेवजीना पूर्व नवोनो वृत्तांत श्री आवश्यक सूत्र तथा प्रथमानुयोगथी जाणवो. श्रीरीषनदेवजीये युगलक पुरुपोने कह्युं के जे राजा थाय छे, ते दंड करे छे. राजा, मंत्री, कोटवालादि सेना संयुक्त होय छे, अने ते कृतानिपेक होय छे, अने तेनी आज्ञा अनतिक्रमणीय होय छे. एवा वचनो श्रीरीषनदेवजीना श्रवण करी मिथुनको बोल्याके एवो राजा अमारो पण नले थाउ ! श्रीरीषनदेवजीये कह्युं के जो तमारी एम वांछा होय तो नानिकुलकर पासे जइ ते प्रमाणे याचना करो. मिथुनकोये नानिकुलकरने ते प्रमाणे विनंति करी. नानिकुलकरे कह्युं के जाउ रीषनदेवजी तमारा राजा थया. पछी मिथुनको श्रीरीषनदेवजीनो राज्यानिपेक करवावास्ते पद्मिनी सरोवरमां गया. ते अवसरे इंद्रनुं आसन कंपायमान थयुं. इंद्र अवधिज्ञानथी राज्यानिपेकनो अवसर जाणी अहींआ आवी श्रीरीषनदेवजीनो राज्यानिपेक कर्यो. मुकुटआदि सर्व अलंकार जे राजाने योग्य हता ते पेहेराव्या. ते समये मिथुनक लोको पद्मसरोवरमांथी नलिनी कमलोमां पाणी लाव्या. तेउये आवीने प्रनुने अलंकृत दीठा, त्यारे सर्व जनोये रीषनदेवजीना चरण कमल उपर जल रेडी दीधुं. इंद्र मनमां विचार कर्यो के मिथुनको अति विनीत छे; तेथी वैश्रमणने आज्ञा करी के आ विनीतोने रहेवावास्ते विनीता नामा नगरी बनावो ? वैश्रमणे विनीता नगरी बनावी अने युगलीआ तेमां वश्या. तेनुं स्वरूप श्रीशत्रुंजयमहात्म्यथी जाणवुं.

संग्रह वास्ते श्रीरीषनदेवजीना राज्यमां हाथी, घोडा, गाय, बलद प्रमुख वनमांथी पकडी लाववामां आव्या. श्रीरीषनदेवजीये चार प्रकारनो संग्रह कर्यो. १ उग्रा, २ नोगा, ३ राजन्या, ४ क्षत्रीया. जेउने कोटवालनी पदवी आपी तेउ दंड करनार होवाथी उग्रवंशी कहेवाया. जेउने गुरु अर्थात् वडील तरीके उंचा मान्या तेउ नोगवंशी कहेवाया. जेउ श्रीरीषनदेवजीना मित्र थया तेउ राजन्यवंशी कहेवाया. बाकीनाउ क्षत्रियवंशी कहेवाया.

ज्यारे कल्पवृक्षोना फलोनो अनाव थयो त्यारे पकाहार खावानो व्यवहार शीरीते शरु थयो तेनो विचार लखीये छीये. कालना प्रनावथी

कल्पवृक्ष फलो आपता बंध थया, जेथी लोको बीजा वृक्षोना कंद, मूल, पत्र, फूल, फल खावा लाग्या. केटलाएक इक्षुरस पीवा लाग्या, अने काचा अनाज खावा लाग्या. केटलाएक दिवसो गया बाद ज्यारे लोकोने काचुं अनाज पचवा न लाग्युं, त्यारे रीषभदेवजी पासे तेओ आव्या. रीषभदेवजीए कह्युं के, तमे हाथवती अनाज मसली फोतरा काढी नाखी खाओ. केटलाएक दिवसो पछी ते पण न पचवा लाग्या, त्यारे बीजी रीते काचा अनाज खावानी विधि बतावी; ए प्रमाणे अनेक रीते काचा अनाज खावानी रीत बतावी तोपण काल दोषथी अनाज पाचन न थवा लाग्युं. ते अवसरमां जंगलोमां वांस प्रमुखना घसावाथी अग्नि उत्पन्न थयो.

प्रश्नः— तमे कहो छो के श्रीरीषभदेवजीने जातिस्मरण अने अवधिज्ञान हतुं, तो पछी रीषभदेवजीए प्रथमथीज अग्नि बनाववानी तेमज ते अग्निथी अनाज रांधीने खावानी विधि केम न बतावी ?

उत्तरः— हे भव्य ! एकांत स्निग्ध कालमां तेमज एकांत रुक्षकालमां अग्नि कोइ पण वस्तुथी उत्पन्न थइ शकती नथी. कदाचित् कोइ देवता महाविदेह क्षेत्रथी अग्निने अहींआ लइ पण आवे, तो पण ते अग्नि तत्काल ओलवाइ जती हती. तेज कारणथी अग्निथी पकावी खावानो उपदेश कर्यो नहोतो.

हवे ज्यारे अग्निने तृणादि दाह करता देखी, अपूर्व रत्न जाणी तेओ पकडवा लाग्या, त्यारे तेओना हाथ दाझवा लाग्या, तेथी भयभ्रान्त थइ दोडता आवी श्रीरीषभदेवजीने तेओए सर्व वृत्तांत कह्यो. रीषभ देवजीए तेओने अग्नि लाववानी विधि बतावी. ते विधि प्रमाणे अग्नि घरमां लावी तेओए रीषभदेवजीने विनंति करी के हवे अमारे शुं करवुं ? रीषभदेवजीए हस्ति उपर बेठां थकां माटीनुं एक कुंडुं बनाव्युं. तेमां अनाज पाणी नाखी अग्नि उपर पकावी, रांधी खावानी सर्व विधि बतावी. जेना हाथथी प्रथम ते कुंडुं पकडाव्युं, अने जेने ते बनाववानी विधि बतावी ते कुंभार नामथी प्रसिद्ध थया; ते कारणथी कुंभार प्रजापति कहेवाय छे. धीमे धीमे सर्व प्रकारना अनाज अनेक रीतथी पकावी खावानी विधि प्रवृत्त थइ गइ. सर्व विधि श्रीरीषभदेवजीएज बतावी छे.

हवे शिल्पद्वार कहीये छीये. श्रीरीषभदेवजीना उपदेशथी पांच मूल

शिल्पी अर्थात् कारीगर बन्या. तेना नाम. १ कुंजकार २ लोहकार, ३ चित्रकार, ४ वस्त्र बनावनार, ५ नाइ. एकेक शिल्पना अवांतर जेद वीशवीश ठे. सर्व मली एकसो शिल्प बनाव्या.

हवे कर्मद्वार लखीये ठीये. १ खेती करवानुं काम, २ वाणिज्य अर्थात् व्यापार करवानुं काम. इत्यादि. धन ममत्वना अनेक कामो बताव्यां. प्रथम माटीना संचयमां जरी एरण, हथोडो तथा साणसी प्रमुख बनाव्या, पठी तेउथी सर्व वस्तुउ काम लायक बनाववामां आवी.

जरतादि पुरुष वर्गना लोकोने बहोंतेर कला शिखवी. स्त्री जातिनी चोसठ कला ब्राह्मी, सुंदरी प्रमुखने शिखवी, तेना नाम १ लखवानी कला, २ वांचवानी कला, ३ गणितकला, ४ गीतकला, ५ नृत्यकला, ६ ताल बजाववानी कला, ७ पटह बजाववानी कला, ८ मृदंग बजाववानी कला, ए वीणावगाडवानी कला, १० वंशपरिक्षा, ११ जेरीपरिक्षा, १२ १३ तुरंगपरिक्षा, १४ धातुर्वाद, १५ दृष्टिवाद, १६ मंत्रवाद, १७ वलि पलित विनाश, १८ रत्नपरिक्षा, १ए नारीपरिक्षा, २० नरपरिक्षा, २१ ठंद बंधन, २२ तर्कजल्पन, २३ नीतिविचार, २४ तत्त्वविचार, २५ कविशक्ति, २६ ज्योतिष शास्त्रज्ञान, २७ वैद्यक ज्ञान, २८ षड्जाषा, २ए योगाज्यास, ३० रसायणविधि, ३१ अंजनविधि, ३२ अढार प्रकारनी लीपी, ३३ स्वप्नलक्षण, ३४ इंद्रजालदर्शन, ३५ खेतीकाम, ३६ व्यापारकाम, ३७ राज्यसेवा, ३८ शकुनविचार, ३ए वायुस्तंजन, ४० अग्निस्तंजन, ४१ मेघवृष्टि, ४२ विलेपनविधि, ४३ मर्दनविधि, ४४ उर्ध्वगमन, ४५ घटबंधन ४६ घट ज्रमण, ४७ पत्रठेदन, ४८ मर्मजेदन, ४ए फलाकर्षण, ५० जलाकर्षण, ५१ लोकाचार, ५२ लोकरंजन, ५३ अफल वृक्षोने फलवाला करवानुं काम, ५४ खड्गबंधन, ५५ ठरीबंधन, ५६ मुद्राविधि, ५७ लोहज्ञान, ५८ दंतसमारण, ५ए काललक्षण, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ मुष्टियुद्ध, ६३ दंडयुद्ध, ६४ दृष्टियुद्ध, ६५ वाग्युद्ध, ६६ खड्गयुद्ध, ६७ गारुड विद्या, ६८ सर्पदमन, ६ए जूतमर्दन, ७० योग ते द्रव्यानुयोग, अक्षरानुयोग, व्याकरण, उपधानुयोग, ७१ वर्षज्ञान, ७२ नाममाला. आ पुरुषनी बहोंतेर कलाना नाम कह्यां.

हवे स्त्रीनी चोसठ कलाना नाम लखीये ठीये. १ नृत्यकला, २ औचि-

त्यकला, ३ चित्रकला, ४ वाजीत्र ५ मंत्र ६ तंत्र, ७ ज्ञान, ८ विज्ञान, ९ दंज, १० जलस्थंज, ११ गीतगान, १२ तालमान, १३ मेघवृष्टि, १४ फलवृष्टि, १५ आरामारोपण, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुनविचार, १९ क्रियाकल्पन, २० संस्कृतजल्पन, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृद्धि, २४ स्वर्णसिद्धि, २५ तैलसुरनिकरण, २६ लीला संचारण, २७ गजतुरंगपरिक्षा, २८ स्त्रीपुरुषना लक्षण, २९ कामक्रिया, ३० अष्टादश लिपिपरिछेद, ३१ तत्कालबुद्धि, ३२ वस्तुशुद्धि, ३३ वैद्यकक्रिया, ३४ सुवर्णरत्नभेद, ३५ घटभ्रम, ३६ सारपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनपाटव, ४१ भोज्यविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ काव्यशक्ति, ४४ व्याकरण, ४५ शालिखंडन ४६ मुखमंडन, ४७ कथाकथन, ४८ कुसुमगुंथन, ४९ वरवेष, ५० सकल भाषा विशेष, ५१, अभिधानपरिज्ञान, ५२ आभरणप्रवेश, ५३ भृत्योपचार, ५४ गृहाचार ५५ शाठ्यकरण, ५६ परनिराकरण ५७ धान्यरंधन, ५८ केशबंधन, ५९ वीणादिनाद, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार ६२ लोकव्यवहार, ६३ अंत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका. आ स्त्रीनी चोसठ कलाना नाम कह्यां.

वर्त्तमानमां सर्व सांसारिक कला पूर्वोक्त कलाउनी अंतर्गत छे. प्रथम लिपि कलाना अढार भेद दक्षिण हाथथी ब्राह्मी पुत्रीने शिखव्या. तेना नाम. हंसलिपि, २ भूतलिपि, ३ पक्षलिपि, ४ राक्षसलिपि, ५ यावनीलिपि, ६ तुरकीलिपि, ७ कीरीलिपि, ८ द्राविडीलिपि, ९ सैंधवीलिपि, १० मालवीलिपि, ११ नडीलिपि, १२ नागरीलिपि, १३ लाटीलिपि, १४ फारसीलिपि, १५ अनिमित्तीलिपि, १६ चाणक्की लिपि, १७ मूलदेवी, १८ उड्डीलिपि. आ अढार प्रकारनी ब्राह्मी लिपि, देश विशेषना भेदथी अनेक तरेहनी थयेली छे. जेम के १ लाटी, २ चौडी, ३ डाहली, ४ कानडी, ५ गौर्जरी, ६ सोरठी, ७ मराठी, ८ कोंकणी, ९ खुरासाणी, १० मागधी, ११ सिंहली, १२ हाडी, १३ कीरी, १४ हम्मीरी, १५ परतीरी, १६ मसी, १७ मालवी, १८ महायोधी. इत्यादि. सुंदरी पुत्रीने डावा हाथथी अंकविद्या शिखवी; जे जगतमां गणितविद्या प्रचलित छे, जेनाथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय छे. केटलीएक कला. लिपि तथा विद्या केटलीएकवार लुप्त थइ

जाय छे, अने फरी सामग्री पामी प्रगट पण थाय छे. परंतु नवीन कला, लिपि, वा विद्या उत्पन्न थती नथी. सर्व जे रीषजदेवजीए बतावेल छे, तेज चाले छे, तेनुं स्वरूप आवश्यक सुत्रथी जाणवुं.

ब्राह्मीनुं लग्न बाहुबलीनी साथे कर्युं, अने सुंदरीनो विवाह जरतनी साथे कर्यो. ते वखतथी माता पितानो कन्या आपवानो व्यवहार प्रचलित थयो.

श्री रीषजदेवजीए एक उदरथी उत्पन्न थयेला बेहेनजाइनो विवाहनो संबंध दूर कर्यो. ते देखीने बीजाउं पण तेमज करवा लाग्या, श्री रीषजदेवजीए बहु वखत सुधी राज्य कर्युं, अने प्रजाने वास्ते अनेक तरेहथी सुखनां साधनो उत्पन्न करी आप्यां; अनेक तरेहनी विद्या, कला, कौशल्यता प्रजाने बतावी; जे कारणथी श्रीरीषजदेवजीने जेनीउं जगत्ना कर्त्ता माने छे. बीजा मतवालाउं जे इश्वरनी करेली सृष्टि कहे छे, ते पण इश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्ना कर्त्ता ब्रह्माआदि, विष्णुआदि, योगीआदि, जगवानआदि, अर्हंतआदि, तीर्थंकर, प्रथम बुद्ध, सर्वथी मोटा, इत्यादि नाम तथा महिमा जे गाय छे, ते सर्व श्री रीषजदेवजीनोज गुणानुवाद छे. बीजो कोइ सृष्टिनो कर्त्ता नथी.

अज्ञानी अने मूर्ख लोकोए स्वकपोलकल्पित शास्त्रोमां इश्वर विषयमां मनमानी कल्पना करेली छे. ते कल्पना बहु जीवो आज पर्यंत साची मानी सर्व कार्यो कर्या जाय छे. जैनमत विना सर्वमत प्रायः ब्राह्मणोएज चलाव्या छे. ते कारणथी ब्राह्मणोज मतोना विश्वकर्मा छे. लौकिक शास्त्रोमां जे कांइ निरुपण करेल छे ते सर्व ब्राह्मणो वास्तेज छे. कारण के शास्त्रो बनावनाराउंना संतान प्रमुख शास्त्रना आधारथी खुब खाय छे, पीए छे तथा आनंद करे छे. ब्राह्मणो तथा वेदोनी उत्पत्ति आवश्यक आदि शास्त्रोमां जे प्रमाणे बतावी छे, ते प्रमाणे जव्यजीवोने जाणवा वास्ते हुं पण आ स्थले लखुं छुं

निदान सर्व जगतनो व्यवहार चलावी, जरत पुत्रने विनीता नगरीनुं राज्य आप्युं. बाहुबली पुत्रने तक्षिलानुं राज्य आप्युं. बाकीना पुत्रोने बीजा देशोनुं राज्य वेहेंची आप्युं. ते पुत्रोना नामथी ते ते देशो-

ना नाम पण पाडवामां आव्यां. जेम के अंगदेश, वंगदेश, मगधदेश इत्यादि देशोना नामो पण पुत्रोना नामथी पड्यां.

वाद श्री रीषजदेवजीए स्वयमेव दीक्षा लीधी, तेमनी साथे कछ महाकछ सामंतादि चार हजार पुरुषोए दीक्षा लीधी.

श्रीरीषजदेवजीने एक वर्ष सुधी जिक्षा न मली, तेटला वखतमां चार हजार पुरुषो तो जूखे मरवाथी जटाधारी वनी कंद, मूल, फल, फूल पत्रादि आहार करतां गंगा नदीना वंने किनारा उपर तापसो वनी रेहेवा लाग्या, अने श्री रीषजदेवजीनुं ध्यान तथा जाप ब्रह्माआदि शब्दोथी करवा लाग्या.

श्री रीषजदेवजी एक वर्ष वित्या वाद वैशाख सुद ३ ना रोज हस्तिनापुरमां आव्या, त्यां श्री रीषजदेवजीना पौत्र श्रेयांस कुमारे जातिस्मरण ज्ञानना वलथी जिक्षा वास्ते विहार करता एवा जगवानने इक्षुरसथी पारणुं कराव्युं. ते वखतमां लोकोए जिक्षाचरोने देख्या न होता, अने जिक्षा आपवानी विधि पण तेउ जाणता न होता, ते कारणथी श्री रीषजदेवजीने लोको हाथी, घोडा, आजूषण, कन्या आदिनी जेटतो वहु करता हता, परंतु श्री रीषजदेवजी तो त्यागी होवाथी तेउनी जेट लेता न होता. पछी लोकोए श्रेयांस कुमारने जिक्षा आपतां देखी पुछ्युं के तमे रीषजदेवजीने जिक्षार्थी केवी रीते जाण्या? त्यारे श्रेयांस कुमारे लोकोने पोतानो तथा श्री रीषजदेवजीनो पूर्वना आठ जवोनो संवंध कह्यो. ते सर्व अधिकार आवश्यक शास्त्रथी जाणवो. पछी सर्व लोक जिक्षा देवानी रीति जाणी गया.

श्री रीषजदेवजी एक हजार वर्ष सुधी देशोमां छद्मस्थपणे विचरता हवा. ते अवस्थामां कछ अने महाकछना पुत्र नमि तथा विनमिए प्रजुनी वहुज सेवा जक्ति करी. तेउने धरणेंद्रे प्रज्ञप्ति आदि अडतालीश हजार (४८०००) विद्या आपी वैताढ्य गिरिनी दक्षिण तथा उत्तर वाजु रूप एकेक श्रेणिनुं दरेकने राज्य आप्युं. तेउ सर्वे विद्याधर कहेवाया. आ विद्याधरोना वंशमां रावण, कुंजकरणादि तथा वाली सुग्रीवादि अने पवन हनुमानादि सर्वे विद्याधर थया छे.

एकदा छद्मस्थ अवस्थामां श्री रीषजदेवजी विहार करता करता वा-

हुबलीनी तक्षिला नगरीमां गया. बहार वगीचामां कायोत्सर्गमां स्थित रह्या. ज्यारे बाहुबलीने ज्ञगवान पधारवाना समाचार मल्या, त्यारे तेणे विचार कर्यो के आवती काले बडा आंडंबरथी पिताजीने वंदना करवा जइश. प्रजात समये ज्यारे मोटा आडंबरथी पिताजीने वंदना करवा गया, त्यारे ज्ञगवान तो त्यांथी विहार करी गया, एम जाणवामां आवतां बाहुबली बहुज उदास थइ गया. पठी श्रीरीषज्ञदेवजीना चरणोना स्थल उपर धर्मचक्रनी स्थापना करी. आ धर्मचक्र तीर्थ विक्रम राजाना वखत सुधी रह्युं, पठी ज्यारे पश्चिम दिशामां नवा मतमतांतरो उत्पन्न थया, त्यारे ते तीर्थ नष्ट थयुं.

अनुक्रमे श्रीरीषज्ञदेवजी ज्ञगवान बाल्हीक, जोनक, अडंब, इल्लाक, सुवर्णज्ञूमि, पल्लवकादि देशोमां विहार करवा लाग्या. जेजे देशवालाउये श्रीरीषज्ञदेवजीनां दर्शन कर्यां, तेउ सर्व ज्ञद्रक स्वजाववाला थया, अने बाकीनाउ सर्व म्लेछ, निर्दयी, अनार्य थइ गया; अनेक कल्पनिक मतो मानवा लाग्या, अने तेउना व्यवहार पण विपरीत तरेहना थया.

श्रीरीषज्ञदेवजी एक हजार वर्ष व्यतीत थया बाद विहार करता करता विनीता नगरीना पुरिमताल नामना बागमां गया. वगीचामां वडवृक्ष नीचे फागण वदी एकादशीने दिवसे, त्रण दिवसना उपवास ठतां प्रथम पहोरमां केवलज्ञान तथा केवलदर्शन अर्थात् सचराचर जगतमां ज्ञूत, ज्ञविष्य वर्तमानना सर्व जीवाजीव वस्तुमात्रनुं उत्पत्ति स्थिति अने लयनुं जाणवुं तथा देखवुं थयुं. ते समये चोसठ इंद्रो त्यां आव्या, समवसरणनी देवोये रचना करी, तेमां त्रण गढ अने चार दरवाजा बनाव्या, मध्य ज्ञागमां मणिपीठिका बनावी, तेना मध्य ज्ञागमां अशोक वृक्षनी रचना करी, तेनी नीचे दरवाजानी सन्मुख चारे दिशामां चार सिंहासनोनी रचना करी. तेमां पूर्वना सिंहासन उपर श्रीरीषज्ञदेव ज्ञगवान विराजमान थया, अने बाकीना त्रण सिंहासनो उपर ज्ञगवान सदृश त्रण बिंबोनी स्थापना करी, जे बिंबोने देखवाथी, ते ते दरवाजेथी आवनारा सर्वे श्रीरीषज्ञदेव ज्ञगवाननेज ते ते बाजुये देखता हता. तेज कारणथी जगतमां चारमुखवाला श्रीरीषज्ञदेव ज्ञगवानज ब्रह्माना नामथी प्रसिद्ध थया ठे. धनंजय कोशमां श्रीरीषज्ञदेवजीनुं नाम ब्रह्मा लखेल ठे.

ज्यारे श्रीरीषजदेव जगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं, त्यारे जरतराजा, ते वात श्रवण करी सकल परिवार संयुक्त समवसरणमां वंदना करवाने तेमज उपदेश श्रवण करवाने आव्या.

श्रीरीषजदेव जगवाननो उपदेश श्रवण करी जरत राजाना पांचसो पुत्र तथा सातसो पौत्र, अने ब्राह्मी तथा बीजी अनेक स्त्रीउए दीक्षा लीधी. मरुदेवीजी तो जगवानना प्रातिहार्यादि देखी तथा वाणी सांजली केवलज्ञान पामी मोक्ष पाम्या हतां. जरतना मोटा पुत्र रीषजसेन (पुंडरीक) हता, ते सोरठ देशमां शत्रुंजय तीर्थ उपर अनशन करी मोक्ष पाम्या. ते कारणथी शत्रुंजयनुं नाम पुंडरीक राखवामां आव्युं.

जरतना जे पांचसो पुत्रोये दीक्षा लीधी हती, तेउमां एकनुं नाम मरीचि हतुं. मरीचिने जैनदीक्षानुं पालवुं अति कठिन लागवाथी पोतानी आजीविका चलाववा वास्ते स्वमतिकल्पनाये तेमणे नवो उपाय उत्पन्न कर्यो. फरी गृहस्थावास अंगीकार करवानुं काम तेने हीनतावालुं लाग्युं,तेथी एक कुलिंग आरोपण कर्युं. एवा विचारथी के साधु तो मनदंड, वचनदंड अने कायदंडथी रहित छे, अने हुं तो ए त्रणे दंड संयुक्त छुं; ते कारणथी मारे त्रिदंड राखवो जोइयें. साधुउ तो द्रव्य अने जावथी मुंडित छे, तेथी लोच करे छे, अने हुं तो द्रव्यमुंडित छुं, तेथी मारे अस्त्राथी मस्तक मुंडाववुं जोइयें, अने शिखा पण राखवी जोइयें; वली साधु तो पांच महाव्रत पाले छे, परंतु मारे तो मात्र स्थूल जीवनी हिंसानो त्याग छे. साधु तो निःकंचनवाला छे, अर्थात् परिग्रह रहित छे, अने मारे तो पवित्रकादि राखवी जोइयें. साधु तो शीलथी सुगंधित छे, अने हुं तेवो नथी, तेथी मारे चंदन प्रमुखनी सुगंध लेवी ठीक छे. साधु तो मोह रहित छे, अने हुं तो मोह संयुक्त छुं, तेथी मोहाछादितने छत्री राखवी जोइयें. साधु तो उपानह रहित छे, मारे तो उपानह पेहेरवा जोइयें. साधु तो निर्मल छे, तेथी शुक्लांबरधारी छे, अने हुं तो क्रोध, मान, माया, लोज आ चारे कपायो संयुक्त छुं, तेथी मलीन होवाथी, कपायवस्त्र अर्थात् गेरु रंगवालां वस्त्रो मारे राखवा जोइयें. साधु तो सचित्त जलना त्यागी छे,अने हुं तो गलीने सचित्त जल पीश, अने स्नान पण करीश. एवीज रीते स्थूल मृषावाद आदिथी पण ते निवृत्त थयो. आ प्रमाणे मरीचिये पोता

नी आजीविकावास्ते स्वमतिपूर्वक लिंग बनाव्युं, अने तेज लिंग परिव्राजकोनुं रह्युं.

मरीचि जगवाननी साथेज विहार करतो हतो, तेनुं साधुउथी विपरीत लिंग देखी लोको पुठवा लाग्या, परंतु मरीचि साधुनो यथार्थ धर्म कहेतो हतो, अने पोतानो पाखंड वेष पूर्वोक्त रीतिये प्रगट करतो हतो. तेनीपासे उपदेश श्रवण करी जेउ दीक्षा लेवा चाहता हता, तेउने जगवानना साधु पासे दीक्षा लेवा मोकलतो हतो. एकदा मरीचि रोगग्रस्त थयो, अने विचार करतां पोते असंयति छे एवुं लागवाथी, तेमज साधुउ मारी वैयावच्च करशे नहीं, अने मारे तेउनी पासे वैयावच्च करावबी ते पण ठीक नहीं एवुं धारी, मारे एक चेलो वैयावच्चवास्ते करवो जोइये, एवो निश्चय कर्यो. आ वखते श्रीरीषजदेव जगवान निर्वाण पाम्या हता. ते समये एक कपिल नामनो राजानो पुत्र हतो, ते मरीचि पासे धर्म श्रवण करवा आव्यो. मरीचिये तेने यथार्थ साधुनो धर्म बताव्यो. लिंग, आचार सर्व बताव्या. कपिले पुछ्युं के तमारुं लिंग विलक्षण केम छे? मरीचिये कह्युं हुं साधुधर्म पालवा असमर्थ छुं, तेज कारणथी आ लिंग, निर्वाहवास्ते स्वकपोलकल्पित बनावेल छे. कपिले कह्युं के मने पण श्रीरीषजदेव जगवाननो धर्म रुचतो नथी. तमे कहो? तमारी पासे धर्म छे के नहीं? मरीचिये जाण्युं के आ जारेकर्मी जीव छे, अने मारोज शिष्य थवा योग्य छे, ते लोजथी मरीचिये कही दीधुं के त्यां पण धर्म छे, अने मारी पासे पण कांइक धर्म छे. ते सांजली कपिल मरीचिनो शिष्य थयो. आ कपिल मुनिनी उत्पत्ति छे. ते वखते मरीचि तेमज कपिलनी पासे कोइ पण पुस्तक नहोतुं. निःकेवल जे कांइ आचार मरीचिये कपिलने बताव्यो, तेज आचार कपिल करतो रह्यो. मरीचिये उत्सूत्र जापण करवाथी एक कोटाकोटी सागरोपम सुधी संसारमां जन्ममरणनी वृद्धि करी. मरीचि काल करी गयो. बाद कपिल ग्रंथार्थज्ञानशुन्य, मरीचिनी बतावेली रीति उपरज आचार पालतो हतो. कपिलने आसुरी नामनो शिष्य थयो. कपिले आसुरीने पोतानोज सर्व आचार बताव्यो. कपिले बीजा पण अनेक शिष्यो बनाव्या, तेउना प्रेममां रक्त थयो थको, मरीने ब्रह्मनामा पांचमा देवलोकमां देवता थयो. उत्पत्ति अनंतर अवधिज्ञानथी जोयुं के

दानादि शुं शुं अनुष्ठान में कर्यां ठे ? जेथी हुं देवता थयो, ज्ञानथी जोतां पोताना शिष्य आसुरीने ग्रंथार्थज्ञानशुन्य दीठो. विचार कर्यो के मारो शिष्य कंइ पण जाणतो नथी, तेने कांइक तत्त्वनो उपदेश करुं तो ठीक. एवो विचार करी कपिल देवता आकाशमां पंचवर्णना मंडलमां रही; पोताना शिष्यने तत्त्वज्ञाननो उपदेश करवा लाग्या. यथा– अव्यक्तथी व्यक्त प्रगट थाय ठे; ते अवसरे षष्ठितंत्रशास्त्र आसुरीए रच्युं. तेमां एवुं कथन कर्युं के प्रकृतिमांथी महान् थाय ठे, अने महान्थी अहंकार थाय ठे, अहंकारथी गण षोडश थाय ठे, गणषोडशथी, पंचतन्मात्रा थाय ठे, अने पंचतन्मात्राथी पंच महाभूत थाय ठे, इत्यादि स्वरूप आ ग्रंथमां पूर्वे सांख्यमां लखी आव्या ठीयें. तेउना संप्रदायमां नामीसंख नामा आचार्य थया, त्यारथी ते मतनुं नाम सांख्यमत प्रसिद्ध थयुं. वास्तविक रीते सर्व परिव्राजक संन्यासीउना लिंग आचारादि धर्मनुं मूल मरीचि थयो. ते सांख्यमतना तत्त्वो हाल पण भगवद्गीता तथा भागवतादि ग्रंथोमां अने सांख्यमतना शास्त्रोमां प्रचलित ठे. एक जैनमतविना बीजा सर्व मतोनुं मूल आ मतथीज समजवुं जोइए.

ज्यारे श्रीरीषभदेवजीने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. त्यारे भरतने पण तेज रोज आयुधशालामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. जेथी भरते भरत क्षेत्रना ठए खंडोमां पोतानुं राज्य स्थापी आज्ञा मनावी, तेज कारणथी तेनुं नाम भरतखंड प्रसिद्ध थयुं.

ज्यारे भरते पोताना नाना भाइउने आज्ञा मनाववा वास्ते दूत मोकल्या, त्यारे तेउए विचार कर्यो के राज्य तो अमने पिताश्री आपी गया ठे. तो पठी भरतनी आज्ञा अमारे शा वास्ते मानवी जोइये ! चालो पिताश्री पासे जइ सर्व वृत्तांत कहीयें. जो पिताजी कहेके तमे भरतनी आज्ञा मानो तो पठी अमे भरतनी आज्ञा मानीशुं, अने पिताजी कहेके तमे भरतनी साथे लडो, तो पठी अमे भरतनीसाथे लडशुं, एवो विचार करी अठाणु भाइउ कैलास पर्वत उपर श्रीरीषभदेव भगवान पासे गया. भगवान तेउना अंतःकरणना अभिप्राय जाणी तेउने उपदेश करता हुवा.. श्री भगवाने जे उपदेश कर्यो ते श्रीसूत्रकृतांग सूत्रना बीजा वेतालीय अध्ययनमां लखेल ठे. ते उपदेश श्रवण करी भगवानना अ-

छाए पुत्रोए दीक्षा लइ लीधी. सर्व तकरार तजी दीधी. तेम वनवाथी भरतनी अपकीर्त्ति थइ; तेथी भरत चक्रवर्त्ती पांचसो गाडां पकानना लावी समवसरणमां आव्या, अने कहेवा लाग्या के हुं मारा भाइउने भोजन करावीश, अने मारो अपराध क्षमा करावीश. श्री रीषभदेव भगवाने कह्युं के, एवो आहार साधुने कल्पे नहीं. ते सांभली भरत मनमां बहुज उदास थया. तेमणे पठी पुछ्युं के भगवन् आ आहार कोने खवरावुं? त्यारे इंद्रे कह्युं के तमाराथी जेउ गुणोमां अधिक होय तेउने आ भोजन आपो. भरते विचार कर्यो के माराथी गुणाधिक तो श्रावक छे, तेथी तेउने भोजन करावुं, एवो निश्चय करी सर्वे गुणवान श्रावकोने भोजन कराव्युं. वली ते श्रावकोने भरतजीए कह्युं के तमे सर्वे प्रतिदिन मारुं भोजन कर्या करो? तमारे खेती वाणिज्यादि कांइ पण काम करवुं नहिं. निःकेवल स्वाध्याय करवामां तत्पर रहो. भोजन करी मारा मेहेलोना दरवाजा पासे बेसी आप्रमाणे कहो "जीतो भवान् वर्द्धते भयं तस्मान्माहन माहनेति" ते श्रावको पण तेमज करता हवा. भरत राजा तो भोगविलासमां मग्न रहेता हता, परंतु ज्यारे श्रावकोना शब्दो सांभलवामां आवता हता त्यारे मनमां विचारता हता के हुं कोनाथी जीतायो छुं? विचार करतां निश्चय थयो के क्रोध, मान, माया अने लोभ, आ चारे कषायोए मने जीतेल छे. अने तेनाथीज भयनी वृद्धि छे, एवा निश्चयात्मक विचारथी भरतजीने भारे वैराग्य उत्पन्न थतो हतो. अनुक्रमे रसोइ जमनारा श्रावको बहु वधी गया, तेथी रसोइ करनाराउए आवीने भरत महाराजने विनंति करी के आ समुदायमां श्रावक कोण छे, अने कोण नथी? ते अमे जाणी शकता नथी. भरतजीए तेउने कह्युं के तमे पुछीने तेउने भोजन करावो. रसोइआउए जमनाराउने पुछतां, जेउ श्रावकना पांच अणुव्रत त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत धारण करनारा हता, तेउने श्रावक मानी भरत महाराज पासे तेउने लाववामां आवता हता. भरत महाराज तेउना शरीर उपर कांकणी रत्नथी त्रण त्रण रेखाना चिन्ह करता, अने दर छ महीने तेउनी परीक्षा करवामां आवती हती. ते सर्वे श्रावक ब्राह्मणना नामथी प्रसिद्ध थया; कारणके ज्यारे भरत महाराजना दरवाजा पासे तेउ माहन माहन शब्द वारंवार उच्चार करता हता,

त्यारे लोको तेउने माहन माहन कहेवा लाग्या. जैनमतना शास्त्रोमां प्राकृत भाषामां हाल पण ब्राह्मणोने माहन शब्दथी लखेल छे; संस्कृत ब्राह्मण शब्द छे, ते प्राकृत व्याकरणमां वंभण तेमज माहणना स्वरूपथी सिद्ध थाय छे, श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां ब्राह्मणोना नाम "वुड्ढ सावया" अर्थात् वडा श्रावक लखेल छे. ए प्रमाणे ब्राह्मणोनी उत्पत्ति छे, ते ब्राह्मणो पोताना पुत्रोने साधुउने आपता हता, अने जेउ दीक्षा लेता न हता, तेउ व्रतधारी श्रावक थता हता; आ रीति भरतना राज्यमां हती.

भरत महाराजना पुत्र आदित्ययशा थया, अर्थात् सूर्ययशा थया, जेना वंशजो भरतक्षेत्रमां सूर्यवंशी कहेवाय छे. बाहुबलीना मोटा पुत्र चंद्रयश थया, तेना वंशजो चंद्रवंशी कहेवाय छे. श्रीरीषभदेवजीना कुरुवंशी कहेवाय छे, जेउमां कौरव पांडव थयेला छे.

ज्यारे सूर्ययशा सिंहासन उपर बेठा, त्यारे तेनी पासे काकणी रत्न नहोतुं. काकणीरत्न चक्रवर्ती शिवाय बीजा कोइ पासे होतुं नथी. ते कारणथी सूर्ययशा राजाये ब्राह्मण श्रावकोना गलामां सुवर्णमय यज्ञोपवीत दाखल करावी, जे भाषामां जनोइ कहेवाय छे. भोजन प्रमुख सर्वे, भरत महाराजनी जेम तेउने आपता रह्या. सूर्ययशना पुत्र महायश गादी उपर बेठा, तेणे रूपानी यज्ञोपवीत बनावी आपी. बाद तेउना वंशजो रेशमी यज्ञोपवीत आपता हवा. छेवटे सादा सूतरनी बनाववामां आवी. आ प्रमाणे यज्ञोपवीतनी उत्पत्ति छे.

भरतमहाराजनी आठ पाट सुधी तो ब्राह्मणोनी भक्ति भरतजीनी पेठे ज थती रही. बाद प्रजा पण ब्राह्मणोने भोजन कराववा लागी. सर्व स्थले ब्राह्मणो पूजनीक गणावा लाग्या. ए प्रमाणे आठमा तीर्थंकर श्री चंद्रप्रभ स्वामिना वखत सुधी सर्व ब्राह्मणो व्रतधारी जैनधर्मी श्रावको रह्या. श्रीचंद्रप्रभ भगवाननी पछी केटलोएक काल व्यतीत थया बाद आ भरतखंडमां जैनमत अर्थात् चतुर्विध संघ तथा सर्व शास्त्रो विछेद थइ गयां, ते वखते ते ब्राह्मणाभासोने लोको पुछवा लाग्या के अमने धर्मनुं स्वरूप बतावो. ते वखते ब्राह्मणोये स्वमतिकल्पनाथी जेमां पोतानो लाभ दीठो तेवो धर्म बताव्यो. अनेक ग्रंथो पण ते प्रमाणे बनाववामां आव्या.

ज्यारे नवमा श्रीसुविधिनाथ (पुष्पदंत) अरिहंत थया, त्यारे फरी

जैनधर्म प्रगट थयो. ते भगवानना धर्म केटलाएक ब्राह्मणाभासोये न अंगीकार कर्यो. स्वकपोलकल्पित मतनोज कदाग्रह राख्यो. साधुओनो द्वेष करवा लाग्या. चारे वेदोनां नामो बदलावी नाख्यां, अने ते वेदोमां मतलब पण कांइनी कांइ लखी दीधी.

हवे चारे वेदोनी उत्पत्ति लखीये छीये. ज्यारे भरत राजाये ब्राह्मणोनी पूजा करी, त्यारे बीजा लोको पण ब्राह्मणोने अनेक तरेहनां दान आपवा लाग्या. ते प्रसंगे श्रीभरतचक्रवर्तीये श्रीरीषभदेव भगवानना उपदेश अनुसार ब्राह्मणोने निरंतर स्वाध्याय करवावास्ते श्रीआदीश्वर (रीषभदेव) भगवाननी स्तुति तथा श्रावकधर्मस्वरूपगर्भित चार आर्यवेदनी रचना करी. तेना नाम. १ संसार दर्शनवेद २ संस्थापन परामर्शनवेद, ३ तत्त्वावबोध वेद, ४ विद्याप्रबोध वेद. चारे वेदोमां सर्वनयसंयुक्त वस्तु स्वरूप कथन ते ब्राह्मणोने शिखववामां आव्युं. पुर्वोक्त चार वेद तथा ब्राह्मणो आठमा तीर्थंकर सुधी यथार्थ प्रवर्तता रह्या. आठमा तीर्थंकरनुं तीर्थ व्यवछेद थतां ब्राह्मणोये भ्रष्ट थइ धनना लोभथी ते वेदोमां जीवहिंसा दाखल करी. चारे वेद उलट पालट करी नांख्या. जैनधर्मनुं नाम चारे वेदमांथी काढी नाख्युं, एटलुंज नहीं पण अन्योक्तिथी "दैत्य दस्यु वेदबाह्य" इत्यादि नामोथी साधुओनी निंदागर्भित १ रुग्, २ यजुर, ३ साम, ४ अथर्व, आ चार नामना वेद कल्पवामां आव्या. जे ब्राह्मणोये तीर्थंकरोनो उपदेश अंगीकार कर्यो, तेओये पूर्व वेदोना मंत्रोनो त्याग कर्यो नहीं. ते मंत्रो आजसुधी दक्षिणमां कर्णाटकदेशमां जैन ब्राह्मणोने कंठस्थ छे. ते प्रमाणे अमे देख्युं छे तथा सांभळ्युं छे. अमारी पासे पण प्राचीन वेदोना केटलाएक मंत्रोछे. यतः ॥ सिरि भरह चक्कवट्टी, आयरिय वेयाणविस्सुउप्पत्ती ॥ माहणपढणत्थमिणं, कहियं सुहझाण विवहारं ॥ १ ॥ जीणतिछे वुछिन्ने, मिछत्ते माहणेहिंतेठविया ॥ अस्संज्याण पूआ, अप्पाणं काहिया तेहिं ॥ २ ॥ इत्यादि. हवे वेदोनीरचना हिंसा संयुक्त, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद अनेपर्वत प्रमुखोये केवी रीते रची तेनुं पण कांइक स्वरूप लखीये छीये.

बृहदारण्यक उपनिषद्नी भाष्यमां लख्युं छे के, यज्ञोनुं कथन करनार यज्ञवल्क्य तेना पुत्र याज्ञवल्क्य छे. ते कहेवाथी एम प्रतीत थाय छे के

यज्ञोनी रीति प्रायः याज्ञवल्क्यथीज चाली छे. ब्राह्मण लोकोये शास्त्रोमां लख्युं छे के याज्ञवल्क्ये पूर्वली ब्रह्मविद्या वमीने नवीन ब्रह्मविद्या सूर्यनी पासे शिखी, प्रचलित करी; तेथी पण एज अनुमान थाय छे के, याज्ञवल्क्येज प्राचीन वेद तजी दीधा अने नवा वेद बनाव्या.

श्री त्रेशठ शिलाका पुरुष चरित्र ग्रंथना आठमा पर्वना बीजा सर्गमां लख्युं छे के काशपुरीमां बे संन्यासणीउ रहेती हती. एकनुं नाम सुलसा अने बीजीनुं नाम सुनद्रा हतुं. बंने वेद, वेदांगोनी जाणकार हती. बंने बेहेनोए बहु वादीउने वादमां जीत्या हता. ते अवसरे याज्ञवल्क्य परिव्राजक तेउनी साथे वाद करवाने आव्या. अरस परस एवी प्रतिज्ञा करी के, जे हारी जाय ते जीतनारनी सेवा करे. याज्ञवल्क्ये सुलसाने वादमां जीती अने पोतानी सेवा करनारी बनावी. सुलसा पण रातदिवस याज्ञवल्क्यनी सेवा करवा लागी, याज्ञवल्क्य अने सुलसा बंने यौवनवंत हता. तेथी कामातुर थइ जवाथी बंने नोगविलासमां लागी गया. निदान अग्नि अने घी साथे होय तो धी उंगळ्या विना रहेतुं नथी. कामक्रीडामां मग्न थइ जवाथी काशपुरीनी पासेनी एक कुटीमां बंने वास करता हता. याज्ञवल्क्यथी सुलसाने पुत्र थयो. लोकोना उपहासना नयथी ते पुत्रने पिपलाना वृक्षनीचे मुकी बंने जणाउ दूर नासी गया. आ वृत्तांत सुलसानी बहेन सुनद्रना जाणवामां आव्युं. सुनद्रा बालकनीपासे आवी. बालकने देखतां ते स्वयमेव पीपलानुं फल मुखमां पडेलुं चवोलतुं हतुं. सुनद्राये बालकने लइ पोताना स्थानमां आण्युं. तेनुं नाम पिप्पलाद राख्युं. यत्नाथी पालण कर्युं, वेदादि शास्त्रो नणाव्यां, पिप्पलाद बहु बुद्धिमान थयो. बहु वादीउने जीती तेउनां अनिमाननो तेणे नाश कर्यो. पिप्पलादनी साथे अनुक्रमे याज्ञवल्क्य तथा सुलसा पण वाद करवा आव्या, पिप्पलादे बंनेने वादमां जीत्या. वाद समुद्रा मासीना कहेवाथी तेना जाणवामां आव्यु के, ते बंने तेना माता पिता छे. मने जन्म आपी निर्दयताथी वृक्षनीचे मुकी बंने नासी गया हता, ए वृत्तांत पण तेना जाणवामां आव्यो. अत्यंत क्रोधयुक्त थइ पिप्पलादे सम्यक् रीतिए याज्ञवल्क्य तथा सुलसा सन्मुख मातृमेध तथा पितृमेध यज्ञोने सिद्ध करी, पितृमेध यज्ञमां याज्ञवल्क्यनो अने मातृमेध यज्ञमां सुलसानो होम कर्यो.

पिप्पलाद मीमांसक मतनो मुख्य आचार्य थयो. तेनो वातली नामा शिष्य थयो, त्यारथी जीवहिंसा संयुक्त यज्ञ प्रचलित थया.

याज्ञवल्क्ये नवा वेदो बनाव्या छे, तेमां कांइ पण शंका नथी, कारण के वेदमां लख्युं छे के "याज्ञल्क्येती होवाच" अर्थात् याज्ञवल्क्य आ प्रमाणे कहेता हवा. वेदमां जे शाखाउ छे ते वेद कर्त्ता ऋषियोना अधिकारनी छे; तेथी आवश्यक सूत्रमां जे लख्युं छे के जीवहिंसा संयुक्त जे वेद छे, ते याज्ञवल्क्य अने सुलसा आदिये बनाव्या छे, ते वात सत्य छे, कारण के केटलीएक उपनिषदोमां पिप्पलादनुं नाम छे, अने केटलाएक स्थले बीजा ऋषियोनां पण नामो छे. जमदग्नि कश्यप तो वेदोमां खास नामथी लखेल छे. हवे विचारो के वेदो नवा बनाववामां आव्या तेमां शुं शंका रहे छे ?

वली लंकानो अधिपति राजा रावण, ज्यारे दिग्विजय करवा वास्ते देशोमां चतुरंगी सेना साथे बीजा राजाउने पोतानी आज्ञा मनाववा फरतो हतो, ते अवसरे नारदमुनि लाकडी प्रमुखना मारथी कुटाया होवाथी पोकार करता रावणनी पासे आव्या. रावणे नारदजीने पुछ्युं के तमने कोणे मार मार्यो, त्यारे नारदजीये कह्युं के, राजपुर नगरमां मरुत नामनो राजा छे, ते मिथ्यादृष्टि छे, अने ब्राह्मणाभासोना उपदेशथी यज्ञ करवा लाग्यो, ते समये शिकारीउनी जेम होमने वास्ते ते ब्राह्मणाभासोने, अरराट शब्दो करता पशुउने यज्ञोमां होमवावास्ते मारतां में दीठा. आकाशथी उतरी मरुत राजा ब्राह्मणोनी साथे बेठो हतो, त्यां आवी, मरुतराजाने में कह्युं के आ तमें सर्वे शुं काम करवा लागी रह्या छो? मरुतराजाए कह्युं के ब्राह्मणोना उपदेशथी देवताउनी तृप्तिवास्ते तेमज स्वर्ग प्राप्तिवास्ते पशुउना बलिदानथी आ यज्ञ करवो शरु कर्यो छे, आ प्रमाणे यज्ञ करवो ते महा धर्म छे. पछी में कह्युं के हे राजा ! चारे वेदोमां जे प्रमाणे यज्ञ करवानुं कथन करेल छे, ते यज्ञ करवानी विधि तमने कहुं छुं ते सांभलो? आत्मा यज्ञनो यष्टा अर्थात् करनार छे, तप रूप अग्नि छे, ज्ञानरूप घी छे, कर्मरूप इंधन छे, क्रोध, मान, माया, लोभादि पशुउ छे, सत्यवचनरूप यूप अर्थात् यज्ञस्थंभ छे, सर्व जीवोने अभयदानरूप दक्षिणा छे, अने ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयीरूप त्रिवेदी

छे. आ प्रमाणे यज्ञ वेदमां कथन करेल छे, एवो यज्ञ जो योगाभ्यास संयुक्त करवामां आवे तो ते करनारो मुक्ति प्राप्त करे छे; परंतु राक्षसरूप थइ बकराप्रमुखने मारी यज्ञ करवामां आवे तो, यज्ञ करनार, करावनार, मरीने घोर नर्कमां चिरकाल महादुःख भोगवे छे. हे राजा! तुं उत्तम वंशमां उत्पन्न थयेल छो, बुद्धिमान् तेमज धनवान् छो, तेथी आ व्याधोचित पापथी निवर्त. जो प्राणीवधथीज जीवोने स्वर्ग प्राप्त थतुं होत तो अनायासे थोडा वखतमांज आ जीवलोक खाली थइ जशे. आ मारा वचनो सांभली यज्ञनी अग्निनी जेम प्रचंड थयेला ब्राह्मणो लाकडी, सोटा, ढीका, पाटु मने मारवा लाग्या, तेथी जेम नदीना पूरथी भय पामेलो माणस उंची जमीन उपर चडी जाय छे, तेम दोडतो हुं तमारीपासे आव्यो हुं. हे रावण महाराज! निरपराधी पशुओ मार्या जाय छे. तेओनुं रक्षण करवामां तमे समर्थ छो. जेम तमारां शरणथी हुं निर्भय थुं तेम पशुओने शरण आपी निर्भय करो. ते सांभली रावण विमानथी उतरी मरुत राजानी पासे आव्या. मरुत राजाये रावणनी भक्ति तथा आदर सन्मान उत्तम प्रकारे कर्या. रावणे कह्युं आ तमे शुं करो छो? यज्ञमां पशुवध करी नर्कनी महा माठी गति उपार्जन करवानुं तमोए आरंभ्युं छे. धर्म तो तीर्थंकर महाराजाये अहिंसारूप कथन करेलो छे, अने तेथीज जगत्‌नुं हित थाय छे; ज्यारें पशुओने मारवामां तमे धर्म समज्या, त्यारे अधर्म, धर्मनी तमने समजणज क्यां छरी? माटे आ काम तमे तजी द्यो. पछी सेहेज कोपमां आवी रावणे कह्युं के जो यज्ञ करवानुं काम तजी नही द्यो तो तेनुं फल आ लोकमां तो तमने हमणांज आपीश, अने परलोकमां तमारे नर्कना मेमान थवुं पडशे. आवा भयात्मक वचन सांभली मरुत राजाये यज्ञ करवो तजी दीधो, कारण के रावणनी आज्ञा ते वखते एवी भयंकर हती के तेनुं कोइ उल्लंघन करी शकतुं नही. आ कथाथी एम पण सिद्ध थाय छे के, ब्राह्मण लोको जे एम कहे छे के, पूर्वे राक्षसो यज्ञविध्वंस करता हता, ते कोण जाणे रावणादि जबरदस्त जैनधर्मी राजाओये पशुवधरूप यज्ञो करता छोडावी दीधा होय; अने तेज कालथी ब्राह्मणोये पुराणादि शास्त्रोमां ते जबरदस्त जैनराजाओने राक्षसो लखेला छे. वली एम पण सांभलवामां आव्युं छे के नारदजीये मायाना

वशथी जैनमत धारण करी वेदोनी निंदा करी होय तोपण शुं जाणीये? आ कथानो आज तात्पर्य लोकोये लखेलो छे.

रावणे नारदजीने पुछ्युं के आवो पापकारी पशुवधात्मक यज्ञ क्यांथी प्रचलित थयो? नारदजीये कह्युं के शुक्तिमती नदीना किनारा उपर शुक्तिमती नामे नगरी छे. वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामि हरिवंश तीर्थंकरनी उलादमां केटलायेक राजा व्यतीत थइ गया पछी अभिचंद्र नामा राजा थयो. तेनो वसु नामनो पुत्र, महाबुद्धिवान,सत्यवादी जगत्मां प्रसिद्ध थयो. तेज नगरीमां क्षीरकदंबक नामना उपाध्याय रहेता हता. तेने पर्वत नामनो पुत्र हतो. ते क्षीरकदंबक उपाध्यायनी पासे वसुराजा, उपाध्यायजीनो पुत्र पर्वत अने हुं नारद त्रणे जणा अभ्यास करता हता. एकदा अमो त्रणे शिष्यो अभ्यासना श्रमथी रात्रिना वेहेला सुइ गया हता, उपाध्यायजी ते वखते जागता हता. अमो उपरना भागमां सुता हता, ते वखते बे ज्ञानवान् चारण साधु आकाशमां परस्पर वातो करता चाल्या जता हता, तेउ बोल्या के आ उपाध्यायजीना बे शिष्यो नर्कमां जशे, अने एक स्वर्गमां जशे. मुनियोनुं आ प्रमाणे बोलवुं सांभली उपाध्यायजी विचार करवा लाग्या के ज्यारे मारा शिखवेला शिष्यो नर्कमां जाय, त्यारे तेना करतां वधारे दुःखजनक बीजु शुं? परंतु त्रणमां नर्कमां कोण जशे अने स्वर्गमां कोण जशे? ते वातनो निर्णय करवा वास्ते त्रणेने एक साथे बोलाव्या. पछी गुरुये अमने दरेकने एकेक लोटनो कुकडो आप्यो, अने कह्युं के कुकडाने एवी जगाये जइ मारो के ज्यां कोइ देखतुं न होय. पछी वसु अने पर्वत बंने जणा तो शून्य जगाउमां जइ दरेक पोतपोताना कुकडाने मारी लाव्या, अने हुंतो ते लोटना कुकडाने लइ नगरीनी वहार वहुज दूर चाल्यो गयो. ज्यां कोइ नहोतुं त्यां जइ उभो रह्यो. चारे तरफ जोवा लाग्यो, अने मनमां आ प्रमाणे तर्क थवा लाग्या. गुरु महाराजे तो आज्ञा करी छे के, हे वत्स! आ कुकडाने तुं त्यां मारजे, के ज्यां कोइ तने देखतुं न होय! प्रथम तो आ कुकडाने हुंज देखुं छुं, वली कुकडो मने देखे छे, खेचर देखे छे, लोकपाल देखे छे; ज्ञानी देखे छे, एवुं तो जगत्मां कोइ पण स्थान नथी, ज्यां कोइ पण न देखतुं होय. ते कारणथी गुरुनो अभिप्राय

एज ठे के, आ कुकडानो वध न करवो, कारण के गुरु पूज्य तो निरंतर महा दयालु ठे, अने हिंसाथी पराङ्मुख ठे. मात्र अमारी परीक्षावास्ते आ आदेश आप्यो ठे, तेथी हुं तो कुकडाने मार्याविनाज कुकडाने लइ गुरुपासे आव्यो, अने कुकडाने नही मारवाना सघला विचार गुरुजीने कही दीधा. गुरुराजे मनमां निश्चय कर्यो के, आ नारद विवेकवालो ठे, तेथी स्वर्गमां जशे, गुरुजीये मने पोतानी ठाती साथे लगावी, बहु सारुं थयुं उत्तम उत्तम! एम कह्युं; तेटलामां वसु अने पर्वत पण गुरु पासे आव्या, अने गुरुने कह्युं के अमो कुकडाने एवी जगाये जइ मारी आव्या ठीये के ज्यां कोइ देखतुं न होतुं. गुरुये कह्युं के तमे तो देखता हता, तथा खेचरो पण देखता हता. हे पापिष्टो! तमे कुकडा केम मार्या? एम कही गुरुजीये विचार कर्यो के वसु अने पर्वतने जणाववानी मारी मेहेनत वृथा गइ. परंतु हुं शुं करुं! पाणी जेवा पात्रमां जाय ठे, तेवुंज वनी जाय ठे. विद्यानो पण तेवोज स्वजाव ठे. ज्यारे प्राणथी प्यारो पर्वत पुत्र अने पुत्रथी प्यारो वसु वंने नर्कमां जाय, तो हवे मारे घरमां रहेवानुं शुं प्रयोजन ठे? एवा निर्वेद जावथी क्षीरकदंबक उपाध्यायजीये दीक्षा ग्रहण करी. साधु थया. तेनी पदवी पर्वते धारण करी, कारण के व्याख्यान करवामां पर्वत वहुज विचक्षण हतो. हुं (नारद) गुरु प्रसादथी सर्व शास्त्रोनो अज्यास करी मारे स्थानके आव्यो. वली अजिचंद्र राजाये संयम लेवाथी वसु तेना पितानी राज्यगादी उपर वेठो. वसु राजा जगत्मां सत्यवादी प्रसिद्ध थयो, अर्थात् वसुराजा कदापि जूठुं वोलता नथी, ए प्रमाणे लोकोमां तेनी प्रशंसा प्रसरी गइ. वसुराजाए पण पोतानी प्रशंसा निरंतर थया करे ते सारुं सत्य बोलवानुं दृढ व्रत अंगीकार कर्युं. दरमीआन वसुराजाने एक स्फटिक सिंहासन प्रछन्न रीते एवुं मली गयुं के, सूर्यना प्रकाशमां ज्यारे वसुराजा ते सिंहासन उपर वेसतो त्यारे, ते सिंहासन लोकोना देखवामां विलकुल आवतुं नहोतुं, तेथी लोकोमां एवी प्रसीद्धि थइ के,सत्यना प्रजावथी वसुराजानुं सिंहासन देवताउ आकाशमां अधर राखे ठे. तेनी आवी कीर्त्तिथी बीजा सर्वे राजाउ डरीने तेनी आज्ञा मानता हता, कारण के साची अथवा जूठी गमे ते रीते थयेली प्रसीद्धि पुरुषने जयकारी थाय ठे.

एकदा प्रस्तावे हुं (नारद) सूक्तिमती नगरीमां गयो. पर्वतने घेर जतां ते पोताना शिष्योने रूग्वेद जणावतो हतो, अने तेनो अर्थ पण शिखवतो हतो. प्रसंगे एवी श्रुति रूग्वेदमां आवी के " अजैर्यष्टव्यमिति " पर्वते आ श्रुतिनो एवो अर्थ कर्यो के अज अर्थात् बकराथी होम करवो, सारांश के बकरांने मारी तेना मांसनो होम यज्ञमां करवो. ते सांजली में पर्वतने कह्युं हे जाइ! आ प्रमाणे व्याख्या कइ ज्रांतिथी करे ठे? गुरुश्रीक्षीरकदंबकजीए आ श्रुतिनी आवी व्याख्या करी नथी, गुरूजीए तो आ श्रुतिमां अज शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनुं जुनुं धान्य करेलो ठे; " न जायंत इत्यजा " जे वाववाथी न उत्पन्न थाय ते अजा, आवो अर्थ श्रीगुरुजीए तमने तथा मने शिखाव्यो हतो, ते अर्थ तमे केम जूली जाउ ठो? पर्वते कह्युं के तमे जे अर्थ करोठो ते अर्थ गुरुजीए कर्यो नथी, परंतु हुं जे अर्थ करूं छुं, तेम अर्थ गुरुजीए कर्यो हतो, कारण के निघंटमां पण अजा नाम बकरीनुंज लखेलुं ठे. पठी में (नारदे) पर्वतने कह्युं के शब्दोना अर्थ बे प्रकारे थाय ठे, एक मुख्यार्थ, बीजो गौणार्थ. आ स्थले श्री गुरुए गौणार्थ कर्यो हतो. गुरु धर्मोपदेष्टानुं वचन अने श्रुतिनो यथार्थ अर्थ, बंने अन्यथा करी हे मित्र! तुं महापाप उपार्जन करे ठे. फरी पर्वते कह्युं के अज शब्दनो अर्थ गुरुजीए मेष करेलो ठे, निघंटमां पण एज अर्थ ठे, तेने उल्लंघन करी तुं अधर्म उपार्जन करे ठे; वली आ बाबत निर्णय करवो होय तो वसुराजा जे आपणा सहाध्यायी ठे, तेने मध्यस्थ राखी आ श्रुतिना अर्थनो निर्णय करीए, परंतु सरत एटली के जेनो अर्थ जूठो ठरे तेनी जीह्वा ठेदवी. आ प्रमाणे प्रतिज्ञा ठरी. में पण पर्वतनी सरत मान्य करी, एवा विचारथी के साचने शुं आंच ठे? पर्वतनी माताए ते वखते पर्वतने गुप्त रीते कह्युं के हे पुत्र! तुं आवो जूठो कदाग्रह ठोडीदे, कारण के में पण ते श्रुतिनो अर्थ त्रण वर्षनुं धान्यज सांजल्यो ठे, माटे तें जे जीह्वा ठेदनी प्रतिज्ञा करी ते वास्तविक कर्युं नथी. विचार कर्या विना जे काम करवामां आवे ठे, तेथी आपत्तिमां आवी पडवानो प्रसंग आवे ठे. ते सांजली पर्वते कह्युं के हे माताजी! जे में प्रतिज्ञा करी ठे ते कोइ पण रीते हुं फेरवी शकुं तेम नथी. पठी पर्वतनी माता पोताना पुत्रनुं दुःख

जाणी, दुःखी थवाथी वसु राजानी पासे गइ. पुत्रना जीवितव्य वास्ते कोण एवो छे के जे उपाय न करे ? वसुराजाए पोताना गुरुनी पत्नीने आवतां देखी अपार सन्मान आप्युं. सिंहासन उपरथी उन्नो थयो, अने कहेवा लाग्यो के हे माता ! आजे में मारा गुरुराजना दर्शन कर्यां. मारा सरखुं जे काम होय ते मने फरमावो ? गुरुपत्नीए कह्युं के हे वसुराज ! मने पुत्रनी भिक्षा आपो ? पुत्र विना मारे धन धान्यादि शुं कामना छे ? वसुराजा ते सांभली कहेवा लाग्या के हे माता ! पर्वत तो मारे पूजवा योग्य तथा पालवा योग्य छे, कारण के गुरुनी जेम गुरुना पुत्रनी साथे पण वर्तवुं जोइए, एम श्रुति वाक्य छे; तो हवे कोणे क्रोधमां आवी कालने पत्रथी आमंत्रण कर्युं छे ? जे मारा भाइ पर्वतने मारवा चाहे छे ? वास्ते हे माता ! तमे सर्व वृत्तांत मने कहो ? गुरुपत्नीए सर्व वृत्तांत प्रतिज्ञा लीधी त्यां सुधीनो कही बताव्यो; छेवटे कह्युं के जो तमारा भाइनी रक्षा करवी होय तो अज शब्दनो मेष अर्थात् बकरो या बकरी अर्थ करवो, कारण के महात्मा पुरुषो परोपकार वास्ते पोताना प्राण पण अर्पण करे छे, अने आपने तो मात्र वचनथी परोपकार करवानो छे. वसुराजाए कह्युं माताजी ! हुं मिथ्या वचन केवी रीते बोली शकुं ? सत्य बोलनारा पुरुषो पोताना प्राण जाय छे तो पण असत्य बोलता नथी, तो गुरुनुं वचन अन्यथा करवुं, अने जूठी साक्षी पुरवी, तेने वास्ते तो शुंज कहेवुं ? गुरुपत्नीए कह्युं के क्यांतो गुरुना पुत्रनो जान बचशे, क्यांतो तमारा सत्य व्रतनो आग्रह रहेशे, वली हुं पण तने ते वखते मारा प्राणनी हत्या आपीश. गुरुपत्नीना आ प्रमाणेना वचनो सांभली लाचार थइ तेणीनुं वचन अंगीकार कर्युं. गुरुपत्नी खुशी थइ पोताने घेर आवी. तत्काल नारद तथा पर्वत बंने वसुराजानी सभामां आव्या. ते प्रसंगे मोटा मोटा विद्वान् पुरुषो सभामां आवी पहोंच्या, अने वसुराजा स्फटिक सिंहासन उपर बेसी सभापति थइ पुछवा लाग्यो; पर्वत तथा नारदे पोतानो आद्यंत सर्व वृत्तांत वसुराजाने संभलाव्यो, छेवटे कह्युं के हे राजन् ! गुरुजीए आ बंने अर्थमांथी कयो अर्थ कह्यो छे ते तमे सत्य कही द्यो ? सभामां विराजेला वृद्ध ब्राह्मणोए पण कह्युं के हे राजन् तमे सत्य सत्य जे होय तेज कही देजो,

कारण के सत्यथीज मेघ वरसे छे, अने सत्यथीज देव सिद्ध थाय छे, वली सत्यना प्रभावथीज आ लोक स्थिति करी रह्यो छे, अने तमे पण पृथ्वीमां सत्यवादी सूर्यनी जेम प्रकाश करो छो, तेथी सत्य कहेवुं, तेज तमने उचित छे. हवे ते करतां विशेष अमारे तमने कांइ कहेवानुं नथी. आ प्रमाणे वृद्ध पुरुषोना वचनो सांभलतां छतां पण वसुराजाए पोतानी सत्य बोलवानी प्रतिज्ञाने जलांजलि दइ "अजान्मेषान् गुरु व्याख्या दिति" अर्थात् अजनो अर्थ गुरुए मेष (बकरो) कहेल छे. ए प्रमाणे वसुराजाए बोलतांज असत्यना प्रभावथी व्यंतर देवताए वसुराजाना सिंहासनने तोडी वसुराजाने पृथ्वी उपर पछाड्यो, तेथी मरण पामी वसुराजा उग्र पापथी सातमी नरके गयो. वसुराजाना सिंहासन उपर, ते पछी अनुक्रमे वसुराजाना आठ पुत्रो १ पृथुवसु २ चित्रवसु, ३ वासव, ४ शक्र, ५ विभावसु, ६ विश्वावसु, ७ सूर, ८ महासूर, ए प्रमाणे उत्तरोत्तर गादी उपर वेठा. ते आठे पुत्रोने व्यंतर देवताओए मारी नांख्या. पछी सुवसु नामनो नवमो पुत्र त्यांथी भागी नागपुरमां चाल्यो गयो, अने दसमो बृहद्ध्वज नामनो पुत्र भागीने मथुरामां राज्य करवा लाग्यो. आ बृहद्ध्वज राजाना वंशमां यदु नामा बहु प्रसिद्ध राजा थयो, त्यारथी हरिवंश नाम बदलाइ यदुवंश प्रसिद्ध थयुं.

यदुराजाने सूर नामा पुत्र थयो. सूर राजाने बे पुत्रो थया. मोटानुं नाम शौरी अने नानानुं नाम सुवीर हतुं. शौरीने पितानी गादी मली, परंतु पोताना नाना भाइ सुवीरने ते गादी आपी पोते कुशावर्त्त देशमां जइ पोताना नामनुं शौरीपुर नगर वसावी, राज्यधानीनुं नगर बनाव्युं. शौरीने अंधक विष्णु प्रमुख पुत्रो थया, अने अंधक विष्णुने दस पुत्रो थया. तेना नाम. १ समुद्रविजय. २ अक्षोभ्य, ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान्, ६ अचल, ७ धरण, ८ पूर्ण, ९ अभिचंद्र, १० वसुदेव. तेमां समुद्रविजयना मोटापुत्र अरिष्टनेमि, जैनमतना बावीशमा तीर्थंकर थया, अने वसुदेवना पुत्र प्रतापी कृष्ण वासुदेव तथा बलभद्रजी थया. सुवीरना पुत्र भोजवृष्णि अने भोजवृष्णिना पुत्र उग्रसेन थया, उग्रसेनना पुत्र कंस थयो. वसुराजानो बीजो पुत्र सुवसु नासीने नागपुर गयो.

तेने वृहद्रथ नामनो पुत्र थयो. तेणे राजगृहमां राज्य कर्युं. तेनो पुत्र जरासिंधु थयो. आ वृत्तांत में अहींआ प्रसंगथी लखेल छे.

हवे अहींआ नगरना लोको तथा पंडितोये पर्वतनी बहुज निंदा करी. पर्वतने कह्युं के तुं जूठो छे, कारण के तारा साक्षी वसुने जूठो जाणी देवताये मारी नाख्यो, तेथी तारा करतां विशेष पापी कोण छे? ए प्रमाणे कही लोकोये पर्वतने नगर बहार काढी मुक्यो. बाद महाकाल नामनो असुर पर्वतनो सहायक थयो.

हवे रावणे नारदने पुछ्युं के महाकाल असुर कोण हतो? नारदे कह्युं के आ देशमां चरणायुगल नामनुं नगर छे, तेनो अयोधन नामनो राजा हतो, तेने दिति नामा भार्या हती. तेउने सुलसा नामा बहु रूपवान् पुत्री थइ. सुलसानो स्वयंवर पिताये कर्यो. स्वयंवरमां बीजा अनेक राजाउने बोलाव्या. आवेला सर्व राजाउमां सगर राजा प्रबल सत्तावालो हतो. सगर राजानी मंदोदरी नामनी हजुरी दासी हती. ते सगरनी आज्ञाथी प्रतिदिन अयोधन राजाना आवासमां जवा लागी. एक दिवस दिति पोताना बगीचाना कदलीगृहमां गइ, ते वखतें सुलसानी साथे मंदोदरी पण त्यां प्रछन्नपणे आवी छुपी रीते उभी रही. मंदोदरी गुप्तपणे सुलसा अने दिति वच्चे थती वात सांभलवा लागी. दितिये कह्युं सुलसा! मारा मनमां तारा स्वयंवर माटे बहुज चिंता छे. ते चिंता दूर करवी ते तारे आधीन छे, वास्ते जरा धिरज राखी मारी वात सांभल? श्रीरीषभदेव स्वामिने भरत अने बाहुबलि एवा बे पुत्रो थया. भरतनो पुत्र सूर्ययश, अने बाहुबलिने चंद्रयश नामनो पुत्र थयो. जेउथी सूर्यवंश अने चंद्रवंश चालेला छे. चंद्रवंशमां मारो भाइ तृणबिंदु नामा थयो, अने सूर्यवंशमां तारा पिता (अयोधन) थया. तारा पितानी बेहेन सत्ययशा तृणबिंदुनी भार्या थइ. तेने मधुपिंगल नामनो मारो भत्रीजो छे. हे सुंदरी! हुं तने ते मधुपिंगलने आपवा चाहुं छुं. अने तुं तो कोण जाणे कोने वरीश? आ शल्य मारा अंतःकरणमां छे, वास्ते तारे स्वयंवरमां सर्व राजाउने तजी मारा भत्रीजा मधुपिंगलने वरवो. सुलसाये मातानुं कहेवुं स्विकार्युं. गुप्त रहेली मंदोदरीये सर्व वृत्तांत सांभली सगर राजाने कह्यो. सगर राजाये पोताना विश्वभूति नामना पुरोहितने

श्रादेश कर्यो के एवी युक्ति करो के जेथी सुलसा मने स्वयंवरमां वरे. विश्वजूति मोटो कवि हतो. तेणे तत्काल राजाना लक्षणोनी संहिता बनावी. ते संहितामां एवी रचना करी के ते सांजलतांज देखनाराउं सगर राजाने शुज लक्षणवालो जाणे, अने मधुपिंगलने लक्षण हीन जाणे. ते पुस्तक पेटीमां बंध करी राखी मुक्युं. ज्यारे सर्व राजाउं स्वयंवरमां एकठा थया, त्यारे सगरनी आज्ञाथी विश्वजूतिये ते पुस्तक बहार काढयुं. सगरे ते वखते कह्युं के स्वयंवरमां बेसनार जे लक्षणहीन होय तेने कां तो मारी नाखवो, अथवा स्वयंवरथी बहार काढी मुकवो. आ कहेवुं सर्वेये अंगीकार कर्युं. पुरोहिते पुस्तक वांचवुं शरु कर्युं. जेम जेम पुस्तक वंचातुं गयुं तेम तेम मधुपिंगल पोताने लक्षणहीन मानी लज्जावान् थवा लाग्यो, अने पोतानी मेलेज स्वयंवरथी बहार निकली गयो. आखरे सुलसाये सगरने वरी लीधो. बीजा सर्व राजाउं पोतपोताने स्थानके गया. मधुपिंगल आ अपमानथी तापस थयो. बालतप करी साठ हजार वर्षना आयुवालो काल नामनो असुर परमाधामी थयो. अवधिज्ञानथी सगरनुं पुस्तक बनाववा संबंधी सर्व कपट तेना जाणवामां आव्युं, तेथी विचार कर्यो के सगर राजा प्रमुखने हवे कोइ पण रीते मारुं. महाकालासुर तेना छिद्रो जोवा लाग्यो. ज्यारे शुक्तिमती नगरीनी नजीक पर्वतने जोयो, त्यारे ब्राह्मणनुं रूप धारण करी पर्वतनी पासे आवी कह्युं के हे पर्वत! हुं तारा पितानो मित्र छुं, मारुं नाम शांडिल्य छे. हुं तथा तारो पिता गौतम उपाध्यायनी पासे साथे जणता हता. मारा सांजलवामां आव्युं के नारद तथा बीजा लोकोये तने बहुज दुःखी कर्यो छे, तेथी तारा पिताना संबंधथी हुं तारो पक्ष करवा आव्यो छुं. मंत्रोथी हुं लोकोने विमोहित करीश. एम कही पर्वतने संतलसमां मेलवी लोकोने नरकमां नाखवावास्ते ते असुरे बहुज व्यामोह कर्यो. व्याधि अने जूतादि उपद्रव युक्त लोकोने करी दीधा; पछी जे लोको पर्वतनुं कहेवुं मान्य करे तेउंने सारा करी देतो हतो. शांडिल्यनी आज्ञाथी पर्वत पण लोकोने निरूपद्रव करवा लाग्यो. उपकारथी लोको पर्वतना मतमां मलता थवा लाग्या. हवे ते असुरे सगर राजा तथा तेनी राणीउंने बहुज जारे रोगादिनो उपद्रव कर्यो. राजा पण पर्वतनो सेवक बनी गयो.

पर्वते शांडिल्यनी साथे मली तेना रोगो शांत कर्या. हवे पर्वते राजाने उपदेश कर्यो के हे राजन्! सौत्रामणि नामनो यज्ञ करी मद्यपान जो करवामां आवे तो तेमां बिलकुल दोष नथी. तथा गोसव नामा यज्ञमां अगम्य (चांडाली) स्त्री तथा माता, बहेन, पुत्री प्रमुखनी साथे संजोग करवामां दोष नथी, अने मातृमेधमां मातानो अने पितृमेधमां पितानो, वध अंतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमां करवामां आवे तो दोष नथी. वली कच्छुनी पीठ उपर अग्नि स्थापन करी तर्प्पण करवामां आवे,अने कदाचित् कच्छु न मले तो शुद्ध ब्राह्मणना मस्तकनी टटरी उपर अग्नि स्थापन करी होम करवामां आवे, कारण के टटरी पण कच्छुना जेवी होय छे, तो ते वातमां हिंसा नथी. कारण के वेदोमां लख्युं छे के यतः ॥ सर्वंपुरुषैववेदं यद्भूतं यच्चविष्यति ॥ इशानोयं मृतत्वस्य, यदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ भावार्थः जे कांइ छे ते सर्व ब्रह्मरूपज छे, ज्यारे एकज ब्रह्म छे, त्यारे कोण कोने मारे छे? तेथी यथारुचि यज्ञोमां जीवहिंसा करो, अने ते जीवोना मांस भक्षण करो, तेमां कांइ पण दोष नथी, कारण के देवताना उद्देशथी मांस पवित्र थइ जाय छे; इत्यादि उपदेश दइ सगर राजाने पोताना मतमां स्थापन करी अंतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमां पर्वत यज्ञ करावतो हवो. ते अवसरनो लाभ लइ कालासुर राजसूयादि यज्ञो पण करावतो हवो. अने जे जीवोने यज्ञमां मारवामां आवता हता, तेउने देवमायाथी विमानमां बेसाडेला देखाडतो हतो; जेथी लोकोने यज्ञ करवा उपर प्रतीत थइ. लोको निशंक थइ जीवहिंसारूप यज्ञ करवा लाग्या, अने पर्वतनो मत बहुज प्रसार पाम्यो. सगर राजा पण यज्ञ करवामां बहुज तत्पर थयो. आखर सुलसा अने सगर बंने मरी नर्कमां गया. नर्कमां महा कालासुरे सगर राजाना जीवने अनेक प्रकारना दुःख दइ वैर लीधुं. ते कारणथी हे रावण! पापी पर्वतथी आ जीवहिंसारूप यज्ञ विशेषे करी प्रवर्त्तेल छे. हे राजन्! आ यज्ञनो तमेज निषेध कर्यो. आ कथा श्रवण करी रावणे नारदने प्रणाम कर्यो. नारदजी विदाय थया. जैनमतना शास्त्रोमां आ प्रमाणे वेदोनी उत्पत्ति छे. ते आवश्यक सूत्र, आचारदिनकर अने त्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित्र ग्रंथथी जाणवी.

वर्त्तमान कालमां जे चारे वेद छे तेनी उत्पत्ति डाक्तर मोक्षमुलर

साहेब तेमना बनावेला संस्कृत साहित्य ग्रंथमां आ प्रमाणे लखे ठे. वेदोमां बे जाग ठे. एक ठंदो जाग, बीजो मंत्र जाग. ठंदो जागमां एवा प्रकारनुं कथन ठे के जाणे अज्ञानीउना मुखमांथी अकस्मात् वचनो निकलेलां होय. तेनी उत्पत्ति एकत्रीशशो वर्ष उपर थयेल ठे, अने मंत्रजाग बन्याने उंगणत्रीशसो वर्ष थयां ठे. आ लखवामां शुं आश्चर्य ठे? कारण के कोइये उलट पालट करी नवीन वेदो बनाव्या पण होय. आ वेदो उपर अवट, सायण, रावण, महीधर अने शंकराचार्य प्रमुखे जाष्यो बनावेलां ठे. टीका, दीपिकानी रचना करी ठे. ते प्राचीन जाष्य, दीपिकाउने अयथार्थ जाणी दयानंद सरस्वति स्वामिये स्वमतानुसार नवीन जाष्य बनावी ठे. पंडित ब्राह्मणो दयानंद सरस्वतिनी जाष्यने प्रामाणिक मानता नथी. हवे देखवानुं मात्र ए ठे के परिणाम शुं आवे ठे? जैनमतवालाउये तो ज्यारथी तेउना शास्त्रोमां लखवा मुजब आर्यवेद बगाडी नाखवामां आव्या, त्यारथी वेदोने मानवानुं तजी दीधेल ठे. ॥ इति वेदोत्पत्तिः ॥

ज्यारे श्रीरीषजदेव जगवान कैलास पर्वत उपर निर्वाण पाम्या, त्यारे सर्व देवता निर्वाण महोत्सव करवा आव्या. सर्व देवताउमां अग्निकुमार देवताये श्रीरीषजदेव जगवाननी चितामां अग्नि लगावी, त्यारथी आ श्रुति लोकोमां प्रसिद्ध थइ. "अग्निमुखावै देवा" अर्थात् अग्नि कुमार देवता सर्व देवताउमां मुख्य ठे; वली अल्पबुद्धिवानोये तो आ श्रुतिनो अर्थ एवो कर्यो के अग्नि, तेत्रीश क्रोड देवताउनुं मुखठे. प्रजुनुं निर्वाणस्वरूप आवश्यक सूत्रथी जाणवुं.

ज्यारे देवताउये श्रीरीषजदेवजीनी दाढा विगेरे लीधी, त्यारे श्रावक ब्राह्मण मली देवताउने अति जक्तिथी याचना करता हवा. देवताउ ते बहु जनोने बहुयत्नाथी याचनाथी पीडायेला देखी कहेता हवा. अहो याचको! अहो याचको! त्यारथी ब्राह्मणो याचक कहेवावा लाग्या. वली ब्राह्मणो ते वखते श्रीरीषजदेवजीनी चितामांथी अग्नि लइ पोतपोताना घरमां स्थापनां करता हवा, ते कारणथी ब्राह्मणो "आहिताग्नय" कहेवावा लाग्या.

श्रीरीषजदेवजीनी चिता प्रज्वलित थइ रह्या पठी दाढाप्रमुख सर्व

पर्वते शांडिल्यनी साथे मली तेना रोगो शांत कर्या. हवे पर्वते राजाने उपदेश कर्यो के हे राजन्! सौत्रामणि नामनो यज्ञ करी मद्यपान जो करवामां आवे तो तेमां बिलकुल दोष नथी. तथा गोसव नामा यज्ञमां अगम्य (चांडाली) स्त्री तथा माता, बहेन, पुत्री प्रमुखनी साथे संजोग करवामां दोष नथी, अने मातृमेधमां मातानो अने पितृमेधमां पितानो, वध अंतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमां करवामां आवे तो दोष नथी. वली कछुनी पीठ उपर अग्नि स्थापन करी तर्प्पण करवामां आवे,अने कदाचित् कछु न मले तो शुद्ध ब्राह्मणना मस्तकनी टटरी उपर अग्नि स्थापन करी होम करवामां आवे, कारण के टटरी पण कछुना जेवी होय छे, तो ते वातमां हिंसा नथी. कारण के वेदोमां लख्युं छे के यतः ॥ सर्वंपुरुषेववेदं यद्भूतं यद्भविष्यति ॥ ईशानोयं मृतत्वस्य, यदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ भावार्थः जे कांइ छे ते सर्व ब्रह्मरूपज छे, ज्यारे एकज ब्रह्म छे, त्यारे कोण कोने मारे छे? तेथी यथारुचि यज्ञोमां जीवहिंसा करो, अने ते जीवोना मांस भक्षण करो, तेमां कांइ पण दोष नथी, कारण के देवताना उद्देशथी मांस पवित्र थइ जाय छे; इत्यादि उपदेश दइ सगर राजाने पोताना मतमां स्थापन करी अंतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमां पर्वत यज्ञ करावतो हवो. ते अवसरनो लाभ लइ कालासुर राजसूयादि यज्ञो पण करावतो हवो. अने जे जीवोने यज्ञमां मारवामां आवता हता, तेउने देवमायाथी विमानमां बेसाडेला देखाडतो हतो; जेथी लोकोने यज्ञ करवा उपर प्रतीत थइ. लोको निशंक थइ जीवहिंसारूप यज्ञ करवा लाग्या, अने पर्वतनो मत बहुज प्रसार पाम्यो. सगर राजा पण यज्ञ करवामां बहुज तत्पर थयो. आखर सुलसा अने सगर बंने मरी नर्कमां गया. नर्कमां महा कालासुरे सगर राजाना जीवने अनेक प्रकारना दुःख दइ वैर लीधुं. ते कारणथी हे रावण! पापी पर्वतथी आ जीवहिंसारूप यज्ञ विशेषे करी प्रवर्त्तेल छे. हे राजन्! आ यज्ञनो तमेज निषेध कर्यो. आ कथा श्रवण करी रावणे नारदने प्रणाम कर्यो. नारदजी विदाय थया. जैनमतना शास्त्रोमां आ प्रमाणे वेदोनी उत्पत्ति छे. ते आवश्यक सूत्र, आचारदिनकर अने त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र ग्रंथथी जाणवी.

वर्त्तमान कालमां जे चारे वेद छे तेनी उत्पत्ति डाक्तर मोक्षमुलर

साहेब तेमना बनावेला संस्कृत साहित्य ग्रंथमां आ प्रमाणे लखे छे. वेदोमां बे जाग छे. एक छंदो जाग, बीजो मंत्र जाग. छंदो जागमां एवा प्रकारनुं कथन छे के जाणे अज्ञानीउना मुखमांथी अकस्मात् वचनो निकलेलां होय. तेनी उत्पत्ति एकत्रीशशो वर्षे उपर थयेल छे, अने मंत्रजाग बन्याने उगणत्रीशसो वर्षे थयां छे. आ लखवामां शुं आश्चर्य छे? कारण के कोइये उलट पालट करी नवीन वेदो बनाव्या पण होय. आ वेदो उपर अवट, सायण, रावण, महीधर अने शंकराचार्य प्रमुखे जाष्यो बनावेलां छे. टीका, दीपिकानी रचना करी छे. ते प्राचीन जाष्य, दीपिकाउने अयथार्थ जाणी दयानंद सरस्वति स्वामिये स्वमतानुसार नवीन जाष्य बनावी छे. पंडित ब्राह्मणो दयानंद सरस्वतिनी जाष्यने प्रामाणिक मानता नथी. हवे देखवानुं मात्र ए छे के परिणाम शुं आवे छे? जैनमतवालाउये तो ज्यारथी तेउना शास्त्रोमां लखवा मुजब आर्यवेद बगाडी नाखवामां आव्या, त्यारथी वेदोने मानवानुं तजी दीधेल छे. ॥ इति वेदोत्पत्तिः ॥

ज्यारे श्रीरीषजदेव जगवान कैलास पर्वत उपर निर्वाण पाम्या, त्यारे सर्व देवता निर्वाण महोत्सव करवा आव्या. सर्व देवताउमां अग्निकुमार देवताये श्रीरीषजदेव जगवाननी चित्तामां अग्नि लगावी, त्यारथी आ श्रुति लोकोमां प्रसिद्ध थइ. " अग्निमुखावै देवा " अर्थात् अग्नि कुमार देवता सर्व देवताउमां मुख्य छे; वली अल्पबुद्धिवानोये तो आ श्रुतिनो अर्थ एवो कर्यो के अग्नि, तेत्रीश क्रोड देवताउनुं मुख छे. प्रजुनुं निर्वाणस्वरूप आवश्यक सूत्रथी जाणवुं.

ज्यारे देवताउये श्रीरीषजदेवजीनी दाढा विगेरे लीधी, त्यारे श्रावक ब्राह्मण मली देवताउने अति जक्तिथी याचना करता हवा. देवताउ ते बहु जनोने बहुयत्नाथी याचनाथी पीडायेला देखी कहेता हवा. अहो याचको! अहो याचको! त्यारथी ब्राह्मणो याचक कहेवावा लाग्या. वली ब्राह्मणो ते वखते श्रीरीषजदेवजीनी चितामांथी अग्नि लइ पोतपोताना घरमां स्थापनां करता हवा, ते कारणथी ब्राह्मणो " आहिताग्नय " कहेवावा लाग्या.

श्रीरीषजदेवजीनी चिता प्रज्वलित थइ रह्या पछी दाढाप्रमुख सर्व दे-

वताउं लइ गया. शेष जस्म रही ते ब्राह्मणोये पोते लीधी तथा थोडीथोडी लोकोने आपी. लोकोये पोताना मस्तक उपर त्रिपुंडाकारथी लगावी, त्यारथी त्रिपुंड करवुं शरु थयुं. इत्यादि वहु व्यवहार ते वखतथी शरु थयो.

जरते कैलास पर्वत उपर सिंहनिषद्या नामनुं मंदिर वनाव्युं, तेमां जविष्यमां थनारा त्रेवीश तीर्थंकरोनी तथा श्रीरीषजदेवजीनी मली चोवीश प्रतिमाउंनी स्थापना करी, अने दंडरत्नथी पर्वतने एवी रीते ठोलवामां आव्यो के जे उपर कोइ पुरुष पगोथी चडी शके नहि. पर्वतमां आठ पगथीआं राख्यां जेथी कैलास पर्वतनुं नाम अष्टापद कहेवाय ठे, अने त्यारथीज कैलास महादेवनो पर्वत कहेवाय ठे. महादेव अर्थात् मोटादेव ते श्रीरीषजदेव, अने तेनुं स्थान कैलास पर्वत जाणवुं.

जरत अने वाहुवलि वंने दीक्षा लइ मोक्षे गया. जरतनी पठी सूर्ययश गादी उपर वेठा. तेनी उंलाद सूर्यवंशी कहेवाइ. सूर्ययशनी गादी उपर तेनो पुत्र महायश वेठो. तेज प्रमाणे अतिवल, महावल, तेजवीर्य, कीर्तिवीर्य अने दंडवीर्य, अनुक्रमे पोतपोताना पितानी गादी उपर वेठा, अने पोतपोताना राज्य यथाशक्ति चलावता हवा. जरतना राज्यथी तेउंनुं राज्य अरधुं अर्थात् त्रण खंडनुं रह्युं. दरेक अंते जरतनी जेम राज्य ठोडी मोक्षमां गया. तेउंनी पठी गादी उपर असंख्य पाट थइ. तेउंनी व्यवस्था चितांतर गंडिकाथी जाणवी. यावत् जीतशत्रु राजा थया. इति संक्षेपतः श्रीरीषजाधिकारः संपूर्णः

हवे श्री अजीतनाथ स्वामिना समयनुं स्वरूप लखीए ठीए. अयोध्या नगरीमां जरतनी पठी असंख्य राजाउं थया वाद इक्ष्वाकु वंशमां जीतशत्रु राजा थया. विनीता नगरीनुं वीजुं नाम अयोध्या ठे. हाल जे अयोध्या ठे, ते नही. प्राचीन अयोध्या कैलास पर्वतनी पासे हती. नवीन अयोध्या तेना नामथी वसेली ठे. जीतशत्रु राजाने सुमित्र नामनो वंधु युवराज हतो. जीतशत्रुनी विजया नामा राणी हती. तेने चौद स्वप्न पूर्वक अजीत नामना पुत्र थया. सुमित्रनी राणी यशोमतीने पण चौद स्वप्न देखवाथी सगर नामना पुत्र थया. ज्यारे वंने यौवनवंत थया त्यारे जीतशत्रु अने सुमित्र वंने दीक्षा लइ मोक्षरूप थया. एवे श्री अजीतनाथ राजा थया अने सगर युवराज थया. केटलाएक

लाख कोडी सागरोपम व्यतीत थये श्री संभवनाथजी त्रीजा तीर्थंकर थया. राज्य सर्व सूर्यवंशी, चंद्रवंशी तथा कुरुवंशी आदि राजाउंमां रह्युं. इति श्री अजीतनाथ तथा सगर चक्रवर्ती अधिकार.

श्रावस्ती नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी जीतारि राजा राज्य करता हता, तेने सेना नामा पटराणी हती, तेने संभव नामना पुत्र त्रीजा तीर्थंकर थया, चोवीशे तीर्थंकरना वर्णन प्रथम परिछेदमां यंत्रमां तेमज गद्यमां लखी आव्या छीए. बीजा तीर्थंकरोनो वचमां जे अंतर छे तेपण यंत्रथी जाणी लेवुं. इती तृतीय तीर्थंकर वृत्तांत.

तेमनी पछी अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी संवर राजा थया. तेमने सिद्धार्था नामनी राणीनी कुखे अभिनंदन नामना चोथा तीर्थंकर थया. बाद अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी मेघ राजानी सुमंगला राणी तेना पुत्र सुमतिनाथ नामना पांचमां तीर्थंकर थया. पछी कोसंबी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी श्रीधर राजानी सुसीमा राणी, तेना पुत्र पद्मप्रभ नामना छठा तीर्थंकर थया. पछी वाणारसी नगरीमां प्रतिष्ट राजानी पृथ्वी नामा राणी, तेना पुत्र श्री सुपार्श्वनाथ नामना सातमा तीर्थंकर थया. पछी चंद्रपुरी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी महासेन राजानी लक्ष्मणा नामा राणी, तेना पुत्र श्री चंद्रप्रभ नामना आठमा तीर्थंकर थया. पछी काकंदी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी सुग्रीव राजानी रामा नामा राणी, तेना पुत्र श्रीसुविधिनाथ, अपर नाम पुष्पदंत नामना नवमा तीर्थंकर थया.

अहींआ सुधीतो सर्व ब्राह्मणो जैनधर्मी श्रावक तथा चारे आर्य वेदो जे भरत राजाना समयमां रचवामां आव्या हता ते भणता हता. ज्यारे नवमा तीर्थंकरनुं तीर्थ विछेद थयुं, त्यारे ब्राह्मणो मिथ्यादृष्टि तथा जैन धर्मना द्वेषी अने जगत्ना पूज्य थया. कन्या, भूमि अने गोदानादिना लेनारा थया. सर्व जगत्मां उत्तम थया, सर्वना कर्त्ता हर्त्ता अने मतोना मालेक बनी गया. सारांश ए छे के सुनुं घर देखी कुतरो पण माल खाइ जाय छे. वली जगत्मां जे जे पाखंड तथा अनेक तरेहना देवताउंनी पूजा तथा जे जे बीजा पण कुमार्गो प्रचलित थया छे, ते सर्व तेउंएज चलावेल छे. साक्षात् आदीश्वर भगवाननी रचेली सृष्टि

रूप अमृतमां झेर दाखल करनारा थया छे, कारण के पूर्वे जैनमत तथा कपिलमत शिवाय बीजो कोइ पण मत नहोतो. कपिल मतवाला पण देव तो श्री आदीश्वर (रीषजदेव) जगवाननेज मानता हता. निदान आ हुंडा अवसर्पिणिमां सर्व आश्चर्य गणाय छे.

त्यार बाद जद्दिलपुर नगरमां इक्ष्वाकु वंशी दृढरथ राजानी नंदा नामा राणी, तेना पुत्र श्री शीतलनाथ नामना दशमा तीर्थंकर थया. आ तीर्थंकरना शासनमां हरिवंशनी उत्पत्ति थइ तेनी कथा लखीए छीए.

कौशांवि नगरीमां वीरो नामनो कोली रहेतो हतो. तेने वनमाला नामनी अत्यंत रूपवंती स्त्री हती. नगरना राजाये तेणीने हरण करी पोतानी स्त्री बनावी. वीरो कोली स्त्रीना विरहथी बावरो थइ गयो. हा वनमाला! हा वनमाला! एम बोलतो बोलतो नगरमां फरवा लाग्यो. एकदा वर्षाकालमां राजा वनमालानी साथे मेहेलना फरूखामां वेठो हतो. राजा राणीये वीराने ते हालतमां देखी बहु पश्चाताप कर्यो; छेवट निश्चय कर्यो के आपणे आ काम बहुज बुरूं कर्युं, तेज वखत वीजली पडवाथी राजा राणी वंने मरीने हरिवर्ष क्षेत्रमां स्त्री, पुरुष युगलीया थया. वीरो कोली राजा राणीनुं मरण सांजली राजी थयो, पछी तापस बनी तप करवा लाग्यो. अज्ञान तपना प्रजावथी किल्बिष देवता थयो. अवधिज्ञानथी राजा राणीने युगलीया थयेला देखी, विचार कर्यो के, आ जद्रक परिणामी तथा अल्पारंजी छे, तेथी मरीने देवता थशे, तो पछी हुं मारुं वेर शीरीते लइश? तेथी एवो उपाय करुं के, जेथी तेउ वंने मरीने नर्कमां जाय. एवो विचार करी ते वंनेने त्यांथी उगावी जरत क्षेत्रमां चंपा नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी चंडकीर्ति राजा अपुत्रीउ गुजरी गयो हतो, अने हवे आ नगरीनो राजा कोण थशे? एवी चिंतामां सर्व लोको जे आवी पड्या हता, तेउने देवताये आ वंनेने सोंप्या, अने कह्युं के आ तमारो हरि नामनो राजा थशे. तेने तख्तनशीन करो? तेनी आ हरणी नामनी राणी छे. तेउने खावावास्ते तमारे फल मिश्रित मांस आपवुं, अने तेउने शिकार करवानी टेव पाडवी. लोकोये तेज प्रमाणे कर्युं. तेउ वंने पापमां आसक्त थवाथी मरीने नर्कमां गया. तेउनी उलाद सर्व हरिवंशवाली कहेवाइ. आ वंशमां वसुराजा थया. इति श्रीहरिवंशोत्पत्ति.

लाख कोडी सागरोपम व्यतीत थये श्री संभवनाथजी त्रीजा तीर्थंकर थया. राज्य सर्व सूर्यवंशी, चंद्रवंशी तथा कुरुवंशी आदि राजाओमां रह्युं. इति श्री अजीतनाथ तथा सगर चक्रवर्ती अधिकार.

श्रावस्ती नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी जीतारि राजा राज्य करता हता तेने सेना नामा पटराणी हती, तेने संभव नामना पुत्र त्रीजा तीर्थंकर थया, चोवीशे तीर्थंकरना वर्णन प्रथम परिछेदमां यंत्रमां तेमज गद्यमां लखी आव्या छीए. बीजा तीर्थंकरोनो वचमां जे अंतर छे तेपण यंत्रथी जाणी लेवुं. इती तृतीय तीर्थंकर वृत्तांत.

तेमनी पछी अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी संवर राजा थया. तेमनी सिद्धार्था नामनी राणीनी कुखे अभिनंदन नामना चोथा तीर्थंकर थया. बाद अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी मेघ राजानी सुमंगला राणी, तेना पुत्र सुमतिनाथ नामना पांचमां तीर्थंकर थया. पछी कोसंबी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी श्रीधर राजानी सुसीमा राणी, तेना पुत्र पद्मप्रभ नामना छठा तीर्थंकर थया. पछी वाणारसी नगरीमां प्रतिष्ट राजानी पृथ्वी नामा राणी, तेना पुत्र श्री सुपार्श्वनाथ नामना सातमा तीर्थंकर थया. पछी चंद्रपुरी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी महासेन राजानी लक्ष्मणा नामा राणी, तेना पुत्र श्री चंद्रप्रभ नामना आठमा तीर्थंकर थया. पछी काकंदी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी सुग्रीव राजानी रामा नामा राणी, तेना पुत्र श्रीसुविधिनाथ, अपर नाम पुष्पदंत नामना नवमा तीर्थंकर थया.

अहींआ सुधीतो सर्व ब्राह्मणो जैनधर्मी श्रावक तथा चारे आर्य वेदो जे भरत राजाना समयमां रचवामां आव्या हता ते भणता हता. ज्यारे नवमा तीर्थंकरनुं तीर्थ विछेद थयुं, त्यारे ब्राह्मणो मिथ्यादृष्टि तथा जैन धर्मना द्वेषी अने जगत्‌ना पूज्य थया. कन्या, भूमि अने गोदानादिना लेनारा थया. सर्व जगत्‌मां उत्तम थया, सर्वेना कर्त्ता हर्त्ता अने मतोना मालेक बनी गया. सारांश ए छे के सुनुं घर देखी कुतरो पण माल खाइ जाय छे. वली जगत्‌मां जे जे पाखंड तथा अनेक तरेहना देवताओनी पूजा तथा जे जे बीजा पण कुमार्गो प्रचलित थया छे, ते सर्व तेओएज चलावेल छे. साक्षात् आदीश्वर भगवानना रचेली सृष्टि-

रूप अमृतमां झेर दाखल करनारा थया छे, कारण के पूर्वे जैनमत तथा कपिलमत शिवाय बीजो कोइ पण मत नहोतो. कपिल मतवाला पण देव तो श्री आदीश्वर (रीषजदेव) जगवाननेज मानता हता. निदान आ हुंडा अवसर्पिणिमां सर्व आश्चर्य गणाय छे.

त्यार बाद जद्दिलपुर नगरमां इक्ष्वाकु वंशी दढरथ राजानी नंदा नामा राणी, तेना पुत्र श्री शीतलनाथ नामना दशमा तीर्थंकर थया. आ तीर्थंकरना शासनमां हरिवंशनी उत्पत्ति थइ तेनी कथा लखीए छीए.

कौशांवि नगरीमां वीरो नामनो कोली रहेतो हतो. तेने वनमाला नामनी अत्यंत रूपवंती स्त्री हती. नगरना राजाये तेणीने हरण करी पोतानी स्त्री वनावी. वीरो कोली स्त्रीना विरहथी बावरो थइ गयो. हा वनमाला! हा वनमाला! एम बोलतो बोलतो नगरमां फरवा लाग्यो. एकदा वर्षाकालमां राजा वनमालानी साथे मेहेलना झरूखामां बेठो हतो. राजा राणीये वीराने ते हालतमां देखी बहु पश्चाताप कर्यो; छेवट निश्चय कर्यो के आपणे आ काम बहुज बुरूं कर्युं, तेज वखत वीजली पडवाथी राजा राणी बंने मरीने हरिवर्ष क्षेत्रमां स्त्री, पुरुष युगलीया थया. वीरो कोली राजा राणीनुं मरण सांजली राजी थयो, पछी तापस बनी तप करवा लाग्यो. अज्ञान तपना प्रजावथी किल्विष देवता थयो. अवधिज्ञानथी राजा राणीने युगलीया थयेला देखी, विचार कर्यो के, आ जडक परिणामी तथा अल्पारंजी छे, तेथी मरीने देवता थशे, तो पछी हुं मारुं वेर शीरीते लइश? तेथी एवो उपाय करुं के, जेथी तेउ बंने मरीने नर्कमां जाय. एवो विचार करी ते बंनेने त्यांथी उगावी जरत क्षेत्रमां चंपा नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी चंडकीर्ति राजा अपुत्रीउ गुजरी गयो हतो, अने हवे आ नगरीनो राजा कोण थशे? एवी चिंतामां सर्व लोको जे आवी पड्या हता, तेउने देवताये आ बंनेने सोंप्या, अने कह्युं के आ तमारो हरि नामनो राजा थशे. तेने तख्तनशीन करो? तेनी आ हरणी नामनी राणी छे. तेउने खावावास्ते तमारे फल मिश्रित मांस आपवुं, अने तेउने शिकार करवानी टेव पाडवी. लोकोये तेज प्रमाणे कर्युं. तेउ बंने पापमां आसक्त थवाथी मरीने नर्कमां गया. तेउनी उलाद सर्व हरिवंशवाली कहेवाइ. आ वंशमां वसुराजा थया. इति श्रीहरिवंशोत्पत्ति.

श्री शीतलनाथजीनुं शासन पण विछेद गयुं. तेवीज रीते पंदरमा तीर्थंकरसुधी सात तीर्थंकरोनां शासनो विछेद गयां; अने मिथ्याधर्म बहुज वृद्धि पाम्यो.

श्रीशीतलनाथ पछी सिंहपुरी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी विष्णु राजानी विष्णुश्री नामाराणी, तेना पुत्र श्री श्रेयांसनाथ नामना अगीआरमां तीर्थंकर थया. ते समयमां वैताढ्य पर्वतथी श्रीकंठ नामनो विद्याधरनो पुत्र, पद्मोत्तर विद्याधरनी पुत्रीनुं हरण करी पोताना बनेवी राक्षस वंशी लंकाना राजा कीर्तिधवलने शरणे गयो. कीर्तिधवले त्रणसें योजन प्रमाण वानरद्वीप तेउने रहेवाने आप्यो. तेउना संतानोमांथी चित्र विचित्र विद्याधरोये विद्याथी वानरनुं रूप बनाव्युं. वली वानर द्वीपमां रहेवाथी तथा वानरनुं रूप बनाववाथी वानरवंशी प्रसिद्ध थया. तेउनी उलादमां वाली तथा सुग्रीवादि थया छे.

श्रेयांसनाथजीना समयमां पेहेला त्रिपृष्ट नामना वासुदेव हरिवंशमां थया. तेनी उत्पत्ति आप्रमाणे— पोतनपुर नगरमां हरिवंशी जीतशत्रु नामनो राजा थयो. तेने धारणी नामा राणी हती. तेने अचल नामनो पुत्र अने मृगावती नामनी पुत्री थइ. मृगावती अत्यंत खुब सुरत हती, ते यौवनवंती थइ एटले तेना पिताये तेणीने पोतानी राणी बनावी लीधी. ते देखी लोकोये जीतशत्रु राजानुं नाम प्रजापति पाड्युं. अर्थात् पोतानी पुत्रीनो पति एवुं नाम राख्युं. तेज वखतथी वेदोमां आ श्रुति लखवामां आवी. "प्रजापति वैंस्वाडुहितरमन्यध्यायद्दिव नित्यन्य आहुपुर समित्यन्येता मृश्योभूत्वा तदसाबादित्यो भवत्" ॥ भावार्थः प्रजापति ब्रह्मा पोतानी पुत्री साथे विषय सेवनने प्राप्त थता हवा. जैनमतवालाउने आ अर्थथी कांइ पण हानी नथी; परंतु जे लोकोये ब्रह्माजीने वेद कर्त्ता, हिरण्यगर्भना नामथी इश्वर मानेला छे; अने आ कथाने पुराणोमां लखेली छे, तेउनी फजेती तो अवश्य बीजा मतवालाउ करशे. तेमां अमे शुं करीये? कारण के जे पुरुष पोताना हाथथी पोतानुं म्होंं कालुं करे, तेने देखीने बीजाउ केम हांसी न करे? यद्यपि मीमांसाना वार्त्तिककार कुमारिले आ श्रुतिना अर्थनुं कलंक दूर करवावास्ते मनमानी कल्पना करेली छे, तथा वर्तमानमां दयानंदसरस्वति स्वामिये पण वेद श्रुतियोना कलंक

दूर करवावास्ते पोतानी बनावेली भाष्यमां अर्थोनी अत्यंत तोड फोड करेली छे, परंतु पुराणवालाउंये जे कथा लखेली ते केवी रीते छुपावी शकशे? अमारा मतमां तो वेद श्रुति अने ब्रह्मा (प्रजापति) नो अर्थ यथार्थज करेल छे. आ जीतशत्रु (प्रजापति) राजाने मृगावतीथी त्रिपृष्ट नामनो पुत्र थयो. ज्यारे त्रिपृष्ट अने अचल बंने यौवनवंत थया, त्यारे तेउंये त्रिखंडना राजा अश्वग्रीवने मारी त्रण खंडनुं राज्य कर्युं.

त्यार पछी चंपापुरीमां इक्ष्वाकुवंशी वसुपुज्य नामनो राजा थयो, तेनी ज्या नामा राणी तेनाथी श्रीवासुपुज्य नामना बारमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां बीजा द्विपृष्ट वासुदेव अने अचल बलदेव थया, अने तेउंना प्रतिशत्रु रावण समान तारक नामना बीजा प्रतिवासुदेव थया. आ सर्व वासुदेव, चक्रवर्ती आदिनुं संपूर्ण वर्णन त्रेसठ शलाका पुरुष चरित्रथी जाणवुं.

त्यार पछी कपिलपुर नगरमां इक्ष्वाकुवंशी कृतवर्मा नामा राजा थया, तेनी श्यामा नामा राणीना पुत्र श्रीविमलनाथ नामना तेरमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां त्रीजा स्वयंभु वासुदेव, भद्र नामा बलदेव, अने मैरक नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पछी अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी सिंहसेन राजा थया, तेनी सुयशा राणीना पुत्र श्री अनंतनाथ नामना चौदमा तीर्थंकर थया, तेमना समयमां चोथा पुरुषोत्तम वासुदेव, सुप्रभ नामना बलदेव अने मधुकैटभ नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पछी रत्नपुरी नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी भानु नामना राजा थया, तेमनी सुव्रता नामनी राणीना पुत्र श्रीधर्मनाथ नामना पंदरमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां पांचमा पुरुषसिंह नामना वासुदेव, सुदर्शन नामना बलदेव, अने निशुंभ नामना प्रतिवासुदेव थया. अहींआ सुधी पांच वासुदेव जे थया ते सर्वे अरिहंतना भक्त अर्थात् जैनधर्मी थया.

त्यार पछी पंदरमा धर्मनाथ अने सोलमा शांतिनाथजीना अंतरमां त्रीजा मघवा नामना चक्रवर्ती अने चो[थो] सनत्कुमार नामना चक्रवर्ती थया.

त्यार पछी हस्तिनापुरी नगरीमां कुरुवंशी विश्वसेन राजा तेमनी अचिरा राणीना पुत्र श्रीशांतिनाथ नामना सोलमा तीर्थंकर थया. ते प्रथ-

म गृहवासमां तो पांचमा चक्रवर्ती थया, पछी दीक्षा लइ केवली थइ तीर्थंकर थया.

त्यारपछी हस्तिनापुर नगरमां कुरुवंशी सूर नामना राजा थया, तेनी श्रीराणीना पुत्र श्रीकुंथुनाथ थया. प्रथम गृहस्थावासमां छठा चक्रवर्ती थया, पछी दीक्षा लइ सत्तरमा तीर्थंकर थया.

त्यार पछी श्रीहस्तिपुर नगरमां कुरुवंशी सुदर्शन नामना राजा थया, तेनी देवी राणीना पुत्र श्री अरनाथ थया. ते गृहस्थावासमां सातमा चक्रवर्ती थया, अने दीक्षा लीधा पछी अढारमा तीर्थंकर थया.

अढारमा अने उगणीशमा तीर्थंकरना अंतरमां आठमा, कुरुवंशी सुभूम नामना चक्रवर्ती थया. आ सुभूमना वखतमांज परशुराम थया. ते बंनेनो संबंध जैनमतना शास्त्रोने अनुसारे लखीये छीये.

योगशास्त्रमां लख्युं छे के वसंतपुर नामना नगरमां उछन्नवंशी अर्थात् जेनो कोइ संबंधी नही, एवो अग्निक नामनो एक छोकरो हतो. एकदा अग्निक कोइ सथवारा साथे देशांतर जतां मार्गमां साथथी भूलो पडतां जंगलमां एक तापसना आश्रममां गयो. कुलपति तापसे तेने पोतानो पुत्र करी राख्यो. अनुक्रमे अग्निक अत्यंत घोर तप करी मोटो तेजस्वी थयो. जगत्मां यमदग्नि तापसना नामथी प्रसिद्ध थयो. ते अवसरे एक जैनमति विश्वानर नामनो देव तथा एक तापसोनो भक्त धन्वंतरि नामनो देव, बंने जणा परस्पर विवाद करवा लाग्या. विश्वानरे कह्युं के अरिहंतनो कथन करेलो धर्म प्रमाणिक छे, धन्वंतरिये कह्युं के तापसोनो धर्म सत्य छे. बंनेना गुरुउनी परीक्षा करवी एम विश्वानरे सुचना करी. ते बंने देवोये कबुल करी. तेमां पण विश्वानरे कह्युं के जैनमतना जघन्य गुरुनी परीक्षा करवी अने तापसोना उत्कृष्ट गुरुनी परीक्षा करवी ते मारे कबुल छे. प्रथम मिथिला नगरीनो पद्मरथ राजा जे नवोज जैनधर्मी थइ भावयति थयो हतो, ते चंपानगरीमां गुरुनी पासे दीक्षा लेवा सारुं जतो हतो. तेनें रस्तामां ते देवताउये दीठो. रस्तामां तेने दुःख देवावास्ते बहु कांटा कांकरा ? यथ नांख्या, अने रस्ता शिवाय बीजा स्थानके बहु कीडा आदिनी उत्पत्ति करी. राजा भावयति होवाथी शुद्ध भाव पूर्वक, कोमल उघाडा पगे कांटा कांकरा उपर चाल्यो जाय

छे. पगमांथी रुधिरनी धारा छुटे छे, तोपण जीववाली भूमि उपर पग मुकतो नथी. ते वखते देवताओये गीत नाटकनो बहु मोहक प्रारंभ कर्यो, तो पण राजा क्षोभायमान थयो नहीं; तेथी बंने देवताओ सिद्ध पुत्रोनुं रूप करी राजाने कहेवा लाग्या, हे महाभाग! तमारुं आयुष्य हजु लांबुं छे. तेथी स्वछंद भोग विलास करो, कारण के यौवनमां तप करवो ते वास्तविक नथी. ज्यारे वृद्ध थाओ, त्यारे दीक्षा लेजो. आ वात सांभली राजाए कह्युं के जो मारुं आयुष्य लांबु छे, तो हुं बहुज धर्म करीश. कारण के पाणी जेटलुं उंडुं होय छे, तेटलीज कमलनी नाल पण वधी जाय छे, वली यौवनमां इंद्रियोनो जय करवो, तेज खरो तप छे. हवे बंने देवताओने खातरी थइ के आ राजा तो कदापि चलायमान थाय तेवो नथी. पछी बंने देवताओ सर्वथी उत्कृष्ट जमदग्नि तापस पासे तेनी परीक्षा करवा आव्या. तेओए, जेनी वडवृक्षनी जटानी जेम, धरतीनी साथे जटा लागी रही छे, तथा जेना पगोमां सर्प्पनी बंबीओ बनी गइ छे; एवी स्थितिमां जमदग्नि तापसने दीठो. हवे बंने देवताओ देवमायाथी जमदग्निनी दाढीमां मालो बनावी, चकला, चकली बनी, बंने जणा मालामां बेठा. पछी चकलो चकलीने कहेवा लाग्यो के हुं हिमवंत पर्वत उपर जइश. चकलीए कह्युं के हुं तने कदापि नहि जवा दउं, कारण के तुं त्यां जइ कदाच कोइ चकलीमां आसक्त थइ जाय तो मारा शुं हाल थाय? चकलाए कह्युं के जो हुं फरीने पाछो न आवुं तो मने गौहत्यानुं पाप लागे. चकलीए कह्युं के हुं आ तारा सोगनने मानती नथी, जे हुं सोगन आपुं ते तुं कबुल करे, तो हुं तने जवा दउं. चकलाए कह्युं भले तुं जे सोगन आपवानी होय ते कही दे? चकलीए कह्युं के जो तुं कोइ चकलीनी साथे यारी करे तो, आ जमदग्नि तापसनुं जे पाप छे ते तने लागे एम सोगन खा. चकला चकलीना आ वचन सांभली जमदग्निने क्रोध उत्पन्न थयो, अने बंने हाथवती चकला चकलीने पकडी लीधा, अने तेओने कहेवा लाग्यो के हुं पापनो अत्यंत नाश करनार एवो महा दुष्कर तप करुं छुं, छतां हवे मारे एवुं कयुं पाप बाकी रही गयुं छे के जेथी तमे मने पापी ठरावो छो? चकलाए कह्युं हे रुषि! तुं अमारा उपर गुस्सो कर नही; कारण के अमे

असत्य बोल बोलता नथी, वली तने जे तारा तपनुं अभिमान छे, ते तारो तप निष्फल छे, कारण के तमारा शास्त्रमां लख्युं छे के " अपुत्रस्य गतिर्नास्ति " अर्थात् पुत्र रहितनी गति नथी, आ शुं तें शास्त्रमां सांभल्युं नथी ? तो जेनी शुभगति न थइ तेनाथी अधिक पापी कोण छे ? हवे जमदग्निए विचार कर्यो के अमारा शास्त्रमां तो जेम चकलाए कह्युं तेमज छे. तेथी फरी मनमां विचार आव्यो के, ज्यारे मारे स्त्री अने पुत्र नथी, त्यारे मारो सर्व तप एवो छे के, जेम पाणीना प्रवाहमां मुतरवुं, तेवो छे. हवे जमदग्निने मनमां स्त्रीनी चाहना थइ. आ प्रमाणे देखी धन्वंतरि देवता जैन धर्मी थयो. बंने देवताओ त्यांथी अदृश्य थइ गया. जमदग्नि त्यांथी उठी नेमिककोष्टक नगरमां जीतशत्रु राजा पासे गयो. राजाने बहु पुत्रीओ हती, तेथी तेनी एक पुत्री मागुं, एवो विचार कर्यो. राजा पण रुषिने देखी आसनथी उठी बे हाथ जोडी प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के आप शा वास्ते अत्रे पधार्या छो ? मने आदेश करो ? आपनुं जे काम होय ते हुं करीश. जमदग्निए कह्युं, हुं तारी पासे तारी एक कन्या मांगवा आव्यो छुं. राजाए कह्युं, मारे (१००) सो पुत्रीओ छे, तेमांथी जे तमारी चाहना करे, ते तमे सुखे लइ जाओ. जमदग्नि कन्याओना मेहेलमां गया; अने कहेवा लाग्या के तमारामांथी जेने मारी धर्मपत्नी थवुं होय ते कही द्यो. ते राजपुत्रीओए जटावाला, ताल पडेला तथा धोला केशवाला, दुर्बल अने भीख मांगी खानारा जमदग्निने दीठो, अने तेनुं आ वचन सांभल्युं, त्यारे सर्वे तेनी उपर थुंकवा लागी; अने कहेवा लागी के आवी वात करतां तने लज्जा आवती नथी ? तेओना अपमानथी जमदग्निने क्रोध चड्यो, अने विद्याना प्रभावथी ते राजपुत्रीओने महा कुरुपवान् बनावी दीधी, अने पोते त्यांथी निकली मेहेलोना आंगणामां आव्या; त्यां राजानी नानी पुत्री रेतीना ढगलामां रमती हती, तेने, हाथमां बिजोरानुं फल लइ कहेवा लाग्यो के हे रेणुका ! तुं मने वांछे छे ? ते बालिकाए बिजोरुं देखी हाथ पसार्यो, तेथी रुषिए कह्युं के आ मने वांछे छे, एम कही मुनिए तेने लइ लीधी. राजाए केटलीक गाय तथा धन आपी पुत्रीनो विवाह तेनी साथे विधि पुर्वक कर्यो. पछी जमदग्निए पोतानी सर्वे सालीओने

स्नेहथी रूपाली करी, अने रेणुकाने लइ पोताना आश्रममां आव्या. ते मुग्धा, मधुर आकृति, हरिणाक्षीने प्रेमथी वृद्धि पमाडता हवा. आंगलीउ उपर दिवस गणतां अनुक्रमे ज्यारे रेणुका सुंदर यौवन रूप कामलीलायुक्त वनने प्राप्त थइ, त्यारे, जमदग्निए अग्निनी साक्षीए रेणुकानी साथे फरी लग्न कर्युं, ज्यारे रेणुका रुतुकालने प्राप्त थइ, त्यारे जमदग्नि कहेवा लाग्या के हे प्रिये! हुं तारा वास्ते चरु साधुं छुं. "चरु ते होममां नाखवानी वस्तुउ कहेवाय छे" जेना प्रतापथी सर्व ब्राह्मणोमां उत्तम प्रतापवालो तने एक पुत्र थशे. रेणुकाए कह्युं हस्तिनापुरमां कुरुवंशी अनंतवीर्य राजानी साथे मारी एक बेहेन परणावी छे. तेने वास्ते एक क्षत्रीय चरु पण साधो, पछी जमदग्निए ब्राह्मण चरु पोतानी भार्या वास्ते, अने क्षत्रिय चरु पोतानी भार्यानी बेहेन वास्ते सिद्ध कर्यो. हवे रेणुकाए मनमां विचार कर्यो के हुं जेम अटवीमां हरणीनी जेम रहुं छुं तेम, मारो पुत्र पण जंगलोमां तेवीज रीते रहेशे, तेथी क्षत्रिय चरु जो हुं भक्षण करुं तो मने राजपुत्र थाय, जेथी जंगलवासथी छुटे, एवो विचार करी क्षत्रिय चरु पोते खाइ लीधो, अने ब्राह्मण चरु पोतानी बेहेनने खवराव्यो. बंनेने पुत्रो प्रसव्या. रेणुकाए जे पुत्र प्रसव्यो तेनुं नाम राम पाड्युं, अने तेनी बेहेननां पुत्रनुं नाम कृतवीर्य पाड्युं. अनुक्रमे बंने मोटा थया. राम आश्रममां मोटो थयो, कृतवीर्य राजमेहेलोमां मोटो थयो. राम क्षत्रिय तेज देखाडवा लाग्यो. अन्यदा एक विद्याधर अतिसार रोगवालो ते आश्रममां आवी पहोंच्यो, अतिसारना कारणथी आकाशगामिनी विद्या भूली गयो. ते मांदा विद्याधरनी रामे औषध, पथ्यादिथी भाइनी जेम आसना वासना करी. विद्याधरे संतुष्ट थइ रामने परशुविद्या आपी. राम पण सरकडाना वनमां जइ ते विद्या सिद्ध करवा लाग्यो. ते विद्याना प्रभावथी राम जगत्मां परशुराम नामथी प्रसिद्ध थयो. एकदा रेणुका, जमदग्निनी आज्ञा लइ उत्कंठाथी पोतानी बेहेनने मलवावास्ते हस्तिनापुरमां गइ. रेणुकाने पोतानी साली जाणी अनंतवीर्य राजा मश्करी करवा लाग्यो. अनुक्रमे कामासक्त थवाथी निरंकुश थइ रेणुका साथे विषय सेवन करवा लाग्यो. अनंतवीर्यना भोगथी रेणुकाने एक पुत्र थयो, छतां विषयमां अ-

असत्य बोल बोलता नथी, वली तने जे तारा तपनुं अभिमान छे, ते तारो तप निष्फल छे, कारण के तमारा शास्त्रमां लख्युं छे के " अपुत्रस्य गतिर्नास्ति " अर्थात् पुत्र रहितनी गति नथी, आ शुं तें शास्त्रमां सांभल्युं नथी ? तो जेनी शुभगति न थइ तेनाथी अधिक पापी कोण छे ? हवे जमदग्निए विचार कर्यो के अमारा शास्त्रमां तो जेम चकलाए कह्युं तेमज छे. तेथी फरी मनमां विचार आव्यो के, ज्यारे मारे स्त्री अने पुत्र नथी, त्यारे मारो सर्व तप एवो छे के, जेम पाणीना प्रवाहमां मुतरवुं, तेवो छे. हवे जमदग्निने मनमां स्त्रीनी चाहना थइ. आ प्रमाणे देखी ध्वनंतरि देवता जैन धर्मी थयो. बंने देवताउ त्यांथी अदृश्य थइ गया. जमदग्नि त्यांथी उठी नेमिककोष्टक नगगरमां जीतशत्रु राजा पासे गयो. राजाने बहु पुत्रीउं हती, तेथी तेनी एक पुत्री मागुं, एवो विचार कर्यो. राजा पण रुषिने देखी आसनथी उठी बे हाथ जोडी प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के आप शा वास्ते अत्रे पधार्या छो ? मने आदेश करो ? आपनुं जे काम होय ते हुं करीश. जमदग्निए कह्युं, हुं तारी पासे तारी एक कन्या मांगवा आव्यो छुं. राजाए कह्युं, मारे (१००) सो पुत्रीउं छे, तेमांथी जे तमारी चाहना करे, ते तमे सुखे लइ जाउ. जमदग्नि कन्याउना मेहेलमां गया; अने कहेवा लाग्या के तमारामांथी जेने मारी धर्मपत्नी थवुं होय ते कही द्यो. ते राजपुत्रीउए जटावाला, ताल पडेला तथा धोला केशवाला, दुर्बल अने भीख मांगी खानारा जमदग्निने दीठो, अने तेनुं आ वचन सांभल्युं, त्यारे सर्वे तेनी उपर थुंकवा लागी; अने कहेवा लागी के आवी वात करतां तने लज्जा आवती नथी ? तेउना अपमानथी जमदग्निने क्रोध चढ्यो, अने विद्याना प्रभावथी ते राजपुत्रीउने महा कुरुपवान् बनावी दीधी, अने पोते त्यांथी निकली मेहेलोना आंगणामां आव्या; त्यां राजानी नानी पुत्री रेतीना ढगलामां रमती हती, तेने, हाथमां बिजोरानुं फल लइ कहेवा लाग्यो के हे रेणुका ! तुं मने वांछे छे ? ते बालिकाए बिजोरुं देखी हाथ पसार्यो, तेथी रुषिए कह्युं के आ मने वांछे छे, एम कही मुनिए तेने लइ लीधी. राजाए केटलीक गाय तथा धन आपी पुत्रीनो विवाह तेनी साथे विधि पुर्वक कर्यो. पछी जमदग्निए पोतानी सर्वे सालीउने

स्नेहथी रूपाली करी, अने रेणुकाने लइ पोताना आश्रममां आव्या. ते मुग्धा, मधुर आकृति, हरिणाक्षीने प्रेमथी वृद्धि पमाडता हवा. आंगळीउ उपर दिवस गणतां अनुक्रमे ज्यारे रेणुका सुंदर यौवन रूप कामलीलायुक्त वनने प्राप्त थइ, त्यारे, जमदग्निए अग्निनी साक्षीए रेणुकानी साथे फरी लग्न कर्युं, ज्यारे रेणुका रुतुकालने प्राप्त थइ, त्यारे जमदग्नि कहेवा लाग्या के हे प्रिये! हुं तारा वास्ते चरु साधुं छुं. "चरु ते होममां नाखवानी वस्तुउ कहेवाय छे" जेना प्रतापथी सर्व ब्राह्मणोमां उत्तम प्रतापवालो तने एक पुत्र थशे. रेणुकाए कह्युं हस्तिनापुरमां कुरुवंशी अनंतवीर्य राजानी साथे मारी एक वेहेन परणावी छे. तेने वास्ते एक क्षत्रीय चरु पण साधो, पछी जमदग्निए ब्राह्मण चरु पोतानी भार्या वास्ते, अने क्षत्रिय चरु पोतानी भार्यानी वेहेन वास्ते सिद्ध कर्यो. हवे रेणुकाए मनमां विचार कर्यो के हुं जेम अटवीमां हरणीनी जेम रहुं छुं तेम, मारो पुत्र पण जंगलोमां तेवीज रीते रहेशे, तेथी क्षत्रिय चरु जो हुं भक्षण करुं तो मने राजपुत्र थाय, जेथी जंगलवासथी छुटे, एवो विचार करी क्षत्रिय चरु पोते खाइ लीधो, अने ब्राह्मण चरु पोतानी बेहेनने खवराव्यो. बंनेने पुत्रो प्रसव्या. रेणुकाए जे पुत्र प्रसव्यो तेनुं नाम राम पाड्युं, अने तेनी वेहेननां पुत्रनुं नाम कृतवीर्य पाड्युं. अनुक्रमे बंने मोटा थया. राम आश्रममां मोटो थयो, कृतवीर्य राजमेहेलोमां मोटो थयो. राम क्षत्रिय तेज देखाडवा लाग्यो. अन्यदा एक विद्याधर अतिसार रोगवालो ते आश्रममां आवी पहोंच्यो, अतिसारना कारणथी आकाशगामिनी विद्या भूली गयो. ते मांदा विद्याधरनी रामे औषध, पथ्यादिथी भाइनी जेम आसना वासना करी. विद्याधरे संतुष्ट थइ रामने परशुविद्या आपी. राम पण सरकडाना वनमां जइ ते विद्या सिद्ध करवा लाग्यो. ते विद्याना प्रभावथी राम जगत्मां परशुराम नामथी प्रसिद्ध थयो. एकदा रेणुका, जमदग्निनी आज्ञा लइ उत्कंठाथी पोतानी वेहेनने मलवावास्ते हस्तिनापुरमां गइ. रेणुकाने पोतानी साली जाणी अनंतवीर्य राजा मश्करी करवा लाग्यो. अनुक्रमे कामासक्त थवाथी निरंकुश थइ रेणुका साथे विषय सेवन करवा लाग्यो. अनंतवीर्यना भोगथी रेणुकाने एक पुत्र थयो, छतां विषयमां अ-

तिलुब्ध एवो जमदग्नि, दोष तरफ बिलकुल दृष्टि नहि करतां रेणुकाने पुत्र सहित पोताना आश्रममां लाव्यो. ज्यारे परशुरामे पोतानी माताने पुत्र सहित दीठी, त्यारे अत्यंत क्रोधमां आवी परशुथी पोतानी माता तथा ते छोकराना मस्तक कापी नांख्यां. ज्यारे आ वृत्तांत अनंतवीर्य राजाना जाणवामां आव्यो, त्यारे क्रोध युक्त, फोज साथे आवी जमदग्निनुं आश्रम बाली जस्म कर्युं, सर्व तापसोने त्रास पमाड्यो. तापसोये जागतां जागतां जे रोलो कर्यो ते परशुरामे सांजल्यो; सर्व वृत्तांत जाणवामां आवतां परशुराम, राजानी सेना उपर परशु लइ चडी आव्यो. परशुथी राजाने तथा तेनी सेनाना सर्व सुजटोने काष्टनी जेम चीरी नाख्या. पछी पोताना आश्रममां चाल्यो गयो. हस्तिनापुरमां प्रधान राजपुरुषोये कृतवीर्यने राज्यसिंहासन उपर बेसाड्यो. कृतवीर्य उमरमां नानो हतो. एक दिवस पोतानी माताना मुखथी पोताना पिताना मोतनुं वृत्तांत सांजली क्रोधयुक्त थइ, जमदग्निने आश्रममां आवी मारी नांख्यो. परशुराम पितानो वध सांजली क्रोधमां जाज्वल्यमान थइ हस्तिनापुर आवी कृतवीर्यने मारीने पोते राज्यसिंहासन उपर चडी बेठो, कारण के राज्य पराक्रमने आधीन छे. हवे कृतवीर्यनी तारा नामा गर्जवती राणी परशुरामना जयथी जागीने कोइ जंगलमां तापसोना आश्रममां गइ. तापसोये दयाथी ते राणीने पोताना मठना जोंयरामां निधाननी जेम गुप्त राखी. राणीये चौद स्वप्न सुचित पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं नाम सुजूम राख्युं. हवे परशुराम ज्यां ज्यां क्षत्रियनो योग मले त्यां त्यां तेनो कुहाडो जाज्वल्यमान थतो होवाथी दरेक क्षत्रियनो शिरछेद करतो. अन्यदा तारा राणी ज्यां गुप्तपणे पुत्रसहित रहेली हती त्यां परशुराम आव्यो. परशुरामनी परशु जाज्वल्यमान थइ. परशुरामे तापसोने पुछ्युं, अहींआ कोइ क्षत्रिय छे ? तापसोये कह्युं अमे गृहस्थावासमां क्षत्रियो हता. ते सांजली परशुरामे तापसोनो आश्रम तजी दीधो. आखर सर्व रुषियोने छोडी सातवार निःक्षत्रिय पृथ्वी करी. जेम अग्नि पर्वत उपर घासने बाकी राखती नथी, तेम परशुरामे जे जे क्षत्रिय राजाप्रमुख प्रसिद्ध हता, ते सर्वेने मारी, तेउनी दाढाथी एक थाल जर्यो. हवे परशुरामे गुप्तपणे निमित्तियाने पुछ्युं के मारुं मोत कोना हाथथी थशे ? निमित्तियाउये क-

युं के जे थाल तमोये दाढाथी नरेल छे, ते थालमां जे पुरुषना देखवाथी दाढानी क्षीर बनी जशे, अने आपना सिंहासन उपर बेसी जे ते क्षीरने खाशे, तेना हाथथी तमारुं मरण थशे. आ निमित्त सांजली परशुरामे दानशाला शरू करी. दानशालानी आगल एक सिंहासननी रचना करी. ते उपर क्षत्रियोनी दाढावालो स्थाल राख्यो. हवे तापसोना आश्रममां प्रतिदिन तापसोना लाडथी उछरतो वृक्षनी जेम सुजूम वृद्धि पाम्यो. ते अवसरे मेघ नामना विद्याधरे कोइ निमित्तियाने पुछ्युं के मारी पद्मश्री नामनी कन्यानो कोण वर थशे? निमित्तियाये कह्युं के सुजूम वर थशे; एम कही सुजूमनो वृत्तांत मेघ विद्याधरने कह्यो. मेघ विद्याधरे पोतानी पुत्री सुजूमने परणावी, अने सेवकनी जेम तेनी पासे रहेवा लाग्यो. एकदा सुजूमे पोतानी माताने पुछ्युं हे माता! जेमां आपणे रहीये छीये तेटलोज लोक छे के तेनाथी अधिक पण छे? माताये कह्युं, लोक तो अनंत छे, अने आ आश्रमस्थान तो मांखीना पग जेटली जगामां छे. आ लोकमां बहुज प्रसिद्ध हस्तिनापुर नामनुं नगर छे. ते नगरीमां तारा पिता कृतवीर्य नामना राजा राज्य करता हता, परंतु परशुराम तारा पिताने मारी हस्तिनापुरनो राजा बनी गयो छे. ते परशुरामे निःक्षत्रिय पृथ्वी करेली छे. परशुरामना जयथीज अमे आ आश्रममां गुप्तपणे रहीये छीये. माताना आ वचनो सांजली सुजूम मंगलना तारानी जेम लाल थयो. आश्रमथी निकली सिधो हस्तिनापुरमां आव्यो. लोकोये तेने दीठो, त्यारे विचारवा लाग्या के आवो अद्भुत सुंदर पुत्र कोनो हशे? पुछतां सुजूमे कह्युं, हुं क्षत्रिय पुत्र छुं. लोकोये कह्युं, तुं बलती अग्निमां पतंगीआनी जेम केम आव्यो? सुजूमे कह्युं, परशुरामने मारवा आव्यो छुं. लोकोए तेने बालक जाणी तेना बोलवा उपर कांइ ख्याल न कर्यो. हवे सुजूम सिंहनी जेम पूर्वोक्त सिंहासन उपर जइ बेठो. तत्काल देवताना विनियोगथी दाढानी क्षीर बनी गइ. सुजूम ते खावा लाग्यो. रक्षपाल ब्राह्मणो तत्काल सुजूमने मारवा उठ्या, ते वखते मेघनाद विद्याधरे सर्व ब्राह्मणोने मारी काढ्या. आ वृत्तांत जाणी परशुराम कंपतो, दांत पीसतो, क्रोधथी जाज्वल्यमान थतो, परशु लइ सुजूमने मारवा आव्यो. सुजूमने मारवा परशु चलावी, परंतु ते परशु सुजूम

सुधी पहोंचतां पेहेलांज आगना अंगारानी जेम उंलवाइ गइ. परशुनी विद्यादेवी सुभूमना पुण्य प्रभावथी परशु छोडी नासी गइ. सुभूमे शस्त्रना अभावथी तत्काल थालज उठावीने परशुराम उपर फेंक्यो, ते थालनुं चक्र बनी गयुं. ते चक्रे परशुरामनुं मस्तक कापी नांख्युं. ते चक्रथीज सुभूम आठमो चक्रवर्ती थयो.

आ कथा उपर लौकिक शास्त्रमां नवीन कथा बनाववामां आवी छे, परंतु ते वास्तविक नथी. नवीन कथा एवी छे के परशुराम परशुथी क्षत्रियोने मारतो मारतो रामचंद्रजी पासे पहोंच्यो, अने परशुथी रामचंद्रजीने मारवा लाग्यो. रामचंद्रजीये नम्रताथी तेनी पगचंपी करी, तेनुं तेज हरी लीधुं, तेथी परशुरामनी परशु तेना हाथमांथी नीचे पडी गइ, जे परशु ते फरीथी उपाडी शक्यो नही. इत्यादि. हवे सार लेवानो ए छे के– नवीन वात कोइ पण रीते साची ठरे तेम छे? परशुराम एक अवतारी पुरुष हता. तेनी हीनता दूर करवा वास्ते श्रीरामचंद्रजीनो संबंध लखी बताव्यो छे. ते संबंध बतावता एक अवतारना अंशने बीजा अवतारे खेंची लीधो, तेमां परशुरामनी लघुता बतावी एटलुंज नहि पण एवो पण विचार न कर्यो के बंने अवतार अज्ञानी बनी जशे. ज्यारे परशुराम पोते पोतानाज अंशने कुहाडाथी कापवा लाग्या, त्यारे तेना करतां अधिक कोण अज्ञानी कहेवाय? तेथी वास्तविक ए छे के जेनी पासे परशुरामनी परशु पडी गइ ते रामचंद्रजी न हता, परंतु ते आठमो सुभूम चक्रवर्ती हतो. ज्यारे सुभूम चक्रवर्ती थयो, त्यारे जेम परशुरामे सातवार निःक्षत्रिय पृथ्वी करी हती, तेम पाछला वेरथी सुभूमे एकवीश वार निर्ब्राह्मणी पृथ्वी करी. पोतानी जाण प्रमाणे कोइ पण ब्राह्मण जीवतो राख्यो नही. तेज कारणथी आ राजाओने ब्राह्मणोये दैत्य, राक्षसना नामथी पुस्तकोमां लखेल छे. बन्ने मरीने अधोगतिमां गया. इति परशुराम तथा सुभूम चक्रवर्ती वृत्तांत.

सुभूम चक्रवर्ती पेहेलां तेज अंतरमां छठा पुरुषपुंडरिक वासुदेव, आनंद नामना बलदेव अने बलि नामना प्रतिवासुदेव थया, तथा सुभूमनी पछी तेज अंतरमां दत्त नामना सातमा वासुदेव, नंद नामना बलदेव, अने प्रल्हाद नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पछी मिथिलानगरीमां इक्ष्वाकुवंशी कुंभ राजा थया, तेनी प्रभावती राणीनी पुत्री मल्लिनाथ नामा ओगणीशमा तीर्थंकर थया.

त्यार पछी राजगृह नगरीमां हरिवंशी सुमित्र राजा थया, तेनी पद्मावती राणीना पुत्र मुनिसुव्रत नामना वावीशमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां महापद्म नामना नवमा चक्रवर्ती थया. तेनो संवंध त्रेशठशलाकापुरुषचरित्रथी जाणवो, परंतु तेना भाइ विष्णुकुमारनो थोडो संवंध अहींआ लखीये छीये.

हस्तिनापुर नगरमां पद्मोत्तर नामना राजानी ज्वालादेवी राणीने वे पुत्रो थया. मोटानुं नाम विष्णुकुमार अने नानानुं नाम महापद्म हतुं. ते अवसरे अवंती नगरीमां श्रीधर्म नामनो राजा हतो. तेनो मंत्री नमुचि के जेनुं वीजुं नाम वल हतुं. ते मिथ्यादृष्टि ब्राह्मण हतो. तेणे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिना शिष्य सुव्रत आचार्यनी साथे पोताना मत संवंधी विवाद कर्यो. वादमां ते हारी जवाथी, रात्रिये तलवार लइ आचार्यने मारवा चाल्यो. रस्तामां पग थंभ्या. आ वृत्तांत राजाना जाणवामां आवतां तेणे नमुचिने राज्यनी हदपार कर्यो. नमुचि (वल) त्यांथी निकली हस्तिनापुरमां युवराज महापद्मनी सेवा करवा लाग्यो. तेनाथी कोइ काममां तुष्टमान थइ जवाथी महापद्मे तेने वरदान आप्युं. कालानुक्रमे पद्मोत्तर राजा तथा विष्णुकुमार वंन्ने सुव्रताचार्यनी पासे दीक्षा लेता हवा. पद्मोत्तर राजा मोक्ष पाम्या, अने विष्णुकुमार तपना प्रभावथी महा लब्धिवान् थया. अनुक्रमे सुव्रताचार्य फरी हस्तिनापुरमां आव्या. ते वखते नमुचिवले विचार कर्यो के आ अवसर वेर लेवानो छे; तेथी महापद्म चक्रवर्तीने विनंति करी के, जेम वेदमां कहेल छे तेम हुं एक महायज्ञ करवा इछुहुं, तेथी मने पूर्वोक्त आपेलुं वरदान सफल करो. महापद्मे कह्युं सुखेथी मांग. नमुचिये कह्युं के मने केटलाएक दिवससुधी आपनुं तमाम राज्य सत्तासहित आपो. ते सांभली महापद्म तेनी चाहना मुजव सर्व राज्यसत्ता आपी पोताना अंतःपुरमां चाल्या गया. हवे नमुचिये नगरथी निकली यज्ञवास्ते यज्ञमंडप वनाव्यो. पोते दीक्षा लइ तेनी अंदर आसन उपर वेठो. ते वखते जैन मतना साधु शिवाय वीजा सर्व सन्यासी, भिक्षु, तेमज गृहस्थो भेटणा लइ नमस्कार करवा आव्या. ते

प्रसंगे नमुचिये कह्युं के आ यज्ञ मंडपमां नथी आव्या एवा कोइ बाकी छे? लोकोये कह्युं के जैनमतना सुव्रताचार्य शिवाय बीजा सर्वे दर्शनवालाउ आवी गया छे. तत्काल नमुचिये क्रोधयुक्त थइ आचार्यने बोलाववा वास्ते सिपाइउने मोकल्या, अने तेउनी साथे कहेवराव्युं के राजा गमे तेवो होय तोपण सर्वने मानवा योग्य छे, तेमां पण साधुउने तो विशेष रीते मानवा योग्य छे; कारण के राजाथी उपरांत एवा अनाथ लिंगीउनी रक्षा करनार बीजो कोण छे? वली तमे अमने कांइ पण करवाने समर्थ नथी. कदापि तेउ अहींआ न आवे तो कहेवुं के तमे बहु अभिमानी छो; तथा अमारा धर्मना निंदक छो, तेथी मारा राज्यथी बहार निकली जाउ? जे रहेशे तेउने हुं मारी नांखीश, अने तेमां मने पाप पण लागवानुं नथी. सिपाइउना उपर मुजब जहांगीरी संदेसाथी आचार्ये आवी मीठा वचनथी कह्युं के गृहस्थना काममां जवुं ते अमारो कल्प (आचार) नथी. अमे अभिमानथी आव्या नथी एम आप समजशो नहि, कारण के साधुउ तो समभावथी पोताना धर्मकृत्योमां प्रवर्त्ते छे. ते सांभली नमुचिबले कठोर वचनथी शांतवृत्तिवाला मुनियोने कह्युं के, सात दिवसनी अंदर तमे सर्वे मारा राज्यनी बहार निकली जाउ, त्यार बाद जेउ रहेशे तेउने हुं मारी नांखीश. ते हुकम सांभली सर्व मुनियो पोताना तपोवनमां गया, अने विचार करवा लाग्या के हवे शुं उपाय करवो? एक साधुए विचार करी कह्युं के महापद्म चक्रवर्तीना मोटा भाइ विष्णुमुनि लब्धिपात्र छे, अने ते मेरुपर्वत उपर छे, तेना कहेवाथी नमुचिबल प्रशांत थशे, ते कारणथी कोइ चारण साधु तेने अहींआ बोलावी लावे तो सारुं थाय. तत्काल एक साधु बोल्या के मारी त्यांसुधी जवानी शक्ति छे, परंतु पाछा आववानी शक्ति नथी. गुरुए कह्युं, तमने अहींआ विष्णुमुनि लइ आवशे, तमे जाउ. ते साधु एक क्षणमां लब्धिथी त्यां गया, अने विष्णुमुनिने सर्व वृत्तांत संभलाव्यो. विष्णुमुनि तत्काल त्यांथी निकली साधुने साथे लइ गुरुनी पासे आव्या, अने वंदना करी. पछी गुरुनी आज्ञाथी एकलाज राजसभामां आव्या. ते वखते नमुचिबल विना सभाना सर्व लोकोयें उठीने तेमने वंदना करी. विष्णुमुनिये धर्मोपदेश दइ कह्युं के निःसंगी साधुउ साथे वेर खेडवुं ते महा नर्कनुं

कारण छे, कारण के साधु कोइनुं बगाडता नथी. वली जगत् पण मोटा पुरुषोने नमस्कार करे छे. कोइ शास्त्रमां मुनिनी निंदा करवी कही नथी, छतां पण आश्चर्यमात्र ए छे के, तुछ तथा क्षणिक, राज्य पामी अधम पुरुष मुनिर्उनुं अपमान करी पोताने मुनिर्उ पासे नमस्कार कराववा चाहे छे, वली नमुचिबलने तेमणे कह्युं के तुं आ बुरुं काम करवुं जवा दे, जेथी सर्व साधुर्उ सुखे रहे; वली तुं मत्सरमां मग्न थइ पोतानुं पोते शावास्ते बगाडवा चाहे छे? साधुर्उ चोमासामां विहार करता नथी, कारण के चोमासामां जीवोनी बहुज उत्पत्ति थइ जाय छे. वली सर्व जगोए तारुंज राज्य छे, तो सर्व साधु सात दिवसमां क्यां चाल्या जाय? विष्णुमहाराजना वचन सांभली नमुचिबल कुकाष्ठनी जेम अक्कड थइ बोल्यो के बहु बोलवानुं कांइ प्रयोजन नथी. पांच दिवस उपरांत जो तमारो साधु मारा राज्यमां रहेशे, तो हुं तेने चोरनी जेम बांधीश. वली तुं पण अमने मानवा योग्य छे, तेथी तुं जइने साधुर्उने कही दे के जेर्उने जीववानी चाहना होय ते नमुचिना राज्यथी बहार चाल्या जाय, कारण के राज्य ब्राह्मणनुं छे. वली तारा मानने खातर त्रण कदम अर्थात् त्रण पगलां जेटली जग्या आपु छुं, तेनी बहार कोइ साधुने देखीश, तो तेनो शिरछेद करीश. विष्णुमुनिये विचार्युं के आ पुरुष, साम अर्थात् मीठा वचनोथी समजी, माने तेवो नथी. आ तो महा पापी अने साधुर्उनो घातक छे, तेथी तेनी जडज उखेडवी जोइये. एवो निश्चय करी अत्यंत कोपमां आवी विष्णुमुनिये वैक्रिय लब्धिथी पोतानुं शरीर एक लाख योजननुं बनाव्युं. एक पगलाथी भरत क्षेत्रादि माप्या, बीजुं पगलुं पूर्वापर समुद्र उपर धरी, त्रीजुं पगलुं नमुचिबलना मस्तक उपर मुक्युं, जेथी नमुचिबल सिंहासन उपरथी पडी जमीननी अंदर उतरी गयो. तत्काल मरण पामी नर्कमां गयो. देवतार्उये विष्णुमुनिने मधुर गीत तेना कानमां संभलावी शांत कर्या, पछी शरीर संकोची गुरुपासे आवी आलोचना करी. पापनुं प्रायश्चित्त लइ विहार करी गया. जप, तप, करी संयम पाली मोक्षे गया.

आ कथाथी एम मालम पडे छे के ब्राह्मणोये पुराणोमां जे लख्युं छे के, विष्णु भगवाने वामनरूप करी यज्ञ कर्त्ता बली राजानी साथे छलना करी. ते आज विष्णुमुनि अने नमुचिनी कथा समजवी. ते कथाने ब-

गाडी. पोताना मतने अनुसारे कांइनी कांइ कथा बनावी लीधी छे. सार काढवानो ए छे के श्री जगवानने एवी शुं गरज हती के धर्मी तथा यज्ञ करनारा वलि राजा साथे छलजेद करी तेने नुकशान करवुं? एवुं काम तो निःकेवल बुद्धिहीन पुरुषोनुं छे, के पोतानी पुत्रियो तथा परस्त्रीयो साथे विषय सेवन करवानी वातो करवी. वली जगवान असत्य बोल्या, बीजा पासे असत्य बोलाव्युं, चोरी करी, बीजानी साथे कुशील सेवन कर्युं, छलथी बीजाने मार्या, कपटना काम कर्या. इत्यादि काम तो नीच जनोने करवा योग्य छे. श्री वीतराग, सर्वज्ञ परमेश्वर आवां काम कदापि करता नथी. एवां काम करनारने, परमेश्वर, जूलथी पण न मानवा जोइये इति विष्णुमुनि तथा नमुचिवलनो संबंध.

वीशमा अने एकवीशमा तीर्थंकरना अंतरमां श्री अयोध्या नगरीना दशरथ राजानी कौशल्या राणीना पद्म (रामचंद्र) नामना पुत्र थया. ते आठमा बलदेव; अने दशरथ राजानी सुमित्रा राणीना पुत्र नारायण (लक्ष्मण) थया, ते आठमा वासुदेव थया. जेनो शत्रु, रावण प्रतिवासुदेव लंकानो राजा थयो. आ सर्व वृत्तांत जगत्मां प्रसिद्ध छे. आ त्रणेनुं यथार्थ चरित्र पद्मचरित्रथी जाणवुं. लौकिक रामायणमां रावणना दश मस्तकनी जे बीना लखेली छे, ते वास्तविक नथी. मनुष्यने स्वजाविक रीते दश मस्तक कदापि होइ शकतां नथी. पद्मचरित्रना प्रथम अनुयोगमां लख्युं छे के रावणनी पासे वडीलोनी परंपराथी नव माणेकनो एक मोटो हार चाल्यो आवतो हतो. रावणे बाल्यावस्थाथी पोताना गलामां ते पेहेरी लीधो हतो. नवे माणेक बहुज मोटां हतां. चार माणेक एक बाजुना स्कंध उपर अने पांच माणेक बीजी बाजुना स्कंध उपर हारमां जडेलां रहेतां. अने तेमां नव मुखो देखातां हतां. दसमुं रावणनुं असल मुख; तेज कारणथी दसमुखवालो रावण कहेवातो हतो. रावणना समयथीज हिमालयमां बद्रीनाथनुं तीर्थ उत्पन्न थयेल छे. तेनी उत्पत्ति जैनमतना शास्त्र मुजब आ प्रमाणे जणाय छे. ते मूर्त्ति, असली पार्श्वनाथनी हती, तेनुंज नाम बद्रीनाथ राखवामां आव्युं. तेनुं संपूर्ण स्वरूप गद्यबंध पार्श्वपुराणथी जाणवुं.

त्यार पछी मिथुला नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी विजयसेन राजानी विप्रा

राणीना पुत्र श्री नमिनाथ नामना एकवीशमा तीर्थंकर थया. तेना समयमां हरिषेण नामना दशमा चक्रवर्ती थया; तथा एकवीशमा अने बावीशमा तीर्थंकरना अंतरमां अगीआरमा जय नामा चक्रवर्ती थया.

त्यार पछी सौरीपुर नगरमां हरिवंशी समुद्रविजय राजानी शिवादेवी राणीना पुत्र श्री अरिष्टनेमि नामना बावीशमा तीर्थंकर थया, तेना समयमां तेमना काकाना पुत्र नवमां कृष्ण वासुदेव अने राम (बलभद्र) बलदेव थया. तेना प्रतिशत्रु जरासिंधु प्रतिवासुदेव थया. तेमां कृष्ण अने बलदेव तो जगत्मां बहुज प्रसिद्ध छे; कारण के लोको श्री कृष्ण वासुदेवने साक्षात् इश्वर तथा इश्वरना अवतार, जगत्कर्त्ता माने छे. आ वात कृष्ण वासुदेव जीवता छतां तो बिलकुल हतीज नहि, परंतु तेमना मरण पछी लोको कृष्ण वासुदेवने इश्वरावतार मानवा लाग्या छे. शा कारणथी तेम मानवा लाग्या, तेनो हेतु त्रेशठ शलाका पुरुष चरित्रमां आ प्रमाणे लखेल छे:

ज्यारे कृष्ण वासुदेवे कोशंबी वनमां पोतानुं शरीर छोड्युं, एटले तत्काल वालुप्रभा पृथ्वी (पाताल) मां गया. बलभद्रजी एकसो वर्ष सुधि जैनदीक्षा पाली पांचमां ब्रह्म देवलोकमां गया. अवधिज्ञानथी पोताना भाइ श्री कृष्णने पातालमां त्रीजी पृथ्वीमां देखी, भाइना स्नेहथी वैक्रिय शरीर बनावी श्री कृष्णनी पासे पहोंच्या. श्रीकृष्णने आलिंगन करी कह्युं के हुं बलभद्र नामनो तमारा पाछला भवनो भाइ छुं. तमारी उपरना स्नेहथी अहींआ तमने मलवा आव्यो छुं. हवे तमारा सुखने वास्ते हुं शुं करुं ते तमो फरमावो? एम कही बलभद्रजीए कृष्णने पोताना हाथ उपर लीधा. कृष्णनुं शरीर तत्काल पारानी जेम हाथ उपरथी जमीन उपर ढली पड्युं, अने पोताना मूल स्वरूपे बनी गयुं. ते प्रमाणे प्रथम आलिंगन करवाथी, तथा वृत्तांत कहेवाथी अने हाथ उपर उपाडवाथी कृष्णे पण जाण्युं के आ मारो पूर्व भवनो अति वल्लभ भाइ बलभद्र छे. हवे कृष्णे संभ्रमथी उठी नमस्कार कर्यो, त्यारे बलभद्रजीए कह्युं, हे भाइ! श्री नेमिनाथजीए आपने कह्युं हतुं के आ विषयसुख महा दुःखदायक छे, ते तमे प्रत्यक्ष अनुभव कर्यो, वली कर्मनियंत्रित एवा तमने हुं स्वर्गमां पण लइ जवाने शक्तिवान् नथी,

परंतु तमारा स्नेहथी तमारी पासे रहेवा इछुं छुं. कृष्णे कह्युं के हे जाइ ! तमो अत्रे रहेवा छतां पण, मारे करेला कर्मनुं फल तो अवश्य जोगववानुंज छे, परंतु मने आ दुःखथी ते दुःख बहुज अधिक लागे छे केः– हुं, द्वारिका तथा सकल परिवार दग्ध थइ जवाथी एकलो कोशंबी वनमां जरा कुमारना तीरथी मृत्यु पाम्यो, जेथी मारा शत्रुउने सुख अने मारा मित्रोने दुःख थयुं. जगत्मां सर्व यदुवंश बदनाम थयो. ते कारणथी हे जाइ ! तमो जरतखंडमां जइ चक्र, शारंग, शंख, तथा गदा धारण करनारुं, पीला वस्त्रवालुं, अने गरुडनी ध्वजावालुं, मारुं रूप बनावी, विमानमां वेसी, लोकोने ते प्रमाणे बतावो, तथा नील वस्त्रवालुं तालध्वज, हल, मुशल, शस्त्रने धारण करेलुं एवुं तमारुं रूप पण विमानमां वेसी लोकोने बतावो, अने सर्व जगोए लोकोने कहो के, राम कृष्ण एवा अमे बंने अविनाशी छइए, तथा स्वेछाविहारी छइए. ज्यारे लोकोने आ सत्य प्रतीत थइ जशे, त्यारे अमारो सर्व अपयश दूर थइ जशे. श्री कृष्णनुं पूर्वोक्त सर्व कथन श्री बलजद्रजीए स्विकारी लीधुं. बलजद्रजी जरतखंडमां आवी कृष्ण बलजद्रनुं रूप करी सर्व जगोए विमानमां वेसी, लोकोने कहेवा लाग्या के, हे लोको ! तमे कृष्ण बलजद्रनी अर्थात् अमो बंनेनी सुंदर प्रतिमा बनावी, इश्वरनी बुद्धिथी, अति आदर सत्कारथी, तेनी पूजा जक्ति करो ? कारण के अमेज जगत्ना रचनारा छइए, अने स्थिति, संहार करनारा पण अमेज छइए. अमे पोतानी इछा पूर्वक स्वर्ग (वैकुंठ) मांथी चाल्या आवीए छइए, अने फरी अमारी इछा प्रमाणे स्वर्गमां जइए छीए. द्वारिकानी रचना अमेज करी हती, अने अमेज द्वारिकानो संहार कर्यो छे, कारण के ज्यारे अमे वैकुंठमां जवानी इछा करीए छीए, त्यारे द्वारिका सहित पोतानो सर्व वंश नाश करी चाल्या जइए छीए. अमारी उपरांत बीजो कोइ कर्त्ता हर्त्ता नथी. आ प्रमाणे बलजद्रजीनुं कहेवुं सांजली सर्व नगर तथा गामोना लोको, कृष्ण बलजद्रजीनी प्रतिमा, सर्व जगोए बनावी पूजवा लाग्या. जेथी बलजद्रजी प्रतिमा पूजनाराउने धन, धान्यादि अनेक वस्तुउनो लाज आपी सुखी करता हता. तेज कारणथी बहु लोको हरिजक्त थइ गया. ज्यारथी तेउ जक्त थया त्यारथी पुस्तको बनावी कृ-

ष्णजीने पूर्णब्रह्म परमात्मा इश्वरादि अनेक नामोथी लखी तेमनी स्तुति करवा लाग्या. ज्यारथी वलनद्रजीए कृष्णनी पूजा करावी, त्यारथीज लोकोए कृष्णनो इश्वरावतार मान्यो होय, एम केम न होय? लौकिक शास्त्रोमां कृष्णने थयाने पांच हजार वर्ष थयां छे, अने उपर मुजवना वृत्तांतने पण पांच हजार वर्ष थयां छे. ते वंने तपासतां उपर मुजब बन्यानी हकीकत साची सावीत थाय छे.

वावीसमा अने त्रेवीसमा तीर्थंकरना अंतरमां वारमा ब्रह्मदत्त नामना चक्रवर्ती थया. त्यार पछी वाणारसी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी अश्वसेन राजा थया. तेनी वामा राणीना पुत्र श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीसमां तीर्थंकर थया.

त्यार पछी क्षत्रियकुंड नगरमां इक्ष्वाकुवंशी सिद्धार्थ नामना राजानी त्रिसला राणीना पुत्र श्री वर्द्धमान (महावीर) स्वामि चोवीसमां चरम तीर्थंकर थया. नरतखंडमां वर्त्तमानमां जैनमत जे प्रचलित छे, ते महावीरस्वामिना शासनथीज चाले छे, अने जे शास्त्रो रचायेलां छे, ते सर्वे तेमना उपदेश अनुसारेज रचायेलां छे. श्री महावीरस्वामिनुं सर्व वृत्तांत जोवुं होय तो आवश्यकसूत्रवृत्ति, कल्पसूत्रवृत्ति तथा महावीरचरित्रादि ग्रंथोथी अवलोकन करवुं.

इति श्री तपगछीय मुनि श्री गणि मणिविजय तच्छिष्य मुनि बुद्धिविजय तच्छिष्य मुनि आत्माराम आनंदविजय विरचिते जैनतत्त्वादर्शे श्री रीषजादि महावीर पर्यंत पूर्ववृतांतनिरुपणनाम एकादश परिछेदः समाप्तः ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश परिछेद प्रारंजः ॥

आ परिछेदमां श्री महावीर स्वामिथी वर्त्तमान समय सुधिनुं वृत्तांत लखीए छीए. श्री महावीर जगवानना अग्यार शिष्य मुख्य हता. सर्व साधु शिष्यो चौद हजार हता. तेउमां ११ मुख्य हता. तेमना नाम. १ इंद्र नूति, (गौतमस्वामि) २ अग्निजूति, ३ वायूजूति, ४ व्यक्तस्वामि, ५ सुधर्मास्वामि, ६ मंडितपुत्र, ७ मौर्यपुत्र, ८ अवकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मेतार्य. श्री जगवानथी दीक्षित, छत्रीश हजार साध्वीउं थइ.

श्री जगवंतना अनेक राजाउं जक्त (सेवक) हता, जेउं श्रावक हता, तेउं मध्येथी केटलाएकना नाम, श्रेणिक राजा, उदायन, कोणिक, उदायी, वत्सदेशना उदायन, चेटक, नवमल्लिकक्षत्रिय जाति, नवलेछिक क्षत्रियजाति, चंडप्रद्योत, श्वेतराजा, विजयराजा, नंदिवर्द्धन राजा, हस्तिपालराजा. इत्यादि. सामान्य गृहस्थो आनंद, कामदेव, शंख, पुष्कली प्रमुख श्रावको, तथा जयंती, रेवती, सुलसा प्रमुख श्राविकाउं लाखो हती. श्रावक समुदायमां एक श्रावक सत्यकी नामनो अविरति सम्यग्दृष्टि हतो. तेनुं चरित्र आवश्यक शास्त्रमां नीचे प्रमाणे लखेल छे.

विशाला नगरीमां चेटक राजानी पुत्री सुज्येष्टा नामनी हती; तेणीये कुमारी अवस्थामां दीक्षा लीधी हती, अर्थात् साध्वी थइ हती. ते एकदा उपाश्रयनी अंदर सूर्यनी सन्मुख आतापना लेती हती, ते अवसरे पेढाल नामनो परिव्राजक (संन्यासी) विद्यासिद्ध हतो, ते पोतानी विद्यानुं दान करवावास्ते पात्र पुरुषनी तपास करतो हतो. विचार एवो हतो के, जो ब्रह्मचारिणीनो पुत्र होय तो दान आपवाने उत्तम पात्र गणाय. हवे ते संन्यासीये एकदा रात्रिये सुज्येष्टाने नग्नपणे शीतनी आतापना लेती दीठी, ते समये धुंध विद्याथी अंधारामां तेणीने अचेत करी तेणीनी योनिमां पोताना वीर्यनो संचार कर्यो. ते अवसरे सुज्येष्टा ऋतुधर्मने प्राप्त थइ हती, तेथी तेणीने गर्ज रह्यो. हवे साध्वीउंना समुदायमां गर्जनी चर्चा थवा लागी, परंतु अतिशय ज्ञानीये कह्युं के सुज्येष्टायें कोइनी साथे विषयसेवन करेल नथी, अने विद्याधर संबंधी सर्व वृत्तांत कह्यो, जेथी सर्वनी शंका दूर थइ गइ. योग्य समये सुज्येष्टाने पुत्र थयो, ते पुत्रने श्रावकोये पोताने घेर पाली मोटो कर्यो, तेनुं नाम सत्यकी पाड्युं. एकदा सत्यकी, साधवीउंनी साथे श्री महावीर जगवानना समवसरणमां गयो हतो, ते अवसरे कालसंदीपक नामनो एक विद्याधर श्री महावीरस्वामिने नमस्कार करी पुछवा लाग्यो के हे जगवन् मने कोनाथी जय छे? जगवंते कह्युं के आ सत्यकी नामना छोकराथी, तने जय छे. ते सांजली एकदा कालसंदीपक सत्यकीनीपासे गयो, तेनी अवज्ञा करी कहेवा लाग्यो के शुं तुं मने मारीश ? एम कही जोरावरीथी सत्यकीने पोताना पगवच्चे नाख्यो, ते समये तेनो पिता पेढाल आवी पहोंचवाथी तेनुं संरक्षण

कर्युं. पछी पेढाले पोतानी सर्व विद्या सत्यकीने आपी. सत्यकी महारोहिणी विद्यानुं साधन करतो हतो. सत्यकीनो रोहिणी विद्या साधन करवानो आ सातमो जव हतो. रोहिणी विद्या साधतां सत्यकीनो जीव पांच जवसुधी जीव (प्राण) थी मार्यो गयो. छठा जवमां पोतानुं आयुष्य छ महिना बाकी रहेते छते रोहिणी विद्या साधवानी इच्छा थवाथी ते इच्छा पार पाडवानो आरंज कर्यो नहि; परंतु आ सातमां जवमां रोहिणी विद्या साधवानो आरंज कर्यो. तेनी विधि लखीये छीये.

अनाथ मृतक मनुष्यने चितामां सलगावे, अने आला चामडाने शरीर उपर लपेटी डावा पगना अंगुठा उपरज उजा रही ज्यांसुधी ते चितामां काष्ठ सलग्या करे त्यांसुधी मंत्रनो जाप करे. आ विधि प्रमाणे सत्यकी विद्या साधतो हतो. ते वखते कालसंदीपक विद्याधर पण त्यां आवी पहोंच्यो. तेणे चितामां लाकडां नाखी सात दिवससुधी अग्नि बुजावा दीधो नहि. जेथी सत्यकीनी दृढता देखी रोहिणी देवी साक्षात् प्रगट थइ, कालसंदीपकने कहेवा लागी के तुं विघ्न कर नहि? कारण के हुं सत्यकी उपर तुष्टमान थइ सिद्ध थयेली छुं. रोहिणी देवीये तत्काल सत्यकीने कह्युं के हे सत्यकी ! तारा शरीरमां हुं कये रस्तेथी प्रवेश करुं ? सत्यकीये कह्युं, मस्तक उपरथी प्रवेश कर? रोहिणीये मस्तकने रस्तेथी प्रवेश कर्यो, जेथी सत्यकीने मस्तकमां खाडो पडी गयो. देवीये तुष्टमान थइ मस्तकना खाडानी जगाये त्रीजा नेत्रनो आकार बनाव्यो. हवे सत्यकी त्रण नेत्रवालो प्रसिद्ध थयो. एकदा सत्यकीये वीचार कर्यो के पेढाले मारी माता, जे राजानी कुमारी कन्या हती तेने वगाडेली छे, तेथी तेने शिक्षा करवी जोइये, एम निश्चय करी, तेणे पोताना पिता पेढालने मारी नांख्यो. जेथी लोकोये सत्यकीनुं नाम रुद्र (जयानक) पाडी दीधुं, कारण के जेणे पोताना पिताने मारी नांख्यो, तेना करतां बीजो कोण वधारे जयानक कहेवाय? हवे सत्यकीये विचार कर्यो के कालसंदीपक मारो दुश्मन छे, ते क्यां छे? ज्यारे सांजलवामां आव्युं के ते अमुक जगाये छे, त्यारे ते तेनी पासे पहोंच्यो. कालसंदीपक तेने देखी जाग्यो, सत्यकीये तेनी पूंठ पकडी. कालसंदीपक नीचे उंचे, ज्यां त्यां जागतो रह्यो, परंतु सत्यकीये तेनो पीछो मुक्यो नहि. अनुक्रमे कालसंदीपके स-

त्यकीने जूल थापमां पाडवावास्ते त्रण नगर बनाव्यां, सत्यकीये विद्याथी त्रणे नगरने सलगावी दीधां. छेवटे कालसंदीपक नासीने लवण समुद्रना पाताल कलशामां चाल्यो गयो. सत्यकीये त्यां जइ कालसंदीपकने मारी नांख्यो. पछी सत्यकी विद्याधर चक्रवर्ती थयो. त्रण संध्यासमये सर्व तीर्थ करोने वंदना करी नाटक करतो हवो. जेथी इंद्रे सत्यकीनुं नाम महेश्वर पाड्युं. महेश्वर (सत्यकी) ने बे शिष्यो थया. एक नंदीश्वर, बीजो नादीया. नादीयाने विद्याना बलथी बलद बनावी लेवामां आवतो, अने तेना उपर बेसी महेश्वर अनेक क्रीडा, कुतुहल करतो हतो. महेश्वर श्रीमहावीर जगवंतनो अविरति सम्यग्दृष्टि श्रावक हतो, परंतु अत्यंत कामी हतो, अने ब्राह्मणोनी साथे तेने बहुज वेर हतुं, तेथी विद्याना बलथी तेणे सेंकडो ब्राह्मणोनी कुमारी कन्याउने विषयसेवन करी बगाडी हती. अनुक्रमे बीजा लोकोनी तथा राजा प्रमुखथी बहु तथा पुत्रीउनी साथे ते विषय सेवन करवा लाग्यो, परंतु तेनी विद्याना जयथी कोइ तेने कांइ पण कही शकतुं नहोतुं. जे कोइ तेनी आडे आवतो, ते मार्यो जातो हतो. महेश्वरे विद्याना बलथी एक पुष्पक नामनुं विमान बनाव्युं, तेमां बेसी पोतानी इच्छा मुजब फरतो हतो. ए प्रमाणे तेनो काल व्यतीत थतो हतो. एकदा महेश्वर उज्जयनी नगरीमां आव्यो. त्यां चंद्रप्रद्योत राजानी शिवा नामनी राणी शिवाय बीजी सर्वे राणीउनी साथे तेणे विषय जोग कर्यो. बीजा लोकोनी बहु, पुत्रीउ प्रमुखने पण बगाडवा लाग्यो; जेथी चंद्रप्रद्योतने अत्यंत चिंता थवा लागी. तेणे विचार कर्यो के एवो कोइ उपाय करीये के जेथी महेश्वरनो विनाश थइ जाय; तेनी विद्याने लीधे कांइ पण उपाय चाल्यो नहि. हवे ते नगरमां उमा नामनी एक अत्यंत रुपवंत वेश्या रहेती हती. तेनो एवो नियम हतो के जे कोइ तेने अमुक संख्यानुं धन आपे, ते तेनी साथे विषय सेवन करे. एकदा महेश्वर ते वेश्याने घेर गयो. वेश्याये तेने आदर सत्कार करी तेनी सन्मुख बे फूलो राख्यां, एक खिलेलुं, अने बीजुं खिल्याविनानुं. महेश्वरे खिलेला फूल तरफ पोतानो हाथ पसार्यो, त्यारे उमाये खिल्या वगरनुं फूल महेश्वरना हाथमां आप्युं, अने कह्युं के आ फूल (कमल) तमारा योग्य छे. महेश्वरे पुछ्युं के आ कमल मारा योग्य केम ? त्यारे उमाये कह्युं के आ

खिल्याविनाना कमल समान कुमारी कन्या छे, जे तमने जोग करवा-वास्ते वल्लज छे, अने हुं तो खिलेला फूल समान छुं. महेश्वरे कह्युं के तुं पण मने अति वल्लज छो. ए प्रमाणे वार्तालाप करी बंन्ने जणाउं विषयमां आसक्त थयां. महेश्वर उमाना हावजावथी तेनेज घेर रहेवा लाग्यो. उमाये महेश्वरने पोताने आधीन करी लीधो, जेथी उमानुं वचन महे-श्वर उल्लंघन करी शकतो नहोतो. ए प्रमाणे केटलोएक काल व्यतीत थयो, त्यारे चंडप्रद्योते उमाने बोलावी बहुज आदर सत्कार तथा धन आपी कह्युं के तुं महेश्वरने आ वात पुछ? के एवो कोइ समय छे, के जे वखते तमारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी? उमाये युक्तिपूर्वक पूछी कहेवानुं वचन आप्युं. हवे उमाये महेश्वरने पुछ्युं हे स्वामि! मने एक जातनी बहुज बीक छे. आपनी विद्या कोइ वखते जती रहे छे के केम? तेनो खुलासो करो, जेथी मने निरांत थाय. महेश्वरे कह्युं हे वल्लजे! तुं विचार कर नहि. मारी विद्या जती नथी. मात्र ज्यारे हुं मैथुन सेवन करुं छुं, त्यारे मारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी, अर्थात् ते वखते मारी विद्या चालती नथी. हवे उमाये महेश्वरनी सर्व विना चंडप्रद्यो-तने कही दीधी, जेथी चंडप्रद्योते उमाने कह्युं के अमारो महेश्वरने मारवानो विचार छे, जेथी तारी साथे ते जोग जोगवतो होय, अने तेने मारीये एवी गोठवण कर. उमाये कह्युं के मने मारवी नहि. राजाये कह्युं के बहु सारुं. पछी युक्ति प्रमाणे चंडप्रद्योते उमाना घरमां सुजटोने गुप्त राख्या. ज्यारे महेश्वर उमानी साथे विषय सेवनमां मग्न थइ बंनेना शरीरो परस्पर एक शरीरवत् थइ गयां, त्यारे राजाना सुजटोये बंनेने कापी नांख्या, अने नगरनो उपद्रव दूर कर्यो. हवे महेश्वरनी सर्व वि-द्याउंये महेश्वरना शिष्य नंदीश्वरने पोतानो अधिष्ठाता बनाव्यो. ज्यारे नंदीश्वरे पोताना गुरुने उपर मुजब विटंबनाथी मार्यानी वात सांजली, त्यारे विद्याथी उज्जयनी उपर शिला विकुर्वी;अने कहेवा लाग्यो के हे मारा दासो! हवे तमे क्यां जशो? हुं सर्वने चूर्ण करी नाखुं छुं. हुं सर्व शक्ति-मान् इश्वर छुं. कोइनो मार्यो मरतो नथी. हुं सदा अविनाशी छुं. आ जयानक वचनोथी लोको बहुज डरवा लाग्या, सर्वे लोको विनंति करी पगे पडवा लाग्या, तथा सर्वेये कह्युं के अमारा अपराध क्षमा करो. नंदी

श्वरे कह्युं के तमे तेज अवस्थामां अर्थात् उमाना जगमां महेश्वरनुं लिंग स्थापन करी पूजा करो, तोज हुं तमोने जीवता छोडुं. लोकोये तेज प्रमाणे अंगीकार करी पुजा करवी शरु करी. नंदीश्वरे तेज प्रमाणे अनेक गाम, नगरोमां लोकोने डरावी मंदिरो बंधाव्यां, तेमां पूर्वोक्त आकारे जगमां लिंग स्थापन करी पूजा करावी, आ श्रीमहावीरना अविरती सम्यग्दृष्टि श्रावक महेश्वरनी उत्पत्ति छे.

श्री महावीर स्वामिना समयमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजानी चेलणा राणीने कोणिक नामनो पुत्र थयो. कोणिकने तेना पिता श्रेणिकनी साथे पूर्व जन्मनुं वेर हतुं, तेथी कोणिक मोटो थतां तेणे श्रेणिकने गादीउपरथी उठाडी, पकडीने पांजरामां केद कर्यो; अने राज्यगादी उपर पोते वेठो. एकदा पोतानी माता चेलणाए प्रसंगवशात् कोणिकने कह्युं के तुं तारा पिताने जेवो वहालो हतो, तेवो कोइ पण वीजो पुत्र वहालो न होतो, कारण के ज्यारे तुं वालक हतो, त्यारे तारी आंगली पाकी हती, जेथी तने रात्रिए विलकुल निद्रा आवती न होती, अने आखी रात तुं रोया करतो हतो. ते वखते तारा पिता तारी आंगलीने पोताना मुखमां लइ तने आराम थवा माटे ते पाकेली आंगलीनुं रुधिर तथा परु चुसी, थुकी काढतां हता; इत्यादि अनेक प्रकारथी तारा पिताये तारी उपर स्नेह करेल छे, अने तें तो पूर्वना उपकारनो वदलो तेने पांजरामां घाली केद राखवारुप करेलो छे. माटे वाह! पुत्र! तारी लायकी केटली कहुं? माताना आ प्रमाणेना वचनो सांभली कोणिक वहुज दुःखी थयो, अने पोताथी थयेला अकार्यने माटे रोवा लाग्यो, अने विचार कर्या के हुं पोतेज जइ पिताश्रीने मारा हाथथी पांजरामांथी कहाडी राज्य सिंहासन उपर वेसाडुं. एवा निश्चयथी कुहाडो लइ दोडतो पितानी पासे आव्यो. श्रेणिके विचार कर्यो के कोणिक कुहाडो लइ दोडतो मारी उपर आवे छे, जेथी आजे मने केवी रीते कमोतथी मारशे? एवा भयथी श्रेणिक कांइक खाइने मरी गया. ज्यारे कोणिके पोताना पिताने मरी गयेला दीठा त्यारे ते वहुज रोयो तथा कुटवा लाग्यो, अने अत्यंत शोकमां निमग्न थयो. ज्यारे राजगृहनी वहार तथा अंदर श्रेणिकना राजमेहेलो तथा सिंहासनादि देखतो, त्यारे ते अत्यंत दिलगीर थतो.

आ दुःखथी राजगृह नगर छोडी तेणे चंपानगरी पोतानी राज्यधानी बनावी, अने त्यां रहेवा लाग्यो: तो पण पितानी सेवा माराथी थइ नहि अने पितानुं अकार्यथी मोत थयुं. एवा वारंवार विचार आववाथी ते बहुज दुःखमां रहेवा लाग्यो. पछी मंत्रीओए एकमत करी प्रछन्नपणे एक पुस्तक बनाव्युं, तेमां एवुं कथन लखाव्युं के, जे पुत्र पोताना मरण पामेला पिताने वास्ते, पिंडप्रदान, वस्त्रजोड, आभूषण, शय्या प्रमुख ब्राह्मणोने आपे छे, ते सर्व श्राद्धादि सामग्री तेना पिताने प्राप्त थाय छे. आ पुस्तकने धुमाडावाला मकानमां राखी धुमाडाथी प्राचीन (जुना) पुस्तकजेवुं बनावी दीधुं. पछी आ पुस्तक कोणिक राजाने संभलाव्युं. कोणिके पण पितानी भक्ति वास्ते पिंडप्रदानादिमां बहुज धन वापर्युं. त्यारथीज मरीगयेला पाछल पिंडप्रदान श्राद्धादि प्रवृत्त थयेल छे. जगत्मां पण प्रसिद्ध छे के कर्ण राजाये श्राद्ध चलावेल छे, ते आज कोणिक राजानुं नाम लोकोए कर्ण राजा करी लखी दीधुं छे.

हवे प्रयाग तीर्थनी उत्पत्ति लखीए छीए. अन्निकासुत जैनाचार्य अत्यंत वृद्ध थइ जतां, गंगानदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, अने ज्यां प्रयाग छे, त्यां पोतानुं शरीर छोडी मुक्ति पाम्या, ते स्थले देवताओए मुनिनो निर्वाण महोत्सव कर्यो, त्यारथी प्रयाग तीर्थनो महिमा थयो. महावीर स्वामिना वखतमां जे राजा प्रमुख तथा व्यवहारादिनुं स्वरुप हतुं, तथा जैनमतनो विस्तार हतो ते सर्वेनुं स्वरूप आवश्यकसूत्र, वीरचरित्र, अने बृहत्कल्पादि शास्त्रोथी जाणवुं.

श्री महावीर स्वामिना समयमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा थया. तेनी पाछल कोणिक, श्रेणिकना मरण पछी कोणिके चंपानगरी वसावी, आ अधिकार पूर्वे कह्यो; हवे कोणिकना मरण पछी तेनो पुत्र उदायी राजा थयो, ते कोणिकनी पाछल तेना मरण पछी उदास थवाथी चंपा छोडी पाडलीपुत्र (पटना) वसावी पोतानी राज्यधानी करतो हवो.

श्री महावीर भगवंत विक्रम संवतथी (४७०) वर्षे पहेलां पावापुरी नगरीमां हस्तिपाल राजानी पुरातन राज्यसभामां बहोंतेर वर्षनुं आयुष्य भोगवी कार्तिक वदी अमावास्यानी रात्रिए पाछले प्रहरे पद्मासने बेठा थकां शरीरादि शेष चारे कर्मनी सर्व उपाधी छोडी निर्वाण

पाम्या. ते समये मोटा शिष्योमां गौतमस्वामि तथा सुधर्मास्वामि, आ बेज शिष्यो विद्यमान हता. बाकीना नवे शिष्यो श्री महावीर ज- गवंत विद्यमान थकां, एक मासना अनशन करी केवलज्ञान पामी मु- क्ति पाम्या हता. अगीआरे मोटा शिष्यो ज्ञातिना ब्राह्मण हता. चार वेद अने ठ वेदांगादि सर्व शास्त्रोना वेत्ता हता. अगीआरे शिष्योना मली (४४००) चउमालीससो विद्यार्थीउं हता. तेउंनो वृत्तांत लखीएठीए.

ज्यारे श्री महावीर जगवंतने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं, ते समये म- ध्यपापा नगरीमां सोमल नामनो द्विज यज्ञनो आरंज करतो हतो. ते यज्ञ प्रसंगे सर्व ब्राह्मणोमां श्रेष्ट पूर्वोक्त गौतमादि आगीआरे आचा- र्योने आमंत्रण कर्युं हतुं. ते यज्ञजूमिनी इशान दिशाए महासेन ना- मना उद्यानमां श्री महावीर जगवंतनुं समवसरण रत्न, सुवर्ण, रौप्यमय, अनुक्रमे त्रण गढ संयुक्त देवोए बनाव्युं. ते समवसरणनी वचमां सिं- हासन उपर बेसी श्री महावीर जगवंत उपदेश आपवा लाग्या. ते स- मये आकाश मार्गे, सेंकडो विमानोमां बेठा थका, चारे प्रकारना देव- ताउं जगवंत श्री महावीर स्वामिना दर्शन वास्ते तेमज उपदेश श्रवण करवा आवता हता. तेउंने देखी यज्ञ करनारा ब्राह्मणोए जाण्युं के आ सर्व देवो साक्षात् अमारा यज्ञनी आहुतीउं लेवा आवे ठे. एटला- मां देवताउं तो यज्ञजूमिने ठोडी जगवानना चरणोमां जइ हाजर थया. वली बीजा लोको पण श्री महावीर जगवंतना दर्शन करी तथा उपदेश सांजली गौतमादि पंडितोने कहेवा लाग्या के, आजे आ नगरीनी ब- हार सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जगवान् आव्या ठे. तेनुं रुप एवुं ठे के तेनुं यथार्थ वर्णन करवाने कोइ पण शक्तिवान् नथी; अने तेनो उपदेश एवो ठे के तेमां कांइ पण संशय पडतो नथी, वली लाखो देवताउं तेमना चरणोनी सेवा करे ठे; जेथी आजे अमारुं अत्यंत मोटुं जाग्योदय थयुं, के एवा सर्वज्ञ अरिहंत जगवंतना दर्शन अमे पाम्या. ज्यारे गौतमजीए लोको- ना मुखथी सर्वज्ञ एवुं वचन सांजल्युं, त्यारे तेमना मनमां इर्ष्यारुप अग्नि सलगी उठी; अने बोली उठ्या के, माराथी अधिक अने सर्वज्ञ बीजो कोण ठे ? हमणांज जइ तेना सर्वज्ञपणाने परास्त करुं तुं, इत्यादि अनेक गर्व संयुक्त वचनो कहाड्यां; पठी श्री महावीर जगवंतनी पासे ते पहोंच्या.

दूरथीज श्री भगवंतने चोत्रीश अतिशय संयुक्त, तथा इंद्रो, देवो अने मनुष्योथी परिवृत दीठा. देखतांज बोलवानी शक्ति मंद थइ गइ. भगवंतनी सन्मुख जतांज, श्री भगवंते तेमने बोलाव्या. हे गौतम इंद्रभूति ! तमे आव्या ? गौतमजीए मनमां विचार्युं के, मारुं नाम पण आ जाणे छे; परंतु तेमां शुं आश्चर्य ? जगत्‌मां प्रसिद्ध एवा मने कोण जाणतुं नथी ? मारुं नाम लेवाथी हुं कांइ तेने सर्वज्ञ मानुं नहि; परंतु मारा मनना जे संशय छे, ते संशय जो ते दूर करे तो हुं तेने सर्वज्ञ मानुं. तत्काल भगवंते कह्युं हे गौतम ? तमारा मनमां आ संशय छे– जीव छे के नहि ? अने ते संशय तमने वेदोनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयेल छे. ते श्रुतियो कहीये छीये.

" विज्ञान घन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्तीत्यादि " तेनाथी विरुद्ध, आ श्रुति छे, " सवै अयमात्मा ज्ञानमय इत्यादि " आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमां जेम भासन थाय छे, तेम हुं तमने कहुं छुं ते सांभलो. प्रथम श्रुतिनो अर्थ तमे आ प्रमाणे करो छो– नीलादि रूप होवाथी विज्ञानज चैतन्य छे, विशिष्ट जे नीलादि तेथी जे घन ते विज्ञानघन, ते विज्ञानघन आ प्रत्यक्ष परिछिद्यमान रूप पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, आ पांचे भूतोथी उत्पन्न थइ फरी तेनी सायेज नाश थइ जाय छे, अर्थात् भूतोनो नाश थवाथी, तेनी साथे विज्ञानघननो पण नाश थइ जाय छे, ते कारणथी प्रेत्य संज्ञा नथी, अर्थात् मरण पछी फरी परलोक गमन, नर, नारकादि जन्म थतो नथी. आ श्रुतिथी जीवनी नास्ति अर्थात् तेनो अभाव सिद्ध थाय छे. हवे बीजी श्रुति कहे छे के– आ आत्मा ज्ञानमय अर्थात् ज्ञान स्वरूप छे, इत्यादि. तेथी आत्मानी सिद्धि थाय छे. आ बंने श्रुतियो परस्पर विरोधी होवाथी कांइ निश्चय थइ शकतो नथी. वली बीजा पण आत्माना स्वरूपमां परस्पर विरोधी मत छे. कोइ कहे छे के, यतः ॥ एतावानेव पुरुषो, यावानिंद्रियगोचरः ॥ भद्रे वृकपदं पश्य, यद्वदंत्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥ वली बीजा मतवाला कहे छे के यतः ॥ " न रूपं भिक्षवः पुद्गलः " अर्थात् आत्मा अमूर्त छे. वली एक आगम एवुं कहे छे के यतः ॥ " अकर्त्ता निर्गुणो भोक्ता आत्मा " अर्थात् अकर्त्ता, सत्व, रज, तम, आ त्रण गुणोथी रहित सुख

दुःखनो जोगवनार आत्मा छे. आ प्रमाणे जुदाजुदा मतो छे, तेमां सत्य कोण अने असत्य कोण? परस्पर विरोधी होवाथी सर्व तो सत्य थइ शकता नथी, वली युक्ति प्रमाणथी पण मृत्युपछी आत्मानुं परलोक गमन सिद्ध थइ शकतुं नथी. हे गौतम ? पूर्वोक्त तमारा मनमां संशय छे. तेनो उत्तर तमने कहुं छुं ते सांजलो? पछी श्री जगवंते गौतमस्वामिनो संशय दूर करवावास्ते वेदना पदोनो यथार्थ अर्थ कही संजलाव्यो, ते सर्व अधिकार मूलआवश्यक तथा श्री विशेषावश्यक ग्रंथोथी जाणवो. ग्रंथ वधवाना तथा अति गहन थवाना सबबथी में अहींआ लखेल नथी. अगीआरे गणधरोनां संशय दूर करवाना कथनना चार हजार श्लोको छे. ज्यारे गौतमजीनो संशय दूर थयो, त्यारे गौतमजी पोताना पांचसो विद्यार्थीउनी साथे दीक्षा लइ श्रीजगवंतना प्रथम शिष्य (गणधर) थया.

इंद्रजूतिए दीक्षा लीधी, एम सांजली तेमना जाइ अग्निजूति अत्यंत अजिमान युक्त वचनो बोलवा लाग्या, अने लोकोने कहेवा लाग्या के, मारा जाइने इंद्रजालीआए कपटथी जीती पोतानो शिष्य बनावेल छे, परंतु ते इंद्रजालीआने हरावी हमणांज हुं मारा जाइने पाछो लइ आवुं बुं. एम बोली ते जगवंत श्री महावीरस्वामि पासे आव्या. ज्यारे जगवंतने दीठा त्यारे मननो सर्व वेग नरम पडी गयो, अने बोलवानी शक्ति पण रहि नहि. मनमां अद्भुत आश्चर्य पाम्या, कारण के तेवुं रुप तेणे कदि दीठुं पण न होतुं, तेम सांजल्युं पण न होतुं. जगवंते तेने नाम लइ बोलाव्या. अग्निजूतिए विचार्युं के, मारुं नाम पण आ जाणे छे, परंतु तेमां कांइ नवाइ नथी, हुं प्रसिद्ध छुं, तेथी मने कोण जाणतुं नथी ? परंतु मारा मनमां जे संशय छे, ते दूर करे तो, हुं तेने सर्वज्ञ मानुं. जगवंते कह्युं, हे अग्निजूति ! तमारा मनमां आ संशय छे— "कर्म छे के नहि " आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध एवा वेद पदोथी थयेल छे. तमे वेद पदोनो यथार्थ अर्थ जाणता नथी, तेथी तेम थयेल छे. ते वेद पद आ छे. " पुरुष एवे दंग्नि सर्वंयद्भूतं यच्च जाव्यं उता मृतत्व स्येशानो यदन्नेनाऽतिरोहति यदेजति यन्नेजति यद्दूरेयदुअंतिके पदंतरस्य यदुत सर्वस्यास्य बाह्यत इत्या।द " तेनाथी विरुद्ध आ श्रुति छे. यतः ॥ " पुण्यः पुण्येनेत्यादि " आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमा-

णे जासन थाय छे. पुरुष अर्थात् आत्मा, एव शब्द अवधारण वास्ते छे. ते अवधारण कर्म तेमज प्रधानादिना व्यवच्छेद वास्ते छे, " इदं सर्व " अर्थात् आ सर्व प्रत्यक्ष वर्तमान चेतन वस्तु, यद्भूतं अर्थात् जे जूतकालमां थयेल छे, अने जविष्यमां थशे, एवो जे संसार अने मुक्ति ते सर्व पुरुष आत्मा ब्रह्मज छे, " ग्निं " अत्र वाक्यालंकारमां छे, तथा उत शब्द अतिशब्दना अर्थ वास्ते छे, अने अपि शब्द समुच्चय अर्थ वाची छे. अमृतत्वस्य अमरणजावनो अर्थात् मोक्षनो "इसानः" प्रभुः अर्थात् स्वामि छे. "यदिति यच्चेति" च अक्षरनो लोप थवाथी यदिति थयो, अर्थात् अन्नथी जे वृद्धिने प्राप्त थाय छे "यदेजति" जे चाले छे, एवा जे पशुआदि, अने जे चालता नथी एवा जे पर्वतादि, अने जे दूर छे एवा जे मेरु आदि, तथा जे समीप छे एवा जे शरीर आदि, पूर्वोक्त सर्व पदार्थ, पुरुष अर्थात् ब्रह्मज छे "यतउअंतिके" उ अक्षर अवधारणार्थमां छे. आ श्रुतिथी कर्मनो अजाव सिद्ध थाय छे, अने बीजी श्रुतिथी तथा शास्त्रांतरोथी कर्मनी सिद्धि थाय छे. वली युक्तिथी कर्म सिद्ध थतां नथी, कारण के अमूर्त्त आत्माने मुर्त्तिमान् कर्म केवी रीते लागे ? ते कारणथी कर्म छे के नहि, एवो तमारा मनमां संशय छे. एम कही जगवाने वेदश्रुतियोनो अर्थ यथास्थित तेमने समजावी, तेमनो पूर्वपक्ष खंडन कर्यो, ते विस्तारथी मूलावश्यक तथा विशेषावश्यक शास्त्रथी जाणवुं. एवी रीते अग्निजूतिए पण पोताना शिष्यो साथे गौतमजीनी जेम दीक्षा लीधी.

अग्निजूतिनी दीक्षानी वात सांजली त्रीजा वायुजूति आव्या. बंने जाइउए दीक्षा लेवाथी वायुजूतिने विद्यानुं अजिमान न रह्युं. मनमां विचार कर्यो के जगवानने वंदना करवा जाउं, एवा विचारथी आवी जगवंतने नमस्कार कर्यो. जगवंते कह्युं के हे वायुजूति! तमारा मनमां संशय छे. परंतु तमे क्षोजथी पुछी शकता नथी. तमने संशय छे ते आ छे—जे जीवछे ते देहज छे, अने आ संशय तमने विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल छे, तमे ते वेदपदोनो अर्थ बराबर जाणता नथी, ते वेदपद आ छे. " विज्ञानघन इत्यादि" प्रथम गणधरनी श्रुति जाणवी. ते श्रुतिथी देहथी न्यारो जीव (आत्मा) सिद्ध थतो नथी, अने ते श्रुतिथी विरुद्ध श्रुति आ छे– "सत्येनलज्यस्तपसाह्येपब्रह्मचर्येण नित्यज्योतिर्मयोहिशु-

ऽोयं पश्यंति धीरा यतयः संयतात्मान इत्यादि" आ श्रुतिथी देहथी जिन्न आत्मा सिद्ध थाय ठे, आ तमारा मनमां संशय ठे. जगवाने सर्व संशय दूर कर्यो. वायुजूतिए पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी.

वायुजूतिनी जेम बाकीना आठे आचार्यो अनुक्रमे आव्या. चोथा अव्यक्तजी आव्या. तेमना मनमां संशय हतो के, पांच जूत ठे के नहि? आ संशय विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो. परस्पर विरुद्ध श्रुतियो आ ठे– "स्वप्नोपमवैसकलमित्येव ब्रह्मविधिरंजसाविज्ञेय इत्यादीनि," तेनाथी विरुद्ध श्रुति, "द्यावापृथिवीजनयन्देव इत्यादि;" तथा पृथिवी देवता, अप देवता इत्यादि, तेनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय ठे–स्वप्न सरखुं संपूर्ण जगत् ठे, वै निपात अवधारणार्थे ठे. "एष ब्रह्मविधि" अर्थात् आ परमार्थ प्रकारठे. अंजसा एटले सिद्धा न्यायथी जाणवा योग्य ठे; आ श्रुति पांचे जूतोनो अजाव कथन करे ठे, बीजी श्रुतियो पांचे जूतोनी सत्ता कथन करे ठे, आ तमारा मनमां संशय ठे. तमारा मनमां एवो पण संशय ठे के–युक्तिथी पांच जूतो सिद्ध थता नथी. श्री जगवाने तेमनो पूर्वपक्ष खंडन करी वेदपदोनो यथार्थ अर्थ समजाव्यो. ते अधिकार उक्त ग्रंथोथी जाणवो. अव्यक्तजीए पण पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी.

पांचमा सुधर्म नामना आचार्य आव्या, तेमनो अधिकार पण पूर्वोक्त रीते जाणवो. श्रीजगवाने कह्युं के तमारा मनमां आ संशय ठे–मनुष्यादि सर्व जेवा आ जवमां ठे, तेवाज जविष्यना जन्ममां उत्पन्न थायठे, के मनुष्य पण पशुआदि थइ जाय ठे? आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल ठे. ते वेदश्रुतियो आ ठे– "पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं इत्यादीनि" तेनाथी विरुद्ध श्रुति– "शृगालोवैएपजायते यःसपुरीषोदह्यत इत्यादि" आ सर्व श्रुतियोनो अर्थ जगवाने तेमने यथार्थ समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो. तेमणे पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी.

ठठा मंडिक पुत्र आव्या. तेमना मनमां संशय हतो के–बंध, मोक्ष ठे के नहि? आ संशय पण विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हतो. ते श्रुतियो आ ठे–"स एष विगुणो विजुर्न बध्यते. संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा॥

एषबाह्यमभ्यंतरंवावेद इत्यादीनि" आ श्रुतिनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे. आ जीव सत्वादि गुणरहित सर्वगत सर्वव्यापी, पुण्यपापथी तेने बंध थतो नथी, अने संसारमां ते भ्रमण पण करतो नथी, कर्मोंथी बुटतो नथी, अने बंधनो अजाव होवाथी, बीजाउंने कर्मोंथी गेडावतो पण नथी, आ प्रमाणेना कथनथी आत्मा अकर्त्ता छे, तेज फरीथी बतावे छे–आ पुरुष पोताना आत्माथी जिन्न महत् अहंकारादि, तेमज अभ्यंतर एवुं पोतानुं स्वरूप जाणतो नथी, कारण के जाणवुं ते ज्ञानथी थाय छे, अने ज्ञान, प्रकृतिनो धर्म छे, प्रकृति अचेतन छे; तेथी बंध मोक्ष नथी. आ श्रुतिथी बंध मोक्षनो अजाव सिद्ध थाय छे, तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे–"नहि वै शरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति अशरीरं वा वसंतं प्रियाप्रिये नस्पृशत इत्यादीनि" जावार्थ–शरीर सहितने सुख डुःखनो अजाव कदापि थतो नथी. तात्पर्य ए छे के–संसारी जीव सुख डुःखथी रहित थतो नथी, अने कारणना अजावथी अमूर्त आत्माने सुखडुःख स्पर्श करी शकता नथी. आ श्रुतिथी बंधमोक्ष सिद्ध थाय छे; तथा तमारा मनमां एम पण छे के–युक्तिथी पण बंध मोक्ष सिद्ध थता नथी. इत्यादि संशयनो जगवाने यथार्थ खुलासो करी तेमनो संशय दूर कर्यो; पछी मंडितपुत्रे पोताना साडा त्रणसो शिष्योनी साथे दीक्षा लीधी.

सातमा मौर्यपुत्र आव्या. तेमना मनमां आ संशय छे– देवता छे किंवा नहि ? आ संशय परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेलो छे, ते श्रुतियो आ छे–"स एष यज्ञायुधी यजमानोंजसास्वर्गलोकं गछति इत्यादीनि" आ श्रुतियो स्वर्ग तथा देवताउंनी सिद्धि करे छे. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे–"अपामसोमं अमृता अजूम अगमामद्योतिर्विदामदेवान् ॥ किं नूनमस्मान् तृणवदरातिः किमुधूर्त्ति रमृतमर्त्यस्येत्यादीनि" तथा "कोजानाति मायोपमान् गीर्वाणानिंद्रयमवरुणकुवेरादीन् इत्यादि" आ श्रुतिनो जावार्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे– पाणी पीता थकां अर्थात् सोम लतानो रस पीता थकां अमृत (अमरण)धर्मवाला अमे थया छीए, ज्योति, स्वर्ग अने देवताने अमे जाणता नथी. वली देवता अमे थया छीए ते पण जाणता नथी, देवता तृणनी जेम

श्रमने शुं करी शके छे? आ श्रुति अजाव प्रतिपादन करे छे. वली आ श्रुति जावनी प्रतिपादक छे–" धूर्तिजरा अमृतमर्त्यस्य " अमृतत्व प्राप्त पुरुषने शुं करी शके छे ? आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ समजावी श्रीजगवंते तेमनो संशय दूर कस्यो. पछी तेमणे पोताना साडा त्रणसो गात्रोनी साथे दीक्षा लीधी.

आठमा अकंपित आव्या. तेमना मनमां नर्क छे के नहि ? एवो संशय हतो. ते संशय पण परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हतो, ते श्रुतियो आ छे– "नारकोवै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति इत्यादि" जावार्थ– जे ब्राह्मण शूद्रनुं अन्न खाय छे ते नारकी थाय छे. आ श्रुतिथी नर्क सिद्ध थाय छे; तथा "नहवै प्रेत्यनरके नारकाः संतीत्यादि" आ श्रुतिथी नर्कनो अजाव सिद्ध थाय छे. आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्रीजगवंते समजावी तेमनो संशय दूर कस्यो. पछी अकंपितजीए पोताना त्रणसो गात्रोनी साथे दीक्षा लीधी.

नवमा अचलज्राता आव्या. तेमना मनमां संशय हतो के– पुण्यपाप छे के नहि ? आ संशय वेदनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो. ते श्रुतियो आ छे– " पुरुष एवेदं ग्निसर्वंइत्यादि" बीजा गणधरनी जेम. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– " पुण्यं पुण्येन कर्मणा जवति, पापं पापेन कर्मणा जवति इत्यादि " आ श्रुतिथी पुण्य पाप सिद्ध थाय छे. आ संशय तेमना जगवंते दूर कस्या. तेमणे पण पोताना त्रणसो गात्रो साथे दीक्षा लीधी.

हवे दसमा मेतार्य आव्या. तेमना मनमां एवो संशय हतो के–परलोक छे के नहि ? आ संशय वेदनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो. ते श्रुतियो आ छे– "विज्ञानघन इत्यादि " प्रथम गणधरनी जेम आ श्रुति अजाव सूचक छे, तथा " सवै अयं आत्मा ज्ञानमय इत्यादि" आ श्रुति जावप्रतिपादक छे. तेमनो यथार्थ अर्थ समजावी जगवंते संशय दूर कस्यो. पछी मेतार्यजीए पोताना त्रणसो गात्रो साथे दीक्षा लीधी.

हवे छेला (अगीआरमा) प्रजासजी आव्या. तेमना मनमां संशय हतो के– निर्वाण छे के नहि ? ते श्रुतियो आ छे–" जरामर्यं वा एतत् सर्वं यदग्निहोत्रं ". जावार्थ–अग्निहोत्र जीवहिंसा संयुक्त छे, अने जन्म-

मरणनुं कारण छे, छतां अग्निहोत्र निरंतर करवो एम वेदमां कथन करेल छे, जेथी एवो क्यो समय छे के जे वखते मोक्ष प्राप्त करवानुं कर्म करीये ? ते कारणथी आत्मानो मोक्ष (निर्वाण) कदापि थइ शकतो नथी. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– "द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति" आ श्रुति मोक्षप्राप्ति सूचवे छे. आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्री भगवंते समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो. पछी प्रभासजीए पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी.

श्री महावीर भगवंतने वैशाख सुद दशमीना रोज मध्यपापानगरीना महासेन वनमां पूर्वोक्त (४४००) शिष्यो थया. पछी राजपुत्र तथा श्रेष्ठि पुत्रादि अने राजपुत्री तथा श्रेष्ठिपुत्री तथा अने राजा तथा राणी प्रमुख अनेक मनुष्योए दीक्षा लीधी.

अनुक्रमे भगवंत श्री महावीरस्वामि आयुष्य पूर्ण थये पावापुरीमां मोक्ष प्राप्त करता हवा. तेज रात्रिए इंद्रभूति (गौतमस्वामि) ने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. इंद्रोए निर्वाण महोत्सव कर्यो, अने सुधर्मा स्वामिने श्री महावीरस्वामिनी गादी उपर स्थापन कर्या. श्री गौतमस्वामिने गादी उपर स्थापन. कर्या तेनुं कारण ए छे के केवलज्ञानी पुरुष, कोइ गादीपति थइ शकता नथी, कारण के केवली तो तेमने जे कांइ पुछवामां आवे तेनो उत्तर पोताना ज्ञानथीज आपे छे, परंतु एम कहेता नथी के, हुं अमुक तीर्थंकरना कथन मुजब कहुं छुं, ते कारणथी केवलज्ञानी गादीपति थता नथी. जो गादीपति थाय तो तीर्थंकरना शासननो लोप थाय, जे कदापि थतुं नथी, कारण के अनादि रीतिने केवली केम उत्थापन करे ? तेज कारणथी श्रीगौतमस्वामि गादीपति थया नहि, अने श्री सुधर्मास्वामिने गादि उपर विराजमान करवामां आव्या.

१ श्री सुधर्मस्वामि पचास वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, त्रीश वर्षसुधी श्रीमहावीर भगवंतनी चरण सेवामां रह्या, श्रीभगवंतना निर्वाण पछी बार वर्षसुधी छद्मस्थ रह्या, अने आठ वर्ष केवलीपर्याय पाली मोक्षे गया. भगवंत श्री महावीरस्वामि पछी श्रीगौतमस्वामि केवलज्ञान पामी बार वर्ष जीवता रह्या. श्रीगौतमस्वामिना निर्वाण पछी श्रीसुधर्मास्वामिने केवलज्ञान प्राप्त थयुं. श्री सुधर्मस्वामिनुं आयुष्य (१००) एकसो

वर्षनुं हतुं. तेउं श्री महावीरस्वामि पठी वीश वर्षे मोक्ष गया.

२ श्री सुधर्मस्वामिनी पाट उपर श्री जंबुस्वामि बेठा. राजगृहनगरनिवासी श्री रीषजदत्त शेठनी धारणी नामनी स्त्रीना कुखथी तेउं जन्म्या हता. नव्वाणु क्रोड सोनैया तथा आठ स्त्रीउंनो त्याग करी तेउंये दीक्षा लीधी. सोल वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, वीश वर्ष व्रतपर्याय, अने चमालीस वर्ष केवलपर्याय पाली श्री महावीरना निर्वाण पठी चोसठमे वर्षे मोक्ष गया.

श्री जंबुस्वामि पठी जरतक्षेत्रमां दश बाबतो विछेद गइ. तेना नाम, १ मनःपर्यायज्ञान, २ परमावधिज्ञान, ३ पुलाकलब्धि, ४ आहारकशरीर ५ क्षपकश्रेणि, ६ उपशमश्रेणि, ७ जिनकल्पिमुनिनी रीति, ८ परिहारविशुद्धि चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र, ए केवलज्ञान, १० मोक्षप्राप्ति. श्री महावीरस्वामि केवलज्ञान पाम्या पठी चौद वर्षे जमाली नामनो प्रथम निन्हव थयो, अने सोल वर्षे तिष्यगुप्त नामनो बीजो निन्हव थयो. श्री जंबुस्वामिनुं आयुष्य (८०) एंशी वर्षनुं हतुं.

३ श्री जंबुस्वामिनी पाट उपर श्री प्रजवास्वामि बेठा. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे छे– विंध्याचल पर्वत नजीक जयपुर नामनुं नगर हतुं, तेनो विंध्य नामनो राजा हतो. तेने बे पुत्रो थया, एक मोटो प्रजव, बीजो छोटो प्रजव. मोटो प्रजव कोइ कारणसर गुस्से थइ जयपुर नगरथी बहार निकली विंध्याचलनी विषम जगामां गाम वसावी रहेवा लाग्यो, अने चोरी, रस्तानी लूंट, धाडचोरी, जबरीथी पकडवुं विगेरे कृत्यो करी पोतानी आजीविका चलावतो हतो. एकदा पांचसे चोरनो समुदाय लइ राजगृह नगरमां जंबुजीनुं घर लुंटवा आव्यो. जंबुस्वामीए तेने प्रतिबोध कर्यो. ते प्रतिबोधथी तेणे पांचसे चोरोनी साथे जंबुस्वामिसहवर्तमान दीक्षा लीधी. इत्यादि श्री जंबुस्वामि तथा प्रजवस्वामिनो अधिकार जंबुचरित्र तथा परिशिष्ट पर्वथी जाणवो. प्रजवस्वामि त्रीश वर्ष गृहस्थपर्याय, चमालीस वर्ष व्रतपर्याय, अने अगीआर वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु पंचासी वर्षनुं जोगवी श्रीमहावीरस्वामि पठी पंचोतेर वर्षे स्वर्गे गया.

४ श्रीप्रजवस्वामिनी पाट उपर श्री शिय्यंजवस्वामि वेठा. जेउए मनक साधु वास्ते श्रीदशवैकालिक सूत्रनी रचना करी. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे–एकदा प्रस्तावे प्रजवस्वामिने रात्रिना विचार थयो के मारी पाट उपर कोण वेसशे ? ज्ञानवलथी विचारतां सर्व संघमां पोतानी पाट योग्य कोइ देखवामां आव्युं नहीं, तेथी पर दर्शनवालाउ तरफ ज्ञानवलथी देखवा लाग्या. अनुक्रमे तेमणे राजगृह नगरमां शिय्यंजव जट्टने यज्ञ करतां थकां, पोतानी पाट योग्य दीठा. तत्काल प्रजवस्वामि विहार करी सपरिवार राजगृह नगरमां आव्या. पोताना वे साधुने आदेश कर्यो के तमे यज्ञस्थानमां जइ जिक्षावास्ते धर्मलाज कहो, अने यज्ञ करनाराउने आ प्रमाणे कहो– "अहोकष्टमहोकष्टं तत्त्वं विज्ञायते नहि" वंने साधुए गुरुना आदेश मुजव पूर्वोक्त सर्व कर्युं. ज्यारे ब्राह्मणोए "अहोकष्टं" इत्यादि श्रवण कर्युं, ते वखते यज्ञवाडामां शिय्यंजव ब्राह्मणने यज्ञदीक्षा लेवानी हती, तेथी तेउ यज्ञवाडाना दरवाजामां उजा हता, जेथी तेमणे पण मुनियोनुं "अहोकष्टं" इत्यादि श्रवण कर्युं. तत्काल तेउ विचारवा लाग्या के आवा उपशमप्रधान साधु कदापि असत्य वोलता नथी, तेथी तेमना मनमां संशय थयो, जेथी उपाध्यायने पुछ्युं के तत्त्व शुं ठे? उपाध्यायजीए कह्युं के चार वेदमां जे कथन करेल ठे तेज तत्त्वठे, वेद उपरांत वीजुं तत्त्व नथी. शिय्यंजवे कह्युं के तमे दक्षिणाना लोजथी मने तत्त्व वतावता नथी. वली रागद्वेषरहित, निर्मम, निःपरिग्रह, शांत, दांत, महंत एवा मुनियोनुं कथन कदापि असत्य होतुं नथी, तेथी हवे तमे मारा गुरु नथी, तमे तो जन्मथी जगत्ने ठगवानी वाजी रची वेठा ठो, माटे शिक्षायोग्य ठो; वास्ते कां तो मने तत्त्व वतावो ? अने तेम नहि करशो तो तलवारथी हुं तमारुं शिरछेद करीश. एम कहेतांज अत्यंत क्रोधना आवेशमां आवी जवाथी मियानथी तलवार वहार काढी. उपाध्याये प्राणांत कष्ट देखी कह्युं के अमारा वेदोमां पण एमज लखेल ठे, तथा अमारी आम्नाय पण एवीज ठे के ज्यारे कोइ अमारुं शिरछेद करवा आवे त्यारेज तत्त्व कहेवुं, अन्यथा नहीं. तेथी हवे हुं तमने तत्त्व कहुं ठुं. आ यज्ञस्थंजनी नीचे अर्हंतनी प्रतिमा स्थापन करेली ठे, अने तेनी प्रछन्न रीते नीचेज पूजा करवामां आवे ठे.

तेना प्रज्ञावथी यज्ञना सर्वे विघ्नो दूर थइ जाय छे. जो यज्ञस्थंज नीचे अर्हंतनी प्रतिमा न राखवामां आवे तो महातपा सिद्धपुत्र तथा नारद, आ वंने यज्ञने विध्वंस करी नाखे छे. पछी उपाध्यायजीए स्थंज उखेडी अर्हंतनी प्रतिमा वतावी, अने कह्युं के आ प्रतिमा जे देवनी छे, ते देव, श्री अर्हंतनो कथन करेलो धर्म, जीवदया रूप तत्व छे; अने आ जे वेदप्रतिपाद्य यज्ञ छे, ते सर्व हिंसात्मक रूप होवाथी विडंवन रूप छे, परंतु शुं करीए? जो अमे एम न करीए तो अमारी आजीविका चालती नथी. हवे तुं तत्त्व समजी ले, अने मने छोडी दे; तथा परमार्हंत थइ जा. कारण के में तने मारा पेटने वास्ते वहु दिवस रखडाव्यो छे. गुरुनुं शुद्ध अंतःकरण थयेलुं जाणी शिय्यंजवे तेने नमस्कार कर्यो, अने कह्युं के यथार्थ तत्त्वनो प्रकाश करवाथी तमे हवे साचा उपाध्याय छो. एम कही तुष्टमान थइ यज्ञनी सर्व सामग्री सुवर्णपात्रादि शिय्यंजवे उपाध्यायने आपी दीधी, अने प्रजवस्वामि पासे जइ तत्वनुं स्वरूप पुछी दीक्षा लीधी. तेमनो शेष वृत्तांत परिशिष्टपर्व ग्रंथथी जाणी लेवो. शिय्यंजव स्वामि अठावीश वर्षे गृहस्थावास, अगीआर वर्ष सामान्य साधु, अने तेत्रीश वर्ष युगप्रधानाचार्य पदवी जोगवी, सर्व आयु वासठ वर्षनुं जोगवी श्रीमहावीर जगवंत पछी अठाणुं वर्षे स्वर्गे गया.

५ श्रीशिय्यंजवस्वामिनी पाट उपर यशोजद्रस्वामि वेठा. ते बावीस वर्ष गृहस्थवास, चौद वर्ष व्रतपर्याय, पचास वर्ष युगप्रधान पदवी. सर्व आयु छासी वर्षनुं जोगवी श्रीमहावीर पछी (१४८) वर्षे स्वर्गे गया.

६ श्री यशोजद्रस्वामिनी पाट उपर एक संजूतविजय अने वीजा जद्रवाहुस्वामि, आ वंने वेठा. संजूतविजयजी वेंतालीस वर्ष गृहवास, चालीस वर्ष व्रतपर्याय अने आठ वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु नेवु वर्षनुं जोगवी स्वर्गमां गया. श्रीजद्रवाहुस्वामिए १ आवश्यक निर्युक्ति, २ दशवैकालिक निर्युक्ति, ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति, ४ आचारांग निर्युक्ति, ५ सूत्रकृतांग निर्युक्ति, ६ सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति, ७ रीपिजापित निर्युक्ति ८ कल्पनिर्युक्ति, ९ व्यवहार निर्युक्ति, १० दशानिर्युक्ति, आ दश निर्युक्तियो तथा १ कल्प, २ व्यवहार, ३ दशाश्रुतस्कंध, आ त्रण नवमा पूर्वमांथी उद्धार करी वनाव्या. वली जद्रवाहुसंहिता नामनुं अति विस्तारवालुं

ज्योतिष शास्त्र बनाव्युं. उपसर्गहरस्तोत्र बनाव्युं. एवीरीते जैनमतवालाउं उपर बहुज उपकार कर्यो. भद्रबाहुस्वामिने वराहमिहिर नामना एक सगा भाइ हता, ते प्रथम तो जैनमतना साधु थया हता, पछी साधुपणुं तजी दीधुं, तेमणे वराही संहिता बनावी. विक्रमादित्यनी सभामां जे वराह मिहिर पंडित हता ते बीजा वराहमिहिर थया छे. संहिताकारक ते नहीं. तेमनुं सर्व वृत्तांत परिशिष्ट पर्वथी जाणवुं. श्रीभद्रबाहुस्वामि पीसतालीस वर्ष गृहस्थावास, सत्तर वर्ष व्रतपर्याय, चौद वर्ष युगप्रधान, सर्व आयु छोंतेर वर्षनुं भोगवी श्रीमहावीर पछी (१७०) वर्षे स्वर्गे गया.

श्री संभूतविजय तथा श्रीभद्रबाहुस्वामिनी पाट उपर श्रीस्थूलभद्रस्वामि बेठा. तेमनो सर्व वृत्तांत परिशिष्ट पर्व ग्रंथथी जाणवो. १ प्रभवस्वामि, २ शिय्यंभवस्वामि, ३ यशोभद्रस्वामि, संभूतविजय, ५ भद्रबाहुस्वामि, ६ स्थूलभद्र. आ छ आचार्यो चौद पूर्वना वेत्ता हता. श्री स्थूलभद्रजी त्रीस वर्ष गृहस्थावास, चोवीस वर्ष व्रतपर्याय, पीसतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु नवाणुं वर्षनुं भोगवी श्रीमहावीर पछी (२१५) वर्षे स्वर्गमां गया. श्रीमहावीर पछी वसे चौद वर्षे आपाढ आचार्यनो शिष्य त्रीजो निन्हव थयो.

स्थूलिभद्रजीना समयमां नवनंदोनुं (१५५) एकसो पंचावन वर्षनुं राज्य उत्थापी चाणाक्य ब्राह्मणे चंद्रगुप्त राजाने राज्यसिंहासन उपर बेसाड्यो. चंद्रगुप्तना वंशजोए (१०८) वर्षसुधी राज्य कर्युं. चंद्रगुप्तना पितानुं नाम मोरपाल हतुं, तेथी चंद्रगुप्तनो मौर्यवंश कहेवाय छे. चंद्रगुप्त जैनमती श्रावक राजा हतो. चंद्रगुप्त तथा नव नंदोनुं वृत्तांत परिशिष्ट पर्व, उत्तराध्ययनवृत्ति तथा आवश्यकवृत्तिथी जोइ लेवुं.

श्रीस्थूलभद्रस्वामि पछी उपरना चार पूर्व, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान विछेद थइ गयां. श्रीमहावीर पछी (२२०) वर्षे अश्वमित्र नामनो चोथो क्षणिकवादि निन्हव थयो. श्रीस्थूलभद्रजीना समयमां बार वर्षनो दुकाल पड्यो, त्यारे चंद्रगुप्तनुं राज्य हतुं; तथा श्रीमहावीर पछी (२२८) वर्ष वित्यावाद गंग नामनो पांचमो निन्हव थयो.

८ श्री स्थूलभद्रजी पछी तेमना बे शिष्यो एक आर्यमहागिरि तथा बीजा सुहस्ति सूरि आठमी पाठ उपर बेठा. आर्यमहागिरिना शिष्य

१ बकुल, २ बलिस्सह, बलिस्सहना शिष्य श्री उमास्वातिजी थया, जेमणे तत्त्वार्थादि सूत्रनी रचना करी, उमास्वातिजीना शिष्य श्यामाचार्य, जेमणे पन्नवणा सूत्रनी रचना करी. आ श्यामाचार्य श्री महावीर पछी त्रणसो ठोंतेर वर्षे स्वर्गे गया. आर्यमहागिरिजी त्रीस वर्ष गृहवास, चालीस वर्षे व्रतपर्याय, त्रीस वर्षे युगप्रधान पदवी, सर्व आयु एकसो वर्षनुं जोगवी स्वर्गे गया.

श्रीसुहस्तिसूरिये एक भिखारीने दीक्षा आपी, ते भिखारी काल करी चंद्रगुप्तना वंशमां तेना पुत्र बिंदुसार, बिंदुसारनो पुत्र अशोक, अशोकनो पुत्र कुणाल, कुणालनो पुत्र संप्रति नामनो राजा थयो. संप्रति राजाये जैनधर्मनी बहुज वृद्धि करी. श्री कल्पसूत्रना प्रथम उद्देशामां श्री महावीरस्वामिना समयमां वर्त्तमान समय सरखावतां बहु थोडा देशोमां जैनधर्म लखेल छे. मारवाड, गुजरात, दक्षिण, पंजाब विगेरे देशोमां जे जैनधर्म प्रवर्त्ते छे, ते संप्रति राजाना समयथीज प्रवर्त्ते छे. यद्यपि वर्त्तमानमां जैनी राजा नहीं होवाथी जैनधर्म सर्व स्थले नथी, परंतु संप्रति राजाना समयमां जैनधर्म भारत वर्षमां सर्वत्र हतो, तथा उन्नतिपर हतो, कारण के संप्रति राजानुं राज्य मध्य खंड तथा गंगा अने सिंधुपार सर्व देशोमां हतुं. संप्रति राजाये धर्मवृद्धिमाटे पोताना नोकरोने जैनसाधुउ बनावी, पोतानी आज्ञा माननारा राजाउ शक, यवन, फारसादि देशोमां हता, ते देशोमां पण मोकल्या हता. तेउये ते राजाउने जैनना साधुउना आहार, विहार, आचारादि सर्व बताव्या हता, तेमज समजाव्या हता. बाद साधुउनो विहार ते देशोमां करावी ते देशना लोकोने जैनधर्मी कर्या हता. संप्रति राजाये (९९०००) नवाणुं हजार जीर्णोद्धार जिनमंदिरोना कराव्या; तथा (२६०००) छवीस हजार नवा जिनमंदिरो बंधाव्यां; सोना, चांदी, पीतल, पाषाण प्रमुखनी सवाक्रोड प्रतिमा बनावी. तेमना बनावेला मंदिर, नाडोल, गीरनार, शत्रुंजय, रतलाम प्रमुख अनेक स्थले अमे देखेल छे. संप्रति राजानी प्रतिमा तो अमे सेंकडो दीठी छे. संप्रति राजानुं संपूर्ण वृत्तांत परिशिष्ट पर्वादि ग्रंथोथी जाणवुं.

सुहस्ति सूरिए उज्जयननी रेहेनारी भद्रा शेठाणीना पुत्र अवंतीसुकमालने दीक्षा आपी. जे स्थले अवंतीसुकमाले काल कर्यो, ते स्थले

तेनेज अमे धर्मलाभ कहीये छीये. वली एम पण नथी के तमे अमने वंदना नथी करी. तमे पण पोताना मनथी वंदना करी छे. मनज सर्व कार्योमां प्रधान छे, ते कारणथी अमे धर्मलाभ कह्यो छे, अने तमोए पण मारी परिक्षावास्तेज मनथी नमस्कार करेल छे. विक्रम राजाए तुष्टमान थइ हाथीथी नीचे उतरी सर्व संघनी समक्ष आचार्यने वंदना करी. एक क्रोड सोनामहोर भेट मुकी, आचार्ये सोनामहोर लीधी नही, कारण के तेओ त्यागी हता. राजाये पण पाछी लीधी नहि. आखर आचार्यनी आज्ञाथी संघना गृहस्थोये जीर्णोद्धारमां वापरी दीधी. राजाना दफतरमां तो आ प्रमाणे लखेलुं छे. श्लोक ॥ धर्मलाभ इति प्रोक्ते, दूरादुच्छ्रितपाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौ कोटिं धराधिपः ॥ १ ॥ श्रीविक्रम राजानी सन्मुख सिद्धसेनदिवाकरे एम पण कह्युं हतुं के ॥ गाथा ॥ पुण्णे वास सहस्से, सयंमि वरिसाण नव नवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुह विक्कमराय सारिछो ॥ १ ॥ अर्थः पुण्य एवां एक हजार एकसो नवाणुं वर्षे, हे विक्रमराय तमारा जेवोज कुमारपाल नृप थशे. अन्यदा सिद्धसेनजी चित्रकूटमां गया. चित्रकूटमां एक अति प्राचीन जिनमंदिर हतुं, तेमां एक बहु मोटो स्थंभ तेमना देखवामां आव्यो. कोइने पुछ्युं के, आ स्थंभ शानो छे? तेणे कह्युं के पूर्वाचार्योये तेमां रहस्य पुस्तको मुकेलां छे, आ स्थंभ विविध औषध द्रव्यनो बनेलो, वज्रनी जेम जलादिथी अभेद्य छे. कोइथी आ स्थंभ खोली शकातो नथी. ते सांभली सिद्धसेनजीये ते स्थंभनी गंध लइ प्रत्यौषधरस तेना उपर छांट्यो, तेथी कमलनी जेम स्थंभ खिली गयो. तेमां पुस्तक दीठां. तेमांथी एक पुस्तक लइ वांचतां प्रथम पत्रमां बे विद्या लखेली प्राप्त थइ. एक सरसव विद्या, बीजी सुवर्णविद्या. सरसव विद्यानुं ए बल हतुं के कार्य आवी पडे त्यारे मांत्रिक जेटला सरसव जलाशयमां नांखे, तेटला असवार बेतालीसे हथीआर सहित बहार आवे, परदलनो भंग करी कार्य सिद्ध थयेथी अद्दश्य थइ जाय. हेम विद्याथी कांइ पण मेहेनतविना शुद्ध हेम कोटि गमे ते धातुथी थइ शके. आ बंने विद्या सिद्धसेनजीये सारी रीते लीधी. उपरांत आगल वांचवा जाय छे के स्थंभ बंध थइ गयो, सर्व पुस्तको बचमां रही गयां, अने आकाशवाणी थइ के तुं आ पुस्तकोने वांचवाने योग्य नथी,

कर्यो तेमांथी कांइक लखीए ठीएः– "नवि मारिये नवि चोरिये, परदारगमन निवारिये ॥ थोवाथो वंदाइयें, सग्गिमट्टे मट्टे जाइये ॥ १ ॥ वली बोलवा तथा नाचवा लाग्या ॥ छंद ॥ कालो कंबल नीचो वट्ट, गर्छे जरिज दीवडो थट्ट ॥ एवड पडीर्ज नीले जाड, अवर किसो ठे सग्ग निलाड ॥२॥ इत्यादि गोपो सांजली बहुज खुशी थया, अने कहेवा लाग्या के वृद्धवादि सर्वज्ञ ठे, अमने केवो मीठो, कानने सुखदायक तथा अमारा योग्य उपदेश कर्यो. सिद्धसेन तो कांइ जाणतो नथी. गोपोनो निर्णय सांजली सिद्धसेनजीए वृद्धवादिने कह्युं हे जगवन्! तमे मने दीक्षा आपी पोतानो शिष्य बनावो, कारण के मारी प्रतिज्ञा ठे के जो गोपो मने हार्यो कहे तो हुं हार्यो, अने तमारो शिष्य हुं बनुं. वृद्धवादिए कह्युं के आ गोपोनी सजामां वाद विवाद शो ? ते प्रमाणेना वादविवादथी हारजीत कहेवाय नहि. तमे जृगुपुर (जरुच) मां राजसजामां चालो; सजा समक्ष मारो तमारो वाद विवाद थशे. सिद्धसेनजीए कह्युं के हुं जले विद्वान् होउं, परंतु अवसरनो जाण नथी, अवसरना ज्ञाता तमे ठो, तेथी मने हार्यो समजी दीक्षा आपो. सिद्धसेनजीए पूर्वोक्त कह्या ठतां वृद्धवादि आचार्य तेने राज्यसजामां विवाद करवा सारु लइ आव्या. राज्यसजा समक्ष विवाद थयो, तेमां सिद्धसेनजीनो पराजय थयो, तेणे आचार्य पासे दीक्षा लीधी, गुरुए तेनुं नाम कुमुदचंद्र पाड्युं. पठी ज्यारे आचार्य पदवी आपी त्यारे फरी सिद्धसेन दिवाकर नाम राख्युं. पठी वृद्धवादि तो अन्यत्र विहार करी गया, अने सिद्धसेन दिवाकर अवंती (उज्जयन) मां गया. उज्जयननो संघ सन्मुख आव्यो, अने सिद्धसेन दिवाकरने सर्वज्ञपुत्र एवुं बिरुद आप्युं, एम बिरुदावली बोलतां अवंती नगरीना चोकमां आव्या. ते अवसरे विक्रमादित्य राजा हाथी उपर चडेला सन्मुख आवता मल्या. राजाए सर्वज्ञपुत्र एवुं बिरुद सांजली तेनी परिक्षा वास्ते हाथी उपर बेठा बेठांज मनथी तेमने नमस्कार कर्यो. आचार्ये तत्काल धर्मलाज कह्यो. राजाये पुछ्युं, वंदना कर्या विना आपे मने धर्मलाज केम आप्यो ? शुं धर्मलाज बहु सस्तो ठे? आचार्ये कह्युं, आ धर्मलाज क्रोड चिंतामणि रत्नोथी पण अधिक ठे, जे कोइ अमने वंदना करे ठे,

तेनेज अमे धर्मलाभ कहीये छीये. वली एम पण नथी के तमे अमने वंदना नथी करी. तमे पण पोताना मनथी वंदना करी छे. मनज सर्व कार्योमां प्रधान छे, ते कारणथी अमे धर्मलाभ कह्यो छे, अने तमोए पण मारी परिक्षावास्तेज मनथी नमस्कार करेल छे. विक्रम राजाए तुष्टमान थइ हाथीथी नीचे उतरी सर्व संघनी समक्ष आचार्यने वंदना करी. एक क्रोड सोनामहोर भेट मुकी, आचार्ये सोनामहोर लीधी नही, कारण के तेओ त्यागी हता. राजाये पण पाछी लीधी नहि. आखर आचार्यनी आज्ञाथी संघना गृहस्थोये जीर्णोद्धारमां वापरी दीधी. राजाना दफतरमां तो आ प्रमाणे लखेलुं छे. श्लोक ॥ धर्मलाभ इति प्रोक्ते, दूरादुच्छ्रितपाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौ कोटिं धराधिपः ॥ १ ॥ श्रीविक्रम राजानी सन्मुख सिद्धसेनदिवाकरे एम पण कह्युं हतुं के ॥ गाथा ॥ पुण्णे वास सहस्से, सयंमि वरिसाण नव नवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुह विक्कमराय सारिछो ॥ १ ॥ अर्थः पुण्य एवां एक हजार एकसो नवाणुं वर्षे, हे विक्रमराय तमारा जेवोज कुमारपाल नृप थशे. अन्यदा सिद्धसेनजी चित्रकूटमां गया. चित्रकूटमां एक अति प्राचीन जिनमंदिर हतुं, तेमां एक बहु मोटो स्थंभ तेमना देखवामां आव्यो. कोइने पुछ्युं के, आ स्थंभ शानो छे? तेणे कह्युं के पूर्वाचार्योये तेमां रहस्य पुस्तको मुकेलां छे, आ स्थंभ विविध औषध द्रव्यनो बनेलो, वज्रनी जेम जलादिथी अभेद्य छे. कोइथी आ स्थंभ खोली शकातो नथी. ते सांभली सिद्धसेनजीये ते स्थंभनी गंध लइ प्रत्यौषधरस तेना उपर छांट्यो, तेथी कमलनी जेम स्थंभ खिली गयो. तेमां पुस्तक दीठां. तेमांथी एक पुस्तक लइ वांचतां प्रथम पत्रमां बे विद्या लखेली प्राप्त थइ. एक सरसव विद्या, बीजी सुवर्णविद्या. सरसव विद्यानुं ए बल हतुं के कार्य आवी पडे त्यारे मांत्रिक जेटला सरसव जलाशयमां नांखे, तेटला अस्वार बेतालीसे हथीआर सहित बहार आवे, परदलनो भंग करी कार्य सिद्ध थयेथी अदृश्य थइ जाय. हेम विद्याथी कांइ पण मेहेनतविना शुद्ध हेम कोटि गमे ते धातुथी थइ शके. आ बंने विद्या सिद्धसेनजीये सारी रीते लीधी. उपरांत आगल वांचवा जाय छे के स्थंभ बंध थइ गयो, सर्व पुस्तको बचमां रही गयां, अने आकाशवाणी थइ के तुं आ पुस्तकोने वांचवाने योग्य नथी,

आगल वांचीश नहिं, वांचीश तो तत्काल मरण पामीश. सिद्धसेनजीये डरीने विचार कर्यो के बे विद्या मली तेपण सारुं थयुं. चित्रोडथी विहार करी सिद्धसेनजी पूर्व देशमां कुमारपुरमां गया, तेनो राजा देवपाल नामनो हतो, तेने प्रतिबोधि दृढ जैनधर्मी कर्यो. राजा निरंतर सिद्धांत श्रवण करवा लाग्यो, एम केटलोएक काल व्यतीत थयो. एकदा राजा गुप्त रीते गुरुजी पासे आव्यो; आंसुथी नेत्र भरी कहेवा लाग्यो के, हे भगवन् अमो बहुज पापी छइये, तेथी आपनी अति उत्तम गोष्टीनो रस पी शकता नथी. अमे बहुज संकटमां आवी पड्या छीये. आचार्ये पुछ्युं, तमोनो शुं संकट छे? राजाये कह्युं, मारा वैरी राजाउं बहु छे, तेउं एकत्र थइ मारुं राज्य लइ लेवा चाहे छे. आचार्ये कह्युं राजन्! आकुल व्याकुल थाउं नहिं, तमोने हुं सहाय छुं, हवे तमारे शी चिंता छे? राजा आ हिंमतथी बहुज खुशी थयो; पछी आचार्ये राजाने पूर्वोक्त बने विद्याउं आपी समर्थ कर्यो. ते विद्याउंथी परदल भंग थइ गयुं. तेमनो सर्व सरंजाम लूटी लीधो. राजा आचार्यनो परम भक्त थइ गयो. आचार्य पण सुखमां पडी शिथिलाचारी थइ गया. आ स्वरूप वृद्धवादिजीना सांभलवामां आव्युं. उपाश्रयना दरवाजा पासे उभा रही कहेवराव्युं के एक बुढो वादी आव्यो छे. सिद्धसेने बोलावी पोतानी सन्मुख बेसाड्या. वृद्धवादी पोतानुं सर्व शरीर वस्त्रथी ढांकी बोल्या–"अण फुल्लियफुल्लमतोडहिं मारोवामोडिहिं मणु कुसुमेहिं ॥ अच्चि निरंजणंजीण, हिंड हिकाइ वणेणवणु ॥ १ ॥ सिद्धसेनने विचार करतां आनो अर्थ सुझयो नहिं, त्यारे विचारवा लाग्या के मारा गुरु तो नहिं होय? एमनी उक्तिनो माराथी अर्थ थइ शकतो नथी, एम धारी फरी जोयुं तो गुरुने उलख्या. गुरुने पगे पडी वारंवार क्षमा मागवा लाग्या, अने पद्यनो अर्थ पुछवा लाग्या. वृद्धवादीजीए कह्युं "अप्राप्त फल एवा फुलने तोड नहिं, भावार्थ के आ योग कल्पवृक्ष छे, जे योग रूप वृक्षना यम नियम तो मूल छे, ध्यान रूप मोटुं थड जेवुं छे, समता, कवित्व, वक्तृत्व, यश, प्रताप, मारण, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरणादि सिद्धियो तेना पुष्प छे, अने केवलज्ञान फल छे. हजी तो योगकल्पवृक्षने फुलोज लागेलां छे, ते केवलज्ञान रूप फलथी आगल फलशे, तेथी आ अप्राप्त फल, पुष्पोने

शा वास्ते ग्रोडे ठे ? तथा पांच महाव्रत रूप रोपा ठे, तेने मरोड नहि. मनरूप पुष्पोथी निरंजन जिनराजने पूज; वनथी वन शुं ज्रम्या करे ठे ? राजसेवादि वूरा नीरस फल शुं प्राप्त करे ठे ? गुरुना उपदेशथी सिद्धसेनजी शिक्षा पाम्या. राजाने पुठी गुरु साथे अन्यत्र विहार करी गया, अने निविड चारित्र पालवा लाग्या, अनेक आचार्योथी पूर्वोनुं ज्ञान प्राप्त कर्युं. वृद्धवादिनो स्वर्गवास थयो. वाद एकदा सिद्धसेनजीए सर्व संघ एकठो करी कह्युं के मारो विचार सर्व आगमोने संस्कृत जाषामां करी देवानो थयो ठे, श्री संघे कह्युं, शुं तीर्थंकर, गणधर संस्कृत जाणता न होता ? तेउंए अर्ध मागधी जाषामां आगमो शा वास्ते कर्यां ? आ प्रमाणे कहेवाथी आपने पारांचिक नामनुं प्रायश्चित्त आवे ठे, आप पोते विचारी ल्यो ? अमे आपने शुं कहीए ? सिद्धसेने विचार करी कह्युं के हुं मौन धरी वार वर्षनुं पारांचिक प्रायश्चित्त लइ गुप्त रीते मुखवस्त्रिका, रजोहरणादि लिंग राखी, अवधूत रूप धारण करी फरीश. एम वोली गछनो त्याग करी नगरादिमां पर्यटन करवा लाग्यां. वार वर्ष व्यतीत थये उज्जयन नगरीमां महाकालना मंदिरमां शेफालिका पुष्पोथी रंगेलां वस्त्र पेहेरी सिद्धसेन आवी वेठा. नमस्कार करता नथी, तेथी पूजारी प्रमुख लोकोए कह्युं के तमे महादेवने नमस्कार केम करता नथी ? सिद्धसेन वोलताज नथी. एम लोकपरंपराथी श्रवण करतां विक्रमादित्य पण त्यां आव्या, अने कह्युं " क्षीर लिलिक्षो जिक्षो किमिति त्वया देवो न वंद्यते " सिद्धसेनजीए कह्युं हे राजन् ! मारा नमस्कारथी तमारा देवनुं लिंग फाटी जशे, पठी तमोने वहुज दुःख थशे, ते कारणथी हुं नमस्कार करतो नथी. राजाए कह्युं, लिंग फाटे तो फाटवा द्यो, परंतु तमे नमस्कार करो. तत्काल सिद्धसेन पद्मासने वेसी कहेवा लाग्या, सांजलो! पठी प्रथम द्वात्रिंशिकाथी देवनुं स्तवन करवा लाग्या, यथा ॥ स्वयंज्रुवं ज्रूतसहस्रनेत्र, मनेक मेकाक्षर जावलिंगं ॥ अव्यक्त मव्याहत विश्वलोक, मनादि मध्यांतम पुण्य पापं ॥ १ ॥ इत्यादि प्रथमज श्लोक वोलवाथी लिंगमांथी धुमाडा निकलवा लाग्या, एटले लोको वोलवा लाग्या के शिवजीनुं त्रीजुं नेत्र खुल्युं ठे, हमणांज आ जिक्षुकने नेत्रना अग्निथी ज्रस्म करी देशे. तत्काल विज-

लीनां तेजनी जेवो तडतडात करतो प्रथम अग्नि निकल्यो, पठी श्री पार्श्वनाथजीनुं विंब प्रगट थयुं; एटले वादी सिद्धसेनजीए कल्याणमंदिरादि स्तवनो करी क्षमा मागी. विक्रमादित्य बोलवा लाग्या के हे जगवन् आ अदृष्ट पूर्व आश्चर्य शुं बताव्युं ? आ नवा देव कोण ठे ? वली आ प्रगट शा वास्ते थया ? एम पुठतां सिद्धसेन सूरिए अवंतीसुकमाल तथा तेना पुत्र महाकाल संबंधी अने ब्राह्मणोए कालानुसारे बल पामी मूर्त्ति नीचे दबावी शिवलिंग स्थापन करी देवासंबंधी सर्व वृत्तांत कह्यो. वली कह्युं के शासन देवताए मारी स्तुतिथी शिवलिंग फाडीने वचमांथी आ प्रतिमा प्रगट करी ठे. हवे तमे सत्य असत्यनो निर्णय करो. विक्रमादित्य आ कार्यथी संतोष पामी देवनी समक्ष गुरुमुखथी बार व्रत ग्रहण करता हवा, अने मंदिरना खर्च वास्ते एकसो गाम आपता हवा, तथा सिद्धसेन महाराजनी बहु प्रशंसा करी पोताना स्थाने गया. वादींद्र सिद्धसेनने संघे अति तुष्टमान थइ संघमां लीधा, अने आचार्य पदवी पूर्वनी जेम आपी.

एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करतां मालव देशना ॐकार नगरमां गया. नगरना जक्त श्रावकोए आचार्यने विनंति करी के, हे जगवन् आ नगरनी समीप एक गाम हतुं तेमां सुंदर नामनो राजपुत्र गामनो अधिपति हतो. तेने बे स्त्रीउं हती. एक स्त्रीने प्रथम पुत्री जन्मी. ते पुत्रीवाली स्त्रीए विचार कर्यो के मारी शोकने पुत्र न थाय तो सारुं. पुत्र थशे तो ते पतिने वल्लज थशे, तेथी दाइ (सुयाणी) ने मली अवसरनो लाज लइ पोतानी शोकना जन्मेला पुत्रने बहार फेंकावी दीधो, अने तत्कालनी मरेली पुत्री तेनी पासे मुकी दीधी. जे पुत्रने बहार फेंकी दीधो हतो, तेने कुलदेवीए गायनुं रुप करी उठेर्यो. ज्यारे ते आठ वर्षनो थयो त्यारे ओंकार नगरना शिवमंदिरना अधिकारी जरटे तेने देख्यो, अने तेने पोतानो चेलो बनाव्यो. एकदा प्रस्तावे कान्यकुब्ज देशनो राजा चक्षुअंध हतो, ते दिग्विजय करवावास्ते पडाव नाखी रह्यो हतो, रात्रिमां नानाचेलाने शिवजक्त व्यंतर देवताए कह्युं के शेष जोग राजाने आपजे, जेथी तेनी आंखो सारी थशे. तेणे तेम कर्याथी राजानी आंख सारी थइ गइ. राजाए एकसो गाम मंदिरना खर्च

वास्ते आप्यां. अने आ मोटुं शिवमंदिर पण तेणेज बंधाव्युं. अमने आ नगरना मिथ्यादृष्टिओ बलवान होवाथी जिनमंदिर बनाववा देता नथी, तेथी आपने विनंति करीये छीये के आ मंदिरथी अधिक अमारुं मंदिर आ नगरमां बने तोज अमोने संतोष थाय. आप सर्व बाबतमां समर्थ छो. तेओनी विनंति ध्यानमां लइ वादींद्र अवंती नगरमां आव्या. विक्रमादित्यना मेहेल पासे आवी दरवानना मुखथी राजाने कहेवराव्युं– "दिदृक्षु र्भिक्षुरायातस्तिष्टति द्वारिवारितः ॥ हस्तन्यस्त चतुःश्लोक, उतागछतुगछतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांभली विक्रमादित्ये श्लोक तेना उत्तरमां लखी मोकल्यो. "दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुःश्लोकः, उतागछतु गछतु ॥१॥ ते श्लोक वांची आचार्ये कहेवराव्युं के भिक्षु आपने मलवा चाहे छे. धन लेता नथी. राजाये तेमने सन्मुख बोलाव्या, अने पिठान थइ एटले आदर सत्कार करी कहेवा लाग्या के गुरुजी बहु दिवसे दर्शननो लाभ आप्यो. आचार्ये कह्युं धर्मकार्योमां लागवाथी बहु दिवसो व्यतीत थया, चिरकाले आववुं थयुं. आ चार श्लोको श्रवण करो. यथा ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयातिदिगन्तरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशांतरंगता ॥ २ ॥ कीर्ति स्तेजातजाड्येव चतुरंभोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गता मार्त्तंडमंडलं ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्यासंस्तूयसे जनैः ॥ नारयोलेभिरे पृष्ठं, नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥ आ चार श्लोको सांभली राजा अत्यंत खुशी थया. गुरुने विनंति करवा लाग्या के, मारा राज्यमां जे कांइ सारभूत होय ते मागो, हुं आपने अर्पण करुं. आचार्ये कह्युं, मारे तो कांइ पण चाहना नथी, परंतु उँकार नगरमां चतुर्द्वारि जैनमंदिर शिवमंदिरथी श्रेष्ठ तथा उंचुं बनावो, अने प्रतिष्ठा पण करावो; राजाये गुरुना फरमान मुजब कर्युं. जैनमतनी प्रभावना देखी श्री संघ अति संतुष्ट थयो. इत्यादि अनेक प्रकारे जैनधर्मनी प्रभावना करी दक्षिण देशमां प्रतिष्ठान पुरमां जइ ते अनशन करी देवलोक प्राप्त करता हवा. त्यांथी संघे एक भट्टने सिद्धसेन सूरिना खबर आपवा तेमना गछ पासे मोकल्या. भट्टे सूरियोनी सभामां जइ अर्ध श्लोक कह्यो, अने वारंवार ते अर्ध श्लोकज बोलवा लाग्यो. यथा ॥

स्फुरंति वादिखद्योतः, सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ ज्यारे वारंवार आ अर्ध श्लोक सिद्धसेनजीनी वेहेन एक साध्वी हतां, तेमणे सांजल्यो, त्यारे सिद्ध सारस्वत मंत्रथी बाकीनो अर्ध श्लोक तेमणे पुर्ण कर्यो. यथा ॥ नूनमस्तं गतोवादी, सिद्धसेनोदिवाकरः ॥ १ ॥ पछी ते जट्टे सर्व वृत्तांत कह्यो. संघने अत्यंत शोक थयो. ॥ इति सिद्धसेन दिवाकर संबंध.

सुहस्ति आचार्य त्रीश वर्ष गृहस्थावास, चोवीस वर्ष व्रतपर्याय, बेतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु एकसो वर्षनुं जोगवी, श्री महावीर पछी (२९१) वर्ष पछी स्वर्गे गया.

ए श्री सुहस्ति सूरिनी पाट उपर श्रीसुस्थित सूरि तथा सुप्रतिबद्ध सूरि नामना बे शिष्यो बेठा. तेउये क्रोडो वार सूरि मंत्रनो जाप कर्यो, तेथी गछनुं नाम कोटिक श्री संघे राख्युं. सुधर्मस्वामिथी आठ पाट सुधी तो अणगार, निर्ग्रंथ गछ नाम हतुं. बीजुं कोटिक नाम थयुं.

१० श्री सुस्थित सूरिनी पाट उपर श्री इंद्रदिन्न सूरि थया. आ अवसरमां श्री महावीरथी (४५३) वर्ष पछी गर्दजिल्ल राजानो उछेद करनार बीजा कालिकाचार्य थया, तेनी कथा कल्पसूत्रमां कथन करेली छे. वली श्री महावीरथी (४५३) वर्ष पछी भृगुकछ (जरुच) मां श्री आर्य खपुटाचार्य विद्याचक्रवर्ती थया. तेनो प्रबंध श्री प्रबंधचिंतामणि ग्रंथ, तथा हारिजद्री आवश्यकनी टीकाथी जाणवो. वली प्रजावक चरित्रमां एम लख्युं छे के, श्रीमहावीरथी (४०४) वर्ष पछी श्री खपुटाचार्य तथा (४६४ (४६७)वर्ष पछी आर्यमंगु, वृद्धवादि, पादालिप्त, तथा सिद्धसेन दिवाकर थया. जे सिद्धसेन दिवाकरे विक्रमादित्यने जैनधर्मी कर्या ते विक्रमादित्य श्रीमहावीरथी (४७०) वर्षे थया. ते वर्ष आ प्रमाणे थयां. जे रात्रिये श्री महावीरस्वामि निर्वाण पाम्या, ते दिवसे अवंती नगरीमां पालक नामना राजानो राज्याभिषेक थयो. आ पालक चंद्रप्रद्योतनो पौत्र हतो. तेनुं राज्य (६०) साठ वर्ष रह्युं. तेनी पछी श्रेणिकनो पुत्र कोणिक अने कोणिकनो पुत्र उदायी, ज्यारे पुत्रविना मरण पाम्यो, त्यारे तेनी गादी उपर नंद नामनो नाइ बेठो. तेनी गादी उपर सर्वे नंद नामना नव राजा थया. तेनुं राज्य (१५५) वर्ष सुधी रह्युं. नवमा नंदनी गादी उपर मौर्यवंशी चंद्रगुप्त राजा थयो. तेनो पुत्र बिंदुसार, तेनो पुत्र

अशोक, अशोकनो पुत्र कुणाल, अने कुणालनो पुत्र संप्रति महाराज थयो. मौर्यवंशजोनुं सर्व राज्य (१०८) वर्ष सुधी रह्युं. पूर्वोक्त सर्व राजा प्रायः जैनधर्मी हता. तेउनी पछी त्रीश वर्ष सुधी पुष्पमित्र राजानुं राज्य रह्युं. त्यार बाद बलमित्र, भानुमित्र, आ बंने राजाउये (६०) वर्ष सुधी राज्य कर्युं. त्यार पछी नभवाहन राजाये (४०) वर्ष सुधी राज्य कर्युं. त्यार पछी गर्दभिल्लनुं राज्य (१३) वर्ष रह्युं. बाद चार वर्ष शकोनुं राज्य रह्युं. पछी शकोनो विक्रमादित्ये पराजय करी पोतानुं राज्य स्थापन कर्युं. आ सर्व मली (४७०) वर्षो थयां.

श्री इंद्रदिन्नसूरिनी पाट उपर श्री दिन्नसूरि बेठा. १२ श्रीदिन्नसूरिनी पाट उपर श्री सिंहगिरि सूरि बेठा. १३ सिंहगिरिजीनी पाट उपर श्री वज्रस्वामि बेठा. श्री वज्रस्वामि बाल्यावस्थाथी जातिस्मरण ज्ञानवाला हता. तेउने आकाशगामिनी विद्या पण हती. तेउये बीजा बार वर्षी दुकालमां संघनुं रक्षण कर्युं; वली दक्षिणमां बौद्धोना राज्यमां श्री जिनेंद्र पूजावास्ते पुष्पो पण तेमणे लावी आप्यां, अने बौद्धराजाने जैनमती बनाव्यो. वज्रस्वामी दश पूर्वधर हता, जेनाथी श्री वज्रशाखा उत्पन्न थइ. तेमनो प्रबंध आवश्यक वृत्तिथी जाणवो. श्रीवज्रस्वामि श्रीमहावीर पछी चारसो छन्नुं वरसे विक्रमादित्यना संवत २६ मां जन्म्या. आठ वर्ष घरमां रह्या. चमालीश वर्ष साधु पर्याय, अने छत्रीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु अठाशी वर्षनुं भोगवी स्वर्गे गया. आ आचार्यना समयमां जावडशाह शेठे श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर संवत (१०८) मां तेरमो उद्धार कर्यो. ते वखते श्री वज्रस्वामिये प्रतिष्टा करी. श्री वज्रस्वामि श्रीमहावीरस्वामि पछी (५८४) वर्षे स्वर्गे गया. श्री वज्रस्वामिना समयमां दशमुं पूर्व, चोथुं संहनन अने चोथुं संस्थान व्यवछेद गयां. श्री सुहस्ति सूरि आठमां अने श्री वज्रस्वामि तेरमां, तेउनी पाटनी वचमां बीजी पटावलीउमां १ श्रीगुणसुंदर सूरि, २ श्री कालिकाचार्य, ३ श्री स्कंधिलाचार्य, ४ श्री रेवतमित्रसूरि, ५ श्रीधर्म सूरि, ६ श्री भद्रगुप्ताचार्य, आ सात अनुक्रमे युग प्रधान आचार्यो थया. वली श्री महावीरथी (५३३) वर्ष पछी श्री आर्यरक्षितसूरिये सर्व शास्त्रोना अनुयोग पृथक् पृथक् कही दीधा. आ प्रबंध आवश्यकवृत्तिथी

जाणवो. श्री महावीरथी (५४०) में वर्षे त्रैराशिमतने जीतनारा श्रीगुप्त-सूरि थया. तेमनो प्रबंध श्री उत्तराध्ययननी वृत्ति तथा विशेषावश्यक सूत्रथी जाणवो. जेणे त्रैराशि मत प्रगट कर्यो, तेनुं नाम रोहगुप्त हतुं, ते श्रीगुप्त सूरिनो चेलो हतो. तेनुं उलुक गोत्र हतुं. ज्यारे रोहगुप्त गुरुनी साथे वादमां पराजय पाम्यो, अने कदाग्रह न छोड्यो, त्यारे अंतरंजीका नगरीना बलश्री राजाये तेने राज्य बहार कर्यो. ते रोहगुप्ते कणाद नामनो शिष्य कर्यो, अने तेने १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, आ छ पदार्थोनुं स्वरूप बताव्युं, पछी कणादे वैशेषिक सूत्र बनाव्यां. त्यारथी वैशेषिक मत चाल्यो.

१४ श्रीवज्रस्वामिनी पाट उपर चौदमा श्री वज्रसेन सूरि थेया. तेउ दुकालमां श्री वज्रस्वामिना आदेशथी सोपारक पत्तनमां गया. ते नगरमां जीनदत्त नामना शेठना घरमां इश्वरी नामनी तेनी पत्नीए लाख रुपैआ खरची एक अन्ननी हांडी रांधवा चडावी हती, तेमां झेर नांखवा जती हती, कारण के, तेउये धार्युं के अन्न तो मलतुं नथी, अने दुकाल मटवानो नथी, जेथी झेर खाइ घरना सर्व आदमीउये मरवानो निश्चय कर्यो हतो, ते अवसरे श्री वज्रसेन सूरि ते स्थले आवी पहोंच्या. तेउने तेमणे कह्युं के तमे झेर खाउ नही, आवती काले सुकाल थइ जशे. ते उपरथी तेउये झेर खाधुं नहि. श्री गुरुना वचन मुजब सुकाल थयो, अने शेठना चारे पुत्रोये दीक्षा लीधी. तेउना नाम. १ नागेंद्र, २ चंद्र, ३ निवृत्त, ४ विद्याधर. ते चारेथी स्वस्व नामना चार कुल थयां. श्रीवज्रसेन सूरि नव वर्ष सुधी गृहवासमां रह्या. (११६) वर्ष सुधी साधुपर्याय अने त्रण वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु (१२८) वर्षनुं भोगवी, श्रीमहावीरथी (६२०) वर्ष पछी स्वर्गे गया. श्रीवज्रस्वामी अने श्रीवज्रसेनसूरिनी वचमां श्रीआर्यरक्षितसूरि तथा श्रीदुर्बलिका पुष्पसूरि, आ बे युग प्रधानो थया. श्री महावीरथी (५८४) वर्ष पछी सातमो निन्हव थयो, तथा श्री महावीरथी (६०९) वर्ष पछी श्रीकृष्ण सूरिनो शिष्य शिवभूति नामनो हतो, तेणे दिगंबर मत चलाव्यो. ते अधिकार श्रीविशेषावश्यकादिथी जाणवो.

१५ श्री वज्रसेन सूरिनी पाट उपर श्री चंद्र सूरि थेया. तेमना नामे गछनुं नाम पण चंद्र गछ थयुं. १६ श्री चंद्रसूरिनी पाट उपर श्री

सामंतभद्रसूरि थया. तेउं पूर्वगत श्रुतना ज्ञाता हता. तेउं वैराग्यरंगथी रंगाया हता, अने जंगलोमां रहेता हता, तेथी लोकोये चंद्र गछनुं नाम वनवासी गछ राख्युं. १७ श्री सामंतभद्र सूरिनी पाट उपर श्रीवृद्धदेवसूरि थया. तथा श्री महावीरथी (५९५) वर्षे पछी कोरंट नगरना नाहड नामना मंत्रीये, सत्यपुरमां जीनमंदिर बंधाव्युं, तेमां श्री महावीर स्वामिनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा श्री जज्जाक सूरिये करी. ते प्रतिमा "जयउ वीर सच्चउरिमंडण" कहेवाय छे. १८ श्री वृद्धदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्योतन सूरि थया.

१९ श्री प्रद्योतन सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया. तेमना सूरिपदस्थापनावसरे बंने स्कंधो उपर सरस्वती अने लक्ष्मी साक्षात् देखी आ महान् पुरुष चारित्रथी भ्रष्ट थइ जशे, एवा विचारथी खिन्नचित्तवाला गुरुने देखी, तेमणे गुरुनी पासे एवो नियम कर्यो के, भक्तिवाला गृहस्थना घरनी भिक्षा लेवी नहीं, तथा दुध, दहीं इत्यादि छये विगयनो त्याग कर्यो. तेमना आ प्रमाणे तपना प्रभावथी नडोलपुरमां (पालीनी पासेना गाममां) १ पद्मा, २ जया, ३ विजया, ४ अपराजीता, आ चार देवीउं तेमनी सेवा करती हती. ते देखी केटलाएक मूर्ख लोको कहेवा लाग्या के आ आचार्य स्त्रीसंग केम करे छे? ते प्रमाणे बोलनाराउने ते देवीउंये शिक्षा करी. तेमना समयमां तिक्षिला (गजनी) नगरीमां बहु श्रावको हता, तेउमां मरकीनो उपद्रव थवाथी, तेउनी शांतिवास्ते श्रीमानदेव सूरिये नडोलपुरथी शांतिस्तोत्र बनावी मोकल्युं.

श्रीमानदेव सूरिनी पाट उपर श्री मानतुंग सूरि थया. तेमणे भक्तामर स्तवननी रचना करी बाण अने मयुर जेवा पंडितोनी विद्याथी चमत्कार पामेला वृद्ध भोज राजाने प्रतिबोध्यो; तथा भयहर स्तवन रची नागराजाने वश कर्यो. वली भत्तिब्भर इत्यादि स्तवनोनी पण तेमणे रचना करेली छे. प्रभावक चरित्रमां प्रथम श्रीमानतुंग सूरिनुं चरित्र वर्णवेल छे, अने पछी देवसूरिना शिष्य प्रद्योतन सूरि, अने तेमना शिष्य श्री मानदेव सूरिनो प्रबंध लखेल छे, परंतु तेथी शंका न करवी, कारण के प्रभावक चरित्रमां बीजा पण केटलाएक प्रबंधो आगल पाछल कथन करेल छे.

२१ श्री मानतुंग सूरिनी पाट उपर श्रीवीर सूरि थया. श्रीवीर सूरिये श्री महावीर पछी (७७०) वर्षो पछी नागपुरमां श्री नमिनाथ अर्हतनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी ॥ यदुक्तं ॥ नागपुरे नमिभवन, प्रतिष्ठया महित सौभाग्यः ॥ अभवद्वीराचार्य, स्त्रिभिः शतैः साधिकै राज्ञः ॥ १ ॥

२२ श्रीवीर सूरिनी पाट उपर श्री जयदेवसूरि थेया. (२३) श्रीजयदेवसूरिनी पाट उपर श्री देवानंद सूरि थेया. आ अवसरमां श्री महावीरथी (८४५) वर्षे पछी वल्लभी नगरी त्रुटी; तथा (८८२) वर्षे पछी चैत्येस्थिति, तथा (८८६) वर्षे पछी ब्रह्म द्विपिका. (२४) श्री देवानंद सूरिनी पाट उपर श्री विक्रमसूरि थेया. (२५) श्रीविक्रम सूरिनी पाट उपर श्री नरसिंह सूरि थेया. यतः ॥ नरसिंह सूरिरासी, दतोऽखिलग्रंथपारगोयेन ॥ यक्षो नरसिंह पुरे, मांसरतिस्त्याजीतास्वगिरा ॥१॥ (२६) श्री नरसिंह सूरिनी पाट उपर श्री समुद्रसूरि थेया. यतः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ खोमीण राजकुलजोपि समुद्रसूरि, र्गछं शशाम किल यः प्रवणः प्रमाणी ॥ जीत्वा तदाक्षपनकान् स्ववशं वितेने, नागह्रदे भुजगनाथ नमस्य तीर्थम् ॥ १ ॥ (२७) श्री समुद्र सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया. यतः ॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ विद्या समुद्र हरिभद्र मुनींद्रमित्रं, सूरि र्बभूव पुनरेवहि मानदेवः ॥ मांद्यात् प्रयातमपियोनघ सूरि मंत्र, लेभेंबिका मुखगिरा तपसोज्जयंते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरथी एक हजार वर्षे पछी सत्यमित्र आचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवछेद थयो. श्रीवज्रसेनसूरि अने सत्यमित्र आचार्यनी वचमां १ श्री नागहस्ति, २ श्रीरेवतीमित्र, ३ ब्रह्मद्वीप, ४ नागार्जुन, ५ भूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, आ ७ युगप्रधान अनुक्रमे थया. युगप्रधानो मध्येना सुधर्म इंद्रथी वंदायेला अने प्रथमानुं योग सूत्रोना सूत्रधार कल्प श्री कालिकाचार्यें श्री महावीरथी (९९३) वर्षे पछी पांचमथी चोथनी संवत्सरी करी; अने श्री महावीरथी (१०५५) वर्षे पछी अने विक्रमादित्यथी (५८५) वर्षे पछी याकिनी साधवीना धर्मपुत्र श्रीहरिभद्र सूरि स्वर्गवास पाम्या; तथा (१११५) वर्षे पछी श्री जीनभद्रगणि युगप्रधान थया. आ जीनभद्रगणि ध्यानशतकना कर्त्ता, हरिभद्र सूरिना ग्रंथ उपर टीका करनार २० श्री बीजा जीनभद्र छे, आ कथन पटावलिमां छे, परंतु श्री जीन-

जद्रगणिक्षमाश्रमणनुं आयुष्य (१०४) वर्षनुं हतुं, ते कारणथी जो हरिजद्र सूरिना वखतमां विद्यामान होय तोपण विरोध नथी.

२८ श्रीमान देवसूरिनी पाट उपर श्री विबुधप्रजसूरि थया. (२९) श्रीविबुध प्रजसूरिनी पाट उपर श्री जयानंद सूरि थया. (३०) श्री जयानंद सूरिनी पाट उपर श्रीरविप्रजसूरि थया, तेमणे श्री महावीर पछी (११३०) वर्षे नडोल नगरमां श्री नेमिनाथ जगवाननी प्रतिष्ठा करी. श्रीमहावीर पछी (११९०) वर्षे उमास्वाति युगप्रधान थया. (३१) श्री रविप्रजसूरिनी पाट उपर श्री यशोदेव सूरि थया. श्री महावीरथी(१२७२) वर्ष पछी अने विक्रम संवत (८०२) मां वनराज, चावडा वंशना राजाये गुजरातमां अणहिलपुर पाटण वसाव्युं; वनराज जैन मतानुसारी राजा हतो. विक्रम संवत ८०० ना जादरवासुद त्रीजने दिवसे बप्पजट्ट आचार्यनो जन्म थयो, जेणे ग्वालियरना आम नामना राजाने जैनी बनाव्यो. तेनुं चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रंथथी जाणवुं.

३२ श्री यशोदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्युम्नसूरि थया. (३३) श्री प्रद्युम्नसूरिनी पाट उपर श्रीमान देवसूरि थया, जेमणे उपधान वाच्य ग्रंथनी रचना करी (३४) श्री मानदेव सूरिनी पाट उपर श्रीविमलचंद्र सूरि थया. (३५) श्रीविमलचंद्रसूरिनी पाट उपर श्री उद्योतन सूरि थया. श्रीउद्योतन सूरि अर्बुदाचल (आबु) पर्वत उपर यात्रा करवा आव्या. त्यां टेली गाम नजीक मोटावड वृक्षनी छायामां बेसी, पोतानी पाटनी वृद्धि थवा वास्ते सारुं मुहूर्त देखी श्री महावीरथी (१४६४) वर्षे पछी अने विक्रम संवत (९९४) वर्ष पछी पोतानी पाट उपर श्री सर्वदेव प्रमुख आठ आचार्यनी स्थापना करी; केटलाएक मात्र सर्वदेव सूरिनी स्थापना करी एम कथन करे छे. मोटा वडवृक्ष नीचे सूरि पदवी देवाथी वनवासी गछनुं नाम वडगछ पांचमुं थयुं. "प्रधान शिष्य संतत्या, ज्ञानादि गुणैः प्रधान चरित्रैश्च वृद्धत्वाद्बृहद्गछ इत्यपि"

३५ श्री उद्योतन सूरिनी पाट उपर श्री सर्वदेवसूरि थया; केटलाएक श्री प्रद्युमसूरि तथा उपधान ग्रंथ कर्त्ता श्रीमान देवसूरि आ बंने आचार्योने पट्टधर मानता नथी. तेउना अजिप्राय प्रमाणे श्री सर्वदेवसूरि चोत्रीसमी पाट उपर थया. श्री सर्व देवसूरि गौतमस्वामिनी

२१ श्री मानतुंग सूरिनी पाट उपर श्रीवीर सूरि थया. श्रीवीर सूरिये श्री महावीर पछी (७७०) वर्षो पछी नागपुरमां श्री नमिनाथ अर्हंतनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी ॥ यदुक्तं ॥ नागपुरे नमिभवन, प्रतिष्ठया महित सौभाग्यः ॥ अभवद्वीराचार्य, स्त्रिभिः शतैः साधिकै राज्ञः ॥ १ ॥

२२ श्रीवीर सूरिनी पाट उपर श्री जयदेवसूरि थया. (२३) श्रीजयदेवसूरिनी पाट उपर श्री देवानंद सूरि थया. आ अवसरमां श्री महावीरथी (८४५) वर्षे पछी वल्लभी नगरी त्रुटी; तथा (८८२) वर्षे पछी चैत्येस्थिति, तथा (८८६) वर्षे पछी ब्रह्म द्विपिका. (२४) श्री देवानंद सूरिनी पाट उपर श्री विक्रमसूरि थया. (२५) श्रीविक्रम सूरिनी पाट उपर श्री नरसिंह सूरि थया. यतः ॥ नरसिंह सूरिरासी, दतोऽखिलग्रंथ पारगोयेन ॥ यक्षो नरसिंह पुरे, मांसरतिस्त्याजीतास्वगिरा ॥१॥ (२६) श्री नरसिंह सूरिनी पाट उपर श्री समुद्रसूरि थया. यतः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ खोमीण राजकुलजोपि समुद्रसूरि, र्गच्छं शशास किल यः प्रवणः प्रमाणी ॥ जीत्वा तदाक्षपनकान् स्ववशं वितेने, नागह्रदे भुजगनाथ नमस्य तीर्थम् ॥ १ ॥ (२७) श्री समुद्र सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया. यतः ॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ विद्या समुद्र हरिभद्र मुनींद्रमित्रं, सूरि र्बभूव पुनरेवहि मानदेवः ॥ मांद्यात् प्रयातमपियोनघ सूरि मंत्र, लेभेंबिका मुखगिरा तपसोज्जयंते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरथी एक हजार वर्षे पछी सत्यमित्र आचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवछेद थयो. श्रीवज्रसेनसूरि अने सत्यमित्र आचार्यनी वचमां १ श्री नागहस्ति, २ श्रीरेवतीमित्र, ३ ब्रह्मद्वीप, ४ नागार्जुन, ५ भूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, आ ६ युगप्रधान अनुक्रमे थया. युगप्रधानो मध्येना सुधर्म इंद्रथी वंदायेला अने प्रथमानुं योग सूत्रोना सूत्रधार कल्प श्री कालिकाचार्ये श्री महावीरथी (९९३) वर्षे पछी पांचमथी चोथनी संवत्सरी करी; अने श्री महावीरथी (१०५५) वर्षे पछी अने विक्रमादित्यथी (५८५) वर्षे पछी याकिनी साधवीना धर्मपुत्र श्रीहरिभद्र सूरि स्वर्गवास पाम्या; तथा (१११५) वर्षे पछी श्री जीनभद्रगणि युगप्रधान थया. आ जीनभद्रगणि ध्यानशतकना कर्त्ता, हरिभद्र सूरिना ग्रंथ उपर टीका करनार होवाथी बीजा जीनभद्र छे, आ कथन पटावलिमां छे, परंतु श्री जीन-

जद्रगणिक्षमाश्रमणनुं आयुष्य (१०४) वर्षनुं हतुं, ते कारणथी जो हरिभद्र सूरिना वखतमां विद्यमान होय तोपण विरोध नथी.

२८ श्रीमान देवसूरिनी पाट उपर श्री विबुधप्रभसूरि थया. (२९) श्रीविबुध प्रभसूरिनी पाट उपर श्री जयानंद सूरि थया. (३०) श्री जयानंद सूरिनी पाट उपर श्रीरविप्रभसूरि थया, तेमणे श्री महावीर पछी (११७०) वर्षे नडोल नगरमां श्री नेमिनाथ भगवानना प्रतिष्ठा करी. श्रीमहावीर पछी (११९०) वर्षे उमास्वाति युगप्रधान थया. (३१) श्री रविप्रभसूरिनी पाट उपर श्री यशोदेव सूरि थया. श्री महावीरथी(१२७२) वर्षे पछी अने विक्रम संवत (८०२) मां वनराज, चावडा वंशना राजाये गुजरातमां अणहिलपुर पाटण वसाव्युं; वनराज जैन मतानुसारी राजा हतो. विक्रम संवत ८०० ना भादरवासुद त्रीजने दिवसे बप्पभट्ट आचार्यनो जन्म थयो, जेणे ग्वालियरना आम नामना राजाने जैनी बनाव्यो. तेनुं चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रंथथी जाणवुं.

३२ श्री यशोदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्युम्नसूरि थया. (३३) श्री प्रद्युम्नसूरिनी पाट उपर श्रीमान देवसूरि थया, जेमणे उपधान वाच्य ग्रंथनी रचना करी (३४) श्री मानदेव सूरिनी पाट उपर श्रीविमलचंद्र सूरि थया. (३५) श्रीविमलचंद्रसूरिनी पाट उपर श्री उद्योतन सूरि थया. श्रीउद्योतन सूरि अर्बुदाचल (आबु) पर्वत उपर यात्रा करवा आव्या. त्यां टेली गाम नजीक मोटावड वृक्षनी छायामां बेसी, पोतानी पाटनी वृद्धि थवा वास्ते सारुं मुहूर्त देखी श्री महावीरथी (१४६४) वर्षे पछी अने विक्रम संवत (९९४) वर्षे पछी पोतानी पाट उपर श्री सर्वदेव प्रमुख आठ आचार्यनी स्थापना करी; केटलाएक मात्र सर्वदेव सूरिनी स्थापना करी एम कथन करे छे. मोटा वडवृक्ष नीचे सूरि पदवी देवाथी वनवासी गछनुं नाम वडगछ पांचमुं थयुं. "प्रधान शिष्य संतत्या, ज्ञानादि गुणैः प्रधान चरितैश्च वृद्धत्वाद्बृहद्गछ इत्यपि"

३५ श्री उद्योतन सूरिनी पाट उपर श्री सर्वदेवसूरि थया; केटलाएक श्री प्रद्युम्नसूरि तथा उपधान ग्रंथ कर्त्ता श्रीमान देवसूरि आ बंने आचार्योने पट्टधर मानता नथी. तेउना अभिप्राय प्रमाणे श्री सर्वदेवसूरि चोत्रीसमी पाट उपर थया. श्री सर्व देवसूरि गोतमस्वामिनी

जेम सुशिष्य लब्धिमान हता. तेमणे विक्रम संवत (१०१०) पछी रामसैन्य पुरमां श्रीरीषभदेव भगवाननी तथा श्रीचंद्रप्रभ स्वामिनी प्रतिष्ठा करी, अने चंद्रावतीमां कुंकण मंत्रीने प्रतिबोधी दीक्षा आपी. तेमणे चंद्रावतीमां जैनमंदिर बंधाव्युं हतुं. विक्रम संवत (१०२९) वर्ष पछी धनपाल पंडिते देशी नाममालानी रचना करी, तथा विक्रम संवत (१०९५) वर्ष पछी थिरापद्रीय गच्छमां वादी वैताल श्रीशांतिसूरि थया, तेमणे श्री उत्तराध्ययन उपर टीका करी.

३७ श्री सर्वदेवसूरिनी पाट उपर श्रीदेवसूरि थया, तेमने रूपश्री एवुं राजाये विरुद आप्युं. (३८) श्री देवसूरिनी पाट उपर बीजा श्री सर्वदेवसूरि थया. जेमणे यशोभद्र तथा नेमिचंद्र प्रमुख आठ आचार्योने आचार्य पदवी आपी. श्री महावीरथी (१४९६) वर्ष पछी तक्षिलानुं नाम गजनी राखवामां आव्युं. (३९) श्री सर्व देवसूरिनी पाट उपर श्री यशोभद्रसूरि तथा नेमिचंद्रसूरि बने गुरु भाइओ बेठा. विक्रम संवत (११३५) पछी तथा अन्य कथन मुजब (११३९) वर्ष पछी नवांगीवृत्ति करनारा श्रीअभयदेवसूरि महाराज स्वर्गवास पाम्या; अने कूर्चपुर गछी चैत्यवासी जीनेश्वरसूरिना शिष्य श्री जीनवल्लभ सूरिये चित्रकूटमां श्री महावीर स्वामिना छ कल्याणकनी प्ररुपणा करी.

४० श्री यशोभद्रसूरि तथा श्री नेमिचंद्रसूरिनी पाट उपर श्रीमुनिचंद्रसूरि थया. जेओये यावत् जीव मात्र सौवीर पाणी पीवानुं राखी, सर्व विगयनो त्याग कर्यो. वली तेओये श्रीहरिभद्रसूरिकृत अनेकांतजयपताका प्रमुख अनेक ग्रंथोनी पंजीका करी, तथा उपदेशवृत्ति, योगबिंदुवृत्ति प्रमुख अनेक वृत्तिओनी रचना करवाथी जगत्मां तार्किक शिरोमणि एवा विरुदथी प्रसिद्ध थया. आ आचार्य महा वैराग्यवान् निस्पृही थया. विक्रम संवत (११५९) वर्ष पछी चंद्रप्रभथी पौर्णिमीयक मतोत्पत्ति थइ. चंद्रप्रभने प्रतिबोधवावास्ते श्रीमुनिचंद्रसूरिये पाक्षिक सप्ततिकानी रचना करी. श्रीमुनिचंद्रसूरिना शिष्य वादी श्री अजीतदेवसूरि तथा देवसूरि प्रमुख थया. श्री अजीतदेवसूरिये अणहिलपुर पाटणमां श्री सिद्धराज जयसिंह राजानी सभामां अनेक विद्वानो साथे वाद करी चोरासी वादथी सर्व वादीओने पराजय पमाड्या. ते प्रसंगे दिगंबर मतना चक्रवर्ती,

श्रीकुमुदचंद्र आचार्यने पण वादमां जीती लीधा, अने दिगंबरोनो पाटणमां प्रवेश बंध कराव्यो. आ विना अत्यारसुधी प्रसिद्ध छे. तेउंये विक्रम संवत (१२०४) मां फलवर्द्धि ग्राममां चैत्यबिंबोनी प्रतिष्ठा करी, तथा आरासणामां श्रीनेमिनाथनी प्रतिष्ठा करी. तेउंए (८४०००) चोरासी हजार श्लोक प्रमाण स्याद्वाद रत्नाकर नामना ग्रंथनी रचना करी, अने तेमनाथी मोटा नामांकित चोवीश आचार्योनी शाखा थइ. तेउंनो जन्म संवत (११३४) दीक्षा संवत (११५२) सूरिपद संवत (११७४) मां प्राप्त थयुं. संवत (१२२०) श्रावण कृष्ण सप्तमी गुरुवारनारोज तेमनो स्वर्गवास थयो. तेमना समयमां श्री देवचंद्रसूरिना शिष्य त्रण क्रोड ग्रंथना कर्त्ता, कलिकालमां सर्वज्ञ विरुद धारक, पाटणना कुमारपालना प्रतिबोधक, सवालक्ष श्लोक प्रमाण पंचांग व्याकरणना कर्त्ता श्री हेमचंद्रसूरि विद्यासमुद्र थया, तेमनो विक्रम संवत (११४५) मां जन्म, संवत (११५०) दीक्षा, संवत (११६६) मां सूरि पद अने संवत (१२२९) मां स्वर्गवास थयो. तेमनुं संपूर्ण चरित्र श्री प्रबंध चिंतामणि तथा श्रीकुमारपालचरित्रथी जाणवुं.

श्रीमुनिचंद्र सूरिनी पाट उपर श्री अजीतदेवसूरि थया. तेमना समयमां संवत (१२०४) मां खरतरोत्पत्ति, तथा संवत (१२३३) मां आंचलिक मतोत्पत्ति, तथा संवत (१२३६) मां सार्द्धपौर्णिमीयक मतोत्पत्ति, तथा संवत (१२५०) मां आगमिक मतोत्पत्ति थइ. श्रीवीर जगवानथी (१६९२) वर्षे वागजट मंत्रीए श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर चौदमो उद्धार कराव्यो. ते प्रसंगे साडा त्रण क्रोड रुपीआनो व्यय कर्यो.

४२ श्री अजित देवसूरिनी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि थया. जेउंए विवेकमंजरी शुद्ध करी. तेमना मोटा शिष्य श्री सोमप्रजसूरि थया. तेउं शतार्थिकारक अर्थात् एकेक श्लोकना सो सो अर्थ निकले एवां काव्योनी रचना करनारा थया, बीजा मणिरत्न सूरि थया. (४३) श्रीविजयसिंह सूरिनी पाट उपर श्री सोमप्रजसूरि तथा श्रीमणिरत्न सूरि थया. (४४) सोमप्रज सूरि तथा श्रीमणिरत्न सूरिनी पाट उपर श्रीजगच्चंद्रसूरि थया. जेमणे पोताना गच्छने शिथिल देखी गुरुनी आज्ञाथी वैराग्य रसना समुद्र चैत्रवाल गच्छीय श्रीदेवजद्र उपाध्यायनी सहायथी क्रिया उद्धार कर्यो, अने हीरला जगचंद्र सूरि थया; कारण के ते-

मणे चितोडना राजानी सजामां वत्रीस दिगंवर आचार्यो साथे वाद कर्यो, जेमां तेउ हीरानी जेम अजेय रह्या, तेथी राजाए तेमने हीरला जगचंड सूरि एवुं विरुद आप्युं. वली तेमणे जावजीव आचाम्ल तपनो अजिग्रह कर्यो. वार वर्ष तप करतां थयां एटले चितोडना राणाये तेमने तपा एवुं विरुद आप्युं. संवत (१२७५) मां वडगछनुं नाम तपगछ थयुं. आ प्रमाणे ठ नामो थयां. १ निग्रंथ, २ कोटिक. ३ चंड, ४ वनवासी, ५ वडगछ, ६ तप गछ. आ ठ नामोना प्रवृत्त करनारा हेतुरुप आचार्यो थया. तेना नाम १ श्रीसुधर्मस्वामि, २ श्रीसुस्थितसूरि, ३ श्रीचंडसूरि, ४ श्री सामंतजडसूरि, ५ श्री सर्वदेवसूरि ६ श्री जगचंडसूरि.

४५ श्री जगचंड सूरिनी पाट उपर श्री देवेंड सूरि थया. तेमणे मालवानी उज्जयन नगरीमां जीनचंड नामना मोटा शेठना वीरधवल नामना पुत्रनो विवाह निमित्ते महोत्सव थइ रह्यो हतो, ते वीरधवल कुमारने प्रतिवोध करी संवत (१३०२) मां दीक्षा आपी; त्यार वाद तेना जाइने पण दीक्षा आपी, तेउ दीर्घकालसुधी मालवा देशमां विहार करता रह्या. वाद देवेंडसूरि गुजरातमां स्तंजतीर्थमां आव्या; त्यां प्रथमथी श्री विजयचंडसूरि गीतार्थोने पृथक् पृथक् वस्त्रोनी पोटलीउ आपे ठे, नित्य विगय खावानी आज्ञा आपे ठे, निरंतर वस्त्र धोवानी तथा फल, शाक लेवानी अने निवि प्रत्याख्यानमां विगयगत लेवानुं कहे ठे, तथा आर्यानो लावेलो आहार साधु वापरे एवी आज्ञा आपे ठे, वली दिन प्रत्ये द्विविध प्रत्याख्यान, अने गृहस्थोने अवर्जीने वास्ते प्रतिक्रमण करावानी आज्ञा आपे ठे, तथा संविजागने दिन तेमने घेर गीतार्थ जाय, लेपनी संनिधि राखवी, तत्कालनुं उष्णोदक गृहण करवुं; इत्यादि काम करवाथी केटलाएक शिथिलाचारी साधुने साथे लइ सदोष पौषधशालामां रह्या ठे.

आ विजयचंड आचार्यनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे. मंत्री वस्तुपालना घरमां विजयचंड नामनो दफतरी हतो, ते कोइ अपराधथी केदखानामां गयो. तेवामां तेने श्री देवजड उपाध्यायजीए दीक्षा लेवानी प्रतिज्ञा करावी कारागृहथी मुक्त कराव्यो. पठी तेणे दीक्षा लीधी. वुद्धिवलथी वहुश्रुत थयो, परंतु अजिमानी होवाथी मंत्री वस्तुपाले कह्युं के आ सूरिपद आपवा योग्य नथी. आ प्रमाणे वस्तुपाल मंत्रीनी मना

छतां श्री जगचंद्र सूरिए श्री देवभद्र उपाध्यायना कहेवाथी तेने सूरिपद आप्युं; वली एवी धारणाथी सूरिपद आपवामां आव्युं के विजयचंद्र देवेंद्र सूरिने सहायक थशे. विजयचंद्र बहु वखत सुधी श्री देवेंद्रसूरिनी साथे विनयवान् शिष्यनी जेम वर्तता रह्या, परंतु ज्यारे मालवा देशमां देवेंद्रसूरि आव्या, त्यारे ते वंदना करवाने पण आव्या नहि; बाद श्री देवेंद्र सूरिजीए कहेवराव्युं के एकज वस्तिमां आप बार वर्ष सुधि केम रह्या? विजयचंद्रे उत्तरमां कहेवराव्युं के, शांत दांतने बार वर्ष सुधी एक जगामां रहेवाथी कांइ दोष नथी. संविग्न साधुओ सर्वे, देवेंद्रसूरिनी साथे रह्या. देवेंद्र सूरिजी अनेक संविज्ञ साधुना समुदायनी साथे उपाश्रयमांज रह्या. विजयचंद्र सूरिनो समुदाय वडी शालामां रहेवाथी लोकोए तेमनुं नाम वृद्ध पौशालिक राख्युं, अने देवेंद्रसूरिना समुदायनुं नाम लघु पौशालिक राख्युं. स्तंभतीर्थना चोकमां कुमारपालविहारमां धर्मदेशा नामे मंत्री वस्तुपाले चारे वेदोना निर्णयकारक स्वसमय परसमयना जाणकार श्री देवेंद्रसूरिजीने वंदना करी बहुमान आप्युं. बाद श्री देवेंद्रसूरिजी विजयचंद्रनी उपेक्षा करी विचरता थका अनुक्रमे पालणपुरमां आव्या. चोराशी धनाढ्य शेठीआ तथा अनेक जन समुदाय निरंतर व्याख्यान श्रवण करवा आवता हता; शास्त्रना श्रोता पुरुषो अनेक हता. पालणपुरमां व्याख्यान श्रवण करवा आवनाराओ निरंतर एक मूडा प्रमाण अक्षत अने सोल मण सोपारी दर्शनावसरे चढावता हता, जैनशासननी बहुज उन्नति थइ रहि हती; ते अवसरे सुज्ञ धर्मी लोकोए गुरुजीने विनंति करी के हे भगवन्! आप अहींआ कोइने आचार्य पदवी आपी अमारा मनोरथ पूर्ण करो. गुरुजीए उचित जाणी विक्रम संवत (१३२३) मां पालणपुरमां वीरधवलने श्री विद्यानंद नाम दइ सूरिपद आप्युं. तेमना अनुज भीमसिंहने धर्मकीर्ति उपाध्यायनी पदवी आपी. ते अवसरे प्रल्हादनविहारना सौवर्ण कपिशीर्ष मंडपमां कुंकुमनी वृष्टि थइ, तेथी लोको बहुज आश्चर्य पाम्या. श्री विद्यानंद सूरिजीए विद्यानंद नामनुं नवीन व्याकरण बनाव्युं. यदुक्तं ॥ विद्या नंदाभिधं येन, कृतं व्याकरणं नवं ॥ भाति सर्वोत्तमं स्वल्प, सूत्रं बह्वर्थ संग्रहं ॥१॥ बाद श्री देवेंद्रसूरिजी फरी

मालवामां विहार करता हवा. श्री देवेंद्र सूरिजीए जे ग्रंथोनी रचना करी छे, तेना नाम. १ श्राद्धदिनकृत्यसुत्रवृत्ति, २ नव्यकर्मग्रंथ पंचक सूत्र वृत्ति, ३ सिद्ध पंचाशिका सूत्र वृत्ति, ४ धर्मरत्न वृत्ति, ५ सुदर्शन चारित्र, ६ त्रण भाष्य, ७ वृंदारवृत्ति, ८ सिरि उसहवद्धमाण प्रमुख स्तवनो. कोइ कहे छे के श्राद्धदिनकृत्य सूत्र तो चिरंतन आचार्यनुं करेल छे. श्री देवेंद्र सूरिनो मालवा देशमां विक्रम संवत (१३२७) मां स्वर्गवास थयो. दैवयोगथी विद्यापुरमां तेर दिवस पछी श्री विद्यानंद सूरिनो पण स्वर्गवास थयो. बाद छमास पछी सगोत्रसूरिए श्री विद्यानंद सूरिना बंधु श्री धर्मकीर्ति उपाध्यायने सूरिपद आपी श्री धर्मघोष सूरि नाम आप्युं.

४६ श्री देवेंद्र सूरिनी पाटउपर श्री धर्मघोष सूरि थया. जेमणे मंडपाचलमां शा. श्री पृथ्वीधरने पंचम अनुव्रत लेतां ज्ञानथी निषेध कर्यो. आचार्ये ज्ञानथी जाण्युं के आ पुरुषनुं व्रत भंग थइ जशे, ते कारणथी जयथी निषेध कर्यो. बाद पृथ्वीधर मंडपाचल राजानो मंत्री थयो. धनवृद्धिथी धनद समान थइ गयो. तेणे चोरासी जीनमंदिर तथा सात ज्ञानना भंडार कराव्या; तथा शत्रुंजय तीर्थ उपर एकवीश धडी प्रमाण सुवर्ण खरची रूपामय श्री रीषभदेवजीनुं मंदिर बंधाव्युं. कोइ कहे छे के छप्पन धडी प्रमाण सुवर्ण आपी इंद्रमाल पेहेरी, धरती नगरमां कोइ साधर्मीने ब्रह्मचारीना वेष आपवाना अवसरमां पृथ्वीधरने महा धनाढ्य जाणी तेनी भेट करी, ते वखते पृथ्वीधरे तेज वेष ग्रहण करी तेज दिनथी अर्थात बत्रीस वर्षनी उमरमां ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर्युं. तेने झांजण नामनो एकज पुत्र हतो. तेणे श्री शत्रुंजय तथा उज्जयंत गिरिना शिखर उपर बार योजन प्रमाण सुवर्ण रुप्पमय एक ध्वजा चढावी. तेमणे सारंगदेव राजा पासे कर्पुरनुं मेहेसुल बंध कराव्युं, तथा मंडपाचलमां गुरुना प्रवेश महोत्सवमां (७२०००) रूपैआनो खर्च कर्यो.

श्री धर्मघोष सूरिए देवपत्तनमां शिष्योनी विनंतिथी मंत्रमय स्तुति बनावी. वली स्वध्याननना बलथी, वज्रस्वामिए स्वशक्तिथी पुरातन कपर्दी यक्ष जे मिथ्यादृष्टि थइ गयो हतो तेने नवीन कपर्दी यक्षथी

दूर कर्यो हतो, ते मिथ्यादृष्टि कपर्दीने प्रतिबोधी श्री जिनबिंबोनो अ-धिष्ठाता कर्यो; तथा जेमनी पासे समुद्रना अधिष्ठाताए समुद्रना तरं-गोथी रत्न ढोकन कर्यां. एकदा प्रस्तावे कोइ दुष्ट स्त्रीए कामणयुक्त वडां बनावी साधुने वहोराव्यां, परंतु श्री धर्मघोष सूरिजीए ते वडां धरती उपर फेंकावी जमीनमां परिठावी दीधां. ते स्त्रीने मंत्रथी पकडावी ज्यारे बहु दुःखी थइ,त्यारे दयाथी छोडी दीधी. वली विद्यापुरमां पञ्चां-तरीउनी स्त्रीउए धर्मघोषजीने व्याख्यानरसना जंग वास्ते मंत्रथी कं-ठमां केशगुच्छक करी दीधो, ते ज्यारे सूरिजीना जाणवामां आव्युं त्यारे ते स्त्रीउने स्तंजन करी दीधी. ज्यारे ते स्त्रीउए आजीजी करीके हवे प-छी अमे आपना गच्छने उपद्रव नहि करीए, त्यारे गुरुजीए संघना बहु आग्रहथी तेमने छोडी दीधी. वली उज्जयनममां एक योगी जैनना साधुउने रहेवा देतो न होतो; ज्यारे श्री धर्मघोष सूरि त्यां आव्या, त्यारे ते योगीए साधुउने कह्युं के हवे अहींआं आव्या छो तो सावचेत थइ रहेजो. साधुउए कह्युं अमे पण जोइए छीए के तमे शुं करो छो? योगीए साधुउने दांत फाडी बताव्या, त्यारे साधुउए तेने कोणी बता-वी. साधुउए सर्व समाचार पोताना गुरुजीने कह्या. बाद योगीए धर्म-शालामां विद्याना बलथी बहु उंदरो बनाव्या, जेथी साधुउ बहु डरवा लाग्या, पछी गुरुजीए घडाना मुख उपर वस्त्र ढांकी एवो मंत्रजप कर्यो के, जेथी ते योगी आराटि करतो आवी गुरुना पगमां पड्यो, अने पो-ताना अपराध माटे क्षमा मागवा लाग्यो. वली कोइ नगरमां शाकिनी-उनां जयथी मंत्रथी दरवाजा बंध करवामां आवता हता, एकदा मंत्र विना दरवाजा बंध करवामां आव्या, जेथी रात्रिए शाकिनीउए उपद्रव कर्यो. गुरुजीए तेमने विद्याथी स्तंजित करी अने उपद्रव दूर कर्यो. ए-कदा रात्रिए गुरुजीने सर्पना डंसथी जेर चड्युं, गुरुजीए संघने गजरा-येलो देखी कह्युं के दरवाजामां कोइ पुरुष पोताना मस्तक उपर का-ष्ठनो जारो लइ आवशे, तेमां विषापहार एक वेलडी आवशे, ते वेलडी घसीने डंख उपर लगावी देजो, जेथी जेर उतरशे. संघे तेज प्रमाणे कर्युं जेथी जेर उतरी गयुं, अने गुरु साजा थया. बाद ते दिवसथी गुरुए जावजीव छ विगयनो त्याग कर्यो, अने निरंतर जुवारनी रोटली

मालवामां विहार करता हवा. श्री देवेंद्र सूरिजीए जे ग्रंथोनी रचना करी छे, तेना नाम. १ श्राद्धदिनकृत्यसुत्रवृत्ति, २ नव्यकर्मग्रंथ पंचक सूत्र वृत्ति, ३ सिद्ध पंचाशिका सूत्र वृत्ति, ४ धर्मरत्न वृत्ति, ५ सुदर्शन चारित्र, ६ त्रण भाष्य, ७ वृंदारवृत्ति, ८ सिरि उसहवद्धमाण प्रमुख स्तवनो. कोइ कहे छे के श्राद्धदिनकृत्य सूत्र तो चिरंतन आचार्यनुं करेल छे. श्री देवेंद्र सूरिनो मालवा देशमां विक्रम संवत (१३२७) मां स्वर्गवास थयो. दैवयोगथी विद्यापुरमां तेर दिवस पछी श्री विद्यानंद सूरिनो पण स्वर्गवास थयो. बाद छमास पछी सगोत्रसूरिए श्री विद्यानंद सूरिना बंधु श्री धर्मकीर्ति उपाध्यायने सूरिपद आपी श्री धर्मघोष सूरि नाम आप्युं.

४६ श्री देवेंद्र सूरिनी पाटउपर श्री धर्मघोष सूरि थया. जेमणे मंडपाचलमां शा. श्री पृथ्वीधरने पंचम अनुव्रत लेतां ज्ञानथी निषेध कर्यो. आचार्यें ज्ञानथी जाण्युं के आ पुरुषनुं व्रत भंग थइ जशे, ते कारणथी ज्ञयथी निषेध कर्यो. बाद पृथ्वीधर मंडपाचल राजानो मंत्री थयो. धनवृद्धिथी धनद समान थइ गयो. तेणे चोरासी जीनमंदिर तथा सात ज्ञानना भंडार कराव्या; तथा शत्रुंजय तीर्थ उपर एकवीश धडी प्रमाण सुवर्ण खरची रूपामय श्री रीषभदेवजीनुं मंदिर बंधाव्युं. कोइ कहे छे के छप्पन धडी प्रमाण सुवर्ण आपी इंद्रमाल पेहेरी, धरती नगरमां कोइ साधर्मीने ब्रह्मचारीना वेष आपवाना अवसरमां पृथ्वीधरने महा धनाढ्य जाणी तेनी भेट करी, ते वखते पृथ्वीधरे तेज वेष ग्रहण करी तेज दिनथी अर्थात बत्रीस वर्षनी उमरमां ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर्युं. तेने जांजण नामनो एकज पुत्र हतो. तेणे श्री शत्रुंजय तथा उज्जयंत गिरिना शिखर उपर बार योजन प्रमाण सुवर्ण रुप्पमय एक ध्वजा चढावी. तेमणे सारंगदेव राजा पासे कर्पुरनुं मेहेसुल बंध कराव्युं, तथा मंडपाचलमां गुरुना प्रवेश महोत्सवमां (७२०००) रूपेआनो खर्च कर्यो.

श्री धर्मघोष सूरिए देवपत्तनमां शिष्योनी विनंतिथी मंत्रमय स्तुति बनावी. वली स्वध्यानना बलथी, वज्रस्वामिए स्वशक्तिथी पुरातन कपर्दी यक्ष जे मिथ्यादृष्टि थइ गयो हतो तेने नवीन कपर्दी यक्षथी

दूर कर्यो हतो, ते मिथ्यादृष्टि कपर्दीने प्रतिबोधी श्री जिनबिंबोनो अधिष्ठाता कर्यो; तथा जेमनी पासे समुद्रना अधिष्ठाताए समुद्रना तरंगोथी रत्न ढोकन कर्यां. एकदा प्रस्तावे कोइ दुष्ट स्त्रीए कामणयुक्त वडां बनावी साधुने वहोराव्यां, परंतु श्री धर्मघोष सूरिजीए ते वडां धरती उपर फेंकावी जमीनमां परिठावी दीधां. ते स्त्रीने मंत्रथी पकडावी ज्यारे बहु दुःखी थइ,त्यारे दयाथी छोडी दीधी. वली विद्यापुरमां पद्मांतरीउनी स्त्रीउए धर्मघोषजीने व्याख्यानरसना भंग वास्ते मंत्रथी कंठमां केशगुच्छक करी दीधो, ते ज्यारे सूरिजीना जाणवामां आव्युं त्यारे ते स्त्रीउने स्तंभन करी दीधी. ज्यारे ते स्त्रीउए आजीजी करी के हवे पछी अमे आपना गच्छने उपद्रव नहि करीए, त्यारे गुरुजीए संघना बहु आग्रहथी तेमने छोडी दीधी. वली उज्जयनममां एक योगी जैनना साधुउने रहेवा देतो न होतो; ज्यारे श्री धर्मघोष सूरि त्यां आव्या, त्यारे ते योगीए साधुउने कह्युं के हवे अहींआं आव्या छो तो सावचेत थइ रहेजो. साधुउए कह्युं अमे पण जोइए छीए के तमे शुं करो छो? योगीए साधुउने दांत फाडी बताव्या, त्यारे साधुउए तेने कोणी बतावी. साधुउए सर्व समाचार पोताना गुरुजीने कह्या. बाद योगीए धर्मशालामां विद्याना बलथी बहु उंदरो बनाव्या, जेथी साधुउ बहु डरवा लाग्या, पछी गुरुजीए घडाना मुख उपर वस्त्र ढांकी एवो मंत्रजप कर्यो के, जेथी ते योगी आराटि करतो आवी गुरुना पगमां पड्यो, अने पोताना अपराध माटे क्षमा मागवा लाग्यो. वली कोइ नगरमां शाकिनीउनां भयथी मंत्रथी दरवाजा बंध करवामां आवता हता, एकदा मंत्र विना दरवाजा बंध करवामां आव्या, जेथी रात्रिए शाकिनीउए उपद्रव कर्यो. गुरुजीए तेमने विद्याथी स्तंभित करी अने उपद्रव दूर कर्यो. एकदा रात्रिए गुरुजीने सर्पना डंसथी झेर चड्युं, गुरुजीए संघने गभरायेलो देखी कह्युं के दरवाजामां कोइ पुरुष पोताना मस्तक उपर काष्टनो भारो लइ आवशे, तेमां विषापहार एक वेलडी आवशे, ते वेलडी घसीने डंख उपर लगावी देजो, जेथी झेर उतरशे. संघे तेज प्रमाणे कर्युं जेथी झेर उतरी गयुं, अने गुरु साजा थया. बाद ते दिवसथी गुरुए जावजीव छ विगयनो त्याग कर्यो, अने निरंतर जुवारनी रोटली

नीरस जाणी खाता रह्या, श्री धर्मघोष सूरिजीए रचेला ग्रंथोना नाम. १ संघाचारभाष्यवृत्ति, २ सुश्रधम्मेतिस्तव, ३ कायस्थिति, भवस्थिति, ४ चोवीस तीर्थंकरना चोवीस स्तवन, ५ श्रस्ताशर्मेत्यादि स्तोत्रं, ६ देवेंद्रैरनिशं इति श्लेष स्तोत्रं, ७ यूयं युवात्व मितिश्लेष स्तुतीउं, ८ जयवृषभेत्यादि स्तुति. आ जय वृषभेत्यादि स्तुति करवानो हेतु ए छे के, एक मंत्रीए आठ यमक एक काव्यरची कह्युं के आवुं काव्य हाल कोइ रची शकतुं नथी, गुरुए कह्युं के नास्ति नथी, मंत्रीए कह्युं के आप करी बतावो, जेथी गुरुजीए जय वृषभ इत्यादि ८ स्तुति एक रात्रिमां बनावी भीत उपर लखी बतावी, जे वांची मंत्री बहुज चमत्कार पाम्या. गुरुजीए तेने प्रतिबोधी जैनी कर्यो. श्री धर्मघोष सूरि विक्रम संवत (१३५७) मां स्वर्गवास पाम्या.

४७ श्री धर्मघोषसूरिनी पाट उपर श्री सोमप्रभसूरि थया. जेमणे नमीउण इत्यादि आराधन सूत्र कर्या. तेमनो संवत (१३१०) जन्म, संवत (१३२१) दीक्षा, संवत (१३३२) सूरि पद. जेउंने अगीआरे अंगोसूत्रार्थ कंठस्थ हतां. तथा " गुरुभिर्गीयमानायां मंत्र पुस्तकायां यन्नत चरित्रं मंत्रपुस्तिकांच " एम कही ते मंत्रपुस्तकोने ग्रहण करता हवा; कारण के बीजो कोइ योग्य न हतो. श्री सोमप्रभसूरिये जलकुंकण देशमां अपकायनी विराधनाना भयथी, अने मरु देशमां शुरू जलनी डुर्लभताथी साधुउंनो विहार बंध कर्यो. भीमपल्लीमां बे कारतक मास थया, जेथी सोमप्रभजीये प्रथम कारतकनी एकादशीनारोज विहार कर्यो, कारण के तेममा जाणवामां आव्युं के भीमपल्लीनो भंग थइ जशे, जेथी भंग थया पछी जे रह्या ते दुःखी थया. तेमना ग्रथोनां नाम. १ जीतकल्पसूत्र, २ यत्राखिल इत्यादि स्तुतिउं, ३ जीतेनयेन इत्यादि स्तुतिउं, ४ श्री मद्धर्म्मे इत्यादि. तेमना मोटा शिष्य विमलप्रभ सूरि, श्री परमानंद सूरि, श्री पद्मतिलकसूरि तथा श्री सोमविमलसूरि हता. जे दिवसे श्री धर्मघोपसूरि स्वर्गवास पाम्या, तेज दिवसे संवत (१३५७) मां श्री सोमप्रभसूरिजीये श्री विमलप्रभसूरिने सूरिपद आप्युं; कारण के तेउंये पोतानुं आयु अल्प छे एम जाण्युं. श्री सोमप्रभसूरि (१३७३) मां देवलोक पाम्या.

४८ श्री सोम प्रजसूरिनी पाट उपर श्री सोमतिलक सूरि थया. तेमनो संवत (१३५५) माघ मासमां जन्म, संवत (१३६९) मां दीक्षा, संवत (१३७३) मां सूरि पद अने संवत (१४२४) मां स्वर्गवास थयो. तेमना ग्रंथना नाम. १ बृहत् नव्य क्षेत्र समास सूत्र, २ सत्तरिसयठाण, ३ यत्राखिल जय वृषज स्वस्ताशर्म प्रमुखनी वृत्ति, ४ श्री तीर्थराज० चतुर्थस्तुति तद्वृत्ति, ५ शुजजावानत० श्रीमद्वीरस्तुति इत्यादि कमलबंधस्तव, ६ शिवशिरसि श्री नाजि संजव० श्री शैवेय० इत्यादिस्तवन. श्रीसोमतिलक सूरिये अनुक्रमे १ श्री पद्मतिलक सूरि, २ श्री चंद्रशेखर सूरि, ३ श्रीजयानंद सूरि, श्री देवसुंदरसूरिने सूरिपद आप्यां. तेमां श्री पद्मतिलकसूरि, श्री सोमतिलकसूरिथी पर्यायमां वडा हता, ते एक वर्ष जीवता रह्या, तेउ महा वैराग्यवान् हता. श्रीचंद्रशेखरसूरि संवत (१३७३) मां जन्म(१३८५) मां दीक्षा,(१३९३) मां सूरिपद पाम्या. तेमना ग्रंथना नाम. १ उषितजोजन कथा, २ यवराज रुषि कथा, श्रीमत्स्तंजकहार बंधादि स्तवन. जेमना मंत्रोथी बीजा मंत्रवादीउ हारी जता. उपद्रव करनारा ग्रह, हरिका, कुर्कर मृगराज, श्वान, शुरिति दूर थइ जता हता. श्री जयानंद सूरि संवत (१३८० मां जन्म, (१३९२) आषाढ सुद ७ शुक्रवार दिवसे धारा नगरीमां व्रत ग्रहण, (१४२०) मां सूरिपद पाम्या, अने (१४४१) मां स्वर्गवास पाम्या. तेमना ग्रंथ. १ श्री स्थूलजद्र चरित्र, २ देवाः प्रजोयं प्रमुखस्तवन.

४९ श्री सोमतिलक सूरिनी पाट उपर श्री देवसुंदरसूरि थया. तेमनो संवत (१३९६) मां जन्म, (१४०४) मां दीक्षा, (१४२०) मां अणहिलपुर पाटणमां सुरिपद; देव सुंदरसूरि महा योगाभ्यासी, मंत्र तंत्रनी रीद्धिना मंदिर, स्थावर जंगम विषापहारी, जल, अनल, व्याल, हरिना जयना नाश करनारा, अतीत अनागत निमित्तना वेत्ता, राजमंत्री प्रमुखना पुजनीक हता. श्री देवसुंदर सूरिना पांच शिष्य थया, १ श्री ज्ञानसागरसूरि, २ श्री कुलमंडनसूरि, ३ श्री गुणरत्न सूरि, ४ श्री सोमसुंदरसूरि, ५ श्री साधुरत्नसूरि. श्रीज्ञानसागर सूरिनो संवत (१४०५) मां जन्म, (१४१७) मां दीक्षा, (१४४१) मां सूरिपद, (१४६०) मां स्वर्गवास थयो. तेमना रचेला ग्रंथ. श्री आवश्यक, उघनिर्युक्ति प्रमुख अ-

नेक ग्रंथोनी अवचुरी, श्रीमुनिसुव्रत स्वामि स्तवन, घनौघनखंड पार्श्वनाथादि स्तवन. श्रीकुलमंडन सूरिनो संवत (१४०९) मां जन्म, (१४१७) मां दीक्षा, (१४४२) मां सूरिपद, (१४५५) मां स्वर्गवास थयो. तेमना रचेला ग्रंथ. सिद्धांतालापकोद्धार, विश्व श्रीधर इत्यादि, अष्टादशारचक्र स्तव, गरीउं तथा हार स्तवादय. श्री गुणरत्नसूरिना रचेला ग्रंथ, १ क्रियारत्नसमुच्चय, षटदर्शन समुच्चय वृहद्वृत्ति, श्री साधुरत्नसूरिनो रचेलो ग्रंथ १ यतिजीकल्पवृत्ति छे

५० श्री देव सुंदर सूरिनी पाट उपर श्री सोमसुंदर सूरि थया, तेमनो संवत (१४३०) मां जन्म, (१४३७) मां दीक्षा, (१४५०) वाचकपद, (१४५७) मां सूरिपद, अने (१४९९) मां स्वर्गवास थयो. तेमनो (१८००) साधुनो परिवार, महाक्रियापात्र हतो. ते देखीने केटलाएक पाखंडी लोकोए तेमनो वध करवा वास्ते एक हजार माणसने लालच आपी मोकल्या; जे मकानमां रात्रिना गुरुए संथारो कर्यो हतो, ते मकानमां वध करनाराउ आवी संताइ रह्या; तेउ गुरुजीने मारवानी तैयारी करता हता तेवामां चंद्रमाना प्रकाशथी गुरुजीने पासुं फेरवतां रजोहरणथी प्रथम पूंजता दीठा, ते देखी तेउना मनमां विचार आव्यो केः— निद्रामां पण आ पुरुष क्षुद्र प्राणियोनी रक्षा करे छे, अने आपणे तो तेमनो वध करवा आव्या छीए, माटे आपणामां अने तेनामां केटलो अंतर छे ? तेथी मनमां पापथी डरी गुरुना चरणकमलमां पडी अपराध खमावता हवा. तेमना रचेला ग्रंथ योगशास्त्र, उपदेशमाला, षडावश्यक, नवतत्त्वादि बालावबोध, भाष्यावचूर्णि, कल्याणिकस्तोत्र प्रमुख. तेमना शिष्य श्रीमुनिसुंदरसूरि, कृष्ण सरस्वती बिरुद धारक, श्रीजय सुंदरसूरि, तथा महाविद्या विडंबन टिपनक कारक श्री भुवनसुंदरसूरि, जेमने एकादश अंग सूत्रार्थ कंठस्थ हतां, तथा चोथा जीनसुंदरसूरि, आ चार तेमना प्रतापी शिष्य थया, जेमणे श्रीराणकपुरमां श्रीधनाकृत चौमुख विहारमां श्रीरीषभादि अनेक शत बिंबोनी प्रतिष्ठा करी.

५१ श्रीसो मसुंदरसूरिनी पाट उपर श्रीमुनिसुंदरसूरि थया. तेमणे अनेक प्रासाद, पद्मचक्र, षटकारक, क्रियागुप्तक, अर्द्धभ्रम, सर्वतोभद्र,

मुरज, सिंहासन, अशोक, ज़ेरी, समवसरण, सरोवर, अष्टमहाप्रातिहार्यादि नवीन त्रिंशति बंध, तर्क प्रयोगादि अनेक चित्राक्षर, द्व्यक्षर, पंचवर्ग परिहारादि अनेक स्तवमय त्रिदशतरंगिणी नामनी एकसो आठ हाथ लांबी पत्रिका लखी गुरुजी उपर मोकली, तथा चातुर्वेद्य विशारद्यनिधि, उपदेशरत्नाकर प्रमुख अनेक ग्रंथोनी रचना करी. वली जेमनुं श्री स्तंभतीर्थमां दफूरखाने "वादीगोकुलसंड" एवुं नाम प्रसिद्ध कर्युं. जेमने दक्षिणमां "वालसरस्वती" एवुं नाम प्राप्त थयुं. तेओ आठ वर्ष गणनायक, अने त्रण वर्ष युगप्रधान पदमां रह्या. तेओ एकसो आठ वर्त्तुलिकानादोपलक्षक, बाल्यावस्थामां पण एक सहस्र श्लोक नवीन दररोज कंठे करी लेता हता. वली तेमणे "संतिकरं" नामनुं समहिम्न स्तवन करी योगिनीकृत मरकीनो उपद्रव दूर कर्यो. चोवीश वार विधिथी सूरि मंत्रनुं आराधन कर्युं, अने चौद वार, धारा नगरी प्रमुख नगरना स्वामि, पांच राजाओए पोतपोताना देशमां जेमना उपदेशथी अमारिका ढंढेरो पिटाव्यो, तथा शिरोहीना सहस्रमल्ल राजाने पण अप्रमार प्रवृत्त करी, तेमनो तीडनो उपद्रव टाळ्यो. तेमनो विक्रम संवत (१४३६) मां जन्म, (१४४३) मां दीक्षा, (१४६६) मां वाचक पद, (१४७८) सूरिपद; जे वखते वृद्धनगरीना शाह देवराजे (३२०००) रूपीआ महोत्सवमां खरच्या, तथा (१५०३) कारतक सुद पडवाने दिवसे तेमनो स्वर्गवास थयो.

५२ श्री मुनिसुंदर सूरिनी पाट उपर श्री रत्नशेखर सूरि थया. तेमनो (१४५७) मां जन्म, (१४६३) मां दीक्षा, (१४८३) मां पंडित पद, (१४९३) मां वाचकपद, (१५०२) मां सूरिपद, (१५१७) पोस वदीछठना रोज स्वर्गवास थयो. जेमने स्तंभ तीर्थमां वांवी नामना भट्टे वाल सरस्वती नाम आप्युं. तेमना रचेला ग्रंथ. श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति, श्राद्धविधि सूत्र वृत्ति, लघुक्षेत्र समास, आचारप्रदीप प्रमुख अनेक छे. जेमना समयमां लुंका नामना लिखारी (लहीआ) ए संवत (१५०८) मां जीन प्रतिमा उत्थापक लुंका नामनो मत चलाव्यो. ते मतमां (१५३३) मां भाणा नामनो ते मतना वेषनो धारण करनार प्रथम साधु थयो. ते मतनी उत्पत्ति आ प्रमाणे थइ.

गुजरात देशमां अमदावादमां दशा श्रीमालि ज्ञातिनो लुंका नामनो लिखारी रहेतो हतो; ते ज्ञानसागर यतिना उपाश्रयमां पुस्तक लखी, ते आमदानीथी पोतानुं गुजरान चलावतो हतो. एकदा प्रस्तावे एक ग्रंथ लखतां, ते ग्रंथनां सात पाना लख्या विना गोडवी दीधां. ज्यारे पुस्तक वांचवामां आव्युं, त्यारे तेने पुछ्युं के, सात पाना लख्या विना केम रहेवा दीधां? लुंकाए ते बाबत सिद्धो उत्तर नहि आपतां, पुठनारने आडा अवला कारण बतावी, लडवा मांड्युं. लोकोए ते वखते तेनी लुच्चाइ देखी, तेने मार मारी उपाश्रयमांथी हांकी काढ्यो, अने नगरमां जाहेर कर्युं के तेणे उपर मुजब काम कर्युं छे, तेथी तेनी पासे कोइए ग्रंथ लखाववो नहि. बाद लुंको लाचार थवाथी द्वेष राखी अमदावादथी छेंतालीस कोस दूर लींबडी नगरमां आव्यो. लींबडीमां लुंकानी ज्ञातिनो लखमशी नामनो एक वाणीओ राज्यमां कारभारी हतो, तेनी पासे ते बहुज रोयो अने कल्पांत कर्यो. लखमशीए पुछ्युं तमने शुं दुःख छे? त्यारे तेणें कह्युं के, अमदावादमां हुं भगवाननो सत्य मत कथन करवा लाग्यो, जेथी तपगछना श्रावकोए मने बहुज मार्यो. हवे हुं आपनी पासे आव्यो छुं, जो आप मारा मददगार थाओ तो, हुं सत्य मत प्रगट करुं. लखीमशीए कह्युं, लींबडीना राज्यमां तमे बेसक तमारो सत्य मत प्रगट करी उपदेश करो. हुं तमोने मदद आपीश, खान पान संबंधी फिकर करवी नहि, तमारी पासे शास्त्र पण श्रवण करीश. ते उपरथी लुंको श्री महावीर भगवंतना साधुओनी तथा जीनप्रतिमानी उत्थापना करवा लाग्यो. शुरू साधुओने कहेवा लाग्यो के, तेओ भ्रष्टचारी छे, निर्दयी छे, मीथ्या ज्ञानो उपदेश करे छे, इत्यादि मनमानी निंदा करवी शरु करी. शास्त्रोमां पण जे जे शास्त्रोमां जीनप्रतिमानी जीकर न होती ते ते शास्त्रोनेज साचा मानवा लाग्यो, अने जेमां जेमां थोडो थोडो जीनप्रतिमानो अधिकार हतो, तेना पाठोना अर्थ कुयुक्तियोथी कांइना कांइ समजाववा लाग्यो. मात्र एकत्रीश शास्त्र साचां छे, एम प्ररुपवा लाग्यो, तेमां पण आवश्यक सूत्रने तो बिलकुल बगाडी, कांइनुं कांइ बनावी, लोकोने स्वकपोलकल्पित कहेवा लाग्यो, कारण के आवश्यकमां बहु स्थले जीनप्रतिमानो अधिकार छे. एक दिवस लुंकाने

कोइए कह्युं के जैन दीक्षा लीधा विना शास्त्र जणवानो व्यवहार सूत्रमां निषेध करेल छे, तो तमे गृहस्थ थइने शास्त्र केम वांचो छो? लुंकाए कह्युं के, हुं व्यवहार सूत्रनेज सत्य मानतो नथी. आ प्रमाणे प्ररुपणा पचीस वर्ष करी, परंतु लुंकाना उपदेशथी कोइ पण साधु थयो नहि. ज्यारे संवत (१५३३) नी शाल आवी, त्यारे पूर्वोक्त जाणा वाणीआए लुंकाना उपदेशथी वेष पेहेर्यो. तेनुं नाम जाणारिख पाड्युं. तेनो शिष्य संवत (१५६८) मां रूपजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१५७८) मां जीवाजीरिख थयो, तेनो शिष्य संवत (१५८७) मां वृद्धवरसिंहजी थयो, तेतो शिष्य (१६०६) मां वरसिंहजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१६४९) मां जसवंतजी थयो. आ लुंपक मतनी त्रण शाखा थइ. १ गुजराती, २ नागोरी, ३ उतराधी. इति लुंपकमतोत्पत्ति.

५३ श्री रत्नशेखर सूरिनी पाट उपर श्री लक्ष्मीसागर सूरि थया. तेमनो (१४६४) मां जन्म, (१४९०) मां दीक्षा, (१५०१) वाचक पद, (१५०८) सूरिपद. (५४) श्री लक्ष्मीसागर सूरिनी पाट उपर श्री सुमतिसाधु सूरि थया. (५५) श्री सुमतिसाधु सूरिनी पाट उपर श्री हेमविमल सूरि थया. तेउ शिथिल साधुउनी वचमां रह्या, तो पण पोते साधुनो आचार उल्लंघन कर्यो नहि, तेथी केटलाएक दिवस पछी वहु साधुउए शिथिलपणुं तजी दीधुं. वली रुषि हरगिरि, रुषि श्रीपति, रुषि गणपति प्रमुख वहु जनोए लुंपक मतनो त्याग करी श्री हेमविमल सूरि पासे दीक्षा लीधी. ते अवसरे संवत (१५६२) मां कडवा नामना एक वाणीआए कडवो मत चलाव्यो, अने त्रण थुइ मानी, तेमज आ कालमां कोइ साधु देखाता नथी एवो पंथ चलाव्यो. वली संवत (१५७०) मां लुंकामतमांथी निकली वीजा नामना वेषधारीए वीजो मत चलाव्यो, जेने लोको विजयगछ कहे छे. संवत (१५७२) मां नागपुरीआ तपगछमांथी निकली उपाध्याय पार्श्वचंद्रे पोताना नामथी पासचंदीउ मत चलाव्यो.

५६ श्रीहेमविमल सूरिनी पाट उपर श्रीसुविहितमुनि चुडामणि, कुमततम नाश करवाने सूर्य समान श्री आनंदविमल सूरि थया. तेमनो संवत (१५४७) मां जन्म (१५५२) मां दीक्षा, (१५७०) मां

गुजरात देशमां अमदावादमां दशा श्रीमालि ज्ञातिनो लुंका नामनो लिखारी रहेतो हतो; ते ज्ञानसागर यतिना उपाश्रयमां पुस्तक लखी, ते आमदानीथी पोतानुं गुजरान चलावतो हतो. एकदा प्रस्तावे एक ग्रंथ लखतां, ते ग्रंथनां सात पाना लख्या विना गोडवी दीधां. ज्यारे पुस्तक वांचवामां आव्युं, त्यारे तेने पुछ्युं के, सात पाना लख्या विना केम रहेवा दीधां ? लुंकाए ते बाबत सिधो उत्तर नहि आपतां, पुठनारने आडा अवला कारण बतावी, लडवा मांड्युं. लोकोए ते वखते तेनी लुच्चाइ देखी, तेने मार मारी उपाश्रयमांथी हांकी काढ्यो, अने नगरमां जाहेर कर्युं के तेणे उपर मुजब काम कर्युं छे, तेथी तेनी पासे कोइए ग्रंथ लखाववो नहि. बाद लुंको लाचार थवाथी द्वेष राखी अमदावादथी छेंतालीस कोस दूर लींबडी नगरमां आव्यो. लींबडीमां लुंकानी ज्ञातिनो लखमशी नामनो एक वाणीउ राज्यमां कारभारी हतो, तेनी पासे ते बहुज रोयो अने कल्पांत कर्यो. लखमशीए पुछ्युं तमने शुं दुःख छे ? त्यारे तेणें कह्युं के, अमदावादमां हुं भगवाननो सत्य मत कथन करवा लाग्यो, जेथी तपगछना श्रावकोए मने बहुज मार्यो. हवे हुं आपनी पासे आव्यो छुं, जो आप मारा मददगार थाउ तो, हुं सत्य मत प्रगट करुं. लखीमशीए कह्युं, लींबडीना राज्यमां तमे बेसक तमारो सत्य मत प्रगट करी उपदेश करो. हुं तमोने मदद आपीश, खान पान संबंधी फिकर करवी नहि, तमारी पासे शास्त्र पण श्रवण करीश. ते उपरथी लुंको श्री महावीर भगवंतना साधुउनी तथा जीनप्रतिमानी उत्थापना करवा लाग्यो. शुद्ध साधुउने कहेवा लाग्यो के, तेउ भ्रष्टचारी छे, निर्दयी छे, मीथ्या ज्ञाननो उपदेश करे छे, इत्यादि मनमानी निंदा करवी शरु करी. शास्त्रोमां पण जे जे शास्त्रोमां जीनप्रतिमानी जीकर न होती ते ते शास्त्रोनेज साचा मानवा लाग्यो, अने जेमां जेमां थोडो थोडो जीनप्रतिमानो अधिकार हतो, तेना पाठोना अर्थ कुयुक्तियोथी फांइना कांइ समजावबा लाग्यो. मात्र एकत्रीश शास्त्र साचां छे, एम प्ररुपवा लाग्यो, तेमां पण आवश्यक सूत्रने तो बिलकुल बगाडी, कांइनुं कांइ बनावी, लोकोने स्वकपोलकल्पित कहेवा लाग्यो, कारण के आवश्यकमां बहु स्थले जीनप्रतिमानो अधिकार छे. एक दिवस लुंकाने

कोइए कह्युं के जैन दीक्षा लीधा विना शास्त्र जणवानो व्यवहार सूत्रमां निषेध करेल छे, तो तमे गृहस्थ थइने शास्त्र केम वांचो छो? लुंकाए कह्युं के, हुं व्यवहार सूत्रनेज सत्य मानतो नथी. आ प्रमाणे प्ररुपणा पचीस वर्ष करी, परंतु लुंकाना उपदेशथी कोइ पण साधु थयो नहि. ज्यारे संवत (१५३३) नी शाल आवी, त्यारे पूर्वोक्त जाणा वाणीआए लुंकाना उपदेशथी वेष पेहेर्यो. तेनुं नाम जाणारिख पाड्युं. तेनो शिष्य संवत (१५६८) मां रूपजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१५७८) मां जीवाजीरिख थयो, तेनो शिष्य संवत (१५८७) मां वृद्धवरसिंहजी थयो, तेनो शिष्य (१६०६) मां वरसिंहजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१६४९) मां जसवंतजी थयो. आ लुंपक मतनी त्रण शाखा थइ. १ गुजराती, २ नागोरी, ३ उतराधी. इति लुंपकमतोत्पत्ति.

५३ श्री रत्नशेखर सूरिनी पाट उपर श्री लक्ष्मीसागर सूरि थया. तेमनो (१४६४) मां जन्म, (१४९०) मां दीक्षा, (१५०१) वाचक पद, (१५०८) सूरिपद. (५४) श्री लक्ष्मीसागर सूरिनी पाट उपर श्री सुमतिसाधु सूरि थया. (५५) श्री सुमतिसाधु सूरिनी पाट उपर श्री हेमविमल सूरि थया. तेउ शिथिल साधुउनी वचमां रह्या, तो पण पोते साधुनो आचार उल्लंघन कर्यो नहि, तेथी केटलाएक दिवस पछी बहु साधुउए शिथिलपणुं तजी दीधुं. वली रुषि हरगिरि, रुषि श्रीपति, रुषि गणपति प्रमुख बहु जनोए लुंपक मतनो त्याग करी श्री हेमविमल सूरि पासे दीक्षा लीधी. ते अवसरे संवत (१५६२) मां कडवा नामना एक वाणीआए कडवो मत चलाव्यो, अने त्रण थुइ मानी, तेमज आ कालमां कोइ साधु देखाता नथी एवो पंथ चलाव्यो. वली संवत (१५७०) मां लुंकामतमांथी निकली बीजा नामना वेषधारीए बीजो मत चलाव्यो, जेने लोको विजयगछ कहे छे. संवत (१५७२) मां नागपुरीआ तपगछमांथी निकली उपाध्याय पार्श्वचंद्र पोताना नामथी पासचंदीउ मत चलाव्यो.

५६ श्रीहेमविमल सूरिनी पाट उपर श्रीसुविहितमुनि चुडामणि, कुमततम नाश करवाने सूर्य समान श्री आनंदविमल सूरि थया. तेमनो संवत (१५४७) मां जन्म (१५५२) मां दीक्षा, (१५७०) मां

सूरिपद. आनंदविमल सूरिना साधुउं शिथिलाचारी पण हता; तोपण तेमना वैराग्यरंगनो जंग थयो नहोतो. ज्यारे तेउंये जोयुं के जीनप्रतिमाना निषेध करनाराउं बहुज वधी गया, अने शुद्ध साधुउं अल्पमात्र रह्या, तथा उत्सूत्र प्ररुपणरूप जलप्रवाहमां जव्य जनो पण तणावा लाग्या, त्यारे मनमां दयादृष्टि लावी, पोताना गुरुनी आज्ञाथी, केटलाएक संविज्ञ साधुउंने साथे लइ संवत (१५८२) मां शिथिलाचारनो परिहार करी क्रिया उद्धार कर्यो. देशमां विहार करी अनेक जव्य जनोनो उद्धार कर्यो. अनेक शेठोना पुत्रोने धन कुटुंबना मोहनो त्याग करावी दीक्षा आपी. वली सोराष्ट्रना राजा पासे एवो करार लखाव्यो के जे जीन ते अमारा देशमां रहे, अने हारे ते अमारा देशमांथी निकली जाय. वली तूणसिंह नामना श्रावक के जेमने वादशाहे पालखी आपी हती, अने जेमने वादशाहे मलिक श्री नगदल एवुं विरुद आप्युं हतुं, ते तूणसिंह श्रावके विनंति करी के साधुउंने सोरठ देशमां विहार करावो; तेथी गुरुजीये गणि जगर्षिने साधुउंनी साथे सोरठ देशमां विहार करवा मोकल्या. वली जेसलमेर प्रमुख मारवाड देशमां जलनी डुर्लजताथी पूर्वे श्री सोमप्रज सूरिये साधुउंनो विहार बंध कर्यो हतो, ते मारवाड देश कुमतिव्याप्त न थइ जाय, ते सारुं ते देशना जीवो उपर अनुकंपा लावी तथा लाज जाणी, साधुउंने आज्ञा करी के तमे मारवाडमां विहार करी कुमतिमतनुं खंडन करो. ते अवसरे लघुवयमां शियलथी श्री स्थूलिजद्र समान वैराग्यनिधि, निस्पृहावधि, जावजीव जघन्यथी जघन्य षष्ठ तपना करनारा अने पारणाने दिन आचाम्लना करनारा एवा अजिग्रहधारी महोपाध्याय श्री विद्यासागरगणिये मारवाड देशमां विहार कर्यो. तेमणे जेसलमेरादिमां खरतरोने, मेवाड देशमां वीजामतियोने, अने मोर्वी आदिमां लुंका मतियोने प्रतिबोधी श्रावाक बनाव्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे. वली पार्श्वचंद्र कदाग्रही हतो. वीरमगाममां ते पार्श्वचंद्र साथे वाद करी तेने निरुत्तर कर्यो; अने बहु जनोने जैनधर्म अंगीकार कराव्यो. तेज प्रमाणे मालव प्रमुख देशोमां विहार करी धर्मनी प्रवर्ती करी. श्री विद्यासागर उपाध्यायजीये तप गछनी फरी वृद्धि करी, अने क्रिया उद्धार कर्यापछी श्री आनंदविमल सूरिजी चौद वर्षसुधी जघन्यथी पण नियत

तप वर्जी, छठथी कमतप करता न होता. वली तेमणे चतुर्थ, षष्ट तपथी वीश स्थानकनी आराधना करी; अने संवत (१५ए६) मां नव दिननुं अनशन करी स्वर्गे गया.

५७ श्री आनंदविमल सूरिनी पाट उपर श्री विजयदान सूरि थया. जेमणे स्तंभतीर्थ, अमदावाद, महीशानक, गंधार वंदर प्रमुखमां महा महोत्सव पूर्वक अनेक जीनबिंबोनी प्रतिष्ठा करी. जेमना उपदेशथी वादशाह महमदना मान्य मंत्री गलराजा, अपर नाम मलिक श्रीनगदले श्री शत्रुंजय तीर्थनो मोटो संघ काढ्यो. वली जेमना उपदेशथी गांधार नगरना श्रावक रामजीये तथा अमदावादना शा. कुंवरजी प्रमुखे श्री शत्रुंजय उपर चौमुख, अष्टापदादि जीनमंदिरो वंधाव्या. गिरनार उपर जीर्ण प्रासादोनो उद्धार कराव्यो. जेमनो सूर्यनी जेम उदय थवाथी वादी रुपी तारा अदृश्य थवा लाग्या. श्रीविजयदान सूरि सर्व सिद्धांतना पारगामी, अखंडित प्रतापवाला तथा अप्रमत्त अने रुपे श्री गौतममुनिवत् हता, तेउ गुजरात, मालवा, कछ, मारवाड, तथा कुंकणादि देशोमां अप्रतिवद्ध विहार करता हवा. महातपस्वी, जावजीव मात्र घी शिवाय सर्व विगयना त्यागी हता. जेमणे एकादशांग सूत्र अनेकवार शुद्ध कर्यां, वहु जनोने धर्म प्राप्त कराव्यो. तेमनो संवत (१५५३) मां जन्म, संवत (१५६२) मां दीक्षा, (१५७७) सूरि पद, अने (१५६२) मां वटपल्लीमां अनशन करी स्वर्गे गया.

५८ श्री विजयदान सूरिनी पाट उपर श्री हीरविजय सूरि थया. जेमनो संवत (१५८३) मां मागसर सुद ए ना रोज प्रल्हादनपुर निवासी उका जातीना शा. कुरानी नार्या नाथीना उदरथी जन्म थयो. संवत (१५ए६) कारतक वदी २ ना रोज पाटणमां तेमने दीक्षा प्राप्त थइ, तथा (१६०७) मां नारदपुरीमां श्री रीषनदेवजीना मंदिरमां पंडित पद (१६०८) माहा सुद ५ ना रोज नारदपुरीमां वरकाणक पार्श्वनाथ सनाथे नेमजीन प्रासादे वाचक पद, (१६१०) शिरोही नगरमां सूरिपद प्राप्त थयुं. जेमना सौनाग्य, वैराग्य, निःस्पृहतादि गुणोने वचन गोचर करवाने बृहस्पतिमां पण चातुर्यता न होती. जेमना स्तंनतीर्थना विहारमां श्रद्धावानोये एक क्रोड रुपीआ प्रनावनादि धर्मकृत्योमां खरच्या;

सूरिपद. आनंदविमल सूरिना साधुउ शिथिलाचारी पण हता; तोपण तेमना वैराग्यरंगनो जंग थयो नहोतो. ज्यारे तेउये जोयुं के जीनप्रतिमाना निषेध करनाराउ वहुज वधी गया, अने शुद्ध साधुउ अल्पमात्र रह्या, तथा उत्सूत्र प्ररुपणरूप जलप्रवाहमां जव्य जनो पण तणावा लाग्या, त्यारे मनमां दयादृष्टि लावी, पोताना गुरुनी आज्ञाथी, केटलाएक संविज्ञ साधुउने साथे लइ संवत (१५८२) मां शिथिलाचारनो परिहार करी क्रिया उद्धार कर्यो. देशमां विहार करी अनेक जव्य जनोनो उद्धार कर्यो. अनेक शेठोना पुत्रोने धन कुटुंवना मोहनो त्याग करावी दीक्षा आपी. वली सोराष्ट्रना राजा पासे एवो करार लखाव्यो के जे जीते ते अमारा देशमां रहे, अने हारे ते अमारा देशमांथी निकली जाय. वली तूणसिंह नामना श्रावक के जेमने वादशाहे पालखी आपी हती, अने जेमने वादशाहे मलिक श्री नगदल एवुं विरुद आप्यु हतुं, ते तूणसिंह श्रावके विनंति करी के साधुउने सोरठ देशमां विहार करावो; तेथी गुरुजीये गणि जगर्षिने साधुउनी साथे सोरठ देशमां विहार करवा मोकल्या. वली जेसलमेर प्रमुख मारवाड देशमां जलनी दुर्लजताथी पूर्वे श्री सोमप्रज सूरिये साधुउनो विहार वंध कर्यो हतो, ते मारवाड देश कुमतिव्याप्त न थइ जाय, ते सारुं ते देशना जीवो उपर अनुकंपा लावी तथा लाज जाणी, साधुउने आज्ञा करी के तमे मारवाडमां विहार करी कुमतिमतनुं खंडन करो. ते अवसरे लघुवयमां शियलथी श्री स्थूलिजद्र समान वैराग्यनिधि, निस्पृहावधि, जावजीव जघन्यथी जघन्य षष्ठ तपना करनारा अने पारणाने दिन आचाम्लना करनारा एवा अजिग्रहधारी महोपाध्याय श्री विद्यासागरगणिये मारवाड देशमां विहार कर्यो. तेमणे जेसलमेरादिमां खरतरोने, मेवाड देशमां वीजामतियोने, अने मोरवी आदिमां लुंका मतियोने प्रतिवोधी श्रावाक वनाव्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे. वलीपार्श्वचंद्र कदाग्रही हतो. वीरमगाममां ते पार्श्वचंद्र साथे वाद करी तेने निरुत्तर कर्यो; अने वहु जनोने जैनधर्म अंगीकार कराव्यो. तेज प्रमाणे मालव प्रमुख देशोमां विहार करी धर्मनी प्रवर्त्ती करी. श्री विद्यासागर उपाध्यायजीये तप गच्छनी फरी वृद्धि करी, अने क्रिया उद्धार कर्यापछी श्री आनंदविमल सूरिजी चौद वर्षसुधी जघन्यथी पण नियत

तप वर्जी, छठथी कमतप करता न होता. वली तेमणे चतुर्थ, षष्ट तपथी वीश स्थानकनी आराधना करी; अने संवत (१५९६) मां नव दिननुं अनशन करी स्वर्गे गया.

५७ श्री आनंदविमल सूरिनी पाट उपर श्री विजयदान सूरि थया. जेमणे स्तंभतीर्थ, अमदावाद, महीशानक, गंधार बंदर प्रमुखमां महा महोत्सव पूर्वक अनेक जीनबिंबोनी प्रतिष्ठा करी. जेमना उपदेशथी वादशाह महमदना मान्य मंत्री गलराजा, अपर नाम मलिक श्रीनगदले श्री शत्रुंजय तीर्थनो मोटो संघ काढ्यो. वली जेमना उपदेशथी गांधार नगरना श्रावक रामजीये तथा अमदावादना शा. कुंवरजी प्रमुखे श्री शत्रुंजय उपर चौमुख, अष्टापदादि जीनमंदिरो बंधाव्यां. गिरनार उपर जीर्ण प्रासादोनो उद्धार कराव्यो. जेमनो सूर्यनी जेम उदय थवाथी वादीरुपी ताराउ अदृश्य थवा लाग्या. श्रीविजयदान सूरि सर्व सिद्धांतना पारगामी, अखंडित प्रतापवाला तथा अप्रमत्त अने रुपे श्री गौतममुनिवत् हता, तेउ गुजरात, मालवा, कच्छ, मारवाड, तथा कुंकणादि देशोमां अप्रतिबद्ध विहार करता हवा. महातपस्वी, जावजीव मात्र घी शिवाय सर्व विगयना त्यागी हता. जेमणे एकादशांग सूत्र अनेकवार शुद्ध कर्यां, बहु जनोने धर्म प्राप्त कराव्यो. तेमनो संवत (१५५३) मां जन्म, संवत (१५६२) मां दीक्षा, (१५८१) सूरि पद, अने (१५६२) मां वटपल्लीमां अनशन करी स्वर्गे गया.

५८ श्री विजयदान सूरिनी पाट उपर श्री हीरविजय सूरि थया. जेमनो संवत (१५८३) मां मागसर सुद ९ ना रोज प्रल्हादनपुर निवासी उका जातीना शा. कुरानी भार्या नाथीना उदरथी जन्म थयो. संवत (१५९६) कारतक वदी २ ना रोज पाटणमां तेमने दीक्षा प्राप्त थइ, तथा (१६०१) मां नारदपुरीमां श्री रीषभदेवजीना मंदिरमां पंडित पद (१६०८) माहा सुद ५ ना रोज नारदपुरीमां वरकाणक पार्श्वनाथ सनाथे नेमजीन प्रासादे वाचक पद, (१६१०) शिरोही नगरमां सूरिपद प्राप्त थयुं. जेमना सौभाग्य, वैराग्य, निःस्पृहतादि गुणोने वचन गोचर करवाने बृहस्पतिमां पण चातुर्यता न होती. जेमना स्तंभतीर्थना विहारमां भरूवानोये एक क्रोड रुपीआ प्रभावनादि धर्मकृत्योमां खरच्या;

वली जेमना चरण विन्यासना प्रतिपदमां बे मोहोर तथा एक रुपीउं मोचन कर्यों. जेमनी सेवामां श्रद्धालु श्रावकोये मोतीना साथीआ कर्या. वली श्रीगुरुजीये शिरोही नगरमां श्रीकुंथुनाथ स्वामिनी प्रतिष्ठा करी, तथा नारदपुरमां अनेक सहस्त्रबिंबोनी प्रतिष्ठा करी. श्री गुरुराजना विहारमां युगप्रधान अतिशय देखवामां आवता हता. वली अमदावादमां लुंका मतना पुज्य ऋषि मेघजीये, पोतानो लुंकामत दुर्गतिनो हेतु जाणी पोतानी आचार्यपदवी, रजनी जेम छोडी दइ, पचीस यतियोनी साथे सकल राजाधिराज बादशाह श्री अकबरशाहनी आज्ञा पुर्वक बादशाही बाजींत्र वजावता थकां महामहोत्सव पूर्वक श्रीसूरिजीनी पासे दीक्षा लीधी, आवी विना कोइ आचार्यना समयमां बनी नहोती. वली श्री गुरुजीना उपदेशथी अकबर बादशाहे पोताना सर्व राज्यमां एक वर्षमां छ महिनासुधी जीवहिंसा बंध करी, तथा जजीआवेरो बंध कर्यों, तेमनुं विस्तारथी चरित्र जाणवुं होय तो श्री हीरसौभाग्य काव्य अवलोकन करवुं. अहींआ मात्र संक्षेपथी विना लखीये छीये.

एकदा प्रस्तावे प्रधान पुरुषोना मुखथी अकबरशाहे श्री हीरविजय सूरिना निरुपम शम, दम, संवेग, वैराग्यादि गुणो श्रवण कर्या. जेथी सूरिजीने पोतानुं नामांकित फुरमान मोकली बहुमान पुरस्सर गंधार बंदरथी आग्रानी नजीकना फत्तेपुर नागरमां दर्शन करवाने, बादशाहे बोलाव्या. गुरुजी अनेक भव्य जीवोने उपदेश आपतां, अनुक्रमे विहार करता थकां संवत (१६३९) ज्येष्ट वद १३ दिने फत्तेपुरमां आव्या. ते स्थले बादशाहना शिरोमणि प्रधान अबुलफजल द्वारा श्रीविमलहर्ष गणि प्रमुख अनेक मुनियोना परिवार सहित, बादशाह साथे मेलाप कर्यो. ते अवसरे बादशाहे बहु आदर सत्कार करी सूरिजीने सभामां बेसाड्या. बादशाहे सूरिजीने परमेश्वरनुं स्वरूप, गुरुनुं स्वरुप, तथा धर्मनुं स्वरूप शुं छे ? तथा परमेश्वर केवी रीते प्राप्त थाय ? इत्यादि धर्मविचार पुछ्या. सूरिजीए मधुर वाणीथी बादशाहने कह्युं के जेनामां अढार दूषण न होय ते परमेश्वर छे, पंच महाव्रतादि धारण करनारा गुरु छे, अने आत्मानो शुद्ध स्वभाव, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररुप छे, ते धर्म छे; इत्यादि विस्तार पूर्वक बादशाहे गुरुजी पासे धर्मोपदेश श्रवण कर्यो.

जेथी आग्राथी अजमेर सुधी प्रतिकोश कुवा मिनारा सहित कराव्या. जीवहिंसा बंध करी अने दयावान् थया. बाद अकबर बादशाह एकदा अति तुष्टमान थइ जवाथी कहेवा लाग्या के हे प्रजु ! आप पुत्र, कलत्र, धन, स्वजन, देहादि, ममत्व रहित छो, तेथी आप सोनुं, चांदी तो लेता नथी, परंतु अमारा मकानमां जैनमतना पुरातनी पुस्तको बहु छे, ते आप लेवानो अनुग्रह करो. बादशाहना बहु आग्रहथी श्री गुरुजीए सर्व पुस्तक लइ आग्रा नगरना ज्ञानजंडारमां स्थापन कर्यां. बाद गुरुजी एक प्रहरसुधी बादशाहनी साथे धर्मगोष्ठी करी वडा आडंबरथी उपाश्रयमां आव्या. ते वखते लोकोमां जैनमतनी बहुज उन्नति थइ. ते वरसे आग्रा नगरमां चोमासुं करी सोरीपुर नगरे श्री नेमिनाथनी यात्रा करवा गया. ते स्थले श्री रीषजदेव अने नेमिनाथजीनी बहु पुरातनी प्रतिमाउनी तथा तत्कालना बनावेला श्री नेमिनाथना चरणोनी प्रतिष्ठा करी. बाद आग्रावा शा० मानसिंह कल्याणमल्लना बनावेला श्री चिंतामणि पार्श्वनाथादि बिंबोनी प्रतिष्ठा करी; ते श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ आजसुधी आग्रामां प्रसिद्ध छे. पछी श्री गुरुजी फरी फत्तेपुर नगरमां गया, अने अकबर बादशाहने मळ्या. ते प्रसंगे एक प्रहर धर्मगोष्ठी करी, तथा धर्मोपदेश कर्यो. बादशाह कहेवा लाग्या के, में आपने दर्शनोत्कंठित थइ दूर देशथी बोलाव्या, अने विनंति करी, परंतु आप अमारी पासेथी कांइ पण लेता नथी, तेथी फरीथी विनंति करीए छीए; आपने जे रुचे ते अमारी पासेथी मांगी लेवुं जोइए, जेथी अमारो मनोरथ सफल थाय. ते सांजली गुरुजीए सम्यक् विचार करी कह्युं के, आपना सर्व राज्यमां पर्युषणना आठ दिवसोमां कोइ पण जानवरनो वध न थाय, तथा बंधीवानो मुक्त थाय, आ अमारी मांगणी छे. बादशाहे गुरुने निर्लोजी शांत, दांत जाणी कह्युं के आठ दिवस तमारी तरफथी अने चार दिवस मारी तरफथी सर्व मली बार दिवस सुधी अर्थात् जादरवा वद १० थी ते ते जादरवासुद ६ सुधी कोइ पण जानवरने मारा राज्यमां मारवामां आवशे नहि. पछी बादशाहे सोनाना अक्षरोथी लखावी छ परवाना श्री गुरुजीने आप्या. ते छ फुरमान (परवाना) आ प्रमाणे. १ श्री गुजरात देशनो, २ मालव देशनो, ३ अजमेर देशनो, ४ दिल्ली फत्तेपुर

ना देशनो, ५ लाहोर, मुलतान मंडलनो, ६ श्री गुरुजीने पासे राखवानो. पूर्वोक्त पांचे देशना साधारण फुरमान, ते ते देशमां मोकली अमारि पडह वगडाव्यो; जेथी बादशाहना हुकमथी, नहोता जाणता एवा सर्व आर्य, अनार्य कुलमंडपमां दयारुप वेल विस्तारवान् थइ गइ. बंधीवान जनोने पण बादशाहे गुरुपासेथी उठी तत्काल मुक्त कर्या. वली एक कोशना तलाव उपर पोते जइ, अनेक देशवालाउंए, अनेक जातिना जानवरो बादशाहने भेट मोकल्यां हतां, ते सर्वने पोताना हाथथी छोडी दीधां. बादशाहनी साथे गुरुजीने अनेकवार मेलाप थयो, अने अनेक जीनमंदिर तथा उपाश्रयोनो उपद्रव बादशाहे दूर कर्यो. ज्यारे श्री हीरविजय सूरि बीजे देश विहार करवा लाग्या, त्यारे बादशाहे तेमने जे फुरमान लखी आप्यो तेनी नकल आ स्थले लखीए छीए.

जलालुदीन बादशाह
अकब्बर बादशाह
गाजीनुं फुरमान

अकब्बर मोहरनी वंशावली
जलालुदीन अकब्बर बादशाह
हुमायुन बादशाहना पुत्र
बाबर बादशाहना पौत्र
उमर शेख मीरजाना पुत्र
सुलतान अबुस इदना पुत्र
सुलतान महम्मद शाहना पुत्र
मीरशाहना पुत्र
अमीर तैमुर साहि किराननापुत्र

देश मालवा, अकब्बराबाद, लाहोर, मुलतान, अमदाबाद, अजमेर, मीरत, गुजरात बंगाला, तथा हाल जे जे मारा ताबामां मूलक छे ते सर्वना सुबा, मुसद्दी, करोरी तथा जागीरदार सर्वेने मालम थाय के, अमारो संपूर्ण इरादो एवो छे के सर्व रैयतना मनने संतोष पमाडवो; कारण के रैयतना मनने संतोष ते परमेश्वरनी एक मोटी मेहेरबानी छे. वली विशेष रीते वृद्धावस्थामां मारो एवो इरादो छे के, मारुं सारुं इछनारी सर्व रैयत सुखी रहे, ते कारणथी हरेक धर्मना लोकोमांथी जे सारा विचारवाला, परमेश्वरनी भक्ति करवामां पोतानी उमर पुरी करनारा छे, तेउने दूर दूर देशोथी में मारी पासे बोलाव्या, अने तेउनी परिक्षा करी, तेमने मारी सोबतमां राखुं हुं,

अने तेमनी वातो सांभली हुं बहु खुशी थाउं छुं. ते प्रमाणे करता थकां मारा सांभलवामां आव्युं के श्रीहीरविजय सूरि, जैनश्वेतांवर मतना आचार्य गुजरातना बंदरोमां परमेश्वरनी भक्ति करे छे; में तेमने मारी पासे बोलाव्या, तेमनी मुलाकात करी हुं बहु खुशी थयो छुं. केटलाएक दिवस पछी ज्यारे तेउंए पोताने वतन जवानी रजा मांगी, ते प्रसंगे तेउंए अरज करी के, गरीब परवरनी मरजीथी आ प्रमाणे हुकम थवो जोइये;

सिद्धाचलजी, गीरनाजी, तारंगाजी, आबुजीनो पहाड जे गुजरातमां छे, केशरीआनाथजी, राजगृहना पांच पहाड, तथा समेतशिखर उर्फे पार्श्वनाथनो पहाड जे बंगालामां छे, ते पहाडो उपर तथा नीचें, सर्व, मंदीरोनी कोठीउंमां तथा सर्व भक्ति करवानी जगाउंमां, तथा जे जे तीर्थनी जगाउं, जैनश्वेतांवर धर्मनी मारा ताबाना मुलकोमां होय, ते पहाडो, मंदीरो तथा जगानी आसपास कोइ पण आदमीए कोइ पण जनावर मारवुं नहि. आ प्रमाणे तेमणे अरज करी. ते आचार्य बहु दूरथी अमारी पासे आव्या छे, अने तेमनी अरज वाजबी अर्थात् सत्य छे. यद्यपि आ अरज मुसलमानी मतथी विरुद्ध छे, तो पण परमेश्वरने पिछाननारा आदमीउंनो आ दस्तुर छे के– कोइ कोइना धर्ममां दखल न करे, अने तेमनो रिवाज बहाल राखे. ते कारणथी आ अरज मारी समजमां साची लागे छे, के सर्व पहाड तथा पूजानी जगा बहु वखतथी जैनश्वेतांवरी धर्मवालानी छे, ते कारणथी तेमनी अरज कबुल करवामां आवी छे, के सिद्धाचलनो पहाड, गीरनारनो पहाड, तारंगाजीनो पहाड, केशरीआजीनो पहाड, आबुनो पहाड, राजगृहना पांच पहाड, तथा समेतशिखर उर्फे पार्श्वनाथनो पहाड जे बंगालाना मुलकमां छे, ते सर्व पुजाउंनी जगाउं, तथा पहाड नीचे तीर्थनी जगाउं जे मारा राज्यमां छे, तथा गमे ते ठेकाणे जैनश्वेतांवरी धर्मनी जगा होय ते हीरविजय जैन श्वेतांवरी आचार्यने आपवामां आवी छे; अने तेमणे सारी रीते परमेश्वरनी भक्ति करवी जोइए.

वली एक वात आ पण याद राखवी जोइए के, आ जैनश्वेतांवरी धर्मना पहाडो, पूजानी जगा तथा तीर्थनी जगा, जे में श्री हीरविजयजी सूरिने आपेल छे, ते सर्व जगाउं हकीकतमां तो जैनश्वेतांवर धर्म-

वास्तेनीज छे, तेथी ज्यां सुधी सूर्यथी दिन रोशन रहे, अने ज्यांसुधी चंद्रमाथी रात रोशन रहे, त्यां सुधी आ फुरमाननो हुकम जैनश्वेतांबरी धर्मना लोकोमां सूर्य तथा चंद्रमानी जेम प्रकाशित रहे; अने कोइ आदमी तेमने हरकत न करे. वली कोइ आदमीए ते पहाडो उपर, तेनीनीचे तथा तेनी आसपास पुजानी जगाउमां तथा तीर्थनी जगाउमां जानवर मारवुं नहि; तथा आ हुकम मुजब अमल करवो. आ हुकमथी फरवुं नहि; तथा नवीन सनद मांगवी नहि. लखी तारीख ७ मी माह उरदी वहेस मुतावेक माह रवीयुल अवल सन् ३७ जुलसी. आ अकबर बादशाहना फुरमाननी नकल छे.

वली थानसिंहनी करावेली तथा बीजा शाह डुजणमल्लनी करावेली श्री जीनप्रतिमाउनी प्रतिष्ठा, लाखो रुपीआ महोत्सवमां वपरावी, करी. प्रथम चातुर्मास, आग्रामां, बीजो फत्तेपुरमां, त्रीजो त्रिरामनगरमां अने चोथो फरी आग्रामां, ए रीते कर्यां. बाद बादशाहनी गोष्ठी वास्ते श्री शांतिचंद्र उपाध्यायने राखीने, श्री गुरुजी पोते मेहेडता तथा नागपुरमां चातुर्मासि करी शिरोही नगरमां गया, त्यां नवा चतुर्मुख प्रासादमां श्री आदिनाथना बिंबनी तथा श्री अजीतनाथ प्रासादमां श्री अजीतनाथजीना बिंबनी प्रतिष्ठा करी. अनुक्रमे अर्बुदाचल यात्रा करवा गया. अहीआं श्री शांतिचंद्र उपाध्याये नवीन कृपारस कोश नामनो ग्रंथ रची अकब्बर बादशाहने श्रवण कराव्यो; ते श्रवण करवाथी बादशाहने दयानी बहुज वृद्धि थइ. तेथी आ प्रमाणे थयुं. बादशाहना जन्मना दिवसथी एक मास, पर्युषणना बार दिवस, सर्व रविवार, सर्व संक्रातिना दिवसो, नवरोजनो मास, सर्व इदना दिवसो, सर्व मिहर वासरा, सर्व सोफीअनादिन, इत्यादि सर्व मली एक वर्षमां ६ महीना सुधी जीवहिंसा बंध करावी. तेना फुरमान लखाव्या; जे फुरमानो आजसुधी अमारा लोकोनी पासे छे. श्री हीरवीजय सूरिए जैनमतनी वृद्धि तथा उन्नति बहुज करी, तेमां कांइ पण शंका नथी. मुसलमानो पण तेमनाथी दयावान् थया. तेमणे स्तंभतीर्थे संवत (१६४६) मां स्तंभ तीर्थवासी शा० तेजपालना बनावेला मंदिरमां प्रतिष्ठा करी.

५९ श्री हीरविजय सूरिनी पाट उपर श्री विजयसेन सूरि थया.

तेमनो संवत (१६०४) मां जन्म, (१६१३) माता पिता सहित दीक्षा, (१६२६) पंडितपद, (१६२८) उपाध्यायपद पूर्वक आचार्यपद, (१६५२) नट्टारकपद, अने (१६७१) मां स्तंजतीर्थे स्वर्गवास थयो. तेमना वेखहर्ष तथा परमानंद, वे शिष्योए अकब्बर वादशाहना पुत्र जाहांगीरने धर्म श्रवण करावी प्रतिबोध कर्यो, अने जाहांगीर वादशाहथी फुरमान कराव्यो, तेनी नकल नीचे मुजब.

जहांगीरनी मोहोरमां वंशावली
उरदीन महम्मद जहांगीर वादशाह
अकवर वादशाह
हुमायुन वादशाह
वावर वादशाय
मीरजी उमरशेख
सुलतान अबुसइस
सुलतान मीरजा मोहम्मशाइ मीरा-शाह- अमीर तैमुर साहिव किरान

उरुदीन महम्मद
जहांगीर वादशाह
गाजीनुं फुरमान

मारा सर्व राज्यमां तथा विशेष करी गुजरातना सुवा, मोटा हाकेम, कीफायत करनारा आमील, जागीरदार, करोरी तथा सर्व खाताना कारकुनोने मालम थाय के, परमेश्वरने पिठाननारा जे लोक ठे, तेनो एवो दस्तूर ठे के, हरेक मतना तथा कोमना लोकोज मात्र नहि, परंतु सर्व जीव सुखी रहे, तेम करवुं. हालमां वेखहरख तथा परमानंद यतियोए डुनीआनी रक्षा करनाराउना दरवारमां आवी, तखतनी पासे उन्ना रही अरज करी के:– विजयसेन सूरि तथा विजयदेव सूरि, तेमज जेउ सारी बुद्धिवाला लोको ठे, तेउ इश्वरनी नक्ति करे ठे, तेमज प्रार्थना करे ठे; तथा वेखहरख अते परमानंद यतियोनी परमेश्वरने राजी राखवानी हकीकत, अमे वहु सारी रीते जाणी लीधी, तेथी डुनियाने तावे करनारनो एवो हुकम थयो के:– कोइ आदमीए आ जैन लोकोना मंदिरोमां तथा धर्मशालामां उतरवुं नहि, तथा कारण विना अडचण करवी नहि. जो ते लोको फरीथी नवा वनाववा चाहे तो तेउने कोइ रीते मना तथा हरकत करवी नहि. वली तेउना साधुउना

उपाश्रयमां तो कोइए पण उतरवुं नहि. वली जो ते लोको सोरठमां शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करवा वास्ते जाय तो कोइ पण आदमीए ते यात्रालुर्ज पासे कांइ पण मांगवुं नहि, तथा लालच करवी नहि. वली सदरहु वेखहरख अने परमानंद यतिनी अरज तथा खायेस उपर बहुज मारे हुकम आ थाय ठे के, दर अठवाडीआमां रविवार तथा गुरुवार तथा दर महिनामां सुद पडवाने रोज तथा इदने दिवसे तथा दर वर्षमां नवरोज अने माहशहरयुरमां जे अमारो मुबारक दिन ठे, तेमां एक एक वर्षना हिसाव प्रमाणे मारा सर्व राज्यमां कोइ जीवनी हिंसा न थाय, तथा शिकारनुं काम, पक्षीयोनुं पकडवुं, मारवुं, तथा माठलां मारवा, इत्यादि सर्व बंध करवुं. वली तेवी रीतना बीजा पण काम पूर्वोक्त दिवसोमां न थवा जोइए. आ वात जरूरनी ठे के पूर्वोक्त हुकम मुजब हमेशां चलाववानी कोशिश करवी; तथा मारा फुरमानना हुकमथी कोइ फरे नहि, वीरुद्ध चाले नहि. लखी० ता० माह सदर युरमे सन् ३ जुलसी. आ फुरमान खांजां हानना चोपानीआमां तथा सेवक अलीतकीना वर्त्तमान पत्रमां दाखल कर्यो. तरजुमो करनार मुनशी सैयद अबदुला मीयां साहेब ठेरेजी.

६० श्री विजयसेन सूरिनी पाट उपर श्री विजयदेव सूरि थया. तेमनो संवत (१६३४) जन्म (१६४३) दीक्षा, (१६५५) पंडितपद, (१६५६) उपाध्याय पद पूर्वक आचार्यपद, (१७०१) मां स्वर्गवास थयो. ६१ श्री विजयदेव सूरिनी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि थया. तेमनो (१६४४) जन्म, (१६५४) दीक्षा, (१६७३) वाचकपद, (१६८२) सूरिपद (१७०८) मां स्वर्गवास थयो. ६२ श्री विजयसिंह सूरिनी पाट उपर श्री विजयप्रभसूरि थया. तेमनो संवत (१६७५) जन्म, (१६८९) दीक्षा, (१७०१) पंडितपद, (१७१०) उपाध्यायपद, (१७१३) भट्टारक पद, (१७४९) मां स्वर्गवास थयो. तेमना समयमां मुखबंधा ढुंढीयानो पंथ प्रगट थयो, तेनी उत्पत्ति कहिए ठीए.

सुरत शेहेरमां शा० वीरजी वोहरा अटकनो दशा श्रीमालि वाणीउ रहेतो हतो. तेने फुली नामनी बाल विधवा एक पुत्री हती. तेणे एक लवजी नामनो ठोकरो दत्तक लीधो. ते लवजीने लुंकाना उपाश्रयमां भ-

णवा मोकल्यो. तेने यतियोनी संगतथी वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी लुंकाना यति बजरंगजीनो ते शिष्य थयो. वे वर्ष पछी ते पोताना गुरुने कहेवा लाग्यो के, जेवो शास्त्रमां साधुनो आचार छे, तेवो तमें केम पालता नथी ? गुरुए कह्युं के पंचम कालमां शास्त्रोक्त सर्व क्रिया थइ शकती नथी. लवजीए कह्युं के तमे भ्रष्टाचारी छो; तेथी मारा गुरु हवे तमे नहि. हुं तो पोतेज संयम फरीने लइश. ए प्रमाणे क्लेश करी लवजी रुषिए लुंका मतनी गुरुदीक्षा छोडीने, पोतानी साथे बीजा वे यतियो लीधा. १ भाणो, २ सुखजी. त्रणेए पोतपोतानी मेले दीक्षा लीधी; अने मुख उपर लुगडानी पट्टी वांधी. तेमना नवीन वेश देखी कोइ श्रावके तेमने प्रथम तो रहेवा जगा न आपी, तेथी तेओ खंडेर मकानमां जइ रह्या. गुजरातमां खंडेर थइ गयेला मकानने ढुंढ कहे छे. लोकोए तेवा मकानमां तेओने रहेतां देखी तेओनुं नाम ढुंढीया राख्युं, तेओ त्रणेने नवो मत चलाववामां वहु क्लेश भोगववो पड्यो, परंतु तेओनो त्याग देखी केटलाएक लुंका मतियो तेमने मानवा लाग्या; कारण के गाडरीआ प्रवाहनी रीति जगत्मां प्रचलित छे. ते मुजव भोला, अज्ञान लोको उपरनो डोल देखी रागी थइ जाय छे; वली गुजरातना लोकोनो वहु भाग एवो हठग्राही छे के, जे वात पकडी, ते वातने वहु मुस्केलीथी छोडे छे; तेथी गुजरात देशमांज जैन मतना केटलाएक फांटा निकलेला छे. बाद ते लवजीनो शिष्य सोमजी नामनो ओसवाल वाणीओ, अमदावादना कालुपरनो रेहेनार थयो. तेणे सूर्यनी आतापना वहुज करी. तेना चेलाना नाम. १ हरिदासजी २ प्रेमजी, ३ गीरधरजी, ४ कानजी प्रमुख थया, अने लुंकामतना कुंवरजीना चेला पण तेमना शिष्य थया, तेमना नाम. १ श्रीपाल, २ अमीपाल, ३ धरमसी, ४ हरजी, ५ जीवाजी, ६ समरथ, ७ तोडुजी, ८ मोहनजी, ९ सदानंदजी, १० गोधाजी. एक गुजरातवासी धर्मदास छीपाए पोतानी मेले मुंड मुंडावी, मुख उपर पट्टी बांधी, पोते ढुंढीयानो साधु छे, एम प्रसिद्ध कर्युं. हरिदासनो चेलो वृंदावन थयो, वृंदावननो चेलो भवानीदास थयो, भवानीदासनो चेलो लाहोर निवासी मलूकचंद थयो. मलूकचंदनो महासिंह, महासिंहनो खुशालराय, खुशालरायनो छजमल, छजमलनो

रामलाल, अने रामलालना बे शिष्य, रामरत्न तथा अमरसिंह, आ बंनेने अमे देखेला छे. ते बंनेना चेला वसंतराय तथा रामबक्ष विगेरे जीवता छे. तेउं पंजाब देशमां वर्तमानमां फर्या करे छे.

जीवाजीनो चेलो लालचंद थयो, अने लालचंदनो चेलो अमरसिंह थयो. ते मारवाड देशमां आव्यो; तेमना परिवारमां नानकजी थयो. जेना चेला हालमां अजमेर तथा कृष्णगढ जील्लामां बहु फरे छे. एक इयामिदास, जेना परिवारमां कन्हीराम, लेखराज, तखतमल प्रमुख हालमां मारवाडमां रहे छे; तथा बुंदीकोटामां अने मालवामां, लालचंद, गणेशजी, गोवींदरामजी, थया, तथा अमीचंद, हुकमचंद, उदयचंद, फतेचंद, ज्ञानजी, छगन, मगन, देवकरण अने पन्नालाल प्रमुख फरे छे, तेउं पण हरिदासनाज चेला छे. वली अमरसिंहना चेला दीपचंद, दीपचंदना धर्मदास, धर्मदासना जोगराज, जोगराजना हजारीमल्ल, हजारीमल्लना लालजीराम, लालजीरामना गंगाराम, गंगारामना जीवणमल्ल, जे वर्तमानमां दिल्लीनी आसपासना गामोमां फरे छे; तथा अमरसिंहना परिवारमां धनजी, मनजी, नाथुराम अने ताराचंद प्रमुख थया छे, जेमना चेला, रतिराम तथा नंदलाल थया. नंदलालनो चेलो रुपचंद अने रुपचंदनो विहारी जे पंजाबमां कोट जगरावांदि गामोमां फरे छे; तथा कानजी अने धर्मदास छीपीना चेलाउं दीपचंद, गोपालजी प्रमुख लींबडी, वढवाण, मोरबी, गोंडल, जेतपुर, राजकोट, अमरेली, ध्रांगधरा प्रमुख झालावाड काठीयावाड अने हालार प्रमुखना गामोमां फरे छे. धर्मदास छीपीना चेला धनाजी, धनाजीना ज्ञुदरजी, ज्ञुदरजीना रघुनाथजी, जैमलजी, गुमानचंद, दुर्गादास, कन्हीराम, रत्नचंद, हमीरमल्ल, कचोरीमल्ल प्रमुख वर्तमानमां मारवाडमां फरे छे, ते प्रसिद्ध छे.

रघुनाथजीनो चेलो जखमजी संवत (१८१८) मां थयो. जेणे तेरापंथ प्रगट कर्यो. तेना चेला जारमल, हेमजी, रायचंद, जीतमल्ल थया, जीतमल्लनी गादी उपर हाल मेघजी छे. आ मुखबंधा जेटला साधुउं छे, तेउंनो पंथ संवत (१७०९) नी सालथी चाल्यो छे. तेमनो मत ज्यारथी निकल्यो छे, त्यारथी आज सुधी तेमना मतमां कोइ पण विद्वान्

थयेल नथी; कारण के ते लोको कहे छे के, व्याकरण, काव्य, कोश, छंद, अलंकार प्रमुख जणवाथी, तथा तर्कशास्त्र जणवाथी बुद्धि बगडी जाय छे. आ अज्ञानपणाना कारणथीज तेउं परस्पर बहु द्वेष राखे छे. कइक मनमानी कल्पित वातो बनावी लहे छे. एक बीजानो पग जामवा देता नथी, मनमां माने छे के, मारा फलाणा गृहस्थ चेलाने फलाणो जोलवशे, इत्यादि अनेक कारणोथी परस्पर इर्ष्या बहुज राखे छे. आ वातमां शंका लागे तेणे मारवाडमां जइ प्रत्यक्ष अनुजव करवो. तेमना आचार, व्यवहार, वेष, श्रद्धा, प्ररुपणा प्रमुख जैनमतना शास्त्रानुसार नथी. वली बीजा मतवालाउं पण जे जैनमतना बहु लोकोने गंदा, कढंगा माने छे, तेउं मात्र आ ढुंढीआउंनाज आहार, व्यवहारनी रीत देखीने तेम माने छे. विशेष शुं लखुं, तेउंनी अज्ञानतानो अनुजव तेउंनी साथेना परिचयथीज थाय छे, वास्तवमे आ लोको जैनमतथी तदन विपरीत चालनारा होवाथी जैनाजास छे. इति ढुंढक मतोत्पत्ति.

६३ श्री विजयप्रज सूरिनी पाट उपर श्री विजयरत्न सूरि थया. ६४ श्री विजयरत्न सूरिनी पाट उपरश्री विजयक्षमा सूरि थया. ६५ श्री विजयक्षमासूरिनी पाट उपर श्री विजयदया सूरि थया. ६६ श्री विजयदया सूरिनी पाट उपर श्रीविजयधर्म सूरी थया. ६७ श्री विजयधर्म सूरिनी पाट उपर श्री जीनेंद्र सूरि थया. ६८ श्री जीनेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री देवेंद्र सूरि थया. ६९ श्री देवेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री विजयधरणेंद्र सूरि थया; वर्तमानमां तेमनी पाट उपर श्री राजेंद्रसूरि छे, ते विद्यमान विचरे छे.

एकसठमी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि हता, तेमना शिष्य श्री सत्यविजय गणि थया, तेमज महोपाध्याय, षट् शास्त्र वेत्ता, न्यायविशारद, महावैय्याकरणि, तार्किकशिरोमणि, बुद्धिसमुद्र श्री यशोविजय गणि थया. तेउं बंने ए श्री विजयसिंह सूरिनी आज्ञा लइ गछमां क्रियाशिथिल साधुउंने देखी, तथा ढुंढक मतना पाखंडनो प्रचार दूर करवा वास्ते क्रिया उद्धार कर्यो. श्री यशोविजय गणिए काशीना पंडितोमां जयपताकानो कुंडो प्राप्त कर्यो, अने गुजरात प्रमुख देशोमां प्रतिमां उछापक कुलिंगीउंना मतरुप अंधकारने प्रतिमाशतकादि अनेक ग्रंथोना तेजथी दूर कर्यो. तेमना रचेला महान् ग्रंथो, अध्यात्मसार, स्या-

छाप कल्पलता, शास्त्रसमुच्चयवृत्ति, मल्लवादी सूरिकृत नयचक्र उद्धारादि अनेक मोटा (१००) सो ग्रंथ छे.

श्री सत्यविजय गणिजी क्रिया उद्धार करी श्री आनंदघनजीनी साथे बहु वर्ष सुधी वनवासमां रह्या; तथा महा तपस्या योगाभ्यास प्रमुख कर्युं. ज्यारे बहुज वृद्ध थइ गया, अने पगमां चालवानी शक्ति न रही, त्यारे अणहिलपुर पाटणमां आवी रह्या. तेमना उपदेशथी बे शिष्य थया. गणि कपुरविजय पंडित, २ पंडित कुशलविजयजी. गणि कपुरविजयजीए अनेक अर्हंत बिंबोनी प्रतिष्ठा करी, अने अनेक गाम तथा शेहेरमां धर्मनी वृद्धि करी, महाप्रभाविक थया. श्री गणि कपुरविजयजीने बे शिष्य थयां; १ पंडित वृद्धिविजयगणि, २ पंडित क्षमाविजय गणि. श्री पंडित क्षमाविजय गणिना शिष्य पंडित श्री जीनविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित श्री उत्तम विजय गणि, तेमना शिष्य पंडित पद्मविजयगणि, तेमना शिष्य पंडित रुपविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित कस्तुरविजय गणि, तेमना शिष्य मुनि मणिविजय गणि तेमना शिष्य मुनि बुद्धिविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित मुक्तिविजय गणि, तेमना हस्तथी दीक्षित लघु गुरुभ्रातृ आ जैनतत्त्वादर्श ग्रंथना लखनार मुनि आतमाराम (आनंदविजयजी) इति तपगच्छ गुरु आवलि संपूर्ण.

वर्त्तमान समयमां नवीन पंथ मुख्यत्वे करी जे निकल्या छे ते लखीए छीएः— गुजरात देशमां स्वामिनारायणनो पंथ, बंगालामां ब्रह्मसमाजनो पंथ, पंजाबमां लुधीआना नजीक भयणीगाजनिवासी तखाणसिख जातिना उपदेशथी कूकापंथ, कोयलमां मौलवी अहमदशाहना नविन फिरका, तथा दयानंदसरस्वति स्वामिनो प्रगट करेलो आर्यसमाज पंथ, इत्यादि केटलाएक मतो, पुरातनी अनेक मतोनो त्याग करी निकलेला छे. मत काढनाराउए एम मान्युं लागे छे के आपणी बुद्धि समान प्राचीन पंडितोनी बुद्धि न होती, तथा तेउ प्राचीन ग्रंथो जेम के वेदो, उपनिषदो प्रमुखने यथार्थ समजता न होता. अमने तो कांइ हरकत नथी, परंतु जो कदापि आवी रीते नवीन नवीन मतो निकलता रहेशे, तो कोइ दिवस ब्राह्मादि मताधिकारीउनो गरास टली जशे, तथा धर्म अने नियम कायम रहेशे नहि.

इति श्री तप गछीय मुनिगणी श्रीमणिविजय तछिष्य मुनि श्रीबुद्धि विजय तछिष्य मुनि आत्माराम आनंद विजय विरचिते जैन तत्वादर्शे गुरु आवलि कथनरूप द्वादशः परिछेदः संपूर्ण. ॥ १२ ॥

इति मुनिश्रीआत्माराम आनंदविजयजी
विरचित द्वादश परिछेदरूप जैन-
तत्वादर्श ग्रंथः समाप्तः

शुद्धिपत्र.

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध.
७	११	आदिएं	आदिए
८	२०	परहितकारी होय	परहितकारी
९	२८	लांछन	लंछन
१४	२६	काचवानुंचिह	काचवानुं चिन्ह
१७	११	लांछनना नाम	लंछनना नाम
१८	११	लांछन नाम	लंछन नाम
२०	११	लांछननां नाम	लंछनना नाम.
२२	११	लांछन नाम	लंछन नाम
२४	११	लांछन नाम	लंछन नाम
२६	११	लांछन नाम	लंछन नाम
२८	११	लांछनना नाम	लंछनना नाम
३०	११	लांछन नाम	लंछन नाम
३२	११	लांछन नाम	लंछन नाम
३६	१८	स्वारि	स्वारि
३७	२६	स्तुति छे ?	स्तुतिना छे ?
३८	२	परमेश्वरपणायें	परमेश्वरपणाये
४८	४	जीवोएं	जीवोए
७६	१२	रजवामां	रचवामां
८३	१६	क्यां छे	कया छे
८४	२९	तो अदत्त	तो गुरु अदत्त
८६	१०	सातमा	सातमी
८६	१८	वीजी	बीजा
८८	२३	वर्जनान्	वर्जनात्
९२	६	प्रप्रमुख	प्रमुख
९६	१	अनेकतरेथी	अनेकतरेहथी
९७	५	प्रांशुक	प्राशुक
९७	१८	पुरीष	पुरीस
१०४	१	द्यांत्रिंशति	द्वात्रिंशति
१०४	२	चिंतन	चिंतवन
१५१	२	जीजासा	जीज्ञासा
१५३	५	अत्मा	आत्मा
१९९	१७	वस्ते	वास्ते
२०१	१४	वर्तमामान	वर्तमान
२०१	२७	आह	आहा
२०४	१५	प्रकुतिल	प्रतिकुल
२०७	१४	पांचेईीयवालां छे	पांचइंद्रिय छे
२०७	२३	अपर्याप्त	अपर्यासो
२०९	५	अनुपरत	अनुपहत
२१०	१४	अंगारापत्रुखमां	अंगाराप्रमुखमां
२१४	८	पराञवमां	परञवमां
२१५	१३	आतपनामकर्ग	आतापनामकर्म
२१६	१७	पुण्यपापा	पुण्यपाप
२२०	२३	त्स्यानद्धि	स्त्यानर्द्धि
२२१	१२	ककेश	क्लेश
२२४	५	हुंड	हुंडक
२३४	२०	प्रकानी	प्रकारनी
२३८	१८	सह	सहे
२४४	८	थाय छे	थया छे
२४६	१०	एवाज	एवा जे
२४७	७	जीववाणीने	जिनवाणीने
२४८	१३	तेनो	तेनु
२५४	२२	लोजआहार	लोमआहार
२५६	१७	तेवोज	नेर्ठज
२५८	२९	जेर्ठनेज.	जेर्ठनो
२६१	६	बुटवानेज	बुटवाने
२६२	५	शुद्धांजोनिधि	शब्दांजोनिधि
२६२	२१	खरूप	स्वरूप
२६४	१४	अनिष्टयोगार्त्त	अनिष्टसंयोगार्त्त
२६५	६	मनुष्यापूर्वी	मनुष्यानुपूर्वि
२७२	४	ध्यनमांज	ध्यानमांज
२७२	२७	अशुद्ध	अशुज
२७८	२२	अतिप्रयत्न	अतिप्रयत्न
२८०	२०	क्रमोक्रमे	क्रमेक्रमे
२८३	११	एवां वीजो	एवा बीजा
२८७	२	केवलीसमदूघात	केवलीसमुदूघात
२९०	१	रूपतापन्नने	रूपतापने
२९१	११	धरतो	करतो
२९४	१४	मुनिश्रीद	मुनिश्रीमद्

पानुं	लीटी	अशुध्ध	शुध्ध.
२९९	२५	माणी	पाणी
३०१	१०	शिष्यार्णने	शिष्यणीयोने
३२७	२७	साक्षत्	साक्षात्
३३१	६	राणवांचो	राणवानो
३३४	२५	निचार	विचार
३३५	५	आतिचार	अतिचार
३३६	२२	अधीन	आधीन
३४०	१२	एएवुं	एवुं
३४२	७	जगत्नी	जगत्
३४७	२३	फेयंल	फयल
३५२	१९	अर्या	अर्यो
३५२	१९	फालकुट	तालपूट
३५३	२४	बकु	बहु
३६०	९	अजीविका	आजीविका
३७४	२९	सलिए	लखिये
३९२	२४	मण	पण
३९६	१४	आगर	आगार
३९०	२७	फुलोना	फूलोना
४०१	४	अंगीकर	अंगीकार
४०१	१४	जे	जो
४०१	१७	अवे	आवे
४०२	५	सारोघार	सारोध्धार
४०६	१७	सम्यत्तय	सम्यक्त्य
४०६	२४	दुराचारा	दुराचाराः
४०६	२५	घ्रियंते	घ्रियन्ते
४०७	१९	रेशमि	रेशमी
४००	२०	अर्हत	अर्हंत
४००	२९	लोकापहास्य	लोकोपहास्य
४०९	९	राज्यचिह्न	राज्यचिन्ह
४१३	२९	मालाघर	मालाधर
४१५	२३	चेइआए	चेइआएं
४१६	२३	केकेवली	केवली
४१९	२६	जिनबिंब	जिनबिंबं
४१९	२७	जाएरुव	जिएरूवं

पानुं	लीटी	अशुध्ध	शुध्ध.
४२०	५	न्हयण	न्हयण
४२०	०	गंगीअ	गंगीआ
४२०	२३	जिनतु	जिनगु
४२१	२२	लोणएल	लोणराणल
४२३	१३	निश्राकत	निश्राकृत
४२३	१६	जिनमंमिरो	जिनमंदिरे
४२३	२३	असंविम	असंविग्न
४२३	२६	निर्ध्रंतना	निर्भ्रंतना
४२३	२९	विधि	विधिनो
४२४	३	ईर्या	ईर्या
४२४	२१	सिध्ध	सिध्ध
४२५	४	मोक्षप्रदात्री	मोक्षप्रदायी
४२५	०	तदासा	तदाज्ञा
४२९	०	प्रमुखथी	प्रमुखनी
४२९	१०	षटीनीत	षटीनीति
४३०	६	दिशा	दिशाए
४३०	२२	द्रव्यथी	द्रव्यनी
४३०	२२	असवारी	अस्वारी
४३०	२०	कागला	कोगला
४३२	४	वेद्यक	वेदक
४३२	२६	वेय्यावच्य	वेय्यावच्च
४३३	१७	प्रमुख	प्रमुखनी
४३६	१९	प्रमुखमां	प्रमुख
४३७	२३	स्नात्रप्रभावना	स्नात्र, प्रभावना
४३०	१४	परभावना	प्रभावना
४३९	१३	खमासणां	खमासमणां
४३९	१९	कुस्थान	कुस्वप्न
४४०	२६	रागग्रस्त	रोगग्रस्त
४४५	२०	विराधी	विरोधी
४४६	४	दागीन	दागीना
४४७	२२	न्युनादिक	न्यूनाधिक
४५३	४	करेल	लखेल
४५५	४	परतीथिंको	परतीथिंर्उ
४५६	२०	तर्जना करे	तर्जना न करे

शुद्धिपत्र.

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
६२	३	ते	के
६४	१०	वोलावा	वलावा
६८	१२	वोज	वोजो
४७१	२०	सेचतन	सचेतन
४७२	१९	जावस्थिति	जवस्थिति
४७२	११	च्यवन	चवन
४७६	४	परिणाम	परिमाण
७६	२२	द्राक्षा	द्राक्ष
४७८	११	अनदंडथीर्य	अनर्थदंडथी
४८०	१०	सम्यत्क्व	सम्यक्त्व
४८१	१४	धी	थी
४८५	२९	अधर्मीं	अधर्मी
४८७	१९	पडोकोश	पडोश
४९०	५	विहाह	विवाह
४९०	२०	जेम	तेम
४९१	४	वंध	बंध
४९१	१०	जिनप्रतिमां	जिनप्रतिमा
४९५	१	पेथके	पेथडे
४९६	१९	सम्यक्त	सम्यक्त्व
४९८	१४	जावोजीव	जावजीव
४९८	१५	पेथके	पेथडे
४९९	१५	द्रव	द्रव्य
४९९	१९	मोगा	मागा
५००	६	आलेवे	आलोवे
५०१	४	अर्हत	अर्हंत
५०१	१९	विध्यान	विधान
५०२	१२	प्रधम	प्रथम
५०५	५	वृक्षज	वृषज
५०५	१०	न्यूनवर्णना	न्यून एक वर्णना
५०७	१७	धिचार	विचार
५०९	२७	ओपधानुयोग	औपधानुयोग
५०९	२९	सखीये	लखीये
५१२	१४	जिह्या	जिह्वा
५१३	२१	देवोये	देवताओये
५१५	१७	तने कहो !	तमे कहो वे
५१७	२६	कांकणी	काकणी
५१९	२३	सुहक्खाए	सुहखाए
५२०	१४	धी	घी
५२०	२४	समुद्रा	सुभद्रा
५२५	१	धेर	घेर
५२६	२८	कह्यो	काढ्यो
५२८	२८	ससगर	सगर
५२९	९	सर्वेये	सर्वोये
५२९	१५	अवधिझान	अवधिज्ञान
५३१	२७	स्थापनां	स्थापन
५३६	७	अगीआरमां	अगीआरमा
५३६	२२	प्राप्त थता	करता
५३८	६	हस्तिपुर	हस्तिनापुर
५४०	१०	नगगर	नगर
५४४	२२	निर्ब्राह्मणी	निर्ब्राह्मण
५४५	६	विष्णुकुमार	विष्णुकुमार
५४८	२९	वंथी	वंशी.
५५१	११	नाममा	नामना
५५२	११	दती	हती
५५२	१३	विचार	तेनो विचार
५५४	१२	प्रमुखथी	प्रमुखनी
५५८	९	आगीआरे	अगीआरे
५५९	२४	निश्चय	निश्चय
५६०	१	जागवनार	जोगवनार
५६०	२८	इत्यादि	इत्यादि
५६१	२	सर्व	सर्व
५६५	१०	तथा अने	अने
५६५	१६	स्थापन. कर्या	स्थापन न कर्या
५६८	८	परमार्हत	परमार्हत
५६८	२२	गृहवास	गृहस्थवास
५७१	१४	मने	अने
५७२	२	थोवाधो	थोवाथो